कर्नल रंजीत

चुने हुए सर्वश्रेष्ठ ४ उपन्यास

भयंकर मूर्ति

क्रम : १

बदला लेने वाली अफ्रीका की भयंकर मूर्ति 'जूम्बी' के ताने-बाने में उलझी एक रोमांचकारी कथा, जिसमें बड़े ही कलात्मक ढंग से पेचीदा पर्दे को उठाकर हत्या के रहस्य को सुलझाया गया है।

खूनी छींटे

क्रम : २

जासूसी रहस्य में एक मील का पत्थर उपन्यास, गिरे हुए घिनौने इंसान के भयानक अपराधों का रोंगटे खड़े कर देने वाला सिलसिला, जिसे मेजर बलवंत ने जबरदस्त जोखिम उठाकर सुलझाया।

टेढ़ी उंगलियां

क्रम : ३

खतरनाक हत्यारों की रोमांच से भरपूर कहानी। ऐसे अपराधियों का पर्दाफाश, जो शराफत का मुखौटा ओढ़े समाज में आदर पाते हैं, पर वास्तव में ऐसे छिपे रुस्तम हैं, जिन्हें छुट्टे सांड की तरह विचरने नहीं दिया जा सकता।

खूनी कंगन

क्रम : ४

भला एक कंगन खूनी कैसे हो सकता है? कैसी अनोखी हत्या की साजिश करने वाले लोग थे वे? कदम-कदम पर खोज, जिज्ञासा और रहस्य-रोमांच से लबरेज कथा।

जासूसी उपन्यास लेखन के सम्राट्

कर्नल रंजीत

की चमत्कारी कलम से

४ सर्वश्रेष्ठ उपन्यास

*

सबसे अलग

सबसे नया

हिन्दी में अद्भुत प्रयास

*

१
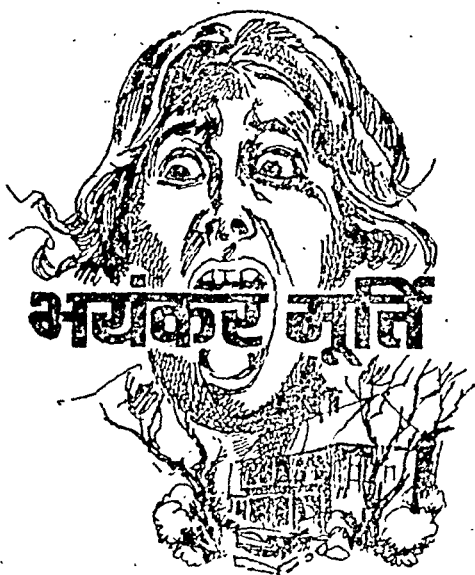
वह एक वहुत ही विचित्र दिन था जब मेजर वलवन्त और सोनिया वम्वई से दिल्ली पहुंचे। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से टैक्सी में साउथ एक्सटेंशन तक आते हुए उन्हें अहसास ही नहीं हुआ था कि वह दिल्ली के सामाजिक इतिहास का एक भयानक दिन था। मेजर को उस दिन की भयानकता का अहसास सोनिया के चाचा लाला केदारनाथ वर्मा, पंजाब हाईकोर्ट के अवकाश प्राप्त जज, की कोठी में पहुंचने पर हुआ।

लाला केदारनाथ वर्मा ने सोनिया के साथ मेजर वलवन्त को देखा तो उनके चेहरे पर छाई हुई मुर्दनी ताजगी में वदल गई और जब नमस्ते आदि के वाद सोनिया ने वताया कि वे पन्द्रह दिन के लिए दिल्ली आए हैं तो लाला केदारनाथ वर्मा का चेहरा एक अज्ञात सन्तोष के प्रकाश से चमक उठा।

अब उन्होंने चिल्लाकर आवाज दी, "रीटा, रूवी, नीचे आओ। देखो तो कौन आया है!" और फिर उन्होंने स्वर वदलते हुए धीमी आवाज में पुकारकर कहा, "तुम भी आओ। घर में दो मेहमान आए हैं।" यह आवाज उन्होंने अपनी पत्नी को दी थी।

दो लड़कियां, जिनकी आयु में मुश्किल से एक वर्ष का अन्तर होगा, दौड़ती हुई आईं और सोनिया की टांगों से लिपट गईं। सोनिया ने झुककर वारी-वारी उनके सिर पर चुम्वन दिया। फिर सोनिया से अलग होकर उन्होंने हाथ जोड़कर मेजर को नमस्ते की।

इतने में वन्द दरवाजे का कमरा खुला और एक अधेड़ आयु और ऊंचे कद की स्त्री वाहर निकली। वह सोनिया की चाची सरस्वती थी। सरस्वती की नजर सोनिया पर पड़ी तो वह वांहें फैलाकर उसकी ओर वढ़ी, "ओह, मेरी वेटी सोनिया! वैसे तो यह तुम्हारा घर है, लेकिन कोई सूचना तो दी होती!"

सोनिया पांव छूने के लिए झुकी, लेकिन सरस्वती ने उसे छाती से लगा लिया और उसके गालों पर चुम्वनों की वर्षा कर दी। सोनिया का गुलावी रंग अंगारे की तरह दहकने लगा। जव वे एक-दूसरी से अलग हुईं तो मेजर ने वढ़कर चाची के पांव छू लिए। सरस्वती प्यार से मेजर के वालों में उंगलियां फेरने लगी।

"तुमने अच्छा किया कि दोनों साथ आए हो···" सरस्वती बोली, "तुम दोनों को साथ देखकर जी बहुत खुश होता है। जाओ, जाकर मुंह-हाथ धो लो। मैं अभी नाश्ता तैयार कर देती हूं।" सरस्वती दाईं ओर बढ़ी।

"क्यों, रतन कहां है?" सोनिया ने पूछा।

"उसे तो कल से जवाब दे दिया है। बहुत बुरा जमाना जा रहा है बेटी! पहले तुम्हारा नाश्ता तैयार कर दूं, फिर सारी बात सुनाऊंगी।" कहकर सरस्वती चली गई।

"चलो, मैं तुम्हें ज्यादा देर तक परेशान नहीं करना चाहती।" सोनिय ने कहा और फर्श पर पड़े हुए अपने और मेजर के सूटकेसों की ओर देखा। लाला जी सूटकेसों की ओर बढ़े तो मेजर ने लपककर दोनों सूटकेस उठा लिए और सोनिया की ओर देखा जैसे पूछ रहा हो कि किधर चलना होगा। सोनिया को अपने चाचा की कोठी के हर भाग की जानकारी थी। उसे मालूम था कि उसके चाचा ने मेहमानों के लिए दो कमरे बनवाए थे जो हर प्रकार से मुकम्मिल थे, सोनिया मेहमानखाने की ओर चल दी। मेजर उसके पीछे-पीछे हो लिया। ये दोनों कमरे आपस में मिले हुए थे। बीच की दीवार का दरवाजा दोनों कमरों में खुलता था। मेजर ने अपना सूटकेस एक कमरे में और सोनिया का दूसरे कमरे में रख दिया। वह सोनिया को इस बात का समय देने के लिए कि वह रीटा और रूबी की चीजें उन्हें दे सके, पुनः लाला जी के पास आ गया जो पूर्ववत् बढ़इयों के पास खड़े थे।

"मैंने आपसे पूछा था कि मखमल में टाट के ये पैवंद क्यों लगवाए जा रहे हैं—इतनी सुन्दर खिड़कियों का हुलिया क्यों बिगाड़ा जा रहा है?" मेजर ने कहा।

"मैं ही इन खिड़कियों का हुलिया नहीं बिगाड़ रहा, अगर आप बाहर जाएं और घूम-फिरकर देखें तो आपको अधिकतर बंगलों और कोठियों में अब ऐसी ही खिड़कियां नजर आएंगी—और ऐसी खिड़कियां पिछले दो दिनों में बनवाई गई हैं।"

"पिछले दो दिनों में!" मेजर ने आश्चर्य से कहा, "सैनिक स्तर पर ऐसी खिड़कियां बनवाने का मतलब मेरी समझ में नहीं आ रहा।"

"आप बम्बई से आ रहे हैं इसलिए आप नहीं जानते कि इस शहर पर क्या [illegible] रही है। इस शहर पर भय का भूत मंडरा रहा है। हर आदमी, जिसके पास कुछ [illegible] और जिसके घर में एक या दो छोटी बेटियां हैं, भयभीत है। मैं तो सोच भी [illegible] सकता कि मनुष्य इतना पत्थरदिल और जालिम भी हो सकता है। मैंने सैकड़ों [illegible]तिलों और डाकुओं के मुकदमों के फैसले सुनाए हैं। हत्या की वारदातों का मेरे दिल पर कुछ कम ही असर होता है। लेकिन इस घटना ने तो मेरे भी होश उड़ा दिए हैं। कल सुबह से मैं भी जब अपनी इस आधुनिक किस्म की खिड़कियों की तरफ देखता था तो मेरी नसों में खून जमने लगता था। आखिर मैंने भी यही फैसला किया कि इनमें लोहे के सींखचों वाले चौखटे फिट करवा लेने चाहिए।"

"मैं आपकी बातों से अभी तक कोई परिणाम नहीं निकाल सका कि पूरे शहर के भय का क्या कारण है!"

"जरा ठहरिए, मैं अखबारों की कतरनें लाता हूं। उन्हें पढ़कर आप सब कुछ जान जाएंगे।" यह कहकर लाला केदारनाथ वर्मा ड्राइंग रूम की ओर बढ़े और कुछ क्षणों के बाद एक पीले रंग की फाइल उठा लाए। उस फाइल में पिछले दो दिन के समाचार-पत्रों की कतरनें हरे रंग की डोरी से बंधी हुई थीं। उन्होंने वह फाइल खोलकर मेजर के हाथ में दे दी और बोले, "पुलिस अभी तक अंधेरे में कलाबाजियां खा रही है और अपराधी कहीं आजाद बैठा नये अपराध की योजना बना रहा है।"

मेजर ने फाइल में लगी अखबारों की कतरनें पढ़नी शुरू कर दीं। पहली

कतरन में एक ऐसा समाचार था जो कहानी के रूप में प्रकाशित किया गया था, "सुन्दर नगर के डी ब्लाक में ११२ नम्बर के दो मंजिला मकान की ऊपर की मंजिल में एक इंजीनियर श्री दयानारायण निगम रहते हैं। ११२ नम्बर का मकान सुन्दर नगर के पिछवाड़े के जंगल के बिल्कुल सामने है और शेष मकानों से अलग-थलग है। श्री दयानारायण निगम को उस मकान की ऊपर की मंजिल किराए पर लिए सत्रह दिन हो चुके हैं। वे झांसी से तब्दील होकर अपनी पत्नी और दस वर्षीय इकलौती बेटी मृणालिनी के साथ यहां आए थे। कल शाम उन्होंने मृणालिनी का जन्मदिन मनाया। अपने दफ्तर के अफसरों को अपने यहां बुलाया जो मृणालिनी के लिए तरह-तरह के उपहार लेकर आए। रात के दस बजे तक खूब हंगामा रहा। श्री दयानारायण निगम को अंग्रेजी ढंग का जीवन पसन्द है; इसलिए मृणालिनी को एक अलग कमरे में सुलाया जाता था जो पति-पत्नी के सोने के कमरे के साथ का कमरा है। किसी नौकर या नौकरानी का अभी कोई प्रबन्ध नहीं हो पाया था। निगम बाबू की पत्नी बेटी को सुलाने के बाद सोया करती थीं। कल रात मृणालिनी बड़ी देर तक अपने उपहारों से खेलती रही। ग्यारह बजे उसकी मां उसे सुलाकर अपने बिस्तर पर चली गई। साढ़े ग्यारह बजे मृणालिनी की मां उसके कमरे में रोशनी पाकर यह देखने के लिए आई कि कहीं मृणालिनी जागकर फिर अपने उपहारों से तो नहीं खेलने लग गई। लेकिन मृणालिनी के कमरे में कदम रखते ही उसके पैरों तले से जमीन निकल गई। आंखों के सामने अंधेरा छा गया। मृणालिनी अपने बिस्तर पर नहीं थी और खिड़की खुली हुई थी। उसके मुंह से एक हल्की-सी चीख निकल गई और वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी। उसके धम् से गिरने की आवाज सुनकर निगम बाबू हड़बड़ाकर उठे और मृणालिनी के कमरे की ओर भागे। भीतर का दृश्य देखकर उनका दिल भी धक् से रह गया और टांगें कांपने लगीं। मृणालिनी अपने बिस्तर पर नहीं थी और पत्नी फर्श पर निश्चेष्ट पड़ी थी। एकाएक यह विचार उनकी छाती को छुरी की तरह चीरता चला गया कि वे बेटी और पत्नी दोनों से हाथ धो बैठे हैं। लेकिन वे तुरन्त ही संभल गए और झुककर अपनी पत्नी की कनपटियां और तलुए सहलाने लगे। जब पत्नी ने कराहते हुए आंखें खोल दीं तो वे खुली खिड़की की ओर लपके। उन्होंने खिड़की के नीचे दीवार से एक सीढ़ी टिकी हुई देखी। सारी बात उनकी समझ में आ गई। मृणालिनी का अपहरण कर लिया गया था।

"अब उनकी पत्नी पूरी तरह होश में आ चुकी थी और अपनी छाती पर दोहत्थड़ मार-मारकर रो रही थी। पड़ोसी एकत्र हुए तो उन्होंदे देखा कि निगम बाबू को गहरी चुप्पी लग गई थी। उनकी पत्नी ही हिचकियां ले-लेकर सारी कहानी सुनाती थी। एक पड़ोसी ने पुलिस को फोन किया। पुलिस आई और एक घण्टे तक छानबीन करती रही। उसे मृणालिनी के बिस्तर पर एक लिपस्टिक मिली जो मृणालिनी की मां की थी। लिपस्टिक पर मृणालिनी की उंगलियों के निशान थे। खिड़की के नीचे एक पुराना शेफील्ड का बना हुआ पेंसिल शार्पनर पड़ा था और सीढ़ी के पैरों के पास एक रबड़-पेंसिल पड़ी थी। निगम बाबू का बयान है कि दोनों चीजें मृणालिनी की नहीं थीं। पुलिस उन मामूली चीजों के आधार पर किसी परिणाम तक नहीं पहुंच सकी। पुलिस का मत है कि आक्रमणकारी दस्ताने और फ्लीट-बूट पहनकर आया था और मृणालिनी को सोते में या किसी दवा से बेहोश करके ले गया। मृणालिनी के कुछ कपड़े भी गायब थे, जिससे मालूम होता था कि आक्रमणकारी उसे उन्हीं कपड़ों में लपेटकर ले गया था...।"

मेजर ने अखबार की दूसरी कतरन पढ़ी—वह समाचार पहले समाचार ही की एक कड़ी थी। इसे भी कहानी का रूप दिया गया था, "मृणालिनी का अभी तक

कोई पता नहीं चला। पुलिस अब इस परिणाम पर पहुंची है कि मृणालिनी का अपहरण किसी संगठित गिरोह का काम है क्योंकि निगम बाबू ने कागज का एक पुर्जा पुलिस को दिया है जिस पर लिपस्टिक से मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा हुआ है कि 'अगर बेटी को जीवित पाना चाहते हो तो तीस हजार रुपये लेकर पुराने किले के बड़े फाटक के सामने बरगद के पेड़ के नीचे कल शाम को छः बजे पहुंच जाओ। अगर पुलिस को सूचना दी तो बेटी को जीवित नहीं पाओगे।' पुलिस के ख्याल में लिखावट से यह सिद्ध होता है कि अपहरणकर्ता अधिक पढ़ा-लिखा नहीं है। कोई कारीगर या मजदूर है। निगम बाबू को कागज का यह पुर्जा परसों ही मिल गया था उन्होंने पुलिस से इसका भेद छुपाया था। वे तीस हजार रुपये देकर अपनी बेटी प्राप्त करना चाहते थे। वे रुपया लेकर पुराने किले के सामने पहुंचे थे। लेकिन वहां कोई भी नहीं आया। उनकी नजरें अपनी इकलौती बेटी को ढूंढ़ती रहीं। उन्होंने दो घण्टे तक प्रतीक्षा की और जब कोई भी मृणालिनी को वहां न लाया तो निराशा उनके हृदय को नश्तर की तरह काटने लगी। वे सीधे पुलिस थाने पहुंचे और कागज का वह पुर्जा इन्स्पेक्टर धर्मवीर सक्सेना के हवाले कर दिया…।"

मेजर ने फाउन्टेन पेन लाला कैलाशनाथ वर्मा की ओर मुस्कराते हुए बोला, "अब मैं समझा कि आपने अपने नौकर रतन को क्यों जवाब दे दिया है, और इन खिड़कियों में लोहे के सींखचे क्यों लगाए जा रहे हैं। लेकिन परेशान होने की जरूरत नहीं। मेरे विचार में तो यह एक साधारण-सी घटना है जो हर शहर में होती रहती है।"

"आप इसे साधारण-सी घटना कहते हैं और यहां लोगों की जान पर बनी हुई है। अगर पुलिस के बयान को सही समझ लिया जाए कि यह एक संगठित गिरोह का काम है, तो फिर कोई भी घर सुरक्षित नहीं है। इस गिरोह का दूसरा हमला किसी भी घर पर हो सकता है।" लाला जी ने तर्क प्रस्तुत किया।

"मैं समझता हूं कि पुलिस के गैरजिम्मेदाराना बयान और अखबारों की सुर्खियों ने डर और आतंक को भड़का दिया है, मैंने जो कुछ पढ़ा है उससे मैं अनुमान लगा सकता हूं कि मृणालिनी का अपहरण करने वाले व्यक्ति का किसी भी गिरोह से कोई सम्बन्ध नहीं है, इसका कारण यह है कि कोई संगठित गिरोह बच्चे का अपहरण करने के बाद इस भोंडे तरीके से बच्चे को छोड़ने के पैसे नहीं मांगता। मेरे विचार में जिस व्यक्ति ने मृणालिनी का अपहरण किया है, वह एक ऐसा व्यक्ति है जो कोई पुराना मर्ज़ और 'चाइल्ड फिक्सेशन' की उलझन का शिकार है। इसकी व्याख्या यों की जा सकती है कि कुछ लोगों के दिल-दिमाग में अपने किसी बच्चे का ख्याल हमेशा के लिए जमकर रह जाता है। यह कोई ऐसी स्त्री या ऐसा पुरुष हो सकता है जिसका पति या जिसकी पत्नी अपनी मृत्यु के बाद बच्चा छोड़ जाती है और फिर वह बच्चा भी मर जाता है। उस बच्चे का ख्याल उस स्त्री या पुरुष के दिल-दिमाग से किसी तरह भी नहीं निकल पाता। वे अपने बच्चे का बदला प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। मृणालिनी के अपहरण के मामले में भी चाइल्ड फिक्सेशन का शिकार एक पुरुष है और वह कोई बंगाली है। उसकी पत्नी अपने पीछे एक बच्ची छोड़ गई होगी और वह बच्ची भी मर चुकी होगी। उसे मृणालिनी के रूप में अपनी बच्ची का प्रतिरूप मिल गया होगा। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि मृणालिनी इस समय झांसी में होगी।"

"मैं समझा नहीं कि मृणालिनी झांसी में क्यों होगी!" लाला जी ने आश्चर्य से पूछा। मेजर मुस्कराया और बोला, "आप मेरी बात मान लीजिए कि मृणालिनी झांसी में है। इसे झांसी में निगम बाबू के दफ्तर का वह क्लर्क उठा ले गया है जो

दफ्तर के समय के बाद मृणालिनी को पढ़ाने भी जाता होगा। पुलिस यदि झांसी जाए और यह पता लगाए कि वहां निगम बाबू के दफ्तर का कौन-सा क्लर्क मृणालिनी को पढ़ाया करता था, तो उसे मृणालिनी उसके यहां मिल जाएगी। अवश्य ही उस क्लर्क ने मृणालिनी को कहीं छिपाकर रखा होगा। अब मृणालिनी उससे ऊब भी चुकी होगी और अपने माता-पिता के पास आने के लिए बेचैन होगी। वह उसे कोई लालच या दिलासा देकर रोक रहा होगा।" यह कहकर मेजर मेहमानखाने की ओर चला गया।

मेहमानखाने में सोनिया अकेली थी। वह अपना लिबास बदल चुकी थी। सोनिया ने उसकी छाती पर सिर रखते हुए कहा, "हम यहां पन्द्रह दिन की छुट्टी पर आए हैं। कई सालों के बाद मनोरंजन की ये घड़ियां मिली हैं।"

"मनोरंजन! कैसा मनोरंजन? मैं एक जरूरी काम से आया हूं—एक लड़की की तलाश में। सोनिया! तुम अभी टेलीफोन डायरेक्टरी लेकर बैठ जाओ। इस शहर में अमूल्य और अलभ्य या यों कहो कि प्राचीन काल की बहुमूल्य और दुर्लभ चीजें बेचने वाली जितनी दुकानें हैं, उनके पते नोट कर लो। अगर जरूरत समझो तो इस काम में अपने चाचा की भी सहायता ले सकती हो। मैं जब तक तैयार हो जाऊं। नाश्ते के बाद हम लोग ऐसी चीजें बेचने वाली दुकानों के चक्कर लगाएंगे।" मेजर बाथरूम की ओर बढ़ा और सोनिया टेलीफोन डायरेक्टरी लेकर बैठ गई।

मेजर और सोनिया रात के दस बजे वापस आए। दोनों बहुत थके हुए मालूम हो रहे थे। मेजर के चेहरे से प्रकट होता था कि उसे अभीष्ट वस्तु प्राप्त नहीं हुई थी।

मेजर बलवंत सुबह आठ बजे जगा तो सोनिया ने उसे बताया कि उसका चाचा इधर के तीन-चार चक्कर लगा गया था। लेकिन उसे सोया हुआ देखकर बड़ी निराशा के साथ वापस चला गया था। वह शायद उससे मिलने के लिए बहुत ही बेचैन था। मेजर सोनिया के चाचा के पास जाने के लिए उठा तो दरवाजे के बाहर उसे कदमों की आहट सुनाई दी। दरवाजा बहुत धीरे से खुला और लाला केदारनाथ वर्मा दबे पांव भीतर आ गए। उन्होंने मेजर को जगा हुआ देखा तो उनकी बाछें खिल गईं। निकट आकर उन्होंने मेजर के कन्धे पर थपकी दी और बोले, 'आप जैसे इन्सान इस संसार को कभी-कभी ही मिलते हैं। मैं तो सुबह से ही दंग हूं और वाह-वाह कर रहा हूं। मैं तो सोच-सोचकर हार गया हूं कि आपने कल कैसे एक फिल्म की तरह वह बात देख ली, जो पुलिस हजार कोशिश करने पर भी न देख सकी थी। मृणालिनी मिल गई है और आपके कहने के मुताबिक झांसी में ही उस क्लर्क के यहां मिली है जो उसे रोज पढ़ाया करता था।"

"इसका मतलब है कि दिल्ली की पुलिस काफी होशियार है। उसने भी मेरी तरह ठीक अनुमान लगाया, जभी तो वह तुरन्त झांसी पहुंच गई।" मेजर ने कहा।

"दिल्ली पुलिस की होशियारी की बात रहने दीजिए।" लाला जी ने कहा, "यह तो आपकी कृपा है। इन्स्पेक्टर धर्मवीर सलूजा की प्रशंसा हो रही है और मेरे सिवा कोई नहीं जानता कि इन्स्पेक्टर धर्मवीर के सिर पर सफलता का सेहरा आपने बांधा है। इन्स्पेक्टर साहब हमारे पड़ोस में रहते हैं। कल सुबह जब आपने मृणालिनी के अपहरण की व्याख्या की तो मैं तुरन्त उनके यहां पहुंचा। मैंने उन्हें आपसे हुई बातें बताई तो वे उसी समय तैयार होकर हवाई अड्डे पर जा पहुंचे। आज सुबह उन्होंने झांसी से फोन किया है कि मृणालिनी मिल गई है और क्लर्क सत्यनारायण शुक्ला के यहां मिली है। इन्स्पेक्टर धर्मवीर सलूजा बहुत प्रसन्न हैं। दिल्ली के पुलिसअधिकारियों में उनकी धाक जम गई है। वे आपसे मिलने के लिए बेचैन हैं। आज दोपहर तक अपराधी को अपने साथ लेकर दिल्ली पहुंच जाएंगे, और मुझे आशा है कि आते ही

आपका धन्यवाद क न यहां आएंगे।"

"यह आपने अच्छा नहीं किया। हम यहां छुट्टियां बिताने आए हैं। मैं किसी को भी यह नहीं बताना चाहता था कि मैं दिल्ली में हूं।"

लाला जी चले गए तो सोनिया ने कहा, "आपने बेकार में अंकल का दिल तोड़ दिया। वे तो दूसरों को यह बताकर गौरव अनुभव करना चाहते हैं कि आप उनके यहां ठहरे हुए हैं और आप हैं कि..."

मेजर ने बात काटते हुए कहा, "मुझे डर है कि यह मोहब्बत मुझे यहां किसी मुसीबत में न डाल दे। इस तरह मेरा काम अधूरा रह जाएगा और हमें पन्द्रह दिन से अधिक रुकना पड़ जाएगा।"

"वह लड़की कौन है, जिसकी तलाश में आप यहां आए हैं? और दुर्लभ चीजों की दुकानों की खाक क्यों छानी जा रही है?" सोनिया ने बात का रुख बदलते हुए कहा।

"इस सवाल का जवाब मैं उस समय दूंगा जब अपनी तलाश में सफल हो जाऊंगा।" दोपहर बाद साढ़े तीन बजे मेजर अपने काम पर जाने के लिए तैयार हो गया। सोनिया अभी तक यह तय नहीं कर पाई थी कि उसे कौन-सी साड़ी पहनकर बाहर निकलना चाहिए। इतने में कदमों की आहट सुनाई दी और लाला जी ने हांफते हुए प्रवेश किया।

"आपको इन्स्पेक्टर धर्मवीर फोन पर बुला रहे हैं।" लाला जी ने मेजर से कहा।

"मुझे? क्या आपने...?"

"मैंने थोड़ी देर पहले उनको सारा मामला समझा दिया था, लेकिन वे आपको एक बहुत ही जरूरी काम से फोन पर बुला रहे हैं।"

लाला जी और मेजर साहब चले गए तो सोनिया जल्दी से साड़ी बांधकर बैठक में आ पहुंची, जहां टेलीफोन रखा था।

मेजर फोन का चोंगा उठाकर कान से लगा चुका था।

"मेजर साहब, नमस्ते।" दूसरी ओर से पुलिस इन्स्पेक्टर धर्मवीर की आवाज आई, "आप चुपके से दिल्ली चले आए। लेकिन सुगंध कहीं छिपी रहती है! देखिए, आपके आने का पता चल गया है। मैं झांसी से मृणालिनी और सत्यनारायण के साथ यहां पहुंचा तो एक नया ही गुल खिल चुका था। आप यहां छिपकर रह सकते। आप दिल्ली में हैं, सबको इसकी खबर हो जाएगी।"

"जी हां, दुनिया में कोई बदनाम न हो...बदनाम आदमी से उसकी बदनामी पहले उड़कर पहुंच जाया करती है।" मेजर ने कहा।

"नहीं-नहीं, यह तो हमारा सौभाग्य है कि आप हमारे शहर में आए—नहीं तो बहार वीराने में कहां आती है!"

"कहिए मुझसे क्या काम है?"

"मेजर साहब, आप भी क्या कहेंगे, सिर मुंडाते ही ओले पड़े। एक घण्टा हुआ, इण्टरनेशनल म्यूजियम, सुन्दर नगर के मालिक दीवान सुरेन्द्रनाथ अफ्रीकी देवी-देवताओं की मूर्तियों वाले कमरे में मृत पाए गए। मैं यहां, यानी इण्टरनेशनल म्यूजियम में आधे घण्टे से हूं। अब तक की परिस्थितियों से मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि यह हत्या की वारदात है। दीवान सुरेन्द्रनाथ की मृत्यु दुर्घटना से, यानी सिर पर भारी मूर्ति गिरने से नहीं हुई। खोजबीन के बावजूद कोई सुराग नहीं मिल सका, इसलिए दीवान साहब की हत्या को दुर्घटना मान लेने के सिवा और कोई चारा नहीं। मैं बहुत सिर मार चुका हूं। कृपा कर मेरी सहायता कीजिए। बस, आधे घण्टे के लिए चले

आइए।"

"यह इण्टरनेशनल म्यूजियम क्या चीज है ?"

"यहां प्राचीन देवी-देवताओं की मूर्तियां उनके मूल रंग-रूप के अनुसार तैयार की जाती हैं। उन्हें यहां भी बेचा जाता है और विदेशों में भी बेचा जाता है।" इंस्पेक्टर ने उत्तर दिया।

"मेरा इन्तजार कीजिए, मैं आ रहा हूं।" मेजर ने यह कहकर फोन रख दिया।

म्यूजियम या अजायबघर

मेजर को इण्टरनेशनल म्यूजियम ढूंढ़ने में कोई कठिनाई नहीं हुई। वह एक बहुत बड़ी दोमंजिली कोठी थी। मेजर और सोनिया ने मुख्य द्वार खोलकर भीतर प्रवेश किया। द्वार खुलने की आवाज सुनकर ऊपर की मंजिल के छज्जे में इन्स्पेक्टर धर्मवीर प्रकट हुआ और उन दोनों को देखकर ठिठक गया। वह मेजर को पहचानता नहीं था इसलिए उसने उन्हें म्यूजियम में आने वाले ग्राहक समझा। मेजर के साथ सोनिया को देखकर उसे ऐसा भ्रम हो ही सकता था। मेजर ने हाथ हिलाकर उसका असमंजस दूर कर दिया और जब उसने यह कहा, "मेजर एट यूअर सर्विस" (मेजर सेवा में उपस्थित है) तो इन्स्पेक्टर की रगों में जैसे बिजली दौड़ गई। वह तेजी से सीढ़ियां उतरा, आकर बड़े तपाक से मेजर का हाथ दबाते हुए बोला, "मैं कह नहीं सकता कि मैं आपका कितना आभारी हूं।" और फिर मुड़कर बोला, "ये शायद हमारी भाभी हैं।" इन्स्पेक्टर ने हाथ जोड़कर नमस्ते की तो सोनिया लज्जा से लाल हो गई।"

मेजर ने सोनिया को उस बेतुकी स्थिति से निकालने के लिए इन्स्पेक्टर से उसका परिचय कराया और पूछा, "क्या मृणालिनी सत्यनारायण शुक्ला के यहां खुश थी ?"

"हां, खुश ही थी। सत्यनायण ने उसे बहुत-से खिलौने ले दिए थे। वह सचमुच चाइल्ड फिक्सेशन का रोगी था और बहुत ही दयालु स्वभाव का था। मृणालिनी तो यह समझ रही थी, जैसे वह अपने चाचा के घर में रह रही हो।" इन्स्पेक्टर ने कहा और आश्चर्य से पूछा, "आपने यह कैसे जान लिया था कि मृणालिनी का अपहरण करने वाला झांसी का कोई क्लर्क था ?"

"पुराने पेन्सिल शार्पनर और रबड़-पेन्सिल ने मुझे यह बात सुझाई कि अपहरण करने वाला कोई क्लर्क हो सकता है। वह क्लर्क झांसी का ही हो सकता था; क्योंकि निगम बाबू को यहां आए हुए सिर्फ इक्कीस दिन हुए हैं, इतने दिनों में यहां किसी क्लर्क को मृणालिनी से इतना लगाव पैदा नहीं हो सकता था। मृणालिनी के कपड़े गायब थे, इसलिए भी मैं यह समझा कि कोई उसे दूर ले गया है।" मेजर ने कहा—"अच्छा, मैं पहले दीवान सुरेन्द्रनाथ की संक्षिप्त जीवनी जानना चाहता हूं।" मेजर बोला।

इन्स्पेक्टर मेजर को इण्टरनेशनल म्यूजियम के दफ्तर के कमरे में ले गया। जब बैठ चुके तो इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने कहा, "दीवान सुरेन्द्रनाथ बहुत बड़े रईस और इतिहासवेत्ता थे। कई बार पूरे संसार की सैर कर चुके थे। अफ्रीका महाद्वीप उन्हें विशेषरूप से पसन्द था। अपने जीवन का अधिकांश भाग उन्होंने एक इटालियन प्रोफेसर मोरावियो के साथ अफ्रीका के जंगलों में गुजारा था। प्रोफेसर मोराविये से उनकी गहरी मित्रता थी। उन्होंने प्रोफेसर मोराविये की इटालियन पत्नी की छोटी बहन से अफ्रीका में ही शादी कर ली थी। संयोग से दीवान सुरेन्द्रनाथ और प्रोफेसर मोराविये

के यहां थोड़े दिनों के अन्तर से बेटियां पैदा हुईं। प्रोफेसर मोराविया भाषाविज्ञान के विशेषज्ञ थे और यूनानी, लैटिन, अरबी, चीनी, जापानी और सुआहिली भाषाओं के अतिरिक्त भारत की कई भाषाएं जानते थे। उन्हें भारतीय नाम भी बहुत पसन्द थे। इसलिए उन्होंने अपनी बेटी का नाम रजनी और दीवान साहब की बेटी का नाम कामिनी रखा था। रजनी और कामिनी अभी सात-सात वर्ष की थीं कि अफ्रीका में एक अज्ञात महामारी फूट पड़ी और दोनों की माताएं उस महामारी में चल बसीं। दीवान साहब अफ्रीका के वातावरण से ऊब गए। वे अपनी बेटी कामिनी के साथ भारत वापस चले आये। कामिनी को नैनीताल के एक अंग्रेजी स्कूल में भरती करवा दिया गया, जहां रईसों और राजा-महाराजाओं के बेटे-बेटियां पढ़ते थे। अठारह वर्ष की आयु तक कामिनी वहीं रही। उसने सीनियर कैम्ब्रिज कर लिया और कलकत्ता के एक कालेज में प्रवेश ले लिया। इस बीच में दीवान साहब अपने मित्र प्रोफेसर मोराविया और उसकी बेटी रजनी को भी अपने यहां बुला चुके थे। प्रोफेसर मोराविया अपने साथ अपने एक वफादार नौकर—अफ्रीकी हब्शी सिद्दीकू को भी लाए थे। प्रोफेसर मोराविया कुछ वर्षों तक अपने मित्र के पास रहे और फिर उनका देहान्त हो गया। मरने से पहले प्रोफेसर ने एक अजायबघर खोलने की इच्छा प्रकट की थी। उन्होंने अपनी इस योजना की एक विस्तृत रूपरेखा भी तैयार की थी। वे इस अजायबघर का नाम 'इण्टरनेशनल म्यूजियम' रखना चाहते थे। प्रोफेसर मोराविया के देहान्त के बाद दीवान साहब ने रजनी और सिद्दीकू को हमेशा के लिए अपने पास रखने का फैसला कर लिया। अफ्रीकी हब्शी सिद्दीकू ने रजनी की मां की मृत्यु के बाद रजनी को पाला-पोसा था। वह प्रोफेसर का पुराना और बड़ा विश्वस्त सेवक था। रजनी को प्रसन्न करने के लिए दीवान साहब ने उसके पिता और अपने मित्र प्रोफेसर मोराविया की योजना को क्रियान्वित कर दिया और यों इण्टरनेशनल म्यूजियम स्थापित हो गया। देवी-देवताओं की मूर्तियों में कोई त्रुटि न रहने पाए, इसलिए उन्होंने भारत के प्रसिद्ध इतिहासकार और भाषाविज्ञान के विशेषज्ञ डाक्टर अजयकुमार बनर्जी की सेवाएं प्राप्त कर लीं। मूर्तियां तैयार करने का काम शुरू हो गया। कामिनी छुट्टियों में घर आई तो उसने अपने पिता के इस नये काम को पसन्द नहीं किया। रजनी से अपने पिता का बेपनाह लगाव भी उसे अच्छा न लगा। वह रजनी से ईर्ष्या करने लगी और जब उसने यह देखा कि भारत का प्रसिद्ध इतिहासकार डाक्टर बनर्जी रजनी पर जान छिड़कता है तो वह और भी जल-भुन गई। कामिनी छुट्टियां समाप्त होने से पहले ही कालेज चली गई। दीवान साहब अपनी बेटी के इस व्यवहार को बिलकुल नहीं समझ [illegible]। अगले वर्ष कामिनी छुट्टियों में घर न आई। उसने अपने पिता को पत्र लिखने भी बन्द कर दिये। दीवान साहब बेटी से मिलने कलकत्ता गये। वहां पहुंचकर उन्हें पता चला कि कामिनी इण्टरनेशनल म्यूजियम स्थापित किए जाने पर खफा थी। क्यों खफा थी? इसका कारण वे मालूम न कर सके। वे केवल इतना ही अनुमान लगा सके कि कामिनी को प्राचीन और भयानक मूर्तियां तैयार करने का व्यवसाय पसन्द नहीं था। उसका ख्याल था कि इस व्यवसाय में सारा धन नष्ट हो जाएगा। लेकिन दीवान साहब अपनी धुन के पक्के थे। वे अपनी बेटी के भ्रम के कारण यह योजना त्यागने के लिए तैयार न हुए। इण्टरनेशनल म्यूजियम स्थापित कर दिया और व्यवसाय काफी चमक उठा। इस व्यवसाय की सफलता ने कामिनी को और भी बौखला दिया। वह भी अपनी हठ पकड़ चुकी थी। उसने बी० ए० किया और बम्बई चली गई कि आत्म-निर्भर होकर अपना जीवन बिताएगी और अपने पिता के धन से कोई सरोकार नहीं रखेगी। इस बीच में डाक्टर अजयकुमार बनर्जी और रजनी का प्रेम बहुत आगे बढ़ चुका था। दीवान सुरेन्द्रनाथ ने डाक्टर बनर्जी से रजनी की शादी कर दी और उनको

अपने इण्टरनेशनल म्यूजियम की ऊपरी मंजिल रहने को दे दी। कामिनी रजनी की शादी में नहीं आई। ऊपर की मंजिल पर डाक्टर वनर्जी, रजनी और हब्शी सिद्दीकू रहते हैं। कोठी के पिछवाड़े में नौकरों के क्वार्टर हैं। वहां रूपा नाम का बावर्ची और लक्ष्मी नाम की नौकरानी रहती हैं और बायें कोने में दीवान साहब का एक अनाथ भतीजा राजेश रहता है। राजेश इतिहास में एम० ए० है। कई भाषाएं जानता है और पुरातत्त्व-विज्ञान का अच्छा विशेषज्ञ माना जाता है। वह डाक्टर वनर्जी का शिष्य भी है···।" इन्स्पेक्टर धर्मवीर सलूजा ने गहरी सांस लेते हुए कहा।

"क्या मैं पूछ सकता हूं कि ये सब बातें आपको किसने बताई हैं?"

"राजेश ने।" इन्स्पेक्टर ने उत्तर दिया, "एक बात मैं आपको बताना भूल गया। यहां पुरातत्त्व-विज्ञान का एक अंग्रेज विशेषज्ञ डिक्सन भी काम करता है—वह कैलाश कालोनी में रहता है। आज सुबह डिक्सन दस की बजाय साढ़े दस बजे काम पर आया और उसने ही सबसे पहले दीवान सुरेन्द्रनाथ को अफ्रीकी देवताओं की मूर्तियों वाले कमरे में मृत पड़ा देखा। उसने ही पुलिस को फोन किया।"

"क्या डिक्सन भी बहुत-सी भाषाएं जानता है?"

"जी हां, हिन्दुस्तानी बड़ी रवानी से बोलता है।"

"क्या मैं डिक्सन से मिल सकता हूं?"

"क्यों नहीं—ऊपर चलिए।" इन्स्पेक्टर उठकर खड़ा हो गया।

मेजर और सोनिया इन्स्पेक्टर के पीछे-पीछे ऊपर पहुंचे।

डिक्सन डाक्टर वनर्जी के ड्राइंगरूम में सोफे पर अकेला बैठा गहरे शोक में डूबा हुआ था और सिगरेट के लम्बे-लम्बे कश ले रहा था। उसने इन लोगों को भीतर आते देखा तो उनके सम्मान में उठ खड़ा हुआ। इन्स्पेक्टर ने सोनिया और मेजर से परिचय कराया और फिर बोला, "आपको कष्ट तो होगा मिस्टर डिक्सन! लेकिन क्या आप अपना पूरा बयान दोहरा सकते हैं?"

"आज मैं हमेशा की निस्वत जरा देर से यहां आया। बाहर का दरवाजा थोड़ा-सा खुला था। मुझे दरवाजे को खुला पाकर कुछ आश्चर्य हुआ क्योंकि बाहर का दरवाजा हमेशा बन्द रहता है और आने वाले को घंटी बजानी पड़ती है। खैर, मैं भीतर आया। उस दरवाजे के बाद एक और दरवाजा आता है जो अजायबघर में खुलता है। यह दरवाजा अक्सर खुला ही रहता है क्योंकि उसके पास से नीचे जाने की सीढ़ियां शुरू होती हैं। सीढ़ियां उतरने के बाद हाल कमरा आता है। उससे गुजरने के बाद दूसरे कमरों में जाया जा सकता है। कुल दस कमरे हैं, जिनमें अलग-अलग इलाकों के देवी-देवताओं की मूर्तियां हैं। मैं इन दिनों अफ्रीका के प्राचीन देवी-देवताओं पर काम कर रहा हूं। उस कमरे का दरवाजा भी थोड़ा-सा खुला था। मैं उसे पूरा खोलकर भीतर पहुंचा तो एकदम ठिठककर रह गया। कमरे में एक कोने में कोई चित लेटा हुआ था। पहले तो मैं यह समझा कि वह कोई मूर्ति है जो गिर पड़ी है। कमरे में कुछ अंधेरा था। लेकिन जल्दी ही मेरी आंखें उस अंधेरे की अभ्यस्त हो गई और मैंने देखा कि वह दीवान सुरेन्द्रनाथ थे। उनके बाजू उनके सिर के पीछे फैले हुए थे। इस पर भी मैं यही समझा कि वे गिर पड़े हैं और बेहोश हो गए हैं। मैं उनकी ओर बढ़ा। मैं बयान नहीं कर सकता कि वह कितना भयानक दृश्य था! उनके सिर पर एक मूर्ति गिर पड़ी थी और उनकी खोपड़ी टुकड़े-टुकड़े हो गई थी। वह मूर्ति उनके निकट ही औंधे मूंह पड़ी थी।"

"आपने दीवान सुरेन्द्रनाथ को मृत पाकर क्या किया?"

"मैंने डाक्टर बनर्जी को आवाज दी। ऊपर उनके रहने का कमरा है। मुझे उनकी ओर से कोई उत्तर नहीं मिला।"

"कोई उत्तर नहीं मिला ?"

"नहीं। मैं भयभीत हो गया। मैं इस बात से घबरा गया कि मैं एक मृत व्यक्ति के कमरे में अकेला था। मैं दरवाजे की ओर बढ़ा। मेरे जी में आया कि मैं चुपके से निकलकर अपने घर पहुंच जाऊं। लेकिन मैं जानता था कि अगर मैं चुपके से खिसक गया और बाद में भेद खुल गया तो लेने के देने पड़ जाएंगे।"

"उस समय घर के नौकर लोग कहां थे ?"

"वे इस बंगले के पिछवाड़े में थे। वे मेरी आवाज नहीं सुन सकते थे। मेरी आवाज अगर कोई सुन सकता था तो बस डाक्टर बनर्जी, लेकिन वे शायद अपने कमरे में थे।"

"क्षमा कीजिएगा। मैं एक बहुत स्पष्ट-सा सवाल करूंगा। क्या आपने अपने विशेष उद्देश्य से तो दीवान सुरेन्द्रनाथ को अपनी राह से नहीं हटा दिया ?"

"ओह, आप यह क्या कह रहे हैं! मुझे तो यह भय है कि अब यह कारोबार ठप हो जाएगा और हम बेकार हो जाएंगे।"

"अच्छा तो क्या आप यह बता सकते हैं कि दीवान साहब की हत्या क्यों की गई ?"

"मैं यह निर्णय नहीं कर सकता कि उनकी हत्या की गई है या यह एक दुर्घटना है। उनकी हत्या कोई क्यों कर सकता था ? वे एक दयावान व्यक्ति थे।"

"क्या दीवान साहब दस बजे से पहले अपने कमरे से बाहर निकलने के आदी थे ?" मेजर ने पूछा।

"नहीं, आज डाक्टर बनर्जी ने उनसे सुबह नौ बजे मिलने का समय तय कर रखा था। वैसे दीवान साहब सर्दियों में सुबह ग्यारह बजे से पहले अपने कमरे से कभी बाहर नहीं आते थे।"

"क्या आपको मालूम था कि डाक्टर बनर्जी ने उनसे सुबह नौ बजे मिलने का समय तय कर रखा था ?"

"जी हां—मैंने और डाक्टर बनर्जी ने कश्मीर में पुरातत्त्व की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अवशेषों की खुदाई के लिए रिपोर्ट कल रात तैयार की थी। दीवान सुरेन्द्रनाथ उस खुदाई का खर्चा उठाने के लिए तैयार थे, लेकिन पैसा लगाने से पहले वे रिपोर्ट का अध्ययन करना चाहते थे। डाक्टर बनर्जी आज सुबह नौ बजे अपनी रिपोर्ट उनको पढ़कर सुनाना चाहते थे।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि कुछ और लोगों को भी यह मालूम था कि दीवान सुरेन्द्रनाथ आज सुबह नौ बजे अपने कमरे से बाहर आएंगे...?"

"हां, राजेश और डाक्टर बनर्जी की पत्नी को भी पता था।"

इतने में एक व्यक्ति ने दबे पांव कमरे में प्रवेश किया। उसके हाथ में एक तश्तरी थी। तश्तरी में एक प्लेट थी और पानी से भरा हुआ गिलास था। प्लेट में कटा हुआ नींबू था। शायद डिक्सन ने मेजर के आगमन से पहले उस व्यक्ति से पानी और नींबू मंगवाया था। मेजर ने उस व्यक्ति की ओर ध्यान से देखा जो पानी और नींबू डिक्सन के आगे पड़ी हुई छोटी-सी तिपाई पर रखकर दरवाजे की ओर जा रहा था। "ठहरो, अगर मैं गलती नहीं करता तो तुम ही बावर्ची रूपा हो!" मेजर ने कहा।

"जी, मेरे मां-बाप ने तो मेरा नाम रूपलाल रखा था, लेकिन यह भाग्य में नहीं कि बूढ़ा हो जाने पर भी किसी के मुंह से अपना पूरा नाम सुन सकूंगा। बावर्ची ने बड़ी निरीह स्वर में कहा।

"रूपलाल!" मेजर ने प्यार-भरे स्वर में कहा, "देख लो, मैं पहला व्यक्ति

हूं, जो तुम्हारा पूरा नाम लेकर तुम्हारा भाग्य बदल रहा हूं ! अच्छा यह बताओ, क्या इस घर के सब आदमी सुबह नौ बजे इस घर में मौजूद थे ?"

"नहीं साहब ! दो आदमी नहीं थे। मेम साहब पौने नौ बजे कुछ सामान खरीदने चली गई थीं। उनके पीछे-पीछे कुछ मिनट के बाद राजेश बाबू भी घर से बाहर निकल गए थे।"

"दीवान साहब कितने बजे अपने कमरे से बाहर आए थे ?"

"नौ बजने में पांच मिनट पर।"

"क्या तुमने डाक्टर बनर्जी को जाकर यह सूचना दी थी कि दीवान साहब ऊपर आ रहे हैं ?"

"नहीं, हुजूर ! दीवान साहब ने मना कर दिया था कि मैं डाक्टर साहब से जाकर कुछ न कहूं। वे अजायबघर का एक चक्कर लगाकर ऊपर जाना चाहते थे।"

"उस समय डाक्टर साहब कहां थे ?"

"अपने पढ़ने के कमरे में।"

"और सिद्दीकू कहां था ?"

"अपने कमरे में लेटा हुआ था। उसकी तबियत खराब थी।"

"तुम दीवान साहब को अजायबघर में छोड़कर कहां गए थे ?"

"बावर्चीखाने में।"

"क्या तुमने मिस्टर डिक्सन को साढ़े दस बजे अजायबघर में प्रवेश करते दे[खा] था या उनके पैरों की आहट सुनी थी या फिर उनकी आवाज तुम्हारे कान में [पड़ी] थी ?"

"सरकार, मैं इन बातों पर ध्यान नहीं दे सका, क्योंकि ट्रांज़िस्टर पर मलि[का] पुखराज की गाई हुई ग़जल सुन रहा था।"

प्रतिशोध की देवी

इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने नेतृत्व किया। मेजर, सोनिया और डिक्सन अजायबघर में दाखिल हुए। वहां एक अनोखा वातावरण था। ऐसा मालूम होता था जैसे मनुष्य आज से तीन हजार वर्ष पहले के संसार में घूम रहा हो। जिस कमरे में दीवान सुरेन्द्रनाथ की लाश पड़ी थी, उसे अफ्रीकी आदिम जातियों की भयानक देवी-देवताओं की काली-काली मूर्तियों ने अत्यन्त रहस्यपूर्ण बना दिया था। डिक्सन के बयान के अनुसार कमरे में सचमुच प्रकाश कम था। बड़े बल्व नहीं जल रहे थे। केवल एक छोटा-सा बल्व जल रहा था। कमरे की पिछली दीवार के साथ एक अलमारी खड़ी थी। उस अलमारी के सामने दीवान साहब चित लेटे हुए थे। पिछली दीवार में एक खिड़की थी जिस पर पर्दा पड़ा हुआ था। मेजर ने पर्दा उठा दिया। कमरे में प्रकाश फैल गया। उस दीवार के साथ दायीं ओर लगभग आठ फुट ऊंचा बुत खड़ा था। मेजर ने दीवारों पर नजर डाली। जगह-जगह छोटे-छोटे बुत टंगे थे जो शिल्प-कला के शानदार नमूने थे।

"क्या ये बुत आप तैयार करते हैं ?" मेजर ने डिक्सन से पूछा।

"नहीं, मैं अकेला नहीं करता। लगभग दस देशों के साठ शिल्पकार हैं। वर्कशाप सन्त नगर में है। यह शो-रूम है।"

"उन शिल्पकारों में तो दीवान साहब का कोई शत्रु नहीं था ?"

"नहीं, वे सब दीवान साहब के भक्त थे। असल में दीवान सा[हब] कला के बड़े कद्रदान थे। वे हर कारीगर की योग्यता से अच्छी तरह परिचित [थे] [illegible] [क]ो पूरा

हक मिलता था।"

कमरे का अच्छी तरह निरीक्षण कर चुकने के बाद मेजर लाश के पास पहुंचा। उसने उंगली से तीन फुट की उस भारी मूर्ति की ओर संकेत किया जो दीवान सुरेन्द्रनाथ की मृत्यु का कारण बन गई थी। वह मूर्ति मृतक की खोपड़ी के पास पड़ी थी। खोपड़ी के नीचे खून की मोटी तह जमी हुई थी।

"यह मूर्ति अफ्रीका की मेराम्बू जाति की देवी 'जूम्बी' की है। जूम्बी प्रतिशोध, तबाही और बर्बादी की देवी है, लेकिन इस देवी के बारे में कहा जाता है कि यह सत्पुरुषों की रक्षा करती है और बुरे लोगों को मलियामेट कर देती है।" डिक्सन ने कहा।

मेजर के माथे पर बल पड़ गया और वह उस मूर्ति की ओर गहरी नज़रों से देखने लगा। फिर उसने कुछ सोचते हुए पूछा, "यह मूर्ति कहां रखी रहती थी?"

"अलमारी के ऊपर।" डिक्सन ने उत्तर दिया।

मेजर देवी जूम्बी की मूर्ति का निरीक्षण करने लगा, "इस मूर्ति के सिर पर शेर का चेहरा है और इसके माथे पर फनियर सांप लटका हुआ है। गर्दन के पीछे गोल और सफेद प्लेट है जो सूरज का चिह्न है। बहुत अच्छी मूर्ति है जो इस देवी का स्वभाव प्रकट करती है।" यह कहकर मेजर लाश पर झुक गया। इसके बाद वह घुटनों के बल बैठ गया। उसने जेब से सूक्ष्मदर्शक यन्त्र निकाला जिसे वह सदैव अपने पास रखता था। उसने वह यन्त्र अपनी दायीं आंख से लगा लिया। लाश से एक फुट के फासले पर एक बहुत ही छोटी और चपटी-सी चीज पड़ी थी। मेजर उसे उठाकर देखने लगा। वह कांसे की एक तख्ती थी जिस पर जानवरों के चित्र बने हुए थे। मेजर ने कांसे की वह तख्ती डिक्सन की ओर बढ़ाते हुए कहा, "मैं समझता हूं, इस तख्ती पर जो जानवर बने हुए हैं वे सभी चित्रलिपि हैं। यह कौन-सी भाषा है? क्या आप इसे पढ़ सकते हैं?"

"जी हां, यह सुआहिली भाषा का पुराना रूप है।" डिक्सन ने उस तख्ती को उलट-पलटकर देखते हुए कहा, "यह मेराम्बू जाति के सरदार बोरगेबो की मुहर है। दूसरी सदी में वह अफ्रीका के एक विशाल भाग का शासक था। इस मुहर पर लिखा है—'बोरगेबो—पहाड़ों से अधिक शक्तिशाली, सूरज से अधिक प्रकाशमान'।"

मेजर ने वह मुहर डिक्सन से वापस ले ली और उसे देखते हुए बोला, "एक बात मेरी समझ में नहीं आई। इस पुरानी मुहर में आधुनिक प्रकार का पिन किसने लगाया है? शायद कोई इसे टाई-पिन के रूप में इस्तेमाल करता रहा है। मैं यह जानना चाहता हूं कि यह टाईपिन किसका है?"

डिक्सन अपना सिर खुजलाने लगा और कुछ हिचकिचाते हुए बोला, "यह टाईपिन डाक्टर बनर्जी का है। यह टाई-पिन उनकी पत्नी ने उन्हें उपहार स्वरूप दिया था। यह मुहर रजनी के पिता प्रोफेसर मोराविया को एक आदिवासी ने दी थी।"

मेजर ने इन्स्पेटर धर्मवीर की ओर मुंह फेरते हुए कहा, "आप जरा डाक्टर बनर्जी को यहां बुला लाइए। क्या आप उनसे मिलकर पूछताछ कर चुके हैं?"

"नहीं, डाक्टर साहब सोए पड़े हैं। मैं जाकर देखता हूं। शायद अब जाग गए हों।" इन्स्पेक्टर दरवाजे से निकलकर ऊपर चला गया।

मेजर ने दीवान सुरेन्द्रनाथ की भिंची हुई दायीं मुट्ठी मुश्किल से खोली। मुट्ठी में एक कागज था जो बुरी तरह मसला हुआ था। मेजर ने बड़ी सावधानी से उसे खोला। डिक्सन बड़ी भेदती नजरों से मेजर की हर हरकत का निरीक्षण कर रहा था। कागज जब पूरी तरह खुल गया तो डिक्सन ने कहा, "यह तो कश्मीर में खुदाई-सम्बन्धी रिपोर्ट है जो कल रात मैंने और डाक्टर साहब ने मिलकर तैयार की थी।"

"मैं समझता हूं कि जब दीवान साहब की हत्या की गई थी, उस समय यह रिपोर्ट उनके हाथ में थी। रूपा का बयान है कि दीवान साहब डाक्टर साहब से मिलने ऊपर नहीं गए थे। फिर यह रिपोर्ट कैसे उनके हाथ लग गई? कहीं डाक्टर साहब ने कल रात ही तो यह रिपोर्ट उनको नहीं भिजवा दी थी?"

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।" डिक्सन बोला।

इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने नीचे आकर सूचना दी कि डाक्टर बनर्जी अभी तक सोए पड़े हैं। इस पर मेजर के होंठ गोल हो गए और उसके होंठों से सीटी की हल्की-सी आवाज निकलने लगी।

इन्स्पेक्टर धर्मवीर को जब इस नई खोज का पता चला तो उसने कहा, "टाई पिन और रिपोर्ट! डाक्टर बनर्जी के सिवा दीवान साहब का भला और कौन हत्यारा हो सकता है!"

मेजर मुस्कराया और बोला, "इन्पेक्टर साहब, क्या कभी ऐसे हत्यारे से आपका वास्ता पड़ा है जो अपने अपराध के इतने स्पष्ट चिह्न अपने पीछे छोड़ जाए और फिर जाकर आराम से सो जाए?"

इन्स्पेक्टर ने कहा, "हत्यारा घबरा भी तो जाता है।"

मेजर ने इन्स्पेक्टर की बात पर कोई ध्यान न दिया। वह डिक्सन से बोला, "हत्या की वारदात के समय इस घर में रूपा, लछमी, डाक्टर बनर्जी और सिद्दीकू मौजूद थे?"

"जी हां।"

"और कल रात जब रिपोर्ट तैयार की जा रही थी तो उस समय कौन-कौन वहां मौजूद था?"

"मैं, डाक्टर बनर्जी, मिसेज रजनी और राजेश। कभी-कभी सिद्दीकू और रूपा भी भीतर आ जाते थे।"

"डाक्टर बनर्जी किस लिबास में थे?"

"उन्होंने नाइट सूट पहन रखा था।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि उनका टाई पिन कोई भी निकालकर ले जा सकता था।"

"हां, लेकिन रिपोर्ट! रिपोर्ट तो रात के ग्यारह बजे पूरी हुई थी। दो-चार बातें फिर भी रह गई थीं। डाक्टर साहब ने कहा था कि वे सुबह उठकर रिपोर्ट को अन्तिम रूप दे देंगे। यह रिपोर्ट जो आपने दीवान साहब की मुट्ठी से बरामद की है, हर लिहाज से पूर्ण है। इसका मतलब है कि रिपोर्ट सुबह डाक्टर साहब की मेज से उठाई गई या···" डिक्सन कुछ कहते-कहते रुक गया।

"यह रिपोर्ट ही तो उलझन पैदा कर रही है।" मेजर ने कसमसाते हुए कहा, "क्या यह रिपोर्ट तैयार करना जरूरी था?"

"जी हां, दीवान साहब यह जानना चाहते थे कि कश्मीर में खुदाई पर ठीक-ठीक कितना रुपया खर्च होगा।" किंचित् रुककर वह फिर बोला, "दीवान साहब पर उनकी बेटी की इन बातों का प्रभाव होने लगा था कि वे एक व्यर्थ की मुहिम में पैसा बर्बाद कर रहे हैं। इसलिए वे कश्मीर में खुदाई की मुहिम पर अधिक धन खर्च करने के लिए तैयार नहीं थे।" इतने में हब्शी सिद्दीकू वहां आ पहुंचा। उसने डिक्सन को देखकर सलाम किया और बोला, "मेरी तबीयत अब कुछ ठीक हो गई है। मालिक की मौत का मुझे बहुत दुःख है। वे बड़े दयालु थे। मैं तो यह सोचकर कांप रहा हूं कि जब बेटी रजलीमू यहां आएगी तो उस पर क्या बीतेगी?" सिद्दीकू रजनी को रजलीमू के नाम से पुकारता था।

सिद्दीकू का कद मझोला और बदन गठा हुआ था। उसकी आंखों में रंगभेद से पैदा होने वाली घृणा की तीखी चमक थी। उसने मेजर, सोनिया और इन्स्पेक्टर धर्मवीर की ओर लापरवाही से देखते हुए कहा, "क्या मैं मालिक को एक नजर देख सकता हूं?"

"क्यों नहीं!" मेजर ने उत्तर दिया।

उसने दीवान साहब के दोनों पैर अपने हाथों से छुए और फिर अपने दोनों हाथों की उंगलियां अपने माथे पर फेरने लगा। उसकी आंखें सजल हो उठी थीं। एकाएक उसकी दृष्टि लाश के पास पड़ी हुई मूर्ति पर जमकर रह गई। उसके शरीर में कंपकंपी-सी पैदा हुई और वह हाथ जोड़कर एक कदम पीछे हट गया। अब उसकी आंखें भय से उबली पड़ रही थीं। उसने कांपते हुए स्वर में कहा, "जूम्बी, तेरे बदला लेने के ढंग भी निराले हैं। तेरा वार कभी खाली नहीं जाता। तू अपना बदला लेने के लिए कहां-कहां पहुंच जाती है। तू उन लोगों को कभी क्षमा नहीं करती जो तेरे राज्य में आकर हमारे पुरखों की कब्रें खोदते हैं।" इसके बाद सिद्दीकू ने मेजर और इन्स्पेक्टर धर्मवीर की ओर घूमते हुए कहा, "मैंने दीवान साहब और प्रोफेसर मोराबियो को मना किया था कि वे हमारे इलाके में खुदाई से बाज आ जाएं। रजलीमू और कमलीमू (कामिनी) की माताओं की मौत के बाद मैंने उनको दोबारा चेतावनी दी थी। यह मेरी बात पर ध्यान न देने का परिणाम है।"

सिद्दीकू के इन शब्दों का सभी उपस्थित जनों पर गहरा प्रभाव हुआ। एकमात्र मेजर ही था जो प्रभावित नहीं हुआ था। उसने कहा, "तुम यह बताओ कि सुबह से अब तक तुम कहां थे?"

"ऊपर अपने कमरे में था। मेरी तबीयत ठीक नहीं थी।"

"तुमने किसी को अजायबघर में दाखिल होते भी नहीं देखा?"

"किसी को नहीं। ऊपर मेरा कमरा पिछले भाग में है। वहां से मैं कुछ भी नहीं देख सकता। उसकी खिड़की से केवल बाहर का आकाश देख सकता हूं।"

"अच्छा, तो यह बताओ कि सामने की अल्मारी पर देवी जूम्बी की मूर्ति किसने रखी थी?"

"मैंने रखी थी।" सिद्दीकू ने उत्तर देते हुए कहा, "भारी चीजें उठाने के लिए मुझे ही बुलाया जाता है।"

"क्या अलमारी के पीछे का पर्दा भी तुमने हटाया था?"

"जी हां, डाक्टर बनर्जी ने यही हुक्म दिया था।"

सिद्दीकू चला गया तो मेजर ने इन्स्पेक्टर से पूछा, "आप अपने साथ कितने आदमी लाए हैं और वे सब कहां हैं?"

"दो सब-इन्स्पेक्टर हैं। वे इस कोठी के इर्द-गिर्द गश्त लगा रहे हैं और अपने तौर पर पूछताछ कर रहे हैं। तीन कांस्टेबल हैं जो मैंने अलग-अलग जगहों पर तैनात कर दिए हैं।"

"बस इतने आदमी काफी हैं।" मेजर बोला, "क्या आपने फोटोग्राफर और उंगलियों के निशानों के माहिर को फोन कर दिया है?"

"जी हां, वे आते ही होंगे।" इन्स्पेक्टर ने जम्हाई लेते हुए कहा। इन्स्पेक्टर ने दीवान सुरेन्द्रनाथ की लाश को जरा एक ओर को खिसका दिया। वह उस स्थान को ध्यान से देखने लगा जहां खून जम गया था। उसकी आंखों में चमक पैदा हुई। वह उठकर पिछली दीवार की ओर गया जहां एक चक्करदार सीढ़ी ऊपर जाती थी। इन्स्पेक्टर उस सीढ़ी तक जाकर वापस आया और उसने डिक्सन से पूछा, "डाक्टर बनर्जी किस तरह के जूते पहनते हैं?"

"जब घर में होते हैं तो टेनिस शू पहनते हैं।" डिक्सन बोला।

इन्स्पेक्टर के चेहरे पर मुस्कराहट का प्रकाश फैला गया, "मेजर साहब, मैं समझता हूं कि अब हमें ज्यादा माथा मारने की जरूरत नहीं। पहेली हल हो चुकी है। आप मेरे साथ जरा इधर आइए।" इन्स्पेक्टर यह कहकर मेजर को उस चक्करदार सीढ़ी की ओर ले गया और फिर फर्श की ओर उंगली से संकेत करते हुए बोला, "आप जरा पैर का यह निशान देखिए। यह रबड़ के जूते का निशान है। इस जूते के तले ने छोटे-छोटे चौकोर निशान भी बना दिए हैं।"

मेजर ने झुककर खून से बना हुआ निशान देखा और बड़े गम्भीर स्वर में धीमे से कहा, "इन्स्पेक्टर साहब, आप ठीक कहते हैं।"

"अब आप जरा इधर आइए।" इन्स्पेक्टर लाश और सीढ़ी के बीच एक स्थान पर जाकर रुक गया। मेजर ने देखा कि वहां भी खून के धब्बे थे।

"क्या अब भी किसी सन्देह की गुंजाइश रह जाती है?" इन्स्पेक्टर ने पूछा, "यह हत्या का एक स्पष्ट मामला है। सारी बातें इसी ओर संकेत करती हैं कि डाक्टर बनर्जी ने दीवान साहब की हत्या की है।"

"क्षमा कीजिएगा। मैं इतनी जल्दी कोई परिणाम नहीं निकाला करता। टेनिस शू, खून के धब्बे, पैर का खून लगा निशान—इनसे यह कहां सिद्ध होता है कि हत्यारा डाक्टर बनर्जी है? मेरी बुद्धि नहीं मानती कि डाक्टर बनर्जी ऐसा सुशिक्षित व्यक्ति ऐसी बर्बरता से अपने उपकारी की हत्या कर सकता है और फिर अपनी नादानी का प्रमाण देते हुए यहां अपना टाई पिन, अपनी रिपोर्ट और अपने पैरों के निशान छोड़कर जा सकता है।"

प्राचीन काल की महारानी

मेजर और सोनिया खाना खा चुकने के बाद मेहमानखाने में बैठे विश्राम कर रहे थे। मेजर को किसी गहरे सोच में डूबा हुआ देखकर सोनिया ने शिकायत की, "आपको समझना किसी पुराने जमाने का हस्तलेख पढ़ने की तरह है। आप पल तोला पल में माशा होते हैं और कभी तो घटकर रत्ती-भर रह जाते हैं। आप तो कह रहे थे कि आप किसी विशेष काम से दिल्ली आये हैं। फिर आपने भिड़ों के छत्ते में क्यों हाथ डाल दिया है?"

"मनुष्य के जीवन में संयोग बहुत शक्तिशाली होते हैं। मैं जिस विशेष काम दिल्ली से आया था। वह संयोग से इसी इण्टरनेशनल म्यूजियम में बनता दिखाई दे रहा है।"

इण्टरनेशनल म्यूजियम में इन्स्पेक्टर धर्मवीर बड़ी अधीरता से मेजर बलवन्त की प्रतीक्षा कर रहा था। डाक्टर बनर्जी अभी तक सोए पड़े थे। राजेश और [illegible] रजनी अभी वापस नहीं आए थे। फोटोग्राफर लाश के चित्र ले चुका था और [illegible] के निशानों का माहिर भी अपना काम समाप्त कर चुका था। तभी मेजर और [illegible] आ पहुंचे।

"हमें कोताही से काम नहीं लेना चाहिए।" मेजर ने कहा।

मेजर डाक्टर बनर्जी के पढ़ने के कमरे से गुजरकर उनके [illegible] पहुंच गया जिसका दरवाजा भीतर से बन्द था। उसने बाहर की [illegible] से खटखटाई। कुछ क्षणों बाद कमरे के भीतर से चटख दरवाजा खोला गया। दरवाजे के पीछे चालीस-

व्यक्ति खड़ा था। उसने गहरे नीले रंग का नाइटसूट पहन रखा था। उसके बा बिखरे हुए थे और आंखें नींद के बोझ से भिंची हुई थीं। क्षण-भर के लिए वह सब पहचानने की कोशिश करता रहा—जब वह ठीक ढंग से देखने के योग्य हो गया अपने सामने तरह-तरह के लोगों को देखकर चकित रह गया।

"आह!" उसके मुंह से निकला, "दोपहर हो चुकी है। आज तो मैं बा देर तक सोता रहा। क्षमा कीजिए, आप सब मेरे लिए अपरिचित हैं। खैर, आइए। आपका स्वागत करता हूं।" डाक्टर बनर्जी पढ़ने के कमरे में प्रविष्ट हुआ और उस सबको बैठ जाने का संकेत किया, "मुझे डाक्टर बनर्जी कहते हैं।" उसने बैठते हु कहा। इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने अपना, मेजर और सोनिया का परिचय कराया।

"क्या हुआ है? क्या रात को चोरी तो नहीं हो गई!" परिचय के बाद डाक्टर बनर्जी ने आश्चर्य से पूछा, "मैं हमेशा डरता रहता हूं, लेकिन दीवान साहब चौकीदा रखना पसन्द ही नहीं करते।"

"डाक्टर साहब, चोरी की वारदात तो नहीं हुई, लेकिन…," इन्स्पेक्टर धर्म वीर अपनी बात कहते-कहते रुक गया, क्योंकि मेजर डाक्टर के पैरों की ओर देख रह था। इन्स्पेक्टर भी डाक्टर के पैरों की ओर देखने लगा। उसे बड़ी निराशा हुई क्योंकि डाक्टर ने टेनिस शू नहीं, बल्कि कपड़े के स्लीपर पहन रखे थे।

"डाक्टर साहब, चोरी की वारदात तो नहीं हुई, लेकिन उससे भी ज्याद दुःखद दुर्घटना हो गई है।" इन्स्पेक्टर ने बात जारी रखते हुए कहा, "आप जरा नीचे अजायबघर में चलिए। हमें आपकी सहायता की जरूरत है।"

"दुर्घटना! कैसी दुर्घटना?" डाक्टर ने उठते हुए कहा।

सीढ़ियां उतरते हुए मेजर ने कहा, "दीवान सुरेन्द्रनाथ की मृत्यु हो गई है।"

"दीवान सुरेन्द्रनाथ की मृत्यु?" डाक्टर ने आश्चर्य से कहा, "नहीं-नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है! अभी तो रात को मैंने उनसे भेंट का समय तय किया था। उनको सुबह नौ बजे मेरे पास आना था—ओह, दीवान साहब की मृत्यु हो गई है? मेरे काम का क्या होगा! मेरा तो जीवन ही नष्ट हो जाएगा!"

इन्स्पेक्टर ने देखा कि डाक्टर की टांगें कांप रही थीं और वह बड़ी मजबूती से रेलिंग का सहारा लेकर सीढ़ियां उतर रहा था।

"उनकी हत्या कर दी गई है।" इन्स्पेक्टर ने कहा।

"हत्या—ओह, नहीं!"

अजायबघर में पहुंचकर डाक्टर को अफ्रीकी देवी-देवताओं की मूर्तियों वाले …रे में ले जाया गया और मेजर दीवान सुरेन्द्रनाथ की लाश की ओर संकेत किया। डाक्टर दो मिनट तक निश्चेष्ट-सा एकटक दीवान साहब की लाश की ओर देखता रहा। फिर उसकी नजरें देवी की मूर्ति पर जमकर रह गईं। इस बीच में हब्शी सिद्दीकू भी दबे पांव वहां चला आया था।

डाक्टर ने उसे देखा तो उसके तन-बदन में जैसे आग लग गई, "सिद्दीकू!" उसने कर्कश स्वर में कहा, "इसका क्या मतलब है? तुमने मेरे जीवन को नरक बना रखा है। तुम हमेशा मेरे रास्ते में बाधाएं खड़ी कर देते हो। तुम मेरे विरुद्ध मेरी पत्नी के कान भरते रहते हो। मेरी पत्नी तुम पर विश्वास करती है। उसे तुमसे कुछ लगाव भी है। इसीलिए मैं तुम्हें सहन करता आ रहा हूं, वर्ना…" डाक्टर होंठों से निकलते झाग पोंछने के लिए रुका, "जो व्यक्ति मेरे जीवन की सबसे बड़ी आकांक्षा पूरी कर सकता था, उसकी हत्या कर दी गयी है। बताओ, किसने दीवान साहब की हत्या की है?"

हब्शी ने दबते हुए किंचित् तीखे स्वर में कहा, "मैं उनकी हत्या के बारे में

कुछ नहीं जानता। मैं तो बस इतना ही समझ सका हूं कि देवी जुम्बी ने बदला लिया है।"

"जूम्बी! एक पत्थर की मूर्ति किसी से क्या बदला ले सकती है? सुनो सिद्दीकू! तुम इस समय हब्शियों और जंगलियों के संसार में नहीं हो। तुम एक सभ्य-सुसंस्कृत दुनिया में सांस ले रहे हो। सच बताओ, दीवान साहब की हत्या किसने की है?"

"मैं तो अपने कमरे में बीमार पड़ा था।"

"तुम झूठ बोलते हो।" डाक्टर बनर्जी क्रोध में सिद्दीकू की ओर बढ़ा, लेकिन मेजर ने उसे बांह से पकड़ लिया और कहा—"डाक्टर साहब! हम जानते हैं कि इस समय आपके दिल की क्या हालत हो रही है, लेकिन इस तरह उत्तेजित होने से मामला सुलझ नहीं सकेगा।"

"आप नहीं जानते, यहां जरूर कोई फितना जगाया जा रहा है।"

"जगाया क्या जा रहा है, फितना जाग चुका है।" मेजर ने कहा, "आप जरा शांत हो जाइए और यह बताइए कि आज रात आप किस समय सोए थे।"

"रात-भर नहीं सो सका था। कहीं सुबह जाकर मेरी आंख लगी थी—और सोने से पहले रूपा दो टोस्ट और काफी बनाकर मेरे लिए लाया था।"

"उस समय कितने बजे थे?"

"छः बजे होंगे। टोस्ट मुझसे खाएं नहीं गए—काफी मैंने जरूर पी ली थी। बस मुझे इतना याद है।"

"आप रात-भर क्यों नहीं सोए थे?"

"मुझे दीवान् साहब के लिए एक रिपोर्ट तैयार करनी थी। मुझे क्या खबर थी कि जब मैं सोकर उठूंगा तो अपने उपकारी से वंचित हो जाऊंगा। आह!"

"आपने अपनी रिपोर्ट किस समय पूरी की थी?" मेजर ने पूछा।

"सुबह साढ़ पांच बजे।"

"वह रिपोर्ट कहां है?"

"मेरे पढ़ने के कमरे की मेज पर। ठहरिए, मैं वह रिपोर्ट लाता हूं।" डाक्टर जाने लगा तो मेजर ने हाथ के संकेत से उसे रोक लिया।

"वह रिपोर्ट मेरे पास है। यह रिपोर्ट दीवान साहब की मुट्ठी में थी।" मेजर ने जेब से रिपोर्ट का कागज निकालते हुए कहा।

डाक्टर बनर्जी ने उस कागज की ओर देखा और उसकी आंखें फटी की फटी र गईं, "यह कागज दीवान साहब की मुट्ठी में था?"

"जी हां, ऐसा मालूम होता है कि जब आप सो रहे थे तो कोई आपकी मेज प से यह रिपोर्ट उठा लाया था।"

"हो सकता है कि स्वयं दीवान साहब उठा लाए हों।" डाक्टर ने कहा।

"क्या आप अपने पढ़ने के कमरे का दरवाजा खुला रखते हैं?"

"जी हां, लेकिन मैं यह पूछना चाहता हूं कि मेरी मेज पर से रिपोर्ट उठाई त किसने?"

"यही तो हम भी जानना चाहते हैं।" मेजर ने कहा, "डाक्टर साहब, क्या आप बता सकते हैं कि राजेश कहां गया है? वह सुबह से घर में नहीं है।"

"मैंने कल रात उससे कहा था कि वह सर्वे विभाग में जाये और [illegible] कश्मीर के इलाके का नक्शा नकल करके लाए जहां हम पुरातत्त्व [illegible] खुदाई शुरू करना चाहते हैं। राजेश भी मेरी इस मुहिम में बड़ी दिलचस्पी [illegible] इसलिए वह सुबह ही घर से निकल गया होगा।"

"वह अभी आया क्यों नहीं ?"

"काम समाप्त करके ही आएगा। वह बड़ा जिम्मेदार युवक है।"

धर्मवीर को लगा कि वह डाक्टर से प्रश्न पूछने में पीछे रहा जाता है, इसलि उसने प्रश्न किया, "डाक्टर साहब, आपके पास एक टाई पिन है जो अफ्रीका मेताम्बू जाति के सरदार बोरोगेबो की मुहर का बना हुआ है ?"

"मेरे सोने के कमरे में होगा। आप उसे देखना चाहते हैं ?"

"वह टाई पिन हमारे पास है—और दीवान साहब की लाश के पास प हुआ था।"

"मेरी तो बुद्धि काम नहीं कर रही।" डाक्टर बोला।

"सुनिए, हम यहां यह जानने के लिए आये हैं कि दीवान साहब की हत्य किसने की है।" इन्स्पेक्टर ने किंचित् कड़े स्वर में कहा, "इस समय तक हमें जो कु मालूम हुआ है उससे यही सिद्ध होता है कि आपके सिवा और किसी ने दीवान साह की हत्या नहीं की। आपकी रिपोर्ट और आपके टाई पिन की शान अलग रही, लाश सीढ़ियों तक खून लगे कदमों के निशान भी मौजूद हैं।"

मेजर ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, "इन्स्पेक्टर साहब, आप बिलकुल ठी कहते हैं, लेकिन डाक्टर साहब को इस प्रकार परेशान करने से कुछ लाभ नहीं होगा।"

"क्या आप समझते हैं कि मैंने दीवान साहब की हत्या की है ?" डाक्टर ने इन्स्पेक्टर से सम्बोधित होते हुए कहा, "मैं आपको यह बता दूं कि मैं आज सुबह छ: बजे से सोया पड़ा हूं। मुझे तो इस बात का भी ज्ञान नहीं कि दीवान साहब कब यहां आए और कब उनकी हत्या कर दी गई।"

इतने में बाहर कुछ शोर हुआ और फिर एक नारी-स्वर सुनाई दिया, "यह क्या बेहूदगी है ? यह मेरा घर है—और मुझे अपने घर में नहीं घुसने दिया जा रहा।"

कुछ क्षण बाद सत्ताईस-अट्ठाईस वर्ष की एक अत्यन्त रूपवती स्त्री ने कमरे में प्रवेश किया। उसने बहुत ही चुस्त वस्त्र पहन रखे थे जिनमें से उसके शरीर का अंग-अंग फूटा पड़ता था। उसके सिर पर जो टोपी थी, वह किसी प्राचीन रोमन महारानी के ताज जैसी थी। उसने वहां अपरिचित व्यक्तियों की मौजूदगी की कोई परवाह न की और आते ही अपने पति के गाल पर चुम्बन देकर बोली, "यहां यह क्या हो रहा है ?" फिर एकाएक उसकी नजर दीवान सुरेन्द्रनाथ की लाश पर पड़ी और वह अपनी छाती पर हाथ रखकर मौन हो गई।

रजनी के गालों पर आंसू ढलक आए।

"ये लोग कह रहे हैं कि तुम्हारे चाचा की हत्या कर दी गई है—और मुझे [illegible] समझा जा रहा है।"

मेजर ने फिर हस्तक्षेप किया, "देखिए, डाक्टर साहब गलतबयानी से काम ले रहे हैं। हमने इन पर ऐसा कोई आरोप नहीं लगाया। हम इस दुःखद दुर्घटना की छानबीन कर रहे हैं। बात यह हुई है कि इनका टाई पिन हमें दीवान साहब की लाश के पास मिला।"

"टाई पिन मिला है तो इससे क्या होता है ?"

"आपने बिल्कुल ठीक कहा है कि लाश के पास डाक्टर साहब के टाई पिन का मिलना इनको अपराधी नहीं बना देता, क्योंकि कोई व्यक्ति भी वह टाई पिन उठाकर लाश के पास रख सकता था।"

रजनी के स्वर में फिर दुःख-दर्द सिमट आया, "जिस कमीने ने भी यह अत्याचार किया है, मैं चाहती हूं कि उसे तुरन्त गिरफ्तार किया जाए। मैं आपको हर संभव

सहायता करने के लिए तैयार हूं।"

"धन्यवाद !" मेजर ने कहा, "अगर आपकी सहायता की जरूरत पड़ी तो जरूर आपको कष्ट दिया जाएगा। इस समय आपकी सहायता की जरूरत नहीं है। आप जाकर आराम कीजिए। थोड़ी देर के बाद मैं आपसे कुछ पूछने के लिए आऊंगा।"

रजनी चली गई तो हब्शी सिद्दीकू भी उसके पीछे-पीछे हो लिया।

दस मिनट के भीतर-भीतर दीवान सुरेन्द्रनाथ की लाश अजायबघर से उठाकर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दी गई।

मेजर अब उस अलमारी को ध्यान से देख रहा था जिस पर बदले या प्रतिशोध की देवी जूम्बी की मूर्ति रखी गई थी। फिर वह अलमारी के पीछे लटके हुए पद को गहरी नजरों से देखने लगा। उसकी नजर उस गोल और लम्बी लकड़ी पर जमी हुई थी जिसमें पड़े हुए पीतल के छल्लों से पर्दा टंगा हुआ था। मेजर की नजरें पद पर से घूमती हुई जमीन पर जमे हुए खून के बहुत बड़े धब्बे पर आकर रुक गइ। ऐसा मालूम होता था कि वह नजरों ही नजरों में पर्दे और खून के उस धब्बे के बीच का फासला माप रहा था। "आश्चर्य है !" मेजर बड़बड़ाया। इसके बाद उसने एक कुर्सी वहां रख दी जहां अलमारी के सामने सुरेन्द्रनाथ का फटा हुआ सिर पड़ा रहा था। इसके बाद वह कुर्सी पर चढ़कर अलमारी के ऊपरी भाग का निरीक्षण करने लगा। "आश्चर्य है ! बिल्कुल अचम्भा !" मेजर फिर बड़बड़ाया। उसने अपनी जेब से फिर सूक्ष्मदर्शक यन्त्र निकाला और अपनी दाईं आंख पर उस शीशे को टिकाकर अलमारी का ऊपरी भाग बड़े गोर से देखने लगा। फिर उसने अलमारी के ऊपरी भाग से कोई चीज उठाई और जल्दी से अपनी जेब में डाल ली।

"हत्या की यह बहुत ही अनोखी वारदात है !" उसने कुर्सी पर से उतरते हुए कहा।

कुछ क्षण बाद राजेश ने अजायबघर में प्रवेश किया। वह क्रोध से लाल हो रहा था। उसने डाक्टर बनर्जी को सम्बोधित करते हुए कहा, "इन लोगों को यहां आने की किसने इजाजत दी है ? ऐसा मालूम होता है कि इन्होंने हमारे मकान पर कब्जा कर लिया है—यह क्या हिमाकत है ?" मेजर ने राजेश को सिर से पांव तक देखा।

"राजेश ! तुम्हारे चाचा की किसी ने हत्या कर दी है और ये लोग यहां तफतीश के लिए आए हैं। अभी पन्द्रह मिनट पहले तुम्हारे चाचा की लाश यहीं इस कमरे में पड़ी थी।" डाक्टर बनर्जी ने कहा।

"मेरे चाचा की हत्या कर दी गई है !" राजेश ने धीमे स्वर में कहा और उसका रंग पीला पड़ गया। वह अलमारी के सामने रखी हुई कुर्सी पर जा बैठा। कुर्सी पर बैठते ही वह धम् से फर्श पर गिर पड़ा। वह बेहोश हो चुका था।

खून में लिथड़ा जूता

राजेश को बड़ी मुश्किल से होश में लाया गया। होश में आने पर भी वह फटी-फटी नजरों से चारों ओर देखता रहा और फिर बुझी हुई आवाज में बोला, "मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि मेरे चाचा की हत्या कर दी गई है। अगर ऐसे भद्र पुरुष की हत्या की जा सकती है तो फिर इस संसार का कोई भविष्य नहीं है।" इसके बाद उसने डाक्टर बनर्जी की ओर मुंह फेरते हुए कहा, "वे तो आज कश्मीर की मुहिम के बारे में आपसे मिलने वाले थे ?"

"हां, अब कश्मीर की मुहिम एक सपना बनकर रह जाएगी।" डाक्टर बनर्जी ने खिन्न स्वर में कहा।

"मिस्टर राजेश, लगभग साढ़े नौ बजे आपके चाचा के सिर पर जूम्बी मूर्ति गिर पड़ी। उनका सिर फट गया। मिस्टर डिक्सन साढ़े दस बजे आए तो उन्ह आपके चाचा को इस अलमारी के सामने मृत पड़ा पाया। ये इन्स्पेक्टर धर्मवीर हैं- और यह सार्जेण्ट सोनिया है।" मेजर ने उन दोनों की ओर संकेत करते हुए कहा।

"मैं उस कुत्ते की गर्दन दबोचना चाहता हूं जिसने इतना बड़ा पाप किया है- मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं?"

"आपका यह क्रोध इस समय बिल्कुल बेकार है। आप अभी हमारी इत सहायता कीजिए कि हमें यह बताइए कि आप आज सुबह कितने बजे घर से बा गये थे?"

"आठ पचपन पर।"

"आप बाहर का दरवाजा खुला तो नहीं छोड़ गए थे?"

"नहीं।"

"आप सीधे सर्वे विभाग में गए थे?"

"हां, मुझे वहां से कश्मीर के एक विशेष इलाके का नक्शा नकल कर लाना था।"

"क्या वह नक्शा आप नकल करके लाए हैं?" मेजर ने पूछा।

"हां।"

"इस समय सवा तीन बजे हैं। इसका मतलब यह है कि आप लगभग सवा ६ घण्टे तक घर से बाहर रहे हैं।"

मेजर ने अपनी जेब से एक छोटी-सी नोटबुक निकाली और जान-बूझक अपनी जेबों में कुछ ढूंढ़ने लगा। फिर उसने बड़े ही कोमल स्वर में राजेश से कह "मेरी पेन्सिल खो गई है—आपके पास पेन्सिल तो नहीं है?"

"है।" राजेश ने पेन्सिल निकालकर मेजर को दे दी। मेजर उस पेन्सिल प छपा हुआ नाम पढ़ने लगा, "फवर ३१९, अच्छी पेन्सिल है। क्या आप हमेशा इस मार्के की पेन्सिल इस्तेमाल करते हैं?"

"मुझे बस इसी मार्के की पेन्सिल पसन्द है।"

मेजर ने पेन्सिल से नोटबुक में कुछ लिखा और पेन्सिल लौटा दी, "धन्यवाद! आप बुरा न मानिएगा। आप ड्राइंग रूम में चलकर बैठिए। हम थोड़ी देर के बा आपसे कुछ और सवाल पूछेंगे।"

राजेश कुर्सी पर से उठा और दरवाजे की ओर बढ़ा। मेजर ने आवाज दी "सिद्दीकू को कुछ देर के लिए यहां भेज दीजिएगा।"

सिद्दीकू आकर एक कोने में खड़ा हो गया।

"सिद्दीकू, उस कुर्सी पर खड़े हो जाओ और हमें यह बताओ कि तुमने जूम्बी की मूर्ति उठाकर अलमारी पर किस जगह रखी थी!" मेजर ने हुक्म दिया। सिद्दीकू कुर्सी पर खड़ा हो गया।

"देखो सिद्दीकू, अलमारी पर हाथ न रखना। अलमारी के पीछे का पर्दा भी न छूना।" मेजर ने कहा और दूसरी कुर्सी खींचकर सिद्दीकू के बराबर खड़ा हो गया।

सिद्दीकू ने अलमारी के ऊपरी भाग के एक सिरे की ओर संकेत किया और बोला, "मैंने देवी जूम्बी की मूर्ति यहां रखी थी। आप देख सकते हैं कि इस जगह मूर्ति के पेंदे का निशान भी बना हुआ है।"

"हां, मैं देख रहा हूं।" मेजर ने कहा, "मैं समझता हूं कि आज सुबह जब दीवान सुरेन्द्रनाथ इस कमरे में आए थे तो जूम्बी की मूर्ति अलमारी के सिरे पर रखी हुई थी।"

लने लगा। उसने वह जूता अपने हाथ में लेकर डाक्टर बनर्जी को दिखाते हुए कहा, "डाक्टर साहब, क्या यह जूता आपका है?"

"जी हां, मेरा ही है।"

इन्स्पेक्टर ने चक्करदार सीढ़ी के पास खून के धब्बे पर वह जूता रखकर देखा जहां एक पैर का निशान बना हुआ था। वह जूता पैर के उस निशान पर बिल्कुल फिट बैठ गया। इन्स्पेक्टर ने वापस आते हुए कहा, "डाक्टर साहब! आपके विरुद्ध अब इतने प्रमाण जमा हो गए हैं कि अगर मैं आवश्यक कार्यवाही नहीं करूंगा तो अपने उच्चाधिकारियों की नजर में अपराधी बन जाऊंगा।"

"मेरे ये जूते कल रात मेरे सोने के कमरे में थे। ये यहां कैसे आ गए? न जाने रात इस घर में क्या कुछ होता रहा है!"

"यही तो मैं जानना चाहता हूं कि इस घर में क्या कुछ होता रहा है और आगे क्या कुछ होगा?" मेजर ने कहा।

"देखिए मेजर साहब, आप डाक्टर साहब को अपराधी नहीं मान रहे हैं, लेकिन अब मैं अपना कर्तव्य पूरा किए बिना नहीं रह सकता।" इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने कहा और सब-इन्स्पेक्टर गुरुदयाल को हुक्म दिया, "डाक्टर साहब को हिरासत में ले लो। इनके विरुद्ध दीवान सुरेन्द्रनाथ की हत्या के अभियोग में मुकदमा दर्ज कर लो।"

मेजर बलवन्त गम्भीर हो गया। फिर अपने सिर को झटका दिया और अलमारी के निकट चला गया। वह खड़ा कुछ सोचता रहा। मुड़ा और इन्स्पेक्टर धर्मवीर से बोला, "जरा मुझे रबड़ का वह जूता दिखाइए।"

इन्स्पेक्टर ने बड़े गर्व से खून में सना हुआ वह जूता मेजर के हवाले कर दिया। मेजर ने मुस्कराते हुए कहा, "डाक्टर साहब के दो पैर हैं। उनके दूसरे पैर का जूता कहां है?"

"वह तो हमें नहीं मिला।" सब-इन्स्पेक्टर ने कहा।

"जब तक इस जूते का दूसरा पैर न मिले, डाक्टर साहब को अभियोगी नहीं ठहराया जा सकता। इन्स्पेक्टर साहब, क्या आप यह नहीं महसूस कर रहे कि आप हत्यारों के हाथों में खेल रहे हैं? जिस व्यक्ति ने दीवान साहब की हत्या की है, वह वही चाहता था, जो इस समय आप कर रहे हैं। मैं सच कहता हूं कि जितने प्रमाण इस समय तक आपको मिले हैं, वे डाक्टर साहब को अपराधी सिद्ध नहीं कर सकेंगे।"

"क्या आप डाक्टर साहब की सफाई में वह चीज तो पेश नहीं करना चाहते जो ने अलमारी के ऊपर से उठाकर अपनी जेब में डाल ली थी?"

"आप जरा देखते जाइए कि मैं डाक्टर साहब की सफाई में क्या कुछ पेश करता हूं। मैं पहले आपको दो मिनट के लिए डाक्टर साहब के पढ़ने के कमरे में ले चाहता हूं।" यह कहकर मेजर चक्करदार सीढ़ी की ओर बढ़ा। डाक्टर भी सीढ़ी की ओर बढ़ने लगा तो मेजर ने कहा, "डाक्टर साहब, आप सब यहीं रहिए।"

उस कमरे में चारों ओर शेल्फों में पुस्तकें लगी हुई थीं। बीच में एक लम्बी मेज थी। उस पर लिखने और नक्शे बनाने का सामान पड़ा था। मेज के सामने खिड़की थी जिस पर पर्दा पड़ा हुआ था।

मेजर बोला, "अगर सब-इन्स्पेक्टर गुरुदयाल डाक्टर साहब के सोने के कमरे में जाएं तो उन्हें अवश्य ही जूते का दूसरा पैर मिल जाएगा।"

सब-इन्स्पेक्टर गुरुदयाल डाक्टर बनर्जी के सोने के कमरे में चला गया। दो मिनट के बाद वह वापस आया जो उसके हाथ में रबड़ के जूते का बायां पैर था और उसमें कहीं भी खून लगा हुआ नहीं था।

"अब आप ही कहिए कि क्या डाक्टर साहब जूते का एक पैर पहनकर दीवान

साहब की हत्या करने गए थे ? आप देखते नहीं हैं कि हत्यारा जान-बूझकर डाक्टर साहब के जूते का एक पैर उठाकर ले गया और दूसरा सोने के कमरे में छोड़ गया ?"

इन्स्पेक्टर का विश्वास मेजर के तर्क के सामने ढीला पड़ गया।

"अगर आप अब भी डाक्टर साहब को निर्दोष समझने के लिए तैयार नहीं हैं त मैं उनके निर्दोष होने का एक और प्रमाण देने के लिए तैयार हूं।" मेजर ने कहा औ वह सोने के कमरे में जाकर डाक्टर बनर्जी की छोटी मेज पर रखा हुआ काफी क खाली प्याला उठा लाया। मेजर ने वह खाली प्याला इन्स्पेक्टर को दिखाते हुए कहा "अगर आप इस प्याले को सूंघकर देखें और इसकी तलछट पर नजर डालें तो आपक तुरन्त पता चल जाएगा कि डाक्टर साहब की काफी में अफीम का पाउडर मिला दिय गया था।"

इन्स्पेक्टर धर्मवीर खाली प्याले की तह को देखने लगा और उसे विश्वास ह गया कि मेजर ठीक कह रहा था। क्षण-भर की चुप्पी के बाद मेजर ने कहना शुरू किया "आपको यह भी याद रखना चाहिए कि नशे के लिए अफीम का पाउडर अधिकत इटली में इस्तेमाल किया जाता है।"

अनोखा अनुभव

मेजर के साथ शेष लोगों ने भी नीचे आकर देखा कि डाक्टर अपने घुटनों में सि दिए सोफे पर बैठा था। मेजर ने कहा, "मैं आपको एक आश्चर्यजनक बात बताना चाहता हूं कि दीवान साहब की हत्या के लिए हत्यारे का इस कमरे में होन भी जरूरी नहीं था। आपको शायद विश्वास नहीं आ रहा है—लेकिन मैं सच कह रह हूं, और मेरा यह भी ख्याल है कि हत्यारा इस कमरे में अपना जाल बिछाकर चला गय था। उसे अपने बिछाए हुए जाल पर पूर्ण विश्वास था कि उसका वार खाली नहीं ज सकता। ठहरिए, मैं यह बात आपको उदाहरण देकर समझाता हूं—आप लोग बैठ जाइए।"

सब लोग बैठ गए तो मेजर ने पिछली दीवार के पास पड़ी हुई अलमारी के निकट जाकर उसके पीछे के पर्दे की ओर संकेत किया, "आप देख रहे हैं कि जिस गोल लकड़ी से पर्दा टंगा हुआ है, उसका सिरे वाला पीतल का छल्ला गोल लकड़ी से निकलकर लटका हुआ है। आप यह भी देख रहे हैं कि पर्दे के दो भाग हैं और वे दोनो भाग आधे खुले हुए हैं। इसका मतलब यह है कि किसी ने पर्दा खोलना चाहा था और उसे आधा खोलकर छोड़ दिया था। यह पर्दा या तो पूरा खुला होना चाहिए था या पूरा बन्द होना चाहिए था। जब दीवान सुरेन्द्रनाथ इस कमरे में आए तो यह पर्दा बन्द था। उन्होंने हरगिज इसे आधा नहीं खोला होगा। वे यह पर्दा खोल रहे होंगे कि मौत का संदेश आ गया। देवी जूम्बी की मूर्ति उनके सिर पर आ गिरी और चोट घातक सिद्ध हुई। मैं यह कहना चाहता हूं कि पीतल का छल्ला गोल लकड़ी पर से किसी ने कल रात को या दीवान साहब के यहां आने से पहले ही उतार दिया था ताकि जब वे पर्दा खोलने की कोशिश करें तो पर्दा पूरा न खुलने पाए और जोर लगाने पर मूर्ति गिर जाए। इन्स्पेक्टर साहब, आप समझ रहे हैं न कि मैं क्या कहना चाहता हूं?"

"जी हां, अब मेरी समझ में आ रहा है कि आपने सिद्दीकू को कुर्सी पर चढ़ाकर यह क्यों पूछा था कि उसने अलमारी के ऊपर मूर्ति कहां रखी थी।"

"आप बिल्कुल ठीक समझ रहे हैं। मैंने सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से भी कुछ देखा था। अलमारी के ऊपरी भाग पर खरोंच मौजूद है जिसका मतलब है कि किसी ने मूर्ति को उसके स्थान पर से हटाकर जरा आगे सरका दिया [illegible] कि

साहब ने मूर्ति को पुनः उसके असली स्थान पर रख दिया था। लेकिन डाक्टर साहब को मालूम नहीं था कि हत्यारा उनके जाने के बाद मूर्ति को दोबारा सरकाकर अलमारी के सिरे पर टिका जाएगा। मूर्ति को जरा-सा टेढ़ा करने के लिए हत्यारे ने पेंसिल का टुकड़ा इस्तेमाल किया।" मेजर ने जेब में हाथ डाला और पेंसिल का टुकड़ा निकालकर सबको दिखाया, "मैंने अलमारी के ऊपर से पेंसिल का यह टुकड़ा उठाया था और जेब में डाल लिया था।" मेजर ने आगे बढ़कर पर्दा बन्द कर दिया। इसके बाद उसने देवी जून्वी की मूर्ति उठाई और पेंसिल के टुकड़े को अलमारी के ऊपर रखते हुए मूर्ति को उस पेन्सिल पर टिका दिया। मूर्ति जरा आगे की ओर झुक गई लेकिन अपने स्थान पर टिकी रही। मेजर ने मूर्ति के आगे से हटकर पर्दे को सरकाना शुरू किया। जब पर्दा आधा खुल गया तो मूर्ति धड़ाम से फर्श पर आ गिरी।

"देखा आपने—हत्यारे ने अपनी अनुपस्थिति में दीवान साहब की हत्या कर दी!" और वह उपस्थित जनों पर अपने इस रहस्योद्घाटन का प्रभाव देखने के लिए रुका। जब उनमें से कोई न बोला तो मेजर ने पुनः कहना शुरू किया, "मैं यह सिद्ध करना चाहता हूं कि इस घर के किसी व्यक्ति की अनुपस्थिति उसके निर्दोष होने का प्रमाण नहीं हो सकती। अब रहा टाई पिन, रिपोर्ट और खून-भरे जूते का प्रश्न। तो कोई भी व्यक्ति डाक्टर साहब की काफी में अफीम मिलाने के बाद ये सारी चीजें आसानी से प्राप्त कर सकता था।"

"रिपोर्ट के अलावा टाई पिन और रबड़ के जूते डाक्टर साहब के सोने के कमरे में थे।" इन्स्पेक्टर बोला, "जब हम डाक्टर साहब को जगाने के लिए गए थे तो उनके सोने का कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द था। फिर किसी ने उन चीजों को कैसे प्राप्त कर लिया?"

"अगर आप अपने दिमाग पर जरा-सा जोर दें तो यह बात कोई पहेली नहीं रहती। आप इस चक्करदार सीढ़ी को भूल जाते हैं जिससे डाक्टर साहब के पढ़ने और सोने के कमरे में जाना कोई मुश्किल नहीं है। आपको यह मानना पड़ेगा कि हत्यारे ने डाक्टर साहब को अपराधी सिद्ध करने के लिए कोई कसर नहीं उठा रखी। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि हत्यारा वह व्यक्ति है जिसने डाक्टर साहब की काफी में अफीम का पाउडर मिलाया।"

"मामला कुछ साफ हो गया है। हत्यारे के बारे में कुछ बातें मालूम हो गई हैं।" मेजर बोला, "हत्यारा इस घर के कोने-कोने का भेदी है। उसका उद्देश्य केवल [illegible] व्यक्ति की हत्या नहीं था—वह डाक्टर साहब ऐसे निर्दोष व्यक्ति को हत्यारा सिद्ध [illegible] एक और प्राणी को अपने रास्ते से हटाना चाहता था। डाक्टर साहब को अपने [illegible] से हटाने के बाद भी उसका कोई उद्देश्य हो सकता है। यह ह[त्]या अपराध का अंत नहीं, प्रारम्भ है। डाक्टर साहब को काफी परेशानी उठानी पड़ी है। मैं इनको यही मशविरा दूंगा कि वे जाएं और जाकर आराम करें।"

डाक्टर ऊपर अपने कमरे में चला गया तो मेजर ने डिक्सन से कहा, "आप काफी समय से यहां काम कर रहे हैं। आप इस घर की परिस्थितियों को कुछ तो जानते होंगे। क्या दीवान सुरेन्द्रनाथ ने कोई वसीयत भी की थी?"

"जी हां, कुछ दिन पहले राजेश ने मुझे बताया था कि उसके चाचा ने अपनी वसीयत नये सिरे से लिखवाई है और उसमें रजनी के लिए काफी रुपया छोड़ने की बात लिखी है।"

"और राजेश के हिस्से में क्या आया है?" मेजर ने पूछा।

"राजेश के बयान के अनुसार उसे भी उतना ही रुपया मिलेगा जितना [र]जनी के नाम लिखा गया है।"

र

"और दीवान साहब की बेटी कामिनी को क्या मिलेगा ?"

"कामिनी को फूटी कौड़ी भी नहीं मिलेगी।"

"क्यों ?"

"इस सवाल का जवाब राजेश और रजनी ही दे सकते हैं।"

"आपके विचार में खुदाई का काम रुक जाने से ज्यादा अफसोस डाक्टर साहब को होगा या राजेश को ?"

"राजेश को। असल में राजेश एक उत्साही नवयुवक है। वह खुदाई की मुहिम को एक महान कार्य समझता है। उसने अपने चाचा से बार-बार यह प्रार्थना की थी कि वे मुहिम में अवश्य ही पैसा लगाएं।"

"रजनी के बारे में आपकी क्या राय है ?"

"वह एक पतिव्रता पत्नी है। डाक्टर साहब के हर काम में गहरी दिलचस्पी लेती रही है। लेकिन अब पिछले छ: महीने से उसे डाक्टर साहब के काम में कोई दिलचस्पी नही रही—लेकिन इसका यह मतलब भी नहीं कि वह पतिव्रता नहीं है।"

"सिद्दीकू ने तो रजनी को नहीं बहकाया है ?" मेजर ने पूछा।

"ऐसा सम्भव नहीं है।"

"मेरे सामने डाक्टर साहब ने सिद्दीकू पर आरोप लगाया था कि वह उनकी पत्नी के कान भरता रहता है।"

"असल में डाक्टर साहब को सिद्दीकू शुरू से ही पसन्द नहीं था।"

"चलिए, मैं आपकी बात मान लेता हूं कि रजनी एक पतिव्रता पत्नी है। लेकिन कहीं यह पातिव्रत्य विवशता तो नहीं बन गया है ? अब मैं आपसे एक नाजुक सवाल पूछूंगा—क्या रजनी अपने पति के अलावा भी किसी में दिलचस्पी रखती है ?"

"आपका यह सवाल वाकई बहुत नाजुक है।" डिक्सन बोला, "मैं इसका जवाब नहीं दे सकता।"

"धन्यवाद ! अब आप जा सकते हैं।"

डिक्सन चला गया तो इन्स्पेक्टर ने पूछा, "मैं एक बात समझ नहीं पाया हूं। आपने जान-बूझकर राजेश से पेन्सिल क्यों मांगी थी ?"

"मैं यह देखना चाहता था कि राजेश किस तरह की पेन्सिल इस्तेमाल करता है। अलमारी के ऊपर जो पेन्सिल मिली है, वह राजेश की पेन्सिल से भिन्न है।"

"डाक्टर साहब की मेज पर भी तो एक पेन्सिल पड़ी थी।" इन्स्पेक्टर ने कहा।

"मैं आपके इस सवाल का बड़ा साफ जवाब दूंगा। डाक्टर साहब की मेज पर पड़ी हुई पेन्सिल उस पेन्सिल जैसी थी जो अलमारी के ऊपर मिली है।"

"जरा बावर्ची रूपा को बुला लाओ।" इन्स्पेक्टर ने सब-इन्स्पेक्टर गुरुदयाल से कहा।

रूपा आया तो मेजर ने कहा, "रूपलाल, बैठ जाओ।"

रूपलाल ने एक कुर्सी पर सिमटकर बैठते हुए कहा, "मैं बीस साल से इस घर में काम कर रहा हूं। मैंने कभी किसी का हुक्म नहीं टाला। तन-मन से सबकी सेवा करता रहा हूं। न जाने मेरा अब क्या बनेगा !"

"रूपलाल, यह बताओ कि इस घर में सुबह के नाश्ते का क्या प्रबन्ध है ?"

"नाश्ता डाइनिंग रूम में किया जाता है। सिर्फ दीवान साहब का नाश्ता उनके कमरे में जाया करता था।"

"बेड टी या काफ़ी सुबह कितने बजे दी जाती है ?"

"छ: से साढ़े छ: बजे तक।"

"आज सुबह जब तुम बेड टी या कॉफी तैयार कर रहे थे तो कोई व्यक्ति डाइनिंग रूम में आया था ?"

"मैंने राजेश को देखा था और फिर दस मिनट के बाद रजनी बीबी भी उधर आई थीं और वापस चली गई थीं।"

"क्या तुम उस समय बेड टी या कॉफी तैयार कर चुके थे ?"

"जी हां, डाक्टर साहब के लिए कॉफी तैयार कर चुका था।"

"हूं !" मेजर ने कुछ सोचते हुए कहा, "कॉफी तैयार कर चुकने के बाद क्या तुम तुरन्त डाक्टर साहब के पास कॉफी ले गए थे ?"

"नहीं, मैं लछमी को जगाने के लिए चला गया था—उसे जगाया न जाए तो वह देर तक सोई रहती है।"

"जब तुम डाक्टर साहब के लिए कॉफी लेकर गए थे तो वे जाग रहे थे या सो चुके थे ?"

"ऊंघ रहे थे।"

"जब तुम कॉफी उनके कमरे में छोड़कर आए थे तो उसके बाद तो कोई व्यक्ति उनके कमरे में नहीं गया था ?"

"मैं कुछ नहीं कह सकता। सुबह के वक्त बहुत काम होता है। बेड टी और कॉफी के बाद नाश्ता तैयार करना होता है। हर आदमी का नाश्ता अलग-अलग होता है। मुझे एक साथ बहुत-सी चीजें बनानी पड़ती हैं। मैं अपने काम में लग गया था। मुझे मालूम नहीं कि डाक्टर साहब के कमरे में कोई गया था या नहीं।"

"रूपलाल, अब तुम जा सकते हो।" मेजर ने कहा।

"रूपा के बयान के मुताबिक केवल दो व्यक्ति संदिग्ध हो सकते हैं—राजेश और रजनी। दोनों डाइनिंग रूम में आए थे। उन दोनों में से कोई एक कॉफी में अफीम का पाउडर मिला सकता था।"

"गुरुदयाल, लछमी को बुला लाओ।" मेजर ने कहा।

लछमी आई तो मेजर उसे सिर से पांव तक देखता रह गया। वह पहाड़िन मालूम होती थी। गोरा-चिट्टा रंग। भरा-भरा बदन। आयु चालीस वर्ष से अधिक नहीं थी।

"लछमी, तुम जानती हो ना कि आज इस घर में क्या हुआ है ?" मेजर ने उसे [illegible] पर बैठने का इशारा करते हुए कहा।

लेकिन लछमी खड़ी रही। फिर अपने कूल्हों पर हाथ रखकर बोली—"मैं क्या कुछ नहीं जानती, बाबू ! सब कुछ जानती हूं। मैं तो हरियान (हैरान) हूं कि आज जो कुछ इस घर में गुजरा है, वह आज से बहुत पहले क्यों नहीं गुजरा।"

मेजर उसकी बेबाकी से बहुत प्रभावित हुआ, "तुम्हें शायद इस घर के लोगों का रहन सहन अच्छा नहीं लगता लछमी !"

"इसकी यहां की कोई कल सीधी नहीं है। एक तो यहां कलमुंहा काला भुजंग सिदकू है। उसे देखकर दिन को कलेजा धक् से रह जाए, रात की तो पूछो ही नहीं। और वह बंगाली डाक्दर (डाक्टर) हैं जो बहुत ही भयानक मूर्तियां बनाते हैं।"

"लछमी ! अभी-अभी तुमने यह बात कही है कि आज जो कुछ गुजरा है, वह आज से बहुत पहले गुजर जाना चाहिए था।"

"बाबू जी, इस घर का आवा-आदम ही निराला है। बस, रूपा ही एक अच्छा आदमी है। वह न होता तो मैं कभी का किनारा कर गई होती। एक बीबी कामिनी बहुत अच्छी थीं, वो भी इस घर का चरित्र देखकर ऐसी गयीं कि फिर आने का नाम न लिया।"

"अच्छा लछमी, यह बताओ कि आज सुबह जब रूपा तुम्हें जगाने के लिए गया था तो तुम कितनी देर के बाद रसोई में आई थीं ?"

"पांच मिलट (मिनट) में।"

"तुम जब रसोई में आई थीं तो रूपा उस समय कहां था ?"

"नल पर प्यालियां धो रहा था।"

"क्या राजेश और रजनी खाने के कमरे में बैठे थे ?"

"नहीं।"

"जब रूपा नल पर प्यालियां धो रहा था तो तुमने कोई और आवाज सुनी थी ?"

"नहीं बाबू जी...।" यह कहकर लछमी कुछ सोच में पड़ गई और दोबारा कूल्हों पर हाथ रखकर बोली, "याद आ गया बाबू जी—मैं रसोई से निकलकर प्यालियां धोने में रूपा का हाथ बंटाने गई थी तो मैंने किसी को क़ाफी उड़ेलते हुए सुना था।"

"वह कौन था ?"

"नल पर से यह देखना मुसकल (मुश्किल) है कि रसोई में कौन गया और कौन वहां से निकला।" लछमी बोली। फिर उसने सोनिया की ओर घूमकर देखा।

"अच्छा लछमी, तुम जाओ और अपना काम करो।" मेजर ने कहा। लछमी ठुमक-ठुमककर चलती हुई बाहर निकल गई।

वसीयत

खाने की मेज पर देर तक बातें होती रहीं। लाला केदारनाथ मेजर की बातों में बड़ी दिलचस्पी लेते रहे थे। कुछ समय बाद बोले, "आज आपने बहुत मेहनत की है। जाइए, जाकर सो जाइए। कल फिर आपको कड़ी मेहनत करनी है।"

मेजर लाला जी को नमस्ते करके उठ खड़ा हुआ और अपने कमरे में आते ही दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया।

उसने अपने सूटकेस में से एक लम्बा-सा लिफाफा निकालकर उसमें से एक फोटो निकाला। यह फोटो एक चौबीस-पच्चीस वर्ष की युवती का था। मेजर वह फोटो सोनिया को दिखाते हुए बोला, "मैं इस लड़की की तलाश में दिल्ली आया हूं।"

सोनिया वह फोटो अपने हाथ में लेकर देखती रही और कुछ सोचती रही। एकाएक उसकी आंखों में चमक पैदा हुई और उसने कहा, "यह लड़की, रजनी—डाक्टर बनर्जी की पत्नी—से कितनी मिलती-जुलती है !"

"ओह सोनिया ! तुमने मेरे विचार का समर्थन कर दिया है। मनुष्य के जीवन में संयोग बहुत शक्तिशाली होते हैं। तुम जानती हो कि [illegible] आकर हम प्राचीन और दुर्लभ चीजें बेचने वाली दुकानों में घूमते रहे हैं। वह सब इस लड़की को ढूंढने के लिए किया गया था। मैं समझता हूं कि जिस लड़की को ढूंढने के लिए मैं दिल्ली आया हूं, वह दीवान सुरेन्द्रनाथ की बेटी क़ामिनी है।"

सोनिया आश्कर्य से मेजर का मुंह ताकने लगी, "कामिनी, जो अपने पिता से सख्त नाराज है और जो अपने जीवन का अलग रास्ता अपना चुकी है ?"

"हां, लेकिन मैं अभी विश्वास के साथ कुछ नहीं कह सकता। इस बात की पुष्टि करनी होगी [illegible] जिस लड़की को ढूंढने के लिए आया हूं, वह कामिनी है और दीवान सुरेन्द्रनाथ की बेटी है। मुझे उसका नाम कामिनी नहीं [illegible] गया था।"

"फिर आपको यह भ्रम कैसे हुआ कि रोहिणी ही कामिनी है?" सोनिया ने पूछा।

"मैंने बम्बई में उसकी तलाश के सिलसिले में जितना काम किया था, उससे केवल यही परिणाम निकलता था कि रोहिणी का सम्बन्ध प्राचीन और दुर्लभ चीजें बेचने वाली किसी फर्म से है। बम्बई में जिस कमरे से वह गुम या गायब हुई थी उसमें रोहिणी के अते-पते के सारे चिह्न मिटा दिए गए थे। उसके सूटकेसों में पड़े हुए सारे कागजात भी गायब थे। शायद वह सारे कागजात पुर्जे-पुर्जे करके स्वयं जला गई थी या यह उन व्यक्ति का काम था जिसने रोहिणी का अपहरण किया था। जो हो, मुझे कागज का एक छोटा-सा पुर्जा मिल गया था—वह छपे पैड का कागज था। कागज के पुर्जे पर छपा हुआ नाम अधूरा था। वह रोहिणी के नाम एक पत्र था। पत्र अंग्रेजी में लिखा गया था। कागज का वह पुर्जा उस जगह से फटा हुआ था जहां केवल दो अक्षर पढ़े जाते थे—एन और आई। रोहिणी और कामिनी के पीछे यही एन और आई के दो अक्षर आते हैं। कागज के उस पुर्जे पर अंग्रेजी में छपे हुए फर्म के नाम की दो पंक्तियों के कुछ शब्द बाकी थे—ऊपर की मोटी पंक्ति के चार अक्षर—एन टी आई क्यू—और नीचे की पतली पंक्ति के अक्षर बाकी थे—एल एच आई। इसके सिवा मुझे रोहिणी के कमरे से ऐसी कोई चीज नहीं मिल सकी थी जिससे यह पता चलता कि रोहिणी कहां की रहने वाली थी, उसके माता-पिता कौन थे। जिस व्यक्ति ने मुझे रोहिणी का पता लगाने का काम सौंपा था, उसके पास रोहिणी का एक फोटो था और रोहिणी का अपने बम्बई के कमरे का दिया हुआ पता था। वह व्यक्ति एक फिल्म प्रोड्यूसर है। वह एक फिल्म बना रहा है जिसका नाम है 'प्यासी आत्माएं'। उसने अपनी फिल्म में रोहिणी को वैम्प (खलनायिका) का रोल दिया था। फिल्म की तीन रीलें तैयार हो चुकी हैं। अब अगर रोहिणी नहीं मिलती तो उसकी सारी मेहनत और तीन रीलें बिल्कुल बेकार हो जाती हैं। वह रोहिणी को दस हजार रुपये पेशगी भी दे चुका है।"

"उसने किसी न किसी के द्वारा ही रोहिणी से कांट्रैक्ट किया होगा। क्या वह व्यक्ति फिल्म प्रोड्यूसर को रोहिणी का पता नहीं बता सकता था?" सोनिया ने पूछा।

"रोहिणी ने किसी के द्वारा उससे कांट्रैक्ट नहीं किया था। उस फिल्म प्रोड्यूसर ने अपनी ओर से बड़ी नूतनता से काम लिया था। उसने कलकत्ता के एक होटल में कमरा बुक कराया। वहां के एक अखबार में विज्ञापन दिया कि वह अपनी नई फिल्म के लिए नये एक्टरों और एक्ट्रेसों की खोज में आया है। चुन लिए जाने पर उनको उचित पारिश्रमिक दिया जाएगा। फिल्म प्रोड्यूसर इस तरह एक तीर से दो शिकार करना चाहता था—ऐयाशी और फिल्म के लिए सस्ते एक्टर और एक्ट्रेसें प्राप्त करना। वह अपने दोनों उद्देश्यों में सफल रहा। एक्ट्रेस बनने की इच्छुक कई लड़कियां उससे मिलने आईं। अन्त में उसने रोहिणी को चुन लिया और उसे अपना पता देकर कहा कि वह बम्बई में आकर उससे मिले।"

"क्या उसने रोहिणी से उसका कलकत्ता का पता नहीं पूछा था?"

"पूछा था—लेकिन रोहिणी ने उसे गलत पता बताया था। वह शायद यह नहीं बताना चाहती थी कि वह कौन है और कहां की रहने वाली है। जब वह गायब हो गई तो फिल्म प्रोड्यूसर ने अपना एक आदमी कलकत्ता दौड़ाया। लेकिन वह आदमी एक हफ्ते तक कलकत्ता की खाक छानकर वापस आ गया।"

"पर आपको यह शक कैसे हुआ कि रोहिणी ही कामिनी है?"

"मैं तुम्हें बता तो रहा हूं कि कागज का जो टुकड़ा मुझे बम्बई में रोहिणी के कमरे से मिला था उसकी ऊपर की छपी हुई मोटी पंक्ति के चार अक्षर एन टी आई

और क्यू वाकी थे। नीचे की छपी हुई पतली पंक्ति के तीन अक्षर एल एच आई वाकी थे। मैंने वहुत सिर पटका और अन्त में यह समझने में सफल हो गया कि बचे हुए अक्षर किन शब्दों के अंश थे। ऊपर के शब्द का अर्थ था, 'प्राचीन वस्तुएं' नीचे का शब्द था 'डेलही'। इस वात का पता चलते ही मैंने दिल्ली आकर प्राचीन वस्तुएं वेचने वाली दुकानों में घूमने का प्रोग्राम वनाया।"

"अव मैं समझी कि आप हर दुकानदार को अलग ले जाकर उससे दवी जवान में वातें क्यों करते थे।"

"मैं उनको रोहिणी का फोटो भी दिखाता था। मुझे कहीं भी सफलता नहीं मिली और तुम्हें याद होगा कि जव इन्स्पेक्टर धर्मवीर सलूजा ने मुझे फोन पर वताया कि वह इण्टरनेशनल म्यूजियम यानी प्राचीन और दुर्लभ वस्तुएं वेचने वाली एक फर्म में हत्या की वारदात की तहकीकात में मेरी सहायता प्राप्त करना चाहता है तो मैं तुरन्त उसकी सहायता करने के लिए तयार हो गया। तुम्हें यह भी याद होगा कि इन्स्पेक्टर ने दीवान सुरेन्द्रनाथ के हालात वताते हुए कहा था, कि उनकी वेटी कामिनी कलकत्ता में पढ़ती रही है और अव वम्वई में है, जहां वह स्वतन्त्र रूप से जीवन व्यतीत करना चाहती है—मेरी सारी मालूमात इसी वात की ओर संकेत करती हैं कि हो न हो रोहिणी ही कामिनी है। जो हो, वात प्रमाणित किए विना मेरा सन्देह विश्वास में नहीं वदल सकता।"

अगली सुवह मेजर और सोनिया दस वजे इण्टरनेशनल म्यूजियम में जा पहुंचे। इन्स्पेक्टर धर्मवीर सलूजा पहले से वहां मौजूद था।

"हमारे आने से पहले आप काफी काम कर चुके होंगे।" मेजर ने मुस्कराते हुए कहा और इन्स्पेक्टर की नजर बचाकर उसने अपनी दाईं आंख दवाई और इस प्रकार सोनिया को संकेत किया कि वह जाकर अपना काम शुरू कर दे।

"अभी तक तो मैं केवल इतना ही मालूम कर सका हूं कि इस घर में किस-किसको दीवान सुरेन्द्रनाथ के वसीयतनामे का विवरण मालूम था।" इन्स्पेक्टर ने कहा।

"वसीयत का विवरण किस-किस को मालूम है?"

"सवको मालूम है। डाक्टर वनर्जी, राजेश, मिसेज रजनी, लछमी, सिद्दीकू, मिस्टर डिक्सन और रूपा—सभी लोग जानते हैं कि दीवान साहव अपनी वसीयत में किस-किसको क्या-क्या दे गए हैं।"

"दीवान साहव ने अपना अधिक धन किसके नाम छोड़ा है?"

"रजनी के नाम।" इन्स्पेक्टर ने उत्तर दिया।

"रजनी को दीवान साहव का अधिक धन मिलने पर किसी को आपत्ति तो नहीं?"

"नहीं।"

"क्या राजेश को भी नहीं?"

"नहीं।" इन्स्पेक्टर ने कहा, "मुझे तो यह जानकर आश्चर्य हुआ है कि डाक्टर वनर्जी को दीवान साहव के धन का जरा-सा भाग न मिलने पर भी कोई दुःख नहीं हुआ।"

"उनको दुःख क्यों हो।" मेजर ने कहा, "उनकी पत्नी को जो कुछ मिल रहा है वह उन्हीं का तो है।"

"जी हां। एक वात और आश्चर्यजनक है—दीवान साहव ने अपनी वसीयत में किसी को भी नहीं भुलाया। अपने सभी नौकरों तक का खयाल रखा है—लेकिन अपनी सगी वेटी को एक कौड़ी भी नहीं दी। मैं रजनी की स

वसीयतनामा निकलवाकर पढ़ चुका हूं।"

"सचमुच यह बात मेरी समझ में भी नहीं आती कि उसके पिता अपनी इकलौती बेटी से इतना बड़ा अन्याय कैसे कर सका है !"

"मैंने सबसे पूछा है। कोई भी सन्तोषजनक उत्तर नहीं दे सका। सभी यह कहते हैं कि दीवान साहब अपनी हठ के पक्के थे। उनकी बेटी चूंकि उनकी इच्छा के विरुद्ध काम करने पर तुली हुई थी इसलिए उन्होंने अपनी धमकी को पूरा कर दिखाया।"

"क्या आपने वसीयतनामे पर तारीख पढ़ी है ?" मेजर ने पूछा।

"जी हां, दीवान साहब ने आज से बाईस दिन पहले अपनी वसीयत को कानूनी शक्ल दी थी।"

"आपने उनके वसीयतनामे के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त की है।" मेजर ने इन्स्पेक्टर की प्रशंसा करते हुए कहा, "काफी के प्याले की गुत्थी सुलझी कि नहीं ?"

"काफी के प्याले के बारे में अभी कोई पूछताछ नहीं की।"

सिद्दीकू उधर से गुजरा, तो मेजर ने उसे आवाज दी।

"सिद्दीकू, क्या तुम्हें मालूम है कि इस घर में अफीम कौन खाता है ? या कौन अपने पास अफीम रखता है ?" मेजर ने उससे पूछा।

"अफीम !" हब्शी ने पहले आश्चर्य प्रकट किया, फिर बोला, "अफीम का पाउडर ! डाक्टर साहब कश्मीर की खुदाई की मुहिम के लिए सामान जमा करते रहे हैं। उन्होंने बहुत-सी दवाएं भी खरीदी हैं। मैंने अफीम के पाउडर का छोटा-सा टीन का डिब्बा डाक्टर साहब के सोने के कमरे की अलमारी में देखा था।"

"क्या दवाएं डाक्टर साहब खुद खरीदकर लाए थे ?"

"नहीं—राजेश लाया था।"

"क्या तुम अफीम के पाउडर का वह डिब्बा डाक्टर साहब की अलमारी में से ला सकते हो ?"

"जी हां, अभी लाकर दिखाता हूं।" सिद्दीकू ऊपर चला गया।

"इंस्पेक्टर साहब !" मेजर ने मुस्कराते हुए कहा, "मैंने जान-बूझकर सिद्दीकू को ऊपर भेजा है। अफीम का डिब्बा डाक्टर साहब की अलमारी में नहीं हो सकता।"

कुछ देर बाद सिद्दीकू वापस आ गया। उसके हाथ में टीन का छोटा-सा डिब्बा था।

"तुम यह डिब्बा कहां से लाए हो ?" मेजर ने पूछा, "डाक्टर साहब की अलमारी में से तो हरगिज नहीं लाए होगे ?"

हब्शी नौकर हकलाते हुए बोला, "यह डिब्बा डाक्टर साहब की अलमारी में नहीं था। उनकी अलमारी में जिस जगह यह डिब्बा पड़ा रहता था, वह जगह खाली थी।"

"फिर यह डिब्बा तुम्हें कहां से मिला ?"

"यह डिब्बा मेरे कमरे में था। कुछ दिन हुए मुझे नींद नहीं आ रही थी। असल में मुझे अपच की शिकायत रहती है। मैं डिब्बा डाक्टर साहब की अलमारी से उठा लाया था। मैंने उस रात थोड़ा-सा पाउडर खा लिया था और मुझे गहरी नींद आ गयी थी।"

"नहीं, तुम सच नहीं बोल रहे—बताओ कि तुम्हें यह डिब्बा कहां पड़ा हुआ मिला है ? यह तुम्हारे कमरे में नहीं था।"

"मैंने आपको सच्ची बात बता दी है। यह डिब्बा मेरे कमरे में था और मैं वहीं से इसे लाया हूं।"

"तुम बड़े जिद्दी हो—तुम जा सकते हो।"

सिद्दीकू मुड़ा तो उसे कोठी के पिछवाड़े में शोर सुनाई दिया। मेजर और इन्स्पेक्टर उधर बढ़ने ही लगे थे कि इतने में सब-इन्स्पेक्टर गुरुदयाल डाक्टर बनर्जी को बाजू से पकड़े हुए उनके पास ले आया।

"सरकार, आपने हुक्म दिया था।" सब-इंस्पेक्टर ने इंस्पेक्टर धर्मवीर को सम्बोधित करते हुए कहा, "कि इस घर से किसी को बाहर न निकलने दिया जाए। डाक्टर साहब जा रहे थे। मैंने इनको रोक लिया तो ये शोर मचाने लगे।"

"कमरे में मेरा दम घुटा जा रहा था। मैं जरा बाहर ताजा हवा खाने के लिए जाना चाहता था।" डाक्टर ने कहा।

"क्यों नहीं।" मेजर बोला, "इनको जाने दीजिए।" और फिर मेजर ने डाक्टर की ओर मुंह फेरते हुए कहा, "आधे घण्टे तक वापस आ जाइएगा। हम आपसे कुछ पूछना चाहते हैं।"

"जी हां, मैं बीस मिनट तक वापस आ जाऊंगा।" डाक्टर ने यह बात इस तरह कही जैसे उसका कण्ठ सूखा जा रहा था।

डाक्टर दरवाजे की ओर बढ़ा। सब-इन्स्पेक्टर गुरुदयाल उसके पीछे-पीछे चल दिया, क्योंकि मेजर ने अपनी आंख दबाकर उसे डाक्टर का पीछा करने का संकेत कर दिया था।

इन्स्पेक्टर ने कुछ सोचते हुए पूछा, "आपके ख्याल से सिद्दीकू को अफीम के पाउडर का डिब्बा कहां मिला था?"

"अवश्य ही राजेश के कमरे में मिला होगा।" मेजर ने कहा।

"राजेश के कमरे में!" इन्स्पेक्टर के मुंह से निकला, "सिद्दीकू ने फिर यह क्यों कहा कि वह डिब्बा उसे अपने कमरे में मिला है?"

"सिद्दीकू राजेश की पर्दापोशी कर रहा है। आप शायद यह देख नहीं पाए हैं कि राजेश और रजनी के बीच गहरा सम्बन्ध है। सिद्दीकू रजनी का सेवक बल्कि पुजारी है। रजनी चूंकि राजेश को पसन्द करती है, इसलिए सिद्दीकू भी राजेश को पसन्द करता है।"

"आप यह कैसे कह सकते हैं कि सिद्दीकू राजेश के कमरे से अफीम का डिब्बा उठाकर लाया था?"

"सिद्दीकू ने अफीम का डिब्बा डाक्टर के कमरे में नहीं, राजेश के कमरे में देखा था। जब मैंने उसे ऊपर डिब्बा लाने के लिए भेजा तो वह घबराया हुआ था। वह रजनी के पास गया और रजनी की हिदायत पर हमारे पास डिब्बा उठा लाया और हमें यह किस्सा बताया कि डिब्बा वह अपने कमरे से उठाकर लाया है।"

उन्होंने देखा कि रजनी खिड़की के पास एक कुर्सी पर बैठी थी और राजेश दूर एक कोने में सोफे पर बैठा पुस्तक पढ़ रहा था। ऐसा मालूम होता था कि वे दोनों उनके भीतर आने से पहले अलग-अलग जगहों पर जा बैठे थे।

"कष्ट के लिए हम क्षमा चाहते हैं लेकिन आपसे कुछ सवाल पूछना बहुत जरूरी है।" मेजर बोला। और फिर उसने राजेश की ओर मुंह करके कहा, "मिस्टर राजेश, मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप थोड़ी देर के लिए अपने कमरे में चले जाएं। हम आपसे बाद में बात करेंगे।" राजेश मेजर की इस प्रार्थना पर एकदम परेशान हो गया।

"क्या मैं यहां नहीं ठहर सकता?" राजेश ने पूछा।

"नहीं। इस समय आपका अपने कमरे में होना अधिक ठीक रहे—

बोला, "इन्स्पेक्टर साहब, इनको इनके कमरे में ले जाइए और इनके कमरे के बाह किसी की ड्यूटी लगा दीजिए। जब तक हम इनके पास न जाएं या इनको अपने पा न बुलाएं, तब तक इनको अपने कमरे में रहना होगा और किसी से कोई बात नह करनी होगी।" इन्स्पेक्टर धर्मवीर राजेश को बाहर ले गया।

मेजर की भवें तन गईं। उसने कहा, "आप यह बताइए कि आपके पति व दीवान साहब से कोई झगड़ा तो नहीं हुआ था?"

"मैं आपका यह प्रश्न समझ नहीं सकी। डाक्टर साहब बहुत ही भले आदम हैं। जीवन में उनको बीसियों लोगों ने धोखा दिया है। सिद्दीकू भी उनसे घृणा करत है। लेकिन डाक्टर साहब बहुत समझदार हैं। अगर आप यह संकेत कर रहे हैं वि दीवान साहब की हत्या डाक्टर साहब ने की है तो आप भारी गलती कर रहे हैं। मे पति ने अगर दीवान साहब की हत्या की होती तो वे अपने विरुद्ध इतने प्रमाण कैसे छो सकते थे। डाक्टर साहब बहुत ही तीक्ष्ण बुद्धि के व्यक्ति हैं। वे ऐसी मूर्खता कभी नह कर सकते। एक बात और है। अगर उनको हत्या ही करनी थी तो उन्होंने किसी दूस की हत्या की होती—दीवान साहब की नहीं।"

"क्या सिद्दीकू की हत्या की होती?"

"सम्भव है।" रजनी ने उत्तर दिया।

"राजेश की हत्या की होती?" मेजर ने पूछा।

रजनी ने धीमी आवाज में कहा, "दीवान साहब के सिवा वह किसी की भं हत्या कर सकते थे।"

"आपको ऐसा विश्वास क्यों है?"

"दीवान साहब ने डाक्टर साहब पर बड़े उपकार किए थे। उनसे मेरी शादं की थी और वे कश्मीर में खुदाई की मुहिम के लिए पैसा लगाने के लिए तैयार थे।"

मेजर कुछ सोचने लगा और फिर उससे पूछा, "मैंने सुना है कि दीवान साह की वसीयत के अनुसार सबसे अधिक लाभ आपको और राजेश को होगा।"

"जी हां—आपने ठीक सुना है।"

इतने में इन्पेक्टर धर्मवीर सलूजा भी कमरे में आ गया।

"अगर आपको रुपया मिले तो क्या आप कश्मीर में खुदाई के लिए डाक्ट साहब की मुहिम में पैसा लगाने को तैयार होंगी?"

"हां, अगर डाक्टर साहब मुझसे कहेंगे।"

"आपके ख्याल में यहां कौन ऐसा व्यक्ति है जिसने आपके पति को हत्यार सिद्ध करने की कोशिश की है?"

"मैं ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं जानती।"

"आपको शायद मालूम हो गया होगा कि आपके पति की काफी के प्याले मे किसी ने अफीम मिला दी थी?"

"जी हां, मुझे पता चल चुका है।"

"आपको यह बात किसने बताई?"

"सिद्दीकू ने।"

"अफीम का डिब्बा कहां पड़ा रहता है?"

"पता नहीं।"

"क्या राजेश को मालूम था?"

"हां, राजेश को मालूम हो सकता है, क्योंकि वह डाक्टर साहब के सारे काम करता है। उनका सारा सामान वही खरीदकर लाता है।"

"मैंने अभी-अभी सिद्दीकू को अफीम का डिब्बा लाने के लिए भेजा था, क्योंवि

उसने मुझे वताया था कि उसने अफीम का डिव्वा डाक्टर के सोने के कमरे की अलमारी में पड़ा देखा था। मैं समझता हूं कि वह डिव्वा राजेश के कमरे से उठाकर लाया था।" मेजर ने कहा।

मेजर की यह वात सुनकर रजनी की आंख चिनगारियां वरसाने लगीं। उसने तुनककर कहा, "अफीम का डिव्वा मेरे कमरे में नहीं था।"

"अच्छा, आप यह वताइए कि कल सुवह क्या आप दोवारा काफी पीने के लिए किचन में गई थीं ?"

"दोवारा काफी पीने गई थी तो ऐसी क्या खास वात है ?"

"देखिए, आप कह चुकी हैं कि आप हमारी हर सम्भव सहायता करने के लिए तैयार हैं, लेकिन मैं यह देख रहा हूं कि आप हमारी कोई सहायता नहीं कर रही हैं। कल सुवह हत्या की वारदात से पहले आप वाहर चली गई थीं। क्या मैं पूछ सकता हूं कि आप कहां गई थीं ?"

"मुझे कुछ चीजें खरीदनी थीं।"

"आप क्या कुछ खरीदकर लाई हैं ?"

"मैं कुछ खरीदकर नहीं लाई।"

"अजीव वात है !"

"मुझे एक गाउन वनवाना था। मैं नाप देकर चली आई थी।"

"धन्यवाद। अभी हम आपसे और कुछ नहीं पूछना चाहते।" मेजर ने कुर्सी पर से उठते हुए कहा। इन्स्पेक्टर भी उठकर खड़ा हो गया।

दोनों नीचे आए। इतने में वाहर भारी कदमों की आहट सुनाई दी, कुछ क्षणों के वाद सव-इन्स्पेक्टर गुरुदयाल डाक्टर वनर्जी को घसीटता हुआ भीतर लाया। दोनों वुरी तरह हांफ रहे थे।

"इन्होंने यहां से निकल भागने की कोशिश की। जव ये हवाखोरी के लिए वाहर निकले तो इस व्लाक के पार्क में टहलते रहे। मैं एक अंग्रेज औरत को देखने लगा जिसने घुटनों के ऊपर तक स्कर्ट पहना हुआ था। मेरी नजर उस औरत पर से हटी तो क्या देखता हूं कि डाक्टर साहव गायव हैं। मैं चारों तरफ नजर दौड़ाने लगा। इस व्लाक में एक वैंक भी है। मैंने इन्हें उसमें जाते देखा। मैं इनकी ओर लपका और छिपकर एक कोने में खड़ा हो गया—यह देखने के लिए कि डाक्टर साहव क्या कुछ करते हैं। इन्होंने वैंक से काफी रुपए निकलवाए। फिर टैक्सी स्टैण्ड की ओर हो लिए। मैं भी पीछे-पीछे चल पड़ा। डाक्टर साहव मुड़कर नहीं देख रहे थे। फिर ये एक टैक्सी में वैठ गए। मैंने भी दूसरी टैक्सी से इनका पीछा किया। यह नई दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर पहुंचे। वहां इन्होंने एक टिकट खरीदा और प्लेटफार्म पर पहुंचकर इन्क्वायरी आफिस से कुछ पूछने लगे। ठीक उसी समय मैंने इनको जा पकड़ा और इनसे प्रार्थना की कि चुपके से मेरे साथ वापस चले चलें।"

"अच्छा तो डाक्टर साहव ने फरार होने की कोशिश की ?" इंस्पेक्टर वोला।

"जी हां—इनकी जेव में वम्वई का सेकेंड क्लास का टिकट है।"

"मैं समझता हूं कि डाक्टर साहव को स्वयं इसका कारण वताना चाहिए कि इन्होंने फरार होने की कोशिश क्यों की ?"

डाक्टर, जिसे एक प्रकार से सन्नाटा मार गया था, हकलाते हुए वोला, "मेरी मजवूरी को कोई भी नहीं समझता। आप देख तो रहे हैं कि इस घर में कोई व्यक्ति मुझे हत्यारा सिद्ध कर देने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहा है।—वह अपने उद्देश्य में असफल रहने के वाद मेरी भी हत्या कर सकता है। फर्ज [illegible] आप मेरे स्थान पर होते, तो क्या करते ? अपनी जान कि[illegible] नहीं [illegible]

भाग जाना चाहता हूं क्योंकि मुझे विश्वास है कि अगर मैं यहां रहा तो कोई मेरी हत्या कर देगा।"

"बिल्कुल ठीक।" मेजर बोला, "डाक्टर साहब की इस दलील को झुठलाया नहीं जा सकता। क्यों इन्स्पेक्टर साहब, अगर आप डाक्टर साहब की जगह होते तो क्या करते?"

मृतक का भतीजा

मेजर बलवन्त और इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने राजेश के कमरे में प्रवेश किया तो राजेश ने नाक-भौं चढ़ाई। उसकी आंखें अंगारों की तरह दहक रही थीं।

"आखिर आप मुझसे क्या पूछना चाहते हैं?"

"हम आपसे यह पूछना चाहते हैं कि क्या आपको यह मालूम था कि इस घर में अफीम के पाउडर का डिब्बा मौजूद है? हमें पता चला है कि अफीम के पाउडर का डिब्बा आप खरीदकर लाए थे?"

"क्या आपको यह बात रजनी ने बताई है?" राजेश ने पूछा।

"किसी ने भी बताई हो आप हमारे सवाल का जवाब दीजिए।"

"हां, डाक्टर साहब ने मुझसे अफीम का पाउडर मंगवाया था।"

"क्या वह डिब्बा आपके कमरे में था?"

"नहीं···हां···।"

"क्या मतलब?" मेजर बोला।

"आपसे यह किसने कहा है कि वह डिब्बा मेरे कमरे में था?"

मेजर ने जरा तीखे स्वर में कहा, "सवाल का जवाब सवाल से न दीजिए। कल सुबह किचन में आप कब गए थे?"

"पौने छ: बजे।"

"जब रजनी और आप किचन से निकलकर जा चुके थे, तो क्या किचन में फिर लौट आए थे?"

"नहीं···मुझे याद नहीं है।"

"सुनिए, मैं अब आपसे एक बहुत ही सीधा सवाल पूछने वाला हूं।" मेजर ने कहा। राजेश चुप रहा तो मेजर ने पूछा, "क्या आपको रजनी से प्रेम है?" राजेश भौचक्का रह गया। वह चुप रहा।

"अच्छा छोड़िए। इस सवाल का जवाब देने की जरूरत नहीं। हमें पता चला है कि दीवान साहब अपनी वसीयत के अनुसार आपको काफी जायदाद सौंप गए हैं। आप इस बात का जवाब दीजिए कि अगर डाक्टर बनर्जी आपसे कहें, तो क्या आप कश्मीर में खुदाई के लिए उनकी मुहिम में धन लगाने को तैयार हो जायेंगे?"

"अगर डाक्टर साहब न भी कहें तो भी मैं इस मुहिम में अपनी सारी पूंजी लगा दूंगा—लेकिन इसके लिए मुझे रजनी की स्वीकृति लेनी होगी।"

"क्यों? क्या आपके ख्याल में रजनी स्वीकृति नहीं देगी?"

"नहीं, मुझे ऐसी कोई शंका नहीं है। मैं जानता हूं कि वह डाक्टर साहब की किसी भी इच्छा को टाल नहीं सकती।"

"एक पतिव्रता पत्नी जो है···!"

"जी हां।"

"सिद्दीकू के बारे में आपकी क्या राय है?"

"सिद्दीकू एक भला आदमी है।"

"सिद्दीकू डाक्टर साहब से रजनी की शादी पर अप्रसन्न है?"

"उसने इस शादी को पसन्द नहीं किया था।"

"अगर यह बात है तो सिट्टीकू डाक्टर साहब को हत्यारा सिद्ध करने के लिए पूरा जोर लगा सकता है। प्रतिशोध की देवी जूम्बी की मूर्ति और मेराम्बू जाति के सरदार बोरगेवो की मुहर का टाई पिन इस बात का इशारा करते हैं कि हत्या उस व्यक्ति ने की है जो अंधविश्वासों पर यकीन रखता था और मनुष्य की इन भावनाओं को उभारकर यह भ्रम पैदा करना चाहता था कि दीवान की हत्या देवी जूम्बी ने की थी। फिर वह यह भी चाहता था कि हत्या का अभियोग डाक्टर साहब पर लगाया जाए।"

"ऐसा कभी नहीं हो सकता। सिट्टीकू दीवान साहब को भगवान के बाद दूसरा दर्जा देता था और मैं पहले भी कह चुका हूं कि सिट्टीकू एक वफादार कुत्ते से भी ज्यादा वफादार है।"

"अच्छी बात है। आप यह बताइए कि कल डाक्टर साहब के कहने पर बाहर जाने से पहले आप अजायबघर में गए थे?"

"हां, मैं नाश्ते से पहले अक्सर वहां जाता हूं, यह मेरी आदत बन चुकी है। मुझे इस अजायबघर का संरक्षक समझा जाता है। मैं सुबह-सवेरे यह देखने जाता हूं कि हर मूर्ति अपने स्थान पर ठीक रखी है या नहीं।"

"कल सुबह आप कितने बजे अजायबघर में गए थे?"

"सवा सात बजे। मैं पौने नौ बजे बाहर चला गया था।"

"क्या आपको किसी ने अजायबघर में दाखिल होते देखा था?"

"किसी ने नहीं।"

"क्या बाहर जाने से पहले आपको मालूम था कि आपके चाचा अजायबघर में मौजूद हैं?"

"नहीं, वे अपने कमरे से बाहर नहीं आए थे। वे अपने कमरे से निकले भी थे तो मैं देख नहीं पाया था।"

"सुनिए मिस्टर राजेश, मैं समझता हूं कि दीवान साहब की हत्या करने के लिए इस कमरे में हत्यारे की मौजूदगी जरूरी नहीं थी। हत्यारा अपनी अनुपस्थिति में भी उनकी हत्या कर सकता था, क्योंकि वह हत्या की योजना बना चुकने के बाद इस घर से जा चुका था।"

"हूं!" राजेश ने घृणा से नाक सिकोड़ते हुए कहा, "आप समझते हैं कि मैंने अपने चाचा की हत्या करने की साजिश की…?" यह कहकर वह मुट्ठियां भींचकर मेजर की ओर बढ़ा। उसके इस अन्दाज से स्पष्ट था कि वह आक्रमण करने के लिए बिल्कुल तैयार हो चुका था। राजेश ने निकट आकर जोर से अपना बाजू लहराया और मेजर के मुंह पर मुक्का मारने की कोशिश की। लेकिन मेजर तेजी से पहले ही झुक चुका था और राजेश की पीठ की ओर पहुंचकर उसका बायां बाजू अपने बायें बाजू में लपेटकर दायें बाजू से उसकी गर्दन दबोच चुका था। पीड़ा से राजेश के होंठ खुल गए थे और उसके नैन-नक्श खिच गए थे।

इन्स्पेक्टर धर्मवीर आश्चर्य से यह सारा दृश्य देख रहा था। वह मेजर की फुर्ती की दाद दे रहा था। राजेश एक तगड़ा नवयुवक था, लेकिन मेजर ने पलक झपकते ही उसे जिस तरह अपनी पकड़ में लेकर विवश कर दिया था उससे मेजर के दांव-पेच की श्रेष्ठता का प्रमाण मिलता था। मेजर ने राजेश को सोफे पर गिरा दिया और उसके सामने बैठते हुए बोला, "सुनिए मिस्टर राजेश, अगर आप आराम से हमारे सवालों के जवाब नहीं देंगे तो आपको और मिसेज रजनी को दीवान सुरेन्द्रनाथ की हत्या के अभियोग में गिरफ्तार कर लिया जाएगा। आप पर दूसरा अभियोग यह लगाया जाएगा

कि आपने हत्या के बाद एक निर्दोष व्यक्ति को हत्यारा सिद्ध करने की कोशिश की और इस तरह उसे भी अपने रास्ते से हटाने की साजिश की।"

राजेश बौखलाकर बुरी तरह हांफ रहा था, "रजनी···।" राजेश ने परेशान स्वर में कहा, "रजनी का कोई दोष नहीं। अगर आप उस पर सन्देह करते हैं तो मैं हत्या का अपराध स्वीकार करता हूं।"

"ऐसी बहादुरी दिखाने की जरूरत नहीं, मिस्टर राजेश!" मेजर बोला, "कल सुबह जब आप अजायबघर में गए थे, तो वहां आप क्या कुछ करते रहे थे?"

राजेश क्षण-भर के लिए मौन रहा, फिर बोला, "मैंने वहां जाकर एक पत्र लिखा था।"

"वह पत्र आपने किसको लिखा था?"

"मैं यह बताना नहीं चाहता।"

"आपने वह पत्र किस भाषा में लिखा था?"

"आप यह सवाल मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? मैं अंग्रेजी, लैटिन, रोमन, संस्कृत और सुआहिली में पत्र लिख सकता हूं।"

"मुझे मालूम है कि आप बहुत-सी भाषाएं जानते हैं। पुरातत्त्व-विशेषज्ञ को कई भाषाओं पर अधिकार होना ही चाहिए और मेरा ख्याल है कि आपने अफ्रीका की सुआहिली भाषा में पत्र लिखा था।"

"ओह मेरे भगवान!" राजेश के मुंह से निकला, लेकिन फिर तुरन्त ही संभलते हुए उसने कहा, "आप यह कैसे कह सकते हैं कि मैंने सुआहिली भाषा में पत्र लिखा था?"

"यह अनुमान लगाना बिल्कुल कठिन नहीं है। आपने रजनी के नाम पत्र लिखा था और मिसेज रजनी भी सुआहिली भाषा अच्छी तरह जानती हैं।"

"मैं समझता हूं कि अब आपसे झूठ बोलने का कोई लाभ नहीं है। आपका अनुमान बिल्कुल ठीक है। मैंने रजनी को पत्र लिखा था और सुआहिली भाषा में लिखा था।"

"क्या मैं पूछ सकता हूं कि आपने उस पत्र में क्या लिखा था?"

"मैं आपसे कुछ नहीं छिपाऊंगा। वह एक संक्षिप्त-सा पत्र था, और मैंने लिखा था—एक जिन्दगी हमारे रास्ते में बाधा डाले हुए है। हमारी प्रसन्नता में रुकावट बनी है। यह रुकावट दूर होनी चाहिए। बस, यह तीन पंक्तियों का पत्र था।"

"इससे तो प्रकट होता है कि आप कोई खतरनाक कदम उठाना चाहते थे।" ने कहा।

"वह एक मूर्खतापूर्ण पत्र था और भावनाओं में बहकर लिखा गया था। मैंने वह पत्र रजनी को नहीं दिया था।"

"अब वह पत्र कहां है?"

"अजायबघर की मेज की दराज में। मैं उस पर पुनः विचार करना चाहता था, उसके बाद रजनी को देना चाहता था।"

"क्या आप वह पत्र लाकर मुझे दिखा सकते हैं?"

राजेश उठकर तेजी से बाहर निकल गया और कुछ क्षण बाद ही वापस लौट आया। उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था।

"पत्र मेज की दराज में नहीं है।" उसने कहा।

मेजर तिलमिला और कसमसा रहा था, "आपने वह पत्र कैसे कागज पर लिखा था?"

"वह हरे रंग का पैड का कागज था।"

"आपने वह पत्र कलम से लिखा था या पेन्सिल से ?"

"कलम से।"

"बस, इतना काफी है। अब आप आराम कर सकते हैं।" मेजर ने कहा। मेजर और इन्स्पेक्टर कमरे से बाहर निकल आए। अजायबघर में आकर मेजर अपनी पीठ के पीछे अपने दोनों हाथ बांधकर गहरी सोच में डूब गया। फिर उसने इन्स्पेक्टर से कहा, "इन्स्पेक्टर साहब, राजेश के कमरे पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए। रजनी, सिद्दीकू और राजेश के बीच कोई पत्र-व्यवहार या बातचीत नहीं होनी चाहिए। उनको एक-दूसरे के कमरे में भी नहीं जाने देना चाहिए।"

"मैं अभी इसका प्रबन्ध किए देता हूं।" इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने इतना कहा और बाहर निकल गया।

मेजर ने कलाई पर बंधी हुई घड़ी की ओर देखा। दोपहर के खाने का समय हो चुका था। सोनिया लछमी और रजनी से मिलने गई थी। वह अभी तक नहीं लौटी थी। इन्स्पेक्टर वापस आया तो मेजर फिर कलाई की घड़ी की ओर देखने लगा।

भयानक वातावरण

खाना खा चुकने के बाद सोनिया फिर मेजर से अलग हो गई। पुलिस अधिकारी अपनी ड्यूटी पर चले गये। इन्स्पेक्टर ने मेजर के साथ अजायबघर में प्रवेश करते हुए कहा, "उस पत्र को कहां-कहां तलाश किया जा सकता है ?"

मेजर इस बीच में बहुत कुछ सोचता रहा था। एकाएक उसके होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा। उसने चुटकी भी बजाई और फिर तेजी से उस कमरे में जा पहुंचा जहां दीवान साहब की हत्या की गई थी। वह चक्करदार सीढ़ी के पास पहुंचकर बोला, "मुझे विश्वास है कि पत्र डाक्टर के पढ़ने के कमरे में मिलेगा।"

इन्स्पेक्टर मेजर के साथ सीढ़ियां चढ़कर डाक्टर बनर्जी के पढ़ने के कमरे में पहुंचा। भीतर आते ही मेजर मेज के पास पड़ी हुई रद्दी की टोकरी खंगालने में व्यस्त हो गया। कागजों में हरे रंग के पैड के कागज के छोटे-छोटे टुकड़े मिले हुए थे। मेजर ने वे सारे टुकड़े एकत्र करके मेज पर रख दिए। उनको बड़ी मुश्किल से तरतीब दी गई।

"जरा सिद्दीकू को बुलाइए।" मेजर ने कहा।

सिद्दीकू ने कमरे में प्रवेश किया, "सिद्दीकू, यह सुआहिली भाषा में लिखा हुआ पत्र है। इसे पढ़कर सुनाओ।" मेजर ने कहा।

सिद्दीकू धीरे-धीरे कदम रखते हुए मेज के निकट पहुंचा। वह उस कागज को देर तक देखता रहा। उसके बाद उसने उस कागज की तरतीब ठीक की और पढ़ना शुरू किया। वह बड़ी ही विचित्र भाषा बोल रहा था।

"इन वाक्यों का क्या अर्थ है ?" मेजर ने पूछा।

"इस पत्र में लिखा है," सिद्दीकू ने झिझकते हुए कहा, "इस पत्र में लिखा है कि एक जिन्दगी हमारे रास्ते में बाधक है। हमारी प्रसन्नता में रुकावट बनी हुई है। वह रुकावट दूर होनी चाहिए।"

"राजेश ने सच बोला था।" मेजर ने कहा।

"लीजिए, आपको पत्र मिल गया। बधाई हो।" इन्स्पेक्टर ने कहा, "अब हत्या की पहेली पचास फीसदी हल कर दीजिए।"

"आप तो बेचैन हुए जा रहे हैं।" मेजर ने कहा।

इन्स्पेक्टर चुप हो गया। फिर कुछ सोचते हुए बोला, "आपका

कि आपने हत्या के बाद एक निर्दोष व्यक्ति को हत्यारा सिद्ध करने की कोशिश की और इस तरह उसे भी अपने रास्ते से हटाने की साजिश की।"

राजेश बौखलाकर बुरी तरह हांफ रहा था, "रजनी···।" राजेश ने परेशान स्वर में कहा, "रजनी का कोई दोष नहीं। अगर आप उस पर सन्देह करते हैं तो मैं हत्या का अपराध स्वीकार करता हूं।"

"ऐसी बहादुरी दिखाने की जरूरत नहीं, मिस्टर राजेश!" मेजर बोला, "कल सुबह जब आप अजायबघर में गए थे, तो वहां आप क्या कुछ करते रहे थे?"

राजेश क्षण-भर के लिए मौन रहा, फिर बोला, "मैंने वहां जाकर एक पत्र लिखा था।"

"वह पत्र आपने किसको लिखा था?"

"मैं यह बताना नहीं चाहता।"

"आपने वह पत्र किस भाषा में लिखा था?"

"आप यह सवाल मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? मैं अंग्रेजी, लैटिन, रोमन, संस्कृत और सुआहिली में पत्र लिख सकता हूं।"

"मुझे मालूम है कि आप बहुत-सी भाषाएं जानते हैं। पुरातत्त्व-विशेषज्ञ को कई भाषाओं पर अधिकार होना ही चाहिए और मेरा ख्याल है कि आपने अफ्रीका की सुआहिली भाषा में पत्र लिखा था।"

"ओह मेरे भगवान!" राजेश के मुंह से निकला, लेकिन फिर तुरन्त ही संभलते हुए उसने कहा, "आप यह कैसे कह सकते हैं कि मैंने सुआहिली भाषा में पत्र लिखा था?"

"यह अनुमान लगाना बिल्कुल कठिन नहीं है। आपने रजनी के नाम पत्र लिखा था और मिसेज रजनी भी सुआहिली भाषा अच्छी तरह जानती हैं।"

"मैं समझता हूं कि अब आपसे झूठ बोलने का कोई लाभ नहीं है। आपका अनुमान बिल्कुल ठीक है। मैंने रजनी को पत्र लिखा था और सुआहिली भाषा में लिखा था।"

"क्या मैं पूछ सकता हूं कि आपने उस पत्र में क्या लिखा था?"

"मैं आपसे कुछ नहीं छिपाऊंगा। वह एक संक्षिप्त-सा पत्र था, और मैंने लिखा था—एक जिन्दगी हमारे रास्ते में बाधा डाले हुए है। हमारी प्रसन्नता में रुकावट बनी है। यह रुकावट दूर होनी चाहिए। बस, यह तीन पंक्तियों का पत्र था।"

"इससे तो प्रकट होता है कि आप कोई खतरनाक कदम उठाना चाहते थे।" [illegible] ने कहा।

"वह एक मूर्खतापूर्ण पत्र था और भावनाओं में बहकर लिखा गया था। मैंने वह पत्र रजनी को नहीं दिया था।"

"अब वह पत्र कहां है?"

"अजायबघर की मेज की दराज में। मैं उस पर पुनः विचार करना चाहता था, उसके बाद रजनी को देना चाहता था।"

"क्या आप वह पत्र लाकर मुझे दिखा सकते हैं?"

राजेश उठकर तेजी से बाहर निकल गया और कुछ क्षण बाद ही वापस लौट आया। उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था।

"पत्र मेज की दराज में नहीं है।" उसने कहा।

मेजर तिलमिला और कसमसा रहा था, "आपने वह पत्र कैसे कागज पर लिखा था?"

"वह हरे रंग का पैड का कागज था।"

"आपने वह पत्र कलम से लिखा था या पेन्सिल से ?"

"कलम से।"

"बस, इतना काफी है। अब आप आराम कर सकते हैं।" मेजर ने कहा। मेजर और इन्स्पेक्टर कमरे से बाहर निकल आए। अजायबघर में आकर मेजर अपनी पीठ के पीछे अपने दोनों हाथ बांधकर गहरी सोच में डूब गया। फिर उसने इन्स्पेक्टर से कहा, "इन्स्पेक्टर साहब, राजेश के कमरे पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए। रजनी, सिद्दीकू और राजेश के बीच कोई पत्र-व्यवहार या बातचीत नहीं होनी चाहिए। उनको एक-दूसरे के कमरे में भी नहीं जाने देना चाहिए।"

"मैं अभी इसका प्रबन्ध किए देता हूं।" इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने इतना कहा और बाहर निकल गया।

मेजर ने कलाई पर बंधी हुई घड़ी की ओर देखा। दोपहर के खाने का समय हो चुका था। सोनिया लछमी और रजनी से मिलने गई थी। वह अभी तक नहीं लौटी थी। इन्स्पेक्टर वापस आया तो मेजर फिर कलाई की घड़ी की ओर देखने लगा।

भयानक वातावरण

खाना खा चुकने के बाद सोनिया फिर मेजर से अलग हो गई। पुलिस अधिकारी अपनी ड्यूटी पर चले गये। इन्स्पेक्टर ने मेजर के साथ अजायबघर में प्रवेश करते हुए कहा, "उस पत्र को कहां-कहां तलाश किया जा सकता है ?"

मेजर इस बीच में बहुत कुछ सोचता रहा था। एकाएक उसके होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा। उसने चुटकी भी बजाई और फिर तेजी से उस कमरे में जा पहुंचा जहां दीवान साहब की हत्या की गई थी। वह चक्करदार सीढ़ी के पास पहुंचकर बोला, "मुझे विश्वास है कि पत्र डाक्टर के पढ़ने के कमरे में मिलेगा।"

इन्स्पेक्टर मेजर के साथ सीढ़ियां चढ़कर डाक्टर बनर्जी के पढ़ने के कमरे में पहुंचा। भीतर आते ही मेजर मेज के पास पड़ी हुई रद्दी की टोकरी खंगालने में व्यस्त हो गया। कागजों में हरे रंग के पैड के कागज के छोटे-छोटे टुकड़े मिले हुए थे। मेजर ने वे सारे टुकड़े एकत्र करके मेज पर रख दिए। उनको बड़ी मुश्किल से तरतीब दी गई।

"जरा सिद्दीकू को बुलाइए।" मेजर ने कहा।

सिद्दीकू ने कमरे में प्रवेश किया, "सिद्दीकू, यह सुआहिली भाषा में लिखा हुआ पत्र है। इसे पढ़कर सुनाओ।" मेजर ने कहा।

सिद्दीकू धीरे-धीरे कदम रखते हुए मेज के निकट पहुंचा। वह उस कागज को देर तक देखता रहा। उसके बाद उसने उस कागज की तरतीब ठीक की और पढ़ना शुरू किया। वह बड़ी ही विचित्र भाषा बोल रहा था।

"इन वाक्यों का क्या अर्थ है ?" मेजर ने पूछा।

"इस पत्र में लिखा है," सिद्दीकू ने झिझकते हुए कहा, "इस पत्र में लिखा है कि एक जिन्दगी हमारे रास्ते में बाधक है। हमारी प्रसन्नता में रुकावट बनी हुई है। यह रुकावट दूर होनी चाहिए।"

"राजेश ने सच बोला था।" मेजर ने कहा।

"लीजिए, आपको पत्र मिल गया। बधाई हो।" इन्स्पेक्टर ने कहा, "अब हत्या की पहेली पचास फीसदी हल कर दीजिए।"

"आप तो बेचैन हुए जा रहे हैं।" मेजर ने कहा।

इन्स्पेक्टर चुप हो गया। फिर कुछ सोचते हुए बोला, "आपका क्या [illegible] है

कि हत्यारे ने यह पत्र उठाया और फाड़कर डाक्टर साहब की रद्दी की टोकरी में फेंक दिया ?"

"बिल्कुल यही ख्याल है।" मेजर ने उत्तर दिया।

"मैं इससे सहमत नहीं हूं कि हत्यारे ने यह पत्र फाड़कर फेंका है। यह पत्र तो हत्यारे के लिए बड़ा कीमती सिद्ध हो सकता था। मैं समझता हूं कि राजेश ने यह पत्र लिखा। उसी ने फाड़ा और डाक्टर साहब की रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। मेरी नजर में तो राजेश ही दीवान साहब का हत्यारा है।"

"अगर उसने दीवान साहब की हत्या की होती तो वह कभी यह स्वीकार न करता कि उसने यह पत्र लिखा है।" मेजर ने तर्क प्रस्तुत किया, "एक बात और भी है कि अगर राजेश हत्यारा होता तो उसने इस पत्र को पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया होता।"

"अगर ऐसी बात है तो आपको यह विश्वास कैसे हुआ कि पत्र डाक्टर साहब के कमरे में मिलेगा ?"

"यह केवल मेरा अनुमान था। मैं समझता हूं कि हत्यारे ने यह पत्र फाड़कर डाक्टर साहब की रद्दी की टोकरी में इसलिए फेंका कि डाक्टर साहब ही को हत्यारा सिद्ध किया जाए। हत्यारे को मालूम था कि राजेश कभी यह स्वीकार नहीं करेगा कि उसने इस प्रकार का कोई पत्र लिखा था। इसलिए जब यह पत्र डाक्टर साहब की रद्दी की टोकरी में मिलेगा तो यह समझा जाएगा कि पत्र डाक्टर साहब ने ही लिखा था। अब हमें बहुत जल्द हरकत में आ जाना चाहिए वर्ना एक और दुर्घटना हो सकती है।"

"क्या मतलब ?" इन्स्पेक्टर ने हैरान होकर पूछा।

"हत्यारा डाक्टर साहब को हत्यारा सिद्ध करने के लिए काफी जोर लगा चुका है, लेकिन हमने अभी तक हत्यारे की इच्छा के अनुसार डाक्टर साहब को गिरफ्तार नहीं किया। हत्यारे को इससे बड़ी निराशा हुई है। उसे अपना बना-बनाया खेल बिगड़ता नजर आ रहा है। अब वह डाक्टर साहब की शंका के अनुसार उन पर हमला कर सकता है।" मेजर बातें करने के साथ-साथ गोंददानी लेकर राजेश के पत्र के टुकड़े भी जोड़ता रहा। जब वह दूसरे कागज पर पत्र के टुकड़े जोड़ चुका तो उसने वह पत्र तह करके अपनी जेब में रख लिया।

इतने में डाक्टर बनर्जी अपने सोने के कमरे का दरवाजा खोलकर अपने पढ़ने के कमरे में आ गया। उसका रंग सफेद पड़ चुका था और उसकी आंखों से वहशत टपक रही थी। उसने एक थके व्यक्ति की तरह गर्दन हिलाकर कमरे में नजर दौड़ाई और फिर कुर्सी पर बैठते हुए क्षीण स्वर में बोला, "मैं सोने की कोशिश करता रहा हूं, लेकिन नींद नहीं आती।" फिर उसने मेजर की ओर देखते हुए कहा, "मैंने आपकी बातें सुन ली हैं कि अब हत्यारा निराश होकर मुझ पर हमला करेगा। मेरा दिल बैठा जा रहा है। मैं इस घर में क्षण-भर के लिए भी नहीं रह सकता। मुझे इसकी दीवारों तक से भय लग रहा है। काश, आपने मुझे बम्बई जाने दिया होता ! यह सोचकर मेरी जान निकली जा रही है कि आज की रात इस घर में कैसे कटेगी। आपको एक पत्र मिला है। सिद्दीकी ने उस पत्र की जो इबारत पढ़कर सुनाई है उससे प्रत्यक्ष है कि कोई मेरी जान का दुश्मन हो रहा है। यह जानकर मेरे होश-हवास उड़ गए हैं कि वह पत्र राजेश ने लिखा है। मेजर साब, मैं बहुत डर गया हूं।"

"घबराए नहीं, डरने की कोई बात नहीं। हम आपकी पूरी-पूरी रक्षा करेंगे।" और फिर मेजर ने कुछ सोचते हुए कहा, "आपको मालूम है कि कल सुबह छः बजे के लगभग आपको कॉफी का जो प्याला दिया गया था, उसमें अफीम का पाउडर मिला

हुआ था ?"

"काफी के प्याले में अफीम का पाउडर !" आश्चर्य से डाक्टर बोला, "नहीं, मुझे यह मालूम नहीं था। ओह, अब मैं समझा कि मैं कल इतनी देर तक क्यों सोया रहा था और कल से मुझे इतनी प्यास क्यों लग रही है। किसी ने मुझे अफीम देकर मारने की कोशिश की थी। क्या आप अब भी मुझे इस घर में रहने को कहेंगे ?"

"हम आपसे यही कहेंगे कि आप इसी घर में रहिए और इस प्रकार हत्यारे को ढूंढ़ने में हमारी सहायता कीजिए।"

"मैं आपकी सहायता करने के लिए तैयार हूं।"

"धन्यवाद !" मेजर ने कहा, "क्या आपकी पत्नी सुआहिली भाषा अच्छी तरह जानती हैं ?"

"हां, बहुत अच्छी तरह।"

"आप भी सुआहिली भाषा जानते हैं ?"

"जी हां—और राजेश भी। मैंने ही उसे यह भाषा सिखाई है।"

"डाक्टर साहब, इस घर में कौन ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो आपको दीवान साहब की हत्या का अपराधी ठहराकर आपको अपने रास्ते से हटना चाहता है ?"

"अब तो मुझे इस घर के हर व्यक्ति से भय लग रहा है। कृपा करके मुझे गिरफ्तार कर लीजिए। इस तरह मैं सुरक्षित तो रहूंगा।"

"डाक्टर साहब, आप भूलते हैं। गिरफ्तार अपराधियों को किया जाता है, निर्दोष व्यक्तियों को नहीं। आप बहुत थके हुए दिखाई दे रहे हैं। जाकर आराम कीजिए। कल सुबह तक अपने कमरे में रहिए। हम उचित पहरे और निगरानी का प्रवन्ध कर देंगे।"

डाक्टर ने कुर्सी पर से उठते हुए पूछा, "क्या आप हत्यारे का अभी तक कोई सुराग नहीं लगा पाए ?"

"कुछ-कुछ तो पता चल गया है। लेकिन अभी तक हमारे पास प्रमाण कम हैं, इसलिए उसे गिरफ्तार नहीं किया जा सकता। हमें थोड़ा-सा इन्तजार करना होगा।"

डाक्टर सोने के कमरे के दरवाजे तक जाते हुए लड़खड़ा गया। मेजर उसे सहारा देने के लिए लपका। वह डाक्टर को सोने के कमरे में ले गया। जब वह मुड़ा तो उसकी नजर एक अलमारी पर रखे हुए तीर-कमान पर पड़ी। मेजर ने उसे उठा लिया। वह प्राचीन ढंग का धनुष था और काफी वजनी था।

"यह तीर-कमान बहुत मजबूत है।" मेजर ने कहा।

"इसे अफ्रीका के जंगली लोग शिकार के लिए इस्तेमाल करते हैं।" डाक्टर ने कहा।

"आपके पास कहां से आया ?"

"यह मेरी पत्नी का है।"

"आपकी पत्नी का ?"

"हां, उसके पिता प्रोफेसर मोरानियो इसे अफ्रीका से लाए थे।"

"ओह !" यह कहकर मेजर ने तीर-कमान दोबारा अलमारी पर रख दिया और कमरे से बाहर निकलते हुए बोला, "आज रात को अपने कमरे का दरवाजा और खिड़कियां बन्द करके सोइएगा।"

मेजर पढ़ने के कमरे में आया तो इन्स्पेक्टर ने कहा, "डाक्टर के बयान से मुझे भी ऐसा लगा है कि इस घर में कदम-कदम पर खतरा रेंग रहा है। आज हमें पहरे का और भी कड़ा प्रवन्ध करना होगा।"

"हां, नीचे चलिए, राजेश से एक और मुलाकात बहुत जरूरी है।"

राजेश अपने कमरे में था। उसके कमरे के बाहर एक पुलिस कांस्टेबिल खड़ा था। वह बहुत तिलमिला रहा था। उसको यह नजरबन्दी बिल्कुल पसन्द नहीं थी। मेजर ने मुस्कराते हुए कहा, "आपको एक-दो दिन के लिए कष्ट उठाना पड़ेगा। मैं जानता हूं कि जुदाई की घड़ियां कितनी जानलेवा होती हैं।"

राजेश मेजर की इस बात का मतलब समझ गया था। उसने उदास होकर पूछा, "एक-दो दिन के लिए मुझ पर कड़ा पहरा लगा रहेगा?"

"नहीं, केवल आज की रात—आज की रात आपको बहुत चौकस र[illegible] होगा।" मेजर ने कहा।

"क्यों?"

"हम समझते हैं कि कोई न कोई नई घटना अवश्य होगी। हम सभी को यह हिदायत कर रहे हैं कि वे चौकन्ने रहें। बस, आपसे इतना ही काम था।" मेजर मुड़ा और दरवाजे के पास पहुंचकर बोला, "एक बात याद आ गई। कामिनी के साथ तो आप काफी समय तक रह चुके हैं—कामिनी के बारे में आपकी क्या राय है?"

"मेरे सामने उसका नाम न लीजिए। वह बड़ी गुस्ताख लड़की थी। उसने मेरे चाचा का जीना हराम कर दिया था। मैं उसका नाम भी सुनने के लिए तैयार नहीं हूं।" राजेश के स्वर में घृणा थी।

दोनों राजेश के कमरे से बाहर निकले तो उन्होंने सोनिया को ऊपर से नीचे आते हुए देखा। शाम के साये फैलने लगे थे।

सोनिया मुस्करा रही थी। उसकी मुस्कराहट उसकी विजय का प्रतीक थी। मेजर का दिल भी उसकी छाती में बल्लियों उछलने लगा।

एक विचित्र कहानी

सोनिया ने खाना समाप्त करते ही सिर-दर्द का बहाना किया और अपने कमरे में चली आई। मेजर ने लाला केदारनाथ के प्रश्नों का उत्तर जल्दी से दिया और कहा, "मेरा सिर भी आज जरा भारी है...।" और वह भी उठ खड़ा हुआ। चाचा और चाची को नमस्ते की, रीटा और रूबी के सिर पर हाथ फेरा और दरवाजे की ओर बढ़ा।

अपने कमरे में पहुंचकर उसने दरवाजा बन्द कर लिया। सोनिया सोने के वस्त्र [illegible]चुकी थी।

फिर मेजर भी प्लाईवुड के पार्टीशन के पीछे वस्त्र बदलकर तुरन्त वापस आ गया। सोनिया पलंग पर लिहाफ ओढ़े बैठी थी। मेजर भी लिहाफ का दूसरा सिरा ओढ़कर बैठ गया और सोनिया से बोला, "अब अपनी कहानी सुनाओ।"

सोनिया ने सुनाना आरम्भ किया, "लछमी एक साफगो औरत है। उसकी भाषा भी लच्छेदार है। मैं उसके कमरे में उससे मिली। उस समय वह अपने स्वेटर का उधड़ा हुआ भाग बुन रही थी। उसने मुझे बैठने के लिए मोढ़ा दिया और मुझसे मेरे आने का कारण पूछा। मैंने पैरों पर पानी न पड़ने दिया। केवल इतना कहा कि इस घर में ठहरना मुश्किल हो गया था। इसलिए मैं उकताकर उसके पास चली आई थी। उसने मुझसे पूछा कि मैं रजनी के पास क्यों नहीं गई। मैंने जवाब दिया कि मुझे फैश[illegible] नेबल और नए जमाने की लड़कियां अच्छी नहीं लगतीं। आपको याद होगा कि आज मैं सादी-सी धोती पहनकर गई थी। मेरी यह बात उसे बहुत पसन्द आई और वह मुझसे घुल-मिलकर बातें करने लगी। उसने बताया कि कामिनी बीबी भी रजनी के पास बिल्कुल नहीं बैठती थी। इसके बाद उसने कामिनी के गुण गाने शुरू कर दिए। मैंने इस

अवसर को गनीमत जाना और उसे रोहिणी का चित्र दिखाया। उस चित्र को देखते ही उसके मुंह से निकला—'कामिनी दीदी !' वह मेरे पास कामिनी का चित्र देखकर बहुत हैरान हुई। पूछने लगी कि वह चित्र कैसे मेरे हाथ लग गया। मैंने उसे बताया कि कामिनी मेरी सहेली थी। बम्बई में हम दोनों एक ही जगह काम करती थीं। बस, फिर क्या था, लछमी बिलकुल बिछ गई। उसने एक ही सांस में कामिनी के बारे में बीसियों सवाल पूछ डाले। मैंने उसके सवालों का मुनासिब जवाब देने की कोशिश की। मैंने देखा कि उसकी आंखें भीग गई थीं। ऐसा लगा कि कामिनी से उसे गहरा लगाव था। वह उठी और ट्रंक में से एक थैला निकाल लाई। उसने मुझे कामिनी के कई चित्र दिखाए जो स्वयं कामिनी ने दिए थे। उसके पास कामिनी के कई पत्र भी थे। वह कामिनी के चित्र दिखा रही थी और साथ-ही-साथ बचपन से लेकर अब तक की उसकी सारी बातें सुनाती जा रही थी।" सोनिया सांस लेने के लिए रुकी। फिर वह अपने बालों को संवारते हुए बोली।

"लछमी की ज़ुबान से कामिनी के बारे में जो बातें मुझे मालूम हुई, उनका सारांश यह है कि कामिनी एक सीधी-सादी लड़की है। न जाने क्यों हमेशा उदास रहती है। वह प्रोफेसर मोराबियो के मरने के बाद अधिक उदास रहने लगी थी। लछमी ने मुझे इसका कारण भी बताया जो बहुत ही विचित्र और दुःखद था—प्रोफेसर मोराबियो कामिनी का पिता था—दीवान सुरेन्द्रनाथ नहीं।"

"यह तो एक बिलकुल नई बात है। विश्वास नहीं आता।" मेजर ने कहा।

"आप ज़रा सुनते जाइए। कामिनी लछमी से कोई बात नहीं छुपाती थी। वह लछमी को अपना राजदार बना चुकी थी। कामिनी ने ही लछमी को बताया था कि वह प्रोफेसर मोराबियो की बेटी है। यही कारण है कि रजनी की सूरत कामिनी से बहुत मिलती है। कामिनी को एक गहरा दुःख था। इसीलिए उसने लछमी को अपना राजदार बना लिया था ताकि कभी-कभी अपना मन हलका कर सके। वह अवसर पाकर लछमी के पास आ बैठती थी और लछमी उससे बड़ी बहन की तरह प्यार करने लगी थी। एक दिन उसने लछमी को अपने जन्म का किस्सा सुनाया। कामिनी को अपने जन्म का किस्सा प्रोफेसर मोराबियो की जबानी मालूम हुआ था और प्रोफेसर मोराबियो ने मृत्यु-शय्या पर इस भेद का रहस्योद्घाटन किया कि कामिनी उसकी बेटी थी। उसने उसे एकान्त में बुलाया था और जो भेद वह एक समय से अपने दिल में छिपाए हुए था, उसे प्रकट कर दिया था। इस किस्से के अनुसार जब प्रोफेसर दारुस्सलाम में रहता था तो उसकी शादी हो चुकी थी। वहां उसकी साली भी यानी रजनी की मां की बहन भी उसके पास रहती थी। दीवान सुरेन्द्रनाथ से उसकी गहरी मित्रता थी। प्रोफेसर की पत्नी चूंकि एक समझदार महिला थी इसलिए उसने उचित समझा कि दीवान साहब को उससे शादी कर लेनी चाहिए। दीवान साहब यों भी उस पर मुग्ध हो चुके थे। शादी हो गई लेकिन शादी के पन्द्रह दिन बाद एक खुदाई के दौरान दीवान साहब के साथ एक ऐसी दुर्घटना हो गई कि वे···।" सोनिया कुछ कहते-कहते लजा गई।

"कहो-कहो, रुक क्यों गई ?" मेजर ने कहा।

"उस दुर्घटना के बाद दीवान साहब की पौरुष शक्ति जाती रही। देखने में वे एक अच्छे-भले पुरुष दिखाई देते थे, लेकिन उस दुर्घटना का उन पर मनोवैज्ञानिक रूप से गहरा प्रभाव पड़ा। वे अपना दाम्पत्य सम्बन्ध भी कायम रखना चाहते थे और संतान के भी इच्छुक थे। प्रोफेसर मोराबियो को अपने मित्र का यह भेद अपनी पत्नी से मालूम हो चुका था। दीवान साहब को चूंकि अपने मित्र प्रोफेसर मोराबियो से प्रेम था इसलिए उन्होंने अपने मित्र से प्रार्थना की कि वे उनको इस हीन भाव से मुक्ति

दिलाएं और उनकी कामना पूरी करने का साधन बनें। प्रोफेसर ने पहले तो हील-
ज्जत की, लेकिन अन्त में अपने मित्र की बात टाल न सके।"

"ओह, कितनी विचित्र कहानी है।" मेजर ने कहा।

"यह मनुष्य के दुःखमय जीवन की दुःखमय कहानी है। जब रजनी और कामिनी की माताएं महामारी में मर गयीं तो दीवान साहब अपनी बेटी को साथ लेकर भारत आ गए। उनका ख्याल था कि कामिनी को वे अपनी बेटी समझ सकेंगे, लेकिन यह सत्य बड़ा ही अप्रिय था कि कामिनी उनकी बेटी नहीं थी। उन्होंने जाहिरदारी तो बनाए रखी लेकिन कामिनी से सगी बेटी की तरह प्यार न कर सके। जब आप किसी से विमुखता से पेश आते हैं तो उसके मन में भी विमुखता आ जाती है। कामिनी शुरू से ही उनसे खिंची-खिंची रहती थी। खिंचाव में साल पर साल वृद्धि होती गई। जब प्रोफेसर मोराबियो दीवान साहब के यहां चले आए तो कामिनी और प्रोफेसर के खून ने जोर मारा। प्रोफेसर साहब कामिनी की ओर कुछ ऐसे अन्दाज से देखते और उसे कुछ ऐसे ढंग से अपने पास बुलाते कि कामिनी अपने आप उनकी ओर खिंच जाती। वह दिन-ब-दिन उनके अधिक निकट होती चली गई। दीवान साहब बाप-बेटी को जब भी एक साथ देखते तो उनके दिल पर छुरियां चलने लगतीं। कामिनी को भी पता चल गया कि दीवान साहब उसके पिता प्रोफेसर मोराबियो के साथ उनके बढ़ते हुए स्नेह को पसन्द नहीं करते। यही कारण था कि कामिनी ने कलकत्ता से छुट्टियों में आना बन्द कर दिया। दीवान साहब से कामिनी की अनबन बढ़ती गई और दीवान साहब भी उससे दूर होते चले गए और उसे सताने की कोशिशें करते रहे। कामिनी के दिल में एक प्रकार की उद्दण्डता और विद्रोह जन्म ले चुका था कि वह दीवान साहब की इच्छा के सामने सिर नहीं झुकाएगी—और उधर दीवान साहब इस बात पर तुल गए थे कि वे कामिनी से अपनी हर बात मनवाकर रहेंगे। और जब प्रोफेसर साहब ने कामिनी को यह भेद बता दिया तो कामिनी की उद्दण्डता और भी प्रखर हो उठी। दीवान साहब भी ताड़ गए कि कामिनी उनका भेद जान चुकी है। उनकी दबी हुई घृणा उग्र हो उठी और वे कामिनी को और अधिक परेशान करने लगे। उनको जब मालूम हुआ कि कामिनी किसी फिल्म में काम करने के लिए बम्बई चली गई है तो उन्होंने धमकी दी कि वह अपने उस इरादे से बाज आ जाए, नहीं तो उसे जायदाद से वंचित कर दिया जाएगा। उन्होंने डेढ़ महीना पहले कामिनी को अपने [illegible] बुलाया था। वह कुछ दिन यहां रही। दीवान साहब ने उसे पन्द्रह दिन की मोह-[illegible]। लछमी ने कामिनी को बहुत समझाया-बुझाया कि वह जान-बूझकर इतनी [illegible] को क्यों ठुकरा रही है। लेकिन कामिनी के दिल में एक गांठ पड़ चुकी थी। [illegible] दीवान साहब का एक भी पैसा लेने के लिए तैयार नहीं थी। वह उसे हराम का [illegible] समझती थी। जो हो, लछमी के समझाने पर कामिनी कुछ नर्म पड़ गई और जाते [illegible] कह गई कि वह कुछ दिन बाद अपना फैसला बताएगी। जब कामिनी ने बम्बई जाकर कोई जवाब न भेजा तो दीवान साहब ने अपनी वसीयत को कानूनी रूप दे दिया, जिसमें कामिनी को अपनी जायदाद से बिल्कुल वंचित कर दिया।"

"कामिनी बम्बई जाकर गुम हो गई तो कौन जवाब देता। हो सकता है कि मन ही मन में वह जायदाद प्राप्त करने के लिए अपने-आप को तैयार कर चुकी हो। मुझे कामिनी का इस प्रकार गायब हो जाना भी एक गहरा रहस्य मालूम होता है।" मेजर ने कहा, "उसकी जीवनी कितनी दर्दनाक है! इस संसार में मनुष्य पर क्या कुछ बीत सकता है—यह सोचकर कलेजा मुंह को आता है।"

"मैंने जब लछमी को 'विदा' कहा तो उसने मुझे बम्बई से कामिनी के नाम आया हुआ एक पत्र दिया और बताया कि जिस दिन कामिनी यहां से गई थी, उस दिन

वह पत्र लछमी की मार्फत आया था। लछमी ने मुझसे कहा कि मैं वह पत्र कामिनी को जाकर दे दूं।"

"वह पत्र कहां है? लाओ, वह पत्र हमारे लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकता है।" मेजर ने कहा।

सोनिया उठी और अपने बैग में से पत्र ले आई जो लछमी ने उसे दिया था और जो कामिनी के नाम का था। मेजर ने वह पत्र खोला। पत्र अंग्रेजी में था। ऊपर यह पता लिखा हुआ था—४३ ए, वार्डन रोड, बम्बई। नीचे पत्र यों शुरू होता था:

"रोहिणी डार्लिंग!

मेरा यह अनुभव विश्वास में बदल चुका है कि तुमसे मेरी संक्षिप्त-सी भेंट ने गहरे प्रेम का रूप धारण कर लिया है। तुम्हारे बिना मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। मेरा एक-एक क्षण सदियां बनकर गुजर रहा है। मैं जानता हूं कि तुम्हारा भी यही हाल होगा। दिल को दिल से राहत होती है। तुम्हें भी मुझसे बहुत लगाव है। यह बात मुझसे छिपी हुई नहीं है। शीघ्र वापस आओ। मेरी आंखों को अब तुम्हारे सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देता।

तुम्हारा
प्रदीप"

मेजर ने उठकर वह पत्र अपने कोट की जेब में रख दिया। फिर उसने पूछा, "क्या तुम आज रजनी से भी मिली थीं?"

"जी हां।" सोनिया बोली, "दोपहर के खाने के बाद उससे मिली थी। वह कमरे में अकेली थी। रजनी के साथ भेंट में मुझे बड़ी तकल्लुफी से काम लेना पड़ा। कामिनी की बात छेड़ने में भी बड़ी सावधानी बरतनी पड़ी। रजनी से मुझे कामिनी के विषय में कुछ अधिक बातें मालूम नहीं हो सकीं। रजनी ने कामिनी के बारे में जो राय दी, वह संक्षेप में यह है कि कामिनी एक घमंडी लड़की है। स्वेच्छाचारी है। अपने अतिरिक्त उसे कोई भी एक आंख नहीं भाता। जो लड़की अपने पिता से घृणा करती है उसके बारे में और क्या कहा जा सकता! कामिनी उससे बहुत कम मिलती थी। उसने कामिनी के निकट जाने की कोशिश की थी लेकिन असफल रही थी।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि रजनी को यह बात मालूम नहीं कि कामिनी उसकी सगी बहन है!"

"हां।" सोनिया बोली।

मेजर कामिनी के नाम प्रदीप का पत्र फिर देखने लगा। पत्र के भीतर प्रदीप ने कामिनी को रोहिणी लिखा था लेकिन लिफाफे पर 'मिस कामिनी' लिखा था। मेजर सोचने लगा कि कामिनी को सचमुच प्रदीप से प्रेम होगा। इसीलिए तो उसने उसको अपना असली नाम बता दिया था। सोनिया ने जमुहाई ली तो मेजर बोला, "तुमने आज बहुत अच्छा काम किया है—जाओ, जाकर सो जाओ। बातों-बातों में साढ़े बारह बज चुके हैं।"

बाहर से टेलीफोन की घंटी बजने की आवाज आई। किसी ने दबे पांव चलते हुए टेलीफोन का चोंगा उठाया। दो मिनट के बाद मेजर के दरवाजे पर दस्तक हुई। मेजर ने दरवाजा खोला। सामने लाला केदारनाथ वर्मा खड़े थे। "आपको इन्स्पेक्टर धर्मवीर फोन पर बुला रहे हैं।" लाला जी ने कहा।

मेजर उछलकर बिस्तर से नीचे कूदा और फोन की ओर लपका। "हैलो, इन्स्पेक्टर साहब?"

दूसरी ओर से इन्स्पेक्टर धर्मवीर की आवाज आई, "जी हां, आप सो तो नहीं गए थे?"

"नहीं। क्यों क्या बात है ?"

"डाक्टर साहब पर किसी ने कातिलाना हमला करने की कोशिश की है।"

"डाक्टर साहब पर ? मैं कैसे मान लूं ? यह बात तो मेरी आशा के बिल्कुल उलट हुई है। अच्छा ठहरिए, मैं अभी तैयार होकर आपके पास आता हूं।"

सुनहरी खंजर

मेजर बलवन्त को अपने सम्मुख पाकर इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने सन्तोष की सांस ली। इन्स्पेक्टर के पास ही डाक्टर बनर्जी खड़े थे।

"आप पर किस चीज से हमला किया गया था ?" मेजर ने डाक्टर से पूछा।

"एक सुनहरी खंजर से—वह अपने ढंग का अनोखा खंजर है। उसकी मुट्ठी पर हीरे जड़े हुए हैं। कोई बहुत ही पुराना खंजर मालूम होता है जिसकी आब-ताब अभी तक बाकी है।" डाक्टर की बजाय इन्स्पेक्टर ने उत्तर दिया।

"आप कितने बजे सो गए थे ?" मेजर ने डाक्टर से पूछा।

"मुझे नींद नहीं आई थी इसीलिए तो आप मुझे इस समय जिन्दा देख रहे हैं।" डाक्टर ने कहा, "इस घर में अवश्य ही कोई हत्यारा रहता है। आपने ठीक ही मुझे सावधान रहने के लिए कहा था—चलिए, आप मेरे सोने के कमरे में चलिए। मैं आपको दिखाता हूं कि किस भयानक ढंग से मेरी हत्या करने की कोशिश की गई थी।"

वे सब डाक्टर के सोने के कमरे में पहुंचे। डाक्टर ने बिजली का बल्ब जला दिया। रोशनी हुई तो मेजर ने देखा कि डाक्टर के पलंग के सिरहाने के तख्ते में एक सुनहरी खंजर गड़ा हुआ था, जिसकी मुट्ठी प्रकाश में दमक रही थी। वह एक फुट लम्बा और दोधारा था। उसकी पूरी नोक पलंग की लकड़ी में धंसी हुई थी। अगर वह खंजर किसी प्राणी के लगता तो आर-पार हो जाता।

मेजर ने उस खंजर की पोजीशन का अध्ययन किया। फिर उसने दरवाजे से लेकर पलंग तक के कोण का अनुमान लगाया उसके बाद मेजर ने खंजर की ओर हाथ बढ़ाया तो इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने उसका हाथ पकड़ लिया, "आप अपना रूमाल इस्तेमाल कीजिए वर्ना खंजर की हत्थी पर उंगलियों के निशान आपकी उंगलियों के निशानों तले दब जाएंगे।"

"नहीं।" मेजर ने मुस्कराते हुए कहा, "आप हमलावर को इतना अनाड़ी क्यों समझते हैं ? इस खंजर की हत्थी पर उंगलियों के निशान बिल्कुल नहीं होंगे। जिस किसी ने इसका दस्ता पकड़कर इसे फेंका है, वह कच्ची गोलियां नहीं खेला है।" यह कहकर मेजर ने जोर लगाकर खंजर तख्ते में से निकाल लिया। वह उस खंजर को बड़े ध्यान से देखने लगा। उसके दस्ते पर हीरों के नीचे कुछ लिखा हुआ था। मेजर ने वह खंजर डाक्टर की ओर बढ़ाकर पूछा, "आप बहुत-सी भाषाएं पढ़ सकते हैं। मुझे पढ़कर बताइएकि इस पर क्या लिखा है।"

डाक्टर ने अपने कांपते हुए हाथ में खंजर पकड़ लिया और अपनी आंखें सिकोड़कर उस पर लिखी हुई इबारत पढ़ने लगा, "मावोतो लोगों का अमर सम्राट हिम्रो।" डाक्टर ने एक ठंडी आह भरी, "ओह मेरे भगवान ! अफ्रीका की प्राचीन आत्माएं मेरे पीछे पड़ गई हैं। यह खंजर किसी ने प्रोफेसर मोराविया के खजाने में से मेरी हत्या करने के लिए चुराया है।"

"प्रोफेसर मोराविया का खजाना !" मेजर ने कहा, "वह खजाना किस कमरे में है ?"

"मेरी पत्नी के कमरे के भीतर एक छोटा-सा कमरा है जिसमें प्रोफेसर मोराविया का सामान बंद है।"

"क्या आपकी पत्नी को मालूम था कि उसके पिता के खजाने में यह खंजर भी मौजूद है?"

"जी हां—हम दोनों ने प्रोफेसर मोराविया के सामान की सूची तैयार की थी। ऐसे दो खंजर थे। एक आप यह देख रहे हैं और दूसरा उनके सामान में होगा।"

"आपकी पत्नी और आपके अलावा भी किसी को इन खंजरों के बारे में मालूम था?"

"नहीं—लेकिन उस कमरे में कोई भी जा सकता है, क्योंकि उस कमरे का दरवाजा तो बंद रहता है, लेकिन उस पर कोई ताला-वाला नहीं लगाया जाता।"

"क्या आप बता सकते हैं कि इधर हाल में प्रोफेसर मोराविया के कमरे में कौन गया था?"

डाक्टर ने इस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया।

"देखिए डाक्टर साहब, अगर आप हमारी सहायता नहीं करेंगे तो दीवान साहब की हत्या का रहस्य कभी नहीं खुलेगा।"

डाक्टर बनर्जी ने कुछ सोचते हुए कहा, "परसों मैंने राजेश को प्रोफेसर साहब की डायरी लाने के लिए उस कमरे में भेजा था···लेकिन राजेश मुझ पर ऐसा हमला···"

"नहीं, नहीं—हम राजेश पर आरोप नहीं लगा रहे हैं कि उसने आप पर हमला किया।" इसके बाद मेजर ने कुछ सोचते हुए कहा, "डाक्टर साहब, क्या आप जानते हैं कि राजेश आपकी पत्नी के बहुत निकट है?"

डाक्टर की भवें तन गईं और उसके नथुने फैल गए। "कान खोलकर सुन लीजिए, मैं अपनी पत्नी के बारे में कोई बात सुनने के लिए तैयार नहीं हूं। ऐसी पत्नी किसी भाग्यवान को ही मिला करती है।" उसके माथे पर पसीने की मोटी-मोटी बूंदें प्रकट हो चुकी थीं।

ठीक उसी समय रजनी ने डाक्टर के सोने के कमरे में प्रवेश किया। उसने नीले रंग का फूलदार नाइट-सूट पहन रखा था। उसका यौवन उन वस्त्रों से छलका पड़ता था और आंखें नींद से बोझिल हो रही थीं।

"आप रात के डेढ़ बजे यहां क्या कर रहे हैं?" रजनी ने पूछा।

"आपके पति पर किसी ने हमला किया है।" मेजर ने कहा।

"इन पर हमला किया?···असंभव। ऐसा कौन व्यक्ति हो सकता है जो इन पर हमला करने का साहस कर सकता है?"

"हमें अगर यह मालूम होता तो हम अब तक उसे उसके घातक हथियार सहित गिरफ्तार कर चुके होते।"

"घातक हथियार?"

"जी हां, इस खंजर से इन पर वार किया गया है। हम जब यहां पहुंचे तो यह खंजर इनके पलंग के तख्ते में गड़ा हुआ था।" मेजर ने खंजर रजनी की ओर बढ़ाते हुए कहा।

"यह खंजर तो मेरे पिता का है—यह यहां कैसे आ गया? इन पर कब इससे हमला हुआ और कैसे हुआ?"

"यह किस्सा डाक्टर साहब स्वयं सुनाएंगे। हमने भी यह किस्सा अब तक इनसे नहीं सुना।"

"किस्सा ज्यादा लम्बा नहीं है।" डाक्टर ने कहा, "मैं आपकी हिदायत के

अनुसार अपने सोने के कमरे में आ गया। रात का खाना मैंने यहीं मंगवाकर खाया। मैंने सोने की बहुतेरी कोशिश की लेकिन मुझे नींद नहीं आई। इसीलिए मैंने दरवाजा भीतर से वन्द करना जरूरी नहीं समझा। मैंने इस ख्याल से भी विजली का वल्व वुझा दिया कि शायद अंधेरा होने पर मुझे नींद आ जाए। लेकिन नींद फिर भी न आई। मैं विस्तर पर आंखें खोले लेटा रहा और सोचता रहा। जब मैंने घड़ी के चमकदार डायल की ओर देखा तो घड़ी में पौने वारह वज रहे थे। मैं देर तक ऊंघता रहा। इस प्रकार आधा घण्टा गुजर गया। मुझे रह-रहकर दीवान साहव का ध्यान आता रहा। लगभग सवा वारह वजे मुझे ऐसा लगा कि मैं दवे-दवे कदमों की आहट सुन रहा हूं। कोई सच-मुच सीढ़िया चढ़ रहा था। मैं सोचने लगा कि इतनी रात गए यह कौन हो सकता है। एकाएक कदमों की चाप मेरे दरवाजे तक आकर रुक गई। मैंने अपना सांस रोक लिया। क्षण-भर के लिए भय ने मुझे पंगु कर दिया। लेकिन मैं जल्दी ही सम्भल गया। मैं उठकर खड़ा हो गया। मैंने तुरन्त अपने लिहाफ को इस प्रकार समेट दिया जैसे सचमुच कोई उसके भीतर सो रहा हो। यह काम कर चुकने के वाद मैं एक कोने में जा खड़ा हुआ ताकि अगर कोई हमलावर भीतर आए तो उस पर झपट पड़ूं। मेरे कमरे का दरवाजा थोड़ा-सा खुला। मैं चीखना चाहता था लेकिन भय से मेरा गला रुंध गया। किसी ने टार्च की रोशनी पलंग पर फेंकी। आने वाला भीतर नहीं आया। फिर मैंने एक चमकती हुई चीज देखी। उसके वाद लकड़ी से किसी चीज के टकराने की आवाज सुनाई दी। इसके वाद कोई दवे पांव वड़ी तेजी से वापस जा रहा था। डर से मेरे पांव जमकर रह गए थे। कुछ मिनटों तक मैं कोने में दुवका रहा। फिर मैंने अपने कमरे का दरवाजा भीतर से वन्द कर लिया और विजली का वल्व जला दिया। मेरे वदन में झुरझुरी-सी दौड़ गई जव मैंने इस खंजर को अपने पलंग के तख्ते में घुसा देखा। मैं तुरन्त समझ गया कि किसी ने मेरी हत्या करनें की कोशिश की थी। जव मेरे होश कुछ ठिकाने आए तो मैं यहां से निकलकर नीचे पहुंच गया और इस घटना की सूचना इंस्पेक्टर साहव को दी, जो संयोग से जाग रहे थे।"

रजनी अपने पति की ओर चिन्तित नजरों से देख रही थी। वह वोली, "इनके सोने के कमरे के पीछे ही मेरा सोने का कमरा है। संयोग से मैं भी आज आधी रात तक नहीं सो सकी थी। थोड़ी देर पहले मैंने इनके कमरे में लकड़ी से किसी चीज के टकराने की आवाज सुनी थी, लेकिन मैं यह समझकर चुप रही कि सोते में इनका सिर पलंग के तख्ते से टकरा गया होगा। न जाने इस घर में क्या हो रहा है। यह कितनी लज्जा की वात है! अव इस घर में कौन रह सकता है जिसकी छत के नीचे हत्यारा दनदनाता फिर रहा है! आप हत्यारे का शीघ्र पता लगाइए अन्यथा इस घर में रहना हम सवके लिए दूभर हो जाएगा।" रजनी वोली और अपने पति के गाल पर चुम्वन लेने के वाद अपने कमरे में चली गई।

"क्या इस खंजर की कोई म्यान भी थी?" मेजर ने पूछा।

"हां, चमड़े की म्यान थी।" डाक्टर ने उत्तर दिया।

"उस म्यान को ढूंढ़ना पड़ेगा।" मेजर ने कहा।

"हमलावर खंजर की म्यान साथ ले गया होगा या म्यान कहीं छिपाकर नंगा खंजर अपने साथ लाया होगा।" इंस्पेक्टर ने कहा।

"कल सुवह आपको पहला काम यही करना होगा। इसके वाद प्रोफेसर मोरा-वियो के खजाने में दूसरा खंजर तलाश करना होगा। मैं समझता हूं कि इसके साथ का दूसरा खंजर भी गायव है।"

"क्यों, कल सुवह क्या आप नहीं आएंगे?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"नहीं, कल मुझे हवाई जहाज से एक जरूरी काम के लिए वम्वई जाना है।"

"आप कब लौटेंगे ?"

"अगर मेरा काम जाते ही हो गया तो मैं कल शाम को ही वापस आ जाऊंगा, वर्ना परसों दोपहर से पहले तो जरूर ही यहां पहुंच जाऊंगा।" मेजर ने दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा। उस दरवाजे के पास दाईं ओर की खिड़की के सामने एक काला बोर्ड टंगा था। मेजर ने वह बोर्ड पहले भी देखा था, लेकिन आज न जाने क्यों उसे वह ध्यान से देखने लगा। डाक्टर भी कनखियों से उस बोर्ड की ओर देखने लगा। फिर बोला, "मैं यह बोर्ड ज्योमेट्री की कुछ शक्लें बनाने के लिए इस्तेमाल किया करता हूं। इस पर यहां तैयार होने वाली मूर्तियों के रेखाचित्र भी बनाया करता हूं।"

"मेरे ख्याल में तो यह बोर्ड बेकार हो चुका है। इसमें छोटे-छोटे तिकोने गड्ढे पड़े हुए हैं जैसे कोई चाकू की नोक से इस बोर्ड को छीलता रहा हो।" मेजर ने कहा।

"नहीं, यह बोर्ड ऐसा ही है। ये तिकोने निशान स्वयं मैंने बनाए हैं। इनसे विभिन्न कोणों का काम लिया जाता है।"

अंधा नवयुवक

बम्बई जाते हुए मेजर बलवन्त के हवाई जहाज में कुछ खराबी पैदा हो जाने के कारण वह दिन के तीन बजे बम्बई पहुंचा। उसने सान्ताक्रुज से प्राइवेट टैक्सी ली और टैक्सी में बैठते ही अपनी जेब से ट्रांसमीटर घड़ी निकाल ली। उसकी चाबी वाली जगह पर तार फंसाया और उस तार का गोल सिरा अपने कान में लगा लिया। फिर घड़ी की सुई एक विशेष नम्बर तक घुमाकर रोक ली और बोला, "हैलो—एक्स दिस एण्ड—" "हैलो जेड—एक्स स्पीकिंग।"

मेजर के कान में आवाज आई—"जेड दिस एण्ड।"

"अशोक !" मेजर ने कहा।

"ओह, मेजर साहब—आप—आप कहां से बोल रहे हैं ?"

"मैं इस समय एक टैक्सी में जा रहा हूं। अभी-अभी दिल्ली से बम्बई पहुंचा हूं। मुझे चूंकि बहुत जल्द वापस दिल्ली जाना है इसलिए मैं अपने काम में कोई कसर नहीं रहने देना चाहता। मेरा काम आसानी से भी हो सकता है और उसमें कोई अड़चन भी पैदा हो सकती है। इसलिए तुम क्रोकोडायल को लेकर ४३ ए, वार्डन रोड के आसपास पहुंच जाओ और मेरा इंतजार करो। मैं तुमसे वहीं मिलूंगा।"

"ओ० के० बास।"

४३ ए, वार्डन रोड एक पुराना बंगला था। उस बंगले के इर्द-गिर्द काफी ज़मीन खाली पड़ी थी। उसके अहाते में एक बहुत बड़ा फव्वारा था और उस फव्वारे के गिर्द चार परियों के बुत खड़े थे। कभी वह बंगला अपनी शिल्पकला को लेकर अत्यन्त शानदार बंगला माना जाता होगा, लेकिन अब वह एक टूटी-फूटी इमारत में बदल चुका था—और उसकी रही-सही सुन्दरता आसपास बनी हुई नये ढंग की इमारतों के कारण और भी फीकी पड़ गई थी। उस बंगले के मालिक में शायद उस स्थान पर नया बंगला बनाने की सामर्थ्य नहीं थी। मेजर ने उस बंगले के अहाते में प्रवेश किया। उसने देखा कि उस बंगले को आठ-दस भागों में बांटा गया था। एक भाग में शायद मकान का मालिक कोई पारसी रहता था। वह भाग बाईं ओर था और शेष भागों से अलग मालूम होता था। उस भाग के सामने पारसी बच्चे खेल रहे थे।

मेजर ने बच्चों के पास जाकर पूछा, "मिस्टर प्रदीप कहां रहते..." बच्चे ने एक कोने की ओर संकेत कर दिया और मुंह से कुछ न कहा।

मेजर ने प्रदीप के दरवाजे पर दस्तक दी। भीतर से ए...

"कौन ?" और दो मिनट के बाद दरवाजा खोल दिया गया। सामने तीस बरस की एक स्त्री खड़ी थी। मेजर तुरन्त पहचान गया कि वह कोई बंगाली औरत थी।

"क्या मिस्टर प्रदीप यहां रहते हैं ?" मेजर ने पूछा।

"जी, रहते तो यहीं हैं, लेकिन वे किसी से मिल नहीं सकते।"

मेजर ने कमरे के भीतर झांककर देखा, जिसमें कुछ सामान बंधा हुआ और कुछ इधर-उधर बिखरा पड़ा था। मेजर को ऐसा मालूम हुआ जैसे उस फ्लैट से जाने की तैयारियां हो रही हों।

उस बंगाली स्त्री ने दरवाजा बन्द करना चाहा तो मेजर ने अपनी दाईं टांग दरवाजे के भीतर बढ़ा दी, "यह क्या बदतमीजी है !" वह स्त्री गरजकर बोली, "आप कौन हैं, मैं अभी पुलिस को बुलाती हूं।"

"आपको पुलिस बुलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि मैं स्वयं एक पुलिस अफसर हूं।" मेजर ने अपनी शिनाख्ती पासबुक निकालते हुए कहा, "आप इसे गौर से पढ़ सकती हैं। अगर आप मेरे काम में रुकावट डालेंगी तो आपको इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा।"

पहले तो उस स्त्री की सिट्टी-पिट्टी गुम हो ग , फिर कुछ सम्भलते हुए बोली, "आपको मिस्टर प्रदीप से क्या काम है ?"

"मैं उन्हें ही बताऊंगा कि मुझे उनसे क्या ाम है।"

"मिस्टर प्रदीप किसी से मिलने के योग्य ‌हीं है।"

"मुझे अन्दर तो आने दीजिए।" मेजर भीतर चला गया।

"शुभदा, तुम किससे बातें कर रही हो ?" पिछले कमरे से एक पुरुष की आवाज आई।

"ये कोई साहब हैं। अपने-आपको पुलिस अफसर बता रहे हैं।" शुभदा ने उत्तर दिया।

"वे अगर मुझसे मिलने आए हैं तो उनसे कह दो कि चले जाएं। मैं किसी से भी मिलना नहीं चाहता।"

मेजर उस कमरे की ओर बढ़ा तो शुभदा उसका रास्ता रोककर खड़ी हो गई और हाथ जोड़कर बोली, "आप पुलिस अफसर ही सही, लेकिन हमें परेशान न कीजिए। हम पहले ही बहुत दुखी हैं।"

"मैं यहां आपको परेशान या दुखी करने नहीं आया। हो सकता है कि मैं आपकी परेशानी और दुःख दूर कर दूं।"

"नहीं, आप चले जाइए। हमें किसी की सहानुभूति की जरूरत नहीं है।" पिछले कमरे में से उसी पुरुष की आवाज आई।

"क्षमा कीजिएगा।" मेजर ने पिछले कमरे तक पहुंचकर कहा, "मैं यहां अपनी मर्जी से नहीं आया हूं, सरकारी काम से आया हूं। अगर आप मेरे काम में रुकावट डालेंगे तो मुझे आपको गिरफ्तार करके पुलिस थाने में ले जाना पड़ेगा।" यह कहते हुए मेजर पिछले कमरे में दाखिल हो गया। उसके पीछे-पीछे शुभदा भी भीतर चली आई।

मेजर पिछले कमरे में कदम रखते ही ठिठककर रह गया। कमरे के भीतर काफी प्रकाश था। बिजली का एक बड़ा बल्ब जल रहा था। सामने की दीवार के साथ एक आरामकुर्सी पर एक नवयुवक बैठा था। वह अन्धा था। उसकी आं ों के गिर्द बड़े भयानक सुर्ख और सफेद दाग थे। मेजर को ख्याल आया कि शायद वह गलत जगह पर आ गया है। इतने कुरूप और अन्धे नवयुवक से कैसे कामिनी जैसी लड़की प्रेम कर सकती थी !

"आप चाहे कोई भी हैं, मेरी विवशता का अनुचित लाभ उठा रहे हैं। अगर मेरी आंखें होतीं तो मैं गिरफ्तारी की परवाह किए बिना आपको उठाकर इस मकान से बाहर फेंक देता।" वह नवयुवक बोला।

"मैं आपकी विवशता का कोई लाभ नहीं उठाना चाहता।" मेजर ने जरा-सा आगे बढ़ते हुए कहा।

वह अन्धा नवयुवक अपने स्थान पर उठकर खड़ा हो गया। शुभदा उसका इरादा भांप गई। वह लपककर उसके निकट पहुंची और उसका बाजू पकड़कर बोली, "तुम बैठे रहो।"

"हट जाओ, शुभदा। मेरी आंखें नहीं हैं तो क्या हुआ! मेरी बांहें तो सलामत हैं।"

"आपको इतना क्रोध नहीं करना चाहिए।" मेजर बोला।

"मैं आपसे अन्तिम बार प्रार्थना करता हूं कि आप यहां से चले जाइए।" नवयुवक गुर्राया।

"मैं दो मिनट में चला जाऊंगा। आप मेरी केवल दो बातों का उत्तर दे दीजिए। क्या आप ही का नाम प्रदीप है?"

"जी।" उस नवयुवक की बजाय शुभदा ने उत्तर दिया।

"क्या आप किसी कामिनी नाम की लड़की को जानते हैं?"

"मैं किसी कामिनी-वामिनी को नहीं जानता।" नवयुवक ने झल्लाकर कहा। अब मेजर समझ गया कि वह ठीक स्थान पर आया था। प्रदीप अब उसके बिल्कुल निकट खड़ा था। मेजर ने देखा कि प्रदीप के चेहरे पर घाव थे और वे सबके सब ताजा थे। वे अभी अच्छी तरह नहीं भरे थे। उसकी गर्दन का रंग साफ और गोरा था। वह एक कद्दावर नवयुवक था। कद के लिहाज से उसका शरीर बहुत ही सुगठित था। यदि उसकी आंखें होतीं तो निःसन्देह वह एक सुन्दर व्यक्ति होता। एकाएक मेजर को ख्याल आया कि सम्भव है कुछ दिन पहले उसकी आंख ठीक-ठाक हों। उस नवयुवक से कामिनी का हाल जानने की एक ही सूरत थी और वह मेजर के दिमाग में आ गई थी।

"आपको शायद मालूम नहीं है कि कामिनी एक समय से गायब है। शायद उसकी हत्या कर दी गई है।"

"ओह!" उस नवयुवक के मुंह से निकला, लेकिन फिर तुरन्त ही वह गरजदार आवाज में बोला, "उसकी हत्या कर दी गई है तो मुझे इससे क्या! कृपा करके आप यहां से चले जाइए।"

"हां, अब आप चले जाइए।" शुभदा बोली, "पहले ही सामान बांधने में देर हो चुकी है।"

"क्या आप कहीं जा रहे हैं?"

"हां, हम कुछ दिनों के लिए पूना जा रहे हैं।"

मेजर वहां से आने पर विवश हो गया। वहां से लौटते हुए वह सोच रहा था कि प्रदीप के इस व्यवहार का क्या मतलब हो सकता था। एक बात बिल्कुल स्पष्ट थी कामिनी की हत्या की खबर सुनकर उसके दिल से आह निकल गई थी। इससे तो प्रत्यक्ष था कि वह कामिनी को अच्छी तरह जानता था। मेजर को अफसोस हुआ कि उसने कामिनी के नाम उसका पत्र पढ़कर क्यों न सुनाया। फिर मेजर की विचारधारा दूसरी ओर मुड़ गई। प्रदीप आज से बीस-पच्चीस दिन पहले अन्धा नहीं था। वह हाल ही दुर्घटनाग्रस्त हुआ है। अन्ततः मेजर ने यह निर्णय किया कि वह आसानी से प्रदीप को नहीं छोड़ेगा। यदि अशोक क्रोकोडायल के साथ मौजूद हुआ तो वह उनको शुभदा प्रदीप के पीछे भेजेगा। वे पूना गए तो मुझे भी पूना जाना पड़ेगा।

मेजर यह निश्चय करते हुए उस बंगले के अहाते से वाहर निकला। एक कुत्ते के भौंकने की आवाज आई। मेजर मुस्कराया। क्रोकोडायल उसे देखकर भौंक रहा था। वह दौड़ता हुआ मेजर के पास आ गया और उसके घुटनों में सिर देने लगा। मेजर ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा तो वह जोर-जोर से अपनी दुम हिलाने लगा। इतने में अशोक भी मेजर के निकट पहुंच गया।

"अशोक! मेरे काम में भारी अड़चन पैदा हो गई है।" इसके वाद मेजर ने अशोक को उन लोगों का हुलिया वताया जिनका उसे और क्रोकोडायल को पीछा करना था, "अशोक, तुम्हें और कुछ नहीं करना है, सिर्फ इतना मालूम करना है कि ये लोग कहां जाते हैं। मैं दफ्तर में तुम्हारा इन्तजार करूंगा। अगर तुम पीछा न कर सको या तुम्हारी आंखों से वे लोग ओझल हो जाएं तो तुम क्रोकोडायल को उनके पीछे भेज देना और स्वयं मेरे पास चले आना। क्रोकोडायल अव पहले से ज्यादा चतुर हो चुका है। अव वह वुरे को घर तक पहुंचाकर आता है। तुम बस, इतना देख सको तो देख लेना कि वे लोग स्टेशन की ओर जाते हैं या किसी दूसरी ओर।"

मेजर अपने दफ्तर चला आया। यहां से उसने फिल्म प्रोड्यूसर को फोन किया, जिसने उसे रोहिणी (कामिनी) को ढूंढ़ने का काम सौंपा था। उसने उसे खुशखवरी सुनाई कि रोहिणी का पता लगाने में वह सफल हो चुका है। लेकिन रोहिणी से उसकी भेंट नहीं हुई, शीघ्र ही हो जाएगी। वह फिल्म प्रोड्यूसर वहुत प्रसन्न हुआ।

मेजर दीवान सुरेन्द्रनाथ की हत्या और उस समय तक सामने आने वाली घटनाओं पर विचार करने लगा। इसी उधेड़वुन में लगभग दो घंटे वीत गए। वाहर कदमों की आहट सुनाई दी। अशोक ने कमरे में प्रवेश किया और वोला, "आज पहली वार पीछा करने में मुझे नाकामी का सामना करना पड़ा है। खैर, क्रोकोडायल उनका पीछा कर रहा होगा।"

"क्यों, क्या हुआ?" मेजर ने पूछा।

"आप चले आए तो मैं ४३ ए, वार्डन रोड के सामने एक तरह से मोर्चा लगाकर वैठ गया। आध घण्टे के वाद एक टैक्सी उस वंगले के अहाते में दाखिल हुई। उस टैक्सी में दो आदमी थे जो शक्ल-सूरत से आसान के रहने वाले मालूम होते थे। मैंने यह समझा कि वे यहां रहते होंगे, लेकिन जव पन्द्रह मिनट तक टैक्सी वापस न आई तो मैं समझ गया कि वे किसी को साथ ले जाने के लिए वहां आए थे। मेरा अनुमान ठीक ही निकला। टैक्सी वापस आई तो उन दो व्यक्तियों के साथ वह स्त्री भी थी और वह नवयुवक भी जिनका हुलिया आपने वताया था। टैक्सी सामान से लदी हुई थी। मैंने एक टैक्सी का पहले से प्रवन्ध कर लिया था और उसे एक विल्डिंग के पास रुकवा रखा था। क्रोकोडायल को तो मैंने तुरन्त उस टैक्सी के पीछे भगा दिया और स्वयं अपनी टैक्सी में उनके पीछे चल पड़ा। तीन-चार मील तक तो मैंने वड़ी सफलता से उन लोगों का पीछा किया, लेकिन फिर दुर्भाग्य से मेरी टैक्सी के इंजन में कुछ खरावी पैदा हो गई। ड्राइवर को वह खरावी ठीक करने में पांच-सात मिनट लग गए। इतने में वह टैक्सी नजरों से ओझल हो गई। लेकिन मैं इस वात का इत्मीनान करके आया हूं कि वे लोग स्टेशन नहीं गए। मेरा ख्याल है कि वे शिवाजी पार्क की ओर गए हैं।"

"अगर तुम्हारा ख्याल ठीक है तो क्रोकोडायल को वापस आने में देर नहीं लगेगी। मुझे भी सन्देह हुआ था कि उस स्त्री ने, जिसका नाम शुभदा था, मुझसे झूठ वोला था। वे पूना नहीं जा रहे थे। यह भी अच्छा हुआ, नहीं तो मुझे आज ही रात को पूना जाना पड़ता।"

बीस मिनट बाद क्रोकोडायल के भौंकने की आवाज सुनाई दी तो मेजर चौंककर उठ खड़ा हुआ। वह दफ्तर से बाहर निकला तो क्रोकोडायल गोली की तरह उसके पास पहुंचकर उसके कदमों में लोटने लगा और उसके बूट के तस्मे दांतों में पकड़कर खींचने लगा।

मेजर ने झुककर क्रोकोडायल के कान पकड़ लिए और उन्हें सहलाते हुए बोला, "चलेंगे बेटा, अभी चलेंगे। पहले जरा दम तो ले लो। कुछ खा-पी लो। न जाने कितनी दूर से आ रहे हो।" इसके बाद मेजर अशोक से बोला, "किचन से क्रोकोडायल के लिए कुछ खाने को ले आओ।"

अशोक क्रोकोडायल की खुराक ले आया। क्रोकोडायल उसकी महक से बेचैन हो गया और जब अशोक ने वह बर्तन फर्श पर रख दिया तो क्रोकोडायल उस पर टूट पड़ा जैसे कई दिन का भूखा हो।

"अशोक, रिवाल्वर निकालकर भर लो। एक रिवाल्वर तुम अपने पास रख लो और एक मुझे दे दो। अपनी जेब में टार्च भी डाल लो। हमारे वहां पहुंचने तक काफी अंधेरा हो जाएगा। यह काम कर चुकने के बाद गैरेज से मोटर निकाल लाओ।" पन्द्रह मिनट में वे तैयार हो गए।

मेजर की मोटर क्रोकोडायल के पीछे-पीछे जाने लगी। अशोक का अनुमान ठीक निकला क्योंकि क्रोकोडायल उन्हें शिवाजी पार्क ले गया। वहां पहुंचकर क्रोकोडायल ने अपनी गति धीमी कर दी।

"हमें मोटर यहीं कहीं खड़ी कर देनी चाहिए। मैं समझता हूं कि हमारी मंजिल आ गई है।" मेजर ने अशोक से कहा।

क्रोकोडायल जिस ओर जा रहा था वहां के मकान पुराने थे। शाम का धुंधलका फैल चुका था। क्रोकोडायल एक अलग-थलग मकान का चक्कर लगाने लगा। जब मेजर और अशोक उसके निकट पहुंच गए तो क्रोकोडायल ने उस दोमंजिला मकान की निचली मंजिल के एक दरवाजे पर पंजे मारने शुरू कर दिए। मेजर ने उसके निकट जाकर उसके कान मरोड़े तो क्रोकोडायल पीछे हट गया।

"अशोक, तुम इस मकान से दूर हटकर मेरा इन्तजार करो। क्रोकोडायल को अपने साथ ले जाओ।"

अशोक क्रोकोडायल को लेकर चला गया तो मेजर ने वह दरवाजा खटखटाया जिस पर क्रोकोडायल ने पंजे मारे थे।

दो मिनट के बाद शुभदा ने दरवाजा खोला और मेजर को देखकर उसने अपना बायां हाथ अपने मुंह पर रख लिया जैसे वह होंठों में अपनी चीख दबाने की कोशिश कर रही हो। मेजर मुस्कराया तो शुभदा ने अपने मुंह पर से अपना हाथ उठा लिया और कहा, "आप···आप यहां कैसे पहुंच गए?"

"मैंने सोचा कि चलो मैं भी आज पूना की सैर कर आऊं।"

शुभदा लज्जित हो गई। मेजर को पुनः देखकर उसके रवैये में तब्दीली आ गई। उसने धीरे से कहा, "आप अन्दर आ जाइए।"

मेजर ने अन्दर क़दम रखा तो उसने देखा वह मकान काफी बड़ा था। निचली मंजिल में कम से कम छः कमरे थे।

"प्रदीप बाबू कहां हैं?" मेजर ने पूछा।

"अन्दर कमरे में हैं। मुंह लपेटे पड़े हैं। आपने जब से उनको कामिनी की हत्या की खबर सुनाई है, उनका बुरा हाल है।"

"शुभदा, कहां हो?" भीतर के कमरे से प्रदीप की आवाज आई।

"मैं यहीं हूं।"

"क्या कोई आया है ?" प्रदीप ने पूछा।

"नहीं, कोई नहीं।" शुभदा ने अपने होंठों पर उंगली रखकर मेजर को चुप रहने का संकेत किया।

"आप उस कमरे में चलकर बैठिए।" शुभदा ने दबी जवान में मेजर से कहा। मेजर कमरे में जा बैठा तो वह बोली, "अगर आप सचमुच पुलिस अफसर हैं तो आप हमारी मदद कीजिए। हम बड़ी मुसीवत में हैं। हम इन्सान नहीं कैदी हैं। हमारी हालत गुलामों से भी बुरी है। अब तो ऐसा मालूम होता है कि हम अपनी मर्ज़ी से कहीं रह भी नहीं सकते।"

"क्या आपको अब भी मेरे पुलिस अफसर होने में सन्देह है ? अगर मैं पुलिस अफ़सर न होता तो यहां आपके पास कैसे पहुंच जाता ? मुझे तो यह भी मालूम है कि यहां आपको कौन लाया है। दो आदमी, जो आसाम के रहने वाले मालूम होते हैं, आपको यहां टक्सी में लाए हैं।"

शुभदा का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया, "हां, आप ठीक कहते हैं। वे दो आदमी आज दोपहर को दो बजे हमारे पास आए थे। उन्होंने हमसे कहा था कि हम अपना सामान बांध लें। हमें आज ही मकान बदलना होगा। हमने उनसे कहा था कि बम्बई में इतनी जल्दी मकान कैसे बदल सकते हैं ? उन्होंने कहा कि हमें इसकी कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए, मकान का प्रवन्ध वे कर चुके हैं। मेरा भाई प्रदीप उनका हुक्म नहीं टाल सकता।"

"प्रदीप आपका भाई है ?"

"जी हां, मैं उसकी विधवा वहन हूं। दो साल से उसके साथ रह रही हूं।"

"दो साल से···लेकिन आपका भाई तो अन्धा है।"

"आज से पूरे छब्बीस दिन पहले मेरा भाई अन्धा नहीं था। काश, आपने मेरे भाई को उस हालत में देखा होता ! उसकी ये बड़ी-बड़ी आंखें थीं ! मेरा भाई राजा मालूम होता था। इसीलिए तो एक अंग्रेजी फर्म में उसे बहुत अच्छी नौकरी मिल गई थी।"

"आपका भाई अन्धा कैसे हो गया ?"

"मैं पहले तो कुछ जानती नहीं थी। यही दो आदमी, जो आज हमें यहां लाए हैं, आज से पूरे छब्बीस दिन पहले मेरे भाई को बड़ी घायल हालत में घर छोड़ गए थे। [illegible] को कुछ होश नहीं था। उन आदमियों ने मुझे बताया कि वे उसी अंग्रेजी कम्पनी [illegible] के साथ काम करते थे और तेजाब का टीन फट जाने से प्रदीप घायल हो गया [illegible]। मेरे भाई की आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी। मुझे शक तो हुआ था कि प्रदीप को अस्पताल ले जाने की बजाय वे घर क्यों लाए थे, लेकिन मैं उनसे अधिक सवाल-जवाब न कर सकी। वे फिर भी कई बार आए। जब प्रदीप उनसे बातें करता रहा तो मेरा संदेह दूर हो गया। मैं यह भी नहीं जानती कि प्रदीप उनसे क्या बातें करता था। जब वे आते थे तो प्रदीप मुझे बाहर भेज देता था। भाई के चेहरे पर से पट्टी उतरी तो मैं उसे देख न सकी। अपना कलेजा थामकर रह गई। मैं कई दिन तक चुपके-चुपके रोती रही। लेकिन आदमी को आखिर सब्र आ ही जाता है। मैं यह देखती रही कि मेरा भाई उन लोगों से कुछ दबता-डरता था। उनके चले जाने के बाद भी सहमा-सा रहता था। मैं प्रदीप की एक और तब्दीली पर भी हैरान थी। अब वह कामिनी का नाम तक नहीं लेता था। कामिनी भी कई दिनों से हमारे यहां नहीं आई थी। मुझे उससे मिले हुए एक महीना चार दिन हो चुके थे। कामिनी के मां-बाप दिल्ली में हैं। यहां उसका नाम रोहिणी था और उसका घर का नाम कामिनी था। वह दिल्ली जाते हुए हमें पता लिख-कर दे गई थी। कामिनी दिल्ली क्या गई वहां जाकर हमें भूल गई। उसने कोई पत्र

तक न लिखा और प्रदीप तड़पता रहा। वह कामिनी को तीन पत्र लिख चुका था। आखिर उसने दिल्ली जाने का इरादा कर लिया, लेकिन जिस दिन उसे दिल्ली जाना था, उसी दिन वह अन्धा होकर घर आ गया। अन्धा क्या हुआ, उसने कामिनी का नाम तक लेना छोड़ दिया। वेचारा उसका नाम क्या लेता ! अब वह इस योग्य ही नहीं रह था। मैं अपने दिल में कुढ़ती रही। और आज जब आप घर आए तो आपको घर में पाकर प्रदीप को गुस्सा आ गया और आपके यह बताने पर कि कामिनी की हत्या कर दी गई है प्रदीप की हालत और भी खराब हो गई और उसने यहां आकर मुझे अपने दिल का भेद बता दिया।"

"प्रदीप ने आपको क्या बताया ?"

"यही कि वह दुर्घटना में अन्धा नहीं हुआ था—उसे अन्धा कर दिया गया था।"

"प्रदीप को किसने अन्धा किया ?"

"उन्हीं ने जो आज वार्डन रोड से यहां उठा लाए हैं।"

"उन्होंने आपके भाई को क्यों अंधा किया ?"

"प्रदीप का कहना है कि एक महीने पहले उन्होंने उसे धमकी दी थी कि वह कामिनी को भूल जाए और उसे पत्र आदि न लिखे—और अगर उसने उनकी बात न मानी तो उससे कुछ ऐसा व्यवहार किया जाएगा कि उम्र-भर याद रखेगा। प्रदीप ने उनकी धमकी की परवाह नहीं की। इसलिए उन्होंने तेजाब फेंककर उसे अंधा कर दिया।"

"वे प्रदीप को जान से भी तो मार सकते थे ?" मेजर ने कहा।

"हां, लेकिन प्रदीप कहता है कि वे उसे जान से मारना नहीं चाहते थे। इसका एक कारण था। वे लोग कामिनी के वम्बई आने पर प्रदीप को उसे दिखाना चाहते थे और उसे यह धमकी देना चाहते थे कि जिस नवयुवक से भी वह प्रेम करेगी, उसका यही परिणाम होगा।"

"ओह, कामिनी का ऐसा दुश्मन कौन हो सकता है ?"

"मुझे मालूम नहीं।"

"वे आदमी, जिन्होंने प्रदीप को अंधा कर दिया था, आपके यहां क्यों आते रहे ?"

"वे यह पता करने के लिए आते थे कि कामिनी ने उसे कोई पत्र लिखा था या नहीं।"

"प्रदीप ने पुलिस को सूचना क्यों नहीं दी कि उन लोगों ने उसकी जिन्दगी तबाह कर दी है और अब भी उस पर अत्याचार कर रहे हैं ?"

"उन्होंने धमकी दी है कि अगर प्रदीप पुलिस को सूचना देगा तो वे उसकी बहन को यानी मुझे भी अंधा कर देंगे।"

"ओह, कैसे जालिम लोग हैं ! संसार में कोई भी भाई यह सहन नहीं कर सकता कि उसकी बहन अंधी हो जाए। आपने बड़ी दर्दनाक कहानी सुनाई है।"

शुभद्रा की आंखों में आंसू आ गए। उसने कहा, "मैंने डरते-डरते आपको सारी बातें बता दी हैं। मैं इस कैद की जिन्दगी से मौत को अच्छा समझती हूं। क्या आप हमारी मदद नहीं कर सकते ?"

"क्यों नहीं कर सकता ! पुलिस लोगों की मदद के लिए ही तो होती है। क्या आप यह बता सकती हैं कि वे लोग कहां रहते हैं ?"

"इस बिल्डिंग के पीछे सौ गज के फासले पर बायीं ओर पीले रंग की एक बिल्डिंग है। मेरे ख्याल में उस बिल्डिंग की दूसरी मंजिल पर वे लोग रहते हैं, क्योंकि

जब वे हमें वहां लाए थे तो उन्होंने दस मिनट के लिए टैक्सी उस बिल्डिंग के नीचे रुकवाई थी। उनमें से एक आदमी इस मकान की चावी लाने के लिए अपने कमरे में गया था।"

मेजर ने उठते हुए कहा, "अब आपको घबराने की जरूरत नहीं है। मैं समझता हूं कि आपकी मुसीबत के दिन खत्म हो चुके हैं। मैं अभी फिर आपके पास आऊंगा। पहले जरा उन लोगों से निबट लूं। अगर वे भाग गए तो फिर मैं आपको अपने यहां ले चलूंगा। वे लोग यहां नहीं पहुंच सकेंगे। और अगर मैं उन्हें गिरफ्तार करने में सफल हो गया तो फिर आप बेखटके कहीं भी रह सकती हैं।"

घात पेड़

एकाएक मेजर बलवन्त को ख्याल आया कि शिवाजी पार्क के इलाके में तैनात पुलिस इन्स्पेक्टर दामले उसका गहरा मित्र था। मेजर को इस बात का पूरा एहसास था कि जिस मुहिम पर वह जा रहा था; खतरनाक भी सिद्ध हो सकती थी। पुलिस इन्स्पेक्टर दामले को इस विषय में सूचित करना हितकारी ही सिद्ध होगा कि वह भयानक अपराधियों पर झपटने के लिए जा रहा है। अगर पुलिस की सहायता समय पर पहुंच गई तो दोनों अपराधियों के भाग निकलने के रास्ते बन्द हो जाएंगे। मेजर चाहता था कि उन्हें जिन्दा पकड़ लिया जाए ताकि यह मालूम किया जा सके कि वे किसके कहने से यह सब कर रहे थे। यह सोचकर मेजर ने अपने बढ़ते हुए कदम रोक लिए और अशोक से कहा, "तुम इस जगह पर मेरा इन्तजार करो। मैं एक जरूरी फोन करके आता हूं।" मेजर दस मिनट में पुलिस इन्स्पेक्टर दामले को फोन करने के बाद लौट आया। दामले ने उसे विश्वास दिला दिया था कि वह पुलिस पार्टी के साथ तुरन्त वहां पहुंच रहा है।

क्रोकोडायल जमीन सूंघता हुआ आगे बढ़ने लगा। वह एक घने पेड़ के पास जाकर रुक गया और पेड़ के छतनारे की ओर थूथनी उठाकर जोर-जोर से भौंकने लगा। मेजर ने अशोक का बाजू पकड़कर उसे आगे बढ़ने से रोक लिया और दबी जबान में कहा, "ठहरो—तुम देख रहे हो कि क्रोकोडायल क्या कर रहा है? मुझे ऐसा मालूम होता है कि इस पेड़ के पत्तों में कोई व्यक्ति छिपा हुआ है।"

"हां, ऐसा ही मालूम होता है।' अशोक ने पतलून की जेब से रिवाल्वर निकालकर कहा।

"पेड़ की शाखाओं में कोई छिपा हुआ है—इसका क्या मतलब हो सकता है? उन लोगों को पहले से खबर हो चुकी है कि उन पर हमला होने वाला है? उनको पहले से यह खबर कैसे हो गई?" मेजर ने मानो अपने-आप से कहा, "संभव है क्रोकोडायल के पीछा करने पर उन्हें कुछ सन्देह हो गया हो।" अशोक बोला।

"हां, और यह भी संभव है कि उन्होंने मुझे प्रदीप के मकान में जाते देख लिया हो। उनका कोई न कोई आदमी जरूर प्रदीप के मकान की निगरानी कर रहा होगा। हमें अब और भी सावधानी से काम लेना होगा।" क्रोकोडायल ने अब पेड़ के तने के साथ-साथ उछलना शुरू कर दिया था और वह पहले से अधिक जोर से भौंकने लगा था। एकाएक क्रोकोडायल के 'च्याऊं-च्याऊं' करने की आवाज आई और वह लंगड़ाता हुआ मेजर के पास आ गया। उसकी दायीं टांग में एक चाकू का लम्बा फल गड़ा हुआ था। मेजर ने जल्दी से वह चाकू खींचकर क्रोकोडायल की टांग में से निकाल लिया और जेब से रूमाल निकालकर घाव पर बांध दिया ताकि अधिक खून न बहने पाए। अशोक बौखला गया। उसने ताबड़तोड़ तीन गोलियां पेड़ की घनी शाखाओं में चला

दी। पेड़ की घनी शाखाओं में से कोई उत्तर न आया।

"यह तुमने क्या किया अशोक!" मेजर ने कहा। अभी मेजर के मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि सामने की बिल्डिंग की ऊपरी मंजिल की रोशनी बुझ गई और दो गोलियां मेजर के कान के पास से सनसनाती हुई निकल गई। मेजर तुरन्त जमी पर लेट गया। उसने अपने रिवाल्वर से उस बिल्डिंग की ऊपरी मंजिल की खिड़किय पर गोलियां बरसाईं। अशोक ने मेजर का साथ दिया। वह भी जमीन पर लेट चुक था। उस बिल्डिंग से फिर गोलियां चलाई गईं। मेजर ने महसूस किया कि उ बिल्डिंग की ओर से जो गोलियां आ रही थीं, अब वह केवल एक आदमी चला रहा था मेजर को एक तरकीब सूझी। वह उठता और जमीन पर झुकता हुआ उस बिल्डिंग क ओर बल खाकर दौड़ने लगा। उधर से दो गोलियां और आईं और फिर गोली चल की आवाज बन्द हो गई। मेजर ने अब अपनी रफ्तार तेज कर दी। चारों ओर शोर-गु मच गया। कुछ लोग उस ओर आ रहे थे जहां गोलियां चली थीं, लेकिन कोई भ निकट आने की कोशिश नहीं कर रहा था।

सामने की बिल्डिंग के लोग शायद सहम गए थे। किसी ने भी अपने कमरे क बत्ती नहीं जलाई थी। मेजर बिल्डिंग तक पहुंच चुका था। अशोक उसके पीछे था मेजर सीढ़ियां चढ़ता हुआ ऊपर पहुंच गया। मेजर ने सामने के दरवाजे पर हाथ रख तो वह खुल गया। वह ऐसी परिस्थितियों से पूरी तरह परिचित था। उसे मालूम थ कि दुश्मन ऐसे अवसर पर जान-बूझकर दरवाजा खोल देता है, वह दरवाजे के पीछे छिप होता है। मेजर ने अपने बायें हाथ में टार्च जलाकर पकड़ ली और दायें हाथ में रिवा ल्वर थाम लिया, जिसमें केवल दो गोलियां बाकी रह गई थीं। यह तैयारी कर चुक के बाद उसने ठोकर मारकर पूरा दरवाजा खोल दिया। अब अशोक भी निचली सीढ़ी पर कदम रख चुका था। दरवाजा खुलने पर मेजर की आंखों में चमक-सी पैदा हुई वह बिजली की-सी तेजी के साथ झुक गया और जोर से आवाज दी, "अशोक! चाकू एक तरफ हट जाओ।"

अशोक भी टार्च लिए हुए ऊपर आ रहा था। सचमुच एक चाकू उसके पैरों के पास आ गिरा। अशोक ने वह चाकू उठा लिया।

मेजर समझ गया कि शत्रु के रिवाल्वर की गोलियां समाप्त हो चुकी थीं अन्यथा वह उस पर वार करने के लिए चाकू इस्तेमाल न करता। इस विचार के आते ही मेजर छलांग लगाकर कमरे में दाखिल हो गया। दरवाजे से छलांग लगाकर कमरे में दाखिल होने का यह फायदा होता है कि अगर कोई दरवाजे के पीछे हमला करने का इरादा रखता हो तो सफल न हो सके। मेजर कूदकर कमरे में दाखिल तो हो गया लेकिन तभी एक जोरदार मुक्का उसकी कनपटी पर पड़ा। वह चकराकर फर्श पर गिर पड़ा, लेकिन फिर तुरन्त ही उठकर खड़ा हो गया। एक विशालकाय व्यक्ति उसकी ओर बढ़ता हुआ रुक गया। मेजर ने अपना रिवाल्वर जेब में डाल लिया और टार्च एक ओर फेंक दी। अशोक भी कमरे में दाखिल हो चुका था।

मेजर ने उसे आवाज दी, "अशोक, इस कमरे की बत्ती जला दो और एक तरफ हटकर खड़े हो जाओ। कोई दूसरा आए तो उससे तुम निपट लेना।" उस विशालकाय व्यक्ति का ख्याल था कि उसके मुक्के की चोट कोई भी व्यक्ति सहन नहीं कर सकता। मेजर संभलकर उसके सामने खड़ा हो गया तो उस विशालकाय व्यक्ति के होश उड़ गए। वह अभी सोच ही रहा था कि किस पहलू से मेजर पर हमला करे कि अशो[illegible] कमरे की बत्ती जला दी। बत्ती जली तो उस विशालकाय व्यक्ति ने जरा-सा आगे कर अपने बायें पैर के पंजे पर जोर डालकर मेजर के मुंह पर मुक्का म[illegible] की। मेजर तेजी से उस मुक्के की जद से एक ओर को हट ग[illegible]

में आगे की ओर झुककर लड़खड़ा गया। मेजर ने अपनी दायीं टांग का घुटना जोर से उसकी पिछाड़ी पर मारा और वह व्यक्ति औंधे मुंह फर्श पर गिर पड़ा। उसका सिर एक कुर्सी से जा टकराया। एक छोटी-सी मेज पर पीतल का लम्बा-सा फूलदान पड़ा था। विशालकाय व्यक्ति ने पीतल का फूलदान उठा लिया और बड़े भयानक अन्दाज में मेजर की ओर बढ़ा। उसके होंटों से खून बह रहा था और उसका चेहरा बहुत भयंकर हो रहा था। अशोक से रहा नहीं गया। उसने रिवाल्वर से उस पर गोली चला दी। विशालकाय व्यक्ति के हाथ से फूलदान छूटकर फर्श पर गिर पड़ा और उसके साथ ही वह स्वयं भी।

"अशोक ? यह तुमने दूसरी मूर्खता की है। मैं इस आदमी को जिन्दा पकड़ना चाहता था। इसके पास कोई खतरनाक हथियार नहीं था। क्या तुम्हें मुझ पर यह भरोसा नहीं था कि मैं इस व्यक्ति पर काबू पा सकता हूं ?" अशोक ने पश्चात्ताप के रूप में सिर झुका लिया।

बाहर लोगों के शोर में वृद्धि हो गई। सीढ़ियों पर भारी कदमों की आवाजें सुनाई दीं। इन्स्पेक्टर दामले छः-सात पुलिस कांस्टेबलों के साथ ऊपर आया। उसके पीछे बहुत से लोग थे और उचक-उचककर कमरे में झांक रहे थे। इन्स्पेक्टर दामले ने कमरे में कदम रखते हुए मेजर और अशोक को देखा तो उसके चेहरे पर मुस्कराहट फैल गई। फिर उसकी नजर फर्श पर चारों खाने चित गिरे उस विशालकाय व्यक्ति पर पड़ी। वह बोला, "ऐसा मालूम होता है हमारे आने से पहले ही खेल खत्म हो चुका है।"

"हां।" मेजर बोला, "लेकिन जिस ढंग से यह खेल खत्म होना चाहिए था, उस ढंग से नहीं हुआ।"

"और क्या हो सकता है ! दुश्मन मारा जा चुका है।"

"इनमें से कम से कम एक व्यक्ति जिन्दा पकड़ा जाना चाहिए था।" मेजर ने कहा। और फिर जब उस दरवाजे में काफी लोग नजर आए और नीचे लोगों के भारी हुजूम का शोर-गुल सुनाई दिया तो उसने इन्स्पेक्टर दामले से कहा, "आप लोगों को दरवाजे पर से हटा दीजिए।"

इन्स्पेक्टर दामले ने एक पुलिस कांस्टेबल को संकेत किया और वह पुलिस कांस्टेबल लोगों को खदेड़कर नीचे ले जाने लगा।

कुछ क्षणों के बाद इन्स्पेक्टर ने मेजर से पूछा, "ये कौन लोग हैं ?"

"मैं आपको सारा किस्सा बाद में सुनाऊंगा। पहले मैं इनके फ्लैट की तलाशी लेना चाहता हूं। मेरा ख्याल है कि साथ के कमरे में खिड़की के करीब एक और व्यक्ति की लाश मिलेगी, क्योंकि मैं जानता हूं कि इस फ्लैट से दो आदमी हम पर गोलियां चला रहे थे। बाद में केवल एक ही आदमी हमारे मुकाबले पर रह गया था।"

यह सुनकर इन्स्पेक्टर दामले फ्लैट के दूसरे कमरे में चला गया। मेजर अपनी नाक के नथुने फुलाने लगा। उसे कागजों में लगी हुई आग की बू आ रही थी। वह तेजी से पिछले कमरे की ओर बढ़ा। वहां सचमुच कुछ कागज जल रहे थे। मेजर ने देखा कि अब आग बुझाना बेकार था। केवल एक गुलाबी-सा कागज आधा जलना शेष था। मेजर ने लपककर उस अधजले कागज को पूरा जलने से बचा लिया। वह एक टेलीग्राम था। मेजर ने जल्दी से उसे अपनी जेब में डाल लिया।

"मेजर, आप कहां हैं ? आपका अन्दाजा बिल्कुल ठीक था। दूसरे कमरे में खिड़की के नीचे वाकई एक मुर्दा पड़ा है।" इन्स्पेक्टर दामले ने दूर से कहा। वह शायद पिछवाड़े के कमरे की ओर आ रहा था।

इन्स्पेक्टर दामले ने पिछवाड़े के कमरे में प्रवेश किया। उसने मेजर को सीटी

बजाते हुए देखा तो पूछा, "आप क्या सोच रहे हैं ?"

"मैं यह सोच रहा हूं कि अब यह बात मेरी समझ में आई है कि जब हम दौड़ते हुए इस ब्लिडिंग की ओर बढ़ रहे थे तो गोलियां चलनी क्यों बन्द हो गई थीं। एक तो इन लोगों की गोलियां समाप्त हो गई थीं। दूसरे यह आदमी सारे जरूरी कागजात जला देना चाहता था।"

"क्या सब कागजात जला दिये गये हैं ?" इन्स्पेक्टर ने पूछा।

"जी हां—अब मुझे सूटकेस वगैरह की तलाशी लेनी होगी। आप तब तक फोन करके फोटोग्राफर, डाक्टर और दूसरे लोगों को बुलवा लीजिए। अपनी जरूरी कार्यवाही पूरी कर लीजिए। लेकिन मैं आपसे एक प्रार्थना भी करूंगा। अखबारों में अभी इस घटना की खबर इस ढंग से छपनी चाहिए कि किसी को यह पता न लग सके कि ये लोग कौन थे और किन परिस्थितियों में मारे गए।" मेजर ने कहा।

"कुछ विवरण तो देना ही पड़ेगा।" इन्स्पेक्टर ने कहा।

"आप इन लोगों का वही नाम दे सकते हैं जिन नामों से इन्होंने यह फ्लैट किराये पर लिया था—वैसे मुझे विश्वास है कि इन लोगों का नाम कुछ और ही है। आप अखबार वालों को केवल इतना बता सकते हैं कि इन लोगों को भयानक अपराधों के सिलसिले में पुलिस गिरफ्तार करने गई थी, लेकिन मुठभेड़ में ये लोग मारे गए।"

"अखबार वालों से पीछा नहीं छुड़ाया जा सकता।"

"आप इतना और कह सकते हैं कि इन्होंने एक स्थानीय इंजीनियर को तेजाब फेंककर अंधा कर दिया था। पुलिस इनकी तलाश में थी। जो हो, आप इन लोगों की गिरफ्तारी के लिए कोई और बहाना बना सकते हैं।"

"आप इनके असली नाम जानते हैं ?" इन्स्पेक्टर ने पूछा।

"अभी नहीं। मैं समझता हूं कि मैं दो दिन में इस योग्य हो जाऊंगा कि आपको न केवल इनके नाम बल्कि हत्या की एक भयानक वारदात से इनके सम्बन्ध की कहानी बता सकूं।"

"अच्छी बात है।" इन्स्पेक्टर दामले ने कहा और फोन करने के लिए चला गया।

मेजर और अशोक आध घंटे तक उन लोगों के सूटकेस और उनका दूसरा सामान छानते रहे लेकिन कोई भी मतलब की चीज हाथ न लगी। एक सूटकेस में डेढ़ हजार रुपए के करेंसी नोट मिले।

पुलिस विभाग का डाक्टर आ गया और दोनों लाशों का निरीक्षण करने लगा जो एक साथ रख दी गई थीं। मेजर उन लोगों का हुलिया दिमाग में बिठाता रहा। फिर उसने इन्स्पेक्टर दामले की ओर मुंह फेरकर कहा, "मैं समझता हूं कि हमें अभी एक लाश और मिलेगी। तीन बड़े-बड़े सूटकेस हैं और इनके तीन भिन्न-भिन्न साइज के कपड़े हैं।"

"तीसरा आदमी कहां है ?" इन्स्पेक्टर ने पूछा।

"मेरे साथ चलिए। शायद हम उसे या उसकी लाश ढूंढ़ने में सफल हो [illegible]
यह कहकर मेजर दरवाजे की ओर बढ़ा। सीढ़ियों में बहुत-से लोग खड़े थे। [illegible]
पेड़ की ओर बढ़ा जिस पर से किसी ने क्रोकोडायल पर चाकू फेंका था। ठीक [illegible]
मेजर को क्रोकोडायल का ख्याल आया जिसको वह इस हंगामे में भूल [illegible]
डायल कहीं नजर नहीं आ रहा था। मेजर परेशान हो गया। [illegible]
डायल की तलाश में जाने को कहा।

मेजर उस पेड़ की घनी शाखाओं पर टार्च की रोशनी फेंक[illegible]

क्टर दामले कह उठा—"वह मोटे तने पर कोई लेटा हुआ है।"

मेजर की नजर भी उस तने पर पड़ी और उसने कहा, "यही आपकी तीसरी लाश है।"

मेजर ने टार्च बुझा दी और इन्स्पेक्टर से कहा, "आओ वापस चलें। तीन-चार कांस्टेबल भेजकर यह लाश भी पेड़ से उतरवा लीजिए।"

मेजर ने रास्ते में इन्स्पेक्टर को यह किस्सा सुनाया कि इन लोगों से किन परिस्थितियों में उसकी भेंट हुई थी और उसने क्यों उनका पीछा किया था। मेजर ने उसे दिल्ली में दीवान सुरेन्द्रनाथ की हत्या और दीवान साहब की बेटी कामिनी के लापता हो जाने की बात नहीं बताई। उसने अपनी कहानी को प्रदीप और उसकी बहन शुभदा की मुसीबत तक सीमित रखा। इन्स्पेक्टर उस कहानी से सन्तुष्ट न हुआ तो मेजर ने कहा, "मैं आज रात वापस दिल्ली चला जाऊंगा। सावधानी के लिए मैं अभी आपको बस इतनी ही बातें बता सकता हूं। दो या तीन दिन के बाद मैं वापस बम्बई आ जाऊंगा। उस समय आप मुझसे जो कहानी सुनेंगे वह बड़ी भयानक होगी।"

इसके बाद मेजर ने इन्स्पेक्टर को यह परामर्श दिया कि वे प्रदीप और उसकी बहन को शिवाजी पार्क वाले मकान से निकालकर ४३ ए, वार्डन रोड पहुंचा दें ताकि वे स्वतन्त्रता का अनुभव कर सकें। उनको यह भी विश्वास दिला दें कि अब उनको कोई परेशान नहीं करेगा।

मेजर को उस समय एक और बात याद आ गई। वह सोचने लगा कि कुछ मिनट में पुलिस का फोटोग्राफर भी पहुंच जाएगा। क्यों न वह उन लोगों के फोटो की फिल्म अपने साथ दिल्ली ले जाए जो अशोक की गोलियों से हलाक हो चुके थे। दिल्ली में फिल्म डेवलप करवाने के बाद प्रिण्ट निकलवा लिए जाएंगे। उसने अपना यह प्रस्ताव इन्स्पेक्टर दामले के सम्मुख रखा। इन्स्पेक्टर ने उसकी बात मान ली।

दोनों एक बार फिर उसी बिल्डिंग की ओर चल पड़े जिसकी ऊपर की मंजिल वाले फ्लैट में दो लाशें पड़ी थीं। अशोक उन्हें रास्ते में मिला। उसने क्रोकोडायल को गोद में उठा रखा था। क्रोकोडायल 'कूं-कूं' कर रहा था और भौंक नहीं रहा था।

"यह तुम्हें कहां मिला ?" मेजर ने पूछा।

"बिल्डिंग के पीछे एक कोने में दुबका बैठा था...।" अशोक ने उत्तर दिया, "कुछ ज्यादा ही घायल हो चुका है।"

मेजर के मन में एक ख्याल उभरा। जिस चाकू से क्रोकोडायल पर हमला किया गया था कहीं वह विषैला न हो। इस ख्याल के साथ ही मेजर कांप उठा। उसे क्रोकोडायल बहुत प्रिय था। उसने अशोक से कहा, "तुम टैक्सी में क्रोकोडायल को अभी हार्नबी रोड पर कुत्तों के मशहूर डाक्टर आहूजा के पास ले जाओ। मैं आध घण्टे तक अपने दफ्तर पहुंच जाऊंगा। वहां मैं तुम्हारे फोन का इन्तजार करूंगा कि डाक्टर आहूजा ने क्रोकोडायल के निरीक्षण के बाद क्या राय दी है। तुम्हारा फोन आने पर ही मैं यह फैसला कर सकूंगा कि मुझे आज रात दिल्ली वापस जाना चाहिए या नहीं।"

अशोक के जाने के बाद मेजर भी फोटो-फिल्म लेकर अपने दफ्तर पहुंच गया। उसने कुछ चीजें, जो दिल्ली जाकर काम आ सकती थीं, अपने सूटकेस में रख लीं। फिर वह बड़ी अधीरता के साथ फोन का इंतजार करने लगा। फोन की घण्टी बजी तो मेजर ने कांपते हुए हाथों से रिसीवर उठाकर कान से लगा लिया।

"हैलो"—और फिर मेजर ने बेचैनी से पूछा, "अशोक, क्रोकोडायल की तबीयत कैसी है ?"

दूसरी ओर से अशोक की आवाज आई, "घबराने की कोई बात नहीं। चाकू

विषैला नहीं था। डाक्टर साहब ने मरहम-पट्टी कर दी है। कुछ दिनों में ही क्रोकोडायल बिल्कुल ठीक हो जाएगा।"

मेजर का वाई काउंट जहाज सुबह पांच बजे दिल्ली के पालम हवाई अड्डे पर उतरा। जब वह साउथ एक्सटेंशन पहुंचा तो सुबह के पौने छः बजे थे। लाला केदारनाथ ने मेजर के लिए दरवाजा खोला।

मेजर मेहमानखाने की ओर बढ़ा, सोनिया उसके लिए पहले ही दरवाजा खोल चुकी थी। मेजर ने कमरे में पहुंचकर सूटकेस पलंग के निकट रख दिया।

कुछ देर के बाद मेजर ने सोनिया से कहा, "सोनिया, मैं समझता हूं कि मैं बम्बई से सफल लौटा हूं। आज दिन निकलने के बाद हम सब एकदम व्यस्त हो जाएंगे। तुम्हें किसी फोटोग्राफर के पास जाकर फिल्म डेवलप करवानी होगी और एक बजे से पहले मुझे इण्टरनेशनल म्यूजियम में पहुंचा देनी होगी।"

मेजर ने अपने सूटकेस से फिल्म निकालकर सोनिया को दे दी।

"यह किनकी तस्वीरें हैं ?"

"अगर ये तस्वीरें गलत नहीं हैं तो दीवान सुरेन्द्रनाथ की हत्या की पहेली हल हो जाएगी। लछमी से तुम्हारी मुलाकात बहुत ही ठीक रही। सोनिया, मनुष्य बड़ा अत्याचारी जीव है। उसके प्रेम और प्रतिशोध की कोई सीमा नहीं होती। कामिनी के प्रेमी से किसी ने भयानक बदला लिया है—प्रेम करने वाले को अन्धा कर दिया है।"

दो हमले

मेजर जब इण्टरनेशनल म्यूजियम पहुंचा तो इन्स्पेक्टर धर्मवीर उसे देखकर चकित रह गया। "आप आ भी गए !" उसके मुंह से निकला, "क्या आप बम्बई को हाथ लगाने गए थे ?"

"नहीं। पत्नी उदास हो गई थी, उससे मिलने गया था। नई पत्नी को दो दिन के लिए भी छोड़ना मुश्किल हुआ करता है।" मेजर ने भी मजाक किया। आज वह बहुत अच्छे मूड में था। इन्स्पेक्टर उसका मुंह ताकने लगा, क्योंकि वह मेजर को कुंआरा समझ रहा था।

मेजर ने तुरन्त बात पलट दी और कहा, "आप यह बताइए कि आप कहां तक पहुंचे हैं ? कल आपने क्या कुछ किया ?"

"कल हम उस खंजर की चमड़े की म्यान तलाश करते रहे जिससे डाक्टर बनर्जी पर हमला किया गया था।"

"वह शायद मिलेगी भी नहीं।" मेजर ने कहा, "आपने कल का दिन केवल चमड़े की म्यान ढूंढ़ने में नष्ट कर दिया।"

"ऐसी बात नहीं है। कल एक आश्चर्यजनक रहस्य भी खुला है।"

"वह क्या ?"

"जिस रात खंजर से डाक्टर पर हमला किया गया था डिक्सन साढ़े ग्यारह बजे यहां आए थे। काफी शराब पी रखी थी। वह पिछले दरवाजे से अजायबघर में घुसना चाहते थे, लेकिन ड्यूटी पर तैनात कांस्टेबल ने उन्हें अजायबघर में दाखिल नहीं होने दिया था।"

"कांस्टेबल के रोकने पर क्या मिस्टर डिक्सन वापस चले गए थे ?"

"मेरा ख्याल है कि वे वापस नहीं गए थे। इस बिल्डिंग के [illegible] रहे थे और कांस्टेबल की नजर बचाकर पिछले दरवाजे से अजायब[illegible]

डाक्टर बनर्जी की जबानी मालूम हुआ कि मिस्टर डिक्सन के पास हमेशा अजायबघर के पिछले दरवाजे की चाबी रहती है। इस बात की पुष्टि राजेश ने भी कर दी है। एक बात और भी है।"

"वह क्या ?"

"अजायबघर में एक कमरा मिस्र देश की पुरानी चीजों का भी है। वहां फिरऔनों के जमाने के बुत हैं। उस कमरे में सिगरेट का एक अधजला टुकड़ा मिला है। वह टुकड़ा सिगरेट के उस ब्रांड का है जो मिस्टर डिक्सन हमेशा पीते हैं। इससे सिद्ध होता है कि मिस्टर डिक्सन सचमुच अजायबघर में गए थे और काफी समय तक वहां रहे थे। आधी रात को मिस्टर डिक्सन की अजायबघर में उपस्थिति बड़ी रहस्यमय मालूम होती है—और फिर वे कल सारा दिन अपने मकान से गायब रहे जो कैलाश कालोनी में है। वे रात को ग्यारह बजे घर पहुंचे। मैंने एक आदमी की ड्यूटी लगा दी थी कि जब मिस्टर डिक्सन वापस आएं तो वह मुझे तुरन्त इसकी सूचना दे दे। मैं कल रात के ग्यारह बजे मिस्टर डिक्सन से मिलने गया, लेकिन वे नशे में धुत थे और मेरे सवालों का जवाब देने की बजाय ऊटपटांग बातें करने लगते थे। मैं समझता हूं कि वे मेरे सवालों को टालने के लिए एक्टिंग कर रहे थे। मैं इस ख्याल से कि सुबह उनको होश आ जाएगा, वापस चला आया था। आज सवेरे मैं फिर मिस्टर डिक्सन को मिलने गया तो उनके नौकर ने मुझे बताया कि साहब सो रहे हैं। उनका हुक्म है कि वे चाहे जितनी देर तक सोते रहें, उन्हें जगाया न जाए। जो कांस्टेबल उनके मकान पर ड्यूटी दे रहा है, उसका अभी-अभी फोन आया कि मिस्टर डिक्सन अभी तक नहीं उठे। उनकी यह बात मुझे तो संदिग्ध नजर आ रही है।"

"हूं!" मेजर ने कुछ सोचते हुए कहा, "वाकई बड़ी अजीब बात है—लेकिन मिस्र देश के पुराने बुतों वाले कमरे में मिस्टर डिक्सन के ब्रांड की सिगरेट का टुकड़ा यह सिद्ध तो नहीं कर सकता कि उस रात वह सचमुच अजायबघर में दाखिल हुए थे?"

"क्यों नहीं सिद्ध करता ! मैंने लक्ष्मी से पूछा था—उसने मुझे बताया कि उसने सिगरेट का टुकड़ा कल सुबह ही देखा था।"

"मिस्र के पुराने बुतों वाले कमरे में ऐसी कौन-सी बात है जिसे जानने या छिपाने के लिए मिस्टर डिक्सन को आधी रात के समय कैलाश कालोनी से यहां आना पड़ा ?" मेजर ने कहा।

मेजर और इन्स्पेक्टर अजायबघर के उस कमरे में पहुंचे। मेजर ने उस कमरे में घूम-फिरकर देखा लेकिन उसे वहां कोई विचित्र बात दिखाई नहीं दी।

बाहर आकर इन्स्पेक्टर फोन करने के लिए डाक्टर बनर्जी के पढ़ने के कमरे में चला गया। कुछ क्षण बाद मेजर भी वहां जा पहुंचा। उस समय डाक्टर बनर्जी पलंग पर लेटे छत की ओर देख रहे थे। मेजर के भीतर पहुंचने पर वे चौंके।

मेजर टहलता हुआ उस अलमारी के पास चला गया जिसके ऊपर पुराना धनुष और पुराने तीर पड़े हुए थे। वह तीरों को उठाकर उनको अपने हाथों में घुमाता रहा। इसके बाद मेजर उस काले बोर्ड की ओर चला गया, जिस पर गड्ढे पड़े हुए थे। मेजर उन गड्ढों को गिनने लगा। इसके बाद उसने डाक्टर की ओर मुंह फेरकर पूछा, "क्या आपने इस बोर्ड पर आज या कल कोई नया गड्ढा बनाया था ?"

"हां, आज सुबह बनाया था।" डाक्टर ने उत्तर दिया।

"मैं इसलिए पूछ रहा हूं कि मेरे बम्बई जाने से पहले इस बोर्ड पर सिर्फ छः गड्ढे थे।"

"हां—और सातवां आज सुबह बनाया गया है।"

"बिल्कुल ठीक है।" मेजर ने कहा, "मेरे बम्बई जाने से पहले अलमारी पर

एक जैसे दो तीर पड़े थे—मेरा मतलब है कि उन दोनों तीरों की नोकें काली थीं। आज एक तीर की नोक काली नहीं बल्कि कांसे के रंग जैसी है।" मेजर ने डाक्टर को कांसे के रंग की नोक वाला तीर दिखाते हुए कहा, "क्या यहां बदल-बदलकर तीर रखे जाते हैं ?"

"नहीं—दो ही तीर थे। कल मैं यों ही एक तीर की नोक फर्श पर घिसता रहा जिससे उसका काला रंग उड़ गया और नीचे की धातु निकल आई।"

मेजर ने डाक्टर की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह नीचे उतरा तो उसे सोनिया आती हुई दिखाई दी। सोनिया ने भीतर आकर मेजर को बताया कि वह फोटो प्रिण्ट ले आई है। मेजर ने उससे प्रिण्ट लेकर अपनी जेब में डाल लिए।

"तुम लछमी से आज फिर मिलो। उससे पूछो कि कामिनी जब यहां से बम्बई गई थी तो कितने बजे घर से निकली थी ? क्या कोई उसे स्टेशन पर भी छोड़ने गया था ?"

सोनिया लछमी के कमरे की ओर चल पड़ी।

मेजर राजेश से मिलना चाहता था। वह उसके कमरे की ओर जा रहा था कि उसे गेट पर मिस्टर डिक्सन नजर आए। मेजर ने राजेश से मिलने का विचार छोड़ दिया और वह मिस्टर डिक्सन के अभिवादन के लिए बढ़ा। हाथ मिलाने के बाद मेजर ने कहा, "आप पर यह आरोप भी लगाया जा रहा है कि परसों रात आपने पुराने मिस्री खंजर से डाक्टर साहब पर हमला किया।"

"डाक्टर साहब पर हमला ! क्या मैं पूछ सकता हूं कि मुझ पर ऐसा संदेह करने की कृपा क्यों की जा रही है ?"

"इसलिए कि आप परसों आधी रात को यहां आए थे। पुलिस कांस्टेबल ने आपको अजायबघर में दाखिल नहीं होने दिया था। आप उस समय वापस चले गए थे—लेकिन कहीं आसपास मौजूद रहे थे और पुलिस कांस्टेबल की नजर बचाकर अजायबघर में घुस गए थे। आपकी सिगरेट का अधजला टुकड़ा उस कमरे में मिला है। आप बताइए कि क्या ये बातें सच नहीं हैं ?"

मिस्टर डिक्सन कुछ देर तक तक सोचते रहे। फिर बोले, "ये सारी बातें बिल्कुल सच्ची हैं।"

"आप कल सारा दिन अपने मकान से गायब रहे। जब वापस घर पहुंचे तो आपने बहुत ज्याद शराब पी रखी थी। क्या यह झूठ है ?"

"मैं शराब का आदी नहीं हूं। कल मुझे मजबूरन शराब पीनी पड़ी। मैं इतनी ज्यादा पी गया कि मुझे आज सुबह तक यह याद नहीं आया कि मैं कल रात कैसे घर पहुंचा, कौन मुझसे मिलने आया, मैंने उससे क्या बातें कीं।"

"खैर, परसों रात अजायबघर में क्या करने गए थे ?"

"मैं मिस्री पुरातत्त्व का माहिर माना जाता हूं, विशेप रूप से उन पुरातत्त्वों का जो फिरऔन काल से सम्बन्ध रखते हैं। मैंने हाल ही में महारानी नफरीती का एक बुत तैयार किया है जिसे अभी बाहर नहीं भेजा गया। मैंने हर प्रकार से इस बात की कोशिश की है कि महारानी नफरीती को उसी रूप में पेश करूं जैसा कि पुस्तकों में उसका उल्लेख मिलता है। मैं परसों रात एक प्राचीन और दुर्लभ पांडुलिपि पढ़ रहा था। उसमें महारानी नफरीती का जो वर्णन है, उसे देखते हुए मैंने जो बुत तैयार किया था, वह बिल्कुल गलत था। मैं अपने उस बुत को देखने के लिए बेचैन हो गया। कुछ दिन हुए उस बुत को फ्रांस के एक धनी व्यक्ति ने खरीद लिया था जो भारत के दौरे पर आया हुआ है। उस फ्रांसीसी ने हिदायत की थी कि महारानी नफरीती का बुत पानी के जहाज द्वारा उसके घर के पते पर फ्रांस भेज दिया जाए। कल उस बुत को

पैकिंग शुरू होने वाली थी। मैं सहन न कर सका कि गलत बुत निर्यात किया जाए। इस तरह मेरी ख्याति को हानि पहुंच सकती थी। अतएव मैंने अजायबघर जाकर अपने बनाए हुए बुत को एक नजर देखने का फैसला कर लिया। कांस्टेबल ने मुझे रोका तो मैं बहुत परेशान हुआ, लेकिन मैं निश्चय कर चुका था कि बुत को देखकर रहूंगा। इस-लिए मैंने कांस्टेबल को चकमा दिया और अजायबघर में दाखिल हो गया। मैं उस बुत वाले कमरे में एक घण्टे तक रहा और महारानी के बुत की नख-शिख नकल करता रहा ताकि प्राचीन पांडुलिपि के अनुसार दूसरे दिन उसे ठीक कर सकूं।"

"आपकी दलील ठीक मालूम होती है लेकिन आप यह बताइए कि जब आप महारानी नफरीती का बुत देख रहे थे तो आपने ऊपर की मंजिल पर रात के सवा बारह बजे किसी के कदमों की आहट तो नहीं सुनी थी?"

"नहीं, अजायबघर के अन्दर आवाज सुनना कठिन है।"

"क्या मैं पूछ सकता हूं कि आपने कल इतनी शराब क्यों पी और आप सारा दिन घर से क्यों गायब रहे?"

"मैं ग्लास ो का रहने वाला हूं। कल सुबह मुझे एक तार मिला था जो ग्लासगो से आया था। उसमें मेरे लिए एक बहुत दुःखद समाचार था। मेरी प्रेमिका ने मेरी ओर से निराश होकर शादी कर ली थी जबकि मैं अगले महीने ग्लासगो जाकर उससे शादी करने का इरादा कर चुका था। उस तार ने मेरा दिल तोड़ दिया। डिफेंस कालोनी में एक विधवा मिसेज रिचर्डसन रहती हैं। वे हमेशा मुझे स्नेह की दृष्टि से देखती रही हैं, लेकिन मैंने उनमें कभी दिलचस्पी नहीं ली थी। कल उस तार ने मेरे बदन में आग लगा दी तो मैं उसे बुझाने मिसेज रिचर्डसन के यहां चला गया। मैंने तकल्लुफ का-पर्दा उठा दिया। मिसेज रिचर्डसन जैसे बरसों से मेरे इन्तजार में थीं।"

मेजर कुछ सोचने लगा। फिर उसने चौंकते हुए कहा, "मिस्टर डिक्सन! आपने मुझे बताया था कि सन्तनगर में बुत बनाने की वर्कशाप के आप ही इंचार्ज हैं?"

"जी हां।"

"ये कारीगर भारत के रहने वाले हैं?"

"सब नहीं—उनमें मिस्री, यूनानी, अफ्रीकी और जापानी भी हैं। कुछ कारी-गर वेस्ट इंडीज के भी हैं।"

मेजर ने चित्रों के वे प्रिण्ट जेब से निकाले, जिनकी फिल्म वह बम्बई से लाया था। उसने वे चित्र मिस्टर डिक्सन को दिखाए तो मिस्टर डिक्सन का मुंह खुले का खुला रह गया, "ओह मेरे भगवान! ये तो मेरे वेस्ट इंडीज के कारीगर हैं, जो छुट्टी पर बम्बई गए थे। मैं उनमें से तीन को मुर्दा देख रहा हूं—चौथा सोवर्ज कहां है?"

"क्या ये चार थे?"

"हमारे यहां वेस्ट इंडीज के सात कारीगर हैं। उनमें से तीन यहीं हैं और चार, छुट्टी पर गये थे।"

इतने में इन्स्पेक्टर धर्मवीर भी आ गया। उसने मिस्टर डिक्सन को मेजर से बातें करते हुए देखा तो हैरान रह गया। मिस्टर डिक्सन इतनी जल्दी तैयार होकर वहां कैसे पहुंच गए थे। अभी आधा घण्टा पहले ही तो उसने अपने आदमी को मेजर का सन्देश दिया था।

इन्स्पेक्टर मिस्टर डिक्सन के कल रात के व्यवहार पर नाराज था। "मिस्टर डिक्सन, आप जरा अजायबघर में चलकर मेरे सवालों का जवाब दीजिए। मैं देख रहा हूं कि इस समय आप नशे में नहीं हैं।"

"अभी इनसे कोई सवाल पूछने की जरूरत नहीं है।" मेजर ने मिस्टर डिक्सन की ओर से इन्स्पेक्टर को उत्तर दिया, "आप जा सकते हैं मिस्टर डिक्सन। मैं आपसे

वेस्ट इंडीज के कारीगरों के बारे में कुछ और जानकारी लेने के लिए आपके पास आऊंगा।"

मिस्टर डिक्सन पीछे मुड़े तो मेजर ने आवाज दी, "जरा ठहरिए।" वे जाते-जाते रुक गए।

"क्या आपको मालूम है कि प्रोफेसर मोराबियो अफ्रीका से कौन-कौन-सी चीजें लाए थे?"

"जी हां, उनकी सारी सूची मुझे याद है—आदिवासियों के हथियार, आदिवासी स्त्रियों के जेवर, आदिवासियों के सरदारों की मुहरें, खंजर, तीर-कमान, नेजें, कौड़ियां, सीपियां—लेकिन उनमें सबसे अजीब चीज ममी बनाने का मसाला है।"

"ममी बनाने का मसाला?"

"हां—आपने मिस्र देश की प्रसिद्ध ममियों का हाल सुना होगा। वहां के लोग मुर्दे पर ऐसा मसाला मल देते थे और कुछ ऐसी सफाई से ममी तैयार करते थे कि हजारों साल के बाद भी मुर्दा यों मालूम होता था जैसे कल का मुर्दा हो। उसके बाल तक खराब नहीं होते थे। प्रोफेसर मोराबियो जो मसाला लाए थे, उन्होंने एक मुर्दे पर उसका तजुर्बा भी किया था। मुर्दा तीन से चार हफ्ते तक ताजा रहा, फिर उससे बू आने लगी। असल में प्रोफेसर मोराबियो जो मसाला लाए थे वह असली मसाले की नकल थी। असली मसाला अब कहीं नहीं मिलता। इसका नुस्खा पीढ़ी दर पीढ़ी से चला आ रहा था। जो लोग इसका भेद जानते थे वे आने वाली पीढ़ी को उसका पूरा नुस्खा नहीं बताते थे जिसका परिणाम यह हुआ कि मसाला धीरे-धीरे कम प्रभावशाली होता चला गया।"

"वह मसाला कहां है?" मेजर ने पूछा।

"डाक्टर साहब के पास है। वह भी इसे आजमाना चाहते थे, लेकिन बाद में उन्होंने अपना इरादा बदल दिया था।"

"बस, मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं पूछना चाहता कि उस मसाले का भेद किसको मालूम है।"

"राजेश और मिसेज रजनी भी जानती हैं। शायद सिद्दीकू भी..."

दोनों डाक्टर बनर्जी के सोने के कमरे में पहुंचे। उस समय डाक्टर बनर्जी एक कागज पर कुछ रेखाचित्र बनाने में व्यस्त था। उसने मेजर और इन्स्पेक्टर को अपने कमरे में देखा तो वह कागज एक ओर रख दिया और प्रश्नात्मक नजरों से उनकी ओर देखने लगा।

"डाक्टर साहब! चार हफ्ते पहले आअ सन्तनगर की वर्कशाप में गए थे, क्या आप नियमित रूप से वहां जाते रहते हैं?"

"मैं रोजाना तो वहां नहीं जाता लेकिन जब मेरे नमूने के अनुसार कोई बुत तैयार किया जाता है, तो मुझे निगरानी के लिए वहां जाना पड़ता है।"

"क्या आप वेस्ट इंडीज के कारीगरों से परिचित हैं?"

डाक्टर उत्तर देने से पहले क्षण-भर के लिए सोचता रहा। फिर बोला, "हां, परिचित हूं।"

"चार हफ्ते हुए, आप उनकी छुट्टी का प्रार्थना-पत्र उनके पास ले गए थे।"

"मैं स्वयं नहीं ले गया था। मैं सन्तनगर जा रहा था कि दीवान साहब मेरे पास आए और बोले कि मैं वे प्रार्थना-पत्र लेता जाऊं।"

"प्रार्थना-पत्र क्या दीवान साहब ही मंजूर किया करते थे?"

"जी हां।"

"दीवान साहब ने जब वे प्रार्थना-पत्र आपको उन लोगों तक पहुंचाने के—

दिये थे तो क्या उनके नाम कोई पैगाम भी दिया था ?"

"कोई पैगाम नहीं दिया था।"

"जब वे लोग बम्बई छुट्टी गुजारने के लिए रुपए लेने आए थे तो क्या उस समय आप दीवान साहब के पास मौजूद थे ?"

"नहीं—लेकिन मुझे इतना याद है कि मैं एक काम से दीवान साहब के दफ्तर के कमरे में बिना आज्ञा पहुंच गया था तो दीवान साहब ने त्यौरी चढ़ाकर मेरी ओर देखा था और बड़े ही क्रुद्ध स्वर में कहा था कि मैं थोड़ी देर बाद आऊं। इससे पहले दीवान साहब ने कभी मुझसे ऐसा व्यवहार नहीं किया था। आश्चर्यचकित-सा मैं पीछे मुड़ा तो मैंने दीवान साहब की मेज पर करेंसी नोटों की पांच बड़ी-बड़ी गड्डियां पड़ी हुई देखीं।"

"हूं !" मेजर के होंठ गोल होते-होते रह गये। उसने सीटी बजाने की इच्छा को दबा लिया।

"क्या पेशगी देने का अधिकार खजांची को नहीं था ?"

"सारा हिसाब-किताब दीवान साहब ही रखते थे। वे अपनी फर्म के स्वयं ही एकाउंटैंट थे।"

"बस, एक बात और पूछनी है—दीवान साहब की बेटी कामिनी के बारे में आपकी क्या राय है ?"

"कामिनी एक सुन्दर, नेक और दिलेर लड़की है। बड़ा आत्मविश्वास है उसे। मैं उसे स्टेशन पर छोड़ने गया था। स्टेशन के प्लेटफार्म पर भी उसने मुझसे वायदा किया था कि वह अपने पिता को और दुःख नहीं पहुंचाएगी। लेकिन उसने बम्बई पहुंच कर कोई पत्र न लिखा, जिससे दीवान साहब के क्रोध की सीमा न रही। उन्होंने अपनी वसीयत में से कामिनी का नाम निकाल दिया।"

मेजर आधे घण्टे में अजायबघर से बाहर नहीं आया। उसे देर हो गई। पौने घण्टे बाद जब मेजर अजायबघर से बाहर निकला तो उसके होंठ गोल थे और वह सीटी बजा रहा था। इतने में सोनिया भी लछमी से मिलकर आ चुकी थी और इन्स्पेक्टर से बातें करती रही थी। उसने मेजर को इस तरह सीटी बजाते देखा तो बहुत प्रसन्न हुई, क्योंकि मेजर जब किसी अन्तिम परिणाम तक पहुंच जाता था तो इस तरह सीटी बजाया करता था।

"मैं जब अजायबघर में था तो कोई नीचे तो नहीं आया था ?"

"रूपा आया था और पूछ रहा था कि आप कहां हैं। मैंने जब उसे बताया कि आप अन्दर काम कर रहे हैं तो वह वापस चला गया।"

यह सुनकर मेजर बावर्चीखाने की ओर बढ़ा। संयोग से उस समय रूपा बावर्चीखाने में अकेला था।

"रूपलाल—तुम मुझसे मिलने आए थे ?" मेजर ने पूछा।

रूपा ने एक कनस्तर में हाथ डाल दिया और उसमें से चमड़े की एक चीज निकालकर मेजर की ओर बढ़ा दी। वह खंजर की चमड़े की म्यान थी।

"यह तुम्हें कहां मिली ?"

"आज सुबह मैं राजेश बाबू का बिस्तर झाड़ने के लिए गया तो यह उनकी दरी के नीचे पड़ी हुई थी—बिस्तर की दरी के नीचे।"

"हूं।" मेजर ने कुछ सोचते हुए कहा, "रूपलाल, तुमने एक काम की चीज ढूंढ़ी है।" इतने में बाहर तेज-तेज कदमों की आहट सुनाई दी।

इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने निकट आकर घबराए हुए स्वर में कहा, "मिस्टर डिक्सन

पर हमला हुआ है। उनके सिर पर हथौड़े से वार किया गया है और वे बेहोश पड़े हैं।"

मिस्टर डिक्सन के मकान के आगे लोगों का काफी हजूम था। वे तेजी से भीतर पहुंचे। मिस्टर डिक्सन को पलंग पर लिटा दिया गया था। डाक्टर उनके घाव की मरहम-पट्टी कर चुका था और ऐम्बुलेंस बुलवाने के लिए फोन कर रहा था। वह फोन कर चुका तो उसने इन्स्पेक्टर की ओर देखते हुए कहा, "घाव काफी गहरा है, लेकिन मैं समझता हूं कि घातक नहीं है। हमलावर भारी चोट लगाने के लिए आया था लेकिन ठीक उसी समय कोई रुकावट पैदा हो जाने के कारण भरपूर वार न कर सका। मेरा ख्याल है कि ये कल शाम तक बातचीत करने के योग्य हो जाएंगे।"

"इन पर हमला कहां हुआ?" मेजर ने पूछा।

"ये खिड़की के पास मेज के पीछे कुर्सी पर बैठे थे। हमने वहीं से इनको उठाकर पलंग पर लिटाया है।"

"हमलावर कई तरह की बातें सोचकर हमला करता है। पिस्तौल उसने इस भय से इस्तेमाल नहीं की होगी कि इस गुंजान आबादी में गोली चलने की आवाज सुनकर लोग जमा हो गए तो उसका बच निकलना कठिन हो जाएगा। खंजर या चाकू पर उसने विश्वास नहीं किया होगा क्योंकि ये ऐसे हथियार हैं जो अक्सर धोखा दे जाते हैं। मैं तो यह सोच रहा हूं कि मिस्टर डिक्सन की हत्या करने की क्यों कोशिश की गई। हमलावर कौन था—मिस्टर डिक्सन पर हमले ने सारे केस की सूरत बदल दी है।" मेजर ने कहा।

मेजर, सोनिया और इन्स्पेक्टर धर्मवीर पुलिस-कार में कैलाश कालोनी से सुन्दर नगर की ओर रवाना हुए तो अंधेरा फैल चुका था। हवा तेज चल रही थी। इसलिए कार की खिड़कियों के शीशे बन्द कर दिए गए थे। मेजर और सोनिया कार की पिछली सीट पर बैठे थे। इन्स्पेक्टर ड्राइवर के पास अगली सीट पर बैठा था। जब कार लेडी श्रीराम कालेज से आगे पुल पर से गुजर रही थी तो सरसराहट के साथ 'खट' की एक आवाज पैदा हुई।

"क्या किसी ने पत्थर मारा है?" इन्स्पेक्टर ने पूछा।

मेजर टार्च निकालकर अपनी ओर की बन्द खिड़की के शीशे में से बाहर कुछ देख रहा था। उसने तुरन्त टार्च बुझा दी और बोला, "नहीं, कुछ नहीं है। शायद कोई कंकड़ उड़कर खिड़की से टकराया है।"

कार सुन्दर नगर में इण्टरनेशनल म्यूजियम के बड़े फाटक के सामने रुकी। मेजर ने कार का दरवाजा खोल दिया और फिर उस दरवाजे की खिड़की के नीचे दरवाजे के लोहपट में गड़ी हुई चीज जोर से खींचकर बाहर निकाली। वह दो फुट लम्बा एक भयानक तीर था। उसकी नोक इतनी तेज और मजबूत थी कि कार के दरवाजे के फौलाद में भी गड़ गई थी। इन्स्पेक्टर और सोनिया भी कार से बाहर निकल आए थे। वे दोनों भी आश्चर्य से उस तीर को देख रहे थे।

"यह क्या है—आपने तो कहा था कि कार में कोई कंकड़ उड़कर लगा है। यह तो एक भयानक तीर है।" इन्स्पेक्टर ने कहा।

"हां—किसी ने हम पर हमला किया था। मैं इस तीर को टार्च की रोशनी से देख चुका था, लेकिन चुप रहा—क्योंकि इस अंधेरे में हत्यारे का पीछा करना बेकार था और यह तीर काफी दूर से छोड़ा गया था। आप देख सकते हैं कि यह विशेष प्रकार का तीर है।"

"आपके ख्याल में यह तीर कितनी दूर से छोड़ा गया होगा?

"कम-से-कम दो फर्लांग के फासले से।"

"फिर तो वाकई हमलावर का पीछा करना बेकार था।"

"हां।" मेजर बोला। वह तीर हाथ में लिए हुए तेजी से कोठी में दाखिल हुआ और चौकड़ियां भरता हुआ सीढ़ियां चढ़ने लगा। सोनिया व इन्स्पेक्टर भी उसके पीछे लपके। मेजर आंख झपकते ही ऊपर डाक्टर के सोने के कमरे में पहुंच गया। नीचे ड्यूटी पर तैनात सब-इन्स्पेक्टर पुलिस गुरुदयाल उनकी इस तीव्र गति का मतलब नहीं समझ पाया था।

मेजर डाक्टर के सोने के कमरे में पहुंचा तो वह विस्तर पर रजाई ओढ़े और दो तकियों पर सिर रखे पुस्तक पढ़ रहा था। मेजर को आंधी की तरह अपने कमरे में प्रवेश करते देखकर वह चौंक पड़ा। मेजर ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वह अलमारी पर पड़े हुए तीरों को उठाकर देखने लगा और अपने हाथ में पकड़े हुए तीर का उनसे मुकाबला करने लगा। अलमारी के ऊपर वही दो तीर पड़े थे जिनको वह थोड़ी देर पहले देख चुका था। मेजर के अन्दाज से प्रकट होता था कि उसे कुछ निराशा हुई है। मेजर ने दोनों तीर अलमारी के ऊपर रख दिए और काले बोर्ड के निकट जाकर उसका निरीक्षण करने लगा। उस बोर्ड में एक और गढ़ा पड़ चुका था।

"डाक्टर साहब, आप इस बोर्ड को शायद फिर खुरचते रहे हैं। यह आठवां गढ़ा ताजा है।"

"जी हां, मैं जिस नई मूर्ति का नमूना तैयार कर रहा हूं, वह कल तक पूर्ण हो जाएगी। ये आठों गढ़े उस मूर्ति का नमूना तैयार करने में मदद देंगे।" डाक्टर जो मेजर की हरकत को बड़े ध्यान से देखता रहा था, कुछ सोचते हुए बोला, "आपके चेहरे से ऐसा मालूम होता है कि कोई नई बात हुई है।"

"एक नहीं, दो नई बातें हुई हैं। खंजर की चमड़े की म्यान मिल गई है और मिस्टर डिक्सन पर किसी ने हथौड़े से हमला किया है।"

डाक्टर भी भौंचक्का रह गया, "खंजर की म्यान! कहां से मिली?"

मेजर ने जेब में हाथ डालकर म्यान निकाली और डाक्टर के सामने रख दी।

"हां, यह उसी खंजर की म्यान है जो प्रोफेसर मोराविया अपने साथ लाए थे। मैंने उनके सामान की सूची तैयार करते हुए इसे गौर से देखा था। इसके एक कोने पर मनुष्य की दो आड़ी-तिरछी हड्डियों का छोटा-सा निशान है।"

मेजर ने उस म्यान को दोबारा उठाकर देखा। डाक्टर के बयान के अनुसार उस म्यान के एक कोने पर आड़ी-तिरछी हड्डियों का हल्का-सा निशान मौजूद था।

"लेकिन यह म्यान मिली कहां से?" डाक्टर ने दोबारा पूछा।

"राजेश के विस्तर की दरी के नीचे से।" मेजर ने उत्तर दिया।

"राजेश...।" डाक्टर के कण्ठ में शेष बात अटककर रह गई। डाक्टर ने हकलाते हुए कहा, "नहीं—ऐसा नहीं हो सकता। मैं राजेश को अच्छी तरह जानता हूं। वह मेरा बहुत आदर करता है।" इसके बाद वह दो मिनट के लिए मौन रहा। फिर बोला, "यहां कोई व्यक्ति भी सुरक्षित नहीं है। मिस्टर डिक्सन जैसे भले आदमी पर हमला हो सकता है तो फिर हत्यारे के हाथों से कौन बच सकता है! बेचारे एक महीने बाद शादी करवाने के लिए घर जाना चाहते थे, उनकी प्रेमिका तो जीते-जी मर जाएगी।"

"लेकिन मिस्टर डिक्सन तो जिन्दा हैं।" मेजर ने कहा।

"जिन्दा हैं? क्या वे हलाक नहीं हुए?" डाक्टर ने आश्चर्य से पूछा।

"नहीं, बेहोश हैं। डाक्टर का ख्याल है कि उन्हें होश आ जाएगा।"

"ओह मेरे भगवान! तू जिसको जिन्दा रखना चाहता है, कोई उसका बाल

भी बांका नहीं कर सकता। मैं समझता हूं कि यह मिस्टर डिक्सन की प्रेमिका की प्रार्थनाओं का असर है कि उनकी मौत आकर टल गई।"

"अच्छा तो हम चलते हैं। डाक्टर साहब, आप आज भी चौकस रहिएगा। सोने के कमरे का दरवाजा बन्द करके सोइएगा।"

"हां, अब तो कुछ ज्यादा ही सावधान रहना होगा।" डाक्टर ने पुस्तक उठा ली और पढ़ने में व्यस्त हो गया।

मेजर ने नीचे आकर इन्स्पेक्टर को हिदायत दी, "आज इस घर में पहरा पहले से भी कड़ा कर दीजिए। खासकर राजेश, रजनी, सिद्दीक़ और डाक्टर के कमरे की कड़ी निगरानी की जाए। किसी भी पहरेदार को ऊंघने न दिया जाए।"

"ऐसा ही होगा।" इन्स्पेक्टर ने उत्तर दिया।

"अच्छा तो अब हम चलते हैं। कल सुबह सवेरे ही हम यहां पहुंच जायेंगे।" मेजर ने दरवाजे तक जाकर कहा, "एक बात और कीजिए। उस अस्पताल के डाक्टर को, जहां मिस्टर डिक्सन का इलाज हो रहा है, कड़ी हिदायत कर दीजिए कि वह मिस्टर डिक्सन से किसी को मिलने या उन्हें देखने की बिल्कुल इजाजत न दें।" सोनिया और मेजर टैक्सी में साउथ एक्सटेंशन की ओर चल दिए।

जमीन में गड़ा सूटकेस

मुंह अंधेरे रीटा चाय देकर और बहुत-सी बातें बनाकर चली गई तो मेजर ने सोनिया से पूछा, "कल रात मुझे ख्याल ही नहीं आया और तुम्हें भी शायद बताना याद नहीं रहा। क्या तुम लछमी से मिली थीं ? उसने तुम्हें क्या कुछ बताया ?"

"कल रात के हमले ने मेरे दिमाग से सारी ब[illegible] निकाल दीं। मैं तो सपने में भी चारों ओर तीर चलते हुए देखती रही। कल ल[illegible]मी से मैं देर तक बातें करती रही थी। उसे कामिनी से बहुत ज्यादा लगाव है। व[illegible] कामिनी का किस्सा छेड़ देता थी तो फिर उसे खतम करने का नाम न लेती थी।'

"काम की बात का भी पता चला कि नहीं ?"

"लछमी ने बताया कि कामिनी को जिस दिन बम्बई जाना था, उस दिन वह आधी रात को उठी थी। उसका इरादा था कि वह दस बजे से पहले बम्बई पहुंच जाए। वह ट्रेन से बम्बई नहीं गई थी, हवाई जहाज से गई थी और उसका जहाज पूरे चार बजे बम्बई जाता था। हवाई अड्डे पर उसे डाक्टर साहब कार में छोड़ने गए थे।"

"हवाई जहाज से बम्बई गई थी ! डाक्टर साहब तो कह रहे थे कि उसे रेलवे स्टेशन पर छोड़कर आए थे और प्लेटफार्म पर कामिनी ने उनसे वायदा किया था कि वह अपने पिता को अब और ज्यादा दुःख नहीं पहुंचाएगी ?"

"मैं नहीं जानती कि डाक्टर साहब ने आपको क्या कुछ बताया है। मैं तो आपको लछमी की बात बता रही हूं। डाक्टर साहब सुबह-सवेरे तीन बजे कामिनी को कार में ले गए। लछमी के सिवा किसी ने कामिनी को विदा नहीं किया था। डाक्टर साहब पौने पांच बजे वापस आ गए थे। लछमी ने उनसे पूछा था कि कामिनी ठीक तरह से हवाई जहाज पर सवार हो गई थी तो डाक्टर ने उत्तर दिया था कि कामिनी तो अब बहुत दूर निकल चुकी होगी।"

"लछमी और डाक्टर साहब के बयान [illegible]" मेजर ने कहा।

"हो सकता है, हवाई जहाज की उड़ान स्थगित हो गई हो और डाक्टर साहब कामिनी को स्टेशन ले गए हों।" सोनिया बोली।

"गाड़ी तो सुबह दिन निकलने पर बम्बई जाती है। डाक्टर साहब पौने पांच बजे कैसे वापस आ गए?"

"कामिनी ने स्टेशन पहुंचकर उनसे कह दिया होगा कि वह उतनी देर वहां ठहरकर क्या करेंगे।"

इण्टरनेशनल म्यूजियम पहुंचकर मेजर ने इन्स्पेक्टर से पूछा, "इस घर के सब लोग ठीक-ठाक हैं ना?"

"अभी तक तो ठीक-ठाक हैं। आज शाम तक क्या होगा, कौन जानता है!" इन्स्पेक्टर ने उत्तर दिया।

"आज शाम तक तो हमारा काम खत्म हो जाएगा।"

"क्या मतलब?"

"अगर मेरा अनुमान ठीक निकला तो आज शाम तक मैं हत्यारे या हत्यारों को आपके हवाले कर दूंगा। आज मुझे सबसे पहले रजनी और राजेश से मिलना है। उसके बाद मुझे एक ऐसा काम करना है जिस पर आप सबको हैरानी होगी। उस काम का परिणाम मेरी आशा के अनुसार निकला तो विजय आपके कदम चूमेगी।"

इन्स्पेक्टर प्रसन्नतावश मुस्कराया, "आप राजेश से पहले मिलना चाहेंगे या रजनी से?"

"राजेश से।" मेजर बोला।

राजेश अपने कमरे में नहीं था। वह उनको रजनी के कमरे में मिला।

रजनी ने बड़ी बारीक नाइट ड्रेस पहन रखी थी जिसमें उसका पूरा बदन उभरा-उभरा पड़ता था। वह एक ऐसी ड्रेस थी जिस पर नज़र पड़ते ही दिल की दुनिया में हलचल पैदा हो जाती थी। पुलिस इन्स्पेक्टर और मेजर के आगमन पर रजनी ने तुरन्त एक कम्बल अपने ऊपर डाल लिया। राजेश खिड़की में से बाहर झांकने लगा।

मेजर ने जेब से खंजर की म्यान निकाली और राजेश के पास जाकर बोला, "क्या आप इसे पहचानते हैं?"

"हां।" राजेश ने उस म्यान को अपने हाथ में लेकर देखते हुए कहा, "यह उसी खंजर की म्यान है जो प्रोफेसर मोराबियो अफ्रीका से लाए थे और जिससे डाक्टर साहब पर हमला किया गया था।"

"ऐसे दो खंजर थे। एक कंजर चार हफ्ते से गुम है।" रजनी बोली, "मुझे इस बात का इसलिए पता है कि चार हफ्ते पहले मेरी दवा की एक बोतल की सील खुल नहीं रही थी। उसे तोड़ने के लिए मुझे चाकू या छुरी की जरूरत थी। मैंने सोचा कि कौन किचन में जाए, क्यों न खंजर की नोक से सील तोड़ दी जाए। मैं छोटे कमरे में खंजर लेने के लिए गई तो मुझे वहां सिर्फ एक ही खंजर पड़ा हुआ मिला।"

"इस खंजर के खोने पर क्या आपने कोई पूछताछ नहीं की?"

"मैंने सबसे पूछा था लेकिन सबने कहा कि मालूम नहीं।"

मेजर ने राजेश से कहा, "क्या आपको मालूम है कि खंजर की यह म्यान आपके बिस्तर की दरी के नीचे से बरामद हुई है?"

"मेरे बिस्तर की दरी के दीचे से?"

"हां।"

"कौन कहता है और किसने बरामद की?" राजेश ने पूछा।

आप परसों यहां नहीं आए तो मैंने इन्स्पेक्टर से पूछा था। तब उन्होंने मुझे बताया कि आप बम्बई जा चुके हैं।"

"यह तो एक ही बात हुई। यानी आपको मालूम था कि मैं बम्बई गया हूं मेजर बोला और फिर उसने गुलाबी कागज का वह टुकड़ा राजेश की ओर बढ़ाते हुए कहा, "यह टेलीग्राम का फार्म है। इस पर सिर्फ कुछ अक्षर बाकी रह गए हैं। ऊपर की जगह केवल 'एस' और 'एन' के अक्षर हैं जिसका मतलब है कि तार सिम्पसन को दिया गया था। इसके साथ ही दिन, महीने और सन् के अक्षर बाकी हैं—एच, आ एफ, टी। मैं समझता हूं कि ये अंग्रेजी शब्द 'शिफ्ट' के चार अक्षर हैं। इससे प्रकट हो है कि किसी ने सिम्पसन को सूचना दी कि प्रदीप को तुरन्त किसी अन्य जगह पर जाया जाए। अब आइए निचली पंक्ति पर जहां तार भेजने वाले का नाम है—आर आर०। इसका मतलब राजेश भी हो सकता है और रजनी भी—या रजनी और राजेश दोनों हो सकते हैं।" रजनी ने अपने होंठों पर हथेली रख ली जैसे वह मुंह से निकलने वाली अपनी चीख को दबा लेना चाहती हो।

राजेश की घिग्घी बंध गई। उसके मुंह से कोई बात न निकल सकी। वह तार के फार्म को पथराई हुई आंखों से पढ़ता रहा।

"ओह···" उसके मुंह से निकला। उसके हाथ में तार का गुलाबी फार्म कांपने लगा। फिर वह जरा संभला और बोला, "यह तार देने वाला इस घर का आदमी कैसे हो सकता है? आपने तो चारों तरफ पहरा बिठा रखा है। किसी को अपने कमरे से दूसरे कमरे में मुश्किल से ही जाने दिया जाता है—वह तार देने कैसे चला गया?"

"तार न दे सकने की यह कोई माकूल दलील नहीं है। इस घर के हर कमरे में फोन मौजूद है। फोन पर बाहर किसी आदमी को भी हिदायत दी जा सकती है कि वह इस प्रकार का तार सिम्पसन को दे दे।" राजेश निरुत्तर हो गया।

"आप ऐसा कीजिए—आध घंटे के बाद नीचे अजायबघर में चले आइएगा।" मेजर ने राजेश से कहा और फिर रजनी से बोला, "आप भी।"

मेजर, इन्स्पेक्टर और सोनिया सीढ़ियां उतरकर नीचे आ रहे थे कि उन्हें किसी स्त्री के रोने की आवाज सुनाई दी।

"यह तो लछमी मालूम होती है।" सोनिया के मुंह से निकला।

और दूसरे क्षण लछमी रोती, सिर पीटती और छाती पर दोहत्थड़ मारती हुई अन्दर आ निकली। उसके हाथ में एक जालीदार दोपट्टा था जो मिट्टी में सना हुआ था। उसके पीछे एक लम्बा-तड़ंगा व्यक्ति था जो शक्ल-सूरत से किसान मालूम होता था। उसके हाथ में एक सूटकेस था जो कीचड़ में लिथड़ा हुआ था।

"सत्यानाश हो गया—किसी का खाना (खानां) खराब हो गया।" लछमी वावेला कर रही थी, "उस पापी पर बिजली गिरे। गजब (गज़ब) हो गया। हे राम, मैं लुट गई। उस राक्षस को सांप सूंघ जाए और वह पानी न मांगे। मेरी बिटिया—मेरी चांद-सी बिटिया—हाय राम! यह क्या हो गया!"

लछमी निकट आकर जोर-जोर से छाती पीटने लगी, "मौसी, बताओ तो सही कि हुआ क्या?" सोनिया ने लछमी से पूछा।

"सत्यानाश हो गया।" लछमी सिर पीटते हुए बोली, "यह देखो—यह मेरी कामिनी का दोपट्टा है।"

इतने में सिद्दीक़, रूपा, राजेश और रजनी भी वहां आ गए।

लछमी ने रजनी को देखकर और भी जोर-जोर से आलाप भरने शुरू कर दिए, "मेरी बेटी को दुश्मन खा गए—वह किसी को एक आंख न भाई—यह उसका दोपट्टा है।" लछमी ने दोबारा वह दोपट्टा पूरा फैलाते हुए कहा, "और यह उसका

सूटकेस है। मातादीन माली को वाग में जमीन खोदते हुए मिला। और दवे हुए सूटकेस के पास एक अंगूठी भी मिली—किसी मरदूर की अंगूठी। वह गरक हो जाए। इस सूटकेस में मेरी विटिया कामिनी के कपड़े हैं। अरे भगवान ने मुझे क्यों न उठा लिया!" मेजर ने माली मातादीन के हाथ से सूटकेस लेकर उसे खोल दिया। इतने में डाक्टर भी वहां पहुंच गया। वह सूटकेस देखकर वोला, "यह तो कामिनी का सूटकेस है। यहां कैसे आ गया? कामिनी तो इसे अपने साथ वम्वई ले गई थी। मुझे अच्छी तरह याद है। मैंने यह सूटकेस उठाकर कार में रखा था।"

"डाक्टर साहव, आपको याद होगा—आपने मुझे वताया था कि आप कामिनी को रेलवे स्टेशन पर छोड़ आए थे। लछमी का कहना है कि कामिनी हवाई जहाज से वम्वई जाना चाहती थी।"

"जी हां—उसे हवाई जहाज से ही जाना था। लेकिन उस दिन आधी रात से पायलटों की अचानक हड़ताल शुरू हो गई थी। इस ख्याल से कि हड़ताल कव तक चले, कामिनी ने ट्रेन से जाने का फैसला कर लिया। मैं उसे हवाई अड्डे से रेलवे स्टेशन ले गया। फर्स्ट क्लास का टिकट लिया। प्लेटफार्म पर पन्द्रह मिनट तक उससे वातें करता रहा। कामिनी मेरी सेहत का वहुत ख्याल रखती थी। उसे मालूम था कि मैं सर्दी वहुत महसूस करता हूं। उसने मेरे न-न करने पर भी मुझे वापस भेज दिया।"

"इसका मतलव तो यह हुआ कि स्टेशन से आपके चले आने के वाद कोई कामिनी से मिलने गया।" मेजर ने अर्थपूर्ण नजरों से राजेश की ओर देखा और पुनः डाक्टर से वोला, "क्या आपने वापस आकर किसी को वताया था कि कामिनी ट्रेन से वम्वई जा रही है?"

"हां,—मैंने अपनी पत्नी को वताया था।"

"किस समय?" मेजर ने पूछा।

"साढ़े पांच वजे।" रजनी ने अपने पति की ओर से उत्तर दिया।

मेजर ने जव से यह पूछताछ करनी शुरू की थी, लछमी ने रोना-धोना वन्द कर दिया था। मेजर गहरे सोच में डूव गया और फिर उसने अपना सिर उठाकर लछमी से पूछा, "वह अंगूठी कहां है जो सूटकेस के पास जमीन में दवी हुई मिली है?"

लछमी ने अपनी धोती के पल्लू से अंगूठी खोलते हुए फिर रोना शुरू कर दिया।

"तुम रो क्यों रही हो—सूटकेस जमीन में दवे होने से यह तो नहीं सिद्ध होता कि कामिनी की हत्या कर दी गई है?" मेजर ने कहा।

"वावू जी, मेरा दिल गवाही देता है कि मेरी वेटी कामिनी जिन्दा नहीं है।" और लछमी ने अंगूठी मेजर के हवाले कर दी।

मेजर उस अंगूठी को अपने हाथ में लेकर देखने लगा तो राजेश वोला, "यह तो मेरी अंगूठी है।"

"यह अंगूठी आपकी है?" मेजर ने राजेश से पूछा।

"हां—डेढ़ महीना पहले यह अंगूठी खो गई थी। मैं नहाते हुए इसे उतारकर वाथरूम में छोड़ आया था। जव मुझे अंगूठी याद आई और मैं वाथरूम में गया तो अंगूठी वहां मौजूद न थी। जरूर इस लछमी ने ही इसे उठाया होगा और अव वात वना रही है कि अंगूठी दवे हुए सूटकेस के पास मिली।"

"मैं झूठ वोल रही हूं तो मेरी जवान जल जाए! क्यों मातादीन, यह अंगूठी तुझे कहां मिली?"

"सूटकेस के पास मिट्टी में।" मातादीन ने उत्तर दिया।

"देखिए मिस्टर राजेश! मेरा भी यही ख्याल है कि जव आप सूटकेस जमीन

में गाड़ रहे थे तो यह अंगूठी आपकी उंगली से फिसलकर मिट्टी में जा मिली और आपको खबर तक न हुई। बाद में जब आपको पता चला कि अंगूठी गायब है तो आप समझ गए कि सूटकेस के साथ आपने अपनी अंगूठी भी गाड़ दी। लेकिन अब आप उस जगह को दोबारा खोदकर अपनी अंगूठी निकालने का खतरा मोल नहीं ले सकते थे। मिस्टर राजेश ! कामिनी कहां है ?" मेजर ने पूछा।

राजेश ने कोई उत्तर न दिया।

"मेरी दस फीसदी मुश्किल भी दूर हो गई है। मुझे हत्यारों का पता चल चुका है। अब आप सब लोग मेरे साथ अजायबघर में चलिये। मैं आपको बताऊंगा कि हत्यारा कौन है और कामिनी कहां है।"

पथरीली कब्र

अजायबघर में सब लोग अपने-अपने स्थानों पम बैठ चुके थे। रूपा, लछमी, माली मातादीन और सिद्दीकू नीचे गलीचे पर और रजनी, डाक्टर, राजेश और इन्स्पेक्टर सोफों और कुर्सियों पर। सब-इन्स्पेक्टर गुरुदयाल दरवाजे के पास खड़ा था। सोनिया रजनी के पास एक स्टूल पर बैठी थी।

मेजर ने सामने की दीवार के साथ लगी हुई कुर्सी पर से उठते हुए कहा, "यहां जितने लोग बैठे हैं, उन्हीं में हत्यारे भी मौजूद हैं। दीवान सुरेन्द्रनाथ की हत्या मनुष्य के कुचले हुए अरमानों और दबी-घुटी ख्वाहिशों की दुःखद कहानी है। अधिकतर अपराध ईर्ष्या, द्वेष, दुश्मनी आदि के कारण किए जाते हैं। लेकिन आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि हत्या की इस वारदात में बिल्कुल अनोखी भावनायें काम कर रही थीं। एक ओर ऐसा पिता था जो जीवन के सबसे बड़े आनन्द से वंचित हो चुका था लेकिन इसके बावजूद सन्तान का इच्छुक था। उसके यहां बेटी हुई। वह उसे अपनी सगी बेटी की तरह प्यार करता था। लेकिन धीरे-धीरे यह प्यार घृणा में बदल गया। उसके हृदय पर इस विचार से छुरियां चलने लगीं कि वह उस बेटी के लिए अपनी सारी जायदाद छोड़ जाएगा जो उसकी अपनी बेटी नहीं थी। इस प्रकार की भाव-ओं में बहकर अन्त में वह अपनी बेटी का शत्रु बन गया। दूसरी ओर बेटी थी। तक वह अपने पिता को सगा पिता समझती रही, उससे अथाह प्यार करती रही, लेकिन ज्योंही उसे पता चला कि वह उसका सगा पिता नहीं था तो यह वास्तविकता उसके स्वभाव में परिवर्तन लाने लगी। मनुष्य के दिल की दुनिया बड़ी विचित्र है। कभी-कभी अज्ञानता उसके लिए मुसीबत सिद्ध होती है और कभी ज्ञान अजाब बन जाता है। पिता के प्रति बेटी के दिल में उपेक्षा पैदा हुई तो उसने धीरे-धीरे घृणा का रूप धारण कर लिया। उस सौतेले पिता की दौलत बेटी के लिए जहर बन गई। उसने निश्चय कर लिया कि वह ऐसे पिता की दौलत को हाथ तक नहीं लगाएगी। लेकिन जीवन की वास्तविकताएं बड़ी कटु होती हैं। पैसा चूंकि मनुष्य के सुख, आराम, इज्जत और शोहरत का बहुत बड़ा साधन होता है, इसलिए उसे ठुकराना कठिन हो जाता है। पहले तो वह अड़ी रही कि अपने सौतेले पिता के पैसे को नहीं छूएगी, लेकिन जब उसे वास्तविक जीवन का सामना करना पड़ा तो उसने देखा कि पैसे के बिना वह कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकती। उसने पिता से नाराज होकर एक्ट्रेस बनने का इरादा किया। प्रेम भी किया, लेकिन ताबड़-तोड़ कठिनाइयों के सामने वह हिम्मत हारने लगी। उसका दिल डांवाडोल हो गया। जब वह बम्बई से यहां आई तो दो नावों में सवार थी, क्योंकि अभी उसमें कुछ हिम्मत बाकी थी। वह दोराहे पर खड़ी थी। दिल से निकलने वाली एक आवाज यह कहती थी कि अपना फैसला

मत बदलो, ऐसे पिता की दौलत से कोई सरोकार न रखो, लेकिन दूसरी आवाज यह कहती थी कि इतनी दौलत कोई मूर्ख ही ठुकरा सकता है। जब वह इस असमंजस की स्थिति तक पहुंची तो उस समय तक तीर हाथ से निकल चुका था। बाप-बेटी की लगावट से लाभ उठाने वाली शक्तियां मैदान में उतर चुकी थीं। उन शक्तियों को जब यह मालूम हुआ कि बेटी अपना इरादा बदल रही है और पिता से समझौता करना चाहती है तो वे हरकत में आ गईं, क्योंकि अब उनका अपना भविष्य खतरे में था। दीवान सुरेन्द्रनाथ की हत्या हत्यारों की ओर से अपने भविष्य को सुरक्षित रखने की चेष्टा है। मनुष्य अपना भविष्य संवारने के लिए भी कभी-कभी घिनौने अपराध कर बैठता है। यह अलग बात है कि कानून हरकत में आ जाता है और उसे उसके अपराध की सजा दिलवा देता है, लेकिन जो व्यक्ति अपना भविष्य संवारने के लिए हत्या कर रहा होता है, उसे अपराध करते समय यह विश्वास होता है कि कानून उस पर अपना फंदा नहीं फेंक सकता। ऐसा अपराधी चूंकि बहुत चतुर होता है इसलिए वह अंधाधुंध कोई कदम नहीं उठाता। खूब सोच-समझकर हत्या की साजिश तैयार करता है। इस केस में भी हत्यारे बहुत चालाक और समझदार हैं। उनकी राह में दो ही रुकावटें थीं: बेटी और पिता—कामिनी और दीवान सुरेन्द्रनाथ। बेटी की हत्या इसलिए पहले करनी पड़ी कि कहीं वह अपने बाप की इच्छा के सामने सिर न झुका दे और इस तरह उसकी दौलत के बड़े हिस्से की मालिक न बन जाए…।"

"क्या मतलब ? बेटी यानी कामिनी की हत्या दीवान सुरेन्द्रनाथ की हत्या से पहले कर दी गई ?" इन्स्पेक्टर धर्मवीर बोला।

"हां, बेटी की हत्या पहले की गई।"

"कामिनी की लाश तो मिली नहीं। आप कैसे कह सकते हैं कि उसकी हत्या कर दी गई ?" इन्स्पेक्टर ने नया प्रश्न किया।

"कामिनी की लाश भी यहीं है और पन्द्रह मिनट में मिल जाएगी—हां, तो मैं कह रहा था कि पहले बेटी को रास्ते से हटा दिया गया और फिर इस ख्याल से, कि कहीं पिता का दिल न पसीज जाए, वह दोबारा अपना वसीयतनामा न बदल दे, पिता को भी चलता कर दिया गया।" मेजर ने कहा।

"हत्यारा कौन है ?" इन्स्पेक्टर ने अत्यन्त उत्सुकता से पूछा।

"पहले मैं आपको यह बताता हूं कि कामिनी की लाश कहां है…।" मेजर ने मिस्र देश के पुरातत्त्व वाले कमरे की ओर कदम बढ़ाते हुए कहा। और फिर दरवाजे के पास रुककर इन्स्पेक्टर से बोला, "इस बिल्डिंग के गैरेज में मोटर का जैक पड़ा होगा। जैक—जिसकी सहायता से मोटर के पहिए ऊपर उठाए जाते हैं। आप किसी से यह जैक मुझे मंगवा दीजिए और फिर मेरे साथ जरा उस कमरे में चलिए। मैं सबको एक अनोखी चीज देखने की दावत देता हूं।"

इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने सब-इन्स्पेक्टर गुरुदयाल को इशारा किया कि वह गैरेज से जैक उठा लाए। सब लोग मिस्र देश के पुरातत्त्व वाले कमरे में जाकर दीवारों के साथ लगकर खड़े हो गए। मेजर ने नाटकीय ढंग से कहा, "अगर आप जरा लम्बा सांस लें और सूंघकर देखें तो आपको एक खट्टी-सी हल्की बू का अहसास होगा।"

सब लोग लम्बे-लम्बे सांस लेने लगे और सूंघने लगे।

"हां, बू तो आ रही है।" सबसे पहले लक्ष्मी बोली।

"यह बू आने वाले दो-तीन दिन में काफी तेज हो सकती थी, इसलिए इस बू को दूर करने की कोशिश की गई। अगर मेरा अनुमान गलत नहीं है तो यह कामिनी की लाश की बू है—और कामिनी की लाश महारानी नफरीती के इस लेटे हुए बुत और इस बुत के नीचे पथरीली कब्र के खोल में रखी हुई है।"

मेजर के इस रहस्योद्घाटन पर सब अवाक् रह गए।

"मिस्टर राजेश ! क्या आपको मालूम था कि प्रोफेसर मोराबियो अफ्रीका से ममी तैयार करने वाला मसाला लाए थे ?"

"जी हां—मुझे मालूम था।" राजेश ने दबी जबान से कहा।

"क्या आपको यह मालूम था कि यह मसाला अगर लाश पर मल दिया जाए तो वह एक महीने तक खराब नहीं होती ?"

"जी, मोराबियो ने अपने तजुर्बे के बारे में बताया था।"

"आप लोग जरा ध्यान से महारानी नफरीती का बुत देखिए। यह पथरीली कब्र के ऊपर लेटी हुई महारानी का बुत है। यह बुत मिस्टर डिक्सन ने तैयार किया था। यह बुत उन्होंने एक खास उद्देश्य से बनाया था। यूरोप के धनी लोग ऐसे बुत अपनी सम्बन्धी स्त्रियों के मरने पर खरीदते हैं ताकि उनकी कब्र पर इस बुत को रख सकें। मैं शायद कभी यह न जान पाता कि कामिनी की लाश इस पथरीली कब्र के भीतर छिपी हुई है, अगर मिस्टर डिक्सन उस रात को, जिस रात डाक्टर साहब पर कातिलाना हमला हुआ था, अपना यह बुत रखने के लिए न आते और अपनी सिगरेट का अधजला टुकड़ा यहां न छोड़ जाते। मैं समझता हूं कि मिस्टर डिक्सन को भी जरूर शक हुआ होगा कि इस कब्र के अन्दर कोई चीज है, वर्ना वे देर तक इस कमरे में न रहते। आप जरा पास आकर देखिए कि जिस जगह महारानी नफरीती का सिर है, वहां कुछ खराशों के निशान हैं। ये खराशें जैक के इस्तेमाल से पड़ी हैं। मैंने भी इसीलिए जैक मंगवाया है, क्योंकि उसके बिना कब्र को ऊपर उठाना मुश्किल है।"

इतने में सब-इन्स्पेक्टर गुरुदयाल जैक ले आया।

मेजर ने जैक पथरीली कब्र के ऊपर के किनारे में फिट कर दिया और उसकी सहायता से कब्र को ऊपर उठाने लगा। जैक ज्यों-ज्यों कब्र को ऊपर उठाता जा रहा था—देखने वालों का सांस रुकता जा रहा था। जब वह कब्र एक फुट के करीब उठ गई तो मेजर ने झुककर उसके भीतर झांककर देखा। वह मुस्कराया। उसने कब्र के अन्दर हाथ डालकर कामिनी की लाश बाहर खींच ली।

लाश को देखते ही लछमी ने एक हृदय-विदारक चीख मारी और उछलकर कामिनी की लाश पर गिर पड़ी। सोनिया और रजनी के मुंह से हल्की-सी चीखें निकलीं और उन दोनों ने अपनी आंखों पर हाथ रख लिए। कामिनी की छाती में खंजर दस्ते तक गड़ा हुआ था और वह बिल्कुल नंगी थी। उसके बदन पर मली हुई कोई चीज चमक रही थी। ऐसा मालूम होता था जैसे वह मुर्दा न हो, सोई पड़ी हो। उसका शरीर बिल्कुल नहीं अकड़ा था—लछमी ने अपनी आधी धोती फाड़कर उस पर डाल दी थी और वह सिसक-सिसककर रो रही थी।

"मेरा अनुमान गलत नहीं निकला।" मेजर ने कहा, "कामिनी को स्टेशन से लाकर यहां कत्ल कर दिया गया। यह भी हो सकता है कि रास्ते में ही उसकी हत्या कर दी गई हो। फिर उस पर ममी तैयार करने वाला मसाला मलकर इस कब्र में दफना दिया गया हो। हत्यारे बहुत चालाक और होशियार थे। ऐसा करने से, उन्हें मालूम था कि किसी को कभी यह पता नहीं चल सकेगा कि कामिनी कहां है। और समय मिलने पर वे इस लाश को यहां से निकालकर हमेशा के लिए तहस-नहस कर देंगे।"

"हत्यारे कौन हैं ?" इन्स्पेक्टर ने फिर अधीरता से पूछा।

मेजर क्षण-भर के लिए मौन रहा और फिर बड़े नाटकीय ढंग से उसने घोषणा की, "राजेश, रजनी और सिद्दीकू।"

रजनी ने अपने होंठों पर हाथ रखकर अपनी चीख को दबाने की कोशिश की।

हब्शी सिद्दीकू तेजी से अपनी आंखें झपकाने लगा। राजेश बिल्कुल स्तब्ध रह गया।
"इस हत्या के पीछे राजेश का दिमाग काम कर रहा था।" मेजर ने कहा।

"झूठ—बिल्कुल झूठ।" अब राजेश ने तिलमिलाकर कहा।

इन्स्पेक्टर धर्मवीर बड़ी शान से कदम उठाता हुआ उसके पास जा खड़ा हुआ और बोला, "आप चुप रहिए!"

मेजर ने बात जारी रखते हुए कहा, "इस हत्या के पीछे राजेश का दिमाग काम कर रहा था। नौजवान दिलों की इच्छाएं बड़ी तुंद व तेज होती हैं। रजनी की जवानी उसे मालूम हो चुका था कि कामिनी कौन है और किसकी बेटी है। उसके चाचा के यहां कामिनी का जन्म किन परिस्थितियों में हुआ था, इसे भी वह जान चुका था। कामिनी रजनी की बहन थी लेकिन पिता की ओर से। कामिनी उसकी मां की नहीं उसकी मौसी की बेटी थी। राजेश को यह सब सुनकर न सिर्फ कामिनी से, बल्कि अपने चाचा से नफरत हो गई। उसने बाप-बेटी की अनबन से पूरा फायदा उठाना चाहा। उसे रजनी से प्रेम था। रजनी को दौलत और शान-शौकत प्यारी थी। राजेश ने उसके कदमों पर दौलत का अंबार लगा देने की योजना बनाई और अपनी योजना में रजनी और सिद्दीकू को शामिल कर लिया। जहां तक कामिनी के प्रेमी प्रदीप से बदला लेने का सम्बन्ध है, वह दीवान सुरेन्द्रनाथ का अपना व्यक्तिगत मामला था। उन्होंने वेस्टइंडीज के चार कारीगरों को इस उद्देश्य के लिए बम्बई भेजा था और उनको प्रदीप का पता दे दिया था। लछमी के नाम या लछमी के द्वारा कामिनी के जो पत्र आते थे, दीवान साहब उनको पहले पढ़ लिया करते थे। राजेश को भी इस बात का पता था कि दीवान साहब ने उन कारीगरों को बम्बई क्यों भेजा था। दीवान साहब ने उसे अपना राजदार बना लिया था। उन कारीगरों को हिदायत कर दी गई थी कि उनको राजेश की हिदायत पर भी अमल करना होगा। सुरेन्द्रनाथ ने कामिनी के विरुद्ध जो कदम उठाया उसने राजेश को शह दी कि चाचा अगर अपराध करने से नहीं हिचकिचाता तो फिर उसे कौन रोक सकता है।"

"आप झूठ का कम्बार लगा रहे हैं।" राजेश ने भड़ककर कहा, लेकिन इंस्पेक्टर ने फिर उसे रोक दिया।

मेजर ने राजेश की बौखलाहट की परवाह न करते हुए कहा, "जिस दिन वेस्टइंडीज के कारीगर दीवान सुरेन्द्रनाथ की योजना पर अमल करने के लिए बम्बई रवाना हुए, उसी दिन राजेश ने फैसला कर लिया कि वह कामिनी को बम्बई नहीं जाने देगा। लेकिन उसकी योजना मिट्टी में मिल गई क्योंकि कामिनी ने अचानक हवाई जहाज से बम्बई जाने का प्रोग्राम बना लिया। अगर वह हवाई जहाज से जा पाती तो शायद आज जिन्दा होती। लेकिन कोई भी अपने भाग्य को लिखे को नहीं मिटा सकता। कामिनी को ट्रेन से जाना पड़ गया और राजेश को समय पर पता चल गया। वह स्टेशन पहुंचा और इस बहाने से कामिनी को वापस ले आया कि दीवान साहब उससे एक जरूरी बात करना चाहते हैं। उसने रास्ते में ही कामिनी का काम तमाम कर दिया या यहां लाकर उसे मौत के घाट उतार दिया।"

राजेश ने झल्लाकर फिर कुछ कहना चाहा, लेकिन इन्स्पेक्टर ने उसके मुंह पर हाथ रख दिया।

मेजर ने राजेश की ओर देखे बिना कहा, "कामिनी से निबटने के बाद दीवान साहब को रास्ते से हटाने की तदबीरें होने लगीं। दीवान साहब की हत्या में ज्यादा सफाई से काम लिया गया। इस हत्या पर भ्रमों का पर्दा डालने की कोशिश की गई। ऐसा प्रकट किया गया जैसे अफ्रीका की प्रतिशोध की देवी 'जून्वी' ने दीवान साहब को मौत की नींद सुला दिया हो। देवी जून्वी की मूर्ति को हत्या के लिए इस्तेमाल करना

भी राजेश के दिमाग की उपज थी। लेकिन मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि दीवान साहब का सिर हथौड़े से तोड़ा गया था और बाद में देवी 'जूम्बी' की मूर्ति उनके सिर पर फेंकी गई थी। दीवान साहब की हत्या का दोहरा उद्देश्य था। हत्या का आरोप डाक्टर बनर्जी पर लगाने की पूरी-पूरी कोशिश की गई। हत्या से पहले डाक्टर साहब के काफी के प्याले में अफीम मिला दी गई थी और इस तरह उन्हें गहरी नींद सुला दिया गया था। काफी में अफीम मिलाने का काम सिद्दीकू ने किया जो तबीयत के खराब होने का बहाना करके अपने कमरे में पड़ा रहा था। सिद्दीकू अपने कमरे में मौजूद रहकर डाक्टर साहब की निगरानी कर रहा था। डाक्टर साहब को हत्यारा सिद्ध करने के लिए उनकी टाई का पिन दीवान साहब की लाश के पास फेंका गया। डाक्टर साहब की लिखी हुई रिपोर्ट दीवान साहब के हाथ में दे दी गई। डाक्टर साहब के जूते के एक पैर का खून से लिथड़ा हुआ दाग बनाया गया। दुर्भाग्य से डाक्टर साहब देवी जूम्बी की मूर्ति पर अपनी उंगलियों के निशान छोड़ चुके थे। कोई भी पुलिस अफसर इस प्रमाण के आधार पर बेचारे डाक्टर साहब को फांसी के तख्ते पर लटकवा सकता था, लेकिन मुझे हत्यारे का बिछाया हुआ जाल मालूम हो चुका था इसलिए मैंने डाक्टर साहब का हर तरह से पक्षपात किया।" यह कहकर मेजर ने डाक्टर की ओर देखा जिसके चेहरे पर प्रसन्नता का प्रकाश फैला हुआ था।

मेजर ने सांस लेते हुए कहा, "जब राजेश ने यह देखा कि उसका बिछाय हुआ जाल बेकार चला गया तो उसके पास डाक्टर साहब को भी अपनी राह से हटाने के सिवा और कोई चारा न रहा। उसने उन पर खंजर से कातिलाना हमल किया। अब राजेश चूंकि बौखला चुका था इसलिए वह खंजर की म्यान भी कहीं फें देने या नष्ट कर देने का साहस न कर सका। मुझे कामिनी के सिलसिले में बम्ब जाना पड़ा। राजेश को जब इन्स्पेक्टर से यह पता चला कि मैं बम्बई गया हूं तो उसक माथा ठनका। उसने वेस्टइंडीज के कारीगरों को तार दिया कि वे प्रदीप को उस मकान से किसी दूसरी जगह ले जाएं। लेकिन मैं भी कच्ची गोलियां नहीं खेला था मैंने राजेश के आदमियों का पीछा किया। उनसे हमारी मुठभेड़ हुई जिसमें तीन कारी मारे गए। अगर मैं उनमें से किसी एक को जिन्दा पकड़ सकता तो मुझे इतन ...लें देने की जरूरत न पड़ती, क्योंकि वह व्यक्ति ही राजेश का कच्चा चिट्ठा खोल कर रख देता। खैर, अभी चौथा कारीगर जिन्दा है। वह आज-कल में जरूर य आएगा। उसे गिरफ्तार करना इन्स्पेक्टर साहब का काम है क्योंकि अब मैं जल्दी वापस बम्बई चला जाऊंगा। मिस्टर डिक्सन केवल इसलिए काबू में आ गए कि उन भी सन्देह हो गया था कि हत्यारा कौन है। हत्यारे के लिए मिस्टर डिक्सन का जि रहना खतरनाक था, इसलिए उन पर भी कातिलाना हमला हुआ। उन पर भी हम का वही ढंग अपनाया गया जो दीवान साहब के लिए अपनाया गया था। डाव साहब केवल हमारे यहां मौजूद रहने के कारण जिन्दा हैं वर्ना राजेश ने इनको भी अ रास्ते से हटा देने के बाद रजनी के साथ आयु-भर आनन्द का जीवन बिताया होता

"मुझे क्या मालूम था कि मैं अपनी आस्तीन में सांप पाल रहा हूं।" डाव ने क्रोध में मुंह से झाग छोड़ते हुए कहा।

मेजर दरवाजे के पास जा खड़ा हुआ। इन्स्पेक्टर धर्मवीर ने सब-इन्स्पे गुरुदयाल को संकेत किया तो गुरुदयाल इन्स्पेक्टर के पास चला आया। वे द रजनी, सिद्दीकू और राजेश को घेरकर खड़े हो गए। डाक्टर क्रोध से बिलबिला था, "मैं नहीं जानता था कि मैं अपने दुश्मनों को पनाह दे रहा हूं। मेरा सब बर्बाद हो चुका है। मैं अब इस घर में एक मिनट के लिए भी रहने को तैयार हूं।" यह कहकर डाक्टर दरवाजे की ओर बढ़ा। जब वह दरवाजे पर खड़े मेज

पास पहुंचा तो उसने अपना हाथ मेजर की ओर बढ़ाते हुए कहा, "मैं आपका आभारी हूं। आप न होते तो ये लोग मेरा काम तमाम कर चुके होते।"

मेजर ने डाक्टर साहब का हाथ अपने हाथ लेकर जोर से दबाया। जब मेजर ने उसका हाथ न छोड़ा तो डाक्टर आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा। और फिर अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश करने लगा।

"डाक्टर साहब, मैं आपका हाथ कैसे छोड़ सकता हूं!"

"मुझे जाने दीजिए। मैं हत्यारे के पास नहीं रह सकता।" डाक्टर ने अपना हाथ छुड़ाने के लिए पूरा जोर लगाया।

"अब आप अपना हाथ नहीं छुड़ा सकेंगे। यह मजबूत पकड़ में आ चुका है।" मेजर ने कहा।

"क्या मतलब—मैं समझा नहीं!" डाक्टर ने कहा।

"मैं समझाता हूं। मैं हत्यारे का हाथ अपने हाथ में लेकर फिर उसे छोड़ा नहीं करता।" सब लोग सांस रोककर यह तमाशा देख रहे थे। मेजर की इस बात पर उनके मुंह खुले के खुले रह गए।

मेजर ने इन्स्पेक्टर की ओर देखते हुए कहा, "आप इन लोगों को क्यों घेरे खड़े हैं? असली हत्यारा तो मेरी पकड़ में है। चतुर व्यक्ति कभी-कभी अपनी चतुराई का बड़ा ही अनुचित लाभ उठाता है। उसको यह घमंड हो जाता है कि उस जैसा चालाक और बुद्धिमान व्यक्ति इस संसार में नहीं है। मैंने उसका यह घमण्ड तोड़ने के लिए ही राजेश, रजनी और सिद्दीकू को हत्यारे ठहराने के लिए जोरदार दलीलें पेश की थीं। इस बीच में उनके दिलों पर जो बीती उसके लिए मैं उनसे क्षमा चाहता हूं—लेकिन अपराधी को पकड़ने का केवल यही एक ढंग था। देख लीजिए, जब डाक्टर को यह विश्वास हो गया कि ये साफ बच निकले हैं, तो किस तरह इन्होंने फरार हो जाने का बहाना बनाया कि इस घर में एक मिनट के लिए भी नहीं रहना चाहते।" और फिर मेजर डाक्टर से सम्बोधित हुआ, "आप अपने दिल में बहुत खुश हुए होंगे कि आपने जैसा चाहा था वैसा ही हुआ। आप राजेश को हत्यारा सिद्ध करना चाहते थे ताकि उससे अपनी पत्नी से प्रेम करने का बदला ले सकें। आपको अपनी पत्नी और राजेश के सम्बन्धों का पता था। आप एक तीर से तीन शिकार करना चाहते थे। आपने कामिनी की हत्या इसलिए की कि उसकी दौलत का हिस्सा आपकी पत्नी और राजेश को मिले, और आपने दीवान सुरेन्द्रनाथ को इसलिए मौत के घाट उतार दिया कि वे कश्मीर में आपकी मुहिम पर रुपया लगाने के लिए तैयार नहीं थे। दूसरा कारण यह था कि वे किसी भी समय अपने वसीयतनामे को बदल सकते थे। आपने अपने खिलाफ जाने वाले सारे सुराग इसलिए छोड़े ताकि राजेश पर दीवान साहब की हत्या का सन्देह विश्वास में बदल जाए। आपने दीवान साहब के सिर पर हथौड़ा मारकर उनकी हत्या की। उसके बाद देवी जूम्बी की मूर्ति को उनके सिर के निकट फेंक दिया। आपने जान-बूझकर उस मूर्ति पर अपनी उंगलियों के निशान जमाए। आपने जान-बूझकर अपने जूते के खून-भरे निशान पैदा किए। आपने अपने काफी के प्याले में खुद अफीम का पाउडर मिलाया। इसके साथ-साथ आपने ऐसे सुराग भी छोड़े जिनसे यह सिद्ध हो कि हत्या राजेश ने की थी। आपने पुलिस को भ्रम में डालने की हर संभव कोशिश की। अगर पुलिस इन्स्पेक्टर धर्मवीर के कहने के अनुसार आपको शुरू में ही गिरफ्तार कर लिया जाता तो प्रमाणों की कमी के कारण आप साफ बच निकलते और राजेश कानूनी शिकंजे में फंस जाता। आपने स्वयं ही अपने आप पर कातिलाना हमला किया और खंजर की चमड़े की म्यान राजेश के बिस्तर की दरी के नीचे छिपा दी। यही कारण है कि आपने आग्रह किया था कि

म्यान जरूर ढूंढ़नी चाहिए। और फिर जब मैं बम्बई गया तो आपने अपने आदमियों को तार दिया ताकि बाद में उस तार को अदालत में इस्तेमाल किया जा सके, और राजेश के विरुद्ध हत्या का अपराध सिद्ध करने में रही-सही कसर भी पूरी हो जाए। राजेश ने मिसेज रजनी को जो पत्र लिखा था, लेकिन रजनी को दिया नहीं था, वह भी आपने अपने पास सुरक्षित रखा। उस पत्र की नकल आपने अपने हाथ से तैयार की और वह पत्र टुकड़े-टुकड़े करके रद्दी की टोकरी में फेंक दिया ताकि वह पत्र हमें मिल जाए और हम राजेश पर संदेह करने लगें। मैं यह स्वीकार करता हूं कि अगर मैं कामिनी की तलाश में दिल्ली न आता और इन्स्पेक्टर धर्मवीर दीवान सुरेन्द्रनाथ की हत्या की समस्या सुलझाने में मेरी सहायता न चाहते तो आप अपने उद्देश्य में सफल हो गए होते। एक निर्दोष नौजवान फांसी के तख्ते पर लटक जाता। एक बात मैं और बता दूं कि जब वेस्टइंडीज के कारीगरों को बम्बई भेजा गया था तो प्रदीप से निबटने की साजिश भी आपके दिमाग की उपज थी। आपने ही दीवान साहब को यह परामर्श दिया था। जब आपने दीवान साहब को ठिकाने लगा दिया, तो वेस्टइंडीज के कारीगरों को आपने हिदायतें देनी शुरू कर दीं। यही नहीं, जो तीन कारीगर यहां मौजूद रहे उनकी सहायता से आपने मिस्टर डिक्सन की और फिर मेरी हत्या करने की कोशिश की। यह मैं मानता हूं कि आप अपने कमरे से कहीं बाहर नहीं गए, लेकिन आपने उनको पैगाम पहुंचाने का अनोखा तरीका अपनाया। आपके सोने के कमरे में जो तीर-कमान रखा है, उसने आ[illegible] लिए पैगाम देने और पैगाम लेने का काम किया। आप तीर में पत्र फ[illegible]कर कमान द्वारा अपने आदमियों को भेजते थे और आपके आदमी उस तीर को अपनी कमान के द्वारा आपके कमरे में अपने पैगाम के साथ वापस लौटा देते थे। वह तीर उस ब्लैक बोर्ड में आकर लगता था जिसके बारे में आप यह कहते रहे हैं कि आप उसे मूर्तियों के रेखाचित्र या नमूने बनाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। उस बोर्ड पर जो गड्ढे पड़े हुए हैं, वे तीरों के निशान हैं। डाक्टर साहब! अब आप अपने अपराधी होने से इन्कार नहीं कर सकते।''

''आप मुझ पर झूठा आरोप लगा रहे हैं।'' डाक्टर ने कहा।

''देखिए—मिस्टर डिक्सन भी इसी परिणाम पर पहुंच चुके थे कि आप ही हत्यारे हैं। मिस्टर डिक्सन का मिस्री पुरातत्त्व के कमरे में जाना आपके विरुद्ध अपराध का अन्तिम प्रमाण बन गया। कामिनी की तलाश मिस्टर डिक्सन की उस हरकत के कारण सफल हुई। मिस्टर डिक्सन को आज शाम तक होश आ जाएगा और फिर आप अपने अपराधी होने से किसी तरह भी इनकार नहीं कर सकेंगे।''

मेजर के इन अन्तिम शब्दों ने डाक्टर को मानो तोड़कर रख दिया। उसकी टांगें कांपने लगीं।

''लीजिए इन्स्पेक्टर साहब! हत्यारे को सम्भालिए और हमें आज्ञा दीजिए।''

□ क्रम : २

□

हत्यारा प्रेमी

□

मेजर बलवन्त के सामने उसका असिस्टेण्ट दुःख और शोक की मूर्ति बना बैठा था। उसकी आंखों से गहरी उदासी छलक रही थी। आज उसने अपने मन की बात कहने के लिए मेजर से थोड़ा-सा समय मांगा था। अभी वह ठीक तरह से अपनी बात आरम्भ भी न कर पाया था कि सोनिया और विनोद मल्होत्रा ने मेजर के कमरे में प्रवेश किया। उन्होंने अशोक के मूड से तुरन्त अनुमान लगा लिया कि उन दोनों में किसी गम्भीर समस्या पर बातचीत चल रही है। सोनिया और विनोद मल्होत्रा चुपके से नमस्ते करने के बाद कुर्सियों पर जा बैठे। अशोक की जबान को जैसे ताला लग गया। अब उदासी के साथ-साथ उसके चेहरे पर लज्जा की लाली भी फैल गई।

"ये सब अपने ही लोग हैं। इनसे कोई पर्दा नहीं। मैं तो समझता हूं कि इनकी मोजूदगी से तुम्हें फायदा ही पहुंचेगा। अपनी बात जारी रखो।" मेजर ने कहा। अशोक खामोश रहा। ऐसा लगता था कि उसकी रही-सही हिम्मत भी जाती रही थी।

"देखो अशोक," अब सोनिया बोली, "प्रेम की मांग होती है कि कोई उसके भेद को जानने वाला हो। कोई दुःख पूछने वाला हमदर्द हो। तुम सौभाग्यशाली हो कि तुम्हारे आसपास इतने भेद जानने वाले और दुःख पूछने वाले इकट्ठे हैं।"

सोनिया की इस बात ने अशोक का दिल बढ़ाया। उसने कृतज्ञ निगाहों से सोनिया की ओर देखा और अपनी सारी शर्म को तिलांजलि दे दी। उसने बड़ी धीमी आवाज में तसल्ली से कहा, "हां, मैं सचमुच सौभाग्यशाली हूं कि आप मेरे सच्चे हमदर्द और मेरे दुःख के सच्चे साथी हैं। लेकिन मैं बहुत ही अभागा भी हूं। कल रात मेरी कहानी प्रेम और हत्या की कहानी बन गई।"

"प्रेम और हत्या!" विनोद मल्होत्रा ने कहा, "तुम्हारी इस कहानी में प्रेम हत्यारा है या प्रेम की हत्या की गई है?"

"मेरी इस कहानी में न तो प्रेम की हत्या हुई है और न प्रेम ने हत्या ही की है। प्रेम की हत्या तो की जा सकती है, लेकिन प्रेम हत्या कभी नहीं कर सकता।" अशोक ने अपनी बात पर दार्शनिकता का रंग चढ़ाते हुए कहा, "मैं रात-भर अंगारों पर लोटता रहा हूं। प्रकृति कभी-कभी एक ऐसा दुःखद दृश्य सामने ले आती है जिस

पर नाचीज इन्सान की अक्ल दंग रह जाती है। मैंने प्रेम किया, वासना से दूर, पवित्र प्रेम, जिसमें सेवा और पूजा की भावना थी—ऐसा प्रेम जिसे कोई इच्छा, आकांक्षा और साध नहीं होती; लेकिन मेरे इस प्रेम का इतना भयानक परिणाम होगा, इसकी मैंने स्वप्न में भी कल्पना न की थी। आज मैं पुलिस और दूसरे लोगों की नजरों में हत्यारा हूं। अगर मैं मेजर साहब का असिस्टैण्ट न होता और संयोग से मेरी जेब में मेरा आइडेण्टिटी कार्ड न होता, तो इस समय मैं लोहे की सलाखों के पीछे होता।"

"यह पहला मौका है कि मेरे किसी असिस्टैण्ट पर हत्या का अभियोग लगाया जा रहा है।" मेजर ने कहा।

"बस यों समझ लीजिए कि आपके नाम की जमानत पर मुझे रिहाई मिली है। रिहा होने पर भी मैं नजरबन्द हूं; क्योंकि पुलिस इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं उनकी इजाजत के बिना इस शहर के बाहर नहीं जा सकता।"

"ऐंग्लो-इंडियन पुलिस इन्स्पेक्टर मैथ्यूज···वह तो अंधेरी के पुलिस थाने का इन्चार्ज है।" मेजर ने कहा।

अशोक की परेशानी कुछ कम हो गई। उसने कहा, "आपका संदेह मुझपर आरम्भ से रहा है कि मैं किसी लड़की से प्रेम करता हूं।"

"संदेह!" मेजर ने कहा, "संदेह···! मुझे तो विश्वास था। अरे भाई, काना काने को खूब पहचानता है।"

अशोक की विचारधारा भंग हो गई थी। वह मन ही मन तिलमिला रहा था कि मेजर साहब ने मजाक के लिए समय-असमय नहीं देखा। फिर भी उसने विचारों की टूटी कड़ियां फिर आपस में जोड़ीं और बोला, "यों तो हर आदमी को अपना प्यार दुनिया-भर से निराला दिखाई देता है, लेकिन मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि प्रेम का जो अनुभव मुझे हुआ है वह शायद ही किसी को हुआ होगा। आज से चार साल पहले मैं एक कुंवारी लड़की से प्रेम करता था। वह लड़की किसी की पत्नी बन गई। फिर भी मैं उससे प्रेम करता रहा और अभी तक कर रहा हूं। इस तरह अब विवाहित स्त्री से प्रेम कर रहा हूं। और मेरा प्रेम एक ऐसी आग बनकर रह गया है जो अन्दर ही अन्दर सुलगती है, लेकिन उसका धुआं बाहर नहीं निकलता। मेरे प्यार में अनेकों उतार-चढ़ाव आए और अब मैं उस औरत का प्रेमी कम और सेवक अधिक बन चुका हूं।"

"इस बात को जरा खुलकर बताओ।" मेजर ने कहा।

"बात यह है कि दुनिया में ऐसे आदमी भी होते हैं जो हमेशा के लिए सिर्फ एक औरत के ही होकर रह जाते हैं। मैं उन्हीं में से एक हूं। जब मेरी प्रेमिका की शादी हो गई तो मुझे बिलकुल दुःख न हुआ। उसकी खुशी में मेरी खुशी थी।"

मेजर बोला, "क्या तुमने उससे विवाह करने के लिए नहीं कहा था?"

"नहीं। उसे बहुत अधिक प्रेम करने पर भी मैं यह जानता था कि जिस तरह की जिन्दगी वह चाहती है वैसी जिन्दगी मैं उससे शादी करने के बाद उसे नहीं दे सकूंगा। वह सुख-सुविधाएं, धन, जेवर, सैर-सपाटा, प्रसिद्धि और सम्मान चाहती थी मेरे पास यह सब न था। लेकिन कल मुझे पता चला कि मैंने खामोश रहकर बहुत बड़ी मूर्खता की थी। वह अपनी इन चाहतों को यों ही बढ़ा-चढ़ाकर बताया करती थी लेकिन वास्तव में वह एक वफादार और घरेलू टाइप की औरत थी। वह भी शायद इतने दिनों तक दुःख से हाथ मलती रही थी। यह जिन्दगी है, कभी-कभी आदमी की छोटी-सी बेसोची-समझी हरकत उसे जिन्दगी-भर के लिए दुखी बना देती है। हम दोनों ने भूल की कड़ी सजा भुगती है। कल रात वह विधवा हो गई। उसके पति की गर्दन में चाकू भोंककर किसीने हत्या कर दी। और अब पुलिस मुझे हत्यारा

रही है।"

"तो क्या तुम, जब हत्या हुई, उसके घर पर थे?" मेजर ने पूछा।

"हां···," अशोक ने दुःख-भरे स्वर में कहा, "मैं पहले अपनी कहानी की सारी पृष्ठभूमि बता देना चाहता हूं। मैं जिस औरत की चर्चा कर रहा हूं उसका नाम मिसेज शोभा हरिवंश है।"

"बरसोवा के सबसे बड़े रईस चौधरी हरिवंशराय की पत्नी?" मेजर के मुंह से निकला।

"जी हां। आज से चार साल पहले वह सिर्फ शोभा सचदेव थी। अहमदाबाद के कालेज में मेरे साथ पढ़ती थी। हम दोनों ने एकसाथ बी० ए० किया था। मैं यहां बम्बई चला आया और वह अहमदाबाद में ही बी० एड० में पढ़ती रही। मैं छुट्टियों में घर जाता तो उससे मुलाकात होती। वह बड़े खुले मन से मिलती और हमेशा पहली जैसी बेतकल्लुफी का व्यवहार करती। मैं बम्बई वापस चला आता तो खत लिखती। लेकिन उसने हमेशा इतनी सावधानी से जरूर काम लिया कि मुझे अपने मन की बात कभी खुलकर कहने का मौका न दिया। और एक दिन अचानक उसकी चिट्ठी मिली कि वह अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़ रही है और शादी करने के बाद बम्बई आ रही है। उसने अपनी ससुराल का पूरा पता भी लिखा और मुझसे दो अनुरोध किए। एक तो यह कि मैं उसके विवाह के दिनों में छुट्टी लेकर अहमदाबाद न आऊं और दूसरा यह कि जब वह अपनी ससुराल पहुंचे तो उससे आकर जरूर मिलूं। और चार साल से लगातार मैं हफ्ते में दो दिन उसके यहां जाता रहा हूं।"

"एक बात मेरी समझ में नहीं आई। औरत शादी होने के बाद दूसरों से बिदका करती है, लेकिन वह तुम्हें अपने पास बुलाती रही और तुम नियम से हफ्ते में दो दिन उसके यहां जाते रहे। यह बात उसके पति ने कैसे सहन की?" मेजर ने पूछा।

"उसने अपने पति को यह बताया था कि मैं रिश्ते में उसका भाई हूं और बम्बई में नौकर हूं।"

"क्या उसने अपनी पत्नी से यह नहींपूछा था कि तुम उसकी शादी में कहीं दिखाई नहीं दिए थे?"

"उसने बहाना कर दिया था कि मैं उन दिनों बीमार था। और फिर मैंने भी उसके पति से मुलाकात होने पर यही कह दिया था। इसके अलावा मैंने अपने प्रेम, सेवा और त्याग से चौधरी हरिवंशराय का दिल जीत लिया था। मुझे केवल शोभा का साथ और उसका स्नेह चाहिए था। मैंने तो उसकी ओर प्यार की नजरों से देखना तक छोड़ दिया था। मैं अब नजर से नहीं, उसके साथ दिल से प्यार करने लगा था। चौधरी साहब को मेरी ओर से इत्मीनान हो चुका था। वे मुझे अपने परिवार का एक सदस्य समझने लगे थे। जब भी मिलते थे, बड़े तपाक से मिलते थे। कल रात उन्होंने अपनी नई शादी की सालगिरह मनाई थी।"

"नई शादी? क्या मतलब?" विनोद ने पूछा।

"शोभा के साथ उनकी दूसरी शादी थी। पहली पत्नी से ग्यारह-बारह साल की एक बेटी है, जिसका नाम अंजना है। वह मुझे अपना मामा समझती है। शादी की सालगिरह में चौधरी साहब ने एक शानदार दावत का प्रबन्ध किया था। शोभा ने तो मुझे निमन्त्रण नहीं दिया था, लेकिन चौधरी साहब ने आग्रह करके मुझे अपने यहां बुलाया था। काश, मैं कल रात उनके यहां न जाता! जब तक वास्तविक हत्यारा नहीं पकड़ा जाता, मैं चौधरी साहब के किसी आदमी को अपना मुंह नहीं दिखा सकता।"

"क्या चौधरी साहब के घर में कुछ और लोग भी हैं ?"

"जी हां। उनकी बेटी अंजना है। उनकी छोटी बहन उर्मिल है। उनकी अस्सी साल की मां भी जिन्दा हैं ; लेकिन वह वरसोवा के पुराने मकान में रहती हैं और चौधरी साहब अंधेरी के अपने नये बंगले में रहते थे। कल रात उन्होंने बड़ी धूमधाम से पार्टी दी थी।"

"कुल कितने मेहमान आए थे ?" मेजर ने पूछा।

"मुझे शामिल कर लिया जाए तो मेहमानों की कुल संख्या आठ थी। बाकी सब चौधरी साहब के घर के लोग थे। एक नाचने वाली थी जिसे सब मृगनयनी के नाम से पुकार रहे थे। नृत्य के बाद वह अपना पारिश्रमिक और पुरस्कार लेकर चली गई। हत्या की दुर्घटना उसके जाने के दो घंटे बाद मालूम हुई।"

"क्या तुम मेहमानों के नाम बता सकते हो ?" मेजर ने पूछा।

"क्यों नहीं, वहां पारसी डाक्टर एन० अर्देशर थे। सिन्धी सेठ सूरजनारायण शाहानी थे। उनकी विधवा बेटी मिसेज रक्षा शाहानी थी। मद्रासी फोटोग्राफर कृष्णामूर्ति था। मारवाड़ी सेठ चांदीराम कटारिया थे। पत्रकार सुधीर माचवे था। एक और नौजवान था, जिसे मैं नहीं जानता। वह रात के साढ़े दस बजे काफी देर से पार्टी में शामिल होने आया था और ग्यारह बजे वापस चला गया था। चौधरी हरिवंशराय के घर के लोगों में उनकी पत्नी शोभा, उनकी बहन उर्मिल और उनकी बेटी अंजना मौजूद थीं। उनकी मां भी आई थीं, लेकिन मेरे वहां पहुंचने से पहले ही जा चुकी थीं। उनकी आंखें खराब हैं, इसलिए वे चाहे जहां कहीं भी हों, सूरज ढलने से पहले ही वापस अपने बंगले में पहुंच जाती हैं।"

"चौधरी साहब के घर में नौकर कितने हैं ?"

"चार—तीन औरतें और एक आदमी जो काफी बूढ़ा है।"

"हत्या की दुर्घटना कब हुई ?"

"पार्टी खत्म होने के पच्चीस मिनट बाद। पार्टी साढ़े ग्यारह बजे खत्म हुई और ठीक ग्यारह बजकर पचपन मिनट पर किसीने चौधरी साहब की हत्या कर दी।"

"उस समय वहां कौन-कौन मौजूद था ?"

"मैं, शोभा, अंजना और उर्मिल। घर की नौकरानियां और नौकर। बाकी लोग जा चुके थे।"

"चौधरी साहब पार्टी खत्म होने तक पार्टी में ही रहे थे ?"

"नहीं, वह ग्यारह बजे अपने बेडरूम में चले गए थे। वे जरूरत से ज्यादा पी चुके थे। नींद की अधिकता से उनकी आंखें मिच गई थीं और वे ऊंघने लगे थे। शोभा ने उन्हें आराम करने की राय दी, जो उन्होंने फौरन मान ली।"

"तुम पार्टी खत्म होने के बाद वहां क्यों रुके रहे ?"

"मुझे शोभा ने रोक लिया था। वह मुझसे एक जरूरी बात कहना चाहती थी।"

"वह जरूरी बात क्या थी ?"

"शोभा ने मुझे बताया कि वह अपने घर के वातावरण से तंग आ चुकी है। वह दो-तीन महीने के लिए महाबलेश्वर जाना चाहती थी। उसने मुझसे आग्रह किया कि मैं दो महीने की छुट्टी ले लूं।"

"खूब···।" मेजर मुस्कराया। फिर कुछ क्षणों तक सोचते रहने के बाद उसने पूछा, "तुमने बताया है कि चौधरी साहब की गर्दन में चाकू घोंपा गया। क्या किसी ने कोई चीख भी नहीं सुनी ?"

"नहीं।"
"सबसे पहले उनकी हत्या का पता किसको चला ?"
"शोभा को।" अशोक ने उत्तर दिया।
"तुम खुद उस बीच क्या कर रहे थे ?"
"मैं शोभा का इन्तजार कर रहा था। मैं आपको बता चुका हूं, कि उसने अपनी वह जरूरी बात कहने के लिए मुझे रोक लिया था।"

लम्बे फल का चाकू

अशोक ने काफी का घूंट भरते हुए सब पर एक गहरी निगाह डाली और बोला, "मैं कल साढ़े पांच बजे ही अंधेरी पहुंच गया था। उस समय तक शोभा और चौधरी साहब का कोई मेहमान नहीं आया था। मैंने मेज, बर्तन और कुर्सियों को सजाने में उनका हाथ बंटाया। चौधरी साहब असाधारण रूप से प्रसन्न थे। उन्होंने अपनी शादी की सालगिरह सिर्फ शोभा के साथ शादी करने के बाद मनानी शुरू की थी। मैं अनावश्यक विवरण सुनाकर आप लोगों को बोर नहीं करूंगा, कि मेहमान कैसे आए, उनका क्या स्वागत-सत्कार किया गया। रात के खाने से पहले शराब पीने वालों ने शराब पी और शर्बत पीने वालों ने शर्बत पिया। चुटकले हुए, शेर सुनाए गए। घरेलू और व्यावसायिक बातें हुईं। चौधरी साहब की पहली पत्नी से पैदा उनकी बेटी अंजना ने गीत सुनाए। उनकी सबने जी खोलकर प्रशंसा की। रात का खाना आरम्भ हुआ। चौधरी साहब ने राजनीति और व्यवसाय में फैले हुए भ्रष्टाचार और देश में तेजी से बढ़ती हुई अपराधों की गति की समीक्षा की। खाने के साथ-साथ वे ह्विस्की भी पीते रहे। खाना खत्म हो गया तो सबसे पहले मारवाड़ी सेठ चांदीराम कटारिया विदा हुए। उनके बाद सेठ सूरजनारायण शाहानी रवाना हुए। पत्रकार सुधीर मात्रे ने ब्रांडी का एक पेग लिया और फिर वह भी आज्ञा लेकर चला गया। इन लोगों ने मृगनयनी का नृत्य आरम्भ होने की प्रतीक्षा भी न की जो खाना खत्म होने के बाद शुरू होने वाला था। फिर बाद में इधर मृगनयनी का नृत्य समाप्त हुआ और उधर एक सजीला नौजवान वहां पहुंचा, जिसके आने पर चौधरी साहब की बहन उर्मिल की बांछें खिल गईं। उर्मिल ने हाथ के इशारे से उसे अपने पास बुला लिया। वह कसमसाता हुआ और हाथ जोड़कर सबको नमस्ते करता हुआ उर्मिल के पास जा बैठा। उर्मिल ने बहुत-सी चीजों से उसके लिए प्लेट भर दी और वह नौजवान खाने में व्यस्त हो गया। शोभा ने मुझे बताया कि उस नौजवान का नाम चन्द्रप्रकाश था। डाक्टरी की शिक्षा पूरी करने के बाद वह एक बड़े अस्पताल में ट्रेनिंग ले रहा था। कालेज में कभी उर्मिल के साथ पढ़ता रहा था। उर्मिल को शायद उससे प्रेम था। अब डाक्टर एन० अर्देशर, जो बीयर पीते रहे थे, बीयर की सातवीं बोतल खाली करने के बाद उठ खड़े हुए। उन्होंने शोभा और चौधरी साहब के दीर्घ जीवन और जीवन-भर सुखी रहने की दुआ की और चले गए। अब पार्टी में अंजना, उर्मिल, फोटोग्राफर कृष्णामूर्ति, चन्द्रप्रकाश, शोभा, मैं और मिसेज रक्षा शाहानी रह गए। मिसेज रक्षा शाहानी सेठ सूरजनारायण शाहानी की विधवा बेटी है। उसकी उम्र तीस साल की है, लेकिन जवानी है कि अब भी तूफान की तरह उस पर उमड़ी हुई है।"

अशोक ने कुछ रुककर सांस ली और एक बार फिर सब पर गहरी निगाह डालते हुए बोला, "आधे घंटे के बाद चन्द्रप्रकाश भी चला गया। वह जाना नहीं चाहता था, क्योंकि रक्षा शाहानी उससे घुल-मिलकर बातें करने लगी थी। लेकिन जब उर्मिल ने देखा कि चन्द्रप्रकाश उसकी ओर बिल्कुल ध्यान ही नहीं दे रहा, तो उसने यह कह-

कर चन्द्रप्रकाश को घर भेज दिया कि वह दूर से आया है और रात काफी अंधेरी है। इसलिए उसे जल्दी वापस चले जाना चाहिए। उर्मिल की इस हरकत पर रक्षा शाहानी बड़ी अर्थपूर्ण मुद्रा में मुस्कराई थी। चन्द्रप्रकाश के जाने के दस मिनट बाद वह भी चली गई। फोटोग्राफर कृष्णामूर्ति भी चला गया। चन्द्रप्रकाश के जाने के फौरन बाद रक्षा शाहानी का जाना उर्मिल के दिल में कांटे की तरह खटकने लगा। चौधरी साहब ज्यादा पी गए थे। वह अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे ऊंघने लगते थे, और गिरते-गिरते बचते थे। फिर वे भी उठकर खड़े हो गए। उस समय रात के ग्यारह बजे थे। शोभा ने उनको आराम करने की राय दी और चौधरी साहब ने उसकी यह राय फौरन मान ली। वह लड़खड़ाते हुए कदमों से अपने बेडरूम में चले गये। उर्मिल टहलती हुई बंगले के फाटक तक जा चुकी थी। शायद यह देखने के लिए कि चन्द्रप्रकाश बाहर खड़ा रक्षा शाहनी का इन्तजार तो नहीं करता रहा था। अंजना को भी नींद आ रही थी। वह किसी से कुछ कहे बिना ही अपने बेडरूम में चली गई। एकान्त होने पर शोभा ने मुझे बताता कि वह इस घर के वातावरण से ऊब गई है और इस पिंजड़े की तीलियां तोड़-कर कुछ दिनों के लिए मुक्त वातावरण में सांस लेना चाहती है। उस समय शोभा एक विचित्र मूड में थी। वह देर तक एक दुखी नारी की तरह बातें करती रही और तब चुप हुई जब उर्मिल दोबारा वहां वापस आ गई। उर्मिल के अचानक लौट आने पर शोभा कुछ घबरा गई थी। उसने उठते हुए कहा, 'मैं जरा देखकर आती हूं कि उनका बिस्तर भी किसी ने लगाया है या नहीं।'

" 'अच्छा तो भाभी, मैं चलती हूं।' उर्मिल ने कहा और लान में एक पेड़ के नीचे खड़ी अपनी कार की ओर बढ़ गई। उसकी कार का इन्जन स्टार्ट न हुआ। वह कोशिश करती रही। शोभा ऊपर गई और पन्द्रह मिनट बाद वापस आ गई। उसका चेहरा हल्दी की तरह पीला पड़ गया था। उसकी घिग्घी बंधी हुई थी। वह बड़ी मुश्किल से थूक निगलने की कोशिश कर रही थी। जैसे अपना बन्द गला खोलने के लिए जोर लगा रही हो। उसका समूचा बदन कांप रहा था। उर्मिल ने कार स्टार्ट करने की कोशिश में शायद अपनी भाभी की यह दशा देख ली थी। वह कार से उतर-कर हमारे पास आ गई।

" 'उनको लम्बे फल के चाकू से कत्ल कर दिया गया है। मैं ऊपर गई और मैंने उनके बेडरूम का दरवाजा खोला। वहां अंधेरा था। लेकिन खिड़की में से चांदनी आकर सारे कमरे में फैली हुई थी। मैं बाहर की तेज रोशनी में से अन्दर गई थी। इसलिए मैं उन्हें अच्छी तरह न देख पाई। वह एक आरामकुर्सी पर बैठे थे। मैंने पूछा, 'क्या आप अभी तक सोए नहीं ?' उन्होंने कोई उत्तर न दिया। उनको चुप देखकर मैंने लाइट का स्विच आन कर दिया। कमरे में उजाला होते ही मैं कांप उठी। मैंने उनकी ओर देखा तो लगा जैसे कोई मेरा कलेजा मसल रहा हो।'

"उर्मिल यह सुनकर चीखने ही वाली थी कि शोभा ने लपककर उसके मुंह पर हाथ रख दिया, 'क्या करती हो ? अभी नौकरों और अंजना को इस दुर्घटना की खबर नहीं होनी चाहिए।'

"उर्मिल संभल गई और हम सब चौधरी साहब के बेडरूम की ओर चल पड़े।

"बेडरूम में चौधरी हरिवंशराय आरामकुर्सी पर टांगें फैलाए बैठे थे। उनका सिर दाहिनी ओर ढुलक रहा था। आंखें अभी तक खुली हुई थीं, जिनसे अभी तक भय की छाया झांक रही थी। आरामकुर्सी खून से लथपथ थी। एक गहरा घाव उनके सीने पर था और दूसरा घाव उनकी गर्दन पर था। किसी ने उनकी श्वांस

नली काट दी थी। कुर्सी के पास गलीचे पर एक चाकू पड़ा था, जिसका फल पतला था, लेकिन चार इंच लम्बा था। वह चाकू खून से लिथड़ा हुआ था। उर्मिल वह चाकू उठाने के लिए झुकी तो मैंने उसे ऐसा करने से रोक दिया, 'इस चाकू पर हत्यारे की उंगलियों के निशान हो सकते हैं।' उर्मिल अपने भाई को उस हालत में न देख सकी और लाश की ओर पीठ करके खड़ी हो गई। उसने अपने बैग से रुमाल निकालकर अपनी आंखों पर रख लिया और सिसकियां भरकर रोने लगी। उसका सारा शरीर हिल रहा था। शोभा ने उसके पास जाकर उसके कंधे पर हाथ रख दिया,–'उर्मिल, तुम घर जाओ और अंजना को भी किसी तरह मनाकर अपने साथ ले जाओ। मैं पुलिस को फोन करती हूं।'

"उर्मिल अपनी आंखें पोंछती हुई बाहर चली गई, मैं और शोभा चौधरी साहब के बेडरूम में रह गए। मैंने बेडरूम और बाथरूम की खिड़कियों को अच्छी तरह देखा। बेडरूम की खिड़कियां अन्दर से बन्द थीं। लेकिन बाथरूम की खिड़की खुली थी और उस खिड़की में भी ऐसा कोई निशान नहीं था जिससे किसी के अन्दर आने का पता चलता। शोभा ने पुलिस को फोन किया। जब वह फोन करके दोबारा मेरे पास आई तो नीचे कार स्टार्ट होने की आवाज सुनाई दी।

" 'उर्मिल शायद अंजना को अपने साथ ले जा रही है।' शोभा ने बेडरूम की खिड़की में से नीचे झांकते हुए कहा। फिर मुड़कर मेरी ओर रुखी-फीकी निगाहों से देखा और आदेशात्मक स्वर में मुझसे बोली, 'अशोक, बैठ जाओ।' मैं कुर्सी पर बैठ गया तो शोभा ने कहा, 'अशोक, मैंने उर्मिल के सामने एक बात जान-बूझकर नहीं बताई थी।' वह मेरे सामने वाली एक कुर्सी पर बैठ चुकी थी।

" 'कौन-सी बात ?'

" 'जब मैं बेडरूम में पहुंची थी और मैंने अंधेरे में चौधरी साहब से यह सवाल किया था—क्या आप अभी तक सोए नहीं, तो एक आदमी ने मेरे सवाल का जवाब दिया था—सो चुके हैं, आप जाकर आराम कीजिए।'

"मैं हैरान रह गया।

" 'क्या वह आवाज जानी-पहचानी थी ?' मैंने शोभा से पूछा।

" 'हां।' शोभा ने उत्तर दिया।

" 'वह आदमी कहां से बोल रहा था ?'

" 'बाथरूम से।'

" 'क्या उसने और कुछ नहीं कहा था ?'

" 'उसने एक बात और कही—मैं गुसलखाने के दरवाजे से बाहर जा रहा हूं। चौधरी साहब की नींद में खलल मत डालिए।—इसके बाद मैंने बाथरूम का दरवाजा खुलने की आवाज सुनी।'

" 'क्या तुमने बाथरूम में जाकर यह देखने की कोशिश नहीं की कि वह कौन था ?' मैंने कहा।

" 'इसकी जरूरत ही नहीं थी', शोभा ने मेरे सवाल का जवाब दिया, 'क्योंकि आवाज जानी-पहचानी थी। बाथरूम से तुम बोल रहे थे अशोक !'

" 'क्या तुम्हें गलतफहमी नहीं हुई ? क्या सचमुच वह आवाज मेरी थी ?'

" 'क्या मतलब ? क्या तुम उस समय बाथरूम में नहीं थे ?' शोभा ने आश्चर्य से पूछा।

" 'मैं तो ऊपर आया ही नहीं।'

" 'ओह अशोक, मैं उस समय अपने होश-हवास इस बुरी तरह खो बैठी थी कि आवाज अच्छी तरह पहचान पाना मेरे लिए कठिन था। लेकिन मैं विश्वासपूर्वक

कह सकती हूं कि वह तुम्हारी ही आवाज थी। और मैं न जाने क्या सोचती रही थी मैं सोच रही थी कि अशोक मेरे अतीत और वर्तमान से भली भांति परिचित है। वर्तमान जीवन से मुक्ति दिलाने के लिए उसने यह साहसि : कदम उठाया है। कुछ दे के लिए तुम मुझे हीरो दिखाई देने लगे।'

"'तुमने वाथरूम से मेरी आवाज़ सुनी। तुम्हारे कहने के अनुसार मैं बाथरूम के दरवाजे से बाहर चला गया। मेरे चले जाने के बाद तुमने क्या किया ?' मैंने पूछा।

"'मैं अंजना के कमरे में यह देखने के लिए गई कि वह सो रही है या जाग रही है। अगर वह जाग रही होती तो मैं उससे यह पूछना चाहती थी कि उसने अपने पित के कमरे में कोई आहट, कोई चीख, कोई कराह या कोई और आवाज तो नहीं सुनी थी। लेकिन अंजना अपने विस्तर पर मौजूद नहीं थी। मैं अंजना को अच्छी तरह जानती हूं। वह एक अजीब लड़की है। बारह बरस की उम्र में ही उस पर बहुत ही अजीव मूड के दौरे पड़ने लगे हैं। मां का प्यार न मिल पाने के कारण उसके जीवन में एक ऐसी पीड़ा घर कर गई है जो समय से पहले विचारों को प्रौढ़ बना देती है। वह अक्सर रातों को उठकर बाग में चली जाया करती है। मेरा अनुमान ठीक निकला मैं उसके कमरे के दरवाजे से बाहर निकल रही थी कि मैंने उसे आते हुए देखा। मैं रुक गई। वह पास आई तो मैंने उससे पूछा—अंजना, तुम कहां थीं ?—उसने उत्तर दिया—बाग में थी। मैंने झल्लाकर पूछा—तुम बाग में जाकर क्या करती हो ?—अंजना ने भी झल्लाकर ही उत्तर दिया—परियों के राजकुमार का इन्तजार किया करती हूं।—मैं पल-भर के लिए उसका उत्तर सुनकर हैरान रह गई।—क्या वह राजकुमार आया था ?—मेरे इस प्रश्न पर अंजना ने मेरी ओर उपेक्षा से देखा और बोली—राजकुमार तो नहीं आया, लेकिन कोई आया जरूर।—मैं सोचने लगी। मैंने फिर पूछा—वह कौन था ?—अंजना उत्तर देने से पहले कुछ देर रुकी, फिर बोली —वह पिता जी के कमरे से निकलकर बाहर आ रहा था। उसने अपना हैट अपनी आंखों तक खिसका रखा था। वह एक पेड़ के पीछे छिपकर खड़ा हो गया था। मैंने पूछा : आप छिपकर क्यों खड़े हो गए हैं अंकल ? वह बोला : अंजना देवी, मैं ... हूं। इस हालत में तुम्हारे सामने आना ठीक नहीं। वह आदमी आगे बढ़ ... ने उससे पूछा : आप कौन हैं ? वह आदमी हंसा और बोला : क्या तुम अपने ... अंकल को नहीं पहचानती हो ? यह कहकर वह तेज-तेज कदम उठाता हुआ ... के बड़े फाटक से बाहर चला गया और मैं ऊपर चली आई।

"'अंजना की यह बात सुनकर मेरा रहा-सहा संदेह भी जाता रहा। मुझे विश्वास हो गया कि बाथरूम में तुम ही थे। मैंने अंजना से एक प्रश्न और किया—क्या तुम ठीक कह रही हो अंजना ? क्या उस आदमी का कद और लिबास अशोक अंकल से मिलता था ?' अंजना ने संक्षिप्त उत्तर दिया—चांदनी में ज्यादा साफ दिखाई नहीं दे रहा था। वह आदमी पेड़ों और झाड़ियों की आड़ लेता हुआ वापस जा रहा था। मैं कुछ कह नहीं सकती।—अब मैंने अंजना से आखिरी सवाल पूछा —क्या उसकी आवाज सचमुच अशोक अंकल जैसी थी ?—अंजना ने स्वीकृति में सिर हिलाया और पलंग पर चढ़कर लेट गई। मैं समझती हूं कि उर्मिल जब उसके पास गई होगी तो वह जाग रही होगी।' यह कहकर शोभा अपनी उंगलियों से साड़ी का पल्लू मरोड़ने लगी।

"मैं अपनी जगह पर बर्फ की तरह जम गया। चौधरी साहब की हत्या में गहरी साजिश से काम लिया गया था। हत्यारे ने मुझे हत्यारा सिद्ध करने में कोई कसर न उठा रखी थी।" अशोक ने अपने माथे पर आई हुई पसीने की बूंदें हथेली से

पोंछते हुए कहा। सभी खामोश थे, हर कोई गहरे सोच में डूबा हुआ था।"

भयानक नाटक

मैनेजर ने सिगरेट सुलगाया और एक लम्बा कश लगाते हुए कहा, "पुलिस वहां पहुंच गई और तुम्हारे लिए एक भयानक नाटक शुरू हो गया !"

'जी हां, पुलिस इन्स्पेक्टर मैथ्यूज अपने साथ तीन कारों में अपने महकमे के लोगों को लिए हुए वहां पहुंच गए। मैंने और शोभा ने उनका स्वागत किया। नौकरानियां और नौकर सहमे हुए थे और खामोशी से अपना काम कर रहे थे। इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने हम दोनों की ओर ध्यान से देखा।"

" 'यह शायद घर के ही किसी नौकर का काम हो।' इंस्पेक्टर ने कहा और फिर उसने मेरी ओर ध्यान से देखते हुए कहा, 'आपको तकलीफ तो होगी। आप इस पार्टी का सारा किस्सा मुझे सुनाइए।'

"मैंने सारी कहानी उसे सुना दी, लेकिन इस कहानी का वह हिस्सा नहीं सुनाया जिसमें दो बार किसी ने मेरी आवाज में शोभा और अंजना से बातें की थीं।

"मैं इंस्पेक्टर मैथ्यूज को सारा किस्सा सुना चुका तो उसने सोचते हुए कहा, 'आपके किस्से से एक बात तो बिल्कुल निश्चित हो जाती है कि हत्या की इस घटना में किसी औरत का हाथ नहीं है, क्योंकि चौधरी साहब हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति थे, एक औरत के लिए मुमकिन नहीं था कि वह उन पर दो वार कर सकती, और इतने भरपूर वार कर सकती। उनको किसी ताकतवर हत्यारे ने मारा है। यही कारण है कि हत्यारे से हाथापाई का कोई निशान नहीं दिखाई दे रहा। क्या चौधरी साहब बीमार थे ?'

" 'नहीं,' मैंने उत्तर दिया, जरा ज्यादा पी गए थे।'

" 'क्या आप उनको इस कमरे तक छोड़ने आए थे ?'

" 'नहीं, वह इतनी ज्यादा पिए हुए नहीं थे।"

" 'आप मुझे मेहमानों की लिस्ट और उनके पते दे दीजिए।'

"मैंने इंस्पेक्टर के आदेश का तुरन्त पालन किया। इंस्पेक्टर ने लिस्ट पर नजर दौड़ाई और बोला, 'सेठ सूरजनारायण शाहानी। इसका मतलब तो यह हुआ कि मेहमानों में एक बड़ा आदमी भी शामिल था। सेठ शाहानी हमारे देश का सबसे बड़ा फिल्म डिस्टीब्यूटर है। और यह मारवाड़ी सेठ चांदीराम कटारिया—एक सुप्रसिद्ध उद्योगपति। पार्टी में अच्छे लोग शामिल हुए थे। मिसेज रक्षा शाहानी। क्या यह सेठ शाहानी की पत्नी है ?'

" 'नहीं, उनकी विधवा बेटी है।'

" 'फिर तो केवल आप ही रह जाते हैं। मैं एक व्यक्तिगत प्रश्न पूछना चाहता हूं। आप इस परिवार में किसके मित्र थे ? चौधरी साहब के या इनके ?' इंस्पेक्टर ने शोभा की ओर इशारा किया।

" 'मैं इन दोनों का ही मित्र था।' मैंने उत्तर दिया।

"मैं इंस्पेक्टर के इस सवाल पर घबरा गया था, लेकिन झूठ बोलना नहीं चाहता था। मैंने कहा, 'वैसे मैं इनको बचपन से जानता हूं। मैं इनका दूर का रिश्तेदार भी हूं।' मैंने शोभा की ओर इशारा करते हुए उत्तर दिया।

" 'आपने सारी बात सुनाते हुए अभी-अभी मुझे बताया था कि ये चौधरी साहब की दूसरी पत्नी हैं। क्या चौधरी साहब के कोई सन्तान नहीं ?'

" 'पहली पत्नी से उनकी एक बेटी है—अंजना।'

" 'क्या उसे मालूम है कि उसके पिता की हत्या कर दी गई है ?'

" 'नहीं, मैंने इस डर से कि उसे जबरदस्त सदमा पहुंचेगा, उसे उर्मिल के साथ भेज दिया था।' शोभा ने कहा।

'इंस्पेक्टर ने शोभा की ओर देखते हुए कहा, 'क्या आप अपने वर्तमान जीवन से संतुष्ट हैं ?"

"शोभा इस प्रश्न का उत्तर देते हुए हिचकिचाई। मेरा मन कांप रहा था, क्योंकि सकी यह हिचकिचाहट उसके मन के भेद को बता रही थी। उसने कुछ देर चिन्तित हने के बाद कहा, 'नहीं, मैं अपने वर्तमान जीवन से संतुष्ट नहीं हूं।'

" 'हूं।' इंस्पेक्टर मैथ्यूज ने कहा, 'फिर मामला बड़ा टेढ़ा हो जाता है।' 'इसके ाद उसने मुझसे कहा, 'आपको मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलना होगा।'

" 'क्या आप मुझे चौधरी साहब का हत्यारा समझ रहे हैं ?' मैंने हिम्मत से ाम लेते हुए पूछा।

" 'मेरे लिए ऐसा समझने के सिवा और कोई चारा नहीं।'

"अब तो मेरे होश उड़ गए। मैंने फौरन जेब से अपना आइडेण्टिटी कार्ड नकाला और इंस्पेक्टर की ओर बढ़ा दिया। वह उसे उलट-पलटकर देखता रहा।

" 'मैं मेजर बलवन्त का असिस्टैण्ट हूं,' मैंने कहा। आपके नाम ने जादू का ाम किया। इंस्पेक्टर मैथ्यूज ने मेरा आइडेण्टिटी कार्ड मुझे वापस दे दिया और ोला, 'मेजर बलवन्त एक बहुत ही कुशल जासूस हैं।' और फिर न जाने उसे क्या ायाल आया कि उसकी भवें तन गईं और उसने कुछ रूखे स्वर में कहा, 'लेकिन इसका ह मतलब नहीं है कि मेजर बलवन्त का असिस्टैण्ट हत्यारा नहीं हो सकता। मैं ापको इस शर्त पर छोड़ रहा हूं कि आप मेरी अनुमति के बिना इस शहर से कहीं ाहर न जाएंगे और जब आपको बुलाया जाएगा, आप हाजिर हो जाएंगे।' इसके बाद सने शोभा से कहा, 'आपको भी कुछ दिनों तक इसी शहर और इसी घर में रहना ोगा।'

"इतने में पुलिस डाक्टर ने पास आकर कहा, 'सीने का घाव मृत्यु के कारण ाद्ध नहीं हुआ था इसलिए हत्यारे को सांस की नली काटनी पड़ी। पहला वार ीने पर किया गया और दूसरा गर्दन पर।'

"फिंगर-प्रिंट एक्सपर्ट भी अपना काम समाप्त कर चुके थे। उनमें से एक ने हा, 'चाकू पर उंगलियों के निशान मौजूद नहीं हैं। खिड़कियों की चौखटें और ीशे भी साफ हैं। गुसलखाने में पैरों के निशान नहीं हैं। दरवाजे तक एक तौलिए ैसे कपड़े की रगड़ का निशान मिलता है। जिससे स्पष्ट है कि हत्यारे ने अपने पैरों ; नीचे तौलिया बिछाया और घसीटता हुआ दरवाजे तक पहुंचा। गुसलखाने के दर-ाजे के बाहर पंजों के मद्धिम निशान हैं। इससे अनुमान लगाना कठिन है कि वे किस रह के जूतों के पंजों के निशान हैं। गलीचे पर पैरों के जो निशान मिले हैं उनके ोटोग्राफ्स ले लिए गए हैं।' यह कहकर फिंगर-प्रिंट एक्सपर्ट चौधरी साहब और ोभा के जूतों की ओर देखने लगा। उसने कुछ सोचते हुए कहा, 'मैं समझता हूं कि ो निशान लिए गए हैं वे इनके जूतों के निशान हैं।'

" 'इसका मतलब तो यह हुआ कि इन तीनों के सिवा कमरे में और कोई नहीं ाया था ?' इंस्पेक्टर मैथ्यूज ने कहा।

पत्नी गायब हो गई

मेजर कमरे में छाई गहरी खामोशी पर चौंक उठा। उसके विचारों का सिलसिला टूट गया। उसने बड़ी गम्भीरता से कहा, "अशोक, तुम अभी तक अनुभवहीन हो। तुम शोभा के घर से चले आए। क्यों ? तुम्हें वहीं रहना चाहिए था। क्या तुम्हें यह बात नहीं सूझी कि हत्यारे शोभा पर भी आक्रमण कर सकते हैं ?"

"हत्यारे...!" विनोद मल्होत्रा ने चौंकते हुए पूछा, "क्या इस घटना में एक से अधिक लोगों का हाथ है ?"

"निश्चय ही। इस सम्बन्ध में डाक्टर की रिपोर्ट बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। पुलिस डाक्टर ने बताया था कि पहला वार घातक सिद्ध नहीं हुआ था इसलिए चाकू से चौधरी साहब की सांस की नली काटनी बहुत जरूरी थी। इसके अलावा हाथापाई के चिह्न भी नहीं दिखाई दे रहे थे। जानते हो इसका क्या मतलब है ? चौधरी साहब को दो आदमियों ने मिलकर मारा है। उन दोनों के पास चाकू थे। वे दोनों काफी समझदार थे। उन दोनों को मालूम था कि चाकू से हमला करने में क्या-क्या कठिनाइयां पैदा हो सकती हैं। आपको एक बात याद रखनी चाहिए कि कोई भी आदमी चाकू चलाने में कितना ही कुशल क्यों न हो, उसका वार कितना ही भरपूर क्यों न हो, जिस आदमी पर हमला किया जाता है वह चाकू का जख्म खाने के बाद जरूर चीख सकता है। वह उसी समय मरता भी नहीं है। वे दोनों इन बातों को जानते थे कि चौधरी साहब की चीख को दबाने के लिए एक ही समय में दो वार करने होंगे। मामला काफी गम्भीर है। मैं इंस्पेक्टर मैथ्यूज के वहां पहुंचने से पहले ही पहुंच जाना चाहता हूं।" मेजर ने कुर्सी पर से उठते हुए कहा।

"क्यों ?"

"इसलिए कि मुझे शोभा को कहीं भेजना होगा। अशोक, तुम शोभा को फोन करो कि वह सकुशल तो है न।"

अशोक पीछे के कमरे में फोन करने के लिए चला गया।

"आप शोभा को क्यों भेजना चाहते हैं ?" विनोद मल्होत्रा ने पूछा।

"मुझे विश्वास है कि हत्यारे शोभा को अपने रास्ते से हटाना चाहते हैं। शोभा को उनके चंगुल से बचाने और पुलिस के दुर्व्यवहार से सुरक्षित रखने का एक ही तरीका है कि उसे कुछ दिनों के लिए गायब कर दिया जाए।"

तभी अशोक ने आकर सूचना दी, "शोभा सकुशल है।"

"हत्यारों ने रात को दूसरे हमले की कोशिश नहीं की। वे अपने पहले कारनामे की प्रतिक्रिया देखना चाहते हैं।" मेजर ने कहा, "मैं कपड़े बदलकर आता हूं।"

अंधेरी में चौधरी हरिवंशराय का बंगला नवीन स्थापत्य कला का एक उदाहरण था। वहां सुख-सुविधा की हर चीज मौजूद थी। शोभा अशोक के साथ एक अजनबी व्यक्ति और एक सुन्दर और आकर्षक युवती को देखकर हैरान रह गई। फिर भी उसने बड़े खुले हृदय से उसका स्वागत किया।

"ये मेजर बलवन्त हैं, और ये सोनिया हैं, मेरे सहयोगी मेजर साहब की असिस्टेंट।" अशोक ने उनका परिचय कराते हुए कहा।

शोभा ने अशोक से मेजर बलवन्त की बहुत-सी बातें सुन रखी थीं। वह उनको ड्राइंगरूम में ले गई। जब वे बैठ चुके तो मेजर ने शोभा की ओर देखते हुए कहा, "आप बीमार हैं ?"

"नहीं तो !" शोभा ने कसमसाते हुए कहा।

"नहीं, आप बीमार हैं। सख्त बीमार। आपको तुरन्त किसी हास्पिटल में एडमीशन ले लेना चाहिए।" मेजर ने कहा।

शोभा फटी-फटी आंखों से मेजर की ओर देखने लगी। अशोक ने मुस्कराते हुए शोभा की ओर देखा और बोला, "तुम मेजर साहब का मतलब नहीं समझीं। उनका बात करने का ढंग हमेशा निराला होता है। मेजर साहब चाहते हैं कि अगर तुम बीमार नहीं हो, तो भी बीमार बन जाओ और किसी अस्पताल में एडमीशन ले लो।"

"अशोक, तुम मेरा मतलब समझ गए हो। लेकिन मैं इनको किसी हास्पिटल में एडमीशन लेने की राय नहीं दे रहा हूं। मैं चाहता हूं कि ये किसी प्राइवेट डाक्टर के सेनीटोरियम में एडमिट हो जाएं।" मेजर ने कहा, "क्या इनका कोई फैमिली डाक्टर नहीं है?"

"है, डाक्टर अर्देशर।" अशोक ने उत्तर दिया।

"सोनिया, तुम इनको डाक्टर अर्देशर के पास ले जाओ।" और फिर मेजर ने शोभा की ओर मुड़कर कहा, "आप कम से कम सात दिन के लिए अपने कपड़े अपने साथ में ले जाइए। सात दिन तक आप वहीं रहिए। यह मेरा प्राइवेट फोन नम्बर है।" मेजर ने अपनी जेब से कार्ड निकालकर शोभा के हाथ में दे दिया। "आप घबराइए नहीं। आपके नौकरों को बता दिया जाएगा कि आप सात दिन के बाद आएंगी।"

और फिर पन्द्रह मिनट बाद शोभा और सोनिया वहां से चली गईं। ठीक साढ़े ग्यारह बजे इंस्पेक्टर मैथ्यूज अपने दो मातहत अफसरों के साथ वहां पहुंच गया। उसने अशोक के साथ मेजर बलवन्त को देखा तो एक पल के लिए ठिठककर रह गया।

"हैलो मेजर! देखिए मुलाकात की कैसी-कैसी राहें निकल आती हैं?" इंस्पेक्टर ने कहा।

"जी हां, शैतान तो सौ मील का चक्कर काटकर भी मिल जाता है।" मेजर ने इंस्पेक्टर का हाथ ज़ोर से दबाते हुए कहा।

अशोक और इंस्पेक्टर के दोनों मातहत अफसर मेजर के इस व्यंग्य पर दबे-दबे मुस्कराने लगे। इन्स्पेक्टर थोड़ा-सा खिसियाना हो गया।

इन्स्पेक्टर चारों ओर नजर डालकर बोला, "मिसेज शोभा कहां हैं?"

"वह तो अचानक बीमार हो गईं। मेरी असिस्टैण्ट सोनिया उनको डाक्टर अर्देशर के पैराडाइज नर्सिंग होम में ले गई है। मिसेज शोभा एक हफ्ते तक वहां रहेंगी।"

"चावला, तुम चौधरी साहब के बेडरूम से डाक्टर अर्देशर के यहां फोन करो।" इंस्पेक्टर ने कहा, "डाक्टर अर्देशर से पूछो कि क्या मिसेज शोभा वहां पहुंच चुकी हैं।"

सब-इन्स्पेक्टर चावला फौरन दरवाजे की ओर बढ़ा। "रात जो मेहमान यहां जमा हुए थे, उनमें से किसी को चौधरी साहब की हत्या की सूचना तो नहीं दी गई?" इंस्पेक्टर ने अशोक से पूछा।

"किसी को नहीं।" अशोक ने उत्तर दिया।

"मैंने केवल सेठ सूरजनारायण शाहानी को यह खबर दी है। दो-एक अखबारों को भी इस दुर्घटना की सूचना भेज दी गई है। मेरा खयाल है कि शाम के अखबारों में यह खबर एक खास खबर के रूप में प्रकाशित कर दी जाएगी।"

बाहर कदमों की आहट सुनाई दी और उसके बाद किसी ने दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक दी।

पचास वर्ष के एक व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश किया। उसने एक शानदार सूट पहन रखा था। उसके चेहरे पर धन-सम्पन्नता से पैदा होने वाली रौनक थी। अशोक

ने पहचान लिया। वह सेठ सूरजनारायण शाहानी थे। उसने अपना सिर जरा-सा झुकाकर सबको नमस्ते की और फिर सब पर एक नजर डालते हुए कहा, "मैं इन्स्पेक्टर मैथ्यूज से मिलना चाहता हूं।"

"फर्माइए।" इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने कहा और सेठ को सोफे पर बैठ जाने का इशारा किया।

सेठ ने जेब से रूमाल निकालकर अपना पसीना पोंछा और कहा, "आज सुबह आपने मुझे फोन किया था?"

"जी हां।"

"मैं आपके प्रश्नों के लिखित उत्तर लाया हूं। मैंने थाने में फोन किया था। वहां से मुझे पता चला कि आप यहां आए हुए हैं। वैसे भी मुझे यहां आना ही था। मिसेज शोभा कहां हैं?" सेठ ने अशोक से पूछा।

"वह अचानक बीमार हो गई थीं। उनको डाक्टर अर्देशर के नर्सिंग होम में एडमिट करा दिया है।"

"कैसी दुर्घटना हुई है! सुनते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। और मिसेज शोभा का भाग्य देखिए। ठीक उस दिन विधवा हुई जिस दिन उनकी शादी की सालगिरह मनाई गई।" सेठ ने जेब में हाथ डाला और एक कागज निकालकर इंस्पेक्टर मैथ्यूज के सामने रख दिया और फिर कहा, "कल रात मैं यहां से पौने दस बजे चला गया था। सीधा अपनी फ़र्म के वकील के पास पहुंचा था—रामेश्वर देसाई, बार-एट-ला के पास। उसे अपने साथ अपने बंगले पर ले आया था। रात के दो बजे तक हम फर्म-सम्बन्धी मामलों पर विचार-विनिमय करते रहे। मैं रात के दस बजे से दो बजे तक अपने बंगले पर था, जिसे रामेश्वर देसाई ने प्रमाणित किया है। चौधरी साहब मेरे मित्रों में थे। उनके साथ मेरी मित्रता 'एवरग्रीन क्लब' में हुई थी। वे ब्रिज बहुत अच्छी खेलते थे और मोटा दांव लगाते थे। मैं भी ब्रिज का शौकीन हूं। इसलिए उनके साथ मेरी गहरी छनती थी। हममें पैसे के लेन-देन का कोई रिश्ता नहीं था। मैं उनकी पारिवारिक स्थिति से बहुत कम परिचित हूं।"

"क्या आपकी बेटी आपके पास ही रहती हैं?" मेजर ने पूछा।

"नहीं, वह अपने स्वर्गीय पति के बंगले में रहती है।"

"क्या अपने स्वर्गीय पति के रिश्तेदारों के साथ?" मेजर ने पूछा।

"नहीं, रक्षा अकेली रहती है। मेरी बेटी मिस उर्मिल की गहरी सहेली है। अच्छा तो अब मैं चलता हूं। मुझे मिस उर्मिल के यहां शोक प्रकट करने जाना है।" सेठ शाहानी ने उठते हुए अपने लिखित उत्तर इन्स्पेक्टर मैथ्यूज के हवाले कर दिया।

सेठ शहानी को गए हुए अभी मुश्किल से दो मिनट हुए होंगे कि सोनिया ने कमरे में प्रवेश किया। इन्स्पेक्टर ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा। इससे पहले कि वह कोई प्रश्न करता, मेजर ने अपने दाहिने हाथ की दो उंगलियां अपने माथे पर बजाई। यह एक गुप्त संकेत था। सोनिया इस संकेत का अर्थ जानती थी। वह उल्टे पांव वापस चली गई।

"यह महिला कौन थीं?" इन्स्पेक्टर ने पूछा।

"मेरी असिस्टैण्ट सोनिया थी।"

"सोनिया आई और वापस चली गई?" इंस्पेक्टर ने कहा।

"वह शायद कोई चीज भूल आई होगी।"

तभी सब-इंस्पेक्टर चावला ने आकर बताया कि मिसेज शोभा सकुशल डाक्टर अर्देशर के नर्सिंग होम में पहुंच चुकी हैं। इतना कहने के बाद सब-इंस्पेक्टर चावला ने अपने उच्चाधिकारी की ओर इस तरह देखा जैसे वह कोई महत्त्वपूर्ण बात कहना

चाहता हो।

"तुमने फोन करने में देर लगा दी।" इन्स्पेक्टर ने कहा।

"मैं फौन करने के बाद जरा बाग में चला गया था। वहां मुझे एक बहुत ही काम की चीज मिली है।"

"वह क्या ?"

सब-इंस्पेक्टर चावला ने जेब में हाथ डालकर एक चाकू निकाला जिसका फल खून से सना हुआ था। उसे बढ़ाते हुए चावला ने कहा, "यह मुझे बाग में एक पेड़ के नीचे पड़ा हुआ मिला है।"

अशोक उस चाकू की ओर आंखें फाड़-फाड़कर देखने लगा। मेजर ने उसे ऐसा करते हुए देख लिया, लेकिन चुप रहा।

"दूसरा चाकू···क्या हत्यारे ने दो वार करने के लिए दो चाकू इस्तेमाल किए ?" चाकू ध्यान से देखते हुए इंस्पेक्टर ने कहा। अचानक वह चौंक पड़ा। वह चाकू के लकड़ी के दस्ते पर खुदा हुआ नाम पढ़ रहा था। वह मुस्कराया और उसने चाकू अशोक की ओर बढ़ाते हुए कहा, 'जरा देखिए यह चाकू आप ही का है न ?"

अशोक ने कांपते हुए हाथों से वह चाकू पकड़ लिया और बहुत ही धीमे स्वर में बोला, "जी हां, यह चाकू मेरा ही है।"

"फिर मैंने कल रात आपको छोड़कर भारी भूल की।"

"यह खून में सना क्यों है ? और बाग में पेड़ के नीचे कैसे पहुंच गया ?" मेजर ने नया सवाल किया।

"मुझे सारी बात याद आ गई। मेहमानों के लिए एक कुर्सी कम पड़ गई थी, इस घर में एक कुर्सी थी तो, लेकिन उसको एक टांग टूटी हुई थी। मैंने एक रस्सी काटी थी जिससे कुर्सी की टांग बांध दी गई थी। फिर मैं यह चाकू वहीं भूल गया था। किसी ने उठा लिया होगा।"

"मुझे इस कहानी पर विश्वास नहीं है." इंस्पेक्टर ने कहा, "मुझे और किसी सबूत की जरूरत नहीं। इस चाकू पर उंगलियों के निशान साबित कर देंगे कि हत्यारा कौन है।"

"इंस्पेक्टर साहब, आप भूल रहे हैं कि उंगलियों के निशानों से अक्सर भ्रम हो जाता है। इस चाकू पर निश्चय ही अशोक की उंगलियों के निशान होंगे; लेकिन चाकू पर अशोक की उंगलियों के निशान होने से ही अशोक को अपराधी नहीं कहा जा सकता।"

"मेजर साहब, मैंने भी एक मुद्दत पुलिस के महकमे में गुजारी है। आप यह तो मानते हैं कि हत्या की हर घटना के पीछे एक उद्देश्य होता है। मैं समझता हूं कि अशोक के पास चौधरी साहब की हत्या करने का सबसे बड़ा उद्देश्य था। अशोक मिसेज शोभा के मित्र हैं और मैंने जो बातें मालूम की हैं उनसे स्पष्ट हो जाता है कि मिसेज शोभा अपने वर्तमान जीवन से बिल्कुल सन्तुष्ट न थीं। क्षमा कीजिएगा, मुझे अशोक को अपने साथ ले जाना पड़ेगा।"

मेजर कुछ सोचने लगा। फिर कुछ देर बाद बोला, "इंस्पेक्टर साहब, क्या आप मुझपर विश्वास करते हैं ?"

"जरूर करता हूं।"

"पहले तो मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि अशोक मेरी नजर में बिल्कुल बेगुनाह है। अगर आप यह समझते हैं कि प्रेम के हाथों विवश होकर आदमी बड़े से बड़ा अपराध करने पर उतारू हो जाता है; तो मैं आपके इस विचार का समर्थन नहीं करूंगा। आप मेरी खातिर इतना कीजिए कि अशोक को चार दिन के लिए आजाद

रहने की मोहलत दे दीजिए। मैं इस केस को सुलझाने का निश्चय कर चुका हूं। अगर चार दिन के बाद अशोक ही हत्यारा निकला, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं खुद इसे आपके पास ले आऊंगा।"

इन्स्पेक्टर मैथ्यूज कुछ सोचने लगा। उसके बाद बोला, "मैं चार दिन की मोहलत देने को तैयार हूं। लेकिन आप यह बताइए कि इस बात से आपका अभिप्राय क्या था कि इस नये चाकू पर अशोक की ही उंगलियों के निशान होंगे।"

"यह एक सीधी-सी बात हैं। हत्यारे को एक सुनहरा अवसर मिल गया। वह इस चाकू के मिलने पर बहुत खुश हुआ होगा। उसे एक निरपराध व्यक्ति को अपने स्थान पर हत्यारा प्रमाणित करने का एक आधार मिल गया था। उसने हाथ पर रूमाल लपेटकर चाकू उठाया और हाथ पर रूमाल लपेटकर ही चाकू इस्तेमाल किया होगा। जब उसने पहले चाकू पर अपनी उंगलियों के निशान नहीं छोड़े, तो वह इस नये चाकू पर अपनी उंगलियों के निशान कैसे छोड़ सकता था? उसने तो चाकू पर अशोक की उंगलियों के निशान ही रहने दिए होंगे।"

इन्स्पेक्टर अपने मातहत अफसरों के साथ चला गया तो मेजर ने अशोक से कहा, "कुछ ऐसा संयोग है कि इस समय तक तो तुम ही हत्यारे दिखाई देते हो।"

"मैं सच कहता हूं, कि मैं बिल्कुल निरपराध हूं।"

"मेरे लिए दोहरी मुसीबत पैदा हो गई है—हत्यारे को खोजना और तुम्हें निरपराध सिद्ध करना।" तभी बाहर कदमों की आहट सुनाई दी।

कमरे में जो आदमी आया वह अपनी शक्ल-सूरत और पहनावे से सौ फीसदी मारवाड़ी मालूम होता था। अशोक ने उसे पहचान लिया। वह सेठ चांदीराम कटारिया था जो कल पार्टी में आकर सबसे पहले वापस चला गया था। उसने अन्दर आकर हाथ जोड़कर नमस्ते की और अशोक की ओर देखकर पूछा, "क्या यहां श्रीमती रक्षा शाहानी नहीं आई?"

"नहीं।" अशोक ने उत्तर दिया।

"क्या गड़बड़ घोटाला है! वह कुमारी उर्मिल के यहां भी नहीं हैं। मेरा विश्वास था कि वे यहां होंगी। श्रीमती शोभा कहां हैं?"

"वह यहां नहीं हैं।"

मेजर समझ गया कि इस मारवाड़ी सेठ को चौधरी हरिवंशराय की हत्या की खबर नहीं है। सेठ कटारिया वापस जाने लगे तो मेजर ने कहा, "आपको शायद मालूम नहीं कि कल रात किसी ने चौधरी हरिवंशराय की हत्या कर दी।"

"ओह मेरे भगवान!" सेठ कटारिया ने अपने कानों पर हाथ रखते हुए कहा, "यह मैं क्या सुन रहा हूं···सत्यानाश हो गया!"

"सत्यानाश हो गया?" मेजर ने सेठ कटारिया का वाक्य दोहराया, "क्या कारोबार में उनसे आपका साझा था?"

"नहीं-नहीं, मेरा मतलब है कि बहुत बुरा हुआ। चौधरी साहब अभी जवान थे। चालीस साल की उम्र भी भला कोई उम्र होती है?"

"आप रक्षा शाहानी को बड़ी बेचैनी से खोज रहे हैं!" मेजर ने कहा, "क्या उनसे कोई जरूरी काम है आपको?"

"बहुत जरूरी काम है। अगर वे नहीं मिलीं तो लुटिया ही डूब जाएगी।" सेठ कटारिया ने कहा।

सेठ कटारिया ने चला गया तो मेजर ने कहा, "सेठ जरूरत से ज्यादा घबराया हुआ है। इसका पीछा किया जाता तो शायद कोई बात सामने आती। लेकिन मैं इस समय तुम्हें इसके पीछे भेज नहीं सकता, क्योंकि मैं तुम्हें एक दूसरी

जगह अपने साथ ले जाना चाहता हूं।"

कुछ पल खामोशी छाई रही। फिर बाहर हल्के कदमों की चाप सुनाई दी। दूसरे ही पल सोनिया ने कमरे में प्रवेश किया।

सोनिया ने सोफे पर बैठते हुए कहा, "मुझे चेम्बूर जाना पड़ा। सेठ शाहानी बड़ा रंगीनमिजाज है। वह वहां एक ऐंग्लो-इंडियन लड़की के पास गया जो अकेली रहती है। छोटा-सा बंगला है, लेकिन खूब सजा हुआ है। वह बंगला दूसरे बंगलों से अलग-थलग है। मैं तो उस ऐंग्लो इंडियन लड़की की बेशर्मी पर हैरान रह गई। सेठ ने जाकर दरवाजा खटखटाया। वह लड़की दरवाजा खोलने आई तो वह केवल नाइलोन का जांघिया और नाइलोन की ब्रेसरी पहने हुए थी। वह दरवाजे पर ही सेठ से लिपट गई। शायद उसने पी रखी थी। सेठ वहां सिर्फ आधे घण्टे ठहरा। मैंने वापसी पर भी उसका पीछा किया। चेम्बूर से वह सीधा अपने घर पहुंचा।"

"उस लड़की के पास इतनी थोड़ी देर रहने के लिए उसने सुबह-सवेरे इतना लम्बा सफर किया!" मेजर ने कहा, "मैं समझता हूं कि उस लड़की को कोई संदेश देने गया था।"

धमकी

मेजर ने पिछली रात की पार्टी में आनेवाले मेहमानों की लिस्ट निकाली। उसकी निगाह फोटोग्राफर कृष्णामूर्ति के नाम तक पहुंचकर रुक गई। मेजर ने लिस्ट पर से नजर उठाते हुए पूछा, अशोक, क्या तुम फोटोग्राफर कृष्णामूर्ति को जानते हो?"

"बहुत अच्छी तरह जानता हूं। वह चौधरी साहब की एडवर्टाइजिंग एजेन्सी के लिए काम करता था। ज्यादातर माडल औरतों के फोटो खींचता है।"

अचानक दरवाजा खुला और उर्मिल ने अंजना के साथ कमरे में प्रवेश किया। वह कमरे में कुछ अपरिचितों को देखकर ठिठक गई।

"आइए, आइए," अशोक ने कहा और फिर मेजर की ओर मुड़ते हुए बोला, "यह चौधरी साहब की बहन हैं कुमारी उर्मिल। और यह चौधरी साहब की बेटी अंजना हैं।"

"उर्मिल यह मेजर बलवन्त हैं, मेरे अफसर··· और ये हैं सोनिया, मेजर साहब की असिस्टैंण्ट।"

मेजर उठकर खड़ा हो गया था और उर्मिल की ओर देख रहा था। वह बहुत ही सुन्दर थी। अंजना कुछ देर तक इंतजार करती रही और फिर दौड़कर अशोक के पास आ गई और उसकी गोद में बैठते हुए बोली, "मम्मी कहां है, अंकल?"

"वे आराम करने के लिए गई हैं।"

"और पापा?" अंजना ने पूछा।

"उनके साथ एक दुर्घटना हो गई है।"

"दुर्घटना! बुआ भी यही बात कह रही हैं, मैं समझती हूं कि मेरे पापा मर गए हैं।"

"हां अंजना।" अशोक ने शोकपूर्ण स्वर में कहा।

अंजना रोने लगी। अशोक उसकी पीठ थपकता रहा। अंत में वह खामोश हो गई।

"अंजना बेटी, क्या तुम मेरे कुछ सवालों का जवाब दे सकती हो?" मेजर ने कहा। अंजना मेजर की ओर उत्सुकता से देखने लगी।

"क्या तुम कल रात की पार्टी से आते ही सो गई थीं ?"

"नहीं, मैं टहलने के लिए बाग में चली गई थी।"

"क्या तुमने बाग में किसीको देखा था ?"

"एक आदमी को, जो पापा के कमरे से बाहर आया था।"

"क्या तुमने उसे पहचान लिया था ?"

"नहीं, उसने मुझसे दो बातें कीं और सड़क पर चला गया। वह बहुत ही लम्बा और भारी-भरकम आदमी था। उसकी आवाज बिल्कुल अशोक अंकल जैसी थी।"

"अब मैं तुमसे और कुछ नहीं पूछूंगा। क्या तुम अपनी मम्मी से मिलना चाहती हो ? वह डाक्टर अर्देशर के नर्सिंग होम में हैं। अपनी बुआ के साथ चली जाओ। वह तुम्हें देखकर बहुत खुश होंगी।"

अंजना अशोक की गोद में से उठकर उर्मिल के पास पहुंच गई और बोली, "चलो बुआ, मुझे मम्मी के पास ले चलो।"

ठीक उसी समय ऊपर टेलीफोन की घण्टी बजने लगी। अशोक फौरन बाहर की ओर लपका। कुछ मिनट बाद उसने वापस आकर कहा, "मारवाड़ी सेठ चांदीराम कटारिया था।"

"क्या कहता था ?"

"कहता था कि उसे पता चला है कि अंधेरी पुलिस स्टेशन के इन्स्पेक्टर मैथ्यूज यहां आए हुए हैं। वह उनसे मिलने के लिए समय निश्चित करना चाहता था।" अशोक ने कहा, "मैंने उनसे कहा कि मैथ्यूज कुछ मिनटों में ही यहां पहुंचने वाले हैं। फौरन आ जाओ।"

आधे घण्टे के बाद सेठ कटारिया मेजर बलवन्त के सामने बैठा हुआ था। वह पहले उस जगह इन्स्पेक्टर मैथ्यूज को न पाकर बहुत ही निराश हुआ; लेकिन जब अशोक ने उसे बताया कि मेजर बलवन्त बहुत बड़े अफसर और बहुत बड़े जासूस हैं, तो वह जाते-जाते बैठ गया था और अब मेजर साहब से कह रहा था : "मैं कल रात की पार्टी के सिलसिले में इन्स्पेक्टर से मिलना चाहता हूं। मैं कल रात की पार्टी के बारे जो दो-चार बातें जानता हूं वह बताना चाहता हूं। मैंने तीन अजीब बातें देखी थीं। सबसे पहले तो एक बहुत ही लम्बे-तगड़े नौजवान को देखा था। दूसरे चौधरी साहब के और सेठ सूरजनारायण शाहानी के बीच झगड़ा हुआ था। और तीसरे यह कि मैंने चौधरी साहब से संक्षेप में बातचीत की थी।

"झगड़े से मेरा अभिप्राय यह नहीं कि वे आपस में गुंत्थमगुत्था हो गए। उनमें जबानी झगड़ा हुआ था।"

"यह किस समय की बात है ?"

"ग्यारह बजकर पांच मिनट की बात है।"

"लेकिन सेठ शाहानी तो दस बजे ही वापस चले गए थे ?"

"पहली बात तो यह कि मैंने हृष्ट-पुष्ट नौजवान को देखा।"

"आपने उस हृष्ट-पुष्ट नौजवान को कहां देखा ?"

"बाग में पीपल के नीचे।"

"आप बाग में क्या करने गए थे ?"

"बीड़ी पीना चाहता था, सिगरेट अच्छी नहीं लगती।"

"क्या उस नौजवान का कद बहुत ऊंचा था ?" मेजर ने पूछा।

"साढ़े छः फुट से भी ऊंचा होगा। मैंने उसे पहले कभी इस घर में नहीं देखा था। उसने अपना हैट अपनी आंखों पर डाल रखा था। इसलिए मैं उसका चेहरा देख

नहीं पाया।"

"क्या आपने उससे कोई बात की थी !"

"हां, मैंने बीड़ी सुलगाते हुए उससे कहा था, क्षमा कीजिएगा, मैं कुछ मिनट तक यहां रहूंगा।"

"उसने क्या उत्तर दिया था ?"

"उसने बस एक वाक्य कहा था, बड़े शौक से पीजिए और फिर वह टहलता हुआ दूर निकल गया था और मुझसे दूर जा खड़ा हुआ था। मैंने बीड़ी खत्म की और फिर पार्टी में लौट आया।"

"जहां तक मेरा खयाल है, कल रात आप लगभग साढ़े दस बजे पार्टी में से चले गए थे। फिर आप रात के ग्यारह बजे चौधरी साहब और सेठ शाहानी के बीच होने वाला झगड़ा कैसे सुन पाए ?"

"आप ठीक कहते हैं। मैं साढ़े दस बजे अपने घर चला गया था। वहां पहुंचकर मुझे फिर बीड़ी पीने की इच्छा हुई तो मैंने देखा कि मेरी जेब में लाइटर चांदी का था और अमेरिका से मेरे भतीजे की भेजी हुई सौगात था। उसके गुम हो जाने पर मैं बहुत परेशान हुआ। मुझे याद आया कि जब मैं चौधरी साहब के बाग में बीड़ी पीने के लिए गया था तो उस कद्दावर नौजवान को देखकर घबरा गया था। मैंने लाइटर जेब में डाला होगा, लेकिन वह जेब में पड़ा नहीं होगा, वहीं गिर गया होगा। मैं लाइटर ढूंढ़ने के लिए वापस वहां पहुंचा तो मेरे आश्चर्य की सीमा न रही कि वह कद्दावर नौजवान अभी भी वहीं एक पेड़ के नीचे खड़ा था। लाइटर मुझे मिल गया। मैं डर गया था। मैं बाग के रास्ते से वापस नहीं जाना चाहता था। इसलिए सीढ़ियां चढ़कर बंगले की पहली मंजिल पर पहुंच गया। सामने एक दरवाजा था जो खुला हुआ था। मैं उस दरवाजे से अन्दर चला गया। वह एक बाथरूम था। मैंने उस समय सेठ शाहानी और चौधरी साहब को झगड़ते हुए सुना। मैं बाथरूम में छिपकर खड़ा हो गया।"

"वे दोनों किस बात पर झगड़ रहे थे ?" मेजर ने पूछा।

"मैंने जो कुछ सुना वह आपको बताए देता हूं। सेठ शाहानी कह रहे थे 'मैं तुम्हें खबरदार किए देता हूं कि उसकी हालत बहुत ही नाजुक है, और वह बहुत ही बौखलाई हुई है। मैं सच कहता हूं कि अगर तुमने कोई इन्तजाम न किया तो तुम पर ऐसी मुसीबत आ जाएगी कि तुम जिन्दगी-भर पछताओगे।'

'और चौधरी साहब ने जवाब दिया था, 'तुम आखिर मुझसे चाहते क्या हो ? क्या मुझे बिल्कुल बरबाद कर देना चाहते हो ?'

" 'मैं तुमसे ज्यादा बहस करना नहीं चाहता। बस इतना समझ लो कि अगर तुमने कुछ न किया तो इसका परिणाम बहुत बुरा होगा।' सेठ शाहानी ने दोबारा धमकी दी।

" 'जो कदम उठाना चाहते हो, उठा लो और निकल जाओ।'

" 'तुम मुझे यहां से निकालने वाले कौन होते हो ? मैं अपनी मर्जी से ही यहां से जाऊंगा, तुम्हारे कहने से नहीं।' सेठ शाहानी कह रहे थे, 'तुमने इस वक्त बहुत ज्यादा शराब पी रखी है।'

'तो क्या हुआ ? मैं अपनी हिफाजत कर सकता हूं।'

" 'तुम अंधे हो रहे हो। तुम्हारा तो कुछ नहीं जाएगा, लेकिन अंजना और शोभा का तो ख्याल करो।'

"बस इसके बाद वे दोनों चुप हो गए।" सेठ कटारिया ने कहा, "फिर मैंने सेठ शाहानी को भीतरी दरवाजे से अंजना के कमरे में जाते हुए देखा। मैंने बाथरूम

की खिड़की से वाग पर नजर डाली। वह कद्दावर नौजवान जा चुका था। मैंने इत्मीनान की सांस ली। उस समय मेरे मन में न जाने क्या आया कि मैं चौधरी साहब के वेडरूम में चला गया। वे आरामकुर्सी पर बैठे आंखें झपका रहे थे। उन्होंने मुझे देखा तो मुस्कराए। मैं लौटना चाहता था, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि वे मुझसे कुछ कहना चाहते हैं। मेरा अनुमान सच निकला। उन्होंने कहा, 'भैया कटारिया, तुम मुझे एक वात वताओ। जव संतरे का रस निचोड़ लिया जाता है तो फिर संतरे के साथ क्या सलूक किया जाता है?'' मैंने उत्तर दिया, 'उसे वाहर फेंक दिया जाता है।' मेरा यह उत्तर सुनकर वह वहुत खुश हुए और हंसने लगे। मुझे जल्दी में देखकर वोले, 'मेरा तो जी चाहता है कि तुम कुछ देर मेरे पास वैठो। लेकिन तुम वहुत वेचैन दिखाई दे रहे हो। जाओ, लेकिन जाते हुए इस कमरे की वत्ती वुझाते जाना।' मैंने उनके वेडरूम की वत्ती वुझा दी और वाग के रास्ते से वापस आ गया। जिस समय मैं वाग से निकल रहा था तो मेरा दिल धड़क रहा था।'' सेठ कटारिया ने अपनी वात समाप्त कर दी।

मेजर वलवन्त गहरे सोच में डूवा हुआ था। उसका दिमाग विचित्र विचारों का ताना-वाना वुन रहा था।

सेठ चांदीराम कटारिया के जाने के वाद मेजर ने सोनिया से कहा, "मुझे इस वात की खुशी है कि यह पहेली थोड़ी-सी हल होने लगी है। आओ चलें। मैं समझता हूं कि आज हम काफी काम कर चुके हैं।" और फिर मेजर ने अशोक से कहा, "अशोक, तुम दो-एक दिन यहीं रहो। शायद हत्यारे फिर इधर आयें। तुम्हारा यहां रहना लाभदायक सिद्ध होगा। अगर तुम चाहो तो जाकर डाक्टर अर्देशर के नर्सिंग होम में शोभा से मिल सकते हो। अपना रिवाल्वर और दूसरा सामान भी ले जा सकते हो।" फिर मेजर और सोनिया वापस चले गए।

दो

विनोद मल्होत्रा वड़ी तल्ली[illegible]अर की रिपोर्ट सुनता रहा और एक-एक वात पर विचार करता रहा। उसने सारी रिपोर्ट सुनने के वाद कहा, "मैं समझता हूं कि इस सारी कहानी में वह कद्दावर नौजवान वहुत महत्त्वपूर्ण है।"

"मेरी नजर में वह कद्दावर नौजवान इस समय इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है। मुझे सेठ सूरजनारायण शाहानी और चौधरी हरिवंशराय की वातचीत अधिक महत्त्वपूर्ण दिखाई देती है जो सेठ कटारिया ने सुनी। यहीं से वात आगे वढ़ेगी। इसके वाद सम्भव है कि कद्दावर नौजवान का महत्त्व अधिक वढ़ जाये। मुझे एक ऐसा आदमी चाहिए जो चौधरी साहव के अधिक निकट रहा हो।"

यह कहते हुए अचानक मेजर ने चुटकी वजाई और मेज की दराज से अपना आटोमेटिक रिवाल्वर निकाला। उसमें भरी हुई गोलियों की जांच की और फिर रि[illegible]ल्वर जेव में रख लिया।

मेजर ने दरवाजे की ओर जाते हुए कहा, "मैं दो घण्टे के लिए वाहर जा रहा हूं।" वाहर निकलकर उसने शोभा के यहां हुई पार्टी में शामिल होने वालों की लिस्ट जेव से निकाली, उसे पढ़ा और फिर जेव में रख लिया। फिर वह अपनी कार की ओर वढ़ गया।

थोड़ी ही देर में वह विले पार्ले में केडल रोड पर पहुंच गया। उसने अपनी कार की स्पीड धीमी कर दी और सड़क के दोनों ओर के वंगलों के नाम पढ़ने लगा। 'प्रवीण विला'—एक वंगले का यह नाम पढ़ते ही उसने कार रोक दी और कार से

उतरकर बाहर आ गया। फिर प्रवीण विला में घुसा और ग्राउण्ड फ्लोर पर फ्लैट नम्बर सत्रह ढूंढ़ने लगा। फ्लैट उसे जल्दी ही मिल गया। उसके दरवाजे पर पीतल की एक प्लेट लगी हुई थी जिस पर काले अक्षरों में लिखा था—'कृष्णामूर्ति फोटोग्राफर'। मेजर ने दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक दी।

दो मिनट के बाद एक ठिगने मद्रासी ने दरवाजा खोला और उसने अपने सामने एक अजनबी को देखा तो दरवाजा थोड़ा-सा बन्द कर लिया। "आप गलत जगह तो नहीं चले आए हैं?" उसने कहा।

मेजर मुस्कराया और फिर उसने जल्दी से अपनी दाहिनी टांग खुले हुए दरवाजे में फंसा दी ताकि मद्रासी दरवाजा बन्द न कर सके। "पुलिस का अफसर गलत जगह जाकर दस्तक नहीं दिया करता।" मेजर ने दोनों हाथों से पूरा दरवाजा खोल दिया और मद्रासी को पीछे धकेलकर कमरे में घुस गया।

"यह क्या बदतमीजी है? आप चाहे पुलिस के अफसर हों, लेकिन आप मेरे मकान में जबरदस्ती नहीं घुस सकते।" मद्रासी ने कहा।

"अब शोर क्यों मचाते हो कृष्णामूर्ति, मैं कमरे में आ चुका हूं।" कमरे का निरीक्षण करते हुए मेजर ने कहा। वह एक काफी लम्बा-चौड़ा कमरा था, जो ड्राइंग रूम का काम देता था। इस कमरे की दायीं और बायीं दीवार में दो दरवाजे थे जो शायद भीतरी कमरों में खुलते थे। मद्रासी अब ठण्डा पड़ चुका था, "आप एक घण्टे के बाद नहीं आ सकते?"

"नहीं।"

"जबरदस्त मारे और रोने न दे।" मद्रासी ने व्यंग्य करते हुए कहा, "बैठिए और कहिए कि मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं।"

मेजर दीवार पर टंगे फोटो देखने लगा। वे सब [illegible]यों के फोटो थे। उन सबके पोज बहुत ही मोहक थे।

"मैं दोपहर को सोता नहीं हूं। क्या मुझे काफी पीने की इजाजत मिल सकती है?"

मेजर भांप गया कि मद्रासी कुछ देर के लिए दूसरे कमरे में जाना चाहता है। मेजर उसे अकेला नहीं जाने देना चाहता था।

"अच्छा तो चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चल[illegible] हूं। मैं यह देखना चाहता हूं कि तुम कॉफी किस तरह तैयार करते हो।"

"बड़ी मुसीबत है। आप तो सिर पर सवार हुए जा रहे हैं।" मद्रासी ने कहा, "क्या आपको चौधरी हरिवंशराय ने भेजा है?"

"मुझे किसी चौधरी ने नहीं भेजा।"

"तो फिर आप यहां क्या लेने आए हैं?"

"मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या कल तुम चौधरी हरिवंशराय की पार्टी से सीधे घर आए थे?"

"और रात को उस समय कहां जा सकता था?"

तभी दाहिनी दीवार का दरवाजा खुला तथा एक औरत अन्दर आई और मेजर को देखकर पलटने लगी। लेकिन फिर उसने वापस जाने का विचार छोड़ दिया, क्योंकि उसे ध्यान हुआ कि वह जिस चीज को छिपाना चाहती थी वह तो पहले ही देखी जा चुकी थी।

मेजर उसे घूरकर देख रहा था। वह अर्धनग्न थी। पेटीकोट और ऊपर केवल ब्रेसरी। उसका यौवन छलका पड़ रहा था।

वह मेजर को अपनी ओर घूरते हुए देखकर बिल्कुल नहीं घबराई। उसके

नारायण ने बिल्कुल लज्जा अनुभव नहीं की। उसने कृष्णमूर्ति की ओर क्रोधित निगाहों से देखते हुए कहा, "मूर्ति, तुम्हें शर्म आनी चाहिए। तुमने एक अजनबी को अन्दर क्यों आने दिया ?"

"रक्षा, गलती तुम्हारी है। तुम बाहर क्यों आईं ? ये साहब अपने-आप को पुलिस अफसर बता रहे हैं।" कृष्णमूर्ति ने कहा।

कहते-कहते कृष्णामूर्ति उठकर खड़ा हो गया और उसने अपना दाहिना मुक्का कसकर मेजर पर मारा। मेजर हालांकि मूर्ति के इस हमले के लिए तैयार नहीं था, लेकिन अत्यधिक फुर्तीला होने के कारण फौरन झुक गया। मूर्ति का मुक्का दीवार से टकराया और वह बिलबिला उठा। वह मेजर पर टूट पड़ा। लेकिन मेजर ने बिजली की-सी तेजी से अपनी दाहिनी टांग उसके सीने में पर जमाकर इतने जोर से धक्का दिया कि मूर्ति पीछे की ओर गिरते हुए उस औरत से टकराया। रक्षा बुरी तरह फर्श पर गिर पड़ी। फिर वह उठकर खड़ी हो गई। उसने अपने दोनों हाथ कूल्हों पर रख लिए। कृष्णामूर्ति उठने की कोशिश कर रहा था।

रक्षा ने आंखों से अंगारे बरसाते हुए कहा, "तुम्हें एक कमजोर आदमी पर अपनी ताकत आजमाते हुए शर्म नहीं आती ? तुम आखिर हो कौन और इस समय यहां क्यों आए हो ?"

"मैं चौधरी हरिवंशराय की मौत की खबर लेकर आया हूं।"

रक्षा की रगों में लहू जम गया। उसका रंग सफेद पड़ गया।

कृष्णामूर्ति त्यौराकर उठा और एक सोफे पर बैठकर ज्योतिहीन आंखों से सामने टंगे फोटो की ओर देखने लगा।

"कल रात किसी ने चौधरी हरिवंशराय की हत्या कर दी।" मेजर ने उनके आश्चर्य को बढ़ाने के इरादे से कहा, "और तुम दोनों में से भी कोई उनका हत्यारा हो सकता है।" रक्षा भी एक सोफे पर बैठ गयी।

फिर कृष्णामूर्ति उठकर अपने स्टूडियो में चला गया। शायद वह सिगरेट की डिब्बी लाने गया था। एकांत पाकर रक्षा जाहानी ने कहा, "क्या आप बहुत-सा रुपया कमाना चाहते हैं ?"

"आप मुझे किसलिए इतना रुपया देना चाहती हैं ?"

"इस बात को प्रकट न करने के लिए कि आपने मुझे मूर्ति के स्टूडियो में इस हालत में देखा है !"

"आप विश्वास रखिए कि मैं इस सम्बन्ध में आपको कभी ब्लैकमेल नहीं करूंगा।" तभी मूर्ति स्टूडियो से वापस आ गया। उसके होंठों में चारमीनार सिगरेट दबी हुई थी।

"मैं समझती हूं आप यहां कुछ सवाल पूछने के लिए आए हैं। और मुझे विश्वास है आप यहां आने के बाद मेरे यहां भी पहुंचते। मैं आपको वहां जाने की तकलीफ से बचाने के लिए यह बता देना चाहती हूं कि मैं कल की पार्टी खत्म होने से पहले ही घर वापस आ गई थी। आज सुबह तक लम्बी ताने सोती रही। मेरे नौकर इस बात को प्रमाणित कर सकते हैं।"

"मैं यह पूछना चाहता हूं कि पार्टी के बाद आपने किसी तरीके से अपने पिता से सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश की थी ? यानी अगर आप उनसे मिली नहीं तो आपने उनको फोन किया होगा ?"

"मैंने इन दोनों में से एक भी बात नहीं की।"

"आपके पिता जी तो एक हलफिया बयान लाए थे जिसे उनके वकील ने प्रमाणित किया था। उस बयान के आधार पर पुलिस उन्हें निरपराध स्वीकार कर

चुकी है।"

"ऐसा करके पुलिस ने उन पर कोई अहसान नहीं किया।" रक्षा ने उपेक्षा से कहा और फिर मूर्ति से बोली, "लाओ, वे फोटोग्राफ कहां हैं?" कृष्णामूर्ति के होश उड़ गए। उसने पूछा, "कौन-से फोटोग्राफ?"

"मैं फोटोग्राफ्स की फ़िल्में यानी निगेटिव चाहती हूं। तुम अनजान बनने की कोशिश कर रहे हो। जाओ, निगेटिव ले जाओ।"

कृष्णामूर्ति दोबारा स्टूडियो में चला गया। उसके पीछे-पीछे रक्षा शाहानी भी स्टूडियो में चली गई। मेजर ने दोनों को झगड़ते हुए सुना।

कुछ मिनट बाद कृष्णामूर्ति बाहर आया। उसके होंठों पर झाग जमा हुआ था। उसने अपनी बायीं हथेली पर दाहिने हाथ का मुक्का मारते हुए कहा, "मर्द को ताकतवर होना चाहिए, वरना उसे एक नाजुकबदन औरत भी दबा लेती है।"

"मूर्ति!" मेजर ने कहा, "इधर मेरे पास बैठ जाओ।"

पांच मिनट बाद रक्षा शाहानी अपने पूरे कपड़े पहने स्टूडियो से बाहर निकली। उसके हाथ में एक वैनिटी बैग था। वह सन्तुष्ट दिखाई दे रही थी। उसने बड़े शोख अन्दाज में मेजर की ओर देखा और नमस्ते किए बिना एक विजेता की तरह दरवाजे की ओर बढ़ गई।

रक्षा को गए हुए अभी दो मिनट भी नहीं हुए थे कि सामने का दरवाजा खुला और एक लम्बे कद का नौजवान उस दरवाजे से झुककर अन्दर आया। उसका कद असाधारण रूप से लम्बा था। वह एक बहुत ही हृष्ट-पुष्ट और कद्दावर नौजवान था। उसके सिर पर बहुत बड़ा हैट था जो उसकी आंखों तक झुका हुआ था। कृष्णामूर्ति उसे देखते ही भय से कांपने लगा।

उस कद्दावर नौजवान ने अपने होंठ न खोले। वह सीधा स्टूडियो की ओर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ बढ़ा। उसने मुड़कर देखने की भी तकलीफ नहीं की। "सुनो, तुम क्या चाहते हो?" कृष्णामूर्ति ने उस नौजवान को सम्बोधित करते हुए पूछा।

लेकिन उस कद्दावर नौजवान ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने मुड़कर कृष्णामूर्ति पर नजर तक न डाली। ऐसा लग रहा था जैसे मेजर और मूर्ति के सामने कोई मूक फिल्म चल रही हो। वह नौजवान स्टूडियो के दरवाजे के पास पड़े हुए सोफे तक पहुंचकर रुक गया। उसने एक हाथ से सोफे को इस तरह से घसीटा जैसे सोफे में कोई वजन ही न हो। उसने हटे हुए सोफे की जगह पर बिछी हुई चटाई हटाई और उसके नीचे से दो बड़े-बड़े लिफाफे निकाले। इन लिफाफों में शायद फोटो थे। उसने दोनों लिफाफों के फोटो बड़े इत्मीनान से दो मिनट में गिन लिए। फिर दोनों लिफाफे अपने बड़े कोट की जेब में डाल लिए। कृष्णामूर्ति बौखला उठा। वह तेजी से उस नौजवान की ओर लपका। उस नौजवान ने एक बहुत ही हल्का-सा थप्पड़ मूर्ति के बायें गाल पर दे मारा। लेकिन उसका हल्का-सा थप्पड़ मूर्ति के लिए इतनी करारी चोट साबित हुआ कि वह दोहरा होकर गिर पड़ा और उठ न सका। उस नौजवान ने कृष्णामूर्ति की पैंट की बेल्ट में हाथ डालकर उसे इस तरह उठा लिया जैसे वह आदमी न होकर फूलों की एक छोटी-सी टोकरी हो। फिर उसने उसे सोफे पर फेंक दिया।

मेजर यह सारा तमाशा देखता रहा। उसकी जेब में रिवाल्वर था। वह चाहता तो उस नौजवान को रोक सकता था, लेकिन वह रिवाल्वर का प्रयोग नहीं करना चाहता था। उसे मालूम हो चुका था कि यह कद्दावर नौजवान वही है जिसकी चर्चा अंजना और सेठ चांदीराम कटारिया ने अपने बयान में की थी। वह खुश था

कि जिस नौजवान को खोजने में कई दिन बर्बाद हो सकते थे, खुद ही उसके पास चला आया था। खाली हाथों इस नौजवान का सामना करना कठिन था।

जब वह नौजवान सामने के दरवाजे से बाहर निकल गया तो मेजर अपनी जगह से उठा। उसने अपना रिवाल्वर कोट की जेब से निकालकर पैंट की दाहिनी जेब में डाल लिया और बाहर निकल आया। बाहर रात का अंधेरा फैल चुका था। सड़क पर बिजली के खम्भों की बत्तियां जल रही थीं। मेजर ने देखा कि वह कद्दावर नौजवान एक कार के निकट पहुंच चुका था और अपने बड़े कोट की जेब से फोटुओं के लिफाफे निकालकर कार में बैठे किसी आदमी के हवाले कर रहा था। लिफाफे देने के बाद उसने कार का पिछला दरवाजा खोला और बड़ी कठिनाई से अन्दर बैठ गया। उसके बैठते ही कार चल पड़ी। मेजर ने उस कार का नम्बर पढ़ने की कोशिश की, लेकिन वह अपने इस उद्देश्य में सफल न हो सका। मेजर ने जान लिया कि उस कार का पीछा करना बेकार है। वह वापस कृष्णामूर्ति के फ्लैट में चला आया। कृष्णामूर्ति को होश आ चुका था और वह अपनी दोनों कनपटियां दोनों हाथों से मल रहा था। उसने मेजर की ओर देखा तो मेजर को ऐसा लगा जैसे कृष्णामूर्ति की आंखें ज्योतिहीन हैं। उनकी देख पाने की शक्ति अभी तक नहीं लौटी थी। कृष्णामूर्ति ने अपने सिर को एक-दो झटके दिए। उसने अपनी आंखें मूंद लीं और थोड़ी देर बाद खोल लीं।

"वह कौन था?"

"रक्षा शाहानी का बाडीगार्ड और शोफर। वह गजब की तेज-तर्रार औरत है। मैंने उसे रद्दी फिल्में दे दी थीं। लेकिन वह समझ गई होगी कि मैं उसे धोखा दे रहा हूं। उसने शायद मुझे असली फोटो चटाई के नीचे छिपाते हुए देख लिया होगा। इसीलिए उसने अपने बाडीगार्ड को समझा-बुझाकर यहां भेजा।"

"मैं काफी पी लूंगा तो मुझे कुछ होश आ जाएगा।" कृष्णामूर्ति ने उठते हुए कहा, "आपके लिए भी काफी लाऊं?"

"ले आओ।"

कृष्णामूर्ति पिछले कमरे में चला गया तो मेजर दबे पांव चलता हुआ उसके स्टुडियो में घुस गया और एक मेज की दराजें खोलकर देखने लगा। दराजें फिल्मों से भरी हुई थीं। मेजर ने हर दराज में से एक-एक फिल्म उठाई और अपने कोट की अलग-अलग जेबों में रख लीं, फिर उसने मेज की दराजें ज्यों की त्यों बन्द कर दीं। इसके बाद वह सोफे पर आ बैठा। उसने एक सिगरेट सुलगाई और पीने लगा।

इतने में कृष्णामूर्ति काफी बनाकर ले आया। उसने काफी का एक प्याला मेजर की ओर बढ़ा दिया और फिर उसके पास बैठ गया।

"रक्षा शाहानी एक बहुत ही रूपवती स्त्री है। उसे यह शौक चर्राया कि वह अपने मोहक शरीर का प्रदर्शन करे, और यह देखे कि उसके अनावृत शरीर को देखने वालों पर क्या प्रभाव पड़ता है। उसने माडल लड़कियों की तरह मुझसे अपने फोटो खिचवाए। रक्षा शाहानी ने इस अंदाज में फोटो खिचवा तो लिए, लेकिन जल्दी ही उसने अपनी मूर्खता अनुभव कर ली। उसने मुझसे वचन ले लिया कि वे फोटो प्रिंट करके बाजार में नहीं भेजूंगा। मैंने इसकी अच्छी कीमत वसूल की। यह आज तीसरे पहर आई थी।"

यह कहकर कृष्णामूर्ति अर्थपूर्ण अंदाज में मुस्कराया, "आज वह उन फोटोग्राफ्स के निगेटिव लेने आई थी। मैं क्योंकि उसके सौन्दर्य और यौवन का आनन्द लेना चाहता था, इसलिए मैंने ज़िद की कि मैं निगेटिव उसे नहीं दे सकता। उसने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि मैं निगेटिव उसे दे दूं, क्योंकि वह बहुत जल्द एक करोड़पति से शादी करने वाली है। मैं और कठोर हो गया। उसे मेरी इच्छा के आगे सिर झुकाना

पड़ा। मैंने वायदा कर लिया कि मैं अपनी इच्छा पूरी हो जाने के बाद उसे निगेटिव दे दूंगा। इतने में आप आ गए।" यह कहकर मूर्ति एक विजेता की तरह मेजर की ओर देखने लगा।

"अच्छा तो रक्षा एक करोड़पति से शादी कर रही है! वह सौभाग्यवान कौन है?"

"यों कहिए कि वह अभागा कौन है। रक्षा जैसी रूपवती स्त्री उस करोड़पति को तिगनी का नाच नचा देगी।"

"खैर, मैं यहां रक्षा शाहानी की खोज में या उसके बारे में जानने नहीं आया था। मैं एक और ही काम से यहां आया था। तुम्हें मालूम है कि चौधरी साहब ने एक एडवर्टाइज़िंग एजेन्सी खोल रखी थी?"

'हां, और उनका चीफ फ़ोटोग्राफर मैं था। वे मेरी रोज़ी के मुख्य ज़रिया थे। उनकी मौत पर बेकारी मुंह फाड़े हुए मुझे अपनी ओर बढ़ती हुई दिखाई दे रही है।"

"तुम चौधरी साहब के बहुत निकट रहे हो। क्या तुम उनके बारे में अच्छी तरह जानते हो?"

"मैं बस इतना ही जानता हूं कि चौधरी साहब की हालत पिछले चार साल से अच्छी नहीं थी। यों समझ लीजिए कि एक जबर्दस्त उतार-चढ़ाव था। कभी उनके पास फूटी कौड़ी न होती थी और कभी अन्धाधुन्ध रुपया आ जाता था। यह उतार-चढ़ाव क्यों था—आज तक मेरी समझ में नहीं आया। उनका रुपया कहां चला जाता था और फिर उनके पास कैसे लौट आता था, यह एक ऐसी पहेली थी जिसे मैं लाख कोशिश करने पर भी हल नहीं कर पाता था। इसके अलावा वह काफी रंगीनमिजाज भी थे। उनकी यह दृढ़ और अन्तिम धारणा थी कि इन्सान को जिन्दगी दोबारा नहीं मिलती। उनका एक कहना था जो मेरे मन पर अंकित है। उनका कहना था कि जीवन का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य सौन्दर्य का उपभोग करना है।"

"वह तो मैं देख रहा हूं कि उनके इस कथन पर तुम एक सच्चे अनुयायी की तरह अमल कर रहे हो।" मेजर ने कहा, "क्या चौधरी साहब तुम्हारे यहां आकर रंगरेलियां मनाया करते थे?"

"नहीं। आपको यह बात याद रखनी चाहिए कि चौधरी साहब अपने स्तर पर अपने सम्मान को हमेशा बनाए रखते थे। वह अपने वर्ग से नीचे के वर्ग के साथ भी बेतकल्लुफ नहीं होते थे। उनकी सेठ सूरजनारायण शाहानी से बहुत गहरी छनती थी। मैं तो उनके लिए नई-नई माडल लड़कियां खोजता था। उनकी विशेष मुद्राओं में फोटो खींचता था। वे उन फोटुओं को अपने विज्ञापनों में प्रयोग करते थे। जिस लड़की के फोटो उन्हें बहुत पसन्द आते थे, वे उसका पता मुझसे पूछ लिया करते थे।"

क़द्दावर नौजवान

मेजर दस बजे घर पहुंचा तो अपने ड्राइंगरूम में रोशनी देखकर हैरान रह गया। जब उसने ड्राइंग रूम में पांव रखा तो उसने सोनिया को अपना-इन्तजार करते पाया। विनोद मल्होत्रा जा चुका था।

मेजर गम्भीर होकर बोला, "मैं अभी-अभी उस कद्दावर नौजवान से मिलकर आ रहा हूं।"

"कौन है वह?" सोनिया ने पूछा।

"रक्षा शाहानी का बाडीगार्ड और शोफर। और कल सवेरे तुम्हारा मेरे

साथ चलना जरूरी है। मुझे विश्वास है कि तुम बड़ी आसानी से [illegible] से निवट सकोगी, और मैंने उस कद्दावर नौजवान को अपने काबू में [illegible] की पूरी योज़ना बना ली है। अब तुम जाकर आराम कर सकती हो।"

"अच्छी बात है। मैं ठीक छः बजे यहां पहुंच जाऊंगी।"

सुबह छः बजे मेजर और सोनिया अपनी-अपनी कार में रक्षा शाहानी के बंगले की ओर चल पड़े। थोड़ी देर में उनकी कारें रक्षा शाहानी के बंगले के सामने जा रुकीं। मेजर आश्चर्य से उस बंगले की तरफ देखने लगा। वहां काफी लोग जमा थे जिनमें कुछ पुलिस कांस्टेबल भी थे।

मेजर अपनी कार बंगले के अहाते में ले गया। सोनिया भी उसके पीछे चली गई। उन्होंने बाग की एक चौड़ी रविश पर अपनी कारें खड़ी कर दीं। अचानक मेजर की नजर बंगले [illegible] दीवार की आड़ में खड़ी ऐम्बुलैन्स, पुलिस की स्टाफ कार और पुलिस की [illegible] की एक वैन पर पड़ी। उसके मुंह से निकला, 'यह तो हत्या की घटना मालूम [illegible] ती है। पुलिस पूरी तरह लैस होकर यहां आई है।"

मेजर ने सोनिया के साथ बंगले के अन्दर कदम रखा। बाहर खड़े लोग उन्हें देख कानाफूसी करने लगे थे। बंगले के अन्दर पहुंचकर मेजर ने दाहिनी ओर के कमरे में कुछ आवाजें सुनीं। उसने बड़ी बेतकल्लुफी से उस कमरे में कदम रखा। वहां इन्स्पेक्टर मैथ्यूज अपने दो साथी अफसरों के साथ रक्षा शाहानी से बातें करने में व्यस्त था। मेजर और सोनिया को देखकर इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने उनका स्वागत किए बिना पूछा, "आप···आपको इस दुर्घटना का पता कैसे चल गया?"

"किस दुर्घटना का?"

"रक्षा शाहानी के शोफर फ्रैंकलिन की हत्या का?"

मेजर यह सुनने के लिए तैयार न था। वह तो उस कद्दावर नौजवान से दो-दो हाथ करने आया था जिसका नाम अभी-अभी इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने लिया था। फ्रैंकलिन की हत्या से स्पष्ट था कि चौधरी हरिवंशराय के हत्यारे फ्रैंकलिन और रक्षा शाहानी नहीं थे। हत्यारा कोई और था। अचानक मेजर को एक ख्याल सूझा यह भी तो संभव हो सकता है कि रक्षा शाहानी ने ही अपने शोफर की हत्या की हो। फ्रैंकलिन की हत्या का एक उचित कारण हो सकता था? रक्षा शाहानी को उस पर भरोसा नहीं रहा होगा। उसे यह अंदेशा पैदा हो गया होगा कि फ्रैंकलिन किसी भी समय उसके भेद को खोल सकता है।

मेजर ने पूछा, "फ्रैंकलिन की हत्या कब की गई?"

"आज सुबह साढ़े तीन बजे। डाक्टर की यही रिपोर्ट है।" इन्स्पेक्टर ने बताया।

"सबसे पहले उसकी हत्या का पता किसे चला?"

"रक्षा शाहानी को। फ्रैंकलिन सुबह पांच बजे उनके लिए काफी बनाकर लाया करता था। आज जब वह सुबह पांच बजे नहीं आया, तो रक्षा शाहानी उसके कमरे की ओर गई। उसके कमरे का दरवाजा खुला हुआ था और वह पलंग पर चित लेटा हुआ था। उसका एक बाजू पलंग से नीचे लटक रहा था। दोनों टांगें फैली हुई थीं। दाहिनी टांग फर्श पर टिकी हुई थी। उसे इस विचित्र पोजीशन में देखकर रक्षा शाहानी सहम गई, और जब उन्होंने पलंग के पास जाकर उसे देखा तो उनके मुंह से चीख निकल गई। वह चीखती हुई बंगले के बाहर निकल गईं। पड़ोसी जमा हो गए और उनमें से किसी ने पुलिस स्टेशन को फोन किया। हम बीस मिनट में यहां पहुंच गए। हमें यहां आए चालीस मिनट हो चुके हैं।" इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने कलाई पर बंधी हुई घड़ी की ओर देखते हुए कहा।

मेजर ने सोनिया को बैठने का इशारा किया और खुद इन्स्पेक्टर मैथ्यूज के साथ हो लिया। इन्स्पेक्टर उसे बंगले के पिछले हिस्से में ले गया। वहां एक बहुत लम्बा-चौड़ा कमरा था, जिसके दरवाजे के किवाड़ आधे खुले हुए थे। दोनों उस कमरे में चले गए।

मेजर ने देखा कि एक बहुत बड़े पलंग पर एक बड़ा आदमी लेटा हुआ था। फ्रैंकलिन इस हालत में और भी ज्यादा लम्बा-तगड़ा दिखाई दे रहा था। मेजर अपनी नाक के नथुने फुलाने लगा। उसे कमरे में एक विचित्र प्रकार की गंध फैली हुई महसूस हुई। वह मुस्कराया। लाश पर से इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने चादर हटा दी। मेजर ने पास जाकर देखा। फ्रैंकलिन के गले पर एक गहरा घाव था। किसी ने बड़ी सफाई से सांस की नली काट दी थी और वहां से गोश्त का एक पूरा टुकड़ा उड़ा लिया था। सफाई से कटा हुआ गोश्त का चौरस टुकड़ा तकिये के पास पड़ा ... था। मेजर उस चौरस टुकड़े की ओर देखकर भी मुस्कराया। इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने मेजर की मुस्कराहट पर कोई ध्यान नहीं दिया और कहा, "आपको इस हत्या में और चौधरी साहब की हत्या में कोई समानता दिखाई दी? मैं तो निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि जिस आदमी ने चौधरी साहब की हत्या की है, वही फ्रैंकलिन का भी हत्यारा है।"

"यह आप कैसे कह सकते हैं?" मेजर ने पूछा।

"इसलिए कि यहां भी चाकू इस्तेमाल किया गया है। यहां भी सांस की नली काटी गई है।"

"आपका विचार किसी हद तक ठीक मालूम होता है।" मेजर ने कहा, "मुझे तो एक बात पर आश्चर्य हो रहा है कि क्या हत्यारा अकेला था?"

"यह कैसे हो सकता है।" इंस्पेक्टर बोला, "इतने कद्दावर और तगड़े आदमी को एक साधारण आदमी अपने वश में नहीं कर सकता। मैं तो इसे कम से कम तीन आदमियों का काम समझता हूं।"

मेजर मुस्कराया। उसने बड़े आराम से पलंग की ओर देखते हुए कहा, "मुझे हाथापाई के चिह्न कहीं दिखाई नहीं दे रहे। क्या फ्रैंकलिन पिए हुए था कि उसे आक्रमणकारियों के आने तक का पता न चल सका?"

"फ्रैंकलिन निश्चय ही पिए हुए था।" पुलिस डाक्टर ने बीच में बोलते हुए ... में फैली हुई गंध इस बात का प्रमाण प्रस्तुत कर रही है। फिर भी ...म की रिपोर्ट से पता चल जाएगा।"

जब वह इन्स्पेक्टर मैथ्यूज के साथ ड्राइंग रूम में लौट रहा था उसने रास्ते में ..., "क्या पैरों के निशान मिले?"

"बिल्कुल नहीं। ऐसा लगता है कि हत्यारा इस बार चाकू अपने साथ ले गया।"

"क्या रक्षा शाहानी ने रात को कोई आहट नहीं सुनी थी?"

"नहीं। वह कहती हैं कि वह बहुत गहरी नींद सोया करती हैं।" इन्स्पेक्टर ने कहा, "हां, आप यह तो बताइए कि आप इन लोगों से कैसे सवाल पूछने आये थे। क्या आप रक्षा शाहानी और फ्रैंकलिन का चौधरी साहब की हत्या में विशेष हाथ समझते हैं?"

"आज सुबह तक समझता था, लेकिन अब नहीं।"

इस बीच में दोनों ड्राइंग रूम के पास पहुंच चुके थे और अधिक बातचीत की गुंजाइश नहीं थी। मेजर ने ड्राइंग रूम में पहुंचकर देखा कि सोनिया, दोनों पुलिस अफसर और रक्षा शाहानी चुपचाप बैठे हुए थे। साफ दिखाई दे रहा था कि उनके बीच किसी भी तरह की बातचीत नहीं हुई। रक्षा शाहानी पर गहरी खामोशी छायी

फार्म सुंघाया। उसका गला काटने में कुछ देर लग गई, जिससे आप पर भी क्लोरोफार्म का हल्का-सा असर हो गया, जो कुछ देर पहले तक आप पर बाकी था।"

"कभी-कभी मैं नींद की गोलियों का इस्तेमाल करती हूं।"

"मैं आपके बेडरूम को अच्छी तरह देख चुका हूं। वहां स्लीपिंग पिल्स की कोई शीशी नहीं है। हां, क्लोरोफार्म की शीशी आपकी ड्रेसिंग टेबल पर जरूर रखी हुई है। और फ्रैंकलिन के कमरे में अभी तक क्लोरोफार्म की बू बसी हुई है।"

"क्लोरोफार्म की शीशी और फिर मेरी मेज पर!" रक्षा शाहानी कांप उठी, "इसका मतलब तो यह हुआ कि हत्यारा मेरे बेडरूम में भी आया था।"

"देखिए, बनने की कोशिश न कीजिए। फ्रैंकलिन की हत्या आपने ही की है।" मेजर ने दृढ़ता से कहा।

"मैं फ्रैंकलिन की हत्या कैसे कर सकती थी," रक्षा शाहानी ने बहुत ही दुखित स्वर में कहा, "वह तो मेरा भाई था!"

"आपका भाई?" मेजर के मुंह से निकला, "वह आपका भाई कैसे हो सकता है? उसका नाम फ्रैंकलिन था…।"

"इसमें अनहोनी बात कौन-सी है! वह मेरे पिता की ओर से मेरा भाई था। अपनी जवानी में मेरे पिता बहुत बीमार हो गए थे। उनको अस्पताल में एडमीशन लेना पड़ा। एक क्रिश्चियन नर्स लिजा ने बड़ी लगन से उनकी सेवा की। लिजा की सेवा और पिता की कृतज्ञता प्रेम में बदल गई। फ्रैंकलिन उसी प्रेम का परिणाम था। फ्रैंकलिन पैदा हुआ तो उसे एक अनाथालय में भर्ती कराना पड़ा, क्योंकि उसे जन्म देने के बाद उसकी मां जीवित न रह सकी थी। एक साल के बाद मेरे पिता का विवाह हो गया और दूसरे साल मैंने जन्म लिया। मेरे पिता मुझसे बहुत प्यार करते थे। जब मैं दो साल की हुई तो मुझे भी उस अनाथालय में ले जाने लगे जहां फ्रैंकलिन पल रहा था। हम दोनों अनाथालय के बाग में खेला करते थे। उसे मुझसे खास लगाव हो गया था। फ्रैंकलिन असाधारण रूप से बड़ा हो रहा था। आठ साल की उम्र में ही उसका क़द साढ़े पांच फुट हो गया था। उसे स्कूल के बोर्डिंग हाउस में भर्ती करा दिया गया था। बारह साल की उम्र तक पहुंचने पर उसका कद लगभग छः फुट हो गया। तभी स्कूल के मास्टरों की शिकायतें पहुंचीं कि फ्रैंकलिन का दिमाग पढ़ने में बहुत कमजोर है और वह बड़ा लड़ाका है। एक बार उसने दो लड़कों की पसलियां तोड़ दीं। इसलिए उसे स्कूल से हटाना पड़ा। अन्त में उसे कोई काम सिखाने का निश्चय किया गया और उसे एक रेफ्रिजरेशन कम्पनी में अप्रेण्टिस के रूप में लगवा दिया गया। जब उसके स्थायी नौकर होने का समय आया तो वह कम्पनी के मैनेजर से झगड़ पड़ा। अगर बहुत-से लोग मिलकर मैनेजर को न बचाते तो फ्रैंकलिन उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालता। इसका मतलब यह हुआ कि प्राइवेट कम्पनियों के दरवाजे भी उसके लिए बंद हो गए। उसकी उम्र अब इक्कीस साल की हो गई थी और कद साढ़े छः फुट से भी कुछ अधिक बढ़ गया था। काफी सोच-विचार के बाद उसे टैक्सी ड्राइवर बनाने का निश्चय किया गया कि यह काम उसके लिए बहुत उपयुक्त रहेगा। वह ड्राइवर बन गया। उसे लाइसेन्स दिलवा दिया गया और एक टैक्सी खरीद दी गई। छः महीने तक तो वह बड़े शौक से गाड़ी चलाता रहा, लेकिन बाद में वह मुसाफिरों से झगड़ा करने लगा। टैक्सी बेच दी गई। इस बीच मैं उसकी सबसे बड़ी हमदर्द रही। अब वह हद से ज्यादा उद्दंड हो गया था। मेरे पिता की आज्ञा की भी अवहेलना करने लगा था। लेकिन मेरी हर बात मान लिया करता था। मैं चोरी-छिपे उसकी आर्थिक सहायता भी करती रहती थी। मेरी शादी हो गई। मेरे पति एक धनी आदमी थे। उन्हें एक शोफ़र की जरूरत थी। मैं उसे अपना

शोफर बनाकर ले आई। तीन बरस के बाद ही मैं विधवा हो गई। लेकिन फ्रैंकलिन मेरे ही पास रहा। वह मेरा बहुत अच्छा भाई था। आपने सच ही कहा है कि वह मेरा शोफर ही नहीं मेरा बाडीगार्ड भी था।" रक्षा शाहानी ने अपनी कहानी समाप्त कर दी।

"उसका नाम फ्रैंकलिन क्यों रखा गया ?"

"नर्स लिजा की यह इच्छा थी कि अगर उसने बेटे को जन्म दिया तो वह अपने पिता के नाम पर उसका नाम फ्रैंकलिन रखेगी और अगर उसके लड़की पैदा हुई तो उसका नाम अपनी मां के नाम पर मार्गरेट रखेगी।" रक्षा शाहानी ने कहा।

"एक बात और," मेजर बोला, "नर्स लिजा और अपने पिता की कहानी आपको कैसे मालूम हुई ?"

"यह कहानी मुझे मेरी मां ने सुनाई थी।"

मेजर को रक्षा शाहानी की कहानी में सच्चाई दिखाई दी; और उसने स्वयं ही अपने इस संदेह को मन से हटा दिया कि रक्षा ने फ्रैंकलिन की हत्या की है।

"आप अपने पिता जी को हत्या की सूचना दे दीजिए। अगर आवश्यक हुआ तो हम फिर आएंगे।" मेजर ने सोफे पर से उठते हुए कहा। सोनिया भी उठ खड़ी हुई।

मेजर ने जाते-जाते पूछा, "यह भी बता दीजिए कि आप किस धनवान आदमी से शादी करने वाली हैं ?"

"मैं सेठ चांदीराम कटारिया से शादी करने वाली थी, लेकिन अब मैंने अपना इरादा बदल दिया है।"

पीछा

घंटे भर घण्टे के बाद सोनिया और मेजर आफिस में एक-दूसरे के सामने बैठे थे और मेजर कुछ कहने जा रहा था। तभी कदमों की आहट सुनाई दी। दूसरे ही क्षण विनोद मल्होत्रा ने कमरे में पांव रखा, और बोला, "असल में मुझे उस दिन से कुछ मालूम ही न हो सका कि बेचारे अशोक को उस मुसीबत से छुटकारा मिला या नहीं। मैं उसकी कहानी का अगला अंश सुनने के लिए तड़पता रहा हूं।"

मेजर ने उसे अब तक की सारी कहानी सुना दी।

विनोद मल्होत्रा ने वह कहानी सुनकर कहा, "मेरी समझ से तो अब केवल एक ऐसा पात्र शेष रह गया है जिसपर से पर्दा उठाना चाहिए। शायद उसपर से पर्दा हटने के बाद हत्या का उद्देश्य सामने आ जाए।"

"ऐसा कौन-सा पात्र शेष रह गया है ?" मेजर ने पूछा।

"सेठ सूरजनारायण शाहानी।" विनोद मल्होत्रा ने उत्तर दिया, "चौधरी साहब की हत्या से पहले सेठ शाहानी और चौधरी साहब की धमकी-भरी बातें और ऐंग्लो-इंडियन लड़की से उनके प्रेम में मुझे कोई गहरा रहस्य छिपा हुआ मालूम होता है।"

"मैं तुम्हारी राय से पूरी तरह से सहमत हूं। अब हमें साये की तरह सेठ शाहानी का पीछा करना चाहिए। मेरा खयाल है कि इस समय वह अपनी बेटी के यहां होंगे। अशोक तो है नहीं। सोनिया तुम दोबारा रक्षा शाहानी के बंगले के आसपास चली जाओ। पता करो कि सेठ शाहानी हैं या नहीं। अगर वहां हों तो रक्षा के बंगले के बाहर उनका इन्तजार करो और जब वह बाहर निकलें, उनका पीछा करो।

सोनिया उठकर खड़ी हो गई और उस कमरे में चली गई। आवश्यक सामान से लैस होकर वह अपने कर्तव्य पालन करने के लिए रवाना हो गई।

मेजर और विनोद मल्होत्रा देर तक बातें करते रहे। विनोद ने दोपहर का खाना भी मेजर के साथ ही खाया। फिर वे कुछ देर के लिए सो गए। चार बजे उठे। सोनिया का अभी तक कोई संदेश न मिला था।

ठीक उसी समय मेजर के गले में पड़ा हुआ तावीजनुमा मीटर क्लाक के पेंडुलम की तरह टिकटिक करने लगा। मेजर फौरन कुर्सी पर से खड़ा हुआ, "सोनिया मुसीबत में है।" उसने तावीज के मीटर का ढक्कन खोलकर देखा। मीटर की सुई पश्चिम की ओर सोलह नम्बर पर थी।

"सोनिया यहां से पश्चिम की ओर सोलह मील की दूरी पर है। क्या तुम बता सकते हो कि यहां से पश्चिम की ओर सोलह मील की दूरी पर कौन-सी बस्ती है?"

"ओडरप।" विनोद मल्होत्रा ने उत्तर दिया।

मेजर जासूसी के सामान वाले कमरे में चला गया। वहां से वह एक रिवाल्वर और बुलेट-प्रूफ जाकेट ले आया। एक बुलेट-प्रूफ जाकेट उसने खुद भी पहन रखी थी। दोनों मित्र तेजी से बाहर निकले और अपनी-अपनी कारों की ओर बढ़ गए।

ठीक उसी समय क्रोकोडायल अपने दरबे में भौंकने लगा।

"शाबाश बेटा, तुमने वक्त पर मुझे याद दिलाया है कि तुम्हें साथ ले जाना लाभदायक होगा।"

मेजर ने दरबे का दरवाजा खोला और क्रोकोडायल को ले आया। उसने कार का पिछला दरवाजा खोल दिया और क्रोकोडायल बिजली की-सी तेजी के साथ पिछली सीट पर जा बैठा।

मेजर बहुत तेज स्पीड से कार चला रहा था। उसे ट्रैफिक पुलिस की भी परवाह नहीं थी। वह बहुत ही कुशल ड्राइवर था। विनोद मल्होत्रा भी बड़ी कुशलता से उसके पीछे चला जा रहा था। दोनों आने-जाने वाली कारों के बीच में से अपनी कारें बड़ी सफाई के साथ निकालकर ले जा रहे थे। मेजर ने तावीजनुमा मीटर की ओर देखा जिसका ढक्कन खुला हुआ था। मीटर की सुई ने बताया कि सोनिया और उनके बीच केवल आध मील की दूरी रह गई है। मेजर ने कार की स्पीड धीमी कर दी। उसने आसपास नजर डाली। इस सड़क के दोनों ओर बहुत कम बंगले थे। बंगलों के बीच की दूरी बहुत ज्यादा थी। दो मिनट बाद मीटर की टिकटिक तेज हो गई। इसका मतलब था कि मेजर और विनोद मल्होत्रा अपने इच्छित स्थान पर पहुंच चुके थे, क्योंकि मीटर की सुई शून्य पर लौट आई थी। दूरी और दिशा बताने वाली सुई चल नहीं रही थी। मेजर ने सामने निगाह दौड़ाई। चार-चार फुट ऊंची दीवारों में घिरा काफी दूर एक बंगला था, जिसके अंदर बहुत ही कम रोशनी झिलमिला रही थी। चारदीवारी के फाटक की दाहिनी ओर एक बहुत बड़ा बोर्ड लगा हुआ था जिसपर लिखा था, 'फर्टिलाइजर कार्पोरेशन'।

मेजर उस बोर्ड को पढ़ते हुए सोचने लगा। यह कैसे हो सकता है? यह तो कोई अर्ध सरकारी संस्थान मालूम होता है जो किसानों को खाद बांटता है। मेजर ने कार सड़क से उतारकर एक पेड़ के नीचे खड़ी कर दी। उसने अपनी कार का पिछला दरवाजा खोला तो क्रोकोडायल कूदकर बाहर आ गया, और बड़ी तेजी से जमीन सूंघने लगा और कूं-कूं करने लगा। विनोद मल्होत्रा भी मेजर की कार के पीछे अपनी कार खड़ी करके बाहर आ गया।

क्रोकोडायल जमीन सूंघता हुआ और कूं-कूं करता हुआ एक कच्ची पगडंडी

पर चला गया। उस पगडंडी पर एक जगह काफी रेत जमा थी, जिस पर बहुत से कदमों के निशान थे। क्रोकोडायल उस रेतीली जगह के चारों ओर घूमता रहा। वह थोड़ी दूर आगे गया और फिर उसी रेतीली जगह पर वापस लौट आया और मेजर की ओर देखते हुए जोर-जोर से कूं-कूं करने लगा।

मेजर उसकी तमाम हरकतों का मतलब समझ गया था। उसने कहा, "मैं समझता हूं कि इस जगह सोनिया की कार को घेर लिया गया, और यहीं सोनिया को उसकी कार से बाहर निकालकर आक्रमणकारियों ने उसे अपनी कार में बैठा लिया। इस रेतीली जगह पर सोनिया ने दुश्मन का मुकाबला किया। क्रोकोडायल आगे जाकर लौट आया है जिसका मतलब है कि सोनिया दुश्मन की कार में बैठ जाने के बाद जमीन पर अपने बदन की कोई महक नहीं छोड़ सकी। यही कारण है कि अब क्रोकोडायल हमें रास्ता नहीं दिखा सकता।"

पांच मिनट के बाद ही वे फर्टिलाइजर कार्पोरेशन की बिल्डिंग के अन्दर पहुंच गए। लेकिन उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ जब उन्होंने यह देखा कि वह सचमुच एक अर्धसरकारी संस्था है। वहां काम करने वाले कर्मचारी जा चुके थे लेकिन दो व्यक्ति, जो वेश-भूषा से क्लर्क मालूम होते थे और एक व्यक्ति जो अपने सामने की बड़ी और सजी हुई मेज को देखते हुए उनका अफसर मालूम होता था, शायद ओवर-टाइम लगा रहे थे। सब कमरे खुले हुए थे जिनमें मेज़-कुर्सियां पड़ी थीं। लोहे के ऊंचे-ऊंचे शेल्फों में किताबें और फाइलें भरी पड़ी थीं। यहां सोनिया के होने का कोई सवाल ही पैदा न होता था। मेजर ने उन क्लर्कों के अफ़सर की मेज के पास जाकर पूछा, "क्या यहां बस यही दफ्तर है?" उस अफसर ने झुके-झुके ही उत्तर दिया, "ऊपर तो दफ्तर ही है, लेकिन नीचे स्वर्ग है।"

"क्या मतलब।"

"साहब, इस बिल्डिंग के नीचे एक तहखाना है, और उस तहखाने में एक क्लबनुमा रेस्तरां है। अमीरों के मनबहलाव की जगह है। हम गरीब तो उधर का रुख भी नहीं कर सकते। अपनी मेम्बरशिप का कार्ड दिखाने पर ही आप उस रेस्तरां में घुस सकते हैं। और मेम्बरशिप दो हजार रुपया सालाना है।" क्लर्कों के अफ़सर ने फाइल पर से निगाह उठाए बिना ही कहा।

मेजर बस इतनी-सी ही बात जानना चाहता था। क्लर्कों के अफसर को धन्यवाद देने के बाद लौटा तो अफसर ने ऊंची आवाज में कहा, "अगर आप उस रेस्तरां में जा रहे हैं, तो जरा संभलकर जाइएगा। सुना है उस रेस्तरां में एक घंटा बिताने के लिए कम से कम दो सौ रुपयों की जरूरत होती है।"

मेजर ने पूछा, "उस रेस्तरां में जाने का रास्ता किधर है?"

"आपको इस बिल्डिंग के पीछे जाना होगा। वहीं रेस्तरां का सदर दरवाजा है जिस पर एक पठान चौकीदार खड़ा रहता है। वह मेम्बरशिपकार्ड दिखाने के लिए कहेगा।"

"कार्ड मेरे पास है। आपके इन मशव्वरों के लिए धन्यवाद।"

मेजर और विनोद मल्होत्रा उस बिल्डिंग के पिछवाड़े पहुंचे। वहां दीवार पर टंगे बोर्ड पर बिजली की दूधिया रोशनी पड़ रही थी। बोर्ड पर लिखा था, 'मानव का स्वर्ग—बिलियर्ड एण्ड बाथ'। सदर दरवाजे पर सचमुच एक पठान पहरेदार खड़ा था। मेजर ने क्रोकोडायल की पूंछ पकड़कर उसका रुख अपनी कार की ओर मोड़ दिया और क्रोकोडायल कार की ओर भागा।

मेजर निर्भीकता से क्लबनुमा रेस्तरां के फाटक में घुसा तो पठान चौकीदार ने उसे बाजू से पकड़ लिया और बोला, "अरे खू किदर जाता है? अपना कार्ड तो

दिखाओ।"

मेजर ने हंसते हुए अपनी जेब से अपना कार्ड निकाला और कहा, "क्या पश्तो के अलावा और भी भाषा पढ़ सकते हो खान?"

"क्यों नहीं पढ़ सकता! इंगलिश भी जानता।" खान ने मेजर का आइडेण्टिटी कार्ड घुमा-फिराकर देखा, जिससे स्पष्ट था कि वह मामूली-सी अंग्रेजी जानता था। अंत में थक-हारकर उसने कहा, "अच्छा बाबा, जाओ, तुम्हारा कार्ड अजीब है।"

वह क्लब सचमुच स्वर्ग था। अन्दर घुसते ही सोफों वाला सुन्दर छज्जा था। खम्भों और दीवारों का रंग आंखों को बहुत ही भला मालूम हो रहा था। इस छज्जे के आगे नहाने और तैरने के लिए एक नये ढंग का तालाब था। उसके साफ पानी में नीले रंग के बल्ब जगमगा रहे थे, जो पानी को नीली आभा दे रहे थे। इस तालाब के किनारे तैरने की पोशाक पहने हुए दो सुन्दरियां पानी में अपनी नंगी टांगें डाले हुए अधलेटी-सी बैठी हुई थीं। उनके बैठने का यह अन्दाज बहुत ही प्रभावशाली था, क्योंकि उनकी पतली कमर और पीठ से लगा हुआ गोरा पेट देखने वालों के दिल में तूफान जगा देता था। उनके गोरे पेट के ऊपर उनका यौवन फटा पड़ रहा था। मेजर ने उनकी ओर कोई विशेष ध्यान न दिया। लेकिन विनोद मल्होत्रा की सांस फूल गई। वह आंखें फाड़-फाड़कर उनको देख रहा था और वे विनोद के आश्चर्य के उत्तर में मुस्करा रही थीं।

मेजर देख रहा था कि शाम की तैयारियां शुरू हो चुकी थीं। सौन्दर्य, शराब और संगीत के मतवाले अभी अधिक संख्या में वहां नहीं पहुंचे थे। क्लब के इस हिस्से का मैनेजर एक धनुषाकार काउण्टर के पीछे खड़ा था। उसने दो अजनबियों को क्लब में आजादी से घूमते हुए देखा तो वह तेजी से उनकी ओर आया और बोला, "आप किसकी इजाजत से···?"

मेजर ने उसका वाक्य पूरा नहीं होने दिया और कहा, "हम सेठ शाहानी के मेहमान हैं।"

"कौन सेठ शाहानी? इस नाम का कोई सेठ यहां नहीं है।" मैनेजर बोला।

मेजर ने देखा कि सेठ शाहानी का नाम सुनकर मैनेजर के चेहरे पर आश्चर्य या जान-पहचान के चिह्न प्रकट नहीं हुए थे। मेजर का वार खाली गया था। इसलिए वह एक पल के लिए बदहवास हो गया, लेकिन फिर फौरन ही संभल गया। उसने बड़ी लापरवाही से कहा, "कुछ भी हो हम यहां मेहमान बनकर आए हैं।"

मैनेजर भांप गया कि उसका वास्ता एक मजबूत इरादे वाले नौजवान से पड़ा है। वह कुछ सोचते हुए बोला, "आप जरा उस बेंच पर आराम कीजिए।"

तालाब के किनारे बनी पत्थर की एक बेंच की ओर इशारा करते हुए मैनेजर ने कहा जिसपर मखमल का एक मोटा गद्दा पड़ा हुआ था। मेजर और विनोद उस बेंच की ओर बढ़े। मेजर दो कदम आगे जाकर मुड़ा। मैनेजर दाहिने कोने की ओर जा रहा था। मेजर भी उसी ओर चल पड़ा और विनोद को अपने पीछे आने का इशारा कर दिया। संयोग से मैनेजर ने पीछे मुड़कर नहीं देखा था। वे दोनों दाहिनी ओर की एक गैलरी में पहुंच गए। फिर मैनेजर गैलरी के एक कमरे में चला गया। मेजर दौड़कर उस कमरे के दरवाजे पर पहुंचा। लेकिन वह अन्दर से बन्द था। इस कमरे का नम्बर २३ था। मेजर दरवाजे से कान लगाकर सुनने लगा।

"मैं बाहर दो अजनबी नौजवानों को छोड़कर आया हूं। मुझे वे काफी संदिग्ध दिखाई देते हैं।" मैनेजर किसी से कह रहा था।

"वे बाहर बैठे हैं ना?" किसी ने बहुत ही भारी आवाज से कहा, "उनसे

बाद में निवट लिया जाएगा, पहले मैं जरा इस चिड़िया के पंख और नोच लूं जो इतने थप्पड़ खाने के बाद भी खामोश है।"

इसके साथ ही एक तमाचा मारे जाने की आवाज और एक हल्की-सी कराह सुनाई दी। मेजर के कलेजे पर जैसे किसीने घूंसा मार दिया। उसका खून खौलने लगा। गुस्से से उसकी आंखें उबल पड़ीं। लेकिन उसने धीरज से काम लिया।

"विक्रम, तुम जाओ और उन नौजवानों की निगरानी करो। उन्हें अपनी आंखों से ओझल न होने देना।"

मेजर एकदम सावधान हो गया। उसने फौरन उस कमरे में घुसने की योजना बना ली। अभी दरवाजा थोड़ा-सा ही खुला था कि मेजर ने अपने कन्धे का दबाव डालकर दरवाजे के पट जोर से पीछे की ओर धकेल दिए। फिर फर्श पर किसी आदमी के गिरने की आवाज आई और दरवाजा खुल गया। मेजर कमरे में घुस गया। सामने मेज के पीछे कुर्सी पर एक आदमी बैठा था। उसके दाहिनी ओर एक कुर्सी पर सोनिया बैठी थी, जिसे दो खूंखार दिखाई देने वाले आदमियों ने पकड़ रखा था। सामने बैठे हुए गुरिल्ला जैसे आदमी ने मेजर को देखते ही अपने सामने की मेज की ओर हाथ बढ़ाया। लेकिन मेजर इससे पहले ही अपना रिवाल्वर निकाल चुका था। मेजर ने रौबीले स्वर में कहा, "इससे पहले कि तुम दराज से अपना रिवाल्वर निकालो, तीन गोलियां तुम्हारे सीने को छेद चुकी होंगी।"

विनोद मल्होत्रा भी अंदर आ चुका था और उसने अपने रिवाल्वर का मुंह उन खूंखार आदमियों की ओर फेर रखा था जो सोनिया को पकड़े हुए थे।

"आप कौन हैं?" गुरिल्ला जैसे आदमी ने अपना हाथ पीछे की ओर खींचते हुए पूछा।

मेजर ने अपना आइडेण्टिटी कार्ड जेब से निकालकर मेज पर फेंक दिया। गुरिल्ला जैसे आदमी ने उस कार्ड को ध्यान से पढ़ा। उसके चेहरे के भाव बदल गए। अब वहां कठोरता की जगह मुस्कराहट पैदा हो गई। उसने बड़ी नरमी से कहा, "आपको इस तरह अन्दर आने की क्या जरूरत थी?"

"देखो, बनावट से काम मत लो। तुम भी जानते हो कि अगर हम इस तरह अंदर न आते तो तुमने हमारे स्वागत की कोई और ही योजना बनाई होती।"

"क्या आपके इस तरह आने का उद्देश्य पूछ सकता हूं?" गुरिल्ला जैसे आदमी ने कहा।

"उद्देश्य स्पष्ट है," मेजर ने सोनिया की ओर देखते हुए कहा, जिसके फूल-से गाल सूज गए थे, और उनपर मोटी-मोटी उंगलियों के सुर्ख निशान उभर आए थे। इन निशानों को देखकर मेजर क्रोध से कांप उठा।

"सोनिया उठो, विनोद के पास आ जाओ।"

मेजर के मुंह से उस लड़की का नाम सुनते ही गुरिल्ला जैसा आदमी भौचक्का रह गया। उसने अपने दोनों खूंखार साथियों को इशारा किया कि वे सोनिया को छोड़ दें, सोनिया उठकर विनोद के पास जा खड़ी हुई।

अब मेजर ने सारी शिष्टता एक ओर उतारकर रख दी और बोला, "तुम इस लड़की को यहां क्यों लाए? क्या तुम्हें मालूम न था कि ड्यूटी पर सरकारी आदमी पर हाथ उठाना अपराध है?"

"सरकारी आदमी?"

"जी हां। यह लड़की मेरी असिस्टैण्ट है—सार्जेण्ट सोनिया।"

"ओह," गुरिल्ला जैसे आदमी ने बनावटी आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "हमें क्या मालूम था! हम इस लड़की को इसकी हठधर्मी की सजा देना चाहते थे।

यह मोटर पर आगे जा रही और हम इसके पीछे थे। हमने बहुत बार हॉर्न दिया, लेकिन इस लड़की ने हॉर्न के उत्तर में हमें रास्ता नहीं दिया। अन्त में ऐसा मौका हमें मिल गया कि हम इसकी मोटर से आगे निकल गए। अब हमने इसे रास्ता न दिया तो इसने हमें अंग्रेजी में गालियां देनी शुरू कर दीं। हमें गुस्सा आ गया और हम इसे सबक सिखाने के लिए यहां ले आए।"

"तुम बकवास कर रहे हो।" मेजर का धैर्य समाप्त हो गया। इस बातचीत के बीच वह मन ही मन पूरी योजना बना चुका था कि उसे इनपर किस तरह हमला करना होगा। उसने बिजली की-सी तेजी से आगे पांव बढ़ाया और उन दोनों खूंखार आदमियों के सिर पर रिवाल्वर के दस्ते से वार किए। वे दोनों फर्श पर गिर पड़े और बेहोश हो गए। इतने में गुरिल्ला जैसा आदमी मेज के पीछे मोर्चा बांधकर मेजर का इन्तजार करने लगा। मेजर ने रिवाल्वर अपनी जेब में डाल लिया और कूदकर मेज पर चढ़ गया। मेज पर चढ़ते ही उसने अपने दाहिने पैर की ठोकर उसे मारी। वह लड़खड़ाता हुआ पीछे दीवार से जा लगा। मेजर मेज से कूद गया और उसने गठीले बदन के उस आदमी को संभलने का मौका न दिया। वह दाहिने हाथ के मुक्के लगाता रहा। गुरिल्ला जैसा आदमी तेजी से अपनी आंखें झपकने लगा। उसे साफ दिखाई न दे रहा था कि मेजर कहां है। इसलिए वह हवा में मुक्के मार रहा था। मेजर ने अपने दाहिने पंजे पर अपना सारा जोर डालकर उसकी कनपटी पर मुक्का मारा। वह गिर पड़ा। मेजर ने उसे बायें हाथ से ऊपर उठा लिया और दाहिने हाथ का मुक्का उसके होंठों पर मारा। उस आदमी का एक दांत टूटने की आवाज सुनाई दी। वह फिर फर्श पर गिर पड़ा। उसका निचला होंठ फट गया और मुंह से खून बहने लगा।

उसकी ओर देखते हुए मेजर ने कहा, "एक मासूम लड़की के थप्पड़ मारने की इस समय इतनी ही सजा काफी है। तुम्हारे चेहरे पर ऐसे दाग छोड़े जा रहा हूं जो उम्र-भर बाकी रहेंगे।"

सोनिया और विनोद ने देखा कि मेजर का क्रोध अभी तक शांत नहीं हुआ है। मेजर ने पतलून की जेब में से अपना रिवाल्वर निकाल लिया, फर्श पर पड़ा हुआ मैनेजर अभी तक कांप रहा था। उसके पास पहुंचकर मेजर ने उसके सिर पर रिवाल्वर का दस्ता दे मारा। वह बेचारा एक ही वार में अपनी चेतना खो बैठा।

सोनिया के होश-हवास अब बिल्कुल ठीक हो चुके थे। उसने धीमे स्वर में कहा, "मैं जब यहां से रक्षा शाहानी के बंगले के पास पहुंची तो मुझे यह मालूम करने में ज्यादा दिक्कत न हुई कि सेठ शाहानी वहां थे या नहीं। उनकी वही कार बंगले के पोर्टिको में खड़ी थी जिसमें बैठकर वह उस ऐंग्लोइंडियन लड़की के घर चेम्बूर में गए थे। अब मैं बंगले के फाटक से काफी दूर हटकर एक पेड़ के नीचे कार रोककर सेठ शाहानी का इन्तजार करने लगी। मुझे ज्यादा देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा। सेठ शाहानी अपनी कार में फाटक से बाहर निकले। मैं उनके पीछे-पीछे हो ली। मैंने उनकी और अपनी कार के बीच इतनी दूरी रखी कि वह किसी भी तरह मेरी आंखों से ओझल न हो सकें। सबसे पहले वे चेम्बूर में उस ऐंग्लो-इण्डियन लड़की के पास गए। वहां से वह साइन पहुंचे। वहां बस्ती से लगभग आधे मील दूर एक सुन्दर काटेज थी। वह उसके अन्दर चले गए। एक घंटे बाद वहां से बाहर आए। मैं अभी उनका पीछा कर रही थी।" सोनिया सांस लेने के लिए रुकी।

"एक बात मुझे बड़ी अजीब दिखाई दे रही है। आपने शायद उसपर ध्यान न दिया हो। लेकिन वह मेरे दिमाग में बराबर खटक रही है।" विनोद मल्होत्रा ने

मेजर से कहा।

"कौन-सी बात ?"

"यही कि जब चौधरी हरिवंशराय की हत्या कर दी गई थी, तो उसका पता चलने के बाद सेठ शाहानी इसी ऐंग्लोइन्डियन लड़की के पास गए थे। और अब फ्रेंकलिन की हत्या की खबर सुनकर वह फिर चेम्बूर में उस ऐंग्लोइण्डियन लड़की से मिलने गए।"

"हां, यह एक अच्छा प्वाइंट है जिस पर तुमने ध्यान दिया है। इसकी जांच करनी होगी।"

सोनिया ने काफी का आखिरी घूंट भरने के बाद कहा, "साइन से सेठ शाहानी भांडरप की ओर रवाना हुए। वहां पहुंचकर मुझे संदेह हुआ कि एक कार मेरा भी पीछा कर रही है। मेरा संदेह तब विश्वास में बदल गया जब वह कार मेरा रास्ता काटकर आगे निकल गई और उसने मुझे रास्ता देना बन्द कर दिया। उस कार के ड्राइवर ने अपनी कार की स्पीड धीमी कर दी, और जब मैं उस कार का रास्ता काटकर आगे निकली तो मैंने देखा कि सेठ शाहानी की कार मेरी नजरों से ओझल हो चुकी थी।"

"मैं समझता हूं कि सेठ शाहानी को तुम्हारे पीछा करने से बचाने के लिए लिए ही यह चाल चली गई थी। आपका क्या खयाल है ?" विनोद मल्होत्रा ने पूछा।

"बहुत मुमकिन है कि साइन के काटेज से रवाना होने के बाद सेठ शाहानी को पता चला हो कि उनका पीछा किया जा रहा है।"

"यह असम्भव है," विनोद मल्होत्रा ने कहा, "सड़क पर कार में जाते हुए सेठ शाहानी अपने साथियों को अपनी सहायता करने के लिए कैसे पुकार सकते थे ?"

"यह कोई बड़ी बात नहीं। सेठ शाहानी की कार में बड़ा ट्रांसमीटर होगा। इसकी जांच करनी होगी।" मेजर ने कहा। और फिर विनोद मल्होत्रा की ओर मुस्कराते हुए अर्थपूर्ण नजरों से देखा, "क्या आप चोर का काम कर सकते हैं ?"

"आप खुलकर अपनी बात समझा दीजिए।"

"मैं चाहता हूं कि आज रात आप चोरी-छिपे सेठ शाहानी के बंगले में जाएं। मैं आपको मास्टर चाबी दे दूंगा, और एक छोटी टार्च भी, जिसकी रोशनी बड़ी टार्चों से अधिक तेज होगी। आप सेठ शाहानी का गैरेज खोलें। उनकी मोटर का मुआइना करें कि उसमें क्या-क्या नई मशीनें और पुर्जे लगे हुए हैं।"

"इससे तो स्पष्ट हो जाता है कि क्लब के उन आदमियों से सेठ शाहानी का गहरा सम्बन्ध है।" विनोद ने कहा, "क्या उन लोगों को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता ?"

"मैं समझता हूं कि अब वे वहां नहीं होंगे और कुछ दिनों तक क्लब में आएंगे ही नहीं।" मेजर ने कहा।

"चलो न सही; लेकिन अब इतना मसाला जमा हो चुका है कि सेठ शाहानी से कानूनी तौर पर पूछ-ताछ की जा सकती है।"

"हां, लेकिन सबसे पहले हमें सेठ शाहानी के इन ठिकानों पर पहुंचना चाहिए जहां वह जाते हैं।"

पागल युवती

सोनिया मेजर बलवन्त की कार में उसके साथ अगली सीट पर बैठी थी। वह मेजर का मार्गदर्शन करती जा रही थी। एक घंटे के बाद वह चेम्बूर की बस्ती में पहुच गए। और जब उस बिल्डिंग के पास पहुंचे जिसके एक फ्लैट में ऐंग्लोइण्डियन लड़की रहती थी, तो सोनिया ने मेजर के बाजू पर अपना हाथ रखकर उसे कार रोकने का इशारा किया। उस फ्लैट में हलकी-सी रोशनी थी।

मेजर ने उस फ्लैट के सामने के दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक दी। सोनिया उसके पीछे थी। कमरे के अन्दर कदमों की चाप सुनाई दी और फिर चटखनी नीचे गिरने की आवाज़ सुनाई दी और किसीने बहुत थोड़ा-सा दरवाजा खोला।

मेजर ने देखा कि उसके सामने एक जवान और सुन्दर ऐंग्लोइण्डियन लड़की खड़ी थी। उसने अंग्रेजी में पूछा, "क्या मैं पूछ सकती हूं कि मुझे किससे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है?"

"मैं एक पुलिस अफसर हूं।" मेजर ने कहा और अपना आइडेण्टिटी कार्ड जेब से निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिया।

ऐंग्लोइण्डियन लड़की ने दरवाजे में खड़े-खड़े ही वह कार्ड पढ़ा, लेकिन उसके चेहरे का भाव वैसा ही रहा। "क्या आपको विश्वास है कि आप सही पते पर आए हैं? क्या आप मुझसे मिलने आए हैं? क्या आप मेरा नाम जानते हैं?"

"आपके नाम से तो मैं परिचित नहीं, लेकिन सेठ सूरजनारायण शाहानी के नाम से जरूर परिचित हूं।"

"वह सकुशल तो हैं?" उस लड़की ने घबराकर पूछा।

"अभी तक तो कुशल से हैं।" मेजर ने कहा।

"कृपया अन्दर तशरीफ ले आइए।" ऐंग्लोइण्डियन लड़की ने दरवाजा पूरी तरह खोल दिया, और मेजर और सोनिया उसके फ्लैट में चले गए। फ्लैट बड़े सलीके से सजाया गया था। ऐंग्लोइण्डियन लड़की ने उन्हें बैठने का इशारा किया।

"कहिए आप क्या पिएंगे—वाइन, ह्विस्की या बीयर?"

"हम इनमें से कोई चीज नहीं पिएंगे। आपकी कृपा के लिए धन्यवाद। आप केवल मेरे कुछ सवालों के जवाब देने की तकलीफ कीजिए। सेठ शाहानी से आपका क्या सम्बन्ध है?"

"आपने बहुत ही सीधा सवाल कर दिया है, और इसका तकाजा है कि इसका सीधा ही जवाब दिया जाए। मैं आपके सवाल के जवाब में पहले एक सवाल आपसे पूछने की अशिष्टता करती हूं। इस समाज में एक विधवा, जो स्वतन्त्र जीवन बिताना चाहती हो और अपने वैधव्य को स्वीकार करने के लिए तैयार न हो आखिर कौन-सा रास्ता अपना सकती है?"

"वह अपना जीवन बिताने के लिए कोई भी अच्छा काम तलाश कर सकती है।" मेजर ने उत्तर दिया।

"अच्छा काम? अच्छे काम के लिए भारी कीमत देनी पड़ती है। मैं आपसे कोई पर्दा नहीं रखना चाहती। मैं सेठ शाहानी की रखैल हूं।"

ऐंग्लोइण्डियन लड़की ने अपनी बात को और आगे बढ़ाया। वह बोली, "मेरा नाम मिसेज वाटसन है। मैं बंगलौर की रहने वाली हूं। जिस तरह एक शिकारी के तरकश में बहुत-से तीर होते हैं, उसी तरह एक कुशल रखैल के दामन में बहुत-सी रंगीनियां और दिलबहलाव की चीजें होती हैं। वरना वह ज्यादा देर तक किसी की रखैल बनी नहीं रह सकती। मैं सेठ शाहानी को जीवन-भर प्रसन्न रख सकती

हूं। सेठ साहब बहुत ही भावुक और संवेदनशील व्यक्ति हैं। जरा-से भी चिन्तित या परेशान होते हैं तो दौड़े हुए मेरे पास चले आते हैं। और उनको हर बार एक नया प्यार देती हूं।"

"आपका इस सम्बन्ध के अतिरिक्त सेठ जी से और कोई सम्बन्ध तो नहीं है?"

"बिल्कुल नहीं। मैं जो चाहती हूं मुझे मिल जाता है; और वे जो कुछ चाहते हैं उन्हें मिल जाता है। यह एक सीधा और बेदाग रिश्ता है। यही वजह है कि अभी तक टूटा नहीं है। मैं सेठ साहब ही से मिलने जा रही थी कि आप आ गए।"

"आप उनसे मिलने कहां जा रही हैं?" मेजर ने पूछा।

"मैन्स पैराडाइज क्लब में।"

"आपको बड़ी तकलीफ हुई, इसके लिए हमें क्षमा कीजिएगा। अब हमें इजाजत दीजिए। सेठ जी आपका इन्तजार कर रहे होंगे।"

पौन घंटे के बाद वे उस इच्छित काटेज के सामने पहुंच गए। वह काटेज अलग-थलग बना हुआ था। उसके अन्दर बहुत ही मद्धम रोशनी थी। एक गोरखा चौकीदार मेजर के पास आकर रुक गया और बोला, "आप यहां कैसे आए हैं?"

"हमें सेठ शाहानी ने भेजा है। हम थोड़ी देर तक यहां रहेंगे और फिर चले जाएंगे।" मेजर ने कहा। उसका तीर निशाने पर बैठा। गोरखा चौकीदार टहलता हुआ काटेज के अंधेरे कोने में चला गया।

मेजर ने काटेज के दरवाजे पर जाकर दस्तक दी। एक बुढ़िया ने, जो सादा कपड़े पहने हुए थी, दरवाजा खोला। वह एक अजनबी नौजवान और एक अजनबी औरत को सामने पाकर हैरान रह गई।

इतने में काटेज के अन्दर एक औरत की चीखती हुई आवाज गूंज उठी, "मुझे बर्बाद करके तुम जाओगे कहां? मैं तुम्हें भी बर्बाद कर दूंगी। मैं महाकाली हूं। मेरे एक हाथ में खांडा और एक हाथ में खप्पर है। मेरे सैकड़ों हाथ हैं। मैं तुम्हारा सिर काटकर इस खप्पर में रख लूंगी और तुम्हारा खून पी जाऊंगी।" बूढ़ी औरत पीछे हटकर इस आवाज को सुनने लगी और जब अन्दर कुछ खामोशी हो गई तो उसने मेजर की ओर मुंह फेरते हुए कहा, "जवानी दीवानी हो जाए तो फिर उसे कौन संभाल सकता है; इसपर दौरा पड़ता है तो ऐसा मालूम पड़ता है जैसे गंगा चढ़ गई हो और गरज रही हो।...आप कौन हैं?"

"मैं डाक्टर हूं। मुझे सेठ शाहानी ने यहां भेजा है।" मेजर ने अवसर और परिस्थिति भांपते हुए कहा।

"आप डाक्टर हैं? आपके पास कोई बैग तो है नहीं! और फिर जो डाक्टर आते हैं वे सुबह को ही आया करते हैं।"

"मैं नया डाक्टर हूं।" मेजर ने कहा।

"हां, मैंने सेठ जी से आज ही कहा था कि जिस डाक्टर को वह भेज रहे हैं, उसकी दवा से कोई फायदा नहीं हो रहा। लेकिन आपके साथ यह कौन है?" बुढ़िया ने सोनिया की ओर इशारा किया।

"यह नर्स है।"

"अच्छा तो आइए। आप भी उसे देख लीजिए। बेचारी तीन दिन से चीख-चीखकर अपनी बीमारी को और भी बढ़ा रही है।"

सोनिया और मेजर काटेज के अन्दर पहुंच चुके थे।

और एक कोने से फिर चीखती हुई आवाज उभरी, "मुझे लूटकर अब तुमने

से खिसक जाना चाहते हो ? मैंने तुम्हारे चारों ओर लोहे के कांटेदार तारों का जाल बुन दिया है। तुम इससे निकल नहीं सकते। समय आने पर तुम्हें गढ़े में आधा दफना दिया जाएगा। तुमपर शिकारी कुत्ते छोड़ दिए जाएंगे। वे तुम्हारी एक-एक बोटी नोच लेंगे। हा-हा-हा-हा, तुम तड़पोगे और मेरा कलेजा ठंडा होगा।"

"राम-राम" बुढ़िया बोली "न जाने किसको योंही पानी पी-पीकर कोसती रहती है। सेठ जी आते हैं, बहुत तसल्ली देते हैं. मगर कुछ मिनट चुप रहकर फिर शेरनी की तरह दहाड़ने लगती है। मैं तो तंग आ गई हूं। मैंने सेठ जी से कह दिया है कि यह लौंडिया मेरे वश की नहीं। मुझे छुट्टी दो। किसी और को यहां ले आओ। वह तो शुक्र है कि इसे बड़े पलंग के पाये से बांध दिया गया है, वरना यह लौंडिया तो मुझे कच्चा चबा जाती। आइए डाक्टर साहब, आइए।"

बूढ़ी औरत उनको एक कमरे में ले गई जिसमें एक बहुत बड़ा और भारी पलंग पड़ा था। उसके एक पाये से बीस-बाईस साल की एक लड़की की दोनों टांगें लोहे की जंजीरों से बंधी हुई थीं। उसकी शक्ल-सूरत बता रही थी कि वह एक बंगाली लड़की है। उसके बदन के सांवले रंग में हल्का गुलाबीपन था जिसने उसके सौंदर्य में चार चांद लगा दिए थे। अचानक मेजर की निगाह उसके पेट पर पड़ी जो उसकी सादी रेशमी साड़ी के नीचे से झलक रहा था। वह गर्भवती थी। वह सिर झुकाए बैठी थी, और उसने अपनी बंधी हुई टांगें फैला रखी थीं और पलंग के पाये से पीठ लगाकर बैठी थी। उसने धीरे-धीरे अपनी आंखें ऊपर उठाईं, उसकी आंखें बहुत डरावनी थीं। मेजर और सोनिया को देखकर उसका खिंचा हुआ चेहरा नर्म पड़ गया। लेकिन जब उसकी निगाह बुढ़िया पर पड़ी तो वह एक फुरफुरी-सी लेकर उठ खड़ी हुई।

"तुमने मुझे कमजोर समझ रखा है ? मैं कमजोर नहीं हूं। मैं अब भी तुम्हारा कीमा बना सकती हूं। मटर कीमा और उसमें हरी मिर्च। मैं तुम्हारा कीमा बनाकर खाऊंगी तो कितना मजा आएगा !"

मेजर ने एक अजीब बात देखी। देखने में तो वह लड़की पागल दिखाई दे रही थी, लेकिन उसकी बातें पागलों जैसी ऊटपटांग नहीं थीं शायद उसे कोई गहरा सदमा पहुंचा था। और जिस वातावरण में उसे रखा गया था वह उसके सदमे को दूर करने के लिए उपयुक्त न था। मेजर को एक बहुत ही अच्छी बात सूझी। उसने बुढ़िया की ओर मुंह फेरकर कहा, "इसका पागलपन बहुत बढ़ चुका है। इसे मुझे अपने अस्पताल में ले जाना होगा।"

"अगर वहां जाकर यह ठीक हो जाए तो इसमें क्या बुराई है, डाक्टर साहब ! इसे ले जाए, मेरी जान मुसीबत से छूट जाएगी। हो सकता है ठीक हो जाए।" बुढ़िया ने कहा।

"अगर सेठ जी आएं तो उनसे कह देना कि डाक्टर पाठक उसे अपने साथ ले गए हैं।" यह कहकर मेजर ने अपनी जेब से मास्टर चाबी निकाली और उस बंगाली लड़की के पैरों में पड़ी बेड़ियां खोल दीं। बंगाली लड़की ने मेजर की ओर फिर मुलायम नजरों से देखा। अब मेजर को विश्वास हो गया कि सचमुच उसपर किसी सदमे का असर है, क्योंकि अगर वह पागल होती तो इतनी शिष्टता न दिखाती कि अपने मुक्तिदाता को मुलायम नजरों से देखती।

मेजर ने उसे अपने साथ आने का इशारा किया तो वह पहले तो हिचकिचाई, लेकिन जब सोनिया ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया तो वह चुपके से साथ हो ली। ठीक उसी समय मेजर को एक खयाल आया कि यह बंगाली लड़की कहीं अभिनय तो नहीं करती रही थी ? विशेष रूप, अपने छुटकारे के लिए ? छुटकारा

पाने के बाद कोई तूफान तो खड़ा न कर देगी ?

फिर भी मेजर हर तरह का खतरा झेल लेने के लिए तैयार हो गया। काटेज से निकलते हुए बंगाली लड़की मुंह में कुछ बड़बड़ाती रही दांत किटकिटाती रही। लेकिन अब वह जोर-जोर से चीख नहीं रही थी। सोनिया ने उसकी कमर में हाथ डाल रखा था।

मेजर ने उसे और सोनिया को कार की पिछली सीट पर बैठाया और कार का इन्जन स्टार्ट करते हुए अपनी गुप्त भाषा में सोनिया से कहा कि वह सावधान रहे। यह लड़की कहीं दुश्मन की साजिश का कोई हिस्सा न हो।

मेजर बलवंत बंगाली लड़की को अपने गुप्त भवन में ले गया। उसने अपने नौकर को हिदायत कर दी कि वह एक पल के लिए भी इस लड़की को नजरों से ओझल न होने दे। अगर कहीं काम से जाए तो इस लड़की के कमरे का दरवाजा बाहर से बन्द करके जाए।

और इसके बाद जब वह दफ्तर पहुंचा तो रात के ग्यारह बज चुके थे। मेजर बोला, "सोनिया, अब तुम जाओ, तुम्हें आराम की सख्त जरूरत है।" सोनिया चली गई।

मेजर ने कपड़े बदले। तभी नौकरानी रात का खाना ले आई। मेजर ने अभी खाना शुरू किया ही था कि टेलीफोन की घंटी बज उठी। मेजर ने रिसीवर उठाकर कहा, "हैलो, मेजर स्पीकिंग।"

"विनोद दिस साइड", दूसरी ओर से आवाज आई. "आपका अनुमान ठीक था। हालांकि सेठ जी की कार में ट्रांसमीटर नहीं था, लेकिन उसे फिट करने की जगह मौजूद थी, जिस तक दो-तीन तार बैटरी से ले जाए गए हैं। मेरा विचार है कि जान-बूझकर आज ही ट्रांसमीटर कार में से निकाल लिया गया है।"

अनोखा व्यापारी

सुबह के साढ़े आठ बजे थे। सोनिया और मेजर सेठ सूरजनारायण शाहानी की बैठक में बैठे हुए सेठ जी के आने की राह देख रहे थे। मेजर ने अपना विजिटिंग कार्ड नौकर के हाथ अन्दर भेज दिया था, और नौकर पूरे बीस मिनट बाद जवाब लेकर लौटा था। जवाब का इन्तजार करते हुए सोनिया ने मेजर से कहा था, "इतनी देर का आखिर मतलब क्या हो सकता है ?" मेजर ने जवाब दिया था, "सेठ जी हमसे मिलने के लिए तैयार नहीं थे। शायद वे ऐसी चीजें हटा रहे हों जिन पर हमारी निगाह नहीं पड़नी चाहिए।" बीस मिनट का इन्तजार उनके लिए आश्चर्यजनक भी था और परेशान करने वाला भी।

सेठ जी अपने चेहरे पर व्यापारियों वाली मुस्कराहट लिए ड्राइंग रूम में पहुंचे।

"नमस्कार, नमस्कार !" सेठ जी ने बड़े मंजे हुए अन्दाज में कहा और सोफे पर पालथी मारकर बैठ गए।

उनकी नजर सोनिया पर जमी हुई थी। वह नजर क्या थी एक तराजू थी, जिस पर सोनिया को तोला जा रहा था। वह बहुत होशियार थे। सोनिया की ओर ज्यादा देर तक देखना नहीं चाहते थे। कुछ देर बाद उन्होंने मेजर से कहा, "आप शायद चौधरी हरिवंशराय की हत्या के सिलसिले में यहां आए हैं ?"

"जी हां, और फ्रैंकलिन की हत्या के सिलसिले में भी।"

"दोनों ही बड़ी दुखद घटनाएं हैं। चौधरी साहब बड़े नेक आदमी थे। उनका कोई दुश्मन न था। और मेरी बेटी का शोफर फ्रैंकलिन, भला उसने किसी का क्या

बिगाड़ा था कि उसे भी मार डाला गया !"

"फ्रैंकलिन आपकी बेटी का सिर्फ शोफर ही तो नहीं था।" मेजर ने यहां से आक्रमण आरम्भ किया।

"क्या मतलब ?" सेठ शाहानी ने कुछ नाराजगी से पूछा।

"मैं कोई दोष नहीं लगा रहा", मेजर ने दृढ़ता से कहा, "फ्रैंकलिन आपका बेटा और आपकी बेटी का भाई भी तो था।"

ऐसा लगा जैसे सेठ शाहानी पर बिजली गिर पड़ी। उन्होंने तीखी नजरों से मेजर की ओर देखा और फिर बोले, "ऊंह, अगर मैं यह मान भी लूं कि फ्रैंकलिन मेरा बेटा था, तब भी इससे क्या होता है ! बाप अपने बेटे की हत्या नहीं करता।"

मेजर ने कहा, "मैंने यह रहस्य इसलिए खोला कि आप जान जायें कि झूठ बोलना आपके लिए बहुत मंहगा पड़ेगा।" सेठ शाहानी निरुत्तर हो गए। वह घबरा गए थे और मेजर यही चाहता था कि वे घबरा जायें।

"कहीं ऐसा तो नहीं कि आप मुझे हत्यारा समझ रहे हों ?"

"अभी तक तो मैं आपको कुछ भी नहीं समझ रहा। इसका दारोमदार आपके सच बोलने पर है।" मेजर ने अब बहुत अच्छी पोजीशन लेते हुए कहा, "क्या आप चौधरी साहब की हत्या से पन्द्रह मिनट पहले उनसे मिले थे ?"

"नहीं, मैं", सेठ जी ने हकलाते हुए कहा, "हां, मैं उनसे मिला था।"

"तो फिर आप अपने वकील से झूठा हलफनामा लिखवाकर क्यों लाए थे ?"

"असल में मैं डर गया था, क्योंकि मुझे पता चला था कि चौधरी साहब से मेरी मुलाकात के थोड़ी देर बाद ही उनकी हत्या कर दी गई थी। मैं यह नहीं चाहता था कि किसी को मालूम हो कि हत्या से कुछ देर पहले ही मैं उनसे मिला था।"

"आप उस रात पार्टी से साढ़े दस बजे चले आए थे, फिर आप दोबारा वहां कब पहुंचे और क्यों पहुंचे ?"

"मैं ग्यारह बजे वहां पहुंचा। पार्टी में उनसे कोई बात नहीं हो सकती थी। और मुझे उनसे एक जरूरी बात करनी थी।"

"वह जरूरी बात क्या थी ?"

"मैं उनसे यह कहना चाहता था कि उन्होंने जो रुपया मांगा, उसका इन्त-हो सका।"

"आप झूठ बोल रहे हैं। उनसे आपकी जो बातचीत हुई थी वह सारी की ी कलमबन्द की ा चुकी है। आपने उनसे कहा था, 'चौधरी साहब, मैं तुम्हें खबरदार किए किए देता हूं कि उसकी हालत बहुत नाजुक है और वह बहुत बौख-लाई हुई है। मैं सच कहता हूं, अगर तुमने कोई इन्तजाम न किया तो तुम पर मुसीबत का ऐसा पहाड़ टूटेगा कि तुम सारी उम्र पछताओगे।'"

मेजर के मुंह से अपनी उस रात की बात का एक-एक शब्द सुनकर सेठ जी दंग रह गए। मेजर ने उनके आश्चर्य का लाभ उठाते हुए कहा, "अगर आप चाहें तो मैं चौधरी साहब से आपकी बातचीत योंही जबानी सुना सकता हूं। देखिए, मैं एक बार फिर आपको यह चेतावनी देता हूं कि झूठ बोलने से कतई कोई लाभ न होगा। आप घाटे में रहेंगे। बताइए, किस औरत की हालत नाजुक थी ?"

"एक बंगाली लड़की सुधा बनर्जी की।"

मेजर बंगाली लड़की का नाम सुनकर चौंका, मगर उसने अपना आश्चर्य प्रकट न होने दिया, "उसकी नाजुक हालत का चौधरी साहब से क्या सम्बन्ध था ? और वह बंगाली लड़की किस नाजुक हालत में थी ?"

"वह गर्भवती थी। और उसे इस हालत में पहुंचाने के जिम्मेदार चौधरी

साहव थे ।"

मेजर आश्चर्य को दवा न सका, "चौधरी साहव जिम्मेदार थे?"

"जी हां, आप इसे वलात्कार या सतीत्व-भंग का केस कह सकते हैं। [illegible] लड़की पर उसके हाथ-पैर वांधकर अत्याचार किया गया। वह [illegible] थी। जिस दिन यह घटना हुई उसी दिन से उसका मानसिक सन्तुलन बिगड़ [illegible] चौधरी साहव डर के मारे उसका इलाज कराते रहे। लेकिन उस लड़की को [illegible] सदमा पहुंचा था। और उसे जव यह मालूम हुआ कि उसका पांव भारी हो गया तो उस पर पागलपन के दौरे पड़ने लगे। चौधरी साहव ने राय दी कि वे डाक्टर अर्देशर से गर्भपात करवा सकते हैं।"

"डाक्टर अर्देशर ?"

'जी हां, डाक्टर अर्देशर। आप शायद जानते नहीं हैं कि डाक्टर अर्देशर को अपना नर्सिंग-होम खोलने के लिए चौधरी साहव ने ही आर्थिक सहायता दी थी और शायद आप यह नहीं जानते होंगे कि गर्भपात का धन्धा ही डाक्टर अर्देशर की आमदनी का सवसे वड़ा जरिया है।"

यह जानकर मेजर और अधिक हैरान हुआ। अव मेजर की हैरानी का फायदा सेठ जी ने उठाया और डाक्टर अर्देशर की कहानी को लम्वा करते हुए वोले "चौधरी साहव गर्भपात के केस डाक्टर अर्देशर के यहां भिजवाते थे। डाक्टर को काफी पैसा दिलवाते थे और खुद उस लड़की से हलफिया वयान लिखवा लेते थे और इस तरह वह लड़की उनके चंगुल में फंस जाती थी। फिर इस हलफिया वयान के आधार पर उस लड़की को ब्लैकमेल करते थे।" मेजर का आश्चर्य वढ़ता ही जा रहा था। अचानक उसे ध्यान आया कि सेठ अपना पल्ला छुड़ाने के लिए उसे एक दूसरे रास्ते पर लगा रहे हैं। वह समय पर संभल गया। "इन सूचनाओं के लिए धन्यवाद, आप सुधा वनर्जी की वात कीजिए।"

"सुधा वनर्जी गर्भपात कराने के लिए तैयार नहीं हुई, क्योंकि वह डरती थी। उसे मनाने में दो और महीने वीत गए। उसका पेट वढ़ने लगा तो वह पागल हो गई। मैं चौधरी साहव का दोस्त था। मैं उसी के लिए वात करने उस रात चौधरी साहव के पास गया था कि वे जल्दी से कोई उपयुक्त प्रवन्ध करें। चौधरी साहव पिए हुए थे, जरूरत से ज्यादा पिए हुए थे। उन्होंने मेरी वात पर ध्यान नहीं दिया, इसलिए मुझे धमकी देनी पड़ी।"

मेजर देख रहा था कि सेठ के वयान में कुछ सच्चाई जरूर थी, लेकिन उसमें एक गांठ साफ दिखाई दे रही थी। मेजर ने उस गांठ को अभी खोलना ठीक नहीं समझा। वह वोला, "क्या फ्रैंकलिन को चौधरी साहव के वंगले के वाग में आपने पहरेदार वनाया था ?"

"क्या फ्रैंकलिन वहां पहरा देता रहा था?" सेठ जी ने आश्चर्य से कहा, "मुझे इसका पता नहीं।"

मेजर ने देखा कि सेठ जी के इस जवाव से एक गांठ और पड़ गई थी।

"जी हां, फ्रैंकलिन वहां कम-से-कम तीन घंटे तक पहरा देता रहा था।" सेठ जी इस वात पर वहुत हैरान हुए।

"अव मैं आपसे एक वहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछना चाहता [illegible] असिस्टैण्ट सोनिया है", मेजर ने सोनिया की ओर इशारा करते [illegible] जिनको वड़े ध्यान से देखते रहे हैं। आप इन्हें पहचान गए होंगे [illegible] आपका पीछा किया था। आपने अपनी कार में लगे हुए ट्रांसमीटर से [illegible] हुए गुंडों को सूचना दी कि आपका पीछा किया जा रहा है। वे गुंडे [illegible]

आपके क्लब में ले गये। उन्होंने इन्हें खूब तकलीफ पहुंचाई। मैंने इनका बदला लिया। आपके वे तीनों गुंडे घायल पड़े होंगे। उनकी मरहम-पट्टी हो रही होगी। आपने ये गुंडे क्यों पाल रख हैं? आपने अपनी कार में ट्रांसमीटर क्यों लगवा रखा है? आपके क्लब में क्या धन्धा होता है?" मेजर ने रौब से कहा।

सवाल काफी टेढ़े थे। सेठ जी कुछ सोच में पड़ गये। फिर उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, "मैं नहीं जानता था कि आप इतनी थोड़ी देर में मेरे बारे में इतनी बातें मालूम कर चुके हैं।" सेठ ने कनखियों से सोनिया की ओर देखते हुए कहा, "सबसे पहले तो मुझे सोनिया से माफी मांगनी है। मैंने अपने आदमियों को कहा था कि वे मुझे पीछा किए जाने से छुटकारा दिलायें। उन्होंने जो दुर्व्यवहार इनके साथ किया वह अपनी इच्छा से किया। मैं समझता हूं कि उन्हें अपनी इस मूर्खता का उचित दण्ड मिल गया है।" इसके बाद सेठ जी ने मेजर की ओर मुंह फेरकर कहा, "मैं आपसे रत्ती-भर झूठ नहीं बोलूंगा। धनवान के सामने दोनों हाथों से धन बटोरने के सिवा और कोई उद्देश्य नहीं होता। उसे अपना यह उद्देश्य पूरा करने के लिए एक ही समय में कई तरह के व्यापार और धन्धे करने पड़ते हैं ताकि एक कारोबार में घाटा हो तो दूसरे कारोबार से पूरा कर लिया जाए। मेरी एक फैक्टरी है और एक क्लब है। आजकल सारी दुनिया में औद्योगिक झगड़े चल रहे हैं, लेकिन होटल और क्लब के धन्धे में फायदा है। क्लब खोलने के लिए कुछ गुंडों को पालना जरूरी होता है। और उनकी बेहूदगी भी सहनी पड़ती है। मैं जानता हूं कि मेरे इस क्लब को अनैतिक कामों के लिए भी प्रयोग किया जाता है। वहां जो लड़कियां काम करती हैं उन्हें कालगर्ल बना दिया गया है। यानी उनका सौदा फोन पर तै किया जाता है। मुझे मेरा मुनाफा मिल जाता है। इसलिए आंखें चुरानी पड़ती हैं। क्लब का कारोबार खतरे से भरा है। न जाने किस समय आपका गुंडा आपसे नाराज हो जाये और आप पर हमला कर बैठे। इसलिए मुझे अपनी मोटर में ट्रांसमीटर फिट करवाना पड़ा।" सेट जी ने सांस लेते हुए कहा, "मेरी बस इतनी-सी कहानी है। मैं हत्यारा नहीं हूं, एक व्यापारी हूं।"

"आपके इस बयान से मैं सन्तुष्ट तो जरूर हूं, लेकिन पूरी तरह नहीं। अब आपसे आखिरी सवाल पूछता हूं। क्या आप अपनी बेटी को सेठ चांदीराम कटारिया से शादी करने पर मजबूर करते रहे हैं?"

"मैंने उसे केवल राय दी थी। रक्षा एक धनी बाप की बेटी है और वह धन की शक्ति से परिचित है। लेकिन वह कुछ बेवकूफ भी है। सेठ चांदीराम कटारिया से शादी कर ले तो हमारे सारे पाप धुल जाते हैं। मेरे लिए क्लब जैसा खतरनाक व्यापार करने की जरूरत नहीं रहती। सेठ कटारिया ज्यादा से ज्यादा छ-सात बरस और जिएंगे। इसके बाद रक्षा अपार सम्पत्ति की मालिक बन जाएगी। इतना धन पाने के बाद वह अपना हर अरमान पूरा कर सकती है। लेकिन इतनी-सी बात उसकी समझ में नहीं आ रही।"

"क्या रक्षा ने सेठ कटारिया को साफ जवाब दे दिया है?"

"नहीं, अभी साफ जवाब तो नहीं दिया है, लेकिन उसकी टालमटोल इन्कार के बराबर ही है।"

सेठ ने विदा के समय उठकर मेजर से बड़े तपाक से हाथ मिलाया और सोनिया को हाथ जोड़कर नमस्ते की।

चोरी

अशोक ने सोनिया के साथ मेजर को कार से उतरते देखा तो उसकी बांछें खिल गईं। वह चौधरी साहब के बंगले की ऊपरी मंजिल पर खड़ा था। उसने दूर से हाथ हिलाकर मेजर और सोनिया का स्वागत किया।

मेजर और सोनिया ऊपर पहुंचे तो अशोक ने बड़ी बेकरारी से कहा, "एक छोटी-सी घटना प्रकाश में आई है। वह कहां तक महत्त्वपूर्ण है इसका अनुमान आप ही लगा सकते हैं। "कल यहां एक चोर आया था।"

"चोर ऊपर आया ?"

"जी हां। चौधरी साहब के सामान को खंगालता रहा।"

"क्या कोई चीज चुराई भी गई है ?"

"मैंने चौधरी साहब की बहिन उर्मिल को बुलवाया था। उसने सारा सामान देखकर बताया, "कोई चीज चोरी नहीं गई।"

"हूं", मेजर ने कहा, "तो फिर चोर लेने क्या आया था ?"

"यही तो हैरानी की बात है।" अशोक बोला, फिर उसने अपनी पतलून की जेब में हाथ डाला और मुट्ठी में कोई चीज लिए हुए बोला, "जिस रात चोर आया था उससे अगली सुबह मुझे उसके आने का पता चला था, क्योंकि मैं जब से यहां आया हूं, प्रातः पहला काम यह करता हूं कि चौधरी साहब के कमरे में जाता हूं। मैंने उनके तमाम ट्रंक खुले हुए देखे जिनका काफी सामान बाहर पड़ा हुआ था। एक ट्रंक के पास मुझे यह पड़ा हुआ मिला।" अशोक ने मुट्ठी खोल दी।

"यह तो मोती है।" मेजर ने उसकी हथेली की ओर देखते हुए कहा, और फिर उसने वह मोती उसकी हथेली पर से उठा लिया और उसे बड़े ध्यान से देखने लगा। "यह तो सच्चा मोती है।" यह कहकर मेजर ने मोती सोनिया की हथेली पर रख दिया।

मेजर ने बड़ी हिफाजत के साथ वह मोती जेब में रख लिया।

चौधरी हरिवंशराय के बंगले से निकलकर मेजर फिर किसी दूसरी दिशा में चल पड़ा।

"अब आप कहां जा रहे हैं ?" सोनिया ने पूछा।

"डाक्टर अर्देशर और शोभा से मिलना जरूरी है। तुम्हें याद होगा, मैंने सेठ सूरजनारायण शाहानी से क्या कहा था कि मैं उनके बयान से सन्तुष्ट हूं लेकिन पूरी तरह नहीं। मेरा ख्याल है कि सेठ शाहानी और चौधरी साहब के बीच मिलीभगत थी, वरना सेठ शाहानी को क्या पड़ी थी कि वह सुधा बनर्जी को अपने कॉटेज में पलंग के पाये से बांधकर रखता, और इतना बड़ा खतरा मोल लेता ! मैं इस गुत्थी को सुलझाना चाहता हूं।" और फिर कुछ सोचते हुए मेजर ने कहा, "सोनिया, आज मैं तुमसे बहुत ही घृणित और नीच किस्म की एक्टिंग कराना चाहता हूं।"

"किस किस्म की एक्टिंग कराना चाहते हैं आप ?"

"एक गर्भवती लड़की की।" सोनिया शर्म से सुर्ख हो गई।

डाक्टर अर्देशर मेजर और सोनिया से परिचित नहीं था। मेजर को केवल एक ही डर था कि जब डाक्टर अर्देशर के नर्सिंग होम में पहुंचेंगे तो डाक्टर के कमरे में शोभा की मौजूदगी सारा बना-बनाया खेल बिगाड़ देगी। [illegible]
अपने कमरे में मौजूद होना चाहिए।

भाग्य ने मेजर का साथ दिया। शोभा बाहर लान में न[illegible]
उंड में घुसते ही कार का इंजन बन्द कर दिया था ताकि किसी [illegible]

डाक्टर के पास कोई आया है। संयोग से डा० अर्देशर के नर्सिंग होम के सामने वाले हिस्से में दफ्तर थे। एक कमरे के बाहर दरवाजे पर पीतल की प्लेट लगी हुई थी जिस पर लिखा था—'डा० एन० अर्देशर'। दरवाजे के बाहर सफेद वर्दी पहने एक चपरासी स्टूल पर बैठा था।

मेजर ने चपरासी को एक चिट लिखकर दी जिस पर 'कुंवर हिम्मतसिंह आफ प्रतापगढ़' लिखा और चिट अन्दर भिजवा दी। फौरन ही उन दोनों को अन्दर बुला लिया गया।

डा० अर्देशर लम्बे कद का पारसी था। वह मेजर और सोनिया को देखकर मुस्कराया। उसने बड़ी शिष्टता से उनका स्वागत किया और उन्हें कुर्सी पर बैठने का इशारा करते हुए बोला, "कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

"डाक्टर साहब, आपके पास तो सिर्फ जरूरतमन्द ही आते हैं। आप शायद मुझे नहीं जानते, लेकिन आपसे मेरा अपरोक्ष परिचय है। चौधरी हरिवंशराय आपकी बड़ी तारीफ किया करते थे। उनसे कभी-कभी मैन्स पैराडाइज क्लब में भेंट हो जाती थी।"

"लेकिन यह क्या बात है कि मैंने आपको वहां कभी नहीं देखा?"

"इसे संयोग कह लीजिए। मैं उस क्लब का स्थायी सदस्य हूं, लेकिन वहां बहुत कम जाता हूं। चौधरी साहब ने एक बार आपकी तारीफ करते हुए बताया था कि आप खतरा मोल लेकर भी जरूरतमंदों की सहायता करते हैं। मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता है। चौधरी साहब के साथ तो एक भयानक दुर्घटना हो गई। तीन दिन हुए अखबार में उनकी हत्या की खबर पढ़ी तो कुछ न पूछिए कि दिल पर क्या गुजरा।"

"ऐसी भी क्या बात है? चौधरी साहब का हवाला ही काफी है। आपको मेरी किस तरह की सहायता की जरूरत है?"

"यह बात मैं अलहदगी में कर सकता हूं।"

"तो आप मेरे साथ कन्सल्टिंग रूम में चलिए।" डाक्टर ने कहा और पिछले की ओर बढ़ गया। मेजर भी उसके पीछे हो लिया।

सोनिया अकेली बैठी रही। पांच मिनट के बाद वे दोनों वापस आ गए। दोनों के चेहरे प्रसन्नता से खिले हुए थे।

"आप बिल्कुल निश्चिंत रहिए।" डाक्टर ने कहा, "वैसे मैं यह काम करता नहीं हूं, लेकिन दोस्तों के लिए दुनिया में क्या कुछ नहीं किया जाता!"

"मैं कल चार बजे इनको ले आऊंगा और एक हजार रुपया नकद भी लेता आऊंगा।" मेजर ने कहा।

उसने डाक्टर से हाथ मिलाया ही था, उसी समय शोभा कमरे में आ गई। उसने मेजर और सोनिया को वहां देखा तो हाथ जोड़कर उन्हें नमस्ते की और बोली, "मेजर साहब, आप यहां?"

"मेजर साहब!" डाक्टर ने आश्चर्य से कहा, "क्या मतलब?"

शोभा ने कहा, "डाक्टर साहब, क्या आप इतना भी नहीं जानते? यह मेजर बलवन्त हैं—हमारे देश के विख्यात जासूस, और यह हैं मिस सोनिया—मेजर साहब की असिस्टैण्ट।"

डाक्टर अपनी कुर्सी में धंस गया था। उसकी चेतना जैसे खो गई थी। मेजर ने इस अवसर को उपयुक्त समझा।

"डाक्टर साहब, मैं यहां आपसे कुछ सवाल पूछने आया था। मेरा यहां आने का एक और भी उद्देश्य था। आप जानते हैं कि मेरा यह उद्देश्य [illegible]

मुझे दुःख है कि मुझे अभिनय से काम लेना पड़ा।" इसके बाद मेजर ने सोनिया से कहा, "तुम शोभा जी के साथ लान में जाओ। मैं दस मिनट में आता हूं।"

सोनिया मेजर का मतलब समझ गई। वह शोभा का हाथ पकड़कर उसे बाहर ले गई। डा० अर्देशर अब संभल चुके थे। वह बहुत गुस्सा हो रहे थे कि मेजर ने उन्हें बहुत बड़ा गच्चा दिया था।

"डाक्टर साहब, देखिए। मैं आपको ब्लैकमेल नहीं कर रहा हूं। मैं सचाई के आधार पर आपसे कुछ सवाल पूछ रहा हूं। और यह सचाई बहुत कड़वी है। गर्भपात कराना आपका मुख्य धन्धा है। आप अपने इस धन्धे से चौधरी साहब को ब्लैकमेल में मदद देते रहे हैं। क्या मैं सच कह रहा हूं?" डाक्टर ने कोई जवाब नहीं दिया।

"चुप रहकर आप अपने को मुसीबत में फंसा लेंगे। मेरे सवालों का आपको ठीक-ठीक जवाब देना ही होगा। चौधरी साहब की हत्या की रात होने वाली पार्टी से आप कितने बजे वापस आए थे?"

"पौने ग्यारह बजे।" डाक्टर ने उत्तर दिया।

"किसी बात पर आपकी चौधरी साहब से दुश्मनी तो नहीं हो गई थी?"

"क्या आप मुझे चौधरी साहब का हत्यारा समझ रहे हैं?"

"ऐसे मामलों में हमें हर एक पर संदेह करना पड़ता है।"

"चौधरी साहब से मेरे बहुत अच्छे सम्बन्ध थे। उन्होंने एक सच्चे दोस्त की तरह हमेशा मेरी मदद की थी।"

"नर्सिंग होम खोलने के लिए आर्थिक सहायता भी दी थी।"

"यह बात आपको किसने बताई?"

मेजर ने एक और चालाकी सेकाम लिया और बोला, "सेठ सूरजनारायण शाहानी ने।"

"उस मक्कार और धोखेबाज का नाम आप मेरे सामने न लीजिए। वही तो चौधरी साहब की बर्बादी का कारण था। उसी ने चौधरी साहब को पतन के गड्ढे में उतारा कि बेचारे ब्लैकमेल करने पर मजबूर हो गए। चौधरी साहब दूसरों को ब्लैकमेल किया करते थे, और यह साला शाहानी चौधरी साहब को ब्लैकमेल किया करता था।"

"सेठ शाहानी चौधरी साहब की बर्बादी का कारण कैसे बना?"

"मैन्स पैराडाइज में चौधरी साहब ने आधी पूंजी लगाई थी। वे शाहानी के बराबर के हिस्सेदार थे। लेकिन शाहानी चालाक था। उसने चौधरी साहब को शराब और औरतों का चस्का लगा दिया और इस तरह हजारों रुपये हिसाबों में उनके नाम चढ़ाता रहा। और एक दिन उसने खुल्लमखुल्ला कह दिया कि चौधरी साहब ने जो डेढ़ लाख रुपया लगाया था वह उससे वसूल कर चुके हैं। शाहानी बड़ा मक्कार है। हर महीने खाते पर चौधरी साहब से दस्तखत ले लिया करता था। दस के सौ लिखता था और इस तरह उसने डेढ़ साल में, चौधरी साहब के हिस्से का सफाया कर दिया और अकेला क्लब का मालिक बन बैठा। मैं चौधरी साहब को बहुत समझाया करता था, लेकिन वह गलत रास्ते पर चल पड़े थे। अब उनका इतनी दूर जाकर मुड़ना कठिन था। कभी-कभी तो बेचारे बिल्कुल मोहताज हो जाते थे। अन्त में वह ब्लैकमेल पर उतर आए। मैं मजबूर था। मैं अपने अहसान करने वाले की हर तरह से सहायता करने को तैयार था।"

"अब आप मेरे अंतिम प्रश्न का उत्तर दीजिए। क्या सेठ शाहानी के लिए ऐसा कोई कारण है जिसके आधार पर वह चौधरी साहब की हत्या कर सकते थे?"

मेजर ने पूछा।

"इस बारे में मैं सिर्फ इतना जानता हूं कि सेठ शाहानी को हत्या करने की क्या जरूरत थी ! वह तो चौधरी साहब के लहू की आखिरी बूंद तक निचोड़ चुका था। उनकी जीते-जी हत्या कर चुका था।"

मेजर ने लान में कुछ पलों के लिए शोभा से बा. ीत की। अंजना की कुशलता पूछी। जब वह सोनिया के साथ वहां से चलने लगा तो मेजर ने शोभा से कहा, "अब अगर आप चाहें तो वापस अपने घर जा सकती हैं।" शोभा बहुत खुश हुई।

रास्ते में सोनिया ने मेजर से पूछा, "आपने अभी से शोभा को वापस घर जाने का आदेश क्यों दे दिया ?"

"मैं मंजिल से भटककर गलत रास्ते पर चल रहा था। उम्मीद थी कि उस रास्ते पर चलते हुए मंजिल करीब आ जाएगी। अब पता चला है कि न सिर्फ मंज़िल तक पहुंचने का रास्ता गलत है, बल्कि इस रास्ते पर एक दीवार भी खड़ी हुई है। मैं शोभा को इसलिए वापस घर भेज रहा हूं कि शायद उसके घर वापस आ जाने से बात आगे बढ़े।"

चौधरी हरिवंशराय की मां की उम्र यों तो अस्सी बरस की थी, लेकिन वह शारीरिक रूप में बिल्कुल स्वस्थ थी और उसकी निगाह भी कमजोर नहीं हुई थी। उसका मानसिक संतुलन भी नहीं बिगड़ा था। लेकिन वह बहुत बातूनी हो गई थी।

मेजर धीरे-धीरे उसे राह पर ले आया था। उसने उसके बेटे चौधरी हरिवंशराय की बात कुछ इस ढंग से छेड़ी थी कि बुढ़िया जोश में आ गई और अपने अतीत की हजारों बातों पर रंग चढ़ाने के बाद उसने कहा था, "हरी को तो उसकी किस्मत ने अन्धा कर दिया था, वरना उसका बाप उसके लिए इतनी दौलत छोड़ गया था कि उसकी सात पुश्तें बैठकर खातीं और वह कभी खत्म न होती। इधर बाप ने आंखें बन्द कीं और उधर बेटे ने दोनों हाथों से दौलत लुटानी शुरू कर दी। चार साल में ..के पास अपने हिस्से की कौड़ी न रही। पहली पत्नी इसी गम में मर गई। अब वह मेरे हिस्से पर नजर रखने लगा। पहले तो मैंने अपना जी कड़ा किया, लेकिन मैं मां थी, उसने मुझे वचन दिया कि वह एक-एक कौड़ी को संभालकर रखेगा, तो मैंने अपना आधा हिस्सा उसे दे दिया। उसके पिता अपनी सारी जायजाद तीन हिस्सों में बांट गये थे। तीन बराबर हिस्सों में। एक हिस्सा मुझे, एक हिस्सा मेरी बेटी उर्मिल को और एक हिस्सा हरिवंश को मिला था। मेरा आधा हिस्सा लेने के बाद कुछ दिन तक तो वह ठीक रहा, लेकिन फिर पुराने लच्छनों पर उतर आया। हुआ क्या, मेरा आधा हिस्सा भी पानी की तरह बह गया। अब मैं बचा हुआ आधा हिस्सा कैसे देती ! मुझे भी तो अपनी जिन्दगी के दिन काटने थे। मैं टस से मस न हुई। मैंने सुना है कि हरी उर्मिल से भी रुपया मांगता रहता था। लेकिन वह अभी कुंवारी है, उसके सामने एक लम्बी उम्र पड़ी है। वह भाई को अपना रुपया दे, दे तो खुद कहां जाए ? वह मेरा बेटा था। मुझे उसकी मौत का रंज है। लेकिन मैं तो यह देखती रही हूं कि वह आज से बहुत पहले मर चुका था।"

मेजर अब बुढ़िया की बातों से उकता गया था। उसने कई नई बातें मालूम कर ली थीं। बस इतना ही काफी था।

बीमार लड़की

अगले दिन सुबह दस बजे मेजर के यहां दोस्तों और साथियों की कान्फ्रेंस हुई। मेजर कह रहा था, "मेरे जासूसी जीवन में चौधरी हरिवंशराय की हत्या का केस पिछले तमाम केसों से कहीं अधिक अनोखा केस है। इस घटना से जितने भी व्यक्ति सम्बद्ध हैं वे सबके सब टेढ़े-मेढ़े हैं। उनमें से कोई भी मानवीय और सामाजिक अच्छाइयों के आधार पर पूरा नहीं उतरता। वे नये समाज के उस वर्ग से सम्बन्धित हैं जो सस्ती प्रसिद्धि चाहता है। रातोंरात धनवान हो जाना चाहता है और अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए तमाम नैतिक मान्यताओं को तोड़ देना चाहता है। ये ऐसे लोग हैं जिनमें से कोई भी हत्यारा हो सकता है। लेकिन मजे की बात यह है कि हर व्यक्ति, जिस पर संदेह किया गया, इस बात का दावेदार है कि वह चौधरी साहब का दोस्त या हमदर्द था, शुभचिन्तक था और उनका मददगार था। चौधरी साहब की हत्या करने का उद्देश्य क्योंकि अभी तक मालूम नहीं हो सका, इसलिए हत्यारा मुख्य रूप से इस समाज में सांस ले रहा है। हमें हत्या का उद्देश्य और हत्यारे की खोज के लिए नई योजना बनानी होगी। लेकिन इससे पहले मैं आपकी राय जानना चाहता हूं। एक से दो भले होते हैं। कभी-कभी किसी को ऐसी बात सूझ जाती है जो मार्गदर्शक बन जाती है।"

विनोद मल्होत्रा ने कहा "मैं समझता हूं कि हमें नई योजना बनाने से पहले पागल बंगाली लड़की के ठीक होने का इंतजार करना चाहिए।"

"एक बात आपको समझ लेनी चाहिए कि बंगाली लड़की चौधरी साहब की कातिल नहीं हो सकती। वह तो साइन की काटेज में पलंग के पाये से बंधी पड़ी थी। मैं आपको बता ही चुका हूं कि उसकी हालत अच्छी नहीं है। वह इस योग्य कहां है कि किसी की हत्या कर सके।" मेजर ने विनोद मल्होत्रा से कहा, 'और फिर फ्रैंकलिन की हत्या का मामला भी तो है। उस बंगाली लड़की को फ्रैंकलिन से क्या वैर हो सकता था?"

अशोक ने कहा, "मेजर साहब, यह आप ही का कहना है कि हत्या के मामले में किसी को भी बख्शना नहीं चाहिए, सब पर संदेह करना चाहिए। यह भी तो संभव है कि उसे पलंग से बांधकर रखना केवल एक नाटक हो। मेरा विचार है कि सेठ शाहानी को आरम्भ से ही मालूम था, यानी अपनी बेटी रक्षा शाहानी के घर से निकलते ही मालूम हो गया था कि कोई उसका पीछा कर रहा है, और इसलिए वह जान-बूझकर सोनिया को साइन कॉटेज की ओर ले गया। उसे पता था कि कोई वहां जरूर पहुंचेगा। और जो कोई भी आएगा वह पागल बंगाली लड़की को देखकर उस पर तरस खाएगा। पागल लड़की की रखवाली करने वाली बुढ़िया सेठ जी की उदारता के राग अलापेगी, जिससे लगेगा कि सेठ शाहानी बहुत ही रहमदिल आदमी है कि एक पागल लड़की का इलाज करवा रहा है। असल में यह एक तरह की पेशबन्दी थी। उसे मालूम था कि पुलिस एक दिन जांच-पड़ताल करती हुई उसके पास आएगी। बहुत मुमकिन है कि पुलिस को यह भी मालूम हो जाए कि हत्या की रात को चौधरी साहब और उसके बीच गर्मागर्मी हुई थी। उस समय वह इस बंगाली लड़की का प्रयोग कर सकेगा कि वह इसके कारण चौधरी साहब से नाराज था।"

"मैं अशोक के अनुमानों की प्रशंसा करता हूं। अगर अशोक की बातें मान ली जाएं तो वे उलझी हुई बातें साफ हो जाती हैं। हत्या की रात फ्रैंकलिन की चौधरी साहब के बाग में मौजूदगी, फिर फ्रैंकलिन की हत्या। ऐसा लगता है कि सेठ शाहानी ने पहले ही से फ्रैंकलिन को बाग में तैनात कर दिया था। वह हत्या के

इरादे से ही पार्टी में शामिल हुए थे। यही कारण है कि वह जान-बूझकर पार्टी से जल्दी चले गए और दोबारा वापस आ गए।"

"आप इस समय सेठ चादीराम कटारिया के बयान पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। उसने बताया था कि उसने चौधरी साहब और सेठ शाहानी के बीच होती हुई बातचीत सुनी। सेठ शाहानी चौधरी साहब को धमकी देकर चला गया तो सेठ कटारिया ने चौधरी साहब से बातचीत की।" विनोद मल्होत्रा ने कहा।

"अगर सेठ शाहानी एक बार जाकर फिर आ सकता था तो दूसरी बार जाने के बाद भी तो आ सकता था ?" मेजर ने कहा।

"जरूर आ सकता था।" सोनिया बोली, "इस बात का अन्तिम निर्णय हो चुका है कि दो आदमियों ने मिलकर चौधरी साहब की हत्या की। सेठ शाहानी ने फ्रैंकलिन से मिलकर चौधरी साहब की हत्या की। फ्रैंकलिन बौद्धिक रूप से कमजोर था और एक सरकश नौजवान था। सेठ शाहानी का दिल धड़कता रहा कि पुलिस ने अगर फ्रैंकलिन से बातचीत की, तो फ्रैंकलिन पुलिस के जाल में फंस जाएगा और सारा भेद उगल देगा। इसलिए सेठ शाहानी ने फ्रैंकलिन को भी अपने रास्ते के हटा दिया।"

"मैं सोनिया की राय से पूरी तरह सहमत हूं।" मेजर ने कहा, "घूम-फिरकर नाटक का खलनायक सेठ शाहानी ही बनता है।"

ठीक उसी समय टेलीफोन की घंटी बजने लगी।

मेजर टेलीफोन की मेज के पास गया और रिसीवर उठाते हुए बोला, "हैलो, मेजर दिस साइड।"

"मेजर साहब।" दूसरी ओर से आवाज आई, "मैं डाक्टर सलीम बोल रहा हूं।"

"आप इस समय कहां हैं ?"

"अपने क्लीनिक में।"

"उस बीमार लड़की का क्या हाल है ?" मेजर ने पूछा।

"वह बिल्कुल ठीक हो चुकी है।" दूसरी ओर से डा० सलीम ने उत्तर दिया।

"बिल्कुल ठीक हो चुकी है ! कुछ ही घंटे में !" मेजर ने आश्चर्य प्रदर्शित किया।

"वह बीमार कहां थी ! बीमारी का बहाना कर रही थी। मैंने उसे देखते ही पहचान लिया था। क्योंकि वह जो वाक्य बोल रही थी वे एक-दूसरे से सम्बद्ध थे। पागल इस तरह की बातें नहीं किया करते।"

"मैं समझ गया। उसे ठीक स्थिति में आने के बाद आपने उससे यह पूछा था-कि वह एक्टिंग क्यों कर रही थी ?"

"जी हां, पूछा था। लेकिन उसने मुझे जो कहानी सुनाई है वह बहुत छोटी है। वैसे मैं समझता हूं कि किसी भारी रकम या उचित पारिश्रमिक की आशा में वह यह अभिनय कर रही थी। अब आप इस पर जासूसी के जौहर आजमाइए और मालूम कीजिए कि उसके इस अभिनय का वास्तविक भेद क्या था।"

"इत्मीनान रखिए। मैं इस काम को बड़ी कुशलता से पूरा करूंगा। आपको भी यह कहानी सुना दूंगा। मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।" यह कहकर मेजर ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया और वापस आकर नाटकीय मुद्रा में उसने घोषणा की, "बीमार बंगाली लड़की सचमुच एक्टिंग कर रही थी। अशोक का अनुमान सही निकला।"

"मैंने शुरू में ही यह कहा था कि हमें बंगाली लड़की के ठीक होने का

इन्तजार करना चाहिए। उसकी कहानी सुनने के बाद नई योजना बनानी चाहिए।" विनोद मल्होत्रा ने कहा।

"अच्छा, तो बंगाली लड़की के बयान ही से नई योजना बनाई जाएगी।" मेजर ने कहा, "अब आप लोग बैठिए, मैं जरा गुप्त भवन तक जा रहा हूं।"

"क्या मैं भी आपके साथ चलूं?" सोनिया ने पूछा।

"नहीं, हो सकता है सुधा बनर्जी तुम्हारी मौजूदगी में मुझसे खुलकर बात न कर सके।" मेजर ने कहा।

सोनिया समझ गई कि मेजर का कहना ठीक है।

गुप्त भवन पहुंचकर मेजर ने देखा कि उसका नौकर बड़ी लगन और तत्परता से अपनी ड्यूटी दे रहा था। वह सुधा बनर्जी के कमरे के सामने एक कुर्सी पर बैठा था और वक्त गुजारने के लिए हुक्का पी रहा था। उसने कुर्सी पर से उठाकर मेजर को सैल्यूट दिया। मेजर ने भी फौजी अन्दाज में ही उसके सैल्यूट का उत्तर दिया।

मेजर सीधा सुधा बनर्जी के कमरे में गया जिसका दरवाजा खुला था। वह गुप्त भवन में मेजर की लाइब्रेरी से एक किताब निकालकर पढ़ रही थी। उसने किताब पर से निगाहें उठाकर मेजर की ओर देखा और मुस्कराई। उसके अन्दाज में अपरिचित होने का भाव न था। उसने पहल करते हुए कहा, "अगर मैं गलती नहीं कर रही हूं तो आप मेजर बलवन्त हैं?"

"आपका खयाल सही है; लेकिन आपको मेरे नाम का कैसे पता चला?'

"डाक्टर साहब ने केवल आपका हुलिया ही नहीं, आपके बारे में और भी बहुत-सी बातें मुझे बताईं। इसीलिए मैंने आपको पहली नजर में ही पहचान लिया।"

"क्यों बनती हैं मिस सुधा? आप मुझे साइन की काटेज में भी तो देख चुकी थीं।" मेजर ने कहा।

"लेकिन मैं आपके नाम और काम से परिचित नहीं थी।"

"हां" मेजर ने कुछ सोचते हुए कहा, "शुक्र है आपको यह तो याद है कि मैं आपसे साइन की काटेज में मिला था। फिर तो डाक्टर साहब ने मुझे ठीक ही बताया कि आप ऐक्टिंग कर रही थीं। अब जबकि आप डाक्टर साहब के सामने स्वीकार कर चुकी हैं कि आप ऐक्टिंग करती रही हैं कि आप पागल हो चुकी हैं, तो अब मेरे सामने झूठ बोलने से कोई लाभ न होगा। आपको मालूम हो ही चुका है कि मेरा काम क्या है। मैं जासूस हूं। बताइए, आपने यह ऐक्टिंग क्यों की?"

"इसलिए कि मैं ब्लैकमेल से बच सकूं और अगर हो सके तो कुछ रुपया भी हासिल कर सकूं।" सुधा बनर्जी ने कहा।

मेजर उस लड़की की स्पष्टवादिता पर हैरान रह गया। वह तो यह उम्मीद लेकर आया था कि सुधा से सच उगलवाने में उसे कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। लेकिन ऐसा मालूम हो रहा था कि सुधा खुद ही सच बोलने के लिए तैयार थी।

"आप शुरू से मुझे पूरी कहानी सुनाइए।" मेजर ने कहा।

सुधा बनर्जी ने यह इशारा पाते ही अपनी कहानी सुनानी शुरू कर दी, "मैं प्रभात मुकर्जी के साथ भागकर यहां आई थी। हम दोनों एकसाथ कालेज में पढ़ते थे। कलकत्ता साहित्य, कला और संस्कृति का केन्द्र है। हमारे कालेज में भी हर महीने नाटक खेला जाता था। संयोग की बात है कि अगर नाटक का हीरो प्रभात मुकर्जी को बनाया जाता था तो हीरोइन मुझे बनाया जाता था। वह

सम्बन्ध प्रेम में बदल गया। हम दोनों को कालेज के स्टेज पर झोलियां भरकर जो प्रशंसा मिलती थी, उसने हम दोनों का दिमाग खराब कर दिया। हम दोनों को यह भ्रम हो गया कि हम फिल्मी दुनिया में तहलका मचा सकते हैं। हम दोनों ने यह समझा कि शिक्षा का उद्देश्य जीवन-स्तर को ऊंचा करना है। बम्बई में हमें जरूर सफलता मिलेगी और हमारा जीवन-स्तर बहुत ही ऊंचा हो जाएगा। इसलिए हमारे लिए पढ़ना जरूरी नहीं बल्कि बम्बई पहुंचना जरूरी है। यह खयाल हमारे दिल और दिमाग में समा गया तो हम बम्बई पहुंचने की योजना बनाने लगे। मैंने अपने घर से अपनी मां के कुछ जेवर उठाए और प्रभात मुकर्जी ने अपने पिता के कुछ रुपए चुराए और इस तरह हम सुहाने सपने लिए हुए बम्बई पहुंच गए। लेकिन हमारे वे सुहाने सपने बहुत जल्द टूट गए। फ़िल्मी दुनिया में अपने लिए जगह बनाना बहुत ही कठिन है। इतनी जबर्दस्त गुटबंदियां हैं कि आप योग्य होते हुए भी इस समाज के एक बेकार अंग दिखाई देते हैं। हम जो पैसा अपने साथ लाए थे वह तेजी से खत्म होने लगा। प्रभात मुकर्जी का बुरा हाल था। उसने अपने इस जुनून के पीछे अपनी पढ़ाई छोड़कर अपनी जिन्दगी तबाह कर ली थी और मैं भी अपने घरवालों की नजर में बर्बाद हो चुकी थी, क्योंकि मैं एक नौजवान के साथ भागी थी। घर से भाग जाने वाली लड़की को कोई सच्चरित्र नहीं समझता है। इस असफलता और निराशा की स्थिति में भी मैं प्रभात मुकर्जी को तसल्ली बंधाती रही। अब हमारे पास पैसे बहुत कम रह गए। काम तलाश करना जरूरी हो गया। मैं मैन्स पैराडाइज क्लब की ओर से अखबार में दिए गए विज्ञापन के आधार पर इंटरव्यू के लिए गई। सेठ शाहानी इण्टरव्यू लेने वाले थे। इण्टरव्यू क्या था, एक अच्छी-खासी सौन्दर्य प्रतियोगिता थी। वहां एक औरत टेप से लड़कियों का अंग-अंग नाप रही थी और एक कागज पर कुछ लिखती जाती थी। सेठ शाहानी वह कागज उठाकर पढ़ते जाते थे। इण्टरव्यू के लिए कई लड़कियां आई थीं। एक घंटे बाद जब इण्टरव्यू का रिजल्ट सुनाया गया तो मैं उन सौभाग्यवान लड़कियों में से एक थी जिन्हें क्लब में नौकर रखने की खुशखबरी ...गई थी।

"जिन लड़कियों को चुन लिया गया था उन्हें एक-एक कर सेठ शाहानी ने केबिन में बुलाया। मैं भी अपनी पारी आने पर उनके सामने गई। उन्होंने ...व के कुछ नियम बताए और मुझे साइन की काटेज में रात के खाने की दावत दी ...र बताया कि शुरू में मुझे छः सौ रुपये माहवार मिलेंगे। मुझे उन्होंने साइन की काटेज के एक कागज पर हाथ से लिखा पता दिया और अंत में मुझे मशवरा दिया कि अब मैं सीधी अपने घर जाऊं। क्लब के किसी आदमी से या इण्टरव्यू के लिए आई हुई किसी भी लड़की से बात न करूं, और कल सुबह से काम पर आ जाऊं, लेकिन साइन की काटेज में रात के खाने पर जरूर पहुंचूं।

"मैं जब सेठ जी के कमरे से निकली तो मेरा दिल खुशी के मारे बल्लियों उछल रहा था। अब मैं प्रभात मुकर्जी की उदासी और असफलता को खुशी और हिम्मत में बदल सकती थी। वह भी नौकरी की खोज में था। अगर उसे भी कोई नौकरी मिल गई तो हमारा भविष्य सुखद और सुन्दर बन जाएगा। हम दोनों विवाह कर लेंगे और यह प्रेम विवाह होगा। मैं फिर एक बार मोहक सपनों के जाल बुनती हुई घर पहुंची। प्रभात मुकर्जी मेरी इस सफलता पर बहुत खुश हुआ। उसने कहा, 'सुधा, तुमने हमें एक बहुत बड़ी शर्म से बचा लिया है। हमारा वापिस जाना कठिन था। अब हम कम से कम यह तो दिखा सकेंगे कि हम अपनी जिन्दगी को सुखी बनाने का जो इरादा लेकर निकले थे, उसमें सफल हुए हैं।'

"मैं रात को ठीक आठ बजे साइन की कॉटेज में पहुंच गई। वहां एक ओर एक कार खड़ी थी और एक गोरखा चौकीदार सदर फाटक पर पहरा दे रहा था। उसने मुझे देखा तो रोका नहीं, कहा, 'सेठ जी आपका इंतजार कर रहे हैं।' काटेज में रोशनी थी। मेरे पैरों की आहट सुनकर सेठ जी दरवाजे पर आ गए थे। उन्होंने तपाक से मेरा स्वागत किया और मुझे काटेज के अन्दर एक कमरे में ले गए। मेरा खयाल था कि वहां और भी कुछ लड़कियां होंगी,लेकिन उस कमरे में हम दोनों के अलावा और कोई न था। कमरे के एक कोने में पलंग पड़ा था। पलंग के सामने सोफे थे। सोफों के सामने एक टेवल थी, जिसपर ह्विस्की की बोतल, गिलास, जग में सोडा और खाने-पीने की बहुत सी चीजें रखी हुई थीं। मैं समझ गई कि मुझे रात के खाने पर क्यों बुलाया गया है। मैं प्रभात मुकर्जी को खुशखबरी सुना आई थी और उसे जो खुशी हुई थी उसे मैं भी महसूस कर रही थी। अब मैं सेठ जी की दावत ठुकराकर कैसे वापस जा सकती थी। मैं बारह बजे तक वहीं रही और जब सेठ जी मुझे मेरे घर के सामने छोड़ गए तो मैं लड़की से पूरी औरत बन चुकी थी।

"मैंने दूसरे दिन से क्लब में काम शुरू कर दिया और महीने में कम से कम पन्द्रह बार सेठ शाहानी के साथ साइन की काटेज में रात का खाना खाया। और एक दिन मुझे पता चला कि मैं पूरी औरत बनने के बाद अब मां बनने वाली हूं। मैंने सेठ जी से इस बात का जिक्र किया तो वह बौखला उठे। कुछ देर तक कुछ सोचते रहे और फिर उन्होंने मुझे तसल्ली दी कि चिन्ता की कोई बात नहीं, वे सिर्फ सारा मामला ही ठीक न कर देंगे बल्कि काफी रुपया भी दिलवा देंगे। उन्होंने मुझे अपनी योजना बताई जो मुझे स्वीकार करनी पड़ी। सेठ शाहानी ने मुझे तो कुछ और बताया, लेकिन उनकी योजना कुछ और ही थी। मुझसे कहा गया कि मेरा परिचय एक धनवान चौधरी से करा दिया जाएगा। मुझे उन पर डोरे डालने होंगे। उनको कुछ दिनों तरसाना होगा। और अन्त में उनकी दावत स्वीकार कर लेनी होगी। उधर चौधरी साहब से उन्होंने यह कहा कि मैं एक अमीर घराने की लड़की हूं और मैंने शौकिया तौर पर माडल गर्ल के रूप में नौकरी की है। चौधरी साहब से मेरा परिचय कराया गया। सात दिन बाद सेठ जी ने मुझे पांच हजार रुपए दिए और बताया गया कि यह रुपया चौधरी साहब ने मुझे दिया है। मैंने वह रुपया अपने नाम से बैंक में जमा कर दिया। मैंने इस डर से कि एक दिन मेरा बढ़ता हुआ पेट मेरे पतन की कहानी जरूर सुना देगा, प्रभात मुकर्जी के साथ विवाहित पत्नी की तरह रहना शुरू कर दिया। और फिर एक दिन चौधरी साहब ने भी मुझे रात में खाने की दावत दी। मैं उनको बहुत तरसा चुकी थी। इसलिए दावत मंजूर कर ली। उन्होंने मुझे जो पता दिया वह कृष्णामूर्ति फोटोग्राफर के फ्लैट का था। उस फ्लैट में मुझ पर जो बीती मैं बयान नहीं कर सकती। चौधरी साहब तो केवल तमाशाई रहे। मुझे एक और ही आदमी के हवाले कर दिया गया। तीसरे दिन कृष्णामूर्ति मेरे पास आया। उसने मुझे कुछ फोटोग्राफ दिखाए। इन फोटो को देखकर मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। वे मेरे फोटो थे और ऐसी हालत में थे कि मैं शर्म से पानी-पानी हो गई। मैंने कृष्णामूर्ति से ये फोटो मांगे तो उसने उनके बदले में मुझसे तीन हजार रुपए मांगे। मुझे मजबूर होकर वह रुपया देना पड़ा। मैं हैरान थी कि मूर्ति ने मेरे ये फोटो कैसे लिए। अब मुझे याद आया कि उसके फ्लैट में जरूरत से ज्यादा रोशनी क्यों थी। हालांकि उसका अपना अलग स्टूडियो था, लेकिन मैं समझती हूं कि वह कमरा भी स्टूडियो का काम देता था। उसे इस ढंग से बनाया गया था। एक दीवार में कूलर लगा हुआ था। मेरे विचार में वह एक नकली कूलर था, उसके अन्दर कैमरा रखा जाता होगा। मैंने इस बात की

चर्चा सेठ शाहानी से की। उन्होंने मुझे फिर तसल्ली दी कि वे मेरे नुकसान की भरपाई कर देंगे। न जाने उन्होंने चौधरी साहब से जाकर क्या कुछ कहा। फिर मेरा नुकसान ही पूरा नहीं हुआ, वल्कि मुझे कुछ और रकम भी मिल गई। मैं देख रही थी कि वह इस तरह मेरी मदद करते हुए चौधरी साहब से कुछ और रकम अपने लिए भी बटोर रहे थे। उन्होंने उनको जाकर धमकी दी होगी कि मैं उनका सारा भेद खोल दूंगी, क्योंकि मैं इस सदमे से पागल हो चुकी हूं। उन्होंने मुझे एक पागल लड़की की ऐक्टिंग करने पर मजबूर किया। मुझे साइन की काटेज में ले जाकर बांध दिया गया। वह चौधरी साहब को वहां लाना चाहते थे और मेरी हालत उन्हें दिखाना चाहते थे। मैं इन्तजार करती रही। चौधरी साहब न जाने क्यों न आ सके। फिर चौधरी साहब की जगह आप आए। और जब डाक्टर साहब के द्वारा मुझे यह मालूम हुआ कि चौधरी साहब की हत्या कर दी गई है तो मेरे मुंह से चीख निकल गई। डाक्टर साहब ने मेरा मनोवैज्ञानिक उपचार करते हुए इधर-उधर की बातें छेड़ दी थीं। उन्होंने दुनिया के हालात सुनाने शुरू कर दिये थे और उसी के साथ उन्होंने चौधरी साहब की हत्या की चर्चा भी की। उन्हें यह मालूम नहीं था कि चौधरी साहब से मेरा कोई सम्बन्ध भी था। मेरे मुंह से चीख निकलते ही वह समझ गए कि मैं पागल नहीं हूं, ऐक्टिंग कर रही हूं। अन्त में मुझे यह बात स्वीकार करनी पड़ी।"

"लेकिन एक बात समझ में नहीं आई कि आप हमारे साथ क्यों चली आईं ?" मेजर ने पूछा।

"अपने पागल होने के रोल को पूरी तरह सफल बनाने के लिए।"

"चौधरी साहब के कत्ल के बाद क्लब में आपकी नौकरी तो खतरे में नहीं पड़ जाएगी ?"

"बिल्कुल नहीं। बल्कि मैं तो यह समझती हूं कि मेरी नौकरी वहां पक्की हो गई है, क्योंकि मैं सेठ शाहानी की घृणित करतूतों को जान गई हूं।"

मेजर ने कोई जवाब नहीं दिया और उठकर खड़ा हो गया। वह सोच रहा मानवीय चरित्र की कोई सीमा नहीं। परिस्थितियों के अनुसार अपने-आप को [illegible]क्त सांचे में ढालने की अद्भुत शक्ति मनुष्य में है।

गुप्त भवन के फाटक पर आकर सुधा बनर्जी ने मेजर को धन्यवाद दिया और फिर अकेली ही सड़क की ओर चल पड़ी।

मेजर वापस दफ्तर पहुंचा तो वहां इन्स्पेक्टर मैथ्यूज मौजूद थे और सोनिया से बातें कर रहे थे। उन्होंने मेजर को देखा तो कुर्सी पर से उठकर उनसे हाथ मिलाया।

"मैं बड़ी देर से आपकी राह देख रहा हूं।" इन्स्पेक्टर ने कहा।

"क्यों, ऐसा क्या काम आ पड़ा ?" मेजर ने पूछा।

"आज सुबह सेठ शाहानी ने मुझे सूचना दी कि उनके यहां काम करने वाली एक लड़की जिस पर हिस्टीरिया के दौरे पड़ते हैं और जिसका इलाज उनकी साइन की कॉटेज में डाक्टर दामले कर रहे थे, फरार हो चुकी है। उन्हें पता चला है कि आपने उस लड़की से अन्तिम बार भेंट की थी। उस बीमार लड़की की देखभाल करने वाली बुढ़िया ने बताया है कि एक नौजवान जो एक सुन्दर लड़की के साथ आया था, अपने-आप को डाक्टर बताकर उस बीमार लड़की को अपने साथ ले गया। उस बुढ़िया ने जो हुलिए बताए हैं वे आपसे और आपकी असिस्टैण्ट सोनिया से मिलते-जुलते हैं।"

"सेठ शाहानी ने आपको थोड़ी-सी गलत और थोड़ी-सी सही सूचना दी है।

मैं सेठ शाहानी से मिला था और मैंने खुद ही उन्हें बताया था कि मैं उस लड़की से मिलकर आ रहा हूं।"

"अब वह लड़की कहां है?"

"आज सुबह तक मेरे पास थी और अब वह ठीक होकर अपने घर जा चुकी है।" मेजर ने बताया।

"आपके पास थी?"

"जी हां।"

"आप उसे अपने साथ क्यों लाए थे?"

"उसका बयान कलमबद्ध करने के लिए?" मेजर ने उत्तर दिया।

"सेठ शाहानी को शक था कि आपने उसे जबरदस्ती अपनी कैद में रखा हुआ है।"

"सेठ शाहानी शहर के सम्माननीय और प्रभावशाली रईस हैं। आप उनकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं होंगे तो और कौन होगा! लेकिन जब आप सेठ शाहानी के सम्बन्ध में मेरी बातें सुनेंगे तो अपने कानों पर हाथ रख लेंगे।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि आप बहुत-सी बातें मुझसे छिपा रहे हैं।"

"मैं आपसे कुछ भी हीं छिपा रहा। मैं आपको पूरा सहयोग देने की कोशिश कर रहा हूं। आपके लिए एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर रहा हूं। मैं नहीं जानता कि आप अपनी तहकीकात में कहां तक पहुंचे हैं, लेकिन मैं काफी जानकारी प्राप्त कर चुका हूं, और मुझे विश्वास है कि कल शाम तक मेरी रिपोर्ट पूरी हो जाएगी।"

इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने कहा, "मैं बेकार नहीं बैठा रहा हूं। मुझे मालूम हो चुका है कि चौधरी साहब कोई नाजायज धन्धा करते थे।"

"मेरे साथ चलिए ताकि आपको मालूम हो सके कि वह नाजायज धन्धा क्या था। आपको यह भी मालूम हो जाएगा कि चौधरी साहब को इस नाजायज धन्धे पर मजबूर करने वाले सेठ शाहानी थे।"

फोटोग्राफर की मौत

मेजर और इन्स्पेक्टर मैथ्यूज फोटोग्राफर कृष्णामूर्ति के फ्लैट के पास पहुंचे तो उन्होंने फ्लैट के आगे लोगों की एक भारी भीड़ देखी। मेजर ने कहा, "ऐसा मालूम होता है कि प्रकृति या भाग्य एक बार फिर हमारा साथ देने को तैयार नहीं है।"

"क्या मतलब?"

"मेरा दिल गवाही दे रहा है कि यहां कोई ऐसी दुर्घटना जरूर हुई है जो हमारे रास्ते में दीवार खड़ी कर देगी।"

वे दोनों अपनी कारों से उतरकर भीड़ में शामिल हो गए। इन्स्पेक्टर मैथ्यूज क्योंकि यूनीफार्म में था इसलिए लोगों ने उनको रास्ता दे दिया। इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने एक आदमी से पूछा, "यहां लोग क्यों जमा हैं?"

"किसी ने फोटोग्राफर कृष्णामूर्ति का गला काट दिया है।"

मेजर ने यह बात सुनी तो इन्स्पेक्टर मैथ्यूज से आगे निकलकर कृष्णामूर्ति के फ्लैट में घुस गया। इन्स्पेक्टर मैथ्यूज भी तेज-तेज कदम उठाता हुआ फ्लैट में पहुंच गया।

उन्होंने स्टूडियो के सामने वाले कमरे से लोगों को बाहर निकाल दिया। वहां

तिल धरने को भी जगह न थी। जब कमरा खाली हो गया तो उन दोनों ने देखा कि कृष्णामूर्ति एक पलंग पर पड़ा था। पलंग की चादर खून से भरी हुई थी। वह चित्त लेटा हुआ था। उसके गले पर भी वैसा ही निशान था जैसा फ्रैंकलिन के गले पर था। किसी ने बड़ी सफाई के साथ नश्तर से उसकी श्वासनली काट दी थी और वहां से गोश्त का चौरस टुकड़ा नोच लिया था। मेजर ने ज़ोर से सांस अन्दर की ओर खींचकर कमरे की हवा को सूंघने की कोशिश की। उसने हल्की-सी गंध महसूस की। सोचा, शायद कृष्णामूर्ति को मरे हुए बहुत ज्यादा देर हो गई है, वरना क्लोरोफार्म की गंध इतनी जल्दी कमरे से न जाती।

"आप क्या सोच रहे हो ?" इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने पूछा।

"कुछ भी नहीं।" मेजर ने उत्तर दिया।

"आप शायद इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। मैं समझता हूं कि इस फोटोग्राफर का हत्यारा भी वही व्यक्ति है जो चौधरी हरिवंशराय और फ्रैंकलिन की हत्या कर चुका है। हत्यारे ने अपना ढंग नहीं बदला है।"

"आप यह नहीं सोच रहे हैं कि हत्यारा इस ढंग से दो बार अपने इरादे में सफल हो चुका है। जब तक उसका एक हथियार सफल रहेगा, वह दूसरा कभी नहीं प्रयोग करेगा, क्योंकि उसे यह आशंका रहेगी कि उसका दूसरा प्रयोग असफल न हो जाए।" मेजर ने कहा।

इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने मेजर की दलील स्वीकारते हुए कहा, "यहां कोई फोन नहीं है। इस बिल्डिंग में कहीं न कहीं फोन जरूर होगा। मैं अभी आता हूं। फोटोग्राफर और अपने विभाग के अन्य कर्मचारियों को बुलाना होगा। आज मुझ पर फिर मुसीबत टूटेगी।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि कुछ ही दिनों में एक ही हत्याकांड से सम्बन्धित यह तीसरी हत्या है। मैं पहले की हत्याओं के सम्बन्ध में ही अभी तक अंधेरे में कलाबाजी लगा रहा हूं। मेरे उच्च अधिकारी मुझ पर नाराज हैं। और इस हत्या से तो उनका गुस्सा और भी बढ़ जाएगा।"

"अब आपको ज्यादा घबराने की जरूरत नहीं", मेजर ने कहा, "अब हत्यारे ने तेजी के साथ अपने रास्ते से उन लोगों को हटाना शुरू कर दिया है जो उसके भेद को किसी भी समय खोल सकते हैं।"

"अच्छा, तो मैं फोन करके अभी आता हूं। आप जाइएगा नहीं।"

"अच्छी बात है।"

इन्स्पेक्टर मैथ्यूज के जाने के बाद मेजर तेजी से उस कोने की ओर लपका जहां कूलर लगा हुआ था। मेजर मुस्कराया, सुधा बनर्जी का कथन बिल्कुल सही था। वह कूलर का सिर्फ ढांचा था। उसके अन्दर कमरे को ठण्डा करने वाली मशीन नहीं थी। कूलर के ढांचे में कैमरे का लैंस फिट करने के लिए एक गोल सूराख बनाया गया था और उस खोल में कैमरा आसानी से आ सकता था। कूलर की जांच करने के बाद मेजर ने फ्लैट के सदर दरवाजे को खोल दिया। उसने भीड़ पर एक निगाह डाली और बोला, "ऐसे कुछ आदमी अन्दर आ जाएं जो इस बिल्डिंग में रहते हैं, या इस बिल्डिंग के आसपास रहते हैं।"

एक साथ बहुत-से आदमी दरवाजे की ओर दौड़ पड़े।

"इतने आदमियों की जरूरत नहीं। सिर्फ चार आदमी अन्दर आ जाएं। अगर उन लोगों से मेरा उद्देश्य पूरा न होगा तो मैं फिर आप लोगों को अन्दर बुला लूंगा।"

बाकी लोग वापस चले गए। मेजर ने दरवाजा बन्द कर दिया और उन लोगों को सोफे पर बैठने का इशारा किया। और जब वे लोग बैठ गए तो मेजर ने कहा, "आज दफ्तरों में छुट्टी है। आप लोगों में से कौन सुबह यहां था ?"

दो आदमियों ने एक साथ कहा, "हम सुबह से यहां हैं।"

"क्या आपमें से किसी आदमी ने किसी को कृष्णामूर्ति के फ्लैट में घुसते हुए या बाहर जाते हुए देखा था ?"

"यह ग्यारह बजे की बात है।" एक आदमी, जो शक्ल-सूरत से बिहारी नजर आता था और जिसने टसर का कुर्ता और मलमल की सफेद धोती पहन रखी थी, बोला, "मैंने एक लड़की को मूर्ति के फ्लैट में आते हुए देखा था। वह पांच मिनट बाद ही चली गई थी। उसके हाथ में एक छोटा-सा हैंडबैग था। उसने सड़क पर से बस पकड़ी थी जो दक्षिण की ओर जा रही थी।"

"क्या आप उस लड़की का हुलिया बता सकते हैं ?"

"उसका कद मुश्किल से पांच फुट था। शरीर सुडौल था। मैं उसका चेहरा तो अच्छी तरह नहीं देख पाया, फिर भी मैं यह कह सकता हूं कि वह सुन्दर थी। मेकअप भी उसने अधिक नहीं किया था। वह फूलदार फिरोजी साड़ी पहने हुए थी।"

"उसके बाद क्या कोई और भी कृष्णामूर्ति से मिलने आया था ?"

"नहीं, मैंने और किसी को नहीं देखा।"

मेजर गहरे सोच में डूब गया। उस आदमी ने जिस लड़की का हुलिया बताया था, वह रक्षा शाहानी हो सकती थी, लेकिन निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता था।

इतने में दूसरे आदमी ने, जो अधेड़ उम्र का था और जिसने टैरिलीन का सूट पहन रखा था, बताया, "मुझे डाकखाने जाना था। मैं जब इधर से गुजर रहा था तो मैंने एक नौजवान को, जिसकी उम्र पच्चीस-छब्बीस साल से ज्यादा नहीं थी, कृष्णामूर्ति के फ्लैट में जाते हुए देखा था। यह लगभग बारह बजे की बात है। मैं डाकखाने से आधे घंटे के बाद लौटा तो उस नौजवान को फ्लैट से बाहर निकलते हुए देखा। उसके हाथ में एक छोटा-सा अटैचीकेस था। वह बड़ी तेजी से सड़क की ओर बढ़ा और फिर सड़क पार करके सामने की बिल्डिंगों में जाकर कहीं गुम हो गया। उसने दोबारा मुड़कर भी नहीं देखा।"

"धन्यवाद, आप जा सकते हैं।"

वे आदमी चले गए तो मेजर ने चार और आदमियों को अन्दर बुलाया। तीन आदमी तो बिल्कुल बेकार साबित हुए। एक आदमी काम का निकला, जिसकी कृष्णामूर्ति के फ्लैट के ठीक सामने सड़क पर स्टैण्ड के पास चाय की एक छोटी-सी दुकान थी। दुकान लकड़ी का स्टाल थी जिसके एक कोने में वह पान और सिगरेट भी बेचता था। आज छुट्टी थी इसलिए उसकी दुकान पर बहुत कम ग्राहक आ रहे थे। आज वह बेकार था इसलिए कृष्णमूर्ति का फ्लैट उसकी निगाह से ओझल नहीं हुआ था। उसने आज कृष्णमूर्ति के फ्लैट में तीन आदमियों को जाते हुए और उन्हें निकलते हुए देखा था। सबसे पहले एक आदमी कार में आया था। तब सवेरे के आठ बजे थे। कृष्णामूर्ति उसे उसकी कार तक छोड़ने आया था। उसके बाद एक लड़की आई थी। यह लड़की वही थी जिसका जिक्र वह बिहार के एक क्लर्कनुमा आदमी से सुन चुका था। अन्तर केवल इतना था कि दुकानदार ने उस लड़की को पास से देखा था। उसने लड़की की सूरत का जो नक्शा खींचा था उससे [illegible] गया था कि वह रक्षा शाहानी नहीं थी। दुकानदार ने, जो ती[illegible]

था, वही नौजवान था जिसका जिक्र टैरिलीन के सूट वाले ने किया था। सबसे ज्यादा देर तक वह नौजवान कृष्णमूर्ति के फ्लैट में रहा था जो अपने साथ एक अटैचीकेस लाया था। मेजर ने इन चारों आदमियों को धन्यवाद देने के बाद विदा कर दिया।

मेजर कुछ देर के लिए सोचना चाहता था। हत्यारा वह आदमी नहीं हो सकता जो सुबह आठ बजे कार से कृष्णामूर्ति के पास आया था; क्योंकि कृष्णामूर्ति उसे कार तक छोड़ने गया था। वह शायद उसका कोई ग्राहक था। हत्या वह लड़की भी नहीं कर सकती थी जिसके पास छोटा-सा एक हैण्डबैग था। अगर उसने हत्या की होती, तो बाद में आने वाला नौजवान कृष्णामूर्ति की लाश को देखकर जरूर शोर मचाता। उस नौजवान के सिवा कृष्णामूर्ति का कोई दूसरा हत्यारा दिखाई न दे रहा था। मूर्ति के फ्लैट में पीछे की ओर कोई दरवाजा नहीं था। इसलिए हत्यारा आया तो सामने के दरवाजे से ही होगा। ठीक उसी समय मेजर को एक और ख्याल आ गया। यह भी तो मुमकिन था कि वह लड़की पहले यह देखने आई हो कि मूर्ति क्या कर रहा है। वहां से जाने के बाद उसने अपने उस नौजवान साथी को भेज दिया हो कि आओ मैदान साफ है।

फिर मेजर को खयाल आया कि उसने अपनी धुन में किसी से यह तो पूछा ही नहीं कि लोगों को कृष्णामूर्ति की हत्या का पता कैसे चला। उसने दरवाजा खोलकर फिर बाहर की ओर देखा। संयोग से वही दुकानदार अभी तक बाहर खड़ा था और कुछ लोगों के साथ बड़ी गर्मजोशी से बातें कर रहा था। मेजर ने इशारे से उसे फिर अपने पास बुलाया। जब वह अन्दर आ गया तो उसने फिर दोबारा उसे अपने सामने बैठा लिया।

"क्या आप मुझे यह बता सकते हैं कि लोगों को कैसे पता चला कि कृष्णामूर्ति की हत्या हो गई।

"कृष्णामूर्ति साहब के यहां मेरी दुकान से दिन में चार बार चाय जाया ...रती थी। सुबह सवेरे, दस बजे, दो बजे और शाम के पांच बजे। आज दो बजे ...। नौकर रतन कृष्णामूर्ति साहब के लिए चाय लेकर गया तो वह चीखता-...। बाहर निकला—'मूर्ति बाबू···खून···खून···खून!' वह लड़का बहुत ...। हुआ था। चाय का गिलास भी वहीं छोड़ आया था। वह कहीं रुका नहीं ...। सीधा भागता हुआ मेरे पास पहुंचा था। पसीने में नहाया हुआ था और थर-...र कांप रहा था। उसके होंठ फड़क रहे थे। वह बस यही कहे जा रहा था, 'खून, खून!' मेरी दुकान पर दो ग्राहक बैठे थे। वे फौरन उठे और कृष्णामूर्ति के फ्लैट की ओर भागे। मैंने भी अपनी कुछ चीजें समेटीं, अलमारी को ताला लगाया और लपकता हुआ वहां पहुंचा। मेरे पहुंचने तक काफी लोग जमा हो चुके थे। टेलीफोन यहां से दूर है। हर कोई क्योंकि लाश में और हत्या की घटना में ज्यादा दिलचस्पी ले रहा था। इसलिए कोई भी पुलिस को फोन करने नहीं गया। इतने में ही आप पहुंच गए।"

"धन्यवाद। बस, इतनी-सी बात मुझे और पूछनी थी।"

दुकानदार फिर उठकर बाहर चला गया।

इंस्पेक्टर मैथ्यूज अन्दर आया तो पसीने से नहा रहा था। "यह कैसा इलाका है! फोन यहां से आधे मील दूर एक व्यापारी के बंगले में है। वह सोया पड़ा था इसलिए मुझे इतनी देर हो गई।" इंस्पेक्टर ने कहा, "क्या आपने कुछ लोगों से कुछ पूछताछ की?"

"हां।" मेजर ने कहा और फिर सारी कहानी इंस्पेक्टर को सुना दी।

मेजर का काम खत्म हो चुका था। उसने इंस्पेक्टर से कहा, "अब मैं चलता हूं। आपको तो अब सिर्फ जाब्ते की कार्रवाई करनी है।"

यह कहकर मेजर ने दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया। इंस्पेक्टर ने कुछ ऊंची आवाज में कहा, "मेरी इज्जत आप लोगों के हाथ में है। आपको अपना वायदा याद है न?"

"हां, याद है। परसों शाम तक मैं आपको एक संदेश भेजूंगा। आप आएंगे तो सारी रिपोर्ट आपके हवाले कर दी जाएगी। और अगर थोड़ी-सी कार्रवाई बाकी रह जाएगी तो उसे आपकी मदद से पूरा कर लिया जाएगा।"

मेजर ने दरवाजे में खड़े-खड़े कहा और फिर बाहर निकल गया।

वनमानुष

दफ्तर वापस जाते हुए मेजर कोई शेर गुनगुना रहा था। वह खुश था। उसके चेहरे से उसकी आन्तरिक प्रसन्नता छलक रही थी। आज सुबह जब उसने चौधरी साहब की हत्या के केस का अपने दिमाग में नए सिरे से विश्लेषण किया तो उसे खोई हुई कड़ी मिल गई थी और उसकी सोची-समझी कहानी लगभग पूरी हो गई थी।

सोनिया ने मेजर को कार से उतरते हुए देखा तो वह समझ गई कि मेजर अपने काम में सफल होकर लौटा है। वह सीटी बजा रहा था और उसकी सीटी अंग्रेजी धुन प्रस्तुत कर रही थी।

"आप नाचते हुए आ रहे हैं!" सोनिया ने कहा।

"गीत और नाच—ये आदमी की प्रसन्नता को प्रकट करते हैं," मेजर ने अपनी मेज की ओर बढ़ते हुए कहा। उसने मेज की एक दराज खोली और उसमें से चार फिल्में निकालीं। ये वे फिल्में थीं जिनको वह कृष्णामूर्ति के स्टूडियो से उठा लाया था और मेज की दराज में रखने के बाद बिल्कुल भूल गया था।

"सोनिया, तुम एक काम करो। अभी वीनस स्टूडियो चली जाओ। यह स्टूडियो हार्नबी रोड पर है। इसका मालिक बहुत अच्छा फोटोग्राफर है और मेरा दोस्त है। उससे ये फिल्में डेवलेप करवा लाओ। उसके पास धुली फिल्मों को सुखाने की मशीन भी है। उससे प्रिंट निकलवाकर ले आओ। मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगा।"

सोनिया फिल्में लेकर चली गई। सोनिया के जाने के बाद मेजर ने अशोक से कहा, "अशोक, तुम्हें अंधेरी तो नहीं जाना है?"

"जाना है," अशोक बोला, "वहां शोभा और अंजना अकेली हैं। रात को मेरा वहां होना बहुत जरूरी है।"

"घबराने की जरूरत नहीं। उनको अब कोई खतरा नहीं। एक और जिंदगी खतरे में है और उसकी हिफाजत जरूरी है।"

"किसकी जिन्दगी खतरे में है?" अशोक ने पूछा।

"रक्षा शाहानी की, और आज रात तुम्हें उसकी कोठी पर पहरा देना होगा।"

"क्या आपको विश्वास है कि शोभा और अंजना की जिन्दगी खतरे में नहीं है?"

"हां। वैसे भी आज रात को उस इलाके में मुझे एक जरूरी काम है।" मेजर ने कहा, "मैं उनको देखने के बाद ही वापस आऊंगा।"

अशोक को जब शोभा और अंजना की ओर से इत्मीनान हो गया तो उसने

कहा, "मुझे क्या रक्षा शाहानी की कोठी पर सिर्फ पहरा देना होगा या उससे जाकर मिलना भी होगा ?"

"मिलने की कोई जरूरत नहीं, "मेजर ने झल्लाकर कहा, "रक्षा शाहानी को यह आभास तक नहीं होने देना होगा कि तुम उसकी कोठी के आसपास मौजूद हो।"

"क्या मुझे उसकी कोठी से बाहर रहना होगा ?"

मेजर को गुस्सा आ गया। लेकिन वह अपने गुस्से को पीकर बोला, "तुम्हारी अक्ल इन दिनों कुछ ज्यादा ही मोटी हो गई है अशोक! तुम्हें अंधेरे में रक्षा शाहानी की कोठी पर जाना होगा। उसके बाग में एक उपयुक्त स्थान खोजकर मोर्चाबन्द होकर बैठ जाना होगा। तुम्हारे साथ क्रोकोडायल होगा। और आज तुम्हें इजाजत है कि अगर तुम्हें मामला ज्यादा पेचीदा होता दिखाई दे तो तुम आक्रमणकारी पर गोली चला सकते हो। अपने हाथ पर ट्रांसमीटर घड़ी बांधकर जाना। अगर तुम्हें मदद की जरूरत हो तो मुझे सूचना दे देना। मैं जहां कहीं भी होऊंगा, तुम्हारी मदद को पहुंच जाऊंगा।"

अशोक ने मेजर की हिदायतें बड़े ध्यान से सुनीं और ट्रांसमीटर घड़ी कलाई पर बांधने के लिए पिछले कमरे में चला गया। फिर उसने क्रोकोडायल को उसके दरबे में से निकाला और उसे अपने साथ लेकर अपनी मंजिल की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे टैक्सी लेनी थी।

अशोक के जाने के बाद मेजर ने अपनी जेब में से वह मोती निकाला जो अशोक को चौधरी साहब के कमरे में खुले ट्रंक के पास मिला था। मेजर ने उसे उछालकर अपनी हथेली पर ले लिया और फिर अपने-आप से बोला, "यह जासूसी की कला भी अद्भुत है। अक्सर बड़े से बड़े सुराग किसी काम नहीं आता और कभी-कभी मामूली-सा सुराग हत्यारे के ठिकाने तक ले जाता है।"

फिर मेजर ने अपनी नौकरानी को काफी बनाने का आदेश दिया और वह मोती अपनी जेब डाल लिया।

वह वापस आकर आराम कुर्सी पर बैठ गया। वह अभी तक अपने-आप से बातें कर रहा था, "कल का दिन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दिन सिद्ध होगा, इस समय तो मैं कोई भविष्यवाणी कर नहीं सकता। वैसे तो आज की रात मुझे एक खतरनाक मुहिम पर जाना होगा। खतरा मोल लेने और उससे बच निकलने में कितना आनन्द आता है!"

नौकरानी काफी का प्याला ले आई और मेजर काफी इस तरह पीने लगा जैसे ह्विस्की पी रहा हो। उसने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी की ओर देखा। सोनिया को गए दो घंटे हो चुके थे। उसे कोई जल्दी नहीं थी। आज उसे रात के दस बजे एक खतरनाक मुहिम पर जाना था। अचानक उसने सोचा कि तब तक उसे अपनी मुहिम पर जाने की तैयारी पूरी कर लेनी चाहिए। वह पिछले कमरे में चला गया।

मेजर का यह पिछला कमरा एक अजायबघर या शस्त्रागार था। उसने एक अलमारी से रबर का लिबास निकाला। वह बड़ा चमकीला था। रोशनी में इस तरह चमक रहा था जैसे रबर बहुत ही चिकनी हो। मेजर ने बुलेट-प्रूफ जाकेट भी निकाल ली। उसके बाद उसने एक अलमारी से बिजली का एक लैम्प निकाला। उसने उसका बटन दबाकर उसे टेस्ट किया। बटन दबाते ही उस लैम्प से शोले निकलने लगे।

मेजर की आंखों में खुशी की चमक पैदा हो गई। उसने बिजली का लैम्प भी रबर के लिबास के पास रख दिया। तीसरी अलमारी से उसने एक छोटी-सी कंघी के बराबर लोहा काटने वाली आरी निकाली। इन सब चीजों को एक जगह जमा करने के

बाद वह फिर अपने दफ्तर में आ गया और मन बहलाने के लिए एक किताब पढ़ने लगा।

किताब पढ़ते हुए उसे एक घंटा बीत गया। उसने किताब पर से नजर उठाकर सामने की दीवार पर टंगे हुए क्लाक की ओर देखा। उसमें रात के नौ बजे थे, और खतरनाक मुहिम पर जाने में अभी एक घंटा बाकी रह गया था। उसने नौकरानी को हिदायत कर दी थी कि वह ठीक साढ़े नौ बजे खाना ले आए।

तभी बाहर हल्के कदमों की आहट सुनाई दी और फिर सोनिया ने दफ्तर में कदम रखा। उसने अपने पर्स से कुछ लिफाफे निकालकर मेज पर रख दिए और बोली, "बेकार इतना वक्त बर्बाद किया गया। दो फिल्में तो बिल्कुल स्याह निकलीं। पूरी एक फिल्म किसी लड़की की है जो नहाने के बाद तौलिया लपेटे बाथरूम से निकली है। उसके शरीर पर पानी की मोटी-मोटी बूंदें अभी तक मौजूद हैं। ऐसा मालूम होता है कि यह फोटो किसी प्रसिद्ध साबुन के विज्ञापन के लिए खींची गई होगी। चौथी फिल्म कुछ बच्चों की है, जो शायद बच्चे को तन्दुरुस्त रखने वाली किसी दवा के विज्ञापन के लिए खींची गई है।"

मेजर सोनिया की ये बातें सुनकर बहुत ही निराश हुआ। उसने लिफाफे में प्रिंट्स की ओर हाथ तक नहीं बढ़ाया। कुछ देर के बाद उसने कहा, "सोनिया, आज तुम मेरे साथ खाना खाओ और फिर घर चली जाओ। अपनी ट्रांसमीटर घड़ी अपनी कलाई पर बांधे रखना। आज मैं एक खतरनाक मुहिम पर जा रहा हूं। शायद मुझे अपनी मदद के लिए तुमको बुलाना पड़े। तुम साढ़े बारह बजे तक जागती रहना। अगर मेरी ओर से कोई संदेश न मिले तो सो जाना।"

थोड़ी देर बाद नौकरानी खाना ले आई तथा उन दोनों ने एक साथ खाना खाया। खाना खा चुकने के बाद सोनिया चली गई और मेजर ने वह सारा सामान, जो उसने सोनिया के आने के पहले अलमारियों में से निकाला था, थैले में डाल लिया, और एक छोटी-सी टार्च जेब में रख ली।

ठीक दस बजे अपनी कार में बैठकर मेजर खतरनाक मुहिम पर रवाना हो गया। ग्यारह बजे अपनी मंजिल पर पहुंच गया। उसने अपनी कार अंधेरे में एक पेड़ के पीछे खड़ी कर दी। फिर कार की तमाम बत्तियां बुझाईं और अपना लिबास बदलने लगा। दस मिनट के बाद मेजर की कार से जो एक आदमी निकला वह बनमानुस मालूम होता था। वह बनमानुस रोशनी से बचता हुआ अंधेरे में चल रहा था।

उसे अधिक दूर नहीं जाना पड़ा। वह एक बंगले के पास पहुंचकर रुक गया। बंगला अंधेरे में डूबा हुआ था। बनमानुस कुछ देर तक बिना हिले-डुले खड़ा रहा, फिर उसने हाथ में पकड़ी हुई थैली से टार्च निकाली। उसे एक पल के लिए जलाया, फिर बुझा दिया। अब वह बंगले के पिछवाड़े जा रहा था। बंगले की पिछली दीवार बहुत ऊंची थी। उस दीवार के सहारे ऊपर तक लोहे का एक पाइप जा रहा था। बनमानुस ने अपनी थैली की रस्सी मुंह में दबाई और पाइप के सहारे इस तरह ऊपर की ओर चढ़ने लगा जैसे कोई साधारण आदमी सीढ़ियों पर चढ़ता है। वह पांच मिनट में अपनी मंज़िल पर पहुंच गया। उसने दीवार पर से बंगले के अंदर इस तरह छलांग लगाई कि उसके कूदने की आवाज तक सुनाई न दी। बनमानुस ने दोबारा थैली अपने हाथ में ले ली और ऊपरी मंजिल से, जहां कोई न था, सीढ़ियां उतरकर निचली मंजिल पर पहुंच गया, जहां बहुत-से कमरे थे। वे तमाम कमरे बन्द थे। बनमानुस हर एक कमरे के दरवाजे से अपना दायां कान लगाकर कुछ सुनने की कोशिश करता और फिर आगे बढ़ जाता। एक कमरे के दरवाजे के साथ उसने अपना दायां कान

लगाया और फिर थोड़ा-सा हट गया। उसने फिर अपनी थैली खोली। उसमें से बिजली का लैम्प निकाला और उसका बटन दबा दिया। लैम्प में से शोले निकलने लगे। उसने लैम्प का रुख दरवाजे की ओर फेर दिया। दो मिनट में दरवाजे का वह हिस्सा जल गया जिस पर लैम्प के शोले पड़ रहे थे। उस जगह एक सूराख हो गया। बनमानुस ने उस सूराख में हाथ डालकर दरवाजे के अन्दर की चटखनी बहुत धीरे से खोल दी। कोई आवाज पैदा न हुई। बिजली का लैम्प वह पहले ही बुझा चुका था। उसने लैम्प थैली में डाल लिया और थैली से एक रूमाल निकालकर अपने हाथ में ले लिया। इसके बाद उसने धीरे से दरवाजा खोला और कमरे के अन्दर चला गया। वह एक पलंग के पास गया जिस पर चादर ओढ़े कोई सो रहा था। कमरे में सीलिंग फैन चल रहा था, और जीरो वाट का बल्ब जल रहा था। उसकी मद्धिम रोशनी में बनमानुस ने सोने वाले की ओर देखा। उसका आधा मुंह चादर से ढका हुआ था। बनमानुस साथ में पकड़ा हुआ रूमाल उस आदमी की नाक के पास ले गया और फिर उसने रूमाल को उस आदमी की नाक पर से उठाकर दोबारा अपनी थैली में रख लिया।

अब उसने बड़े इत्मीनान से कमरे का निरीक्षण किया। एक कोने में एक फौलादी तिजोरी रखी हुई थी। वह उसके पास पहुंचा। और बड़े ध्यान से उसे देखने लगा। उसमें नम्बरों वाला ताला लगा हुआ था। जब तक खास नम्बर न मिलाया जाए, उसे खोलना कठिन था। वह तिजोरी को देखने के बाद मुड़ा। उसने कमरे का दरवाजा अच्छी तरह बन्द किया। थैली एक कुर्सी पर रख दी। उसने बिजली का लैम्प फिर निकाला और उसे लेकर तिजोरी के पास चला गया। उसने लैम्प का बटन दबा दिया। लैम्प से शोले निकलने लगे। दस मिनट में तिजोरी के नम्बर वाले ताले की जगह लाल हो गई। उसने थैली में से कंघी जैसी आरी निकाली। तिजोरी के उस स्थान पर वह आरी चलाने लगा जो लाल हो चुका था। पांच मिनट के बाद ताला कट गया। उसने आरी फिर थैली में रख ली और फिर हाथ बढ़ाकर तिजोरी का दरवाजा खोल दिया, और टार्च की रोशनी में तिजोरी का निरीक्षण करने लगा।

तिजोरी में कुछ रुपए और रोजाना पहने जाने वाले कुछ जेवर रखे थे। उसने रुपये और जेवर उठाए और थैली में डाल लिए। थैली में बिजली का लैम्प रखने के बाद उसने अंगड़ाई ली और आराम से सोए हुए आदमी की ओर देखकर मुस्कराया। उस आदमी का जितना मुंह चादर से बाहर था उससे यह मालूम कर पाना कठिन था कि सोने वाला आदमी है या औरत। बनमानुस ने अपनी थैली उठाई और जिस रास्ते से बंगले में पहुंचा था उसी रास्ते से होता हुआ वह उस बंगले की ऊपरी मंजिल पर पहुंच गया और फिर वहां से पाइप के सहारे उतरता हुआ धरती पर आ गया।

फिर वह तेज-तेज कदम बढ़ाता हुआ उस कार की ओर बढ़ा जो अंधेरे में एक पेड़ के नीचे खड़ी थी। वह कार में जा बैठा, और अंधेरे में बैठा-बैठा न जाने क्या करता रहा। कुछ मिनट बाद जब कार की भीतरी बत्ती जली तो ड्राइविंग सीट पर मेजर बलवन्त बैठा हुआ था।

आधे घण्टे के बाद वह चौधरी हरिवंशराय के बंगले पर पहुंचा। वहां भी अंधेरा और गहरा सन्नाटा छाया हुआ था। कार की आवाज सुनकर चौधरी साहब का एक नौकर अपनी चारपाई पर उठकर बैठ गया और जब मेजर ने कार रोकी तो वह मेजर के पास पहुंच गया। उसने मेजर को पहचान लिया, क्योंकि मेजर पहले भी दो बार बंगले में आ चुका था।

"मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुम जाग रहे हो।" मेजर ने उस नौकर से

कहा।

इतने में ही ऊपरी मंजिल के एक कमरे की वत्ती जल उठी। फिर कमरे का दरवाजा खुला और शोभा वाहर निकल आई। उसने छज्जे पर आकर नौकर को आवाज देते हुए पूछा, "रघुनन्दन, कौन है ?'

फिर शोभा ने कार के अन्दर जलती हुई वत्ती की रोशनी में ड्राइविंग सीट पर मेजर वलवन्त को वैठे हुए देखा तो वोली, "ओह मेजर साहव···! ठहरिए, मैं आ रहीं हूं।"

मेजर ने कार में से निकलते हुए कहा, "आपको नीचे आने की जरूरत नहीं। मैं ही ऊपर आ रहा हूं।"

मेजर ऊपर पहुंच गया। उसने कमरे में पड़े सोफे पर वैठते हुए कहा, "सिर्फ आज ही रात आप सावधान रहिए। आपके तीन नौकर हैं। मैं तीनों को जगाए जाता हूं और उनसे कहे जाता हूं कि दो आदमी वारी-वारी पहरा देते रहें। एक आदमी वाग में रहे और एक वंगले के सामने वाले हिस्से में घूमता रहे। आप भी वत्ती वुझाकर न सोइए। अगर आज की रात आप आंखों में ही काट सकें तो ज्यादा वेहतर रहेगा।"

इसके वाद मेजर ने अपने कोट की जेव में हाथ डालकर एक रिवाल्वर और एक पिस्तौल निकाला। रिवाल्वर तो उसने वापस जेव में रख लिया, लेकिन पिस्तौल खोलकर उसमें भरी हुई गोलियों की जांच की और अच्छी तरह इत्मीनान कर लेने के वाद पिस्तौल शोभा की ओर वढ़ाते हुए कहा, "यह ऑटोमेटिक पिस्तौल है। साथ ही वहुत हल्का भी है। इसे आप अपने पास रख लीजिए। इसे चलाने के लिए अभ्यास और अनुभव की जरूरत नहीं। सिर्फ ट्रेगर दवाना काफी है।"

शोभा ने पिस्तौल लेकर मेजर को धन्यवाद दिया।

"अच्छा, तो अव मैं चलता हूं। कल अशोक को आपके पास भेज दूंगा।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि हम आपके अहसानों का वदला कैसे चुका पाएंगे।"

"कोई किसी पर अहसान नहीं करता। हर आदमी का काम किसी न किसी के सहारे से होता है। और वह खुद भी किसी के काम का आधार वनता रहता है।"

मेजर जव चौधरी साहव के वंगले से रवाना हुआ तो सीटी वजा रहा था, और उसकी सीटी का नग्मा एक अंग्रेजी नग्मे की धुन में था।

काला चिथड़ा

इधर मेजर घर की ओर जा रहा था और उधर क्रोकोडायल के साथ अशोक रक्षा शाहानी के वंगले के वाग में एक पेड़ की वहुत ज्यादा झुकी हुई डालियों में छिपकर वैठा था। उसे इस तरह वैठे हुए तीन घंटे वीत चुके थे। सारा वंगला गहरे अंधेरे में डूवा हुआ था। रक्षा शाहानी साढ़े दस वजे घर लौटी थी। उसका रसोइया उसका इन्तजार कर रहा था। उसने रक्षा के आते ही वरामदे की वत्ती जला दी। रसोइया गोआनी था। उसने रक्षा के पास आकर पूछा, "मेम सा'व, आप कुछ सामान लाई हैं तो मैं ऊपर ले चलता हूं।"

"नहीं, मैं कोई सामान नहीं लाई हूं।" रक्षा शाहानी ने उत्तर दिया था।

और जव वह वरामदे की ओर वढ़ी तो अशोक ने पेड़ की डालियों से देखा कि उसके कदम लड़खड़ा रहे हैं। जव वह वरामदे में पहुंची तो गोआनी रसोइया ने

पूछा, 'मेम साहब, खाना लाऊं ?"

"डिकोस्टा, तुम बहुत जिद्दी हो।" रक्षा शाहानी ने कहा, "मैं तुमसे सौ बार कह चुकी हूं कि अगर मैं दस बजे के बाद आया करूं तो तुम सो जाया करो, लेकिन तुम्हारे कानों पर जूं भी नहीं रेंगती। जाओ, जाकर सो जाओ, मैं खाना खाकर आई हूं।"

"क्या आपके पलंग के पास पानी का जग रख दूं ?" डिकोस्टा ने पूछा।

"नहीं, मुझे किसी भी चीज की जरूरत नहीं।" अपना पर्स हिलाती हुई और कुछ बड़बड़ाती हुई रक्षा अपने कमरे में चली गई। डिकोस्टा ने बरामदे की बत्ती बुझा दी। बंगले के बाहर फिर गहरा अंधेरा छा गया। तभी बंगले के अन्दर दो कमरों की बत्तियां जल उठीं और दस मिनट बाद वे दोनों बत्तियां भी बुझा दी गई। इसका मतलब था कि रक्षा शाहानी और डिकोस्टा सो गए थे।

काफी समय बीत गया था। क्रोकोडायल अपनी अगली टांगों पर सिर रखे सो गया था। अशोक भी ऊंघने लगा था। उसका सिर उसके सीने पर ढुलक आया था। वह तेजी से आंखें झपका रहा था और जागने की कोशिश कर रहा था, लेकिन नींद ने अपनी पूरी शक्ति से उस पर आक्रमण कर दिया था।

तभी दूर कहीं हल्की-सी सरसराहट हुई। वह सरसराहट इतनी धीमी थी कि ऊंघते हुए आदमी के लिए उसे सुन पाना कठिन था। कुछ देर के बाद वह सरसराहट बन्द हो गई। अचानक क्रोकोडायल ने अपने पैरों पर से अपना सिर उठा लिया। उसके नथुने फूलने लगे। ठीक उसी समय कहीं दूर हल्की-सी आहट हुई जैसे किसी ने खिड़की खोली हो। क्रोकोडायल फौरन अपनी चारों टांगों पर खड़ा हो गया, और फिर बड़ी तेजी से उस ओर भाग छूटा जिस ओर से आहट सुनाई दी थी। अशोक बैठा-बैठा सोया पड़ा था। उसे क्रोकोडायल के जाने तक का पता नहीं चला।

पांच मिनट बीत गए। अशोक का सिर जब बहुत झुक गया तो उसने संभलते हुए अपनी आंखें खोल दीं। उसने क्रोकोडायल को गायब देखा तो वह उठकर खड़ा हो गया। वह क्रोकोडायल को आवाज नहीं देना चाहता था।

गहरे अंधेरे में अशोक आंखें फाड़-फाड़कर देखने लगा। उसे क्रोकोडायल कहीं दिखाई नहीं दिया। अशोक को अपने-आप पर गुस्सा आया कि वह क्यों सो गया था ? अब वह मेजर को क्या जवाब देगा ? अगर कोई दुर्घटना हो गई तो मेजर उसे कभी भी क्षमा न करेगा। वह पेड़ की घनी डालियों में से बाहर निकला, तभी उसे सरसराहट सुनाई दी और दौड़ता हुआ क्रोकोडायल उसके पास आ गया। फिर उसने अशोक की पतलून का पायंचा अपने मुंह में दबाया और उसे खींचने लगा। अशोक उसके पीछे-पीछे चलने लगा। बंगले की पिछली दीवार की एक खुली खिड़की के पास पहुंचकर क्रोकोडायल जोर-जोर से भौंकने लगा।

अशोक ने उछलकर खिड़की की चौखट के निचले हिस्से में हाथ डाल दिया। लेकिन उसका हाथ फिसल गया और वह नीचे आ रहा। वह जान गया कि खिड़की से कूदकर अन्दर जाने की कोशिश बेकार है। वह दौड़ता हुआ अन्दर दरवाजे की ओर आया और जोर-जोर से दस्तक देने लगा। कुछ देर बाद बंगले के अन्दर एक कमरे की बत्ती जल उठी, और गोआनी रसोइया ने, जो क्रोकोडायल के भौंकने की आवाजें सुनकर ही जाग चुका था, अन्दर से ही पुकारकर पूछा, "कौन ?"

"डिकोस्टा, दरवाजा खोलो !" अशोक ने आवाज दी।

ठीक उसी समय क्रोकोडायल फिर खिड़की की ओर भाग गया और अशोक वहीं खड़ा दरवाजा खुलने का इन्तजार करने लगा। क्रोकोडायल जोर-जोर से भौंक रहा था। एक पल के बाद क्रोकोडायल के च्याओं-च्याओं करने की आवाज सुनाई

दी। सदर दरवाज़ा खुला और डिकोस्टा ने वाहर आकर वरामदे की वत्ती जला दी और एक अजनवी को दरवाजे पर खड़ा देखकर आश्चर्य से वोला, "आप कौन हैं ?"

"मुझे फौरन अपनी मालकिन के बेडरूम में ले चलो।"

"लेकिन आप कौन हैं ?" डिकोस्टा ने दरवाजा रोकते हुए पूछा।

इतने में क्रोकोडायल लंगड़ाता हुआ सदर दरवाजे के पास आ गया। उसकी एक टांग से खून वह रहा था। अशोक ने फौरन झुककर क्रोकोडायल की टांग हाथ में लेकर देखी। घाव गहरा नहीं था। तभी उसकी निगाह क्रोकोडायल के मुंह की ओर गई। क्रोकोडायल के मुंह में कपड़े का एक काला चिथड़ा था। अशोक ने वह चिथड़ा उसके मुंह से निकाल लिया और उसे ध्यान से देखने के वाद अपनी जेव में रख लिया। डिकोस्टा फटी-फटी आंखों से कभी अशोक की ओर, कभी क्रोकोडायल की ओर देख रहा था, जिसने अपनी जख्मी टांग चाटनी शुरू कर दी थी।

"डिकोस्टा, मुझे फौरन अपनी मालकिन के वेडरूम में ले चलो। देखते नहीं वह क्रोकोडायल के भौंकने और हमारी आवाजें सुनकर भी जागी नहीं है।" अशोक के मूंह से अपना नाम सुनकर डिकोस्टा और भी हैरान हो उठा।

"आप पहले यह तो वताइए कि आप हैं कौन ?" डिकोस्टा ने फिर पूछा।

अव अशोक को गुस्सा आ गया। उसने थोड़ा-सा पीछे हटकर डिकोस्टा के जवड़े पर जोर से मुक्का मारा। डिकोस्टा वहीं गिर गया और वेहोश हो गया।

अशोक ने तेजी से वंगले के अन्दर कदम रखा। क्रोकोडायल उसके पीछे-पीछे था। वह अव ज्यादा नहीं लंगड़ा रहा था, जिसका मतलव था कि उसका घाव मामूली था। अशोक ने जेव से टार्च निकालकर जलाई। क्रोकोडायल उसे रास्ता दिखाने लगा। वड़ी कठिनाई से उन्हें रक्षा शाहानी के वेडरूम का दरवाजा मिला। दरवाज़ा अन्दर से वन्द था, उसे खोलना कठिन था।

अशोक के लिए अव और कोई चारा न रहा कि वह फिर पिछली खिड़की की ओर जाए और उसके कमरे में जाने की कोशिश करे। लेकिन ऐसा करने से पहले उसने दरवाजे पर दस्तक दी और ऊंची आवाज में पुकारा, "रक्षा देवी···! रक्षा देवी···!" लेकिन अन्दर से कोई आवाज नहीं आई।

अशोक के पांव तले से धरती निकल गई। अन्दर से जवाव न आने का मतलव था कि रक्षा वेहोश थी या हत्यारा अपने उद्देश्य में सफल होने के वाद जा चुका था। अशोक तेजी से मुड़ा। सदर दरवाजे में डिकोस्टा अभी तक वेहोश पड़ा था। अशोक पिछवाड़े की खिड़की के पास पहुंच गया और वड़ी मुश्किल से खिड़की में अपना आधा धड़ घुसा पाने में सफल हुआ। थोड़ा-सा सरककर अन्दर कूद गया। कमरे में अंधेरा था। उसने टार्च जलाकर विजली का स्विच तलाश किया और उसे आन कर दिया।

पलंग की ओर देखते ही उसका कलेजा मुंह को आ गया। रेशमी साड़ी पहने रक्षा शाहानी पलंग पर वेसुध पड़ी हुई थी। उसके वायें हाथ और गर्दन पर खराशों के दो गहरे निशान थे। अशोक ने डरते-डरते उसकी नव्ज पर हाथ रखा। नव्ज चल रही थी। फिर अशोक ने डरते-डरते रक्षा के सुन्दर और मोहक सीने पर हाथ रख दिया। दिल भी धड़क रहा था। अशोक की जान में जान आ गई। तभी अशोक ने कमरे में एक विचित्र-सी गंध अनुभव की। क्रोकोडायल, जो खिड़की में से कूदकर अन्दर आ गया था, जोर-जोर से छींकने लगा। अशोक समझ गया कि कमरे में क्लोरोफार्म की गंध वसी हुई है। उसनें लपककर दरवाजा खोल दिया ताकि क्लोरोफार्म की गंध कमरे से निकल जाए। फिर अशोक मुड़कर क्रोकोडायल के पास आ गया और उसकी पीठ थपथपाकर वोला, "आज तुमने मेरी इज्जत वचा ली है

क्रोकोडायल, वरना मेजर साहब मुझे कान पकड़कर अपने यहां से निकाल व
कर देते ।"

उसने बड़े प्यार से क्रोकोडायल का सिर अपने सीने से लगा लिया और एक कुर्सी पर बैठकर रक्षा शाहानी की ओर देखते हुए सोचने लगा—आक्रमणक जब खिड़की से कूदा होगा, रक्षा शाहानी की आंख खुल गई होगी। और जब आ मणकारी ने इसे क्लोरोफार्म सुंघाने की कोशिश में चाकू से वार किया होग रक्षा ने चाकू का वार हाथ पर रोक लिया होगा। उसने प्रतिरोध किया हो आक्रमणकारी ने दूसरा वार तब किया होगा जब वह पूरी तरह बेहोश नहीं होगी। इतने में ही क्रोकोडायल के भौंकने की आवाज और मेरे कदमों की अ सुनकर वह बौखलाकर भाग गया होगा।

"ओह मेरे भगवान ! अगर दो मिनट की देर हो जाती तो आक्रमण अपना काम कर चुका होता।" अशोक के मुंह से निकला। फिर उसकी निगाह शाहानी के पर्स पर जा पड़ी जो खुला हुआ था। वह पर्स के पास पहुंचा और ध्यान से देखने लगा। वह सोच रहा था कि शायद आक्रमणकारी ने पर्स ह होगा। मामला गम्भीर था। वह दोबारा कुर्सी पर आ बैठा। उसने ट्रांसमीटर में जेब से एक तार निकालकर फंसा दिया, जिसके सिरे पर एक छोटा-सा प बना हुआ था। उसने घड़ी की सुई एक विशेष अंक पर घुमा दी और तार का ह सा प्याला कान से लगा लिया जो रिसीवर का काम देता था।

"हैलो···हैलो···एक्स स्पीकिंग दिस साइड।" उसने कहा और एक तक इन्तजार करने के बाद फिर बोला, "हैलो, हैलो···जेड स्पीकिंग दिस साइ अशोक का चेहरा खुशी से खिल उठा। दूसरी ओर से मेजर बलवन्त बोल था।

"मेजर साहब, फौरन चले आइए।" अशोक ने कहा।

"क्यों, खैरियत तो है ?"

"जी हां, रक्षा शाहानी पर हमला हुआ है।"

"हमला कैसे हुआ ?" मेजर ने विफरी हुई आवाज में कहा, "तुम उस कहां थे ?"

"मैं उनके बाग में था। आक्रमणकारी पिछली दीवार की खिड़की खो बंगले में घुसा। उसके कदमों की आहट सुनाई नहीं दे सकी थी, क्योंकि वह विशेष प्रकार का लिबास पहने हुए था। बहरहाल क्रोकोडायल की चौकसी ने अपने उद्देश्य में सफल नहीं होने दिया।"

"अच्छा, तो तुम मेरा इन्तजार करो, मैं आ रहा हूं।" मेजर ने कहा, ' शाहानी के पास ही रहना। आल ओवर।"

अशोक अभी ट्रांसमीटर घड़ी से तार खोलकर अपनी जेब में उसे डा रहा था कि डिकोस्टा एक डंडा हाथ में लिए हुए बेडरूम में आ पहुंचा, "मैं तु सिर तोड़ दूंगा, चोर कहीं के !"

अशोक ने फौरन जेब से रिवाल्वर निकाल लिया। रिवाल्वर देखते डिकोस्टा डर गया।

"आराम से बैठ जाओ। अभी तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं चोर नहीं।" अशोक ने कहा। डिकोस्टा चुपचाप फर्श पर बैठ गया और उसने बाहर फेंक दिया।

अशोक मुस्कराया कि आदमी को अपनी जान कितनी प्यारी होती चालीस मिनट के बाद मेजर वहां पहुंच गया।

उसने रक्षा शाहानी का मुआयना किया। और फिर अशोक की ओर मुड़कर कहा, "घाव ज्यादा गहरे नहीं हैं। खून भी ज्यादा नहीं वहा है। रक्षा की वेहोशी क्लोरोफार्म की वजह से है। डर है तो सिर्फ इस बात का कि जिस चाकू से हमला किया गया है, वह कहीं जहर में बुझा हुआ न हो।"

तभी मेजर की निगाह क्रोकोडायल की जख्मी टांग पर पड़ी, "क्या क्रोकोडायल पर भी हमला किया गया था?"

"जी हां।"

"अशोक, दौड़ो! इस घर में फोन है। इन्स्पेक्टर मैथ्यूज को फोन करो। उसके घर का नम्बर है ६७३२८। उसे सूचना दो कि फौरन पुलिस डाक्टर को लेकर रक्षा शाहानी के वंगले पर पहुंच जाए। उसे ज्यादा सवाल न करने देना। वस इतना कहना कि मेजर वलवन्त आपको वुला रहे हैं। डाक्टर अपने साथ जरूरी सामान और दवाएं लेकर आए। आधे घंटे से ज्यादा देर नहीं होनी चाहिए।" डिकोस्टा हैरान था कि ये कैसे लोग हैं। पुलिस को खुद ही वुला रहे हैं। लेकिन उसे कुछ पूछने की हिम्मत न हुई।

"चलो, मुझे टेलीफोन वाले कमरे में ले चलो।" अशोक ने डिकोस्टा से कहा।

डिकोस्टा ने फौरन उसकी आज्ञा का पालन किया। वह अशोक के हाथ में रिवाल्वर देखकर इतना घवरा गया था कि उसने अपनी मालकिन की ओर भी देखने की कोशिश न की थी। मेजर रक्षा शाहानी के पर्स की ओर देख रहा था और अपने-आप से कह रहा था, "आक्रमणकारी रक्षा की हत्या करने में तो सफल नहीं हुआ, लेकिन अपने मतलव की चीज ले जाने में जरूर सफल हो गया।"

क्रोकोडायल ने मेजर के जूतों पर अपना सिर रख दिया था। मेजर ने झुककर उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "तुम वहादुर वेटे हो। अभी डाक्टर आया जाता है, वह फैसला करेगा कि तुम्हारा जख्म मामूली है या खतरनाक है।"

अशोक फोन करने के वाद वापस आ गया तो उसने जेव से वह काला चिथड़ा निकालकर मेजर की ओर वढ़ा दिया जो क्रोकोडाल अपने मुंह में दवा लाया था।

"जव क्रोकोडायल लंगड़ाता हुआ आया था, तो यह काला चिथड़ा इसके मुंह में दवा हुआ था।" अशोक ने कहा।

मेजर ने वह चिथड़ा हाथ में लेकर देखा और उसके मुंह से निकला, "ऊंह, आक्रमणकारी काले कपड़े पहनकर आया था, ताकि अंधेरे में उसके आने का किसी को पता न चल सके!" और फिर रक्षा शाहानी के गले के जख्म की ओर इशारा करते हुए मेजर ने कहा, "यह वार ऐसा मालूम होता है कि हत्यारे ने जाते-जाते वौखलाहट में किया है। इसलिए वह भरपूर वार न कर सका।"

तभी वाहर एक मोटर रुकने की आवाज सुनाई दी।

"इन्स्पेक्टर मैथ्यूज वड़ी जल्दी पहुंच गया।" मेजर ने कहा।

"यह कैसे हो सकता है?" अशोक वोला, "अभी तो मुझे फोन किए हुए दो ही मिनट वीते हैं।"

वे दोनों चौकन्ने होकर मोटर से आने वाले का इन्तजार करने लगे। कुछ मिनट के वाद सेठ सूरजनारायण शाहानी ने कमरे में प्रवेश किया। उन्होंने मेजर को अपनी वेटी के कमरे में वैठे देखा तो ठिठककर रह गए और हकलाते हुए वोले, "मैं क्लव से वापस आ रहा था कि मैंने रक्षा के वेडरूम में वत्ती जलती हुई देखी। इसलिए उससे मिलने चला आया।"

"मिल लीजिए।" मेजर ने रक्षा के पलंग की ओर इशारा करते हुए कहा।

सेठ शाहानी ने पलंग की ओर देखा तो तेजी से आंखें झपकाने लगे। वह

क्रोकोडायल, वरना मेजर साहब मुझे कान पकड़कर अपने यहां से निकाल बाहर कर देते।"

उसने बड़े प्यार से क्रोकोडायल का सिर अपने सीने से लगा लिया और फिर एक कुर्सी पर बैठकर रक्षा शाहानी की ओर देखते हुए सोचने लगा—आक्रमणकारी जब खिड़की से कूदा होगा, रक्षा शाहानी की आंख खुल गई होगी। और जब आक्रमणकारी ने इसे क्लोरोफार्म सुंघाने की कोशिश में चाकू से वार किया होगा तो रक्षा ने चाकू का वार हाथ पर रोक लिया होगा। उसने प्रतिरोध किया होगा। आक्रमणकारी ने दूसरा वार तब किया होगा जब वह पूरी तरह बेहोश नहीं हुई होगी। इतने में ही क्रोकोडायल के भौंकने की आवाज और मेरे कदमों की आहट सुनकर वह बौखलाकर भाग गया होगा।

"ओह मेरे भगवान! अगर दो मिनट की देर हो जाती तो आक्रमणकारी अपना काम कर चुका होता।" अशोक के मुंह से निकला। फिर उसकी निगाह रक्षा शाहानी के पर्स पर जा पड़ी जो खुला हुआ था। वह पर्स के पास पहुंचा और उसे ध्यान से देखने लगा। वह सोच रहा था कि शायद आक्रमणकारी ने पर्स खोला होगा। मामला गम्भीर था। वह दोबारा कुर्सी पर आ बैठा। उसने ट्रांसमीटर घड़ी में जेब से एक तार निकालकर फंसा दिया, जिसके सिरे पर एक छोटा-सा प्याला बना हुआ था। उसने घड़ी की सुई एक विशेष अंक पर घुमा दी और तार का छोटा-सा प्याला कान से लगा लिया जो रिसीवर का काम देता था।

"हैलो···हैलो···एक्स स्पीकिंग दिस साइड।" उसने कहा और एक मिनट तक इन्तजार करने के बाद फिर बोला, "हैलो, हैलो···जेड स्पीकिंग दिस साइड।" अशोक का चेहरा खुशी से खिल उठा। दूसरी ओर से मेजर बलवन्त बोल रहा था।

"मेजर साहब, फौरन चले आइए।" अशोक ने कहा।

"क्यों, खैरियत तो है?"

"जी हां, रक्षा शाहानी पर हमला हुआ है।"

"हमला कैसे हुआ?" मेजर ने बिफरी हुई आवाज में कहा, "तुम उस समय कहां थे?"

"मैं उनके बाग में था। आक्रमणकारी पिछली दीवार की खिड़की खोलकर बंगले में घुसा। उसके कदमों की आहट सुनाई नहीं दे सकी थी, क्योंकि वह एक विशेष प्रकार का लिबास पहने हुए था। बहरहाल क्रोकोडायल की चौकसी ने उसे अपने उद्देश्य में सफल नहीं होने दिया।"

"अच्छा, तो तुम मेरा इन्तजार करो, मैं आ रहा हूं।" मेजर ने कहा, "रक्षा शाहानी के पास ही रहना। आल ओवर।"

अशोक अभी ट्रांसमीटर घड़ी से तार खोलकर अपनी जेब में उसे डाल ही रहा था कि डिकोस्टा एक डंडा हाथ में लिए हुए बेडरूम में आ पहुंचा, "मैं तुम्हारा सिर तोड़ दूंगा, चोर कहीं के!"

अशोक ने फौरन जेब से रिवाल्वर निकाल लिया। रिवाल्वर देखते ही डिकोस्टा डर गया।

"आराम से बैठ जाओ। अभी तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं चोर हूं या नहीं।" अशोक ने कहा। डिकोस्टा चुपचाप फर्श पर बैठ गया और उसने डंडा बाहर फेंक दिया।

अशोक मुस्कराया कि आदमी को अपनी जान कितनी प्यारी होती है। चालीस मिनट के बाद मेजर वहां पहुंच गया।

इंस्पेक्टर बोला, "कल मैं क्या मुंह लेकर इंस्पेक्टर जनरल पुलिस के पास जाऊंगा! वह तो कहेगा कि मैं हत्यारे को क्या तब ढूंढूंगा जब सारे शहर की हत्या कर दी जाएगी!"

मेजर हंसने लगा। उसने इंस्पेक्टर को तसल्ली देते हुए कहा, "अगर मैं अपना वायदा निश्चित समय से पहले ही पूरा कर दूं तो क्या आप खुश हो जाएंगे?"

"बहुत खुश होऊंगा! और आपके इस अहसान को कभी न भूल सकूंगा।"

"अच्छा, तो कल ग्यारह बजे मैं आपको फोन करूंगा। इसके बाद आपको मेरे कहने के अनुसार काम करना होगा।"

"मैं आपका हुक्म सिर-आंखों पर बजा लाऊंगा।"

पुलिस डाक्टर रक्षा शाहानी का खून निकालकर कई दवाओं में मिलाने के बाद उसकी जांच कर रहा था।

"क्यों डाक्टर साहब, आप किस नतीजे पर पहुंचे हैं?" मेजर ने पूछा।

"मेरी केमिकल जांच का परिणाम यह है कि जिस हथियार से वार किया गया वह जहरीला नहीं था।" डाक्टर ने उत्तर दिया।

मेजर की जान में जान आ गई।

"डाक्टर साहब, रक्षा शाहानी के जख्मों के बारे में आपकी क्या राय है?"

"जख्म गहरे और खतरनाक नहीं हैं। इनकी जिन्दगी को देखने में तो कोई खतरा नहीं है, लेकिन रोगी के होश में आने के बाद यह देखना होता है कि उस पर हमले का कितना असर पड़ा है। सदमा गहरा हो तो मरीज सकते में आ जाता है। यह दशा बनी भी रह सकती है और खतरनाक भी साबित हो सकती है।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि कल शाम तक भी इनके होश में आने की कोई आशा नहीं है!" मेजर ने कहा।

"मैं डाक्टर हूं, ज्योतिषी नहीं हूं। क्लोरोफार्म का असर खत्म होने पर ही पता चलेगा कि इनको जल्दी होश आता है या नहीं। इस समय तो मैं यही राय दूंगा कि इन्हें फौरन अस्पताल पहुंचा देना चाहिए।"

"हां, देर नहीं होनी चाहिए," मेजर ने कहा, "इंस्पेक्टर साहब, आप अपनी कार में रक्षा को अस्पताल ले जाइए।"

"जरूर, आइए इनको उठाकर नीचे ले चलें।" इंस्पेक्टर ने कहा।

सबने हाथ बंटाया तब कहीं रक्षा को इंस्पेक्टर मैथ्यूज की कार तक ले जाया गया।

दागदार चेहरे

अगले दिन सोनिया और अशोक सवेरे ही दफ्तर पहुंच गए। मेजर ने अशोक से कहा, "अशोक, तुम आज महाबलेश्वर के दो टिकट ले आओ। आज से तुम्हें दो महीने की छुट्टी दी जा रही है। कल किसी ट्रेन में दो सीटें रिजर्व करा लो। दो महीने तक पहाड़ी जलवायु में रहोगे तो तुम दोनों को ही लाभ पहुंचेगा।"

अशोक मेजर का मुंह ताकने लगा और बोला, "आप तो मजाक कर रहे हैं।"

"मैं मजाक नहीं कर रहा। मैं मुहब्बत के मामले में मजाक नहीं किया करता। यह दो नाजुक दिलों का मामला होता है। अगर विश्वास न हो तो जाओ, दो महीने की छुट्टी के लिए ऐप्लीकेशन लिखकर ले आओ। मैं अभी उसे मं[illegible] किए देता हूं। और छुट्टी की मंजूरी के साथ-साथ तुम्हें दो [illegible] दिलाए देता हूं।"

लपककर बेटी के पलंग के पास गए। उसकी नब्ज पर जब उन्होंने हाथ रखा तब उन्हें इत्मीनान हुआ। उन्होंने मेजर की ओर मुड़कर पूछा, "मेरी समझ में नहीं आ रहा कि यहां क्या हो रहा है। मेरी बेटी की यह हालत किसने बनाई है? क्या आपने?"

"क्या आपका दिल गवाही देता है कि यह कारनामा हमारा है?" मेजर ने कहा।

"इस जमाने के इन्सान पर भरोसा नहीं किया जा सकता।"

मेजर को गुस्सा आ गया, "जैसे आप पर भरोसा नहीं किया जा सकता। आप अपने दोस्त को लूट सकते हैं, उसे कंगाल बना सकते हैं। आप एक मासूम लड़की पर जुल्म ढाकर उसे अपने ब्लैकमेल का जरिया बना सकते हैं। उसे एक पागल लड़की का अभिनय करने पर मजबूर कर सकते हैं। आप एक बूढ़े करोड़पती से शादी करने के लिए अपनी बेटी पर जोर डाल सकते हैं...और..." यहीं तक पहुंचकर मेजर ने सेठ शाहानी की ओर देखा।

"और क्या?" सेठ शाहानी ने पूछा।

"और क्या...यही कि आप पर कैसे भरोसा किया जा सकता है? बहुत संभव है कि आपने ही अपनी बेटी पर कातिलाना हमला किया हो, और अब आप यह देखने आए हों कि वह जिन्दा है या मर चुकी है। जो आदमी दौलत के लिए इतने गुनाह कर सकता है क्या वह इस बात पर नाराज होकर कि उसकी बेटी और अधिक दौलत बटोरने में उसका हाथ नहीं बंटा रही, अपनी बेटी की हत्या नहीं कर सकता?"

सेठ शाहानी फिर हकलाते हुए बोले, "यह आप क्या कह रहे हैं!" मेजर की कही हुई खरी-खरी बातों ने सेठ शाहानी की सारी अकड़ ढीली कर दी थी। वह बड़े विनीत स्वर में बोले, "आप मुझे क्यों बेकार ही परेशान कर रहे हैं।"

"परेशान तो आप लोगों को कर रहे हैं। आप उनके घर बर्बाद कर रहे हैं। अब आपका जमाना बीत चुका है सेठ जी! अब तो ऐसी लाठी आप पर पड़ने-वाली है जिसकी आवाज बिलकुल नहीं होती है।"

सेठ की जबान पर जैसे किसी ने ताला जड़ दिया। वह एक कुर्सी पर बैठ गए और दीवार की ओर देखने लगे जैसे उस पर लिखा अपना भविष्य पढ़ रहे हों।

"मैं किसी का हत्यारा नहीं हूं।" सेठ शाहानी ने कहा।

"किसी का गला हथियार ही से नहीं काटा जाता।" मेजर ने कहा, "धोखे और छल से भी गला काटा जा सकता है। मैं मानता हूं कि चौधरी साहब का हत्यारा कोई और है, मगर यह बात भी नहीं भूल सकता कि आपने उनकी जीते जी हत्या की थी।"

सेठ शाहानी ने खामोश रहने में ही अपनी भलाई देखी।

तभी बाहर एक कार के रुकने की आवाज सुनाई दी।

"मेरा खयाल है कि यह पुलिस इन्स्पेक्टर मैथ्यूज की कार है।" अशोक ने कहा।

कुछ मिनट के बाद इंस्पेक्टर मैथ्यूज ने डाक्टर के साथ उस कमरे में आते ही एक विचित्र दृश्य देखा।

मेजर ने पुलिस डाक्टर से कहा, "सबसे पहले आप यह देखिए कि मिसेज रक्षा शाहानी के घावों में जहर तो नहीं है।"

यह सुनकर डाक्टर अपने काम में व्यस्त हो गया। इतने में मेजर ने इंस्पेक्टर को सारा किस्सा सुना दिया।

"ओह मेजर साहब, अब तो हत्यारे के जुल्म की हद होती जा रही है!"

इस्पेक्टर बोला, "कल मैं क्या मुंह लेकर इंस्पेक्टर जनरल पुलिस के पास जाऊंगा! वह तो कहेगा कि मैं हत्यारे को क्या तब ढूंढूंगा जब सारे शहर की हत्या कर दी जाएगी!"

मेजर हंसने लगा। उसने इंस्पेक्टर को तसल्ली देते हुए कहा, "अगर मैं अपना वायदा निश्चित समय से पहले ही पूरा कर दूं तो क्या आप खुश हो जाएंगे?"

"बहुत खुश होऊंगा! और आपके इस अहसान को कभी न भूल सकूंगा।"

"अच्छा, तो कल ग्यारह बजे मैं आपको फोन करूंगा। इसके बाद आपको मेरे कहने के अनुसार काम करना होगा।"

"मैं आपका हुक्म सिर-आंखों पर बजा लाऊंगा।"

पुलिस डाक्टर रक्षा शाहानी का खून निकालकर कई दवाओं में मिलाने के बाद उसकी जांच कर रहा था।

"क्यों डाक्टर साहब, आप किस नतीजे पर पहुंचे हैं?" मेजर ने पूछा।

"मेरी केमिकल जांच का परिणाम यह है कि जिस हथियार से वार किया गया वह जहरीला नहीं था।" डाक्टर ने उत्तर दिया।

मेजर की जान में जान आ गई।

"डाक्टर साहब, रक्षा शाहानी के जख्मों के बारे में आपकी क्या राय है?"

"जख्म गहरे और खतरनाक नहीं हैं। इनकी जिन्दगी को देखने में तो कोई खतरा नहीं है, लेकिन रोगी के होश में आने के बाद यह देखना होता है कि उस पर हमले का कितना असर पड़ा है। सदमा गहरा हो तो मरीज सकते में आ जाता है। यह दशा बनी भी रह सकती है और खतरनाक भी साबित हो सकती है।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि कल शाम तक भी इनके होश में आने की कोई आशा नहीं है!" मेजर ने कहा।

"मैं डाक्टर हूं, ज्योतिषी नहीं हूं। क्लोरोफार्म का असर खत्म होने पर ही पता चलेगा कि इनको जल्दी होश आता है या नहीं। इस समय तो मैं यही राय दूंगा कि इन्हें फौरन अस्पताल पहुंचा देना चाहिए।"

"हां, देर नहीं होनी चाहिए," मेजर ने कहा, "इंस्पेक्टर साहब, आप अपनी कार में रक्षा को अस्पताल ले जाइए।"

"जरूर, आइए इनको उठाकर नीचे ले चलें।" इंस्पेक्टर ने कहा।

सबने हाथ बंटाया तब कहीं रक्षा को इंस्पेक्टर मैथ्यूज की कार तक ले जाया गया।

दागदार चेहरे

अगले दिन सोनिया और अशोक सवेरे ही दफ्तर पहुंच गए। मेजर ने अशोक से कहा, "अशोक, तुम आज महाबलेश्वर के दो टिकट ले आओ। आज से तुम्हें दो महीने की छुट्टी दी जा रही है। कल किसी ट्रेन में दो सीटें रिजर्व करा लो। दो महीने तक पहाड़ी जलवायु में रहोगे तो तुम दोनों को ही लाभ पहुंचेगा।"

अशोक मेजर का मुंह ताकने लगा और बोला, "आप तो मजाक कर रहे हैं।"

"मैं मजाक नहीं कर रहा। मैं मुहब्बत के मामले में मजाक नहीं किया करता। यह दो नाजुक दिलों का मामला होता है। अगर विश्वास न हो तो जाओ, दो महीने की छुट्टी के लिए ऐप्लीकेशन लिखकर ले आओ। मैं अभी उसे मंजूर किए देता हूं। और छुट्टी की मंजूरी के साथ-साथ तुम्हें दो महीने की तनख्वाह भी एडवांस दिलाए देता हूं।"

सोनिया भी मेजर की बातों को अभी तक मजाक ही समझ रही थी, "अभी तक हत्यारे का कोई पता नहीं चला और आप इन्हें महावलेश्वर भेज रहे हैं!"

"हत्यारे शाम तक इंस्पेक्टर मैथ्यूज की हवालात में होंगे।"

"क्या हत्यारे संख्या में अधिक हैं?"

"नहीं, दो हैं," मेजर ने कहा, "और दो आदमी हत्यारों के साथ जाएंगे।"

"क्या मतलब?"

"मतलब तो आज शाम को बताऊंगा। आज शाम मिसेज शोभा के यहां फिर एक पार्टी का प्रबन्ध किया जाएगा। पार्टी का प्रबन्ध इन्स्पेक्टर मैथ्यूज करेंगे।"

"अच्छा, तो यों कहिए कि आप सम्बन्धित लोगों को इकट्ठा कर रहे हैं!" सोनिया ने कहा।

"यही तो कह रहा हूं," मेजर ने कहा और फिर अशोक की ओर देखते हुए बोला, "वाह, तुम अभी तक यहीं खड़े हो! जाओ और छुट्टी के लिए ऐप्लीकेशन लिखकर ले आओ। मैं तुम्हारी बहुत पुरानी चाह पूरी कर रहा हूं और तुम मेरी बात को मजाक समझ रहे हो।"

अशोक ऐप्लीकेशन लिखने अपने कमरे में चला गया तो सोनिया ने बड़ी गम्भीरता से कहा, "कहीं खुशी से अशोक पागल न हो जाए!"

"आजकल इतनी खुशी कहां होती है कि लोग पागल हो जाएं। आजकल इंसान को खुशी उस समय मिलती है जब वह अपना अर्थ खो चुकी होती है। जब तक ये दोनों महावलेश्वर जाने वाली गाड़ी में नहीं बैठ जाएंगे, तब तक दोनों को यह विश्वास नहीं होगा कि खुशी सचमुच उनका भाग्य बन चुकी है।" मेजर ने कहा।

सोनिया चुप हो गई और विचारों में खो गई। इतने में विनोद मल्होत्रा भी वहां पहुंच गया। "कल आप दिन-भर गायब रहे," विनोद मल्होत्रा ने कहा, "कल कोई मोर्चा जीता या नहीं?"

"कल दिन-भर कहां गायब रहा! सुबह तुमसे मुलाकात हुई तो थी!" मेजर ने कहा।

"मुलाकात सुबह हुई थी, उसके बाद तो नहीं हुई। बताइए, बात कुछ आगे बढ़ी?"

"इतनी बढ़ी कि अब तो अपने परिणाम पर पहुंच रही है।"

"हां, आपने यह तो बताया ही नहीं कि कल रात आप किस खतरनाक मुहिम पर गए थे?" सोनिया ने पूछा।

मेजर ने पिछली रात की कहानी सुना दी, लेकिन इस कहानी के कुछ हिस्से को नहीं बताया। उसने अपनी कहानी समाप्त करते हुए विनोद से कहा, "आज शाम को छः बजे आपको अंधेरी पहुंचना है—मिसेज शोभा के यहां।" यह कहकर उसने जेब से एक कागज निकाला और विनोद की ओर बढ़ाते हुए कहा, "मिसेज शोभा का पता नोट कर लीजिए।" फिर उसे न जाने क्या खयाल आया, बोला, "अगर आप साढ़े पांच बजे वहां पहुंच जाएं तो ज्यादा अच्छा हो।"

विनोद मल्होत्रा ने शोभा का पता नोट करने के बाद साढ़े पांच बजे वहां पहुंचने का वायदा कर लिया और फिर अपने दफ्तर चला गया। अशोक ऐप्लीकेशन लिखकर ले आया। उसने झिझकते हुए ऐप्लीकेशन मेजर के सामने रख दी। मेजर ने मुस्कराते हुए अपना कलम उठाया और उस पर अपने दस्तखत कर दिए। फिर अपने विभाग के कैशियर के नाम एक चिट लिख दी कि दो महीने का वेतन अशोक को एडवांस दे दिया जाए।

"आप ये तमाम बातें इस विश्वास के साथ कर रहे हैं जैसे हत्यारे सचमुच

आपकी पकड़ में हों।"

"तुम्हें मालूम है कि जब तक मुझे विश्वास नहीं हो जाता तब तक मैं ऐसे काम नहीं किया करता।"

सोनिया निरुत्तर हो गई, क्योंकि वह मेजर के स्वभाव से भलीभांति परिचित थी कि मेजर डींग मारने या शेखी बघारने में विश्वास नहीं रखता। जब वह अपना काम पूरी तरह कर चुकता है तभी अपना विश्वास प्रकट करता है।

"अशोक, अब शाम तक मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं। हम शाम को साढ़े पांच बजे शोभा के यहां पहुंच रहे हैं। उस समय तुम्हारा वहां मौजूद होना बहुत जरूरी है।"

"मैं कहीं नहीं जाऊंगा। आप मुझे वहीं पाएंगे।"

"एक बात तो मैं भूल ही गया। तुम्हें महाबलेश्वर के तीन टिकट खरीदने होंगे।"

"तीन टिकट क्यों ?" सोनिया ने पूछा।

"अंजना भी तो उसके साथ जाएगी। मैं तो उसे भूल ही गया था।" मेजर बोला।

"आप भूल गए थे लेकिन मैं नहीं भूला था। अंजना अब हमारी एक जिम्मेदारी बन चुकी है।"

फिर अशोक वहां से इठलाता हुआ चला गया। उसके जाने के बाद मेजर ने सोनिया से कहा, "अब मैं थोड़ी देर बैठकर रिपोर्ट तैयार कर लूं। ठीक ग्यारह बजे मुझे याद दिलाना कि मुझे इंस्पेक्टर मैथ्यूज को फोन करना है।" मेजर रिपोर्ट लिखने में व्यस्त हो गया और सोनिया क्रोकोडायल से खेलने मैदान में चली गई।

ठीक ग्यारह बजे सोनिया मेजर के पास आई और कलाई पर बंधी घड़ी की ओर देखते हुए बोली, "ग्यारह बज रहे हैं।"

"और मैं भी अपनी रिपोर्ट का अन्तिम पैराग्राफ लिख रहा हूं।"

रिपोर्ट का अन्तिम पैराग्राफ लिख चुकने के बाद मेजर ने फोन का रिसीवर उठाया और इंस्पेक्टर मैथ्यूज का नम्बर डायल किया। दूर कहीं घंटी बज उठी और फिर किसी ने रिसीवर उठा लिया।

"हैलो !" मेजर ने कहा।

"ओह, मेजर साहब ! आप समय की पाबन्दी का कितना ध्यान रखते हैं !" दूसरी ओर से इंस्पेक्टर मैथ्यूज ने कहा।

"सबसे पहले तो आप रक्षा शाहानी के बारे में मुझे ताजा रिपोर्ट दीजिए।"

"मैं अभी-अभी अस्पताल से ही आ रहा हूं। क्लोरोफार्म का असर दूर हो चुका है। लेकिन डाक्टर के कल रात के विचार के अनुसार रक्षा शाहानी सकते के आलम में है। उसे आक्सीजन दी जा रही है, और उसकी रगों में ग्लूकोज चढ़ाया जा रहा है। डाक्टरो की राय है कि रक्षा खतरे से तो बाहर है, लेकिन चौबीस घंटे से पहले उसके होश में आने की कोई संभावना नहीं।"

"यह तो बहुत बुरा हुआ। मैं चाहता था कि आज पार्टी में रक्षा शाहानी भी शामिल होती।"

"पार्टी ? कैसी पार्टी ?" इंस्पेक्टर ने हैरान होकर पूछा।

"इंस्पेक्टर साहब, आज आप एक पार्टी अरेंज कर रहे हैं।"

"मैं···मैं···लेकिन किस खुशी में ? यहां तो जान के लाले पड़े हुए हैं। अगर एक-दो दिन में, नहीं-नहीं, मेरा मतलब है कि अगर आज आप हत्यारों को मेरे हवाले नहीं करोगे, तो मुझे नौकरी से छुट्टी मिल जाएगी।"

सोनिया भी मेजर की बातों को अभी तक मजाक ही समझ रही थी, "अभी तक हत्यारे का कोई पता नहीं चला और आप इन्हें महाबलेश्वर भेज रहे हैं!"

"हत्यारे शाम तक इंस्पेक्टर मैथ्यूज की हवालात में होंगे।"

"क्या हत्यारे संख्या में अधिक हैं?"

"नहीं, दो हैं," मेजर ने कहा, "और दो आदमी हत्यारों के साथ जाएंगे।"

"क्या मतलब?"

"मतलब तो आज शाम को बताऊंगा। आज शाम मिसेज शोभा के यहां फिर एक पार्टी का प्रबन्ध किया जाएगा। पार्टी का प्रबन्ध इन्स्पेक्टर मैथ्यूज करेंगे।"

"अच्छा, तो यों कहिए कि आप सम्बन्धित लोगों को इकट्ठा कर रहे हैं!" सोनिया ने कहा।

"यही तो कह रहा हूं," मेजर ने कहा और फिर अशोक की ओर देखते हुए बोला, "वाह, तुम अभी तक यहीं खड़े हो! जाओ और छुट्टी के लिए ऐप्लीकेशन लिखकर ले आओ। मैं तुम्हारी बहुत पुरानी चाह पूरी कर रहा हूं और तुम मेरी बात को मजाक समझ रहे हो।"

अशोक ऐप्लीकेशन लिखने अपने कमरे में चला गया तो सोनिया ने बड़ी गम्भीरता से कहा, "कहीं खुशी से अशोक पागल न हो जाए!"

"आजकल इतनी खुशी कहां होती है कि लोग पागल हो जाएं। आजकल इंसान को खुशी उस समय मिलती है जब वह अपना अर्थ खो चुकी होती है। जब तक ये दोनों महाबलेश्वर जाने वाली गाड़ी में नहीं बैठ जाएंगे, तब तक दोनों को यह विश्वास नहीं होगा कि खुशी सचमुच उनका भाग्य बन चुकी है।" मेजर ने कहा।

सोनिया चुप हो गई और विचारों में खो गई। इतने में विनोद मल्होत्रा भी वहां पहुंच गया। "कल आप दिन-भर गायब रहे," विनोद मल्होत्रा ने कहा, "कल कोई मोर्चा जीता या नहीं?"

"कल दिन-भर कहां गायब रहा! सुबह तुमसे मुलाकात हुई तो थी!" मेजर ने कहा।

"मुलाकात सुबह हुई थी, उसके बाद तो नहीं हुई। बताइए, बात कुछ आगे बढ़ी?"

"इतनी बढ़ी कि अब तो अपने परिणाम पर पहुंच रही है।"

"हां, आपने यह तो बताया ही नहीं कि कल रात आप किस खतरनाक मुहिम पर गए थे?" सोनिया ने पूछा।

मेजर ने पिछली रात की कहानी सुना दी, लेकिन इस कहानी के कुछ हिस्से को नहीं बताया। उसने अपनी कहानी समाप्त करते हुए विनोद से कहा, "आज शाम को छः बजे आपको अंधेरी पहुंचना है—मिसेज शोभा के यहां।" यह कहकर उसने जेब से एक कागज निकाला और विनोद की ओर बढ़ाते हुए कहा, "मिसेज शोभा का पता नोट कर लीजिए।" फिर उसे न जाने क्या खयाल आया, बोला, "अगर आप साढ़े पांच बजे वहां पहुंच जाएं तो ज्यादा अच्छा हो।"

विनोद मल्होत्रा ने शोभा का पता नोट करने के बाद साढ़े पांच बजे वहां पहुंचने का वायदा कर लिया और फिर अपने दफ्तर चला गया। अशोक ऐप्लीकेशन लिखकर ले आया। उसने झिझकते हुए ऐप्लीकेशन मेजर के सामने रख दी। मेजर ने मुस्कराते हुए अपना कलम उठाया और उस पर अपने दस्तखत कर दिए। फिर अपने विभाग के कैशियर के नाम एक चिट लिख दी कि दो महीने का वेतन अशोक को एडवांस दे दिया जाए।

"आप ये तमाम बातें इस विश्वास के साथ कर रहे हैं जैसे हत्यारे सचमुच

आपकी पकड़ में हों।"

"तुम्हें मालूम है कि जब तक मुझे विश्वास नहीं हो जाता तब तक मैं ऐसे काम नहीं किया करता।"

सोनिया निरुत्तर हो गई, क्योंकि वह मेजर के स्वभाव से भलीभांति परिचित थी कि मेजर डींग मारने या शेखी बघारने में विश्वास नहीं रखता। जब वह अपना काम पूरी तरह कर चुकता है तभी अपना विश्वास प्रकट करता है।

"अशोक, अब शाम तक मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं। हम शाम को साढ़े पांच बजे शोभा के यहां पहुंच रहे हैं। उस समय तुम्हारा वहां मौजूद होना बहुत जरूरी है।"

"मैं कहीं नहीं जाऊंगा। आप मुझे वहीं पाएंगे।"

"एक बात तो मैं भूल ही गया। तुम्हें महाबलेश्वर के तीन टिकट खरीदने होंगे।"

"तीन टिकट क्यों?" सोनिया ने पूछा।

"अंजना भी तो उसके साथ जाएगी। मैं तो उसे भूल ही गया था।" मेजर बोला।

"आप भूल गए थे लेकिन मैं नहीं भूला था। अंजना अब हमारी एक जिम्मेदारी बन चुकी है।"

फिर अशोक वहां से इठलाता हुआ चला गया। उसके जाने के बाद मेजर ने सोनिया से कहा, "अब मैं थोड़ी देर बैठकर रिपोर्ट तैयार कर लूं। ठीक ग्यारह बजे मुझे याद दिलाना कि मुझे इंस्पेक्टर मैथ्यूज को फोन करना हैं।" मेजर रिपोर्ट लिखने में व्यस्त हो गया और सोनिया क्रोकोडायल से खेलने मैदान में चली गई।

ठीक ग्यारह बजे सोनिया मेजर के पास आई और कलाई पर बंधी घड़ी की ओर देखते हुए बोली, "ग्यारह बज रहे हैं।"

"और मैं भी अपनी रिपोर्ट का अन्तिम पैराग्राफ लिख रहा हूं।"

रिपोर्ट का अन्तिम पैराग्राफ लिख चुकने के बाद मेजर ने फोन का रिसीवर उठाया और इंस्पेक्टर मैथ्यूज का नम्बर डायल किया। दूर कहीं घंटी बज उठी और फिर किसी ने रिसीवर उठा लिया।

"हैलो!" मेजर ने कहा।

"ओह, मेजर साहब! आप समय की पाबन्दी का कितना ध्यान रखते हैं!" दूसरी ओर से इंस्पेक्टर मैथ्यूज ने कहा।

"सबसे पहले तो आप रक्षा शाहानी के बारे में मुझे ताजा रिपोर्ट दीजिए।"

"मैं अभी-अभी अस्पताल से ही आ रहा हूं। क्लोरोफार्म का असर दूर हो चुका है। लेकिन डाक्टर के कल रात के विचार के अनुसार रक्षा शाहानी सकते के आलम में है। उसे आक्सीजन दी जा रही है, और उसकी रगों में ग्लूकोज चढ़ाया जा रहा है। डाक्टरो की राय है कि रक्षा खतरे से तो बाहर है, लेकिन चौबीस घंटे से पहले उसके होश में आने की कोई संभावना नहीं।"

"यह तो बहुत बुरा हुआ। मैं चाहता था कि आज पार्टी में रक्षा शाहानी भी शामिल होती।"

"पार्टी? कैसी पार्टी?" इंस्पेक्टर ने हैरान होकर पूछा।

"इंस्पेक्टर साहब, आज आप एक पार्टी अरेंज कर रहे हैं।"

"मैं···मैं···लेकिन किस खुशी में? यहां तो जान के लाले पड़े हुए हैं। अगर एक-दो दिन में, नहीं-नहीं, मेरा मतलब है कि अगर आज आप हत्यारों को मेरे हवाले नहीं करोगे, तो मुझे नौकरी से छुट्टी मिल जाएगी।"

"आप तो बेकार परेशान हो रहे हैं। अच्छा, एक बात और बताइए। आज सुबह आपके पुलिस स्टेशन में किसी ने रिपोर्ट तो नहीं लिखवाई कि उसके यहां चोरी हो गई है ?"

इंस्पेक्टर और भी सटपटाया। वह झल्लाकर बोला, "ऐसी कोई रिपोर्ट तो नहीं लिखवाई गई।"

"मुझे यही आशा थी।" मेजर ने कहा।

"आप चोरी की बात कर रहे हैं, हत्यारों की बात ही नहीं कर रहे।" इंस्पेक्टर नाराजगी-भरे स्वर में बोला।

"मैं तो शुरू ही से हत्यारों की बात कर रहा हूं।" मेजर बोला, "आपसे पार्टी का प्रबन्ध करने के लिए कह रहा हूं। इस पार्टी में हत्यारे आपके हवाले किए जाएंगे।"

"फिर तो मैं एक छोड़ दो पार्टी का प्रबन्ध करने के लिए तैयार हूं। यह पार्टी कहां होगी ?"

"अंधेरी में, स्वर्गीय चौधरी हरिवंशराय के बंगले पर। ज्यादा तकल्लुफ की जरूरत नहीं। बस चाय और उसके साथ दो-तीन खाने की चीजें।"

"किस-किसको आमंत्रित किया जाएगा ?" इन्स्पेक्टर ने पूछा।

"उन सब लोगों को जो चौधरी हरिवंशराय और शोभा की शादी की सालगिरह की पार्टी में मौजूद थे। सेठ सूरजनारायण शाहानी, डाक्टर एन० अर्देशर", मेजर ने जरा रुककर कहा, "आप नाम लिख रहे हैं ना ?"

"हां, सेठ शाहानी, एन० अर्देशर।"

"पत्रकार सुधीर माचवे, डांसर मृगनयनी, चन्द्रप्रकाश, सेठ चांदीराम कटारिया, चौधरी साहब की बहन उर्मिल, अशोक, अंजना और शोभा वहां होंगे ही। अफसोस है कि चौधरी साहब, फ्रैंकलिन और फोटोग्राफर कृष्णामूर्ति आज हमारे बीच नहीं होंगे और रक्षा शाहानी भी न आ सकेगी। खैर, उनकी कमी विनोद, सोनिया और मैं पूरी कर देंगे। आप चार आदमियों की गिरफ्तारी के वारंट, चार सशस्त्र कांस्टेबल और एक सब-इन्स्पेक्टर अपने साथ लेकर आएंगे। एक पुलिस वैन भी होनी चाहिए, जिसमें आप गिरफ्तार किए गए अपराधियों को साथ ले जाएंगे।" मेजर ने कहा और इन्स्पेक्टर को हिदायत की, "इन लोगों को, जिनके नाम मैंने लिखवाए हैं, आप खुद आमंत्रित करेंगे और उनसे अनुरोध करेंगे कि पार्टी में उनका सम्मिलित होना बहुत ही आवश्यक है।"

"मैं खुद ही सबके पास चला जाऊंगा। लेकिन हत्यारे कहां होंगे ?" इन्स्पेक्टर ने पूछा।

"हत्यारे भी ऐन मौके पर वहां पहुंच जाएंगे।"

"आप मजाक तो नहीं कर रहे हैं ?" इन्स्पेक्टर ने पूछा।

"ऐसे गंभीर मामले में मजाक का सवाल ही नहीं पैदा होता।"

"अच्छा, तो फिर मैं शाम के पांच बजे आपसे अंधेरी में मिलूंगा। मेहमानों को छः बजे का समय देकर आऊंगा।"

"अच्छी बात है। शाम के पांच बजे तक के लिए विदा।" मेजर ने कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

अब मेजर ने सोनिया से कहा, "सोनिया, मेरे साथ चलो। मुझे कहानी की अन्तिम कड़ी की तलाश में निकलना है।"

आधे घंटे के बाद मेजर ने शहर के एक बड़े अस्पताल के सामने अपनी कार रोक दी। उसने सोनिया से कहा, "तुम यहीं कार में मेरा इन्तजार करो। मैं ज़्यादा से ज्यादा दस मिनट में वापस आ जाऊंगा। मुझे विश्वास है कि वापस आने पर मैं

तुम्हें एक खुशखबरी सुनाऊंगा।"

सोनिया कार में ही मेजर का इन्तजार करती रही। पन्द्रह मिनट के बाद मेजर वापस आ गया। "कहानी की अन्तिम कड़ी भी मिल गई। आओ वापस चलें। अब शाम तक हमें कोई काम नहीं।"

तीसरे पहर मेजर ने सोनिया से कहा, "जरा नौकरानी से कहो कि फौरन चाय ले आए। और तुम तैयार हो जाओ। ज्यादा तैयारी की जरूरत नहीं। अपने पर्स में सिर्फ रिवाल्वर रख लेना।"

मेजर और सोनिया ठीक सवा पांच बजे अंधेरी पहुंच गए। इन्स्पेक्टर मैथ्यूज, पुलिस के दो सब-इन्स्पेक्टर, चार पुलिस कांस्टेबल, विनोद मल्होत्रा, शोभा, अंजना और घर के नौकर वहां मौजूद थे। लान में घास पर दो बड़ी मेजें और उनके आस-पास कुर्सियां लगा दी गई थीं। चाय तैयार हो रही थी और दूर एक मेज पर कुछ सामान रखा हुआ था जो इन्स्पेक्टर मैथ्यूज अपने साथ लाया था।

इन्स्पेक्टर मैथ्यूज को मेजर ने मेहमानों के बैठाने का क्रम बताया कि किसे कहां बैठाया जाएगा। फिर उसने अशोक, विनोद और सोनिया को बताया कि पार्टी के समय वे लोग कहां होंगे। सब-इन्स्पेक्टरों और कांस्टेबलों को भी उनकी जगह बता दी। फिर मेजर ने शोभा की ओर देखा जिसके चेहरे पर अब उदासी की कोई झलक नहीं थी। शाम के छः बज गए थे। सबसे पहले सेठ सूरजनारायण शाहानी वहां पहुंचे। ऐसा मालूम होता था कि वे वर्षों से बीमार हैं। उन्होंने बड़े अनमने भाव से सबसे हाथ मिलाया। इन्स्पेक्टर उन्हें उनके लिए निश्चित किए गए स्थान पर ले गया। वह बैठ गए और जेब से रूमाल निकालकर पसीना पोंछने लगे।

अब डाक्टर अर्देशर की कार बंगले के अहाते में आकर रुकी। वह यों तो निश्चिन्त दिखाई दे रहे थे, लेकिन उनकी चाल-ढाल से उनकी मानसिक अशांति प्रकट हो रही थी। उनको भी मेजर की हिदायत के अनुसार उनके निश्चित स्थान पर बैठा दिया गया।

फिर मृगनयनी अपनी विशेष वेशभूषा में अपने साथियों के साथ टैक्सी से उतरी। कुछ मिनट बाद पत्रकार सुधीर माचवे भी पहुंच गया।

सेठ कटारिया बड़ी धूमधाम से एक लम्बी कार में आए। उनके ड्राइवर ने शानदार यूनिफार्म पहन रखी थी। सबके बाद उर्मिल और चन्द्रप्रकाश आए। जब सब मेहमान अपनी-अपनी जगह पर बैठकर चाय पी चुके तो मेजर अपनी कुर्सी से उठा और एक मेज के सहारे जा खड़ा हुआ। उसने धीमे और शांत लहजे में बोलना आरम्भ किया :

"मैं मिसेज शोभा की ओर से आप लोगों का स्वागत करता हूं। सबसे पहले मैं यह स्पष्ट कर देता हूं कि यह पार्टी नहीं है। असल में पार्टी का कोई मौका ही नहीं था। आप सबको इसलिए तकलीफ दी गई है कि आप लोगों की मौजूदगी में कुछ दिनों पहले जो कहानी आरम्भ हुई थी, उसका अन्त भी आप लोगों की मौजूदगी में ही हो। चौधरी साहब की हत्या इन्सानी जिंदगी की एक ट्रेजडी है। इन्सान सीमा से अधिक ऊंचा भी है और सीमा से अधिक गिरा हुआ भी है। जब वह ऊंचाइयों को छूने लगता है तो भगवान का एक छोटा-सा रूप धारण कर लेता है, लेकिन जब वह नीचाइयों में उतरने लगता है तो शैतान भी उससे पनाह मांगता है। और यह कहानी इन्सान के पतन, नीचता और कमीनेपन की कहानी है। इस कहानी के बहुत-से पात्र ब्लैकमेलर हैं या थे। ब्लैकमेल एक बहुत ही बदनाम हथकंडा है।" कहकर मेजर ने सब पर एक निगाह डाली और फिर बोला :

"ब्लैकमेलर की सफलता अस्थाई होती है। जब वह उस आदमी का खून निचोड़ लेता है जिसे वह ब्लैकमेल कर रहा होता है, तो उसे अपनी जान के लाले पड़ जाते हैं। जिस आदमी को ब्लैकमेल किया जाता है, उसका जब धीरज समाप्त हो जाता है तो उसके सामने दो ही रास्ते रह जाते हैं। वह या तो ब्लैकमेलर की मांगें पूरी करे या उसे मौत की नींद सुला दे। आमतौर पर होता यह है कि ब्लैकमेलर की हत्या कर दी जाती है। ब्लैकमेलर खुद ही अपनी मौत को दावत देता है। और मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि चौधरी हरिवंशराय ब्लैकमेलर थे। चौधरी साहब का स्वभाव अपराधी स्वभाव नहीं था। मेरे कहने का मतलब यह है कि वह ब्लैकमेलर नहीं थे, बल्कि उन्हें ब्लैकमेलर बनाया गया था। चौधरी साहब को ब्लैकमेलर बनाने में सेठ सूरजनारायण शाहानी का पूरा हाथ था। सेठ शाहानी ने चौधरी साहब को ऐशो-इशरत की जिंदगी बिताने का शौकीन बना दिया और फिर अपनी धूर्तता से उनकी दौलत पर हाथ साफ किया। अब जो आदमी ऐशो-इशरत की जिंदगी बिताने का आदी हो गया था, कंगाल हो जाने पर अपराध का रास्ता अपनाने पर मजबूर हो गया। पहले तो कुछ दिन उसने अपनी मां की जायदाद का आधा हिस्सा लेकर गुजारा किया। फिर उसने एक बहुत बड़ा गुनाह किया जिसकी चर्चा मैं बाद में करूंगा। चौधरी साहब ने ब्लैकमेल का रास्ता अपनाया। इस काम के लिए उन्होंने एक फोटोग्राफर को साथ मिलाया जिसका नाम कृष्णामूर्ति था। चौधरी साहब के ब्लैकमेल का ढंग अजीब था। वह अच्छे घराने की कुछ लड़कियों या विवाहित स्त्रियों को मेन्स पैराडाइज क्लब से कृष्णामूर्ति के स्टूडियो में खुद ले आते थे, या उनको वहां किसी न किसी बहाने से भिजवा देते थे। ऐसी लड़कियां और औरतें जब कृष्णामूर्ति के स्टूडियो से निकलती थीं तो उनका न केवल सतीत्व लुट चुका होता था बल्कि उनके लुटते हुए सतीत्व के फोटोग्राफ भी तैयार हो जाते थे। वे फोटोग्राफ ब्लैकमेल का सफल जरिया बन जाते थे। चौधरी साहब और कृष्णामूर्ति मिलकर ब्लैकमेल करते थे। लेकिन इस ब्लैकमेल का ज्यादा हिस्सा सेठ शाहानी के पेट में पहुंचता था। इसलिए चौधरी साहब को एक ऐसे शिकार की तलाश हुई जिसकी खबर सेठ शाहानी को न हो सके तथा वह और कृष्णामूर्ति मिलकर सारा माल हड़प कर सकें। चौधरी साहब को एक मोटा शिकार पास ही मिल गया। अगर आपको यह मालूम हो कि चौधरी साहब ने अपने ब्लैकमेल का शिकार किसे बनाया तो आपके रोंगटे खड़े हो जायेंगे। खैर, अभी [illegible]स [illegible]को प्रकट करने का अवसर नहीं आया। चौधरी साहब का मोटा शिकार शुरू [illegible] नहीं जानता था कि उसे चौधरी साहब ब्लैकमेल कर रहे हैं। उस मोटे शिकार [illegible] पास काफी रुपया था। वह रुपया देता रहा, लेकिन फिर उसका रुपया तेजी से खत्म होने लगा। मैं यहां सिर्फ इतना बता देना चाहता हूं कि चौधरी साहब का यह मोटा शिकार एक औरत थी। उस औरत को एक नौजवान से प्रेम हो गया। उसका प्रेम उसी दशा में सफल हो सकता था कि उसका रुपया सुरक्षित रहे, क्योंकि वह नौजवान जिससे उस औरत को प्यार था, उससे नहीं बल्कि उसके धन से शादी करना चाहता था। चौधरी साहब की जरूरत कभी-कभी बहुत बढ़ जाती थी। उनसे एक चूक हो गई। उन्होंने एक बार कृष्णामूर्ति को उसका हिस्सा नहीं दिया, तो कृष्णामूर्ति ने उस शिकार के सामने चौधरी साहब का भेद खोल दिया। बस फिर क्या था; उस औरत के तन-बदन में आग लग गई। अब उसके लिए एक ही रास्ता रह गया कि वह चौधरी साहब से मुक्ति पाने के लिए उन्हें हमेशा के लिए मौत की नींद सुला दे। उसने अपने प्रेमी को अपना राजदार बनाया। उसका प्रेमी उसका साथ देने के लिए तैयार हो गया, क्योंकि उसकी निगाह उस औरत की दौलत पर थी। उस औरत के खजाने में जो घुन लगा हुआ था, वह उस घुन को दूर करना चाहता था ताकि खजाना

और अधिक खाली न हो। दोनों ने मिलकर एक योजना बनाई। उन्होंने एक औरत की सेवाएं प्राप्त कीं कि वह उनके लिए वे फोटोग्राफ ला दे जिनसे ब्लैकमेल का जरिया बनाया जा रहा था। उस औरत ने अपनी कोशिशें शुरू कर दीं। उसे अपनी कोशिशों का उचित पारिश्रमिक मिलता रहा। लेकिन सिर तोड़ कोशिश करने पर भी वह अपने उद्देश्य में सफल न हो सकी। जिस औरत को फोटोग्राफ लाने का काम सौंपा गया था, उसने अपने भाई से इस काम में सहायता ली और अपना सतीत्व तक लुटा दिया लेकिन फिर भी असफलता ने उसका पीछा न छोड़ा। फिर एक दिन उसे सफलता मिल ही गई। लेकिन तब मिली जब उस औरत और उसके प्रेमी ने चौधरी साहब की हत्या कर दी। फोटो प्राप्त करने के बाद उस औरत ने उस धनी औरत को खुद ब्लैक-मेल करने की स्कीम बनाई। उस औरत के भाई से भी चौधरी साहब की हत्या में सहायता ली गई थी। लेकिन जब मामला बिगड़ गया और उस औरत की नीयत का पता चल गया तो उस अमीर औरत और उसके प्रेमी ने उस औरत के भाई को मार-कर उसे धमकी दी कि वह फोटो वापस दे दे। लेकिन वह औरत टस से मस न हुई। अब हत्यारे बौखला उठे। उन्होंने एक-एक करके उन सबको अपने रास्ते से हटाने का निश्चय कर लिया जो ब्लैकमेल से सम्बन्धित थे। कृष्णामूर्ति को मार डाला गया। कृष्णामूर्ति की हत्या तक मेरी तमाम कोशिशें नाकाम हो चुकी थीं। उस समय तक मेरी समझ में नहीं आया था कि हत्यारा कौन हो सकता है। मुझे यह अहसास जरूर था कि हत्यारा एक अच्छा सर्जन है। लेकिन मैं यह नहीं जानता था कि उसकी मदद-गार एक औरत है। इस बात का पता मुझे उस समय चला जब मेरे असिस्टैण्ट अशोक ने चौधरी साहब के कमरे में एक रात चोरी हो जाने पर एक खुले ट्रंक के पास गिरा हुआ एक मोती मुझे दिया। हालांकि वह मोती एक मामूली चीज थी, लेकिन मेरे लिए वह एक बहुत बड़ा सुराग साबित हुआ।"

मेजर सांस लेने के लिए रुका और फिर उसने सब पर एक गहरी निगाह डाली। सब लोग चुपचाप बैठे थे।

"अब मैं आपको उस औरत का नाम बता देता हूं जिसे चौधरी साहब ब्लैक-मेल किया करते थे, और जिसने अपने प्रेमी से मिलकर चौधरी साहब, एक लम्बे कद के नौजवान और फोटोग्राफर कृष्णामूर्ति की हत्या की और उस औरत पर कातिलाना हमला किया जो इस अमीर औरत के लिए फोटो हासिल करने की कोशिश करती रही थी। उस अमीर औरत का नाम मिस उर्मिल है—चौधरी साहब की छोटी बहन।

"उर्मिल ने अपने भाई की हत्या की ?" अशोक के मुंह से निकला।

"जी हां, और उर्मिल का मददगार और असली हत्यारा चन्द्रप्रकाश है।" मेजर ने घोषणा की।

चन्द्रप्रकाश ने अपनी जगह से उठकर भागने की कोशिश की, लेकिन मेजर ने उसके बैठने का स्थान इस ढंग से निश्चित किया था कि अगर वह भागने की कोशिश करे तो उस ओर से जाए जिधर उसने अशोक और विनोद को तैनात किया था। उन्होंने अपना रिवाल्वर निकालकर रास्ता रोक लिया था। वे उसे पकड़कर फिर उसकी कुर्सी पर ले आए। उर्मिल बेहोश हो गई थी और सोनिया उसे होश में लाने की कोशिश कर रही थी।

"देख लीजिए, जब इन्सान सीधे रास्ते से भटक जाता है तो भाई अपनी बहन को बहन नहीं समझता और उसे लूटने तक से नहीं झिझकता; और बहन अपने भाई की हत्या से नहीं हिचकती। यह एक ऐसा केस है कि बहन अपने एक अपराधी भाई की हत्या करने पर विवश हुई। इस तरह उसका अपराध कम हो जाता है। लेकिन अप-

धावी की हत्या करना एक अपराध है। अब मैं आपको यह बताता हूं कि मैंने हत्या का कैसे पता चलाया। हत्यारों से एक बुनियादी गलती हो गई कि उन्होंने मेरे असिस्टैण्ट को हत्यारा सिद्ध करने की कोशिश की। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि अगर हत्यारे यह भूल न करते तो इस समय पुलिस के चंगुल से आजाद होते। पुलिस को चौधरी साहब की बहन पर हत्यारा होने का शक भी न होता। हत्यारों ने मेरे असिस्टैण्ट को हत्यारा सिद्ध करने के लिए शोभा को गुमराह करने की कोशिश की। चन्द्रप्रकाश ने अशोक की आवाज और उसके बोलने के ढंग की नकल करने का अभ्यास किया। शोभा ने चौधरी साहब की हत्या की रात बाथरूम से एक आवाज सुनी थी। वह चन्द्रप्रकाश था जो चौधरी साहब की हत्या करने के बाद शायद खून के दाग धो रहा था। चन्द्रप्रकाश ने शोभा के सवाल के जवाब में अशोक का लहजा अपनाया। यहां मैं एक रहस्य का उद्घाटन और कर देना चाहता हूं कि जिस औरत ने उर्मिल की तस्वीरें कृष्णामूर्ति से हासिल करने की कोशिश की उसका नाम रक्षा शाहानी है—सेठ सूरजनारायण शाहानी की बेटी, जो इस समय अस्पताल में है। वह सकते के आलम में है, लेकिन जल्दी ही होश में आ जाएगी और बयान देने के काबिल हो जाएगी। लम्बे कद का नौजवान, जिसने चौधरी साहब की हत्या में मदद की, फ्रैंकलिन था। फ्रैंकलिन रक्षा शाहानी का सौतेला भाई और सेठ शाहानी का बेटा था।"

मेजर के इस रहस्योद्घाटन पर शोभा हैरान रह गई, और चन्द्रप्रकाश भी चकित हो उठा।

कुछ देर रुककर मेजर ने कहा, "हां, तो मैं कह रहा था कि चन्द्रप्रकाश और उर्मिल ने फ्रैंकलिन को हिदायत कर दी थी कि अगर उससे कोई अंधेरे में बात करे तो वह अपना नाम अशोक बताए। जब मेरे असिस्टैण्ट अशोक को इस बुरी तरह फांसने की कोशिश की गई तो मुझे गुस्सा आ गया। मैंने इस हत्या की पहेली को हल करने के लिए पूरा जोर लगा दिया। जैसा कि मैं बता चुका हूं, उर्मिल के नेकलेस का टूटा हुआ मोती मिला तो मेरे लिए इस पहेली को हल करने में आसानी हो गई। मैंने इस बात की पुष्टि के लिए कि यह मोती उर्मिल के नेकलेस का ही था, उर्मिल के घर में चोरी की। जिस नेकलेस से मोती टूटकर गिरा था, वह मेरे पास है।"

मेजर ने जेब से वह मोती और नेकलेस निकालकर मेज पर रख दिए। फिर पनी बात का सिलसिला बनाए रखते हुए कहा, "अब एक कड़ी मिलानी बाकी ई थी कि उर्मिल की सहायता कौन कर रहा था। जिस अन्दाज से श्वांस-नली काटी ती थी और गोश्त का टुकड़ा उड़ाया जाता था, उससे यही साबित होता था कि इन घटनाओं में किसी सर्जन का हाथ है। आज यह बात भी प्रमाणित हो गई। मैं उस अस्पताल में गया जहां चन्द्रप्रकाश सर्जरी की ट्रेनिंग ले रहा है। वहां पहुंचकर मुझे मालूम हुआ कि चन्द्रप्रकाश सर्जरी की ट्रेनिंग ले रहा है। चौधरी साहब की हत्या करने के बाद इच्छित फोटोग्राफ पाने के लिए चौधरी साहब के यहां चोरी करने के लिए उर्मिल और चन्द्रप्रकाश का जाना उनके हत्यारा होने का प्रमाण दे गया। और अधिक सबूत इन दोनों के पास हैं। अगर उर्मिल के मकान की तलाशी ली जाए तो वे फोटो भी मिल जाएंगे जो रक्षा शाहानी पर कातिलाना हमला करने के बाद हासिल किए गए थे। मेरी कहानी यहीं समाप्त हो जाती है। और कार्रवाई का अधिकार इन्स्पेक्टर मैथ्यूज को है।"

उर्मिल होश में आ चुकी थी। सेठ शाहानी और चन्द्रप्रकाश पत्थर की मूर्ति बने बैठे थे।

इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने अपने सब-इन्स्पेक्टरों और कांस्टेबलों को इशारा किया।

वे आगे बढ़े और उन्होंने उर्मिल, चन्द्रप्रकाश और सेठ शाहानी को अपने घेरे में ले लिया।

डाक्टर अर्देशर उठे और नमस्ते करने के बाद जब अपनी कार की ओर जाने लगे तो मेजर ने कहा, "इन्स्पेक्टर साहब, अपने गिरोह में इनको भी शामिल कर लीजिए। ये भी गर्भपात का अनैतिक धन्धा करते रहे हैं और अब भी कर रहे हैं।" इन्स्पेक्टर मैथ्यूज ने आगे बढ़कर डाक्टर अर्देशर का हाथ थाम लिया।

□ क्रम : ३

□

हत्यारे का चाकू

□

लखनऊ की बाहरी बस्ती में वह एक छोटा-सा मकान था। उस मकान के अहाते से पचास गज की दूरी पर छोटी-छोटी झाड़ियों में मोटरों की दौड़ में प्रयोग की जाने वाली एक छोटी-सी ठिगनी कार खड़ी थी। उसमें एक नौजवान अपने दाहिने हाथ की मुट्ठी में सिगरेट छिपाकर पी रहा था। इस तरह सिगरेट पीने का उद्देश्य यह था कि सिगरेट का शोला किसी को दिखाई न दे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। उस नौजवान की नजरें उस मकान पर जमी हुई थीं जिसके अन्दर एक ही बत्ती जल रही थी।

एक धीमी लेकिन हृदय-विदारक चीख ने उसके दिल की धड़कनें तेज कर दीं। वह एक नारी-कंठ से निकली हुई तीखी चीख थी, जो ऊंची होकर गहरी खामोशी में डूब गई थी। उसने सिगरेट फेंक दी और दाहिने हाथ से अपनी ठिगनी मोटर का स्टेयरिंग ह्वील मजबूती से पकड़ लिया। फिर घड़ी पर निगाह डाली। सवा दस बजे थे।

उसने अपनी कार की अगली सीट से जरा उचककर देखा।

मकान के अहाते के पास से गुजरती हुई सड़क के सहारे लगे बिजली के खम्भों की बत्तियां अचानक जल उठीं। तेज हवा और वर्षा के कारण बिजली की लाइन में कुछ खराबी पैदा हो गई थी। इसलिए स्ट्रीट लाइट बुझी रही थी। रोशनी हुई तो उस नौजवान ने मकान के बाहर एक स्त्री को देखा जिसने अपने मुंह पर हाथ रखा हुआ था। नौजवान को अहाते में एक कार भी दिखाई दी। वह स्त्री कुछ पल के लिए बिना हिले-डुले खड़ी रही। उतनी दूर से यह अनुमान कर पाना कठिन था कि वह स्त्री बूढ़ी थी या जवान। वह छरहरे बदन की थी। उसके कपड़ों का विवरण जानना भी कठिन था। एक बात निश्चित थी कि चीख उस स्त्री के होंठों से निकली थी। वह इस मकान से इस तरह बाहर निकली थी जैसे वह किसी भीतरी दृश्य को देख न पाई हो और घबराकर भाग खड़ी हुई हो।

कुछ देर तक बिना हिले-डुले खड़े रहने के बाद वह औरत तेजी से अहाते में खड़ी कार की ओर लपकी और पलक झपकते में कार के अन्दर जा बैठी। उस नौजवान ने जल्दी से अपनी कार का इंजन स्टार्ट किया और उस मकान की ओर बढ़ा। अहाते के गेट के पास उस औरत की गेट से निकलती हुई और उस नौजवान की गेट में घुसती हुई कारों की एक पल के लिए मुलाकात हुई। उस नौजवान ने देखा कि स्टेयरिंग ह्वील पर उस औरत का दाहिना हाथ कांप रहा था और बायें हाथ में रूमाल

था जिससे वह अपनी आंखें पोंछ रही थीं। उसकी आंख लाल थीं और बाहर उबली पड़ रही थीं। एक पल में उस औरत की कार दूर निकल गई। उस नौजवान ने उस औरत का पीछा करने की जरूरत महसूस नहीं की।

नौजवान मकान के अहाते में पहुंचा। उसने अपनी कार गैरेज के पास रोक दी। गैरेज का दरवाजा खुला था और उसके अन्दर एक और कार खड़ी थी। वह कुछ सोचता हुआ अपनी कार से बाहर निकला। मकान का दरवाजा पूरी तरह भिड़ा हुआ नहीं था। उसने उसे खोल दिया और दूसरे कमरे से आती हुई रोशनी में आगे बढ़ा। जिस कमरे से रोशनी आ रही थी, उसमें पहुंचकर उसने दीवारों की ओर देखा। एक ब्रेकेट की खूंटी पर मर्दाने और जनाने कपड़े टंगे हुए थे। कमरे में सामान अधिक नहीं था। एक ओर पलंग पड़ा था जिस पर सादा-सा बिस्तर बिछा हुआ था। पलंग से थोड़ी दूर एक पुरानी मेज थी। मेज पर कुछ ज्यादा चीजें नहीं थीं। मेज के पीछे काफी लम्बी बैंक वाली कुर्सी थी जो खाली पड़ी थी। उस नौजवान की नजर अचानक मेज के नीचे गई। स्लेटी रंग की पतलून में घुटनों पर से मुड़ी हुई दो टांगें मेज से कुछ बाहर निकली हुई थीं।

वह नौजवान अपनी जगह पर जमकर रह गया। आखिर उसने साहस से काम लिया। वह आगे बढ़ा। मेज के पीछे फर्श पर एक आदमी लेटा हुआ था। अचानक मुड़ी हुई एक टांग हिलने लगी। वह नौजवान हिलती हुई टांग को देखने लगा। फर्श पर लेटे हुए आदमी की बिल्लौरी आंखें छत पर जमी हुई थीं। वे आंखें ज्योतिहीन थीं। उसके भूरे कोट के बटन खुले थे। सफेद कमीज खून में लिथड़ी हुई थी।

नौजवान घुटनों के बल झुक गया और उसके मुंह से निकला, "चन्द्रप्रकाश···! चन्द्रप्रकाश···! !"

फर्श पर लेटे हुए आदमी की बिल्लौरी आंखों में ज्योति लौट आई। वे पल-भर के लिए उस नौजवान के चेहरे पर रुकीं और फिर उसने कहा, "चन्दन···!"

"किसने···?" नौजवान से पूरा प्रश्न न किया गया।

"एक औरत ने···!" चन्द्रप्रकाश बोला, "औरत···!"

"कौन थी वह औरत ? भगवान के लिए कुछ तो कहो।"

"औरत···नकाब···चेहरे पर मोटा नकाब···मैं उसे देख न सका चन्दन··· उसने मुझ पर चाकू से हमला किया।"

"क्या तुम उस औरत की आवाज भी न पहचान सके ?"

"चन्दन···रोहिणी से प्यार करते रहना···उसकी देखभाल करना···रोहिणी को कोई तकलीफ न होने पाए।"

"तुम मेरी बात का उत्तर क्यों नहीं···?" चन्दन की बात अधूरी रह गई, क्योंकि चन्द्रप्रकाश हिचकियां लेने लगा था। दो-चार हिचकियों के बाद उसका बदन फड़फड़ाया और फिर वह निश्चेष्ट हो गया। उसकी बिल्लौरी आंखें फिर छत पर जमकर रह गईं।

जब चन्दन अपनी कार में उस मकान के अहाते से बाहर निकला तो अपने आलस्य पर अपने-आप को कोसने लगा। वह झाड़ियों में रुककर क्यों इन्तजार करता रहा ? अगर वह सीधा चन्द्रप्रकाश के पास चला गया होता तो इस समय वह जीवित होता।

चन्दन ने रेलवे स्टेशन के पास वाले थाने को फोन किया और पुलिस इंस्पेक्टर रामेश्वर त्यागी को आवाज बदलकर उस दुर्घटना का विवरण बताता रहा। इंस्पेक्टर त्यागी ने जब उसका नाम और पता पूछा तो उत्तर में उसने कह दिया कि समय आने पर ही वह अपना नाम और पता बता सकेगा।

रात के साढ़े ग्यारह बजे पुलिस इंस्पेक्टर रामेश्वर त्यागी अपने सहायकों के साथ उस कमरे में मौजूद था, जिसमें चन्द्रप्रकाश की लाश पड़ी थी। वह अपने असिस्टैण्ट शिवचरण दुबे से कह रहा था, "तुमने अहाते में पहरा लगा दिया है न?"

"जी हां।" दुबे ने उत्तर दिया।

"और उनको हिदायत कर दी है कि अगर कोई आए तो उसे उस ओर न जाने दें जिस ओर तीन कारों के टायरों के निशान हैं?" इंस्पेक्टर त्यागी ने कहा।

"वे किसी को उस ओर नहीं जाने देंगे।"

"क्या तुमने जख्म की जांच की है?"

"जी हां, की है। सीने में दिल की जगह पर एक छोटा-सा सुराख है। इसका अर्थ है कि नोकीला चाकू या खंजर काम में लाया गया है।"

"मैं तुम्हारे विचार का समर्थन करता हूं और खुश हूं कि तुम भी एक गहरी नजर रखते हो।"

"आक्रमणकारी स्त्री हो या पुरुष, अपने साथ खून से लिथड़ा हुआ चाकू नहीं ले गया होगा।" दुबे ने कहा।

"तुम यह कैसे कह सकते हो? अक्सर हत्यारे अपना हथियार अपने साथ ही ले जाते हैं।" इंस्पेक्टर त्यागी बोला।

"मैं निश्चित रूप से तो नहीं कह सकता, लेकिन मेरा विचार है कि हत्यारा क्योंकि मोटर में आया था, इसलिए वह खून से लिथड़ा हुआ चाकू वापस मोटर में न ले गया होगा। मोटर में खून का दाग पड़ने का अंदेशा हो सकता था। हमें उसे यहां ढूंढ़ना चाहिए।"

शिवचरण दुबे ने आधे घण्टे के बाद कमरे में विजेता की मुद्रा में प्रवेश किया। उसके हाथ में रूमाल था जिसमें कोई चीज लिपटी हुई थी, "मेरा विचार ठीक निकला। लीजिए, हत्यारे का चाकू यह रहा।" शिवचरण दुबे ने रूमाल से चाकू निकालते हुए कहा।

इन्स्पेक्टर त्यागी ने अपना रूमाल निकाला और चाकू रूमाल में लेते हुए ..ो ओर देखने लगा। फिर उस चाकू को उंगलियों के निशानों के विशेषज्ञ को दे-र आदेश दिया, "रतन, मुझे दस मिनट में यह बताओ कि इस चाकू पर औरत की उंगलियों के निशान हैं या आदमी की उंगलियों के।"

रतन ने चाकू ले लिया और अपने काम में व्यस्त हो गया।

इन्स्पेक्टर त्यागी ने एक सूटकेस की ओर इशारा करते हुए दुबे से पूछा, "इसके बारे में तुम्हारा क्या विचार है?"

"मैंने बहुत सोचा है, लेकिन कुछ समझ नहीं पाया।" दुबे ने कहा।

"मेरी समझ में बस इतनी-सी बात आई है कि इस सूटकेस में बहुत अच्छे नमूनों के आर्टिफिशियल जेवर हैं। हर जेवर से उसके मूल्य की एक चिट बांधी गई है, लेकिन चिट पर बनाने वाली फर्म का नाम नहीं है। सूटकेस में कैशमीमो काटने की किताबें भी हैं और आर्डरफार्म भी हैं। उन पर भी किसी फर्म का नाम नहीं हैं। वैसे आर्डरफार्म और कैशमीमो प्रिंटेड हैं। मेरे विचार से मृतक आर्टीफिशल जेवर बनाने वाली किसी फर्म का एजेंट था—ऐसी फर्म जो अपना नाम प्रकट नहीं करना चाहती।"

"आप ठीक परिणाम पर पहुंचे हैं, मगर एक बात मेरे दिमाग में खटक रही है। नकली जेवर बेचने वाले एजेंट के पास कार नहीं हो सकती। एक गरीब एजेंट कार नहीं रख सकता।"

इन्स्पेक्टर त्यागी हंसने लगा और बोला, "तुम एक बात भूल रहे हो। आजकल नकली, जाली और बनावटी चीजें खूब चलती हैं। असली चीज कम और नकली चीज अधिक बिकती है, क्योंकि हर कोई नकली चीज खरीदने की सामर्थ्य रखता है। मेरे दिमाग में एक और ही बात फांस बनी हुई है। मैंने इस मकान का निरीक्षण किया है। यहां आदमी के इस्तेमाल की चीजें कम और औरत के इस्तेमाल की चीजें अधिक हैं; और आदमी के इस्तेमाल की जो चीजें हैं वे केवल इस सूटकेस में हैं जो नकली जेवरों के नमूनों के सूटकेस के पास पड़ा है। जानते हो इसका क्या अर्थ है?"

"नहीं।" दुबे ने जान-बूझकर अपनी अज्ञानता प्रकट की।

"सीधा-सा अर्थ है। तुम्हारे सामने जो व्यक्ति मृत पड़ा हुआ है, वह स्थाई रूप से इस मकान का निवासी नहीं था। इस मकान में स्थाई रूप से कोई औरत रहती है जो इस समय यहां मौजूद नहीं है। यह आदमी उस औरत के पास आया और उस औरत ने शायद इसकी हत्या कर दी।"

"यह बात है तो इस मकान में रहने वाली औरत को ढूंढ़ निकालना कठिन नहीं। मैं सुबह होते ही जांच-पड़ताल शुरू कर दूंगा।"

उंगलियों के निशानों के विशेषज्ञ ने पास आकर कहा, "चाकू पर कोई निशान नहीं हैं।"

यह सुनकर इन्स्पेक्टर को बहुत निराशा हुई। उसने पुलिस डाक्टर की ओर मुंह फेरते हुए कहा, जो अपना बैग बंद करने में व्यस्त था, "डाक्टर साहब, क्या आप कोई नई बात हमें बताना चाहते हैं?"

"इस समय तो मैं आपको इतना ही बता सकता हूं कि इस आदमी की आज रात लगभग पौने दस बजे हत्या की गई। मैंने रतन से लेकर चाकू भी देखा है जिसका प्रयोग हत्यारे ने किया। मुझे सन्देह हो रहा है कि चाकू की नोक पर कोई जहर लगा हुआ था। लेकिन जब तक रासायनिक परीक्षा नहीं हो जाती, मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता। लाश पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दीजिए। फिर मैं आपको सही रिपोर्ट दे सकूंगा।"

"मैं इस लाश को शिनाख्त के लिए कुछ देर तक यहीं रखना चाहता हूं। फोटोग्राफर लाश के फोटो तो ले ही चुके हैं, लेकिन उन्हें तैयार करने में कुछ समय लगेगा।"

आदमी एक—नाम दो

बम्बई से आने वाली ट्रेन डेढ़ घंटे लेट थी। विनोद लखनऊ स्टेशन के प्लेटफार्म पर खड़ा तिलमिला रहा था। कल शाम को जब उसे मेजर बलवन्त का टेलीग्राम मिला था कि वह सुबह मेल ट्रेन से लखनऊ पहुंच रहा है तो उसे ऐसा महसूस हुआ था जैसे उसे टेलीग्राम नहीं बल्कि जीने का सन्देश मिला है। विनोद स्टेशन पर अपनी होने वाली मंगेतर कल्पना को भी साथ लाया था।

एक पीड़ादायी प्रतीक्षा के बाद ट्रेन प्लेटफार्म पर आई। मेजर ने अपने कम्पार्टमेंट की खिड़की से सिर बाहर निकाल रखा था। उसने दूर ही से विनोद को देख लिया था और अब वह उसके पास खड़ी लड़की को देख रहा था। वह जान गया कि विनोद ने इसी लड़की को परखने के लिए उसे बम्बई से लखनऊ बुलाया है।

विनोद ने अपने मित्र का कल्पना से परिचय कराया। उसने पहले ही मेजर के सम्बन्ध में कल्पना को बहुत कुछ बता दिया था।

रास्ते में मेजर ने अधिक बातें कल्पना से कीं। कल्पना के सौन्दर्य में जो सादगी

रात के साढ़े ग्यारह बजे पुलिस इंस्पेक्टर रामेश्वर त्यागी अपने सहायकों के साथ उस कमरे में मौजूद था, जिसमें चन्द्रप्रकाश की लाश पड़ी थी। वह अपने असिस्टैण्ट शिवचरण दुबे से कह रहा था, "तुमने अहाते में पहरा लगा दिया है न ?"

"जी हां।" दुबे ने उत्तर दिया।

"और उनको हिदायत कर दी है कि अगर कोई आए तो उसे उस ओर न जाने दें जिस ओर तीन कारों के टायरों के निशान हैं ?" इंस्पेक्टर त्यागी ने कहा।

"वे किसी को उस ओर नहीं जाने देंगे।"

"क्या तुमने जख्म की जांच की है ?"

"जी हां, की है। सीने में दिल की जगह पर एक छोटा-सा सुराख है। इसका अर्थ है कि नोकीला चाकू या खंजर काम में लाया गया है।"

"मैं तुम्हारे विचार का समर्थन करता हूं और खुश हूं कि तुम भी एक गहरी नजर रखते हो।"

"आक्रमणकारी स्त्री हो या पुरुष, अपने साथ खून से लिथड़ा हुआ चाकू नहीं ले गया होगा।" दुबे ने कहा।

"तुम यह कैसे कह सकते हो ? अक्सर हत्यारे अपना हथियार अपने साथ ही ले जाते हैं।" इंस्पेक्टर त्यागी बोला।

"मैं निश्चित रूप से तो नहीं कह सकता, लेकिन मेरा विचार है कि हत्यारा क्योंकि मोटर में आया था, इसलिए वह खून से लिथड़ा हुआ चाकू वापस मोटर में न ले गया होगा। मोटर में खून का दाग पड़ने का अंदेशा हो सकता था। हमें उसे यहां ढूंढ़ना चाहिए।"

शिवचरण दुबे ने आधे घण्टे के बाद कमरे में विजेता की मुद्रा में प्रवेश किया। उसके हाथ में रूमाल था जिसमें कोई चीज लिपटी हुई थी, "मेरा विचार ठीक निकला। लीजिए, हत्यारे का चाकू यह रहा।" शिवचरण दुबे ने रूमाल से चाकू निकालते हुए कहा।

इन्स्पेक्टर त्यागी ने अपना रूमाल निकाला और चाकू रूमाल में लेते हुए [illegible]को ओर देखने लगा। फिर उस चाकू को उंगलियों के निशानों के विशेषज्ञ को दे[illegible]र आदेश [illegible]िया, "रतन, मुझे दस मिनट में यह बताओ कि इस चाकू पर औरत की उंगलियों के निशान हैं या आदमी की उंगलियों के।"

रतन ने चाकू ले लिया और अपने काम में व्यस्त हो गया।

इन्स्पेक्टर त्यागी ने एक सूटकेस की ओर इशारा करते हुए दुबे से पूछा, "इसके बारे में तुम्हारा क्या विचार है ?"

"मैंने बहुत सोचा है, लेकिन कुछ समझ नहीं पाया।" दुबे ने कहा।

"मेरी समझ में बस इतनी-सी बात आई है कि इस सूटकेस में बहुत अच्छे नमूनों के आर्टिफिशियल जेवर हैं। हर जेवर से उसके मूल्य की एक चिट बांधी गई है, लेकिन चिट पर बनाने वाली फर्म का नाम नहीं है। सूटकेस में कैशमीमो काटने की किताबें भी हैं और आर्डरफार्म भी हैं। उन पर भी किसी फर्म का नाम नहीं है। वैसे आर्डरफार्म और कैशमीमो प्रिंटेड हैं। मेरे विचार से मृतक आर्टीफिशल जेवर बनाने वाली किसी फर्म का एजेंट था—ऐसी फर्म जो अपना नाम प्रकट नहीं करना चाहती।"

"आप ठीक परिणाम पर पहुंचे हैं, मगर एक बात मेरे दिमाग में खटक रही है। नकली जेवर बेचने वाले एजेंट के पास कार नहीं हो सकती। एक गरीब एजेंट कार नहीं रख सकता।"

इन्स्पेक्टर त्यागी हंसने लगा और बोला, "तुम एक बात भूल रहे हो। आजकल नकली, जाली और बनावटी चीजें खूब चलती हैं। असली चीज कम और नकली चीज अधिक बिकती है, क्योंकि हर कोई नकली चीज खरीदने की सामर्थ्य रखता है। मेरे दिमाग में एक और ही बात फांस बनी हुई है। मैंने इस मकान का निरीक्षण किया है। यहां आदमी के इस्तेमाल की चीजें कम और औरत के इस्तेमाल की चीजें अधिक हैं; और आदमी के इस्तेमाल की जो चीजें हैं वे केवल इस सूटकेस में हैं जो नकली जेवरों के नमूनों के सूटकेस के पास पड़ा है। जानते हो इसका क्या अर्थ है?"

"नहीं।" दुबे ने जान-बूझकर अपनी अज्ञानता प्रकट की।

"सीधा-सा अर्थ है। तुम्हारे सामने जो व्यक्ति मृत पड़ा हुआ है, वह स्थाई रूप से इस मकान का निवासी नहीं था। इस मकान में स्थाई रूप से कोई औरत रहती है जो इस समय यहां मौजूद नहीं है। यह आदमी उस औरत के पास आया और उस औरत ने शायद इसकी हत्या कर दी।"

"यह बात है तो इस मकान में रहने वाली औरत को ढूंढ़ निकालना कठिन नहीं। मैं सुबह होते ही जांच-पड़ताल शुरू कर दूंगा।"

उंगलियों के निशानों के विशेषज्ञ ने पास आकर कहा, "चाकू पर कोई निशान नहीं हैं।"

यह सुनकर इन्स्पेक्टर को बहुत निराशा हुई। उसने पुलिस डाक्टर की ओर मुंह फेरते हुए कहा, जो अपना बैग बंद करने में व्यस्त था, "डाक्टर साहब, क्या आप कोई नई बात हमें बताना चाहते हैं?"

"इस समय तो मैं आपको इतना ही बता सकता हूं कि इस आदमी की आज रात लगभग पौने दस बजे हत्या की गई। मैंने रतन से लेकर चाकू भी देखा है जिसका प्रयोग हत्यारे ने किया। मुझे सन्देह हो रहा है कि चाकू की नोक पर कोई जहर लगा हुआ था। लेकिन जब तक रासायनिक परीक्षा नहीं हो जाती, मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता। लाश पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दीजिए। फिर मैं आपको सही रिपोर्ट दे सकूंगा।"

"मैं इस लाश को शिनाख्त के लिए कुछ देर तक यहीं रखना चाहता हूं। फोटोग्राफर लाश के फोटो तो ले ही चुके हैं, लेकिन उन्हें तैयार करने में कुछ समय लगेगा।"

आदमी एक—नाम दो

बम्बई से आने वाली ट्रेन डेढ़ घंटे लेट थी। विनोद लखनऊ स्टेशन के प्लेटफार्म पर खड़ा तिलमिला रहा था। कल शाम को जब उसे मेजर बलवन्त का टेलीग्राम मिला था कि वह सुबह मेल ट्रेन से लखनऊ पहुंच रहा है तो उसे ऐसा महसूस हुआ था जैसे उसे टेलीग्राम नहीं बल्कि जीने का सन्देश मिला है। विनोद स्टेशन पर अपनी होने वाली मंगेतर कल्पना को भी साथ लाया था।

एक पीड़ादायी प्रतीक्षा के बाद ट्रेन प्लेटफार्म पर आई। मेजर ने अपने कम्पार्टमेंट की खिड़की से सिर बाहर निकाल रखा था। उसने दूर ही से विनोद को देख लिया था और अब वह उसके पास खड़ी लड़की को देख रहा था। वह जान गया कि विनोद ने इसी लड़की को परखने के लिए उसे बम्बई से लखनऊ बुलाया है।

विनोद ने अपने मित्र का कल्पना से परिचय कराया। उसने पहले ही मेजर के सम्बन्ध में कल्पना को बहुत कुछ बता दिया था।

रास्ते में मेजर ने अधिक बातें कल्पना से कीं। कल्पना के सौन्दर्य में जो सादगी

थी वही उसकी बातों में भी थी। लेकिन वह एक बुद्धिमान लड़की थी जिसे बनावट और दिखावे से घृणा थी।

दोपहर का खाना खाने के बाद जब कल्पना विनोद के घर गई और दोनों मित्रों को एकान्त मिला तो मेजर ने विनोद का हाथ अपने हाथ में लेकर जोर से दबाते हुए कहा, "कोई शुद्ध सोने को भी कसौटी पर परखता है ?" और फिर हंसते हुए बोला, "तुम तो मुझे वह ब्राह्मण दिखाई दे रहे हो जिसके पास गाय का बछड़ा था, लेकिन उसे लोगों के कहने से गधा समझने लगा था।"

विनोद झेंप गया, लेकिन मन में बहुत प्रसन्न था कि मेजर का समर्थन और स्वीकृति उसे मिल गई। कुछ देर की खामोशी के बाद विनोद ने कहा, "अब आप आराम कीजिए, शाम की चाय और रात का खाना मेरे एक सहपाठी नवलकिशोर अवस्थी के यहां है।"

"कितने बजे यहां से चलना होगा ?"

"तीन बजे।"

"क्या लखनऊ के लोग शाम की चाय तीन बजे पीते हैं ?"

"नहीं, असल में नवलकिशोर की चचेरी बहन प्रभा अपनी बेटी रोमा के साथ बम्बई से आई हुई है। वह आज चार बजे बम्बई वापस जा रही है। मैं चाहता हूं कि जरा पहले चले चलें ताकि प्रभा के जाने से पहले उससे भी कुछ बातचीत कर लें। उसके पति का बम्बई में बड़ा मेलजोल और प्रभाव है।"

मेजर बलवन्त नवलकिशोर और उसके घर के सदस्यों से मिला तो उसे ऐसा लगा जैसे वह किसी नई दुकान में पहुंच गया हो। क्या रखरखाव था, क्या सावधानी थी, क्या सलीका था ! वह नवलकिशोर की चचेरी बहन से भी मिलकर बहुत खुश हुआ। प्रभा ने उससे वायदा ले लिया कि वह बम्बई में उससे ज़रूर मिलेगा। रोमा कहीं दिखाई न दी। वह शायद सफर की तैयारियों में व्यस्त थी।

अभी चाय नहीं आई थी, लेकिन अन्दर बर्तनों के खनकने की आवाज आ रही थी। ठीक उसी समय एक चीख सुनाई दी, साथ ही दौड़ते हुए कदमों की आवाज भी सुनाई दी और दूसरे पल एक सत्रह-अठारह वर्षीय युवती रोती और सिसकती हुई कमरे में आ पहुंची, "मम्मी··· मम्मी···पापा···!" उस लड़की के होंठ कांप रहे थे। उसके हाथ में शाम का अखबार था।

"डार्लिंग, क्या हुआ ?" आखिर प्रभा ने पूछा।

"मम्मी···पापा···यह देखो···यह पापा का फोटो है।" यह कहकर रोमा ने अखबार प्रभा के हाथ में दे दिया। विनोद और कल्पना भी हैरान थे। सब झुककर अखबार देखने लगे। मेजर एक ओर बैठा हुआ यह समझ में न आने वाला दृश्य देखता रहा। नवलकिशोर ने अखबार प्रभा के हाथ से छीन लिया जो बर्फ की तरह जम चुकी थी।

"पागल हो गई हो रोमा !" नवलकिशोर ने कहा, "क्या तुम्हारे पापा का नाम चन्द्रप्रकाश है ? क्या तुम इतनी अंग्रेजी भी नहीं पढ़ सकतीं ? क्या तुम्हारे पापा नकली जेवरों के एजेंट हैं? क्या तुम्हारे पापा के पास टूटी-फूटी कार है?" नवलकिशोर अखबार में प्रकाशित समाचार पढ़ता जा रहा था और रोमा से प्रश्न किए जा रहा था, "क्या तुम्हारे पापा ऐसे घिसे-पिटे कपड़े पहनते हैं ? क्या तुम्हारे पापा बम्बई से आते तो सीधे पहले यहां न आते ? तुमने बिना सोचे-समझे आसमान सिर पर उठा लिया। नवलकिशोर ने अखबार फर्श पर फेंक दिया।

प्रभा ने अखबार उठा लिया और उसमें प्रकाशित फोटो को दोबारा देखते हुए

बोली, "रोमा की नजरों ने धोखा नहीं खाया। ये इसके पापा ही हैं। बेटी की नजरें अपने बाप को और पत्नी अपने पति को लाखों में पहचान लेती हैं।" यह कहकर प्रभा ने अखबार एक ओर रख दिया। उसका बदन पहले धीरे-धीरे और बाद में जोर-जोर से कांपने लगा। उसने आगे बढ़कर अपनी बेटी का हाथ पकड़कर उसे घसीट लिया और उसे सीने से लगाकर फूट-फूटकर रोने लगी।

नवलकिशोर ने अखबार दोबारा देखा, लेकिन चुप रहा। स्पष्ट था कि उसे भी कुछ-कुछ सन्देह होने लगा था। उसे चुप देखकर घर की दूसरी औरतों ने भी रोना-पीटना शुरू कर दिया।

विनोद ने अखबार उठाकर मेजर के सामने रख दिया। मेजर ने पहले फोटो को देखा और फिर समाचार पढ़ा: "कल रात जब हल्की-हल्की बारिश हो रही थी तो लखनऊ की बाहरी बस्ती के एक मकान में, जिसका नाम 'प्रकाश आश्रम' है, एक व्यक्ति चन्द्रप्रकाश को किसी ने चाकू भोंककर मार डाला। हत्यारे ने नोकदार चाकू इस्तेमाल किया। मृतक नकली जेवर बेचने वाली किसी फर्म का एजेंट था और वह यहां रोहिणी नाम की एक स्त्री के पास आया था, जो इस मकान में रहती थी और कल से गायब है। आसपास के लोग उस स्त्री के नाम के अतिरिक्त उसके सम्बन्ध में और कुछ नहीं जानते, हालांकि वह पिछले दस वर्ष से इस मकान में रह रही थी। घर की किसी भी चीज से उस स्त्री का कोई पता नहीं चल सका। मृतक कहां का रहने वाला है, यह अभी तक मालूम नहीं हो सका। उसका नाम भी रोहिणी के नाम लिखे गये उसके एक पत्र से मालूम हुआ जो अभी पोस्ट नहीं किया गया था और मृतक की जेब में था। यह पत्र एक सामान्य ढंग का घरेलू पत्र है। पुलिस ने लाश अभी तक शिनाख्त के लिए 'प्रकाश आश्रम' में रखी हुई है। पुलिस उस व्यक्ति की खोज में है जिसने फोन पर हत्या की दुर्घटना की सूचना पुलिस को दी थी और अपना नाम और पता बताने से इन्कार कर दिया था।"

मेजर ने अखबार एक ओर रख दिया।

रोने-पीटने का शोर कुछ कम हुआ तो प्रभा ने रुआंसे स्वर में कहा, "हमें प्रकाश आश्रम ले चलो, मन का वहम तो दूर कर लें।"

नवलकिशोर ने इशारे से विनोद को पास बुलाया और उससे बातें करने लगा। विनोद ने वापस आकर मेजर से कहा, "प्रकाश आश्रम चलते हैं। शायद सन्देह झूठा साबित हो।"

प्रकाश आश्रम पहुंचकर मेजर कार में ही बैठा रहा। विनोद, कल्पना, नवलकिशोर, प्रभा और रोमा मकान में चले गए।

कुछ मिनट के बाद दो औरतों की रोने की आवाजें सहसा गूंज उठीं। मेजर ने उन आवाजों को पहचान लिया, वह प्रभा और रोमा की आवाजें थीं। इसका अर्थ यह था कि उनका सन्देह विश्वास में बदल चुका था। अब हत्या की यह दुर्घटना दिलचस्प और रहस्यपूर्ण बन गई थी। मेजर बलवन्त आखिर एक जासूस था। उसकी जासूसी की रग फड़क उठी। जब प्रभा और रोमा की चीखें और ऊंची हो गयीं तो उससे न रहा गया। वह तेजी से कार का दरवाजा खोलकर प्रकाश आश्रम में चला गया। इन्स्पेक्टर रामेश्वर त्यागी ने सन्देह और प्रश्न-भरी निगाहों से मेजर की ओर देखा।

मेजर ने कमरे में नजर दौड़ाई और उस मेज की ओर बढ़ा जिस पर लाश रखी हुई थी। मेजर ने देखा कि जिस व्यक्ति का वह लाश थी उसकी उम्र पैंतालीस से अधिक नहीं थी। मृत्यु के पीलेपन के पीछे ऐसा निखार था जो आमतौर पर सम्पन्न

और सन्तुष्ट लोगों के चेहरों पर होता है। उसके दाहिने हाथ की दो उंगलियों में जो अंगूठियां थीं वे बहुत मूल्यवान थीं। इसका अर्थ यह था कि उसकी हत्या धन के लालच में नहीं की गई थी। लाश पर से घूमती हुई मेजर की निगाह कमरे के कालीन पर पड़ी। कालीन को देखकर मेजर चौकन्ना हो गया और उसे बड़े ध्यान से देखने लगा। कालीन पुराना और मोटा था और इसका अर्थ था कि किसी दूसरी जगह से लाकर यहां बिछाया गया था।

दस मिनट के बाद वे सब मकान के ड्राइंग रूम में बैठे थे। इन्स्पेक्टर त्यागी प्रसन्न था कि मृतक की शिनाख्त हो गई। अब वह मृतक के सम्बन्ध में बहुत-सी बातें जान सकेगा।

इन्स्पेक्टर त्यागी प्रभा से अभी कुछ पूछने न पाया था कि उसके असिस्टैण्ट दुबे ने कमरे में प्रवेश किया और ठिठककर रह गया। वह मेजर की ओर पैनी और गहरी नजरों से देख रहा था। अचानक उसके चेहरे पर परिचय और प्रसन्नता की धूप फैल गई। उसने झिझकते हुए अपना दाहिना हाथ मेजर की ओर बढ़ाते हुए कहा, "अगर मैं गलती नहीं कर रहा तो आप मेजर बलवन्त हैं—हमारे देश के एक विख्यात जासूस।"

मेजर ने जरा-सा उठकर दुबे से हाथ मिलाया और बोला, "आपको मुझे पहचानने में कोई गलती नहीं हुई। मैं मेजर बलवन्त ही हूं।"

इन्स्पेक्टर त्यागी चौंक पड़ा। लेकिन उसने अपने आश्चर्य को फौरन छिपा लिया। उसके मन में दो अन्तर्द्वन्द्व चल रहे थे। पहला तो यह कि मेजर ने अपने-आप को मुझसे क्यों छिपाया? और दूसरा यह कि इतना बड़ा जासूस यहां क्यों चला आया? भाग्य ने वर्षों के बाद उसे एक बढ़िया केस हल करने का अवसर दिया था। अगर मेजर इस केस में कूद पड़ा तो उसे प्रसिद्धि नहीं मिलेगी और सफलता का सेहरा उसके सिर के बजाय मेजर के सिर पर बांधा जायगा।

तभी कमरे के बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। फिर किसी ने उंगलियों से दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुला और कमरे में एक नौजवान ने प्रवेश किया। ने हाथ जोड़कर सबको नमस्ते की और बोला, "मुझे चन्दन कहते हैं। चन्द्रप्रकाश बहनोई थे। मैंने ही कल रात उनकी हत्या की सूचना पुलिस को दी थी।"

इंस्पेक्टर त्यागी का मुंह खुला का खुला रह गया। वह कुछ कहना ही चाहता था कि एक स्त्री भी कमरे में आ गई। सब उसे देखकर भौंचक्के रह गए। वह स्त्री जापानी गुड़िया की तरह सुन्दर थी।

चन्दन ने उस स्त्री की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह मेरी बहन है, रोहिणी—चन्द्रप्रकाश की पत्नी।"

"कल रात आपने मुझे अपना नाम और पता बताने से क्यों इनकार कर दिया था?" इंस्पेक्टर त्यागी ने चन्दन से पूछा।

चन्दन और रोहिणी मेजर के पास आ बैठे। प्रभा और रोमा उन दोनों को घूर-घूरकर देख रही थीं।

"मुझे उत्तर देने के लिए लम्बी-चौड़ी भूमिका बांधनी पड़ेगी। क्या इतना समय है कि आप मेरी बात सुन सकें?"

"इस केस को हल करने के लिए समय ही समय है।"

दो पत्नियाँ

चन्दन ने पल-भर यह देखने के लिए सब पर निगाह डाली कि उसकी कहानी के आरम्भ का उपस्थित व्यक्तियों पर क्या प्रभाव पड़ा है। सबसे अधिक दिलचस्पी से प्रभा और रोमा सुन रही थीं।

"मैं आपको अपना नाम बता चुका हूं—चन्दन—चन्दन लाल पसरेचा। मैं एक विदेशी मेडिकल फर्म में असिस्टैण्ट मैनेजर हूं। मेरी एक ही बहन है, रोहिणी। इसके सिवा न कोई बहन है और न कोई भाई है। मेरे माता-पिता आज से पन्द्रह साल पहले चल बसे थे। रोहिणी की उम्र उस समय सत्रह वर्ष की थी। माता-पिता की मृत्यु के पांच साल बाद जब रोहणी बी० ए० कर चुकी और एक बैंक में नौकर हो गई तो एक शाम यह मेरे पास प्रस्ताव लेकर आई कि वह एक नौजवान से शादी करना चाहती है जिसका नाम चन्द्रप्रकाश है। उस बैंक में चन्द्रप्रकाश का एकाउण्ट था इसलिए वह अक्सर बैंक में आता-जाता रहता था, और वहीं रोहणी से उसका परिचय हो गया था। यह परिचय अभी प्रेम का रूप न ले सका था कि चन्द्रप्रकाश ने स्पष्ट शब्दों में रोहिणी से कहा कि वह उससे विवाह करना चाहता है। रोहिणी को उसकी सज्जनता और शिष्टता भा गई थी। खैर, मैंने हां करने से पहले चन्द्रप्रकाश के सम्बन्ध में जानने का निश्चय किया। मैं उससे एक होटल में मिला जहां वह ठहरा हुआ था। वह मुझे उपयुक्त दिखाई दिया। वह शराब नहीं पीता था, सिगरेट नहीं पीता था, जुआ भी नहीं खेलता था। वह एक फर्म का सेल्स एजण्ट था। परिश्रमी था। इसलिए मैंने और कुछ पूछना आवश्यक न समझा। मैंने हां कर दी और शादी हो गई। रोहिणी प्रसन्न थी। चन्द्रप्रकाश ने उसकी बैंक की नौकरी छुड़वा दी और सारा खर्च देने लगा। वह बिल्कुल झगड़ालू नहीं था। मैं देख रहा था कि रोहिणी उसे प्यार करती थी। चन्द्र प्रकाश ने अपना जीवन स्वयं बनाया था। मैं निश्चिन्त हो चुका था कि मेरी बहन का जीवन अच्छी तरह बीतेगा। रोहिणी को केवल एक ही परेशानी थी कि हफ्ते में चार दिन घर में अकेले रहना पड़ता था, क्योंकि चन्द्रप्रकाश अपने कारोबार के सिलसिले में अक्सर घर से बाहर रहता था। वह हर शुक्रवार की शाम को घर पहुंचकर [illegible] की शाम को दौरे पर चला जाता था। पिछले दस साल से यही सिलसिला रहा है। रोहिणी अकेलापन महसूस करती थी। लेकिन उसका इलाज भी [illegible]ोज लिया। यह चन्द्रप्रकाश की अनुपस्थिति में रोजाना सिनेमा देखती थी। [illegible]ाम को भी यह सिनेमा देखने गई हुई थी। अब मैं आपको यह बताता हूं कि [illegible]ने अपना नाम और पता बताने से इन्कार क्यों कर दिया था।"

यह कहकर चन्दन ने अपनी जेब में हाथ डाला और एक कागज निकालकर "यह चन्द्रप्रकाश का भेजा हुआ टेलीग्राम है, जो मुझे कल शाम पांच बजे था।"

मेजर ने टेलीग्राम चन्दन के हाथ से लिया और उसे पढ़ने लगा :

"बहुत ही जरूरी काम है। लखनऊ पहुंच रहा हूं आज रात नौ बजे मुझसे जरूर मिलो। मुसीबत में हूं। मुझसे मिलने की बात अपने मन में ही रखना घर के बाहर कुछ देर इंतजार करना। तुमसे पहले मुझसे कोई मिलने आएगा। उसके जाने के बाद ही तुम आना। मैं बहुत परेशान हूं। मुझे तुम्हारे मशवरे की भी जरूरत है।

—चन्द्रप्रकाश"

"यह टेलीग्राम कहां से भेजा गया था ?" इंस्पेक्टर ने चन्दन से पूछा।

"कानपुर से।" मेजर ने उत्तर दिया।

और सन्तुष्ट लोगों के चेहरों पर होता है। उसके दाहिने हाथ की दो उंगलियों में जो अंगूठियां थीं वे बहुत मूल्यवान थीं। इसका अर्थ यह था कि उसकी हत्या धन के लालच में नहीं की गई थी। लाश पर से घूमती हुई मेजर की निगाह कमरे के कालीन पर पड़ी। कालीन को देखकर मेजर चौकन्ना हो गया और उसे बड़े ध्यान से देखने लगा। कालीन पुराना और मोटा था और इसका अर्थ था कि किसी दूसरी जगह से लाकर यहां बिछाया गया था।

दस मिनट के बाद वे सब मकान के ड्राइंग रूम में बैठे थे। इन्स्पेक्टर त्यागी प्रसन्न था कि मृतक की शिनाख्त हो गई। अब वह मृतक के सम्बन्ध में बहुत-सी बातें जान सकेगा।

इन्स्पेक्टर त्यागी प्रभा से अभी कुछ पूछने न पाया था कि उसके असिस्टेंण्ट दुबे ने कमरे में प्रवेश किया और ठिठककर रह गया। वह मेजर की ओर पैनी और गहरी नजरों से देख रहा था। अचानक उसके चेहरे पर परिचय और प्रसन्नता की धूप फैल गई। उसने झिझकते हुए अपना दाहिना हाथ मेजर की ओर बढ़ाते हुए कहा, "अगर मैं गलती नहीं कर रहा तो आप मेजर बलवन्त हैं—हमारे देश के एक विख्यात जासूस।"

मेजर ने जरा-सा उठकर दुबे से हाथ मिलाया और बोला, "आपको मुझे पहचानने में कोई गलती नहीं हुई। मैं मेजर बलवन्त ही हूं।"

इन्स्पेक्टर त्यागी चौंक पड़ा। लेकिन उसने अपने आश्चर्य को फौरन छिपा लिया। उसके मन में दो अन्तर्द्वन्द्व चल रहे थे। पहला तो यह कि मेजर ने अपने-आप को मुझसे क्यों छिपाया? और दूसरा यह कि इतना बड़ा जासूस यहां क्यों च ला आया? भाग्य ने वर्षों के बाद उसे एक बढ़िया केस हल करने का अवसर दिया था। अगर मेजर इस केस में कूद पड़ा तो उसे प्रसिद्धि नहीं मिलेगी और सफलता का सेहरा उसके सिर के बजाय मेजर के सिर पर बांधा जायगा।

तभी कमरे के बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। फिर किसी ने उंगलियों से दरावाजा खटखटाया। दरवाजा खुला और कमरे में एक नौजवान ने प्रवेश किया। हाथ जोड़कर सबको नमस्ते की और बोला, "मुझे चन्दन कहते हैं। चन्द्रप्रकाश बहनोई थे। मैंने ही कल रात उनकी हत्या की सूचना पुलिस को दी थी।"

इंस्पेक्टर त्यागी का मुंह खुला का खुला रह गया। वह कुछ कहना ही चाहता था कि एक स्त्री भी कमरे में आ गई। सब उसे देखकर भौचक्के रह गए। वह स्त्री जापानी गुड़िया की तरह सुन्दर थी।

चन्दन ने उस स्त्री की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह मेरी बहन है, रोहिणी—चन्द्रप्रकाश की पत्नी।"

"कल रात आपने मुझे अपना नाम और पता बताने से क्यों इनकार कर दिया था?" इंस्पेक्टर त्यागी ने चन्दन से पूछा।

चन्दन और रोहिणी मेजर के पास आ बैठे। प्रभा और रोमा उन दोनों को घूर-घूरकर देख रही थीं।

"मुझे उत्तर देने के लिए लम्बी-चौड़ी भूमिका बांधनी पड़ेगी। क्या इतना समय है कि आप मेरी बात सुन सकें?"

"इस केस को हल करने के लिए समय ही समय है।"

खड़ी है उसकी पिछली सीट के गद्दे के नीचे एक खाना है। यह सूट और ये जूते उसी खाने में थे। और मैं समझता हूं कि सूट चन्द्रप्रकाश का है।"

"नहीं, मेरे पापा सत्यप्रकाश का है।" रोमा बोली।

"चन्द्रप्रकाश—सत्यप्रकाश," मेजर ने दोनों नाम दोहराते हुए कहा, "मैं समझता हूं कि चन्द्रप्रकाश सत्यप्रकाश भी था और सत्यप्रकाश चन्द्रप्रकाश भी था।" मेजर की इस बात पर सभी चकित रह गए।

"आप यह सूट देखिए। इसका कपड़ा इम्पोर्टेड है। कीमती और बहुत बढ़िया है। कोट की गर्दन के अन्दर दर्जी की मुहर है—एक प्रसिद्ध कम्पनी की मुहर, जो मेरे विचार से इस तरह के सूट की सिलाई सात-आठ सौ से कम नहीं लेती होगी। और इन जूतों को देखिए, ये भी विदेशी हैं। इनकी कीमत दो-ढाई सौ रुपए से कम नहीं होगी।"

"ये कपड़े मेरे बहनोई चन्द्रप्रकाश के नहीं हैं। उसकी हैसियत इतनी नहीं थी कि ऐसे कपड़े और जूते पहन सकता। यह सूट इनके पापा सत्यप्रकाश का ही होगा।"

"लेकिन आप भूल रहे हैं कि यह सूट और जूते आपके बहनोई चन्द्रप्रकाश की कार से ही निकले हैं। और शायद आपने मेरी बात ध्यान से नहीं सुनी। मैंने कहा था कि चन्द्रप्रकाश सत्यप्रकाश भी था।" मेजर ने जरा कटुता-भरे स्वर में कहा।

चन्दन ने कहा, "जब वह औरत चली गई तो मैं इस मकान में पहुंचा। दरवाजा खुला हुआ था। मुझे साथ वाले कमरे में मेज के नीचे दो टांगें बाहर निकली हुई दिखाई दीं जो घुटनों पर से मुड़ी हुई थीं। वह चन्द्रप्रकाश था। उसकी आंखें पथराई हुई थीं। उसकी कमीज खून से लथपथ थी। उसके दिल पर एक सूराख था। मैं समझ रहा था कि चन्द्रप्रकाश मर चुका है, लेकिन अचानक उसकी एक टांग हिलने लगी। उसकी पथराई हुई आंखों में देखने की शक्ति लौट आई। उसने मेरी ओर देखा और कहा, 'चन्दन मैं मर रहा हूं...एक औरत...उसके चेहरे पर मोटा नकाब था...उसने मुझ पर चाकू से हमला किया।' चन्द्रप्रकाश ने बस इतना कहा और दम तोड़ दिया।"

"औरत...! क्या चन्द्रप्रकाश ने उस औरत का नाम नहीं बताया?"

"नहीं," चन्दन बोला, "चन्द्रप्रकाश उस औरत की आवाज से भी उसे पहचान नहीं सका था।"

"जी हां, मुझे भी यही सन्देह हुआ था। और मेरे मन में एक अंदेशा जाग उठा था कि कहीं मेरी बहन रोहिणी ने ही तो...।"

"आपकी बहन ने?" रोहिणी की ओर देखते हुए इंस्पेक्टर बोला।

"जी हां, मुझे यह सन्देह हुआ था जो बिल्कुल निराधार सिद्ध हुआ। मैं पहले यह इत्मीनान कर लेना चाहता था कि रोहिणी अपराधी है या निरपराध है। यही कारण है कि कल रात मैंने आपको अपना नाम और पता बताने से इन्कार कर कर दिया था। रोहिणी ने साढ़े छः बजे से रात के साढ़े नौ बजे तक का शो देखा था और शो खत्म होने के बाद मेरे फ्लैट में चली गई थी और वहां मेरा इन्तजार करती रही थी।"

"क्या आप बता सकती हैं कि वह औरत कौन हो सकती थी?" रोहिणी की ओर देखते हुए इंस्पेक्टर ने पूछा।

रोहिणी ने प्रभा की ओर देखते हुए उत्तर दिया "मुझे कुछ मालूम नहीं।" मेजर से अब रहा न गया। उसने अपनी जेब में हाथ डालकर एक छोटा-सा सफेद

"आपके बहनोई को क्या परेशानी थी ?" इंस्पेक्टर ने दूसरा प्रश्न किया, "वे आपसे किस मामले में मशवरा लेना चाहते थे ?"

"मैं कुछ नहीं जानता," चन्दन ने कहा, "मैं आपको एक बात और बता दूं। परसों तीसरे पहर चन्द्रप्रकाश ने मुझे बम्बई से मेरे आफिस में फोन किया था, वह बहुत घबराया हुआ था। मेरी समझ में रत्ती-भर न आया कि वह मुझसे क्या कहना चाहता था। वह बहुत उदास मालूम होता था। मैंने उसकी परेशानी का कारण जानने के लिए बहुत सिर पटका, लेकिन वह केवल एक ही बात दोहराता रहा—मैं बहुत परेशान हूं। शायद तुमसे जल्द ही मिलूं। मेरे टेलीग्राम की प्रतीक्षा करना।"

"मेरी समझ में तो यह बात आ रही है कि वह आपको कोई महत्त्वपूर्ण रहस्य बताना चाहते थे। लेकिन हत्यारे ने वह अवसर ही न आने दिया और उनकी जबान बन्द कर दी।" इंस्पेक्टर बोला।

"मैं आपसे कोई बात छिपाना नहीं चाहता। कुछ दिन हुए, रजिस्ट्री से मेरे नाम एक भारी और मोटा-सा लिफाफा आया था। वह चन्द्रप्रकाश ने भेजा था। दोपहर को मुझे लिफाफा मिला और शाम की डाक से उसका एक पत्र मिला। उस पत्र में उसने लिखा था कि मैं उसके भेजे हुए उस लिफाफे को अस्थाई रूप से अभी अपने पास रखूं।"

"वह लिफाफा इस समय कहां है ?" इंस्पेक्टर त्यागी ने पूछा।

"मेरे आफिस में सेफ में है।" चन्दन ने दृढ़ता से कहा, "और वह अभी उसी सेफ में रहेगा।" अचानक मेजर उठकर बाहर चला गया।

इंस्पेक्टर ने चन्दन की ओर देखते हुए कहा, "आपने इतनी आश्चर्यजनक बातें बताई हैं, लेकिन अभी तक आपने यह नहीं बताया कि आपने पिछली रात अपना नाम और पता बताने से क्यों इन्कार कर दिया था ?"

"मैं अब आपके इसी प्रश्न की ओर आ रहा हूं। कल रात ठीक नौ बजने में दस मिनट पर मैं यहां पहुंच गया था। अपने बहनोई की हिदायत के अनुसार मैं झाड़ियों में अपनी कार रोककर इन्तजार करता रहा। मुझे काफी देर तक इन्तजार करना पड़ा। मुझसे पहले जो भी कोई मेरे बहनोई से मिलने के लिए आया हुआ था, अभी तक बाहर नहीं निकला था। और जब उनसे मिलने के लिए आया हुआ व्यक्ति बाहर निकला तो मैं उसे देखकर हैरान रह गया। वह एक औरत थी जिसे मैं अच्छी तरह देख नहीं सका। वह औरत बदहवास थी। उसे परेशान देखकर मैं भी घबरा गया। मैं उस औरत के जाने का इन्तजार न कर सका और इस मकान की ओर बढ़ा। जब मेरी कार के पास से उस औरत की कार गुजरी तो मैंने देखा कि वह औरत रो रही थी। बौखलाहट में मैं उसे रोककर रोने का कारण तक न पूछ सका।" चन्दन ने अपने माथे पर से पसीना पोंछते हुए कहा।

इतने में मेजर एक हाथ में एक गर्म सूट और दूसरे हाथ में जूता का एक जोड़ा लिए हुए कमरे में आ पहुंचा। रोहिणी और रोमा उस कोट को ध्यान से देख रही थीं।

"पापा का सूट···पापा के जूते···!" रोमा के मुंह से निकला।

रोहिणी रोमा की इस बात पर चौंक पड़ी।

"हां यह मेरे पति का सूट है।" प्रभा बोली।

"आपके पति का ?" चन्दन ने आश्चर्य से पूछा।

"ठहरिए, आप एक-दूसरे से बाद में पूछताछ कीजिएगा। पहले मुझे यह बताने दीजिए कि मुझे यह सूट कहां मिला। इस मकान के गैरेज में एक पुरानी कार

कारोबार के सिलसिले में कलकत्ता जाना होता है।"

मेजर हंसने लगा, "वह तीन दिन कलकत्ते में नहीं लखनऊ में रहते थे और यहां नकली जेवरों के एजेण्ट बनकर आया करते थे।"

मेजर चुप हो गया और फिर उसने किसी जादूगर की तरह धीरे-धीरे अपनी उंगली घुमाते हुए रहस्योद्घाटन किया, "मैंने एक झूठ बोला। मुझे यह सफेद कार्ड और इंक स्टैंड, जिसकी मैंने अभी चर्चा की, कार के खाने में नहीं, मोटे कालीन के एक कोने के नीचे मिला। यह इंक स्टैण्ड कल कानपुर में खरीदा गया था।"

"आप यह कैसे कह सकते हैं।" इंस्पेक्टर ने पूछा।

मेजर ने जेब में हाथ डालकर एक कागज निकाला। वह एक कैशमीमो था जिसपर कल की तारीख पड़ी हुई थी और कानपुर की एक दुकान का नाम लिखा हुआ था, 'फैंसी स्टोर'।

इंस्पेक्टर कैशमीमो को ध्यान से देखने लगा और दबी जबान में बोला, "मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

"लेकिन मेरी समझ में जो कुछ आ रहा है वह मैं आपको बताना चाहता हूं। इंक स्टैण्ड एक सुन्दर पैकेट में लपेटा गया था। मेरा विचार है कि उस पैकेट को हत्या करने वाली स्त्री ने खोलकर देखा या किसी और ने।" मेजर ने कनखियों से चन्दन की ओर देखा, "एक बात निश्चित है कि चन्द्रप्रकाश ने इसे खोलकर नहीं देखा था।"

"आप इतने विश्वास से यह बात कैसे कह सकते हैं ?"

"इसलिए कि इंक स्टैण्ड का पाकेट बता रहा है कि वह पैकेट दोबारा खोलने के लिए नहीं बनवाया गया था। उपहार खरीदने वाला उसे ज्यों का त्यों भेंट करन चाहता था।"

दो लाख रुपये का बीमा

इंस्पेक्टर रामेश्वर त्यागी ने प्रभा को सम्बोधित करते हुए कहा, "आप दावा करती हैं कि दूसरे कमरे में जो व्यक्ति पड़ा है वह आपका पति है। आपके पास इसका क्या प्रमाण है ?"

प्रभा बेबसी से इंस्पेक्टर की ओर देखने लगी। फिर उसने झल्लाए स्वर में कहा, "यह एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न है। क्या कोई स्त्री किसी परपुरुष को अपना पति बता सकती है ?"

"इंस्पेक्टर साहब, यह प्रश्न पूछने से पहले आपने कुछ सोचा तो होता। क्या कोई लड़की किसी दूसरे को अपना बाप कह सकती है ?" नवलकिशोर ने रोमा की ओर इशारा करते हुए कहा, "क्या आप मुझे पागल या अंधा समझते हैं ? क्या मैं अपने बहनोई को नहीं पहचानता ? दूसरे कमरे में मेरी बहन के कानूनी तौर पर जायज पति पड़े हैं। आठ साल हुए उन्होंने मेरी बहन से बम्बई में शादी की थी। यह प्रभा की दूसरी शादी थी। प्रभा की पहली शादी आज से बारह साल पहले बम्बई के सेठ युधिष्ठिर माचवे से हुई थी। वे दो वर्ष ही जीवित रहे और हैजे से उनकी मृत्यु हो गई। उनसे प्रभा के यहां रोमा पैदा हुई। रोमा सत्यप्रकाश जी की सौतेली बेटी है। दो वर्ष के बाद प्रभा ने सत्यप्रकाश जी से शादी कर ली। शादी के समय के फोटो मौजूद हैं। सत्यप्रकाश जी बम्बई के एक धनी परिवार से सम्बन्धित थे। कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि वे इनकी बहन से शादी कर सकते थे।" नवलकिशोर ने चन्दन की ओर इशारा किया।

कार्ड निकाला जो आइडेण्टिटी कार्ड से मिलता-जुलता था। फिर उसे इंस्पेक्टर की ओर बढ़ाते हुए बोला, "मुझे यह भी गैरेज में खड़ी कार की पिछली सीट के खाने से मिला है।"

इंस्पेक्टर ने वह कार्ड हाथ में ले लिया और उसे पढ़ने लगा, "चन्दन लाल पसरेचा के नाम चन्द्रप्रकाश और रोहिणी की ओर से।"

"कार्ड से तो कोई सुराग नहीं मिलता।" इंस्पेक्टर ने कहा।

"सुराग खोजने वाले को मिलता है।" मेजर ने व्यंग्य से कहा और इंस्पेक्टर के हाथ में से कार्ड ले लिया और फिर प्रभा की ओर बढ़ाते हुए पूछा, "क्या आप इस लिखावट को पहचानती हैं?"

"यह मेरे पति की लिखावट है।"

रोमा ने उचककर अपनी मां के हाथ से कार्ड छीन लिया और बोली, "यह पापा की हैंडराइटिंग है।"

मेजर मुस्कराने लगा और चन्दन की ओर मुंह फेरकर बोला, "आपका जन्म-दिन कब है?"

चन्दन इस प्रश्न पर कुछ ठिठका और फिर बोला, "परसों।"

"आपके जन्म-दिन पर आपको भेंट देने के लिए आपके बहनोई एक उपहार लाए थे। वह उपहार उनकी कार की पिछली सीट के खाने में पड़ा है। वह उपहार एक इंक स्टैंड है। कांसे की प्लेट पर हाथी दांत की दो दवातें। उनके ढक्कन लाल और नीले हैं। बीच में बिल्लौर की नलकियां हैं जिनमें कलम रखे जाते हैं। कांसे की प्लेट पर एक ओर बहुत सुन्दर घड़ी है दूसरी ओर चांदी के फ्रेम का ब्लाटिंग पेपर पैड है।"

"यह उपहार तो पापा पश्चिमी जर्मनी से अपने एक मित्र के द्वारा मेरे लिए मंगवाना चाहते थे। मैं बम्बई लौटकर यह उपहार लेने वाली थी!" रोमा बोली।

मेजर मुस्कराया। उसने अर्थपूर्ण निगाहों से प्रभा की ओर देखते हुए कहा, "आप दो मिनट के लिए दूसरे कमरे में रोमा के साथ जाइए। उस कमरे में एक कालीन है। आप उस कालीन को ध्यान से देखिए और फिर वापस यहां आ जाइए।"

प्रभा उठी और दूसरे कमरे में चली गई। रोमा भी उसके पीछे-पीछे हो ली। प्रभा ने वापस आकर कहा, "यह तो हमारे घर का कालीन है। आज से चार साल पहले एक रफूगर के पास भेजा गया था, लेकिन वापस नहीं आया। मेरे पति ने मुझे बताया था कि रफूगर कालीन लेकर रफूचक्कर हो गया।" और फिर प्रभा अपनी जगह पर बैठी हुई उदास स्वर में बोली, "मेरी समझ में नहीं आता कि यह कालीन यहां कैसे आ गया।"

इस बार मेजर खुलकर मुस्कराया और बोला, "कालीन पुराना था इसीलिए यहां लाया गया।"

"क्या मतलब?" इंस्पेक्टर ने रूखेपन से पूछा।

"मैं यही मतलब समझाने की कोशिश कर रहा हूं। चन्द्रप्रकाश के दो नाम थे—चन्द्रप्रकाश और सत्यप्रकाश। दो घर थे—एक बम्बई में और दूसरा लखनऊ में। दो पत्नियां थीं --आप और आप।" मेजर ने प्रभा और रोहिणी को इशारा किया। "उनका रहन-सहन दो तरह का था। बम्बई में वे रईसों के ठाट-बाट से रहते थे और यहां वे मध्यवर्गीय व्यक्ति की तरह जिन्दगी बिताते थे।"

मेजर ने जरा रुककर प्रभा से पूछा, "आपके पति हफ्ते में कितने दिन घर से बाहर रहते थे?"

"तीन दिन।" प्रभा ने उत्तर दिया, "मैं पूछती थी तो कह देते थे कि अपने

मिलने जाते हैं। मुझे क्या मालूम था कि मेरा सन्देह सत्य निकलेगा। उन्होंने उस दिन मुझे धमकी दी थी कि वे मुझसे सन्धि-विच्छेद कर लेंगे। न केवल अपनी वसीयत बदल देंगे बल्कि बीमे की पालिसी पर मेरा नाम बदलवाकर रोमा का नाम लिखवा देंगे।" प्रभा ने सिसकियां भरते हुए कहा।

"बीमे का रुपया मेरी बहिन रोहिणी को मिलेगा।" चन्दन ने नाटकीय मुद्रा में रहस्योद्‌घाटन किया, "चन्द्रप्रकाश ने जो मोटा लिफाफा रजिस्ट्री से भेजा था उसमें अपने बीमे का उत्तराधिकारी मेरी बहिन को घोषित किया है।"

"दो लाख?" रोहिणी के मुंह से निकला, "क्या वे सचमुच गरीब आदमी नहीं थे? अगर वे धनवान थे तो उन्होंने मुझ जैसी गरीब लड़की से शादी क्यों की···? ओह मैं समझ गई!" ऐसा मालूम हो रहा था जैसे रोहिणी को गहरी चोट लगी हो।

"मैं जानता हूं कि मेरा बहनोई चन्द्रप्रकाश क्यों परेशान था और वह किस मुसीबत में फंसा हुआ था। वह दुहरी जिन्दगी बिता रहा था। और दुहरी जिन्दगी उसके दिमाग पर बोझ बनती जा रही थी।"

"ओह, मेरे भगवान!" रोहिणी ठंडी सांसें भर रही थी।

"मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं अपनी बहन को अपने साथ ले जाऊं। यह मेरा कार्ड है। आप हमें जब बुलायेंगे हम पहुंच जायेंगे।" चन्दन ने अपना कार्ड इंस्पेक्टर त्यागी को देते हुए कहा।

"आओ मम्मी, हम भी चलें।" रोमा ने अपना दाहिना हाथ मां के कंधे पर रख दिया।

मेजर ने रोमा के हाथ की ओर देखा जिसकी दूसरी उंगली में एक बहुत कीमती अंगूठी थी। मेजर की नजरें एक मिनट तक उस अंगूठी पर जमी रहीं।

"नवलकिशोर, प्रभा, रोमा और विनोद बाहर निकले तो मेजर भी उनके पीछे-पीछे चल पड़ा। शाम का धुंधलका फैल चुका था। प्रकाश आश्रम के अहाते में पहुंचकर मेजर ने रोमा के पास जाकर धीरे से कहा, "आप अलग होकर दो मिनट मेरी बात सुनिए।"

थोड़ी दूर जाकर मेजर ने फिर बड़े धीमे स्वर में पूछा, "क्या आपको मालूम था कि आपके पापा कल लखनऊ पहुंच गए थे?"

"यह आप क्या कह रहे हैं? मैं तो जानती ही नहीं थी कि पापा लखनऊ आते रहते हैं।" रोमा ने बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया।

"क्या आप किसी रिश्तेदार के यहां दावत में गई थीं?" मेजर ने दूसरा प्रश्न किया।

"जी हां।"

"और आप वहां कब तक रही थीं?"

"ग्यारह बजे तक।" रोमा ने तुरन्त उत्तर दिया।

"आप सरासर झूठ बोल रही हैं।" मेजर ने कड़ाई से कहा, "क्या आपने कल रात से अब तक अपनी अंगूठी पर निगाह डाली है?"

रोमा थोड़ा-सा बिदक गई। उसने घबराकर अपनी अंगूठी की ओर देखा जिसमें छोटे-छोटे छः नग थे लेकिन पांच नग तो अपनी जगह पर थे, छठे नग की जगह खाली थी।

"घबराइए नहीं," मेजर ने अपनी जेब में हाथ डालते हुए कहा, "आपकी अंगूठी का छठा नग मेरे पास है।" मेजर ने अपनी जेब से नग निकालकर रोमा के हवाले कर दिया, "यह नग मुझे गैरेज के पास रेत में चमकता हुआ मिला था। मैंने आपकी अंगूठी की ओर देखा तो समझ गया कि नग आपकी अंगूठी से निकलकर गिरा

"आप गलत कह रहे हैं।" रोहिणी तुनककर बोली, "वे धनवान नहीं थे, आपको धोखा हो रहा है। दुनिया में एक जैसी शक्ल के दो आदमी भी होते हैं!"

"मेरी वहन ठीक कह रही है, आपको धोखा हुआ है। चन्द्रप्रकाश एक औसत दर्जे का आदमी था। हमारे पास इसका सबूत मौजूद है। उसका सूटकेस देखिए, उसमें आपको नकली जेवरों के सैम्पिल मिलेंगे।"

मेजर ने बीच में बोलते हुए कहा, "मेरी समझ में नहीं आ रहा कि यह सारा झगड़ा किस बात पर हो रहा है। मैं अभी-अभी प्रमाणित कर चुका हूं कि सत्यप्रकाश और चन्द्रप्रकाश दोनों एक ही आदमी के अलग-अलग दो नाम थे। उन्होंने दो विवाह किए। दोनों ओर के आदमी उन्हें पहचान चुके हैं, और उनको अच्छी तरह जानते हैं।"

"हम यह मान चुके हैं कि उनकी नजर में वह चन्द्रप्रकाश हैं," नवलकिशोर ने रोहिणी और चन्दन की ओर इशारा करते हुए कहा, "लेकिन हमारी नजर में वह सत्यप्रकाश हैं। मैं केवल यह बताने की कोशिश कर रहा हूं कि मेरी वहन प्रभा उनकी वैधानिक पत्नी है, विवाहिता पत्नी है; और इनकी बहन उनकी रखैल हो सकती है।"

चन्दन को गुस्सा आ गया। वह अपनी मुट्ठियां भींचकर उठा, लेकिन मेजर ने उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे फिर अपने पास बैठा लिया। "उनसे मेरी कोर्ट में बाकायदा शादी हुई थी," रोहिणी ने फर्श पर जोर से अपना एक पांव पटकते हुए कहा।

"और मेरे पास मेरी वहन की शादी का कानूनी सर्टिफिकेट मौजूद है।" चन्दन ने कहा।

"झूठ···बिल्कुल झूठ···" प्रभा ने मुंह से झाग छोड़ते हुए कहा।

"आपकी शादी कब हुई थी?" मेजर ने प्रभा से पूछा।

"गिरगांव, बम्बई में जुलाई सन् १९६० में।" नवलकिशोर ने कहा। रोहिणी ने नवलकिशोर की यह बात सुनी तो विजेता की मुद्रा में बोली, "इनसे मेरा विवाह फरवरी, १९५८ में लखनऊ में हुआ था, इनके विवाह से दो साल पहले। वैधानिक विवाह मेरा है या इनका? उनकी रखैल यह थीं या मैं?"

मेजर कुछ देर तक सोचता रहा फिर उसने पूछा, "कल रात आप लोग ,, थे?"

"कल रात एक रिश्तेदार के यहां हमारी दावत थी।" नवलकिशोर ने उत्तर दिया।

"आप वहां कब गये, और कब तक रहे?"

"हम शाम सात बजे गये हैं और वहां ग्यारह बजे तक रहे थे।" नवलकिशोर ने कुछ तेज स्वर में कहा, "कहीं आप यह तो नहीं समझ रहे हैं कि हममें से कोई उस दावत से खिसककर यहां आया और सत्यप्रकाश जी की हत्या कर गया? आप अगर कानून से थोड़ा-सा भी परिचित हैं तो मैं आपको बता दूं कि सत्यप्रकाश जी ने दो लाख रुपये का बीमा करा रखा था। कानून यह कहता है कि अगर कोई ऐसा व्यक्ति जिसे बीमा कराने वाले की मृत्यु पर लाभ पहुंचने वाला हो, बीमा कराने वाले को मार डाले, तो पालिसी एकदम कैंसिल हो जाती है। ऐसी दशा में हममें से कौन ऐसा कदम उठा सकता था जबकि उनके बीमे का लाभ मेरी वहन को पहुंचने वाला है।"

"आप यह निश्चित रूप से कैसे कह सकते हैं कि चन्द्रप्रकाश या सत्यप्रकाश के बीमे का लाभ केवल आपकी वहन को ही पहुंचेगा?" मेजर ने पूछा।

"नहीं, उनके बीमे का लाभ मुझे पहुंचने वाला नहीं था। रोमा, उनके बीमे का लाभ तुम्हें पहुंचेगा।" प्रभा बोली, "मेरा उनसे झगड़ा हो गया था। मैंने उन पर सन्देह किया था कि वे घर से तीन दिन इस लिए गायब रहते हैं कि किसी औरत से

"विल्कुल नहीं पीते थे।" प्रभा ने उत्तर दिया और अपनी बेटी की ओर मुड़कर बोली, "चलो रोमा।"

ग्यारह बजे विनोद और मेजर घर से रवाना हुए।

"क्या पास में कोई पोस्ट आफिस है?" मेजर ने पूछा।

"हां, विल्कुल पास है।" विनोद ने उत्तर दिया।

"मैं सोनिया को टेलीग्राम देना चाहता हूं। आपको बम्बई में सत्यप्रकाश के घर का पता तो मालूम होगा?"

"हां—चन्द्रलोक, गिरगांव, बम्बई।"

डाकखाने पहुंचकर मेजर ने सोनिया को तार दिया। "मुझे सत्यप्रकाश नाम के व्यक्ति के सम्बन्ध में पूरा विवरण चाहिए। पता है—चन्द्रलोक, गिरगांव, बम्बई। आज ही विनोद के घर फोन पर मुझे सूचित करो। फोन का नम्बर है, ५८०८७७, अशोक को चन्द्रलोक की निगरानी सौंप दो।"

इसके बाद वे चले। संयोग से इंस्पेक्टर त्यागी थाने में ही था। उसने मेजर को देखा तो स्वभाव के विपरीत बड़ी प्रसन्नता से मिला।

मेजर ने बैठते हुए पूछा, "मैं पोस्टमार्टम की रिपोर्ट देखने आया हूं। रिपोर्ट में जलने के जख्म का तो जिक्र नहीं है?"

"जलने का जख्म। नहीं, ऐसा तो कोई जिक्र नहीं है। एक साधारण रिपोर्ट है कि दाहिने हाथ से चाकू का वार किया गया। घाव ढाई इंच गहरा है।" इंस्पेक्टर बोला, "चन्दन ने मुझे अपने बहनोई का भेजा हुआ मोटा लिफाफा भेज दिया है। उस की बात सच निकली। चन्द्रप्रकाश ने दो बार उत्तराधिकारी के नाम बदले। पहले प्रभा के बजाय रोमा को अपना उत्तराधिकारी बनाया, और फिर रोमा के बजाय रोहिणी को।"

मेजर के होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा; लेकिन उसने सीटी बजानी बन्द कर दी और कुछ सोचते हुए बोला, "एक अमीर आदमी चाहे तो कई शादियां कर सकता है और अपनी तमाम पत्नियों को अपने घर रख सकता है; लेकिन दो जगहों पर बाकायदा शादी करना और एक पत्नी से दूसरी को छिपाना समझ में नहीं आता। मुझे तो इसमें कोई गहरा रहस्य दिखाई देता है।"

"लीजिए, एक बात तो मैं भूल ही चला था। चन्दन ने अपनी बहन की शादी का सर्टिफिकेट भी भिजवा दिया है। चन्द्रप्रकाश ने सचमुच रोहिणी से शादी की थी।"

"प्रभा का केस बहुत कमजोर हो गया, उसे कुछ भी नहीं मिलेगा।" मेजर ने कहा।

"और रोहिणी धनवान हो जाएगी?"

चन्दन वहां पहुंच गया। अभिवादन के बाद उसने इंस्पेक्टर से कहा, "मैं अपने बहनोई की लाश ले जाना चाहता हूं। उसके अन्तिम संस्कार का अधिकार हमें मिलना चाहिए।"

"देखिए, आप इतनी जल्दी न कीजिएगा। आप भूल रहे हैं कि प्रभा और उसके खानदान के लोग रईस हैं, प्रभावशाली हैं।"

"रईस हों तो हुआ करें मैं उनसे नहीं डरता। मैं शाम तक अदालत से आज्ञा प्राप्त कर लूंगा।" चन्दन ने कहा और वापस चला गया।

मेजर और विनोद घर लौटे तो उन्होंने प्रभा के भाई नवलकिशोर को अपना इन्तजार करते हुए पाया। उसने मेजर के पास आकर कहा, "मैं एकान्त में आपसे कुछ बात करना चाहता हूं।"

"क्या बात है वह?"

है। मिस रोमा, कल आप अपने पापा से मिलने यहां आई थीं ?"
रोमा ने कुछ बोलने की कोशिश की, लेकिन उसकी घि
उसके शब्द उसके गले में अटककर रह गए ।

पांच मोटरें

इंस्पेक्टर त्यागी ने मेजर को ड्राइंग रूम में दोबारा आते हुए देखा तो उसकी भवें तन गईं और माथे पर बल पड़ गये। मेजर ने इंस्पेक्टर त्यागी के उपेक्षा-भरे व्यवहार की परवाह न की और उसके सामने सोफे पर बैठ गया।

"मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूं। आपने इस मकान के अहाते का मुआयना किया होगा। आपने वहां क्या कुछ देखा ?" मेजर ने इंस्पेक्टर से पूछा।

"अहाते में तीन कारों के टायरों के निशान हैं। पुरानी शेवरलेट के, नई म्बेसेडर के और नई स्टैण्डर्ड के। यानी कल तीन कारें यहां आयीं।" इंस्पेक्टर बोला।

"कैडलक के टायरों के निशान शायद आप नहीं पहचान सके !"

"आप कहना चाहते हैं कि यहां चार कारें आई थीं ?

"चार नहीं पांच। दौड़ में काम आने वाली एक कार के निशान भी व मौजूद हैं।" मेजर ने कहा।

"अब मैं चलता हूं। आशा है कि कल आपसे भेंट होगी।" मेजर ने व और उठकर बाहर निकल गया।

दूसरे दिन सुबह रोमा अपनी मां प्रभा और अपने मामा नवलकिशो साथ नाश्ते के समय से पहले ही विनोद के पिता के घर पहुंच गई। मेजर ने और नवलकिशोर को रोमा के साथ देखा तो उसे बहुत गुस्सा आया। उसे आशा थी कि रोमा अकेली ही आएगी। फिर मेजर ने सोचा, शायद रोमा हो। उसकी मां और मामा शायद उसे अकेला छोड़ना न चाहते हों।

बड़ी कठिनाई से मेजर को रोमा के साथ एकांत मिला। "मिस रोम प इसे गुस्ताखी न समझें तो क्या मैं आपके दोनों हाथ अपने हाथों में ले सकता हूं ?" मेजर ने कहा।

रोमा झेंप गई लेकिन उसने दोनों हाथ बढ़ा दिए। मेजर ने उ अपने हाथों में ले लिए और उनको थोड़ा-सा ऊपर उठा लिया तथा उनकी से देखते हुए बोला, "मैं यह देखना चाहता हूं कि युवा लड़कियों के हाथ तक नर्म और नाजुक होते हैं। नर्मी में भी बड़ा अन्तर होता है। आपके नर्मी बेमिसाल है ! मिस रोमा, क्या आपकी मंगनी हो चुकी है ?"

"बाकायदा मंगनी तो नहीं हुई, लेकिन मैं वायदा कर चुकी हूं अपने हाथ खींचते हुए कहा।

तभी दबे-दबे कदमों की आहट सुनाई दी और रोमा की मां कमरे में आई। मेजर को आशा नहीं थी कि रोमा की मां दो मिन रोमा को अपनी आंख से ओझल नहीं होने देगी। मेजर के चेहरे पर ऐ वह कोई चोरी करते हुए पकड़ा गया हो। उसने इस कष्टकारी उलझ के लिए कहा, "आइए, आइए, मैं मिस रोमा से उनके पापा की बातें समझता हूं कि रोमा की अपेक्षा आप मेरे प्रश्नों के उत्तर अधिक उचित हैं। मैंने कल सत्यप्रकाश जी के हाथ देखे थे। उनकी उंगलियों पर नहीं थे, उनके दांत भी बेदाग थे। मेरा विचार है कि वह सिगरेट न

यह भी मालूम हुआ होगा कि बीमे का सारा लाभ सत्यप्रकाश जी की पहली पत्नी को पहुंचेगा, तो क्या आपकी बहन हत्या नहीं कर सकती थी ?"

शाम की चाय पर मेजर इसी विषय पर विनोद से बातचीत करता रहा। तभी विनोद की मां ने आकर बताया कि बम्बई से एक महिला मेजर को फोन पर बुला रही है।

मेजर अपनी कुर्सी पर से उठा और तेजी से दौड़ता हुआ फ़ोन वाले कमरे में पहुंचा। विनोद भी उसके पीछे-पीछे चला गया।

दूसरी ओर से सोनिया ने कहा, "चन्द्रलोक बिल्डिंग है। इसे सत्यप्रकाश जी के परदादा ने फ्रांसीसी शिल्पकारों की देख-रेख में बनवाया था। सत्यप्रकाश जी का घराना कई पीढ़ियों से धनवान चला आ रहा है। स यप्रकाश जी के पिता वेदप्रकाश हैं, लेकिन वह चल-फिर नहीं सकते। उनकी उम्र अठत्तर वर्ष की है। आज से दस साल पहले उनके बदन के दाहिने हिस्से पर फालिज गिरा था। वह अपने बायें हाथ की मदद से पहिएदार कुर्सी में घूमते रहते हैं। वे बातें करते हैं तो उनकी कुछ बातें समझ में नहीं आतीं। जबान लड़खड़ा जाती है। वे अपने बेटे सत्यप्रकाश के सम्बन्ध में किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं देते। उनके घुटनों पर एक छोटा-सा तकिया पड़ा रहता है जिस पर रह-रहकर अपने बायें हाथ से थप्पड़ मारते रहते हैं।

"लगे हाथों इस घराने के एक-दूसरे सदस्य का हाल भी बता दूं। वह है सत्यप्रकाश जी का छोटा भाई सुरेन्द्रप्रकाश। उसकी सूरत भयावनी है। आंखों के पपोटे बहुत फूले हुए हैं। बस यों समझ लीजिए जैसे आंखों में मांस का थोबड़ा लटक रहा हो। अगर बाप तकिये पर थप्पड़ मारता है तो बेटा अपने हाथ में लकड़ी के दो छोटे-छोटे गोले लिए रहता है। उम्र पचास से अधिक नहीं है, लेकिन चेहरा और सारा बदन झुर्रियों से भरा हुआ है। वह हर वक्त लकड़ी के गोलों को मसलता रहता है।"

"सोनिया, क्या तुम इन दोनों से, मेरा मतलब है, वेदप्रकाश और सुरेन्द्रप्रकाश से खुद मिलने गई थीं ?" मेजर परेशान होकर बोला।

"हां, लेकिन आप यह प्रश्न क्यों कर रहे हैं ?"

"कुछ नहीं सोनिया, तुम अपनी बात जारी रखो।"

"सुरेन्द्रप्रकाश से जब मैं मिली तो मैंने यों महसूस किया जैसे मैं भूख से मरियल किसी शेर के सामने खड़ी हूं। वह मेरी ओर इस तरह देख रहा था जैसे उसकी आंखें न हों नश्तर हों, और वह मेरे सिर से पांव तक चीर-फाड़ कर रहा हो। मैं तो घबरा गई। मैं उससे कुछ भी न पूछ सकी और चली आई। जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वह अपने दाहिने हाथ से लकड़ी के गोलों को जोर-जोर से मसल रहा था।"

"सोनिया, मुझे तुम्हारे इस खोजपूर्ण विवरण की प्रशंसा करनी पड़ेगी। मेरे लिए यह भेंट बहुत ही मूल्यवान है। हां तो वेदप्रकाश जी की बात जहां छोड़ी थी वहां से आरम्भ करो।"

"वेदप्रकाश की भी एक हरकत मुझे बड़ी ही विचित्र और बेहूदा मालूम हुई। उन्होंने मुझे बैठने के लिए नहीं कहा। मैं खड़ी रही और उनसे बात करती रही। वह जान-बूझकर अपनी कुर्सी घुमाते और मेरे पीछे ले आते। जब उनकी कुर्सी मेरे पीछे आती तो वह तकिए पर जोर-जोर से हाथ मारने लगते और कराहने लगते। उनके इस कराहने में दुःख नहीं बल्कि आनन्द की झलक मिलती थी। मैं घूमकर उनकी ओर देखने लगती। यानी जब हम एक-दूसरे के आमने-सामने होते तो वह सिटपिटा जाते, अपने दांत पीसने लगते और शायद दबी जबान में कोई गाली देने लगते।"

"ओह, सोनिया, तुम मुझे कैसी बातें बता रही हो ! मेरे सामने एक किताब खुलती जा रही है।" मेजर ने कहा, "अब मैं तुम्हें वहां नहीं भेजूंगा। तुम नहीं जानतीं

"प्रभा की हालत खराब है। न जाने सुबह तक उसने यह सदमा किस तरह बर्दाश्त किया था कि उसकी बेटी को दो लाख रुपयों से वंचित कर दिया गया है। अब तो जैसे वह पागल हो गई है। रुपये से अधिक उसे अपनी पराजय का दुःख है। रोहिणी सत्यप्रकाश जी की पहली विवाहिता पत्नी निकली। इसलिए सत्यप्रकाश जी की जायदाद पर उसका अधिकार अधिक है।"

"आप मुझसे क्या चाहते हैं ?"

"मैं आपकी प्रसिद्धि से तो पहले ही परिचित था, लेकिन आज मैंने आपके गुणों को प्रत्यक्ष देख लिया। यह मेरी बहन के जीवन का प्रश्न है। मैं आपको रिश्वत नहीं दे रहा हूं। अगर आप किसी भी तरह यह प्रमाणित कर दें कि सत्यप्रकाश जी की हत्या में रोहिणी या उसके भाई चन्दन का हाथ था, तो प्रभा या रोमा जायदाद की वारिस हो जाएंगी। वैसे भी अगर देखा जाए तो रोहिणी एक छोटे और मामूली घराने की औरत है। उसके पास रुपये न भी हों तो भी किसी न किसी तरह जिन्दगी गुजार सकती है। लेकिन मेरी बहिन या उसकी लड़की निर्धनता और अभाव का जीवन दो दिन भी नहीं बिता सकेंगी।"

मेजर का खून खौलने लगा, "आप नहीं जानते कि जासूसी की कला प्रेम, सच्चाई, ईमानदारी और न्याय के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। जासूसी की कला में न्याय न हो तो स्वयं में एक अपराध बन जाती है। जासूस का काम है कि वह अपराधियों को दण्ड दिलाये, न कि निरपराधियों को अपराधी ठहराये।" मेजर ने कहा।

"मैं तो प्रभा को राजी करके आ रहा हूं कि आपको परिश्रम का दस हजार रुपये पारिश्रमिक दिया जाना चाहिए।"

"देखिए, आप एक सम्मानित और भले घराने से सम्बन्ध रखते हैं। इसलिए मैं शिष्टता की डोर अपने हाथ से छोड़ना नहीं चाहता; वरना मैं अभी आपको उठाकर दरवाजे से बाहर फेंक देता। जब आपको यह विश्वास है कि आपने अपराध नहीं किया, आप क्यों चिन्ता कर रहे हैं, और दस हजार रुपये की रिश्वत क्यों देना चाहते हैं ? ...ी की गिरफ्तारी पर और उसकी गिरफ्तारी के बाद आपकी बहन को रुपया न... पर कोई कदम उठाना चाहिए।"

"प्रभा का कहना है कि उसका दिल गवाही दे रहा है कि सत्यप्रकाश की हत्या रोहिणी ने की है।"

"अदालत दिल की गवाही स्वीकार नहीं करती।"

"प्रभा कहती है कि रोहिणी ने धमकी देकर सत्यप्रकाश जी से बीमे के कागज बदलवाये हैं और अपना नाम लिखवाया है।"

"इस सम्बन्ध में वे क्या दलील देती हैं ?"

"रोहिणी को मालूम हो गया था कि उसके पति ने एक और शादी भी कर रखी है। इस बात ने उसके प्रेम को घृणा में बदल दिया। उसे यह भी मालूम हो गया होगा कि उसका पति धनवान है। बहुत सम्भव है कि उसके बीमे के कागज भी देख लिये हों। इस तरह उसने पति की हत्या के दो उद्देश्य पैदा कर लिए।"

"आप वकील तो नहीं हैं ?" मेजर ने पूछा।

"मैंने आरम्भ वकालत ही से किया था। बाद में उसे छोड़ दिया क्योंकि उसमें झूठ बहुत बोलना पड़ता था।"

"खूब !" मेजर के मुख से निकला, "क्षमा कीजिएगा, आपने जो दलीलें प्रस्तुत की हैं, उनसे अधिक मजबूत दलीलें मैं प्रस्तुत कर सकता हूं। जब आपकी बहन प्रभा को यह मालूम हुआ होगा कि सत्यप्रकाश जी उससे विवाह करने से पहले ही विवाहित थे और वह उनकी वैधानिक पत्नी नहीं है, और फिर जब आपकी बहन को

यह भी मालूम हुआ होगा कि बीमे का सारा लाभ सत्यप्रकाश जी की पहली पत्नी को पहुंचेगा, तो क्या आपकी वहन हत्या नहीं कर सकती थी ?"

शाम की चाय पर मेजर इसी विषय पर विनोद से बातचीत करता रहा। तभी विनोद की मां ने आकर बताया कि बम्बई से एक महिला मेजर को फोन पर बुला रही है।

मेजर अपनी कुर्सी पर से उठा और तेजी से दौड़ता हुआ फ़ोन वाले कमरे में पहुंचा। विनोद भी उसके पीछे-पीछे चला गया।

दूसरी ओर से सोनिया ने कहा, "चन्द्रलोक विल्डिंग है। इसे सत्यप्रकाश जी के परदादा ने फ्रांसीसी शिल्पकारों की देख-रेख में बनवाया था। सत्यप्रकाश जी का घराना कई पीढ़ियों से धनवान चला आ रहा है। स यप्रकाश जी के पिता वेदप्रकाश हैं, लेकिन वह चल-फिर नहीं सकते। उनकी उम्र अठत्तर वर्ष की है। आज से दस साल पहले उनके बदन के दाहिने हिस्से पर फालिज गिरा था। वह अपने बायें हाथ की मदद से पहिएदार कुर्सी में घूमते रहते हैं। वे बातें करते हैं तो उनकी कुछ बातें समझ में नहीं आतीं। जबान लड़खड़ा जाती है। वे अपने बेटे सत्यप्रकाश के सम्बन्ध में किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं देते। उनके घुटनों पर एक छोटा-सा तकिया पड़ा रहता है जिस पर रह-रहकर अपने बायें हाथ से थप्पड़ मारते रहते हैं।

"लगे हाथों इस घराने के एक-दूसरे सदस्य का हाल भी बता दूं। वह है सत्यप्रकाश जी का छोटा भाई सुरेन्द्रप्रकाश। उसकी सूरत भयावनी है। आंखों के पपोटे बहुत फूले हुए हैं। बस यों समझ लीजिए जैसे आंखों में मांस का थोवड़ा लटक रहा हो। अगर बाप तकिये पर थप्पड़ मारता है तो बेटा अपने हाथ में लकड़ी के दो छोटे-छोटे गोले लिए रहता है। उम्र पचास से अधिक नहीं है, लेकिन चेहरा और सारा बदन झुर्रियों से भरा हुआ है। वह हर वक्त लकड़ी के गोलों को मसलता रहता है।"

"सोनिया, क्या तुम इन दोनों से, मेरा मतलब है, वेदप्रकाश और सुरेन्द्रप्रकाश से खुद मिलने गई थीं ?" मेजर परेशान होकर बोला।

"हां, लेकिन आप यह प्रश्न क्यों कर रहे हैं ?"

"कुछ नहीं सोनिया, तुम अपनी बात जारी रखो।"

"सुरेन्द्रप्रकाश से जब मैं मिली तो मैंने यों महसूस किया जैसे मैं भूख से मरियल किसी शेर के सामने खड़ी हूं। वह मेरी ओर इस तरह देख रहा था जैसे उसकी आंखें न हों नश्तर हों, और वह मेरे सिर से पांव तक चीर-फाड़ कर रहा हो। मैं तो घबरा गई। मैं उससे कुछ भी न पूछ सकी और चली आई। जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वह अपने दाहिने हाथ से लकड़ी के गोलों को जोर-जोर से मसल रहा था।"

"सोनिया, मुझे तुम्हारे इस खोजपूर्ण विवरण की प्रशंसा करनी पड़ेगी। मेरे लिए यह भेंट बहुत ही मूल्यवान है। हां तो वेदप्रकाश जी की बात जहां छोड़ी थी वहां से आरम्भ करो।"

"वेदप्रकाश की भी एक हरकत मुझे बड़ी ही विचित्र और बेहूदा मालूम हुई। उन्होंने मुझे बैठने के लिए नहीं कहा। मैं खड़ी रही और उनसे बात करती रही। वह जान-बूझकर अपनी कुर्सी घुमाते और मेरे पीछे ले आते। जब उनकी कुर्सी मेरे पीछे आती तो वह तकिए पर जोर-जोर से हाथ मारने लगते और कराहने लगते। उनके इस कराहने में दुःख नहीं बल्कि आनन्द की झलक मिलती थी। मैं घूमकर उनकी ओर देखने लगती। यानी जब हम एक-दूसरे के आमने-सामने होते तो वह सिटपिटा जाते, अपने दांत पीसने लगते और शायद दबी जबान में कोई गाली देने लगते।"

"ओह, सोनिया, तुम मुझे कैसी बातें बता रही हो ! मेरे सामने एक किताब खुलती जा रही है।" मेजर ने कहा, "अब मैं तुम्हें वहां नहीं भेजूंगा। तुम नहीं जानतीं

सोनिया, कि तुम किन लोगों के बीच पहुंच गई थीं।"

"चन्द्रलोक में बस दो नौकर हैं। नौकरानी कोई नहीं। सुना है, पहले नौकरानियां होती थीं, नौकर नहीं होते थे। लेकिन सत्यप्रकाश की पत्नी प्रभावती की आज्ञा से नौकरानियों को निकालकर नौकरों को रखा जाने लगा। प्रभावती और उसकी बेटी रोमा दो-तीन हफ्ते से लखनऊ में हैं और सत्यप्रकाश भी चार दिन से कलकत्ते में है।"

मेजर ने यह नहीं बताया कि सत्यप्रकाश की लखनऊ में हत्या कर दी गई है। उसने कहा, "मैं कल सुबह साढ़े ग्यारह बजे बम्बई पहुंच रहा हूं। इन्तजार करना और मेरे साथ लखनऊ आने के लिए तैयार रहना।"

दोहरा जीवन

बम्बई में चन्द्रलोक नाम की आलीशान बिल्डिंग में, जिसके नाम से सौन्दर्य और सम्पन्नता टपक रही थी, मेजर सत्यप्रकाश के पिता वेदप्रकाश के सामने बैठा था।

सोनिया के बयान के अनुसार वह अपने घुटनों पर रखे हुए तकिए पर कभी-कभी जोर-जोर से थप्पड़ मारने लगते थे और दबी जबान में कराहते भी जाते थे।

"कल रात मुझे अपनी बहू प्रभा का तार मिला था जो इस समय लखनऊ में है।" वेदप्रकाश बोला।

"मुझे बहुत दुःख है कि आपको इस बुढ़ापे और इस बीमारी में इतना महान् दुःख देखना पड़ा है।"

"दुःख के बारे में मेरी राय भिन्न है।" सम्पन्न पिता के सम्पन्न पुत्र वेदप्रकाश ने कहा, "मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मुझे सत्यप्रकाश की मृत्यु या हत्या पर कोई दुःख नहीं हुआ। मृत्यु का एक दिन निश्चित है, आदमी को उसके लिए तैयार रहना चाहिए। मृत्यु दुःख नहीं मुक्ति है। दुःख किसी दूसरी ही चीज का नाम है। जैसे मेरी यह बीमारी भयानक दुःख है, क्योंकि मेरा मन जो चाहता है और मेरी आत्मा ७ मांगती है, इस बीमारी के कारण मैं धन के अम्बार होते हुए भी नहीं पा ।" यह कहकर वेदप्रकाश जी तकिए पर जोर-जोर से हाथ मारने लगे जैसे उन कोई दौरा पड़ गया हो।

"आपका बेटा दोहरी जिन्दगी जी रहा है?"

"कल रात ही प्रभा के तार से मालूम हुआ।"

"चन्द्रप्रकाश, क्या आपने इस नाम के व्यक्ति के सम्बन्ध में कभी कुछ नहीं सुना था?"

"नहीं।"

"क्या आप जानते हैं कि मरने से कुछ दिन पहले सत्यप्रकाश ने बीमे की पालिसी पर अपने उत्तराधिकारी का नाम बदल दिया था?"

"उत्तराधिकारी का नाम बदलवाया था?" वेदप्रकाश जी ने आश्चर्य से पूछा, "हां···हां···उसने मेरी बहू प्रभा की जगह मेरी पोती रोमा को उत्तराधिकारी बना दिया था।"

"इसका मतलब है कि आपको मालूम नहीं कि बीमे की पालिसी पर रोमा का नाम नहीं रोहिणी का नाम लिखवा दिया गया है।"

"कौन रोहिणी?" वेदप्रकाश जी ने पूछा।

"सत्यप्रकाश की पहली विवाहिता पत्नी।" मेजर बोला।

"पहली विवाहिता पत्नी! यह तो कल रात प्रभा के तार से मालूम हो चुका है कि उस कम्बख्त ने दूसरी शादी कर रखी थी, लेकिन मैं यह नहीं जानता था कि

उसने प्रभा से शादी करने से पहले ही किसी और से शादी कर रखी थी। काश, मुझे इस बात का पता उस समय चल जाता, जब मेरा पूरा बदन काम कर रहा था, तो मैंने उसका गला घोंट दिया होता !" और वेदप्रकाश फिर तकिये पर जोर-जोर से हाथ मारने लगे।

"आप नाराज तो न होंगे, अगर मैं आपसे यह पूछूं कि किन परिस्थितियों में सत्यप्रकाश जी ने प्रभावती से विवाह किया था ?"

"परिस्थितियां···आदमी की परिस्थितियां कभी-कभी विचित्र पलटा खाती हैं। इस शादी में मेरा हाथ था। मैं प्रभावती को बहुत दि नों से जानता था जब वह सेठ युधिष्ठिर माचवे की पत्नी थी। मैं उसके सलीके और उसकी लखनवी सभ्यता से बहुत प्रभावित था। वह विधवा हो गई तो मुझे उस पर तरस आने लगा। मैंने ही उसके साथ अपने बेटे की शादी का प्रबन्ध किया।"

कुछ मिनट के बाद मेजर सत्यप्रकाश के छोटे भाई सुरेन्द्रप्रकाश के कमरे में उसके सामने बैठा था। मेजर ने जान-बूझकर वेदप्रकाश से उसके छोटे बेटे के बारे में कोई प्रश्न नहीं किया था। सोनिया ने सुरेन्द्रप्रकाश का जो हुलिया बयान किया था, उससे ही मेजर सुरेन्द्रप्रकाश के विषय में बहुत कुछ जान चुका था। और जब वह उसके कमरे मे पहुंचा तो वह अपने दायें हाथ में लकड़ी के गोलों को लेकर बुरी तरह मसल रहा था। सुरेन्द्रप्रकाश अपने कमरे में मेजर को अचानक आते देखकर ठिठककर रह गया और लकड़ी के गोलों को मसलता हुआ उसका हाथ ठहर गया।

मेजर ने जेब में हाथ डालकर ह्विस्की का चपटा अद्धा निकाला और सुरेन्द्र प्रकाश के सामने रख दिया। सुरेन्द्र की आंखों में उतरा हुआ खून फीका पड़ गया। उसने मुस्कराकर मेजर की ओर देखा और अपनी दो उंगलियां अपने सिर तक ले जाकर उसे सलाम किया। इसके बाद उसने बिजली की-सी तेजी के साथ ह्विस्की का अद्धा उठा लिया और बोतल का टीन का कार्क मरोड़कर खोलने की बजाय बोतल की गर्दन मेज के किनारे पर मारकर तोड़ दी और बोतल सिर से ऊपर उठाकर अपना मुंह खोल दिया। ह्विस्की की मोटी धार उसके हलक में गिरने लगी। मेजर ने देखा कि खालिस शराब का उसपर कोई असर नहीं हुआ था। सुरेन्द्रप्रकाश ने जब तक अद्धा खाली न कर दिया तब तक दम न लिया। खाली अद्धा उसने जोर से बाहर फेंक दिया। अद्धा तड़ाक से टूट गया और दूसरे ही पल एक नौकर कमरे में आया। उसने मेजर को वहां देखा तो थोड़ा-सा झिझक गया, मगर फिर उसने पूछा, "क्या इनके लिए आप शराब लाए थे ?"

"हां, क्यों ?" मेजर ने पूछा।

"आपने बहुत बुरा किया। मालिक ने इनको शराब की एक बूंद तक देने को मना कर दिया है। थोड़ी देर के बाद यहां वह ऊधम मचेगा कि कोई सो नहीं सकेगा।"

"यह मेरा जिम्मा है कि शोर नहीं मचेगा।"

"नन्दू, तुम यहां से जाओगे या नहीं ?" सुरेन्द्र ने अपने पलंग के नीचे से क्रिकेट का बैट निकालते हुए कहा।

नन्दू दुम दबाकर वहां से भाग गया। सुरेन्द्रप्रकाश ने एक भयानक कहकहा लगाया और क्रिकेट का बैट पलंग के नीचे फेंक दिया, 'सब मुझसे डरते हैं। हालां मैं कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाता। बहरहाल···थैंक्यू···आई एम ग्रेटफुल··· आपका नाम नहीं जानता, लेकिन आप मेरे मसीहा बनकर आए हैं।"

"मैं मेजर बलवन्त हूं।"

"यस···यस···अब मैं समझा। एक फौजी ही

कराना जानता है।"

"मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूं, अगर आप इस समय उसका उत्तर देने की स्थिति में हों। मैं देख रहा हूं कि आपकी उम्र कुछ अधिक नहीं है, लेकिन जिंदगी ने शायद आपके साथ कोई बहुत बुरा सुलूक किया है कि आपका चेहरा ही नहीं बल्कि सारा बदन बूढ़ा होकर रह गया है। आप एक धनी परिवार के सदस्य हैं। आपने कभी किसी बात की कमी महसूस नहीं की होगी। फिर ऐसा क्यों हुआ?"

सुरेन्द्रप्रकाश मेजर को घूरकर देखने लगा, धन अगर वरदान है तो अभिशाप भी है। धन ही ने मेरी यह गत बनाई है। मेजर साहब, आपको शायद मालूम न हो, कभी कई पीढ़ियों तक लक्ष्मी का एक ही घर में रहना उस घर के लिए अभिशाप बन जाता है। उस घर की नस्लों को बहुत-सी बुराइयां, बीमारियां और उलझनें विरासत में मिलती हैं। आपको शायद विश्वास न होगा, मैंने अंग्रेजी में एम० ए० किया है। आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त की है, मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि विरासत में जो उलझनें मिलती हैं, शिक्षा से प्राप्त योग्यता में कहीं अधिक शक्तिशाली होती हैं। मैं उन्हीं का शिकार हो गया हूं।"

"मैं इतना पूछना चाहता हूं कि जिन उलझनों की चर्चा आपने की है, वे आप को मां की ओर से विरासत में मिली हैं या पिता की ओर से?"

इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले सुरेन्द्रप्रकाश ने चन्द्रलोक के उन कमरों की ओर देखा जहां उसके पिता वेदप्रकाश रहते थे। उसकी आंखें फैल गईं, भवें तन गईं और उसने बायीं हथेली पर दायें हाथ का मुक्का जोर से मारा और दायें हाथ में पकड़ी हुई दो गेंदें बाहर लुढ़क पड़ीं। उसने दौड़कर गेंदें उठा लीं और दांत कटकटाते हुए बोला, "मेरी मां एक बहुत ही नेक औरत थी। मैं जानता हूं कि उसने दुःख-भरा जीवन बिताया था। मुझे बाद में मालूम हुआ कि उसकी इस उदासी और शोक का क्या कारण था। और फिर यह उदासी और शोक ही मृत्यु के कारण बन गए···और··· और मैं···" सुरेन्द्रप्रकाश ने मुंह में से झाग छोड़ते हुए लकड़ी के गोलों को अपने दायें हाथ से मसलते हुए कहा, "मैं अपने पिता से घृणा करता हूं। इस जालिम अपाहिज का गला घोंट देना चाहता हूं।" मेजर देख चुका था कि सुरेन्द्रप्रकाश का दौरा भयानक रूप ले चुका था। उसने जल्दी से सुरेन्द्रप्रकाश से विदा ली और बाहर चला आया।

मेजर अपने दफ्तर पहुंचा।

मेजर के बैठने के बाद अशोक ने कहा, "मैं पहले अपना सन्देह दूर कर लेना चाहता था, फिर रिपोर्ट देना चाहता था।"

"बात क्या है?"

"मंझोले कद का एक गोरा-चिट्टा डाक्टर वेदप्रकाश को देखने के लिए रोजाना आता है। उस डाक्टर के बैग पर लिखा हुआ है—'डा० कार्ल होफमैन, एम० डी०'। शक्ल-सूरत और अपने नाम से वह पुरुष नहीं स्त्री है।"

"इसमें क्या है? औरतें भी डाक्टर होती हैं।" मेजर ने कहा।

"लेकिन वह औरत मर्दाने लिबास में वेदप्रकाश के पास आती है। इतना सफल मेकअप मैंने बहुत कम देखा है। वह जवान है, लेकिन जब मर्दाने लिबास में आती है तो कोट में अपनी छातियों को बड़ी खूबसूरती से छिपाकर आती है। उसका सीना सपाट दिखाई देता है! वह तो आपकी कृपा से मेरी नजरें भी अब मेकअप के नीचे छिपे हुए इन्सान को देख लेती हैं। मुझे उसकी पतलून देखकर कुछ संदेह हुआ। आजकल तंग मोहरी की पतलूनों का रिवाज है। उसकी पतलून की मोहरी चौड़ी थी और कूल्हे पर से बहुत ढीली थी। जब डाक्टर होफमैन वेदप्रकाश के यहां से वापस गया तो मैंने उसका पीछा किया। वह सैंडहर्स्ट रोड पर यास्मीन बिल्डिंग

में रहता है। फ्लैट का नम्बर है १४२। यह फ्लैट दूसरी मंजिल पर है। मैंने उसे अपने फ्लैट में जाते हुए देखा और फिर पन्द्रह मिनट बाद मैंने उस फ्लैट से एक सुन्दर ऐंग्लो-इंडियन स्त्री को बाहर निकलते देखा। पहले तो मैं यह समझा कि डाक्टर होफमैन की पत्नी होगी, लेकिन जब उसने फ्लैट के दरवाजे पर ताला लगाया तो मैं चौंक पड़ा। कोई पत्नी अपने पति को फ्लैट में बन्द करके बाहर नहीं जाती। मैं सीढ़ियों में खड़ा रहा और मौके की तलाश में रहा। मेरे पास मास्टर चाबी थी। मैंने मैदान खाली पाकर उस फ्लैट का ताला खोला और अन्दर चला गया। वहां दैनिक प्रयोग की जितनी भी चीजें थीं, उनसे बिल्कुल स्पष्ट नहीं होता था कि वे किसी पुरुष के प्रयोग की चीजें हैं। केवल तीन मर्दाने सूट थे और वे सब एक जैसे सिले हुए थे। उनमें से एक सूट वही था जिसे पहने मैंने डाक्टर होफमैन को चन्द्रलोक से बाहर निकलते हुए देखा था। दीवार पर उस स्त्री का एक बहुत बड़ा फोटो लगा हुआ था जो अभी बाहर गई थी। मैंने उसका बैग खोलकर देखा जिसके ऊपर लिखा था—'डा० कार्ल होफमैन, एम० डी०। उस बैग में दवाइयां और डाक्टरी के औजार नहीं थे। उसमें चमड़े का एक बहुत बड़ा दस्ताना था।"

"चमड़े का दस्ताना और वह भी एक!" मेजर ने आश्चर्य से कहा, और फिर मुस्कराकर बोला, "बहुत खूब! क्या तुमने उस दस्ताने को ध्यान से देखा था?"

"जी हां। दस्ताना क्या था, ऐसा मालूम होता था कि उसे यूं तो एक दस्ताने का रूप दे दिया गया है, लेकिन मैं समझता हूं कि उस दस्ताने से किसी चीज को थपथपाने का काम लिया जाता है।"

"तुमने ठीक अनुमान लगाया है। तुम्हारी यह खोज बहुत मूल्यवान है अशोक।" मेजर ने प्रशंसा करते हुए कहा।

"मैं दस मिनट तक उस कमरे में रहा और मुझे विश्वास हो गया कि वह स्त्री ही डाक्टर होफमैन थी। मैंने उसके सूटकेस में पड़ी चिट्ठियों और एलबम में लगे फोटुओं से उसका असली नाम भी मालूम कर लिया है। उसका असली नाम है मिसेज रिचर्डसन। वह विधवा है, यह बात मुझे उस बिल्डिंग में चाय लाने वाले एक लड़के से मालूम हुई।"

"अशोक, तुम्हारी इस खोज ने मेरे बहुत-से संदेहों का निराकरण कर दिया। धन्यवाद! अब डाक्टर होफमैन या मिसेज रिचर्डसन का पीछा करने की जरूरत नहीं।" मेजर ने कहा।

पेड़ से टकराई हुई कार

विनोद ने मेजर के साथ सोनिया को देखा तो उसकी बांछें खिल गईं।

रात के खाने के बाद जब विनोद के माता-पिता अपने कमरे में चले गए और नौकर बर्तन उठाकर ले गए तो मेजर ने विनोद से पूछा, "मेरे पीछे आज यहां क्या कुछ हुआ?"

"कलकत्ते से पुलिस विभाग का एक प्रसिद्ध जासूस बुलाया गया है। उसका नाम प्रभात मुखर्जी है। वह आज ग्यारह बजे यहां पहुंचा था। उसने आते ही एक चमत्कार दिखाया। उसने लखनऊ-कानपुर रोड पर एक कार खोज निकाली है। कार एक पेड़ से टकराई हुई थी। उसका नम्बर बम्बई का है।"

"बम्बई की कार?" मेजर ने पूछा।

"जी हां, वह कार प्रभा और उसकी बेटी

कराना जानता है।"

"मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूं, अगर आप इस समय उसका उत्तर दे की स्थिति में हों। मैं देख रहा हूं कि आपकी उम्र कुछ अधिक नहीं है, लेकिन जिंद ने शायद आपके साथ कोई बहुत बुरा सुलूक किया है कि आपका चेहरा ही नहीं बलि सारा बदन बूढ़ा होकर रह गया है। आप एक धनी परिवार के सदस्य हैं। आपने क किसी बात की कमी महसूस नहीं की होगी। फिर ऐसा क्यों हुआ ?"

सुरेन्द्रप्रकाश मेजर को घूरकर देखने लगा, धन अगर वरदान है तो अभिशा भी है। धन ही ने मेरी यह गत बनाई है। मेजर साहब, आपको शायद मालूम न ह कभी कई पीढ़ियों तक लक्ष्मी का एक ही घर में रहना उस घर के लिए अभिशाप ब जाता है। उस घर की नस्लों को बहुत-सी बुराइयां, बीमारियां और उलझनें विरास में मिलती हैं। आपको शायद विश्वास न होगा, मैंने अंग्रेजी में एम० ए० किया है आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त की है, मैं आपको यह बता देना चाहता हूं विरासत में जो उलझनें मिलती हैं, शिक्षा से प्राप्त योग्यता से कहीं अधि शक्तिशाली होती हैं। मैं उन्हीं का शिकार हो गया हूं।"

"मैं इतना पूछना चाहता हूं कि जिन उलझनों की चर्चा आपने की है, वे आ को मां की ओर से विरासत में मिली हैं या पिता की ओर से ?"

इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले सुरेन्द्रप्रकाश ने चन्द्रलोक के उन कमरों क ओर देखा जहां उसके पिता वेदप्रकाश रहते थे। उसकी आंखें फैल गईं, भवें तन ग और उसने बायीं हथेली पर दायें हाथ का मुक्का जोर से मारा और दायें हाथ में पक हुई दो गेंदें बाहर लुढ़क पड़ीं। उसने दौड़कर गेंदें उठा लीं और दांत कटकटाते हु बोला, "मेरी मां एक बहुत ही नेक औरत थी। मैं जानता हूं कि उसने दुःख-भ जीवन बिताया था। मुझे बाद में मालूम हुआ कि उसकी इस उदासी और शोक क क्या कारण था। और फिर यह उदासी और शोक ही मृत्यु के कारण बन गए···और और मैं···" सुरेन्द्रप्रकाश ने मुंह में से झाग छोड़ते हुए लकड़ी के गोलों को अपने दा हाथ से मसलते हुए कहा, "मैं अपने पिता से घृणा करता हूं। इस जालिम अपाहिज क गला घोंट देना चाहता हूं।" मेजर देख चुका था कि सुरेन्द्रप्रकाश का दौरा भयान रूप ले चुका था। उसने जल्दी से सुरेन्द्रप्रकाश से विदा ली और बाहर चला आया।

मेजर अपने दफ्तर पहुंचा।

मेजर के बैठने के बाद अशोक ने कहा, "मैं पहले अपना सन्देह दूर कर लेन चाहता था, फिर रिपोर्ट देना चाहता था।"

"बात क्या है ?"

"मंझोले कद का एक गोरा-चिट्टा डाक्टर वेदप्रकाश को देखने के लिए रोजान आता है। उस डाक्टर के बैग पर लिखा हुआ है— 'डा० कार्ल होफमैन, एम० डी०' शक्ल-सूरत और अपने नाम से वह पुरुष नहीं स्त्री है।"

"इसमें क्या है ? औरतें भी डाक्टर होती हैं।" मेजर ने कहा।

"लेकिन वह औरत मर्दाने लिबास में वेदप्रकाश के पास आती है। इतन सफल मेकअप मैंने बहुत कम देखा है। वह जवान है, लेकिन जब मर्दाने लिबास आती है तो कोट में अपनी छातियों को बड़ी खूबसूरती से छिपाकर आती है। उसक सीना सपाट दिखाई देता है ! वह तो आपकी कृपा से मेरी नजरें भी अब मेकअप नीचे छिपे हुए इन्सान को देख लेती हैं। मुझे उसकी पतलून देखकर कुछ संदे हुआ। आजकल तंग मोहरी की पतलूनों का रिवाज है। उसकी पतलून की मोह चौड़ी थी और कूल्हे पर से बहुत ढीली थी। जब डाक्टर होफमैन वेदप्रकाश के य से वापस गया तो मैंने उसका पीछा किया। वह सैंडहर्स्ट रोड पर यास्मीन बिल्डि

में रहता है। फ्लैट का नम्बर है १४२। यह फ्लैट दूसरी मंजिल पर है। मैंने उसे अपने फ्लैट में जाते हुए देखा और फिर पन्द्रह मिनट बाद मैंने उस फ्लैट से एक सुन्दर ऐंग्लो-इंडियन स्त्री को बाहर निकलते देखा। पहले तो मैं यह समझा कि डाक्टर होफमैन की पत्नी होगी, लेकिन जब उसने फ्लैट के दरवाजे पर ताला लगाया तो मैं चौंक पड़ा। कोई पत्नी अपने पति को फ्लैट में बन्द करके बाहर नहीं जाती। मैं सीढ़ियों में खड़ा रहा और मौके की तलाश में रहा। मेरे पास मास्टर चाबी थी। मैंने मैदान खाली पाकर उस फ्लैट का ताला खोला और अन्दर चला गया। वहां दैनिक प्रयोग की जितनी भी चीजें थीं, उनसे बिल्कुल स्पष्ट नहीं होता था कि वे किसी पुरुष के प्रयोग की चीजें हैं। केवल तीन मर्दाने सूट थे और वे सब एक जैसे सिले हुए थे। उनमें से एक सूट वही था जिसे पहने मैंने डाक्टर होफमैन को चन्द्रलोक से बाहर निकलते हुए देखा था। दीवार पर उस स्त्री का एक बहुत बड़ा फोटो लगा हुआ था जो अभी बाहर गई थी। मैंने उसका बैग खोलकर देखा जिसके ऊपर लिखा था—'डा० कार्ल होफमैन, एम० डी०। उस बैग में दवाइयां और डाक्टरी के औजार नहीं थे। उसमें चमड़े का एक बहुत बड़ा दस्ताना था।"

"चमड़े का दस्ताना और वह भी एक!" मेजर ने आश्चर्य से कहा, और फिर मुस्कराकर बोला, "बहुत खूब! क्या तुमने उस दस्ताने को ध्यान से देखा था?"

"जी हां। दस्ताना क्या था, ऐसा मालूम होता था कि उसे यूं तो एक दस्ताने का रूप दे दिया गया है, लेकिन मैं समझता हूं कि उस दस्ताने से किसी चीज को थपथपाने का काम लिया जाता है।"

"तुमने ठीक अनुमान लगाया है। तुम्हारी यह खोज बहुत मूल्यवान है अशोक।" मेजर ने प्रशंसा करते हुए कहा।

"मैं दस मिनट तक उस कमरे में रहा और मुझे विश्वास हो गया कि वह स्त्री ही डाक्टर होफमैन थी। मैंने उसके सूटकेस में पड़ी चिट्ठियों और एलबम में लगे फोटुओं से उसका असली नाम भी मालूम कर लिया है। उसका असली नाम है मिसेज रिचर्डसन। वह विधवा है, यह बात मुझे उस बिल्डिंग में चाय लाने वाले एक लड़के से मालूम हुई।"

"अशोक, तुम्हारी इस खोज ने मेरे बहुत-से संदेहों का निराकरण कर दिया। धन्यवाद! अब डाक्टर होफमैन या मिसेज रिचर्डसन का पीछा करने की जरूरत नहीं।" मेजर ने कहा।

पेड़ से टकराई हुई कार

विनोद ने मेजर के साथ सोनिया को देखा तो उसकी बांछें खिल गईं।

रात के खाने के बाद जब विनोद के माता-पिता अपने कमरे में चले गए और नौकर बर्तन उठाकर ले गए तो मेजर ने विनोद से पूछा, "मेरे पीछे आज यहां क्या कुछ हुआ?"

"कलकत्ते से पुलिस विभाग का एक प्रसिद्ध जासूस बुलाया गया है। उसका नाम प्रभात मुखर्जी है। वह आज ग्यारह बजे यहां पहुंचा था। उसने आते ही एक चमत्कार दिखाया। उसने लखनऊ-कानपुर रोड पर एक कार खोज निकाली है। यह कार एक पेड़ से टकराई हुई थी। उसका नम्बर बम्बई का है।"

"बम्बई की कार?" मेजर ने पूछा।

"जी हां, वह कार प्रभा और उसकी बेटी रोमा की है। वे इस कार में

बम्बई से लखनऊ आई थीं। उस कार में एक नकाब मिला है। प्रभात मुखर्जी को सन्देह है कि रोमा ने अपने बाप की हत्या की है।"

"वह इस परिणाम पर इतनी जल्दी कैसे पहुंच गया ?"

"प्रकाश आश्रम से चार मील दूर एक पेट्रोल पम्प है। उस पेट्रोल पम्प के मालिक ने गवाही दी है कि उस कार में सत्रह वर्ष की एक लड़की को उसने देखा था जो उसके पेट्रोल पम्प पर पेट्रोल लेने आई थी। उसने रोमा को पहचान भी लिया है। और मोटर में जो नकाब मिला है उससे सिद्ध होता है कि रोमा ने ही हत्या की है, क्योंकि चन्द्रप्रकाश या सत्यप्रकाश ने अपने अन्तिम बयान में कहा था कि जिस औरत ने उस पर हमला किया उसने नकाब पहन रखा था। कल सुबह प्रभात मुखर्जी ने रोमा, प्रभा और नवलकिशोर को पूछताछ के लिए थाने में बुलाया है, उस समय चन्दन और रोहिणी भी वहां होंगे।" विनोद ने कहा।

मेजर साढ़े आठ बजे वापस आया। उसने दोबारा स्लीपिंग सूट पहन लिया और तैयारियों में व्यस्त हो गया। पूरे दस बजे विनोद, सोनिया और मेजर कार में पुलिस थाने रवाना हुए, जिसका इंचार्ज इन्स्पेक्टर त्यागी था।

प्रभात मुखर्जी एक सुन्दर युवक था। उसके चेहरे से उसकी योग्यता प्रकट होती थी। मेजर ने इन्स्पेक्टर त्यागी और उसके असिस्टैण्ट दुबे से यह निवेदन किया था कि वह प्रभात मुखर्जी से उसके व्यक्तित्व को छिपाने की कोशिश करें।

दो मेजों के सामने दो दीवारों के साथ लगभग एक दर्जन कुर्सियां थीं। दाहिनी ओर प्रभा, रोमा, नवलकिशोर, रोहिणी और चन्दन बैठे थे। बाईं ओर मेजर, सोनिया और विनोद थे। विनोद के पास ही पेट्रोल पम्प का मालिक बैठा था।

प्रभात मुखर्जी ने इन्स्पेक्टर त्यागी की ओर देखा और दूसरे ही पल इन्स्पेक्टर त्यागी ने रोमा को इशारा किया। रोमा के चेहरे पर सफेदी और पीलापन झलक रहा था। वह कांपती हुई उठी और प्रभात मुखर्जी की बाईं ओर पड़ी हुई कुर्सी पर जाकर बैठ गई।

प्रभात मुखर्जी ने अपनी मेज पर से एक फोटो उठाया और रोमा की ओर बढ़ाते हुए कहा, "मिस रोमा, इस फोटो को ध्यान से देखिए।"

रोमा फोटो देखने लगी, "क्या यह कार आपकी है ?"

"मेरी मां की है।" रोमा ने कहा, "दो साल हुए मेरे पापा ने खरीदकर मां को दी थी।"

"दो दिन हुए, क्या रात को कोई दुर्घटना हुई थी, मेरा मतलब है, क्या कार में उस समय आप थीं जब उसकी टक्कर पेड़ से हुई ?"

रोमा चुप रही। वह कुछ सोच रही थी। फिर उसने झिझकते हुए उत्तर दिया, "नहीं, मैं उस समय कार में नहीं थी।"

प्रभात मुखर्जी ने मेज पर से काली मखमल का एक नकाब उठाया और उसे लहराते हुए पूछा, "क्या यह नकाब आपका है ?"

"क्या ?" रोमा के मुंह से निकला।

"मिस रोमा, आप मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिए।" प्रभात मुखर्जी ने कड़े स्वर में कहा। और फिर मेज पर से कागजों का पुलिन्दा उठाते हुए बोला, "मिस रोमा, मेरे पास आपकी गिरफ्तारी का वारण्ट है। आप पर चन्द्रप्रकाश उर्फ सत्यप्रकाश की हत्या करने का अपराध है।"

रोमा ने यह बात सुनी तो उस पर जैसे बिजली गिर पड़ी। वह कुर्सी पर बेहोश हो गई। प्रभा लपककर उसके पास पहुंची और अपनी साड़ी के आंचल से

उसको हवा करने लगी। दुवे पानी का गिलास ले आया। नवलकिशोर ने गिलास लेकर रोमा के मुंह पर पानी के छींटे मारे। कुछ देर बाद रोमा होश में आ गई।

मेजर उठा और आहिस्ता-आहिस्ता रोमा के पास पहुंचा। मेजर ने अपनी आंखें रोमा की आंखों में डाल दीं और बोला, "मिस रोमा, क्या आपने सचमुच अपने पिता की हत्या की है?"

रोमा चीखकर बोली, "मुझे पापा से प्यार था। मैं बेटी ही नहीं उनकी मित्र भी थी। वे मन का हर भेद मुझे बता देते थे।"

"अगर आप अपने पिता के भेदों से परिचित थीं तो आपको जरूर मालूम होगा कि उनकी हत्या किसने की?" प्रभात मुखर्जी ने पूछा।

"मैं नहीं जानती।" रोमा ने उत्तर दिया।

"मैं देख रहा हूं कि अब आप इस योग्य हो चुकी हैं कि इस संगीन मामले पर गम्भीरता से विचार कर सकें। मैं आपको सोचने के लिए पन्द्रह मिनट देता हूं।" प्रभात मुखर्जी ने कहा।

फिर प्रभात मुखर्जी ने पेट्रोल पम्प के मालिक की ओर देखते हुए कहा, "मिस्टर सरूप, आपका पूरा नाम?"

"प्रेमसरूप।" पेट्रोल पम्प के मालिक ने उत्तर दिया।

"आपका पेट्रोल पम्प कहां है?"

"लखनऊ से छः मील की दूरी पर, कानपुर जाने वाली सड़क पर।"

"आपको उस रात की तमाम बातें अच्छी तरह क्यों याद हैं?"

"इसलिए कि उस रात बारिश हुई थी। दूसरे, मेरा नौकर बहुत बदजबान हो गया था। मेरे हर ग्राहक से झगड़ा करता था। मैंने उसका हिसाब चुकाकर नौकरी से निकाल दिया था। इसलिए सारा काम मुझे करना पड़ा था।"

प्रभात मुखर्जी ने मेज पर से एक फोटो उठाकर प्रेमसरूप की ओर बढ़ा दिया, "क्या आप इस कार को पहचानते हैं?" प्रभात मुखर्जी ने पूछा।

"जी हां, यह कार उस रात मेरे पेट्रोल पम्प पर आकर रुकी थी।"

"इस कार को आपने कैसे पहचान लिया?"

"यह इम्पोर्टेड कार है। इस माडल की कारें बहुत कम देखने में आती हैं। मुझे इसका नम्बर तक याद है। बी. एम. डब्ल्यू. ४४१६।"

"आपने नम्बर क्यों देखा? और यह नम्बर क्यों याद रहा?"

"इसलिए कि इस कार को जो औरत ड्राइव कर रही थी वह बहुत घबराई हुई थी, शायद बहुत अधिक भयभीत थी, और फिर उसने नकाब पहन रखा था। मैंने उस औरत को इस हाल में देखकर यही ठीक समझा कि मुझे उसकी कार का नम्बर नोट कर लेना चाहिए।"

"खूब!" प्रभात मुखर्जी ने कहा, "जब वह औरत कार में तुम्हारे पेट्रोल पम्प पर पहुंची, तो उसने क्या-क्या किया?"

"जब उसकी कार पेट्रोल पम्प के सामने आकर रुकी तो मैं तेजी से अपने दफ्तर से बाहर आया। मैंने पूछा, 'क्या पेट्रोल चाहिए?' उस औरत ने हां में सिर हिला दिया। 'कितना पेट्रोल चाहिए?' मैंने पूछा। वह औरत मुंह से कुछ न बोली। उसने अपने हाथ की पांचों उंगलियां ऊपर उठा दीं। मैंने कार में पांच गैलन पेट्रोल डाल दिया। उसने मुझे सौ रुपए का नोट दिया और बाकी पैसों का इन्तजार किए बिना उसने कार का इंजन स्टार्ट कर दिया और चली गई।"

प्रभात मुखर्जी ने मेज पर से नकाब उठाया और प्रेमसरूप की ओर बढ़ाते हुए बोला, "क्या आप इस चीज को पहचानते हैं?"

"जी हां, उस औरत ने यही नकाव पहन रखा था।"

प्रभात मुखर्जी ने कनखियों से रोमा की ओर देखा और प्रेमसरूप से बोला, "क्या आप इनको पहचानते हैं ?" प्रभात मुखर्जी ने रोमा की ओर इशारा किया।

"जी हां, उस रात कार में यही थीं।"

मेजर को ताव आ गया। धीरज की डोर हाथ से छूट गई। वह खड़ा हो गया और उसने अपनी एक टांग कुर्सी पर रखते हुए कहा, "क्या मुझे कुछ प्रश्न पूछने की अनुमति मिल सकती है ?"

प्रभात मुखर्जी मुस्कराया और वड़े इत्मीनान से बोला, "मेजर वलवन्त, आप इनसे जितने भी चाहें प्रश्न पूछ सकते हैं।"

मेजर वलवन्त प्रभात मुखर्जी की ओर आश्चर्य से देखने लगा।

प्रभात मुखर्जी ने उसके आश्चर्य को दूर करते हुए कहा, "मेजर साहव, लाल गुदड़ी में भी नहीं छिपता। जिस किसी को भी जासूसी की कला से रत्ती-भर भी लगाव है, वह आपको जानता है। मैं खुश हूं कि एक विख्यात जासूस से मेरा मुकावला है।" मेजर भी प्रसन्न था कि आज एक होशियार और वुद्धिमान पुलिस अफसर से वास्ता पड़ा है।

मेजर प्रेमसरूप से बोला, "आपका पेट्रोल पम्प लखनऊ-कानपुर रोड पर है। मेरे विचार से आपका कारोबार वहुत अच्छा चलता होगा ?"

"हां, अच्छा ही है।"

"सैकड़ों कारें आपके पेट्रोल पम्प पर आकर रुकती होंगी ?"

"ख्याल तो है।"

"क्या आप विश्वासपूर्वक नहीं कह सकते ? आपकी राय में दिन-भर में आपके पेट्रोल पम्प पर कितनी कारें आकर रुकती होंगी ?"

"मैं जितना पेट्रोल वेचता हूं उसका हिसाव रखता हूं,"

"दिन-भर में चालीस-पचास कारों में तो पैट्रोल जरूर डालने होंगे ?"

"जी हां, इतनी कारें तो आ ही जाती हैं।"

"इसका मतलव है कि आप महीने में पन्द्रह सौ कारों और हफ्ते में साढ़े तीन सौ कार ड्राइवरों को भी देखते होंगे। उनसे शायद वातें भी करते होंगे। क्या आपको सव कारों के ड्राइवर याद रहते हैं ?"

"जी नहीं।"

"तो फिर क्या कारण है कि उस रात को इस कार की ड्राइवर औरत आपको विशेष रूप से याद रही ?"

"मैं इसका कारण वता चुका हूं।"

"अभी आपने कहा था कि आपने उस कार का नम्वर नोट कर लिया था। क्या मैं आपका नोट किया हुआ नम्वर किसी कापी में देख सकता हूं ?"

"वह कापी इस समय मेरे पास नहीं है।"

"कहां है ?"

"पेट्रोल पम्प पर", प्रेमसरूप ने उत्तर दिया, "अगर आप देखना चाहेंगे तो मैं वह कापी ले आऊंगा।"

"अच्छी वात है", मेजर ने कहा, "अव आप यह वताइए कि वह नकावपोश औरत आपके पेट्रोल पम्प पर कितनी देर तक रुकी रही ?"

"छः मिनट तक।"

"पांच गैलन पेट्रोल डालने में कितना समय लगता है ?"

"चार मिनट।"

"इसका मतलब यह हुआ कि छः मिनट में से चार मिनट आप पैट्रोल डालने में व्यस्त रहे। यानी आप चार मिनट तक उस औरत को देख नहीं पाए, क्योंकि पैट्रोल की टंकी पीछे होती है इसलिए आपको उस औरत को देखने के लिए केवल दो मिनट मिले। असल में एक ही मिनट मिला होगा।"

"जी हां, एक ही मिनट समझ लीजिए।"

"एक मिनट में आपने कार का नम्बर नोट कर लिया और उस औरत के हुलिए को भी अच्छी तरह याद कर लिया?"

"जी हां।"

"उस औरत ने कैसे कपड़े पहन रखे थे?"

"रेशमी कुर्ते पर मखमल की जाकेट पहन रखी थी।"

"उस जाकेट का रंग कैसा था?"

"मैं ठीक-ठाक नहीं बता सकता।"

"भूरा था, गहरा नीला था या काला था?"

"शायद गहरा भूरा था, मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता।"

"फिर आप निश्चित रूप से यह कैसे कह सकते हैं कि उस समय कार में मिस रोमा ही थीं, जबकि आप जाकेट का रंग निश्चित रूप से नहीं बता सकते?" प्रेमसरूप हड़बड़ाकर आंय-बांय बकने लगा।

"उस औरत के बाल कैसे थे? उसने सिर पर तो नकाब नहीं पहन रखा था?"

"जी नहीं," प्रेमसरूप ने उत्तर दिया, "मैंने उसके सिर की ओर अच्छी तरह नहीं देखा था।"

"क्या आप यह कहना चाहते हैं कि जब कोई आदमी किसी के चेहरे की ओर देखता है तो उसके सिर को नहीं देख पाता?"

"उसने पूरे चेहरे पर नकाब पहन रखा था, फिर क्या बात है कि आपने फिर भी मिस रोमा को पहचान लिया?" मेजर ने पुनः पूछा।

"इनका कद और बदन उस औरत से मिलता है।"

"क्या आप यह बता सकते हैं कि नकाबपोश औरत की कार रात को कितने बजे आपके पेट्रोल पम्प पर आकर रुकी थी?"

"नौ बजकर पैंतीस मिनट पर।"

"यह भी आप अनुमान से कह रहे हैं या विश्वास के साथ?"

"विश्वासपूर्वक कह रहा हूं।" प्रेमसरूप ने कहा, "जब वह कार रवाना हुई तो मैंने अपने दफ्तर में जाकर क्लाक की ओर देखा था।"

"क्या आपकी यह आदत है कि जब कोई कार ड्राइवर आपके यहां से अपनी कार में पैट्रोल डलवाकर जाता है, तो आप अपने क्लाक की ओर देखते हैं?"

"नहीं, यह मेरी आदत नहीं, लेकिन इस विशेष माडल की कार के आने-जाने का समय मैंने जरूर नोट किया था। इसका कारण मैं बयान कर चुका हूं।"

"अच्छी बात है," मेजर ने कहा, "आपने बताया कि उस औरत ने उंगलियों के इशारे से पांच गैलन पेट्रोल मांगा था। क्या आप बता सकते हैं कि उस औरत ने दस्ताने पहने हुए थे या नहीं?"

"मैं ठीक से कुछ नहीं कह सकता।"

"खूब, आप एक औरत का हाथ उठा हुआ देखते हैं, लेकिन ठीक से नहीं बता सकते कि उसने दस्ताने पहने हुए थे या नहीं।"

प्रेमसरूप के पांव उखड़ गए थे। "मैं इससे अधिक कुछ नहीं पूछना चाहता।"

मेजर ने प्रभात मुखर्जी की ओर मुड़कर कहा।

अब प्रभात मुखर्जी प्रेमसरूप से बोला, "क्या कार में उस औरत के अलावा कोई और भी था ?"

"नहीं, कोई नहीं था," प्रेमसरूप ने कहा, "वह अकेली ही थी ?"

"और उसने यह नकाब पहन रखा था जो इस समय मेरे हाथ में है ?"

"जी हां।"

मेजर फिर अपनी जगह पर उठ खड़ा हुआ। उसने प्रेमसरूप से पूछा, "आप कहते हैं कि कार में यह औरत थी !"

"जी हां।"

"अगर आप कार को ध्यान से देखें तो आपको पता चलेगा कि कार का पिछला हिस्सा, जिसमें सामान रखा जाता है, काफी चौड़ा, गोल और ऊंचा है। जब आप कार में पेट्रोल डाल रहे थे, तो क्या कार का पिछला हिस्सा खुला हुआ था ?"

"जी नहीं, बंद था।"

"क्या यह सम्भव नहीं हो सकता कि पिछले हिस्से में कोई छिपकर बैठा हो ?"

"मैं कुछ नहीं कह सकता।"

इतने में इन्स्पेक्टर त्यागी ने अपने असिस्टैण्ट दुबे को कुछ इशारा किया। दुबे अपनी कुर्सी पर से उठा और बाहर चला गया। कुछ मिनट के बाद वह एक अच्छे कपड़े पहने हुए अधेड़ व्यक्ति के साथ कमरे में आया। यह कोई विदेशी था। गोरा-चिट्टा रंग। उसके चेहरे से सम्पन्नता टपक रही थी।

इन्स्पेक्टर त्यागी अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। उसने अपना दाहिना हाथ उस विदेशी की ओर बढ़ाते हुए कहा, "आइए मिस्टर हैजवर्थ, आपको अधिक प्रतीक्षा तो नहीं करनी पड़ी ?"

"नहीं, मैं तो इत्मीनान से सिगार पीता रहा हूं।"

इन्स्पेक्टर त्यागी ने मिस्टर हैजवर्थ का परिचय कराते हुए कहा, "यह मेरा सौभाग्य है कि स्काटलैंड यार्ड के विख्यात पदाधिकारी मिस्टर हैजवर्थ भारत के दौरे पर आए हुए हैं, और इन दिनों लखनऊ में हैं। आज शाम को आप आगरा चले [illegible]ंगे। हमने इनकी सेवाएं प्राप्त कीं। आपको मालूम होना चाहिए कि मिस्टर हैज-[illegible] उंगलियों के निशानों के बहुत बड़े विशेषज्ञ हैं। अब ये इस हत्या के केस के सम्बन्ध में उंगलियों के निशानों पर कुछ प्रकाश डालेंगे।"

मेजर मि० हैजवर्थ की ओर आश्चर्य से देख रहा था। उसने उस अंग्रेज विशेषज्ञ का नाम सुन रखा था। मेजर ने आगे बढ़कर मि० हैजवर्थ का स्वागत किया और अपना परिचय दिया। मिस्टर हैजवर्थ के होंठों के किनारों पर मुस्कान फैल गई। उसने बड़ी गर्मजोशी के साथ मेजर से हाथ मिलाते हुए कहा, "मैंने आपका नाम सुन रखा है। भारत के इस दौरे में आपसे मिलने की इच्छा भी मेरे मन में थी। आगरे के बाद मैं बम्बई जा रहा था।"

प्रभात मुखर्जी ने मेज पर से चाकू उठाकर लहराया। कुछ रुककर हैजवर्थ से बोला, "इन्स्पेक्टर त्यागी ने सुबह मुझे बताया कि यह चाकू आपको दिखाया गया है। इस चाकू का प्रयोग हत्या के लिए किया गया। इस पर मृतक के खून के दाग अभी तक मौजूद हैं। आप मृतक या उससे सम्बन्धित किसी व्यक्ति को जानते हैं ?"

"नहीं।"

"क्या आप अपनी जानकारी से हम सबको परिचित कराएंगे ?"

"इस पर दो आदमियों की उंगलियों के निशान हैं।" हैजवर्थ ने कहा, "उन दोनों आदमियों के काल्पनिक नाम रख लेते हैं—जेड और डब्ल्यू। चाकू पर जेड की

उंगलियों के निशान अधिक भी हैं और गहरे भी हैं। यानी जेड की पहली उंगली का एक निशान है, दूसरी के तीन और तीसरी के चार निशान हैं। चाकू के फल पर जेड की पहली उंगली का एक, दूसरी उंगली का एक और तीसरी उंगली के दो निशान हैं। चाकू के दस्ते पर डब्ल्यू की पहली उंगली का एक, दूसरी के तीन और तीसरी उंगली का एक निशान है। चाकू के फल पर डब्ल्यू की पहली उंगली के तीन, दूसरी का एक और तीसरी उंगली के दो निशान हैं। डब्ल्यू की उंगलियों के निशान मद्धिम हैं।"

"जेड और डब्ल्यू की उंगलियों के इन निशानों से आप क्या अंदाजा लगाते हैं?"

"मैंने उंगलियों के निशानों की जो पोजीशन बयान की है उसे अर्थपूर्ण शब्दों में इस तरह कहा जा सकता है कि चाकू के दस्ते पर जेड की पकड़ बहुत मजबूत थी। इसका मतलब है कि जेड ने चाकू इस अंदाज से पकड़ा जैसे वह किसी पर घातक प्रहार करना चाहता था। मेरे अनुमान से हत्यारा जेड है।"

प्रभात मुखर्जी ने मेज पर से एक फोटो उठाया और मि० हैजवर्थ को दिखाते हुए कहा, "यह मृतक चन्द्रप्रकाश उर्फ सत्यप्रकाश की उंगलियों के निशान हैं। क्या आपने चाकू पर के उंगलियों के निशान इस फोटो में लिए उंगलियों के निशानों के साथ मिलाए थे?"

"जी हां," मि० हैजवर्थ ने कहा, "मृतक की उंगलियों के निशान असल में डब्ल्यू की उंगलियों के निशान हैं। मैं एक बात और बता देना चाहता हूं कि चाकू के फल पर जेड के बायें हाथ की उंगलियों के निशान हैं और चाकू के दस्ते पर जेड के दायें हाथ की उंगलियों के निशान हैं। चाकू के फल पर मृतक के दाहिने हाथ की उंगलियों के निशान हैं और चाकू के दस्ते पर मृतक के बायें हाथ की उंगलियों के निशान हैं।"

"और अब मैं एक आश्चर्यजनक बात बताना चाहता हूं," प्रभात मुखर्जी ने दूसरा फोटो उठाते हुए कहा, "इस फोटो में मिस रोमा की उंगलियों के निशान हैं जो चाकू पर जेड की उंगलियों के निशानों से मिलते-जुलते हैं।"

रोमा के बदन में भय की एक झुरझुरी दौड़ गई। वह अपने हाथों की उंगलियों की ओर देखने लगी, और उसके मुंह से निकला, "लेकिन मेरी उंगलियों के निशान तो किसी ने लिए नहीं।"

इन्स्पेक्टर त्यागी ने मुस्कराते हुए कहा, "हमें आपकी उंगलियों के निशान लेने की जरूरत नहीं थी। जिस दिन आप चन्द्रप्रकाश या अपने पिता की शिनाख्त के लिए आई थीं, आप कुर्सी के बाजुओं पर अपनी उंगलियों के निशान छोड़ गई थीं। और वहां से हमने केवल आप ही की उंगलियों के नहीं बल्कि प्रभा जी और नवलकिशोर की उंगलियों के निशान भी ले लिए थे।"

"मैं इन्स्पेक्टर त्यागी की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। इन्होंने बड़ी सावधानी से काम लिया है।" प्रभात मुखर्जी बोला।

"मेरी रिपोर्ट अभी समाप्त नहीं हुई।" मि० हैजवर्थ ने कहा, "चाकू पर बहुत ही हल्की रगड़ के निशान भी हैं।"

"हल्की रगड़!" प्रभात मुखर्जी ने हैरान होकर पूछा।

"जी हां, और मैं यह नहीं कह सकता कि चाकू पर किस चीज की रगड़ के निशान हैं।" मि० हैजवर्थ ने कहा, "वे नंगी उंगलियों के रगड़ के निशान नहीं हैं, मैं इतना निश्चय के साथ कह सकता हूं।"

मि० हैजवर्थ की इस बात पर मेजर की बांछें खिल गईं। उसने व्यग्रता से पूछा, "नंगी उंगलियों के न सही, क्या वे दस्ताने पहने हुए उंगलियों के निशान हो

सकते हैं ?"

"हां।" मि० हैजवर्थ ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

"क्या यह नहीं हो सकता कि रोमा और चन्द्रप्रकाश द्वारा चाकू पकड़ने के बाद किसी ने उस चाकू को पकड़ा और हमला किया ?"

"यह मालूम करने का काम आप लोगों का है, मैं तो केवल उंगलियों के निशानों का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूं।" यह कहकर मि० हैजवर्थ उठ खड़े हुए और उन्होंने सबसे विदा ली।

सौतेली बेटी

शाम का समय था, हल्की बूंदें पड़ रही थीं। प्रभा और नवलकिशोर ने मेजर, सोनिया, कल्पना और विनोद को अपने घर पर आमन्त्रित किया था। उनके लिए एक विशेष दावत का प्रबन्ध किया गया था।

वे सब खाना खा चुके थे और काफी का इन्तजार कर रहे थे।

मेजर ने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी की ओर देखा और कहा, "अभी काफी आने में कुछ देर है। तब तक मैं अकेले में रोमा से दो-चार बातें करना चाहता हूं।"

"रोमा मेजर साहब को मेरे बेडरूम में ले जाओ।" प्रभा ने कहा।

प्रभा के बेडरूम में रोमा पलंग पर और मेजर पलंग के सामने पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ गया। मेजर ने कहा, "आज सुबह जो कुछ हुआ और मैंने आपके पक्ष में जो कुछ किया उससे आपको गलतफहमी नहीं होनी चाहिए कि मैं आपको बिल्कुल निर-पराध समझता हूं।" मेजर ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "अभी आपको मेरे सामने अपनी सफाई देनी है। मैं यह जानना चाहता हूं कि उस रात आप अपने पिता से क्यों मिलने गईं ? आपको कैसे पता चला कि आपके पिता उस मकान में थे ? आप की अंगूठी का नग वहां उखड़कर कैसे गिर पड़ा ?"

"मैं अपने पिता की सौतेली बेटी जरूर थी, लेकिन वे मुझे अपनी सगी बेटी से अधिक प्यार करते थे। उन्होंने मुझे पत्र लिखकर उस मकान में बुलाया था। उन्होंने हिदायत की थी कि मैं अकेली आऊं, और रात को सवा नौ बजे से पहले उनसे ... लेकिन संयोग से उस दिन मेरे मामा ने एक रिश्तेदार का निमंत्रण स्वीकार कर ... । मैंने सिरदर्द का बहाना किया, लेकिन मेरी मां मुझे जबरदस्ती उस रिश्तेदार के ... ले गईं। मेरे लिए वहां से चोरी-छिपे खिसक आने के सिवा और कोई चारा नहीं ... । मैं थोड़ी दूर तक कार में सैर करने के बहाने निकली और अपने पिता के पास ... गई।"

"क्या उस समय वे अकेले थे वहां ?" मेजर ने पूछा।

"जी हां···।"

"वे क्या कर रहे थे ?"

"एक मुहर लगी डिबिया को चाकू से खोलने में लगे हुए थे।"

"क्या वे उसी चाकू से उस डिबिया को खोल रहे थे जिससे उनकी हत्या की गई ?"

"जी हां। वे अपनी कोशिश में सफल नहीं हो पा रहे थे।"

"क्यों ?"

"वे बहुत ज्यादा घबराए हुए थे। बार-बार दरवाजे की ओर देखते थे और कभी अपने पीछे की खिड़की की ओर मुड़कर देखने लगते थे।"

"उनकी घबराहट का क्या कारण था ?"

"उन्हें शायद यह आशंका थी कि ऊपर से कोई आ जाएगा। उनकी उंगलियां

कांप रही थीं इसलिए उस डिबिया की मुहर तोड़ नहीं पा रहे थे। मैंने चाकू उनके हाथ से ले लिया और उस डिबिया की मुहरें तोड़ दीं।"

"अब मैं समझा कि उस चाकू पर आपके और आपके पिता की उंगलियों के निशान क्यों थे, और आपकी उंगलियों के निशान गहरे और आपके पिता की उंगलियों के निशान हल्के क्यों थे।" मेजर ने कहा और कुछ सोचते हुए बोला, "उस डिबिया में क्या था ?"

"चार कीमती हीरे थे। वे ये हीरे मुझे देना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया था।"

"अगर वे उन हीरों को आपको देना चाहते थे, तो इससे पहले बम्बई में दे सकते थे। उन हीरों की बन्द डिबिया ही आपको दे सकते थे। उस डिबिया को खोलने की क्या जरूरत थी ?"

"यही प्रश्न उस रात मैंने भी अपने पिता से किया था।" रोमा बोली, "उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें विवश होकर हीरे बम्बई से यहां लाने पड़े थे। और हीरों की डिबिया, खोलने का उद्देश्य यह था कि वह मुझे बता सकें कि कौन-सा हीरा किस कीमत का है।"

"उन हीरों की कुल कीमत क्या थी ?"

"चार लाख रुपये।"

"चार लाख !" मेजर ने आश्चर्य से कहा, "वे आपको ये हीरे उस समय क्यों देना चाहते थे ?"

"मैं बता चुकी हूं कि मेर पिता मेरे पिता ही नहीं थे, मेरे मित्र भी थे। हम एक-दूसरे के भेदों से भी भली भांति परिचित थे। उन्हें यह वहम हो गया था कि कोई उनकी जान के पीछे पड़ा है।"

"क्या उस समय आपको मालूम था कि उनकी मृत्यु के बाद उनके बीमे की रकम किसको मिलने वाली थी ? क्या आप जानती थीं कि आपके नाम की जगह रोहिणी का नाम पालिसी पर लिख दिया गया है ?"

"उस रात से पहले नहीं जानती थी। उस रात तक तो मैं यही जानती थी कि बीमे की रकम मुझे ही मिलेगी। लेकिन मेरे पिता ने उस रात मुझे साफ-साफ बता दिया था कि बीमे की रकम मुझे नहीं मिलेगी। इसके बदले में चार लाख के हीरे मुझे दे रहे हैं।"

"क्या उन्होंने आपको यह भी बताया कि उनको किसकी ओर से जान का खतरा था ?"

"उन्होंने नाम तो नहीं बताया था लेकिन इशारा जरूर किया था। वे कह रहे थे कि उन्हें अपने एक पुराने दुश्मन से ख़तरा है और उनका दुश्मन कोई आदमी था।"

"आदमी था !" मेजर फिर हैरान हुआ, "लेकिन मरने से पहले उन्होंने अपने साले चन्दन को यह बताया था कि उन पर किसी नकाबपोश औरत ने हमला किया था।"

"यह भी तो हो सकता है कि चन्दन ने उनका आखिरी बयान बदल दिया हो। चन्दन ने नकाबपोश आदमी की जगह नकाबपोश औरत बता दिया हो।"

"अच्छा तो अब आप मुझे उस रात की बाकी कहानी सुनाइए।"

"कहानी बहुत छोटी-सी है। जब मेरे पिता मुझे हीरे दे चुके तो उन्होंने मेरे सिर पर प्यार का हाथ फेरा। मुझे क्या मालूम था कि वे अन्तिम बार मुझे प्यार कर रहे हैं !" रोमा का दिल भर आया। उसकी आंखें छलक उठीं, "उन्होंने कहा कि मैं

चिन्ता न करूं। वे अपनी हिफाजत कर सकते हैं। उन्होंने मुझे अपने पास ज्यादा देर तक नहीं रोका। मैं वहां से जल्दी ही चली आई।"

"लेकिन आपकी अंगूठी का नग कैसे टूट गया?"

"मैं वहां से चली आई, लेकिन रास्ते में मुझे यह ख्याल आया कि अगर मेरे पिता मुझे अपना इतना निकटतम समझते हैं, तो वे इतनी बहुत-सी बातें मुझसे क्यों छिपा रहे हैं। उनको मुझे उस आदमी का नाम बताना चाहिए जिससे उन्हें खतरा है। यह भी बताना चाहिए कि वे किसके मकान में ठहरे हुए हैं। उनको मुझे यह भी बताना चाहिए कि उन्होंने बीमे की पालिसी मेरे नाम को बदलकर किसके नाम की है। इन बातों का ध्यान आते ही मैंने अपनी कार मोड़ी और दोबारा उस मकान में पहुंची जिसमें मेरे पिता ठहरे हुए थे। मैं उस मकान में पहुंची तो वे मेज के पीछे गिरे पड़े थे। उनकी आंखें बिल्ली की तरह चमक रहीं थीं लेकिन वे ज्योतिहीन थीं। उनका सीना खून से लिथड़ा हुआ था। मैं समझ गई कि दुश्मन अपने इरादे में सफल हो चुका है।"

"जब आप दोबारा वहां पहुंचीं तो कितनी देर तक रहीं?"

"मैं कुछ नहीं कह सकती। मेरे होश-हवास ठिकाने पर नहीं थे। लेकिन मैं शायद आधे घंटे तक वहां जरूर रही। जब मेरे होश ठिकाने हुए तो मेरे मुंह से एक जोर की चीख निकल गई।"

"क्या उस समय आपने कोई और कार वहां देखी थी?"

"नहीं," रोमा ने कहा, "गैरेज में एक कार खड़ी थी। और मैंने मकान में आते हुए उसे देखा था।"

"और जब आप दोबारा मकान से निकलीं तो क्या वह कार गैरेज में ही खड़ी थी?"

"जी हां" और मुझसे एक गलती हो गई। मैं जब दोबारा मकान से निकली तो पिछले दरवाजे से निकली। मुझे लगा, हत्यारा गैरेज में छिपा है। मैं गैरेज की ओर बढ़ी तो किसी ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे गैरेज के अन्दर खींचने की कोशिश ... मैंने तेजी से अपना हाथ छुड़ा लिया और भागकर फिर मकान के अन्दर चली ... समझती हूं कि हाथ छुड़ाने में मेरी अंगूठी का नग निकल गया। सामने के ... से बाहर निकलकर मैं तेजी से अपनी कार में जा बैठी। उसका इंजन स्टार्ट ... और जब मैं फाटक से निकल रही थी तो मैंने एक कार को फाटक में घुसते हुए ...। मेरे होश इस बुरी तरह उड़े हुए थे कि मैं अच्छी तरह यह देख न पाई कि उस ... में कौन था। यह तो अब मालूम हुआ कि उस कार में चन्दन था। मैं फाटक से ...लकर अन्धाधुंध कार चलाने लगी। मैंने थोड़ी दूर जाकर कार रोक दी और बाहर निकल आई ताकि ताजा हवा खा सकूं। सड़क सुनसान पड़ी थी। ठीक तभी किसी ने मेरी गर्दन में हाथ डालकर अपनी बांह से मेरा गला दबा दिया ताकि मैं बोल न सकूं। आक्रमणकारी ने अपने दूसरे हाथ से एक रूमाल मेरी नाक पर रख दिया। इसके बाद मुझे कुछ पता नहीं रहा कि मैं कहां हूं। जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि मेरी कार पेड़ से टकरा चुकी थी और मैं ड्राइविंग सीट पर बैठी थी। मेरा सिर स्टेयरिंग व्हील के ऊपर टिका हुआ था। जब मेरे दम में दम आया तो मैंने अपने ब्लाउज में हाथ डालकर देखा, वे चारों हीरे गायब थे।"

"हीरे गायब थे!"

"जी हां," रोमा ने कहा, "मैं बड़ी कठिनाई से कार में से निकली और एक गुजरती हुई कार को हाथ देकर लखनऊ पहुंची और हजरतगंज से रिक्शे में घर आई। कुशल हुई कि मां और मामा जी तब तक दावत से घर नहीं लौटे थे। वे मेरा वहां

बेचैनी से इन्तजार कर रहे थे। मैंने उन्हें कार एक्सीडेण्ट के बारे में बताया।"

"आपने अपनी मां को यह नहीं बताया कि आप अपने पिता से मिलने गई थीं और उन्होंने आपको हीरे दिए थे जो चुरा लिए गए?"

"नहीं, मैं उन्हें ये बातें कैसे बता सकती थी? मेरे पिता ने मुझे हिदायत की थी कि मैं बहुत ही सावधानी से काम लूं।"

'हूंउ···," मेजर ने कहा, 'गैरेज में आपका हाथ किसी आदमी ने पकड़ा था या औरत ने?"

"आदमी ने···वह निश्चय ही आदमी का हाथ था।" रोमा बोली।

"पेट्रोल पम्प के मालिक प्रेमसरूप का बयान है कि उसने कार में एक नकाबपोश औरत को देखा था, जो आपसे मिलती-जुलती थी। सवाल पैदा होता है कि कार में वह आदमी क्यों नहीं था जिसने गैरेज में आपका हाथ पकड़ा था और आपकी कार का पीछा किया होगा?"

रोमा खामोश रही, और मेजर सोचता रहा। मेजर ने एकाएक अपने दाहिने हाथ का मुक्का जोर से अपने बायें हाथ पर मारा और बोला, "मैं समझ गया। मेरे विचार में तो कहानी इस तरह पूरी होती है। जिस औरत ने आपके पिता की हत्या की, वह एक आदमी के साथ आई थी। वे दोनों आपके आने से पहले ही वहां पहुंच चुके थे। उन्होंने यह निश्चय नहीं किया होगा कि उनको किस तरह आक्रमण करना चाहिए कि तभी आप वहां पहुंच गई। वे दोनों छिप गए, आपकी बातें सुनते रहे। उन्होंने आपके पिता को हीरे देते हुए देख लिया होगा। जब आप चली गई तो उन्होंने आपके पिता का काम तमाम कर दिया। वे जरूर कोई चीज भी खोजते रहे होंगे कि आप दोबारा वहां फिर पहुंच गई। आपका वहां दोबारा जाना उनके लिए वरदान सिद्ध हुआ। उन्होंने आपसे हीरे छीनने की योजना बना ली। औरत आपकी कार के पिछले हिस्से में छिप गई और आदमी बाहर रहा ताकि अपनी गाड़ी में आपका पीछा कर सके। आदमी गैरेज में छिपा हुआ था। आपने गैरेज की ओर जाकर उस आदमी को हीरों पर कब्जा करने का बेहतरीन मौका दे दिया। वह तो कहिए कि सौभाग्य से आप उसके पंजे से बच निकलीं, वरना वह गैरेज में ही आपसे हीरे छीन लेता।"

"फिर?"

"हत्या करने वाली औरत आपकी कार के पिछले हिस्से में छिपी हुई थी, और आदमी अपनी कार में आपका पीछा कर रहा था। आपको होश तक नहीं था कि आप कार कैसे चला रही हैं तथा आपका पीछा किया जा रहा है। आपने कार रोकी तो उस आदमी ने भी अपनी कार रोक दी होगी। वह अपने साथ क्लोरोफार्म शायद आपके पिता के लिए लाया होगा, लेकिन उसे इस्तेमाल आप पर किया गया। आपको बेहोश करने के बाद आपको कार के पिछले हिस्से में बंद कर दिया होगा और आपकी कार वह औरत ड्राइव करने लगी होगी। उन्होंने जानबूझकर पेट्रोल पम्प पर पेट्रोल डलवाया।"

"क्यों?"

"वे बहुत होशियार लोग थे। वे हत्या का सन्देह आप पर डालना चाहते थे। वे साधारण अपराधी नहीं थे। उन्होंने जान-बूझकर आपकी कार पेड़ से टकराई। फिर आपको कार के पिछले हिस्से से निकालकर ड्राइविंग सीट पर बैठा दिया और उस औरत ने अपना नकाब आपकी कार में फेंक दिया। उनकी यह योजना भी सफल रही।"

कार्क का जला हुआ टुकड़ा

इन्स्पेक्टर त्यागी मेजर की हथेली पर एक जला हुआ कार्क फटी-फटी आंखों से देख रहा था। मेजर ने जब अपनी मुट्ठी बंद कर ली तो इंस्पेक्टर त्यागी ने कहा, "क्या आप इसीलिए डाक्टर की रिपोर्ट का विवरण जानने के लिए वेकरार थे। क्या आपने इसीलिए यह पूछा था कि लाश पर जलने के दाग तो नहीं थे ?"

"जी हां, मैं समझता हूं कि चन्द्रप्रकाश उर्फ सत्यप्रकाश की हत्या करने के बाद उस कार्क को जलाया गया और फिर लापरवाही से फेंक दिया गया। मैंने यह कार्क उठाकर अपनी जेब में डाल लिया था।"

"यह जला टुकड़ा बेकार चीज है।" प्रभात मुखर्जी बोला।

मेजर ने गर्व से कहा, "हत्यारे ने कार्क के इस जले हुए टुकड़े से पेंसिल का काम लिया।"

"पेंसिल का काम लिया। क्यों ?"

"हत्यारे ने चन्द्रप्रकाश को मौत के घाट उतारने के बाद फौरन कुछ लिखने की जरूरत महसूस की। उसके पास कलम नहीं था। मेज पर भी कलमदान नहीं था। इसके सिवा और कोई चारा नहीं था कि वह दियासलाई जलाता, कार्क को आग लगाता और इस तरह जो कोयला बनता उससे वह कागज पर कुछ शब्द लिखता। यही कारण है इन्स्पेक्टर साहब, आपने मेज पर बहुत-सी दियासलाइयां देखी थीं जो अधजली थीं।"

"ओह !" इन्स्पेक्टर त्यागी के मुंह से निकला, "मगर मेज पर राख से लिखा हुआ कोई कागज तो किसी को नहीं मिला।"

"कागज पर सन्देश लिखा गया और हत्यारा उसे अपने ही साथ ले गया।" मेजर ने कहा।

"इस बात को कैसे माना जा सकता है ?" प्रभात मुखर्जी बोला, "हत्यारे को अगर कोई संदेश लिखकर अपने साथ ही ले जाना था, तो वह घर पर जाकर आराम से लिख सकता था।"

"आपकी दलील बिल्कुल ठीक है। मैं जिस बात की ओर इशारा कर रहा हूं वह यह है कि हत्यारे को एक संदेश लिखने की जरूरत महसूस हुई कोई ऐसी बात जो बाद में वह भूल सकता था।"

एक घंटे बाद मेजर नवलकिशोर के मकान में रोमा के सामने बैठा था। वह अपनी हथेली पर वही कार्क का जला हुआ टुकड़ा उछाल रहा था और रोमा से कह रहा था, "मिस रोमा, कल आपने मेरे सामने जिस सच्चाई से काम लिया, मैं आज भी वही सचाई आपसे चाहता हूं। क्या इस जले हुए कार्क से लिखा हुआ कोई सन्देश आपके पास है ?"

"नहीं।" रोमा ने बड़ी सादगी से उत्तर दिया।

"जब आप दोबारा अपने पिता से मिलने गई थीं तो क्या आपने कार्क का जला हुआ टुकड़ा देखा था ?"

"नहीं, उनकी मेज पर कार्क का कोई जला हुआ टुकड़ा नहीं था। मेज पर अधजली दियासलाइयां पड़ी थीं।"

"आप अपने पिता को किस सीमा तक जानती थीं ?"

"एक बेटी को अपने पिता के विषय में जितना जानना चाहिए।"

"मैं यह पूछना चाहता हूं कि आपको अपने पिता में कभी कोई ऐसी बात

कार्क का जला हुआ टुकड़ा

इंस्पेक्टर त्यागी मेजर की हथेली पर एक जला हुआ कार्क फटी-फटी आंखों से देख रहा था। मेजर ने जब अपनी मुट्ठी बंद कर ली तो इंस्पेक्टर त्यागी ने कहा, "क्या आप इसीलिए डाक्टर की रिपोर्ट का विवरण जानने के लिए बेकरार थे। क्या आपने इसीलिए यह पूछा था कि लाश पर जलने के दाग तो नहीं थे ?"

"जी हां, मैं समझता हूं कि चन्द्रप्रकाश उर्फ सत्यप्रकाश की हत्या करने के बाद उस कार्क को जलाया गया और फिर लापरवाही से फेंक दिया गया। मैंने यह कार्क उठाकर अपनी जेब में डाल लिया था।"

"यह जला टुकड़ा बेकार चीज है।" प्रभात मुखर्जी बोला।

मेजर ने गर्व से कहा, "हत्यारे ने कार्क के इस जले हुए टुकड़े से पेंसिल का काम लिया।"

"पेंसिल का काम लिया। क्यों ?"

"हत्यारे ने चन्द्रप्रकाश को मौत के घाट उतारने के बाद फौरन कुछ लिखने की जरूरत महसूस की। उसके पास कलम नहीं था। मेज पर भी कलमदान नहीं था। इसके सिवा और कोई चारा नहीं था कि वह दियासलाई जलाता, कार्क को आग लगाता और इस तरह जो कोयला बनता उससे वह कागज पर कुछ शब्द लिखता। यही कारण है इन्स्पेक्टर साहब, आपने मेज पर बहुत-सी दियासलाइयां देखी थीं जो अधजली थीं।"

"ओह !" इन्स्पेक्टर त्यागी के मुंह से निकला, "मगर मेज पर राख से लिखा हुआ कोई कागज तो किसी को नहीं मिला।"

"कागज पर सन्देश लिखा गया और हत्यारा उसे अपने ही साथ ले गया।" मेजर ने कहा।

"इस बात को कैसे माना जा सकता है ?" प्रभात मुखर्जी बोला, "हत्यारे मगर कोई संदेश लिखकर अपने साथ ही ले जाना था, तो वह घर पर जाकर से लिख सकता था।"

"आपकी दलील बिल्कुल ठीक है। मैं जिस बात की ओर इशारा कर रहा हूं वह यह है कि हत्यारे को एक संदेश लिखने की जरूरत महसूस हुई कोई ऐसी बात जो बाद में वह भूल सकता था।"

एक घंटे बाद मेजर नवलकिशोर के मकान में रोमा के सामने बैठा था। वह अपनी हथेली पर वही कार्क का जला हुआ टुकड़ा उछाल रहा था और रोमा से कह रहा था, "मिस रोमा, कल आपने मेरे सामने जिस सच्चाई से काम लिया, मैं आज भी वही सचाई आपसे चाहता हूं। क्या इस जले हुए कार्क से लिखा हुआ कोई सन्देश आपके पास है ?"

"नहीं।" रोमा ने बड़ी सादगी से उत्तर दिया।

"जब आप दोबारा अपने पिता से मिलने गई थीं तो क्या आपने कार्क का जला हुआ टुकड़ा देखा था ?"

"नहीं, उनकी मेज पर कार्क का कोई जला हुआ टुकड़ा नहीं था। मेज पर अधजलीं दियासलाइयां पड़ी थीं।"

"आप अपने पिता को किस सीमा तक जानती थीं ?"

"एक बेटी को अपने पिता के विषय में जितना जानना चाहिए।"

"मैं यह पूछना चाहता हूं कि आपको अपने पिता में कभी कोई ऐसी बात

दिखाई दी थी जो आपको विचित्र मालूम होती थी ?"

"उनकी कई बातें अजीब थीं। सुबह चाय या दूध नहीं पीते थे। नाश्ते में चार तीतरों या दो मुर्गों की अखनी पीते थे। दोपहर का खाना नहीं खाते थे। बीयर पीते थे। चार बजे विशेष रूप से बनाया हुआ मुरब्बा इस्तेमाल करते थे। शाम को छः बजे नियमानुसार ह्विस्की पीते थे। हफ्ते में दो रोज सोने से पहले एक सफेद-सा पाउडर मुंह में घोलते रहते थे।"

"कोकीन !" मेजर के मुंह से निकला।

"और···और···" रोमा कुछ कहते हुए रुक गई और शरमा गई।

"और क्या···?" मेजर ने पूछा। "देखिए, मुझसे साफ-साफ बात करने में आपको कोई शर्म महसूस नहीं होनी चाहिए।"

"और उन्होंने अपने बेडरूम में विशेष प्रकार का गत्ता लगवा रख था जिसकी वजह से बाहर की आवाज अन्दर और अन्दर की आवाज बाहर नही जा सकती थी।"

"क्यों ?"

"मैंने बहुत जानने की कोशिश की, लेकिन यह रहस्य मेरी समझ में नहीं आया। मेरा बेडरूम उनके बेडरूम के साथ ही था। एक-दो बार उनके बेडरूम का दरवाजा संयोग से खुला रह गया था, तब मैंने अजीब-अजीब आवाजें सुनी थीं।"

"अजीब-अजीब आवाजें ?"

"हां···सिसकियों और कराहों की आवाजें। मगर वह सिसकियों और कराहों की आवाजों से भिन्न आवाजें हुआ करती थीं। मह दर्द और तकलीफ की कराहें नहीं होती थीं। ऐसा लगता था जैसे कोई भरपूर आनन्द और प्रसन्नता से सिसक रहा हो।"

"वह किसकी सिसकियों की आवाजें होती थीं ?"

"कभी पिता की सिसकियों की और कभी मां की कराहों की। साथ-साथ किसी चीज को जोर से थपथपाने की आवाज आती थी।"

मेजर ने दीवार पर नजरें जमाते हुए कहा, "क्या आपके पिता जी के मित्र नहीं थे ? क्या वह किसी क्लब में नहीं जाया करते थे ?"

"उनका कोई मित्र नहीं था, उनको क्लब से नफरत थी।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि आपके पिता का कभी किसी से कोई झगड़ा नहीं होता था ?"

"क्यों नहीं। उनके छोटे भाई अक्सर उनसे झगड़ा करते थे।"

"मगर क्यों ?"

"वे यह इल्जाम लगाते थे कि मेरे पिता ने उनकी जिन्दगी तबाह कर दी है। वह अपने पिता पर भी यही इल्जाम लगाते हैं।"

मेजर विनोद के घर आकर कपड़े बदल रहा था कि सोनिया तेजी से आई और बोली, "आपको फोन पर इंस्पेक्टर त्यागी बुला रहे हैं।"

मेजर ने तेजी से कपड़े बदले और विनोद के पिता के कमरे में जाकर फोन का रिसीवर उठाकर बोला, "हैलो इंस्पेक्टर साहब, आपने इतनी जल्दी याद किया, जरूर कोई बात होगी।"

"जी हां, हमें पता चला है कि हत्या की रात रोहिणी ने सिनेमा नहीं देखा था। वह एक विदेशी पुरुष के साथ कार में घूमती रही थी। उन्होंने जिस रेस्ट्रां में रात का खाना खाया था, उसके बैरे ने रोहिणी का फोटो पहचान लिया है।"

"खूब !" मेजर ने कहा, "आप तो बड़ी तेजी से काम कर रहे हैं। उन्होंने

ा का खाना कितने बजे खाया था ?"

"पौने नौ बजे। विदेशी के पास कैडलक कार थी।"

"और कैडलक कार के टायरों के निशान प्रकाश आश्रम के अहाते में मौजूद ?" मेजर ने कहा।

"जी हां। प्रभात मुखर्जी इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि हत्यारी औरत के साथ ाई आदमी भी था।" इंस्पेक्टर त्यागी ने कहा।

"वे इस परिणाम पर कैसे पहुंचे ?"

"प्रकाश आश्रम के गैरेज में 'लकी स्टाटिक' सिगरेट के टुकड़े मिले हैं। लकी ट्राटिक सिगरेट खैर यहां भी मिलते हैं और हमारे देशवासी भी वह सिगरेट पीते हैं ाकिन सिगरेट के टुकड़ों को जिस बूट की एड़ी से कुचलकर बुझाया गया है, वह बूट वदेशी है। मिट्टी पर उस बूट की एड़ी के कुछ निशान बिल्कुल साफ हैं। एड़ी के नीचे बड़ की जो एड़ी थी उस पर कुछ अक्षर लिखे हुए हैं। अंग्रेजी के अक्षर—'मेड इन आस्ट्रेलिया'—ये शब्द स्पष्ट पढ़े जाते हैं। प्रभात मुखर्जी ने इस बात से अनुमान लगाया है कि एक विदेशी की सहायता से रोहिणी ने अपने पति की हत्या की। हत्य का उद्देश्य भी स्पष्ट है। रोहिणी को बीमे की रकम की जरूरत होगी। ताकि व उस विदेशी के साथ जा सके।"

"रोहिणी को उस विदेशी के साथ जाने की क्या जरूरत हो सकती थी ? मेजर ने कहा।

"हो सकता है कि वे एक-दूसरे को प्यार करते हों। प्रभात मुखर्जी ने चन्द और रोहिणी को आज शाम यहां बुलाया है। अगर आप इस पूछताछ में दिलचस्प रखते हों तो बड़ी खुशी से आ सकते हैं।"

मेजर पुलिस थाने पहुंचा तो देखा कि इस बार प्रभात मुखर्जी ने कोई विशे प्रबन्ध नहीं किया था। इंस्पेक्टर त्यागी के कमरे में ही पूछताछ आरम्भ कर दी ग न्दन और रोहिणी के चेहरे पर घबराहट के चिह्न थे। चन्दन कुछ अप्रसन्न और ा था, क्योंकि पुलिस के कहने पर बीमा कम्पनी को अदालत ने बीमे की रकम र न का आदेश दे दिया था। और अदालत ने अन्तिम संस्कार के लिए रोहिणी उसके पति की लाश भी नहीं दी थी। अदालत ने चन्द्रप्रकाश उर्फ सत्यप्रकाश के ि को तार दिया था कि वह अपने बेटे की लाश ले जा सकते हैं। वेदप्रकाश ने अ खास आदमी भेजकर हवाई जहाज से लाश बम्बई मंगवा लीं थी और वहीं दाह-संस कर दिया था।

प्रभात मुखर्जी ने मेजर का स्वागत किया और फिर उसे अपने पास पड़ी कुर्सी पर बैठा लिया। इसके बाद वह रोहिणी से बोला, "आप हत्या की रात थीं ?"

"मैंने उस दिन दोपहर का सिनेमा देखा था।" रोहिणी ने कहा।

"सिनेमा शो देखने के बाद आपने क्या किया था ?"

"मैंने 'माहताब' रेस्त्रां में खाना खाया था।"

"क्या आपके साथ कोई और भी था ?"

"नहीं, कोई नहीं था।"

"खाना खाने के बाद आप कहां गई थीं ?"

"अपने भाई के यहां।"

"कितने बजे ?"

"साढ़े दस बजे।"

"इस वीच आप कहां रही थीं ? यानी खाना खाने के वाद से भाई के घर जाने तक ?"

"रिक्शे में वैठी हुई थी," रोहिणी ने वेधड़क होकर उत्तर दिया, "माहताव रेस्ट्रां से मेरे भाई के घर तक पौन घंटे का सफर है।"

"देखिए मिसेज रोहिणी," प्रभात मुखर्जी ने कहा, "मैंने आपसे जितने भी प्रश्न किए हैं, उनके उत्तर आपने गलत दिए हैं। मैं स्पष्ट शव्दों में कह दूं कि आप आरम्भ से आज तक झूठ वोलती रही हैं।"

रोहिणी के चेहरे का रंग पल-भर के लिए वदल गया। लेकिन वह घवराई नहीं। जल्द ही उसके चेहरे का रंग लौट आया और उसने तुनककर कहा, "आप मुझ-पर आरोप लगा रहे हैं।"

"विल्कुल नहीं," प्रभात मुखर्जी ने कड़वे स्वर में कहा, "हम प्रमाण विना कोई वात नहीं कहते। उस दिन आप शाम को चार वजे कैफे डिलक्स में थीं। आपने वहां आइसक्रीम खाई, जिसका मतलव है कि उस दिन आपने मैटिनी शो नहीं देखा था।"

रोहिणी पल-भर ठिठक गई, लेकिन फिर निडरता से वोली, "मैं शाम के चार वजे कैफे डीलक्स में नहीं थी, सिनेमा हाल में थी।"

"देखिए, आपने उस दिन लम्वा कुर्ता और गरारा पहन रखा था। आपके कपड़ों का रंग वादामी था। आपने अपने सीने पर गुलाव का फूल लगा रखा था। आपके सिर पर वादामी रंग का दुपट्टा था जिसके किनारों पर गोटे की झालर लगी हुई थी और आपके साथ एक विदेशी आदमी था।"

"विदेशी आदमी !" रोहिणी ने घृणा-भरे स्वर में कहा, "आप मुझपर यह दूसरा झूठा आरोप लगा रहे हैं।"

"आप हमें वनाने की कोशिश मत कीजिए।" प्रभात मुखर्जी ने कहा, "आपने रात के आठ वजे होटल 'नटराज' में उस विदेशी आदमी के साथ खाना खाया और पौने नौ वजे उसकी कैडलक कार में वहां से चली गईं, और शायद सीधी प्रकाश आश्रम पहुंचीं।"

"और वहां जाकर मैंने अपने पति को मार डाला।"

"आपने सचमुच मेरे मुंह की वात छीन ली।"

"आपके पास इसका क्या सवूत है ?" रोहिणी ने पूछा।

"होटल के वैरे ने फोटो देखकर आपको पहचान लिया है।"

"मेरा फोटो ? मेरा फोटो आपको कहां से मिला ?"

"प्रकाश आश्रम में आपके एक सूटकेस से।" प्रभात मुखर्जी ने एक वड़े लिफाफे में से फोटो निकालकर रोहिणी के आगे रख दिया।

रोहिणी निरुत्तर न हुई। उसने कसमसाते हुए कहा, "क्या मेरी सूरत की दुनिया में कोई दूसरी औरत नहीं हो सकती ?"

"हम दुनिया की नहीं लखनऊ की वात कर रहे हैं।"

"और मैं दुनिया की वात कर रही हूं। एक विदेशी के साथ एक विदेशी स्त्री भी हो सकती थी जिसने लम्वा कुर्ता और गरारा पहन रखा हो। मैं आपको यह वताना चाहती हूं कि मैंने अपने किसी लिवास के साथ कभी गुलाव का फूल नहीं लगाया। मैं तो अपने वालों में भी कभी कोई फूल नहीं लगाती हूं। इसका कारण यह नहीं है कि मुझे फूलों से घृणा है। नहीं, मुझे फूल वहुत अच्छे लगते हैं।"

"अच्छी वात है। अगर आप हर वात से इन्कार कर रही हैं तो हम आपको वारह घण्टे की मोहलत देते हैं। इस वीच हम और भी सवूत इकट्ठे कर लेंगे और इस वीच आप भी यह निर्णय कर लीजिए कि पुलिस के सामने झूठ वोलने का परिणाम

रात का खाना कितने बजे खाया था ?"

"पौने नौ बजे। विदेशी के पास कैडलक कार थी।"

"और कैडलक कार के टायरों के निशान प्रकाश आश्रम के अहाते में मौजू थे ?" मेजर ने कहा।

"जी हां। प्रभात मुखर्जी इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि हत्यारी औरत के सा कोई आदमी भी था।" इंस्पेक्टर त्यागी ने कहा।

"वे इस परिणाम पर कैसे पहुंचे ?"

"प्रकाश आश्रम के गैरेज में 'लकी स्टाटिक' सिगरेट के टुकड़े मिले हैं। लकी स्टाटिक सिगरेट खैर यहां भी मिलते हैं और हमारे देशवासी भी वह सिगरेट पीते हैं लेकिन सिगरेट के टुकड़ों को जिस बूट की एड़ी से कुचलकर बुझाया गया है, वह बू विदेशी है। मिट्टी पर उस बूट की एड़ी के कुछ निशान बिल्कुल साफ हैं। एड़ी के नीचे रबड़ की जो एड़ी थी उस पर कुछ अक्षर लिखे हुए हैं। अंग्रेजी के अक्षर—'मेड इन आस्ट्रेलिया'—ये शब्द स्पष्ट पढ़े जाते हैं। प्रभात मुखर्जी ने इस बात से अनुमान लगाया है कि एक विदेशी की सहायता से रोहिणी ने अपने पति की हत्या की। हत्या का उद्देश्य भी स्पष्ट है। रोहिणी को बीमे की रकम की जरूरत होगी। ताकि वह उस विदेशी के साथ जा सके।"

"रोहिणी को उस विदेशी के साथ जाने की क्या जरूरत हो सकती थी ?" मेजर ने कहा।

"हो सकता है कि वे एक-दूसरे को प्यार करते हों। प्रभात मुखर्जी ने चन्दन और रोहिणी को आज शाम यहां बुलाया है। अगर आप इस पूछताछ में दिलचस्पी रखते हों तो बड़ी खुशी से आ सकते हैं।"

मेजर पुलिस थाने पहुंचा तो देखा कि इस बार प्रभात मुखर्जी ने कोई विशेष प्रबन्ध नहीं किया था। इंस्पेक्टर त्यागी के कमरे में ही पूछताछ आरम्भ कर दी गई। चन्दन और रोहिणी के चेहरे पर घबराहट के चिह्न थे। चन्दन कुछ अप्रसन्न और क्रुद्ध था, क्योंकि पुलिस के कहने पर बीमा कम्पनी को अदालत ने बीमे की रकम रोकने का आदेश दे दिया था। और अदालत ने अन्तिम संस्कार के लिए रोहिणी को उसके पति की लाश भी नहीं दी थी। अदालत ने चन्द्रप्रकाश उर्फ सत्यप्रकाश के पिता को तार दिया था कि वह अपने बेटे की लाश ले जा सकते हैं। वेदप्रकाश ने अपना खास आदमी भेजकर हवाई जहाज से लाश बम्बई मंगवा ली थी और वहीं दाह-संस्कार कर दिया था।

प्रभात मुखर्जी ने मेजर का स्वागत किया और फिर उसे अपने पास पड़ी हुई कुर्सी पर बैठा लिया। इसके बाद वह रोहिणी से बोला, "आप हत्या की रात कहां थीं ?"

"मैंने उस दिन दोपहर का सिनेमा देखा था।" रोहिणी ने कहा।

"सिनेमा शो देखने के बाद आपने क्या किया था ?"

"मैंने 'माहताब' रेस्ट्रां में खाना खाया था।"

"क्या आपके साथ कोई और भी था ?"

"नहीं, कोई नहीं था।"

"खाना खाने के बाद आप कहां गई थीं ?"

"अपने भाई के यहां।"

"कितने बजे ?"

"साढ़े दस बजे।"

"इस बीच आप कहां रही थीं? यानी खाना खाने के बाद से भाई के घर जाने तक?"

"रिक्शे में बैठी हुई थी," रोहिणी ने बेधड़क होकर उत्तर दिया, "माहताब रेस्ट्रां से मेरे भाई के घर तक पौन घंटे का सफर है।"

"देखिए मिसेज रोहिणी," प्रभात मुखर्जी ने कहा, "मैंने आपसे जितने भी प्रश्न किए हैं, उनके उत्तर आपने गलत दिए हैं। मैं स्पष्ट शब्दों में कह दूं कि आप आरम्भ से आज तक झूठ बोलती रही हैं।"

रोहिणी के चेहरे का रंग पल-भर के लिए बदल गया। लेकिन वह घबराई नहीं। जल्द ही उसके चेहरे का रंग लौट आया और उसने तुनककर कहा, "आप मुझ-पर आरोप लगा रहे हैं।"

"बिल्कुल नहीं," प्रभात मुखर्जी ने कड़वे स्वर में कहा, "हम प्रमाण बिना कोई बात नहीं कहते। उस दिन आप शाम को चार बजे कैफे डिलक्स में थीं। आपने वहां आइसक्रीम खाई, जिसका मतलब है कि उस दिन आपने मैटिनी शो नहीं देखा था।"

रोहिणी पल-भर ठिठक गई, लेकिन फिर निडरता से बोली, "मैं शाम के चार बजे कैफे डीलक्स में नहीं थी, सिनेमा हाल में थी।"

"देखिए, आपने उस दिन लम्बा कुर्ता और गरारा पहन रखा था। आपके कपड़ों का रंग बादामी था। आपने अपने सीने पर गुलाब का फूल लगा रखा था। आपके सिर पर बादामी रंग का दुपट्टा था जिसके किनारों पर गोटे की झालर लगी हुई थी और आपके साथ एक विदेशी आदमी था।"

"विदेशी आदमी!" रोहिणी ने घृणा-भरे स्वर में कहा, "आप मुझपर यह दूसरा झूठा आरोप लगा रहे हैं।"

"आप हमें बनाने की कोशिश मत कीजिए।" प्रभात मुखर्जी ने कहा, "आपने रात के आठ बजे होटल 'नटराज' में उस विदेशी आदमी के साथ खाना खाया और पौने नौ बजे उसकी कैडलक कार में वहां से चली गईं, और शायद सीधी प्रकाश आश्रम पहुंचीं।"

"और वहां जाकर मैंने अपने पति को मार डाला।"

"आपने सचमुच मेरे मुंह की बात छीन ली।"

"आपके पास इसका क्या सबूत है?" रोहिणी ने पूछा।

"होटल के बैरे ने फोटो देखकर आपको पहचान लिया है।"

"मेरा फ़ोटो? मेरा फोटो आपको कहां से मिला?"

"प्रकाश आश्रम में आपके एक सूटकेस से।" प्रभात मुखर्जी ने एक बड़े लिफाफे में से फोटो निकालकर रोहिणी के आगे रख दिया।

रोहिणी निरुत्तर न हुई। उसने कसमसाते हुए कहा, "क्या मेरी सूरत की दुनिया में कोई दूसरी औरत नहीं हो सकती?"

"हम दुनिया की नहीं लखनऊ की बात कर रहे हैं।"

"और मैं दुनिया की बात कर रही हूं। एक विदेशी के साथ एक विदेशी स्त्री भी हो सकती थी जिसने लम्बा कुर्ता और गरारा पहन रखा हो। मैं आपको यह बताना चाहती हूं कि मैंने अपने किसी लिबास के साथ कभी गुलाब का फूल नहीं लगाया। मैं तो अपने बालों में भी कभी कोई फूल नहीं लगाती हूं। इसका कारण यह नहीं है कि मुझे फूलों से घृणा है। नहीं, मुझे फूल बहुत अच्छे लगते हैं।"

"अच्छी बात है। अगर आप हर बात से इन्कार कर रही हैं तो हम आपको बारह घण्टे की मोहलत देते हैं। इस बीच हम और भी सबूत इकट्ठे कर लेंगे और इस बीच आप भी यह निर्णय कर लीजिए कि पुलिस के सामने झूठ बोलने का परिणाम

अच्छा होगा या बुरा !"

चन्दन और रोहिणी नाक सिकोड़ते हुए बाहर निकल गये। मेजर ने उनका पीछा किया और बरामदे में आकर उन्हें जा पकड़ा, "क्या आप एक घण्टे के बाद मुझसे पन्द्रह मिनट के लिए मिल सकते हैं ?"

"मुझे एक जरूरी काम से बाहर जाना है।" चन्दन बोला।

"कोई बात नहीं, मुझे मिसेज रोहिणी से जरूरी काम है।"

"मैं घर पर ही हूंगी।" रोहिणी ने कहा।

मेजर जब इंस्पेक्टर त्यागी के कमरे में वापस आया तो इंस्पेक्टर ने पूछा, "आप यह राय दीजिए, क्या होटल नटराज के बैरे को गलतफहमी तो नहीं हुई ?"

"मेरा अपना यह अनुभव है कि जब ऐसे मामलों में किसी आदमी से कोई बात पूछी जाती है, तो वह जरूरत से ज्यादा महत्व देने लगता है, और अपने इस महत्व को बनाये रखने के लिए जान-बूझकर रंग चढ़ाकर कोई बयान दे डालता है।" मेजर ने कहा।

"मैं आपकी इस राय से पूरी तरह सहमत हूं। इसीलिए मैंने चन्दन और रोहिणी को बारह घण्टे की मोहलत दे दी है।"

मेजर विनोद के घर पहुंचा तो सोनिया ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठी कंघी कर रही थी। उसने सोनिया से कहा, "सोनिया, जल्द तैयार हो जाओ। तुम्हें दस मिनट में मेरे साथ बाहर जाना है। अपने पर्स में अपना रिवाल्वर रख लेना।"

तभी बाहर कदमों की आहट सुनाई दी और दूसरे ही पल विनोद कमरे में आया। उसने मेजर के अन्तिम शब्द सुन लिए थे। "रिवाल्वर की क्या जरूरत आ पड़ी ?" उसने मेजर से पूछा।

"आज सोनिया को एक बहुत जरूरी काम सौंपा जाएगा। क्या आपके पिता की कार आज के लिए सोनिया को मिल सकती है ?"

"मेरी कार ले जाइए।"

"आपकी कार तो मैं ले जाऊंगा," मेजर ने कहा, "सोनिया को एक अलग कार में जाना होगा।"

"क्या आप सोनिया को कोई खतरनाक काम सौंप रहे हैं ?"

"खतरनाक तो नहीं, लेकिन खतरनाक बन सकता है।" मेजर ने कहा।

"क्या मैं सोनिया के साथ नहीं जा सकता ? सोनिया इस शहर की गलियों और बाजारों से परिचित नहीं है। मैं एक अच्छे गाइड का कर्तव्य पूरा कर सकूंगा।" विनोद ने अपनी सेवाएं प्रस्तुत कीं।

"मुझे कोई आपत्ति नहीं, आप भी तैयार हो जाइए।"

विनोद ने पूछा, "क्या किसी का पीछा करना होगा ?"

"एक मकान की निगरानी करनी होगी, और उस मकान से निकलने वाले आदमी का पीछा करना होगा।"

"वह मकान शायद प्रकाश आश्रम है ?"

"हां, मैं वहीं जा रहा हूं। मैंने वहां किसी को मिलने का समय दे रखा है। मैं वहां केवल पन्द्रह-बीस मिनट ठहरूंगा। अगर मुझे देर हो जाए तो परेशान होने की जरूरत नहीं। उस मकान से अगर चन्दन निकले तो उसका पीछा न कीजिएगा। चन्दन के सिवा जो भी आदमी बाहर आये उसका पीछा जरूर किया जाए। उसके ठिकाने का पता लगाना बहुत जरूरी है।" इसके बाद मेजर ने सोनिया से कहा, "सोनिया, तुम अपनी ट्रांसमीटर घड़ी भी अपने पास रख लेना।"

शाम के धुंधलके में दो कारें प्रकाश आश्रम की ओर जा रही थीं। उनके बीच काफी फासला था। मेजर की कार काफी आगे थी। मेजर ने सोनिया को आदेश दिया था कि जब वह प्रकाश आश्रम के अहाते में पहुंच जाए, तो सोनिया अपनी कार प्रकाश आश्रम के बाहर पास की झाड़ियों में ले जाए।

प्रकाश आश्रम में केवल एक बत्ती जल रही थी। मेजर की कार की आवाज सुनकर किसी ने बाहर की बत्ती भी जला दी। मेजर ने अपनी कार पोर्टिको में रोकी तो उसने देखा कि सामने का दरवाजा खुला और उसमें से रोहिणी बरामदे में आई। उसने सफेद नाइलोन का गाउन पहन रखा था। गाउन के नीचे कोई भी कपड़ा न था बत्ती की रोशनी में नाइलोन के नीचे रोहिणी का बदन अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ झलक रहा था। उसके होंठों पर एक अर्थ-भरी मुस्कान थी।

"आप समय के बड़े पाबन्द हैं मेजर साहब!" रोहिणी बोली।

मेजर ने कार का दरवाजा खोलकर बाहर निकलते हुए कहा, "समय संसार की सबसे मूल्यवान चीज है। इसके मूल्य और महत्व को पहचानना हर व्यक्ति का कर्तव्य है।"

"आइए।"

रोहिणी मेजर को बेडरूम में ले गई। मेज पर ह्विस्की की बोतल रखी थी जो थोड़ी-सी खाली थी। प्लेट में भुना हुआ गोश्त रखा था। पास ही शीशे के दो सुन्द गिलास रखे हुए थे। रोहिणी ने मेजर को सोफे पर बैठने का संकेत किया और फि मेजर के सामने बैठकर गिलासों में ह्विस्की उंड़ेलने लगी। वह इस अंदाज से बैठी थ कि उसके गाउन का निचला हिस्सा आधा खुल गया था और उसकी सुन्दर और दमकती हुई जांघ ऊपर तक अनावृत हो गई थी।

रोहिणी ने सलीके से ह्विस्की के दो पेग बनाए और एक गिलास अपनी गुलाबी हथेली पर रखकर मेजर की ओर बढ़ा दिया। मेजर हैरान था कि उससे पूछे बिना उसे ह्विस्की पेश कर दी गई थी। मेजर ने अपने उद्देश्य को देखते हुए इन्कार नहीं किया। उसने गिलास ले लिया और अपना गिलास रोहिणी के गिलास से टकराते हुए कहा, "चीयर्स।"

रोहिणी ने अपना गिलास होंठों से लगाया और उसे खाली करके मेज पर रख दिया। मेजर धीरे-धीरे ह्विस्की पी रहा था। रोहिणी ने अपने गिलास में ह्विस्की उड़ेली, उसमें बर्फ डाली और सोडे की फ्लास्क उठाकर अपना गिलास लबालब भर लिया। वह अपना गिलास आधा खाली कर चुकी तो उसने कराहकर गिलास मेज पर रख दिया और बल खाने लगी। उसने आंखें मूंद लीं और अपने चेहरे को सिकोड़ने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे उसकी कोई नस चढ़ गई हो। उसने अपनी दाहिनी बांह मेजर की ओर फैला दी और बहुत अधिक दर्द महसूस करते हुए बोली, "चुटकी··· चुटकी···!"

मेजर रोहिणी का मतलब नहीं समझा। अचानक उसने रोहिणी की बांह को ध्यान से देखा। उस पर दो-तीन गहरे दाग थे। उन दागों को देखकर मेजर मुस्कराया और रोहिणी का मतलब समझ गया। उसने रोहिणी की बांह के दाग पर अपनी दो उंगलियों से चुटकी भर ली।

"और जोर से···!" रोहिणी बोली।

मेजर ने और जोर से चुटकी भरी।

"और ज़ोर से!" रोहिणी ने कहा। इस बार ऐसा लग रहा था जैसे उसे आनन्द मिल रहा है।

मेजर ने पूरा जोर लगाकर चुटकी भरी तो रोहिणी के मुंह से निकला,

"आह !" यह आह भी आनन्द में डूबी हुई थी। उसने बल खाना छोड़ दिया और आंखें खोल दीं। उसकी बांह पर मेजर की चुटकी का गहरा निशान बन गया था। रोहिणी उस निशान को अपने होंठों से लगाकर चूसने लगी, और तब तक चूसती रही जब तक वह थक न गई। साथ ही उसके होठों से अजीब-अजीब तरह की आवाजें भी निकलती रहीं। मेजर यह दृश्य देखता रहा और सोच में डूबा चुपचाप बैठा रहा।

"क्षमा कीजिएगा, मेरी इस हरकत का बुरा न मानिएगा। मुझपर दो तरह के दौरे पड़ते हैं। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरे अन्दर मेरी नसों की रस्सी बटी जा रही हो। चुटकी काटने से यह दौरा दूर हो जाता है, और मुझे चुटकी की टीस दूर करने के लिए उस जगह को चूसना पड़ता है जहां चुटकी भरी जाती है। मेरी बांहों पर ये चुटकी के निशान हैं। यह दौरा अक्सर रात को पड़ता है।"

"और दूसरा दौरा ?" मेजर ने दिलचस्पी लेते हुए पूछा।

"दूसरा दौरा इससे भी अधिक विचित्र और भयानक है। मेरी पीठ पर दीमक-सी रेंगने लगती है। यह दीमक अपने पंजों से मेरी पीठ कुरेदने लगती है।" रोहिणी ने कहा और मेजर के गिलास की ओर देखते हुए बोली, "आपने तो अभी पहला पेग ही खत्म नहीं किया !" और फिर उसने अपना गिलास उठाया और खाली कर दिया। मेजर ने भी उसका साथ दिया और गिलास खाली कर दिया। रोहिणी ने अपने और ोजर के गिलासों में ह्विस्की उड़ेली। मेजर के गिलास में इस बार ह्विस्की ाधिक थी।

मेजर ने धीरे-धीरे ह्विस्की पीनी शुरू कर दी। "अब मैं पहला प्रश्न तो यह ूंगा कि आपपर ये दौरे कब से पड़ रहे हैं ?"

"शादी के एक साल बाद से शुरू हुए थे और अब तक चले आ रहे हैं।" मेजर ने कहा जैसे उसे इसी उत्तर की आशा थी।

"क्या आपको पति से सचमुच प्रेम था ?" उसने प्रश्न किया।

रोहिणी ने कनखियों से मेजर की ओर देखा जैसे वह यह जानने की कोशिश कर रही हो कि इस प्रश्न से मेजर का अभिप्राय क्या है। कुछ मिनट चुप रहने के बाद उसने मुस्कराते हुए कहा, "अपने विवाहित जीवन के आरम्भिक दिनों में मैं अपने पति को निष्ठुर और कसाई समझा करती थी। लेकिन फिर उनके प्यार में ऐसी खोई कि उनका वियोग मेरे लिए प्राणघातक हो जाता था। उनका चार-पांच दिन बाहर रहना मुझे बुरी तरह अखरने लगता था। वे पास न होते तो मेरा मन ही नहीं समूचा तन भी उन्हीं को पुकारता रहता।"

"खूब !" मेजर के मुंह से निकला।

रोहिणी जरा संभली और उसने अपनी गर्दन को बड़े मादक रूप से हिला हुए कहा, "आप शायद मेरी बात समझ रहे हैं ?"

"बहुत अच्छी तरह समझ रहा हूं। मैं जानता हूं कि आपके पति किस तरह के इन्सान थे।"

मेजर ने अपनी बात हालांकि खुलकर नहीं कही थी, लेकिन रोहिणी जा गई कि उसके पति का भेद मेजर से छिपा नहीं है।

"आप जैसे कुशाग्रबुद्धि और बुद्धिमान व्यक्ति मैंने बहुत कम देखे हैं, और प्रसन्न हूं कि आपने मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की और मुझसे मिलने चले आये।"

मेजर भी जान गया था कि उसने इशारे में जो बात कही थी उसे रोहि समझ गई थी। वह अपनी इस सफलता पर बहुत प्रसन्न हुआ और इस प्रसन्नता उसने ह्विस्की से भरा अपना गिलास उठाया और एक ही सांस में खाली कर दिय उसने आंख झपकते ही मेजर का गिलास फिर भर दिया। मेजर की आंखों में ला

के डोरे उभर आये थे। रोहिणी मेजर को अब पहले से भी अधिक सुन्दर दिखाई देने लगी थी। वह बहुत समझदार थी, वह तुरन्त ताड़ गई कि मेजर आनन्द और मस्ती की किस मंजिल में है। उसने तेजी से अपना गिलास खाली किया और उसे फिर भर दिया। जब वह ह्विस्की का चौथा पेग पी चुकी तो उसका सारा बदन कांपने लगा। वह अपने दोनों हाथों के नखूनों से जोर-जोर से अपनी पीठ खुजाने लगी थी। पीठ पर अपने हाथ पहुंचाने के लिए वह अनोखे ढंग से पहलू बदल रही थी। नाइलोन पर उसके नाखून शायद उसकी पीठ को अच्छी तरह खुजा नहीं पा रहे थे। उसने अपना गाउन अपनी नाभि तक उतार दिया। मेजर अपनी आंखें झपकाने लगा। रोहिणी का मरमरी सीना अनावृत हो गया था। रोहिणी मशीन की तरह अपनी पीठ खुजाने लगी। उसने अपनी आंखें मूंद लीं और बोली, "कमची-कमची!"

रोहिणी ने उस सोफे की ओर इशारा किया जिस पर मेजर बैठा था। मेजर ने सोफे के नीचे झांककर देखा। वहां पतली झाड़ू जैसी एक कमची पड़ी थी जो विशेष रूप से बनवाई गई थी। मेजर समझ गया कि वह कमची किस लिए बनवाई गई है। उसने कमची उठाई। रोहिणी ने अपनी पीठ मेजर की ओर घुमा दी। मेजर ने देखा रोहिणी की पीठ पर खराशों के निशान थे। लेकिन ये खराशें उसकी पीठ के नीचे और कूल्हों से जरा ऊपर थीं।

मेजर मुस्कराया। उसके अनुमान सही निकल रहे थे। वह धीरे-धीरे रोहिणी की पीठ पर कमची मारने लगा।

"जोर से!" रोहिणी ने अपनी पीठ खुजानी वन्द कर दी।

उसने जोर-जोर से कमची मारनी शुरू कर दी थी। पहले रोहिणी दबी जबान से सिसकती रही। फिर उसने कैराहना शुरू कर दिया। उसकी आंखें लाल पड़ गयीं, चेहरा सुर्ख हो गया और वह औंधी लेट गई। उसने अपनी टांगें फैला दीं। उसकी वांहें ढीली पड़ गयीं, और मस्ती से आंखें अधमुंदी हो गयीं। कुछ देर बाद उसने करवट बदली और मेजर की ओर याचना-भरी निगाहों से देखने लगी। उसने अपनी वांहें फैला दीं। मेजर पर किसी ने जैसे जादू कर दिया। वह उठा और रोहिणी की बांहों में जा गिरा। उसे तुरन्त होश आ गया, और वह उससे अलग हो गया।

रोहिणी ने भूखी शेरनी की तरह बिफरकर कहा, "क्या आप भी...क्या आप भी मुझे प्यासा रखेंगे? क्या आप भी पुरानी रूढ़ियों को मानते हैं? क्या आप आज के इन्सान की तरह आज के तकाजों को नहीं समझते? मैं जानती थी। मुझे मालूम था कि मेरे अरमानों को मेरा कोई भी देशवासी पूरा न कर सकेगा। मेरा देश मुझे प्यासा रखेगा। यही कारण है कि मुझे एक विदेशी के सामने हाथ फैलाना पड़ा।"

"क्या मतलव?"

"अब मुझे किसी बात की चिन्ता नहीं, कोई परवाह नहीं। मैं आपसे खुलकर बात करूंगी। मेरे पति ने मुझे ऐसे रास्ते पर डाल दिया जिसे वासना का रास्ता कहा जाता है। मेरा बदन पीड़ा और चोट सहने का अभ्यस्त हो गया। वे पांच दिन बाहर रहते तो मेरे बदन की प्यास और चाहत और भी बढ़ जाती। संतुष्टि न होने पर मैं हर समय एक बेचैनी महसूस करती। मैंने अपनी प्यास बुझाने के रास्ते तलाश किए। लेकिन मुझे अपनों ने सहारा न दिया, एक वेगाने ने दिया, एक विदेशी ने दिया जो ट्रैक्टरों की एक फर्म का मालिक है।"

"ओह!" मेजर के मुंह से निकला, "इसके मानी तो यह हुए कि प्रभात मुखर्जी की खोज बिल्कुल ठीक है। होटल नटराज के बैरे का बयान बिल्कुल सही था कि उसने आपको एक विदेशी के साथ देखा था और उस दिन आपने सिनेमा शो नहीं देखा था?"

"सिनेमा देखने का तो एक बहाना था। मैं हफ्ते में चार-पांच दिन विदेशी के पास जाया करती थी। मुखर्जी की खोजबीन ठीक है कि उस दिन मैं एक विदेशी के साथ घूमती रही थी, लेकिन यह गलत है कि मैंने उस विदेशी की सहायता से अपने पति की हत्या की। होटल नटराज में खाना खाने के बाद मैं उस विदेशी के बंगले पर गई। वहां दो घण्टे तक रही। फिर अपने भाई के यहां चली गई।"

"तो आपके इस मकान के गैरेज में विदेशी सिगरेटों के टुकड़े और विदेशी जूते की एड़ी के निशान क्यों मिले?"

"मैं भला क्या उत्तर दे सकती हूं! यह काम आपका है।"

"आपने मुखर्जी के सामने इन बातों से इनकार क्यों कर दिया?"

"आप ही बताइए कि क्या मैं उनके सामने अपनी इस प्यास और चाहत की चर्चा कर सकती थी?"

मेजर निरुत्तर हो गया। वह कोई दूसरा प्रश्न करना चाहता था कि उसके हाथ पर बंधी ट्रांसमीटर घड़ी में सरसराहट होने लगी। मेजर ने उस घड़ी में रिसीवर लगाकर सोनिया का संदेश सुनने की आवश्यकता अनुभव नहीं की। वह समझ गया कि सोनिया किसी संकट में है। वह तेजी से उठा, रोहिणी से विदा ली और बाहर निकल गया। उसने अपनी कार का दरवाजा खोला और ड्राईविंग सीट पर बैठ गया और इंजन स्टार्ट कर दिया। प्रकाश आश्रम के फाटक से निकलकर वह उन झाड़ियों की ओर बढ़ा जहां उसने सोनिया को इन्तजार करने के लिए कहा था। उसे अंधेरे में विनोद की कार दिखाई दी। उसने अपनी कार रोक दी और रिवाल्वर निकालकर विनोद की कार के पास पहुंचा जिसमें अंधेरा था। विनोद ड्राइविंग सीट पर सोया पड़ा था। मेजर ने विनोद की कार की भीतरी लाइट ऑन की तो अचानक उसकी नाक ने एक तेज गंध महसूस की। वह फौरन पीछे हट गया। किसी ने क्लोरोफार्म सुंघाकर उसे बेहोश कर दिया था।

मेजर का माथा ठनका। बहुत सम्भव है कि सोनिया को भी बेहोश कर दिया गया हो और फिर दुश्मन उसे उठा ले गया हो। एक मिनट के लिए उसके हाथ-पांव सुन्न हो गये। लेकिन वह तुरन्त ही संभल गया। उसके दिमाग ने तेजी से काम करना शुरू कर दिया विनोद की कार में क्लोरोफार्म की गंध बहुत तेज थी जिसका मतलब था कि दुश्मन कुछ मिनट पहले वहां था। वह ज्यादा दूर नहीं गया होगा। मेजर की आंखें अब अंधेरे की अभ्यस्त हो गई थीं। उसने दो सौ गज की दूरी पर झाड़ियां हिलती हुई देखीं। वह तेजी से उधर बढ़ा और झाड़ियों के कांटे से बचता हुआ उस दिशा में दौड़ने लगा। जब वह उन हिलती हुई झाड़ियों के पास पहुंचा तो उसने एक ऐसी आवाज सुनी जो जमीन पर किसी भारी चीज को घसीटने से पैदा होती है।

मेजर झाड़ियों में गोली चलाने से डर रहा था। अगर दुश्मन सोनिया को घसीटकर ले जा रहा था तो गोली सोनिया को भी लग सकती थी। मेजर को एक तरकीब सूझी। उसने झाड़ियों के ऊपर निशाना बांधकर गोली चला दी। झाड़ियां हिलना बन्द हो गयीं। दूसरे ही पल झाड़ियों की ओर से एक फायर हुआ। मेजर फौरन धरती पर औंधा गिर पड़ा। दुश्मन का वार खाली गया। मेजर ने औंधे मुंह लेटे हुए फिर झाड़ियों के ऊपर गोली चलाई। अब उसे भागते हुए कदमों की आहट सुनाई दी। मेजर झाड़ियों में झुककर दौड़ने लगा। तभी उसके पांव किसी चीज से टकराये। वह मुस्कराया। उसकी बांछें खिल गयीं। वह उस बदन और उस बदन की गंध से भली भांति परिचित था। वह सोनिया के ऊपर जा गिरा था। सोनिया के बदन को गर्म देखकर उसे और भी खुशी हुई। सोनिया जीवित थी लेकिन बेहोश थी। उसे भी क्लोरोफार्म सुंघाया

गया था।

मेजर का दिमाग और तेजी से काम करने लगा। वह सोच रहा था कि अगर सोनिया को बेहोश कर दिया गया था तो उसकी ट्रांसमीटर घड़ी का मीटर किसने चलाया? इस प्रश्न का उत्तर वह खोज नहीं सका। यह सोचने का समय भी न था। उसने दूर झाड़ियों को हिलते हुए देखा। अब कोई खतरा न था। उसने एक साथ दो फायर किए। उसकी गोलियां शायद झाड़ियों की शाखों से जाकर टकराई थीं। दुश्मन अब भी दौड़ा चला जा रहा था। अब झाड़ियां हिलना बंद हो गई थीं। मेजर को अपने पीछे कुछ लोगों का शोर सुनाई दे रहा था जो गोलियों की आवाजें सुनकर इधर आ रहे थे।

जब मेजर के सामने की झाड़ियां हिलना बन्द हो गईं तो वह समझ गया कि दुश्मन झाड़ियों की हद पार कर चुका है। उसने तेजी से दौड़ना शुरू कर दिया। उसने भी झाड़ियों की हद पार कर ली। उसे दो साये दिखाई दिए जो एक कार में बैठ रहे थे। मेजर के रिवाल्वर में केवल दो गोलियां रह गई थीं। उसने निशाना बांधकर गोलियां चलाईं। लेकिन दोनों साये कार में बैठ चुके थे और कार भी बहुत दूर थी। उसकी गोलियां वहां तक नहीं पहुंच पाईं। वह उनके चेहरे भी न देख सका।

जब मेजर सोनिया को कंधे पर उठाए हुए वापस अपनी कार के पास पहुंचा तो उसकी कार के चारों ओर काफी लोग जमा थे। उन्होंने मेजर से एक साथ कई सवाल कर डाले। मेजर चुप रहा। उसने अपनी कार की पिछली सीट पर सोनिया को लिटा दिया और फिर विनोद को उसकी कार की ड्राइविंग सीट पर से उठाकर अपनी कार की अगली सीट पर बैठा दिया और उसका सिर सीट की बैक पर टिका दिया। जब मेजर ने अपनी कार का इंजन स्टार्ट किया तो कुछ लोगों ने कार के आगे खड़े होकर उसे रोकने की कोशिश की। मेजर ने फौरन विनोद की जेब में हाथ डालकर उसका रिवाल्वर निकाल लिया और एक हवाई फायर किया। भीड़ तितर-बितर हो गई।

विनोद के माता-पिता ने जब सोनिया और विनोद को बेहोशी की हालत में देखा तो वे दोनों अपना सिर धुनने लगे। मेजर ने उन्हें तसल्ली दी, मगर उनको फिर भी चैन न आया। विनोद के पिता ने डाक्टर को फोन किया।

डाक्टर आया तो मेजर और उसके बीच कुछ बातें हुईं। डाक्टर ने दोनों की जांच करने के बाद घोषित किया कि उन्हें कोई खतरा नहीं है, तब विनोद के माता-पिता की जान में जान आई।

मेजर अपने कमरे में आकर आज की घटना पर विचार करने लगा। वे आक्रमणकारी कौन थे? दुश्मन क्लोरोफार्म इस्तेमाल कर रहा है। दुश्मन ने रोमा को भी इसी तरह बेहोश किया था और उससे चार हीरे छीन लिये थे। क्या प्रकाश आश्रम के पास दुश्मन पहले से छिपा हुआ था? सोनिया और विनोद इतने असावधान क्यों हो गये थे? उनको दुश्मन के आक्रमण का पता क्यों नहीं चला? और फिर मेजर अपनी ट्रांसमीटर घड़ी की सरसराहट के बारे में सोचने लगा। इस सरसराहट का मतलब था कि सोनिया असावधान नहीं थी। सोनिया और विनोद दोनों के पास उनके रिवाल्वर थे। उन्होंने अपने-अपने रिवाल्वर क्यों न इस्तेमाल किए? शायद दुश्मन ने उनको रिवाल्वर इस्तेमाल करने का मौका नहीं दिया होगा!

तीन हीरे

रात काफी हो चुकी थी। पीपल के पेड़ के पीछे एक दोमंजिला मकान था। मकान की छत पर एक साया दिखाई दे रहा था।

उसने बहुत धीरे से एक कमरे के दरवाजे पर दस्तक दी। कमरे का दरवाजा फौरन खुल गया। शायद उस कमरे में कोई आदमी पहले से ही उसका इन्तजार कर रहा था। वह दरवाजे में आया। दोनों साये कमरे के अन्दर चले गए और दरवाजा फिर बन्द हो गया।

लगभग बीस मिनट तक चारों ओर खामोशी छाई रही और फिर उस मकान के दो-तीन कमरों की बत्तियां अचानक जल उठीं। कुछ मिनट बाद औरतों की चीखें गूंज उठीं जो रोने-पीटने में बदल गईं। भगदड़-सी मच गई।

वह दोमंजिला मकान नवलकिशोर का था।

उस मकान के दो कमरे लोगों से भर गए थे। एक कमरा ऊपरी मंजिल पर था और दूसरा नीचे की मंजिल पर। ऊपरी मंजिल पर दो औरतें प्रभा को पंखा करके होश में लाने की कोशिश कर रही थीं। उसका ब्लाउज फटा हुआ था। उसके सीने पर नाखूनों की गहरी खराशें थीं जिनसे खून रिस रहा था। उसकी गर्दन पर नाखूनों का एक गहरा घाव था। उसके सिर पर एक गूमड़ उभर आया था। उसके गाल फूले हुए और सूजे हुए थे और नीले पड़ने शुरू हो गए थे। डाक्टर को फोन कर दिया गया था।

नीचे की मंजल के कमरे में नवलकिशोर को कुछ लोग घेरे हुए थे, जो चित लेटी रोमा की नब्ज टटोल रहा था। लोग कानाफूसी कर रहे थे कि रोमा जीवित नहीं है, मर चुकी है।

रोमा का ब्लाउज भी फटा हुआ था। उसके कुंवारे सीने पर नाखून की खराशों के कई निशान थे। उन खराशों में बहुत खून जमा हुआ था। रोमा के गले पर दो गहरे गढ़े थे। ये गढ़े ही उसकी मृत्यु के कारण बन गये थे। नवलकिशोर ने रोमा की छोड़ दी।

एक आदमी ने पुलिस को फोन कर दिया। पुलिस इन्स्पेक्टर रामानन्द नेगी अपने अमले के साथ यहां पहुंचा। सब लोगों को उन कमरों से निकाल दिया गया। पहले जो डाक्टर वहां आया था वह प्रभा को होश में लाने में सफल हो गया था, लेकिन वह अभी बोलने के योग्य नहीं हुई थी।

नवलकिशोर ने कमरे में आकर इन्स्पेक्टर त्यागी को फोन किया, क्योंकि वह जानता था कि रोमा की हत्या सत्यप्रकाश की हत्या से सम्बन्धित है। आधे घंटे के बाद इन्स्पेक्टर त्यागी और प्रभात मुखर्जी भी अपने अमले के साथ वहां पहुंच गए।

प्रभात मुखर्जी ने तेजी से अपनी कार्रवाई आरम्भ कर दी। रोमा की लाश को जब पलटकर देखा गया तो उसके नीचे एक हीरा निकला—कांच की गोली के बराबर बड़ा हीरा। वह रोमा की लाश का पैनी नजरों से मुआयना करने लगा। उसने देखा कि रोमा ने आक्रमणकारी का डटकर मुकाबला किया था। उसे रोमा के फटे हुए हल्के सब्ज रंग के ब्लाउज के नीचे किरमिजी रंग के कपड़े का किनारा दिखाई दिया। उसने रोमा के ब्लाउज में हाथ डाल दिया, और हाथ जब बाहर निकला तो उसमें किरमिजी रंग की एक छोटी-सी थैली थी। वह थैली को उलट-पलटकर देखता रहा। उसे यह ख्याल आया कि उस छोटी-सी थैली में एक से अधिक हीरे थे, जिनमें से एक हीरा थैली से बाहर गिरा पड़ा होगा और रोमा उस पर चित लेट गई होगी, उस अन्तिम हीरे को बचाने के लिए और यह हीरा ही उसकी मृत्यु का कारण बन गया।

एक घंटे के बाद मेजर नवलकिशोर के घर पहुंच गया। पुलिस का डाक्टर अपनी रिपोर्ट सुना रहा था। वह कह रहा था, "मिस रोमा की मृत्यु गला घोंटने से हुई है, नाखून के घाव से नहीं, क्योंकि नाखून का घाव इतना गहरा नहीं है कि मृत्यु का कारण बन सकता। जिस किसी ने भी रोमा का गला दबाया उसके नाखून काफी लम्बे थे। और मैं अभी विश्वासपूर्वक तो नहीं कह सकता, लेकिन मेरा विचार है कि किसी ने अपनी उंगलियों पर धातु के तेज बनावटी नाखून चढ़ा रखे थे।"

मेजर डाक्टर की रिपोर्ट सुनता जा रहा था और रोमा की लाश का मुआयना भी करता जा रहा था। डाक्टर का अनुमान बिल्कुल ठीक था, बस इतना गलत था कि रोमा की मृत्यु गला घ[illegible]से हुई थी, जबकि रोमा को धातु के तेज नाखून ने ही मौत की नींद सुला दिया था।

उंगलियों के निशानों का विशेषज्ञ कहने लगा, "उंगलियों और पैरों का कोई निशान मुझे नहीं मिल सका। इस फर्श पर पैरों के बहुत-से निशान हैं, और वे निशान बाद में कमरे में आने वाले लोगों के हैं, आक्रमणकारियों के नहीं।"

प्रभात मुखर्जी ने मेजर को अपनी जांच-पड़ताल की रिपोर्ट सुनाई। उसने रोमा की पीठ के नीचे दबा हुआ हीरा और किरमिजी रंग के कपड़े की थैली भी मेजर को दिखाई।

उस हीरे को देखते ही मेजर की भवें तन गईं। उसने गुस्से से कहा, "दगा-बाज...मक्कार...धूर्त...झूठी...!"

मेजर ने उसे बताया मिस रोमा के पिता ने किस तरह चार हीरे मरने से पहले उसे दिये थे और कैसे रोमा ने एक कहानी गढ़ी थी कि वे हीरे उससे छीन लिए गए।

"आप यह कहना चाहते हैं कि वे चारों हीरे पिछली रात रोमा के पास थे, किसी ने वे हीरे छीने नहीं थे?" प्रभात मुखर्जी ने मेजर की कहानी सुनने के बाद कहा।

"जी हां। अब तीन हीरे रोमा से छीने जा चुके हैं। इन हीरों के कारण रोमा को अपनी जान से हाथ धोने पड़े।"

"सौतेले बाप की हत्या करने का एक उद्देश्य यह भी था कि उन चार कीमती हीरों को हथिया[illegible] जाये।"

"जब मिस रोमा के बयान के अनुसार उसके पिता ने अपनी इच्छा से वे हीरे दे दिये थे तो उनकी हत्या की क्या जरूरत थी?"

प्रभात मुखर्जी ने कुछ सोचते हुए कहा, "आप कहते हैं कि रोमा के पिता की हत्या के कारण ये हीरे हरगिज नहीं हो सकते थे, लेकिन एक प्रश्न अब भी हल करने के लिए शेष है कि दुश्मन को कैसे पता चला कि सत्यप्रकाश बम्बई से हीरे अपने साथ लाए थे और वे हीरे उन्होंने अपनी बेटी रोमा को दे दिए थे जो रोमा के पास थे?"

"मेरा विचार है कि दुश्मन बम्बई से ही सत्यप्रकाश का पीछा करता चला आ रहा था। उसे मालूम था कि वह हीरे बम्बई से बाहर ले जाए जा रहे हैं। वह उन हीरों को प्राप्त करने यहां आया। शायद इन्हीं हीरों के कारण सत्यप्रकाश की हत्या की गई। मेरा केवल एक अनुमान गलत सिद्ध हो रहा है। पहले मैं समझता था कि दुश्मन ने सत्यप्रकाश द्वारा उन हीरों को रोमा को देते हुए देख लिया था और उसने रोमा का पीछा किया था, लेकिन अब मैं समझता हूं कि दुश्मन को यह मालूम नहीं था कि सत्यप्रकाश उसके यहां पहुंचने के पहले ही हीरे रोमा को दे चुके हैं। यही कारण है कि सत्यप्रकाश की हत्या की गई, क्योंकि उन्होंने दुश्मन के आग्रह पर उसे बताया होगा कि हीरे उनके पास नहीं हैं। उसने सत्यप्रकाश को झूठा समझा होगा।

फिर उसने सत्यप्रकाश को हत्या की धमकी दी होगी। क्योंकि हीरे सचमुच सत्यप्रकाश के पास नहीं थे इसलिए हत्या की धमकी मिलने पर भी वे हीरे दुश्मन के हवाले नहीं कर पाए और दुश्मन ने उन्हें झूठा समझकर मार डाला। अब यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि दुश्मन हत्या करने के इरादे से नहीं आया था, क्योंकि उसके पास कोई हथियार नहीं था। हत्या के लिए जो चाकू इस्तेमाल किया गया वह पहले ही सत्यप्रकाश की मेज पर पड़ा था।"

"सत्यप्रकाश की हत्या कर देने के बाद दुश्मन ने हीरे ढूंढ़े होंगे। लेकिन हीरे उसके हाथ नहीं लगे। इस दोहरी असफलता से वह झल्ला उठा होगा। यानी हीरों के लिए उसने हत्या का अपराध किया, लेकिन हीरे से नहीं मिले। जब रोमा दोबारा वहां गई तो दुश्मन को यह वहम हुआ होगा कि हो न हो हीरे रोमा के पास हैं। यहां मैं एक बात और कहना चाहता हूं। मेरी राय है मिस रोमा अपने पिता के पास दोबारा पहुंचने से पहले घर गई होगी और हीरे घर में रखकर पिता के पास पहुंची होगी।"

"मिस रोमा की हत्या ने हमारी खोजबीन के रास्ते को बदल दिया है। अब संदिग्ध लोगों की लिस्ट सिमट गई है। इस लिस्ट में चन्दन, रोहिणी, उसका विदेशी मित्र और नकाबपोश रह गए हैं।" मेजर ने कहा।

मेजर सुबह पांच बजे घर लौटा। विनोद और सोनिया को होश आ चुका था।

मेजर बोला, "सारी कहानी आरम्भ से अंत तक सुनाओ।"

"जब आपकी मोटर प्रकाश आश्रम के बरामदे में जाकर रुकी तो मैं और विनोद कार में झाड़ियों के भीतर पहुंच चुके थे। रोहिणी बाहर आई तो हम दोनों उसे देखते रहे। आप जब रोहिणी के साथ मकान में चले गए तो विनोद ने कल्पना की बातें छेड़ दीं। हमारी नजरें प्रकाश आश्रम पर जमी रहीं। विनोद कल्पना की दिलचस्प बातें सुनाता रहा। मैं बड़े ध्यान से उसकी बातें सुन रही थी, मैं मन ही मन प्रसन्न थी कि स्त्री के सम्बन्ध में विनोद का विश्लेषण बहुत उचित था। ठीक उसी समय किसी ने विनोद के मुंह पर हाथ रख दिया। यह सौभाग्य था कि मैं पिछली सीट पर बैठी थी। मैं अपना पर्स खोलकर रिवाल्वर निकाल ही रही थी कि दूसरा हाथ मेरे मुंह पर पड़ा। मैंने रिवाल्वर को वहीं छोड़ दिया और अनुमान से ट्रांसमीटर घड़ी की सुई घुमा दी। मुझे विश्वास नहीं था कि मेरे अनुमान से सुई ठीक स्थान पर पहुंच पाएगी। वह तो थोड़ी देर पहले जब मैं विनोद के घर में अपने पलंग पर होश में आई, तो मुझे विश्वास हुआ कि सुई घुमाने का मेरा अनुमान ठीक था। हमें आप ही उठाकर लाए होंगे?" सोनिया ने कहा, "विनोद के मुंह पर जिस आदमी ने हाथ रखा था उसकी पीठ मेरी ओर थी। मुझे केवल एक बात विचित्र दिखाई दी। उस आदमी के कूल्हे बहुत चौड़े थे।"

मेजर ने कहा, "उस आदमी का लिबास कैसा था?"

"पतलून भूरे रंग की और सुर्ख ब्लेजर पहन रखा था।"

धमकी

सुबह ग्यारह बजे मेजर और सोनिया एक डाकखाने में खड़े थे। डाकखाने से सीधे नवलकिशोर के यहां पहुंचे। वहां उनकी भेंट प्रभात मुखर्जी से हुई।

दस मिनट बाद वे ऊपर की मंजिल के एक कमरे में प्रभादेवी के सामने

बैठे थे जो पलंग पर गावतकिए के सहारे अधलेटी बैठी हुई थी।

प्रभादेवी ने धीरे-धीरे अपनी कहानी आरम्भ की, "मैं अब सोचती हूं तो बहुत हैरान होती हूं कि किसने अन्दर से मेरे कमरे का बन्द दरवाजा खोला और कैसे खोला। मैं सोई पड़ी थी। मुझे तो तब होश आया जब मेरे सिर पर किसी ने लकड़ी के हथौड़े से चोट मारी। यह तो मेरा ही कलेजा था कि उस चोट को बर्दाश्त कर गई। मैं अपना सिर सहलाते हुए उससे लिपट गई। लेकिन अंधेरे में यह न देख पाई कि वह कौन था। मैं चीखकर अपने भाई को सहायता के लिए पुकारना चाहती थी कि हथौड़े की एक चोट मेरे गाल पर और दूसरी दोबारा मेरे सिर पर पड़ी। मेरी आंखों के आगे तारे नाचने लगे। इसके बाद आक्रमणकारी ने हथौड़ा मेरे दूसरे गाल पर मारा। मैं बेहोश हो गई।"

"ऐसा कौन-सा आदमी हो सकता है जो आप पर और आपकी बेटी पर आक्रमण कर सकता है?" प्रभात मुखर्जी ने पूछा।

"रोहिणी और उसके भाई के अतिरिक्त कोई नहीं।"

"क्या आपकी बेटी रोमा और आपके बीच अच्छे सम्बन्ध थे?"

"जी हां।"

"क्या रोमा ने आपको यह बताया था कि उसके पिता ने उसे मरने से पहले चार हीरे दिये थे?"

"रोमा को मेरे पति ने चार हीरे दिये थे?" प्रभा ने पूछा।

"और क्या आप जानती हैं कि उन चार हीरों की कीमत चार लाख रुपए थी?"

"नहीं, मैं नहीं जानती। रोमा ने मुझे यह बात नहीं बताई थी। क्या वे हीरे रोमा के संदूक से निकले हैं?"

"उन्हीं हीरों के लिए रोमा की हत्या की गई है। दुश्मन तीन हीरे ले गया है। चौथा हीरा रोमा की पीठ के नीचे दबा रह गया।" मेजर ने कहा, "पिछले दो-चार दिनों में क्या रोमा ने आपको कोई खास बात बताई थी? यानी क्या उसने आपको यह बताया था कि जिस रात आपके पति की हत्या की गई, वह आपके रिश्तेदार के यहां से कार में पिता से मिलने गई थी? क्या उसने आपको यह बताया था कि इसके पिता ने पहली बार मिलने पर उसे चार हीरे दिये थे, और जब उसी रात वह दोबारा उनसे मिलने गई तो उसने उन्हें मुर्दा पाया था?"

"उसने मुझे यह तो नहीं बताया कि मेरे पति ने उसे हीरे दिए थे, लेकिन कल सुबह उसने मुझे इतना जरूर बताया कि वह हत्या की रात अपने पिता से मिलने गई थी और उसने डर के कारण यह बात अब तक मुझे नहीं बताई थी।"

"रोमा को किस बात का डर था?"

"यह कल ही बताया एक टेलीग्राम आने पर। उस टेलीग्राम में रोमा को किसी ने धमकी दी थी।"

"क्या धमकी दी थी?"

"यही कि अगर उसने होंठ खोले तो वह अपनी मां को जिंदा न पाएगी। टेलीग्राम में जो कुछ लिखा था उसका सारांश यही था। वैसे टेलीग्राम का पूरा मैटर यह था—अगर अपनी मां की जिंदगी प्यारी है, तो खामोश रहना।"

"टेलीग्राम भेजने वाले का नाम क्या था?"

"शुभचिन्तक, वेलविशर।" प्रभा बोली, "मैंने जब वह टेलीग्राम रोमा के हाथ में दिया तो उसका रंग सफेद पड़ गया। सारा बदन कांप उठा। वह मुझे अपने कमरे में ले गई और उसने मुझे एक कागज दिया, जिस पर विचित्र स्याही से मोटे-मोटे

अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था। मैंने उसे पढ़ा तो वह एक धमकीभरा पत्र था।"

"क्या वह पत्र आपके पास है?"

"हां, आप वह अलमारी खोलिए, पाउडर के डिब्बे के नीचे वह कागज दबा रखा है।"

प्रभात मुखर्जी लपककर अलमारी के पास गया। उसने पाउडर के डिब्बे के नीचे से कागज निकाला और मेजर के पास ले आया। वह जले हुए कार्क से लिखा हुआ कागज़ था। प्रभात मुखर्जी उसे पढ़ने लगा:

"मिस रोमा,

तुम्हें किसी को यह नहीं बताना होगा कि तुमने क्या देखा है और तुम्हारा अनुमान क्या है। अगर तुमने अपने होंठ खोले तो तुम्हारी मां का भी वही हाल होगा जो तुम्हारे पिता का हुआ है। या फिर तुम्हें हमेशा-हमेशा के लिए बदसूरत बना दिया जाएगा।

—शुभचिन्तक"

"मेजर साहब, आपने कहा था कि हत्यारी औरत ने कागज पर कार्क जलाकर कुछ लिखा और वह उस संदेश को अपने साथ ले गई। क्या वह डाक के द्वारा उस संदेश को भेजना चाहती थी?"

"हां," मेजर ने कहा, "लेकिन जब उसने अपने साथी के साथ रोमा का पीछा किया और उन्हें हीरे नहीं मिले, तो उन्होंने अपने इस धमकी-भरे पत्र को रोमा के पर्स में डाल दिया होगा।"

"वह हीरा जो आक्रमणकारी नहीं ले जा सका, कहां है?" प्रभा ने पूछा।

"अभी तो वह पुलिस के पास ही रहेगा।" प्रभात मुखर्जी कुर्सी पर से उठते हुए बोला। और वह चला गया।

प्रभात मुखर्जी चला गया तो मेजर ने अपनी कुर्सी प्रभा के पास खिसका ली।

"आपके अपने पति से सम्बन्ध कैसे थे?" मेजर ने पूछा।

मेजर के इस प्रश्न पर प्रभा कुछ देर सोचती रही, फिर बोली, "हमें एक-से गहरा लगाव था।"

मेजर मुस्कराया और उसने झिझकते हुए पूछा, "क्या इस लगाव में आपकी आपके पति की किसी विशेष आदत का हाथ था?"

प्रभा ने उत्तर दिया, "उन्होंने अपनी आदत के कारण ही तो मुझे चुना था। मैं उनसे उम्र में बड़ी थी, फिर भी उन्होंने मुझसे शादी की। इस शादी में मेरे ससुर का भी हाथ था। मेरे ससुर मेरे पहले पति के मित्र और राज़दार थे। वे अपने बेटे की आदत से भी परिचित थे। मेरे ससुर अपने-आप को दोषी समझते थे।"

"क्यों?" मेजर ने पूछा।

"उनका विचार था कि उनके बेटों में जो आदतें हैं, उन्हीं के कारण उनके बेटों को उत्तराधिकार में मिली हैं। उन्हें यह भी मालूम था कि अगर उनके बेटों की वासनाओं को संतुष्टि न मिली तो वे शायद पागल हो जाएंगे। वह स्वयं पागल होते-होते बचे थे।"

"भाग्य ने उन्हें पागल होने से बचाया?"

"जी हां।" प्रभा ने कहा, "उन्हें एक विदेशी महिला मिल गई थी। वह स्त्री पुरुष के वेश में डाक्टर बनकर हफ्ते में चार दिन उनके पास आती है।"

"और उस स्त्री का नाम मिसेज रिचर्डसन है और डाक्टर के रूप में उसका नाम डाक्टर होफमैन है!" प्रभा चौंक पड़ी और हैरान हुई कि मेजर को इस रहस्य का कैसे पता चल गया।

मेजर ने उसे चुप देखा तो पूछा, "क्या मिसेज रिचर्डसन को भी कोई आदत

उसके माता-पिता से उत्तराधिकार में मिली हुई है ?"

"माता-पिता से नहीं, अपने पति रिचर्डसन से मिली थी जो मर चुका है।" प्रभा ने बताया।

"मिसेज रिचर्डसन तो शायद आपके ससुर की वासना की तृप्ति कर देती होगी, लेकिन क्या आपके ससुर उसकी वासना की संतुष्टि करने के योग्य हैं ?"

"नहीं, उसने अपनी संतुष्टि का प्रवन्ध कर रखा है। एक इंश्योरेन्स कम्पनी के विदेशी एकाउण्टैण्ट से उसकी मित्रता है।"

"आप मिसेज रिचर्डसन की राजदार मालूम होती हैं ?"

"क्योंकि मिसेज रिचर्डसन नियमित रूप से हमारे घर आती रहती है, इसलिए मेरी उससे काफी घनिष्ठता हो गई है।"

तीसरे पहर पांच वजे सोनिया मेजर के कमरे में पहुंची। वह अभी तक सो रहा था। वह दवे पांव मेजर के पास पहुंची और आहिस्ता से उसे जगाकर बोली, "रोहिणी आपको फोन पर बुला रही है।"

मेजर लपककर पहुंचा जहां फोन रखा था।

"आप कुछ मिनट के लिए यहां आ सकते हैं ? आपका यहां आना बहुत जरूरी है।"

और कुछ देर बाद मेजर प्रकाश आश्रम के ड्राइंग रूम में रोहिणी के सामने बैठा हुआ था। रोहिणी ने अपने ब्लाउज में से एक कागज निकाला। उसका रंग गुलावी था। वह टेलीग्राम था, जिसे रोहिणी ने मेजर की ओर बढ़ा दिया।

मेजर उसे पढ़ने लगा : "अगर तुमने अपने पति का कोई भेद खोला तो तुम्हारे भाई से ऐसा सलूक किया जाएगा कि तुम जीवन-भर पछताओगी। —शुभचिन्तक"

मेजर उस टेलीग्राम को उलट-पलटकर देखता रहा जिस पर कानपुर की मुहर थी। वह तार कानपुर से भेजा गया था।

"इसी से मिलता-जुलता धमकी-भरा टेलीग्राम मेरे भाई चन्दन को मिला है। उसमें कहा गया है कि अगर तुम्हारी वहन ने मुंह से एक भी शब्द निकाला तो तुम अपनी वहन को खोजते ही रह जाओगे।"

"आपने अपनी सुरक्षा के लिए क्या उपाय किया है ?"

"अगर आप मेरे वेडरूम का निरीक्षण करें तो आप देखेंगे कि उसके दरवाजे विशेष प्रकार के वने हुए हैं। सोते में भी मुझे किसी के आने का पता चल जाता है। मेरा मतलव है कि सोते में मुझ पर कोई आक्रमण नहीं कर सकता। जहां तक आक्रमण का सम्बन्ध है, कल रात किसी ने शायद मुझ पर आक्रमण करने की कोशिश की थी।"

"आक्रमण करने की कोशिश की थी ?"

"जी हां।" रोहिणी उठी और अलमारी के पास गई। वहां से उसने कुछ उठाया और मेजर के पास लौट आई। उसकी हथेली पर सिगरेट के तीन अधजले टुकड़े थे। वे टुकड़े लकी स्ट्राटिक सिगरेट के थे।

"मेजर साहव, सिगरेट के ये अधजले टुकड़े मुझे आज सुवह अपने गैरेज में मिले। कल कोई मुझ पर आक्रमण करने के लिए आया, लेकिन अपना इरादा वदलकर वापस चला गया। वह सिगरेट पीता रहा, और शायद यह सोचता रहा कि उसे आक्रमण करना चाहिए या नहीं। वह इसी उधेड़-वुन में डूवा रहा।"

"क्या मैं आपके गैरेज का मुआयना कर सकता हूं ?"

"क्यों नहीं !"

मेजर ने गैरेज का मुआयना किया तो उसे वहां एक विदेशी जूते की रवड़ एड़ी के निशान मिले। रेत पर एड़ी के निशानों में अंग्रेजी के कुछ अक्षर स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। मेजर की भवें तन गई जिसका आशय था कि वह तेजी से कुछ सोच रहा था।

"आपका विदेशी मित्र किस प्रकार के जूते पहनता है ?" मेजर ने पूछा, "क्या उन जूतों के पीछे रवड़ की एड़ियां लगी रहती हैं ?"

"नहीं। वह लकी स्ट्राटिक सिगरेट भी नहीं पीता। वह चारमीनार पीता है।"

"हूं," मेजर ने अपने माथे पर उंगलियां वजाते हुए कहा, "आप मेरे इस प्रश्न का उत्तर जरा सोच-समझकर दीजिएगा। आपको धमकी-भरा टेलीग्राम मिला है। ठीक ऐसा ही टेलीग्राम आपके भाई चन्दन को भी मिला है। इन दोनों टेलीग्रामों से साबित होता है कि आप जरूर किसी ऐसे रहस्य से परिचित हैं जिसके खुल जाने पर दुश्मन को नुकसान पहुंच सकता है। वह रहस्य क्या है ? और आपने अब तक मुझसे क्यों छिपा रखा है ?'

"इस बात से आप इनकार नहीं कर सकते कि इन्सान को अपनी जिन्दगी बहुत प्यारी होती है। मुझे भी अपनी जिन्दगी से प्यार है। मैं नहीं चाहती कि कोई सिर-फिरा पागल या जनूनी मेरे जीवन-सूत्र को काट फेंके। जिस रात मेरे पति की हत्या की गई, उस रात साढ़े आठ बजे मैं अपने विदेशी मित्र को अपने मकान पर लाई थी। मैं यहां पर यह बता दूं कि मुझे अपने पति से बहुत अधिक प्यार नहीं रहा था। हफ्ते में चार-पांच दिन के लिए उनकी अनुपस्थिति और मेरी मानसिक तथा शारीरिक भूख ने मुझे निडर बना दिया था। मेरे निकट सतीत्व और सच्चरित्रता के कोई अर्थ न रहे थे। मुझे मालूम था कि उस रात मेरे पति भी आने वाले हैं। मेरे मकान में बत्ती जल रही थी। मेरा माथा ठनका। मैंने अपने विदेशी मित्र से कहा कि वह अपनी कार में बैठा रहे। मैं अन्दर जाकर देखती हूं कि घर में कौन है। मैं उस कमरे में पहुंची जहां बत्ती जल रही थी। जब मैंने उस कमरे में पांव रखा तो ठिठककर रह गई। फर्श पर एक लड़की बेहोश पड़ी थी। सोलह-सत्रह वर्ष की लड़की। मैं उस लड़की को नहीं जानती थी। उसके आने का कारण भी मुझे मालूम नहीं था। फिर जब मैं मेज के पास पहुंची तो मैंने अपने पति को देखा। उन्हें देखते ही मैं समझ गई कि उन पर क्या बीती है। मैं कुछ देर मेज पर पड़ी चीजों को देखती रही। दूसरे दिन मुझे पता चला कि फर्श पर जो लड़की बेहोश पड़ी थी, वह रोमा थी, उस समय जब आप मेरे पति की शिनाख्त के लिए आए थे। मेरा सिर चकराने लगा, दिल बुरी तरह धड़कने लगा। जीवन में मैंने पहली बार हत्या की दुर्घटना देखी थी। डर से मेरे होश-हवास गुम हो गए। मैं उलटे पांव दरवाजे की ओर मुड़ी और दरवाजे से निकलकर तेजी से दौड़ने लगी और अपने विदेशी मित्र की कार में जा बैठी।

"मुझे परेशान और मेरे उड़े हुए होश देखकर वह बहुत परेशान हुआ। मैंने उसे कार ड्राइव करने का इशारा किया। मैं सीधी अपने भाई के घर पहुंची और उसका इन्तजार करने लगी। वह जब आया तो मुझे पता चला कि वह मेरे पति की दुर्घटना से परिचित है। मैंने उसे और उसने मुझे अपनी कहानी सुनाई। हम देर तक विचार करते रहे कि हमें अब क्या करना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि हत्या का अपराध हम पर ही थोप दिया जाए। दूसरे दिन रात को मुझे एक धमकी-भरा पत्र मिला जिसमें मुझे यही हिदायत की थी कि मैं अपने होंठ न खोलूं और पत्थर की मूर्ति की तरह खामोश रहूं। यही कारण है कि मैंने इस रहस्य से आपको परिचित नहीं कराया।"

मेजर सोचता रहा। रोहिणी के पास जो धमकी-भरा टेलीग्राम आया था उसकी भाषा और धमकी-भरा सन्देश भी वैसा ही था जैसा रोमा को मिले टेलीग्राम में था। दोनों को हिदायत की गई थी कि वे खामोश रहें और अपना मुंह न खोलें। इसका मतलब था कि दोनों को दुश्मनों का कोई महत्त्वपूर्ण भेद मालूम था। रोमा तो अब इस भेद पर से पर्दा उठा नहीं सकती थी। अब तो केवल रोहिणी रह गई थी जो दुश्मन के लिए खतरनाक साबित हो सकती थी। इसलिए रोहिणी की सुरक्षा आवश्यक थी। रोहिणी के द्वारा दुश्मन के लिए जाल बिछाने का काम लिया जा सकता था।

मेजर यह सोचकर मुस्कराया और बोला, "क्या दुश्मन आपसे केवल इस बात के लिए भयभीत है कि आपने रोमा को फर्श पर बेहोश पड़े देखा था?"

"लगता तो ऐसा ही है।" रोहिणी ने कहा।

"आज रात आपको आवश्यकता से अधिक सावधान रहना होगा। कल मैं आपकी सुरक्षा का प्रबन्ध कर दूंगा। मेरा असिस्टैण्ट अशोक कल सुबह तक बम्बई से यहां पहुंच जाएगा।"

"आप घबराइए नहीं। इस मकान में दुश्मन मुझ पर आक्रमण नहीं कर सकता।" रोहिणी ने बड़े विश्वास-भरे स्वर में कहा।

बुलावा

पौने घण्टे के बाद अशोक और सोनिया अपनी-अपनी जगह पर ड्यूटी दे रहे थे। दस मिनट के बाद उन्होंने एक लाल साइकिल पर पोस्टमैन को प्रकाश आश्रम के अहाते में जाते हुए देखा। वह कोई टेलीग्राम लाया था। रोहिणी ने साइकिल की घंटी की आवाज सुनी तो बाहर आ गई। वह सादे कपड़ों में थी। उसने दस्तखत करके टेलीग्राम ले लिया और उसे पढ़कर तेजी से अन्दर चली गई। दस मिनट के बाद वह बाहर आई। उसने कपड़े बदल लिए थे। उसके हाथ में एक पर्स था। उसकी भाव-भंगिमा से दिखाई दे रहा था कि वह बहुत परेशान है। वह तेजी से गैरेज की ओर बढ़ी, उसने वहां से अपने पति की कार निकाली, एक एक्सपर्ट ड्राइवर की तरह बैक की और तेजी से फाटक से बाहर निकल गई।

सोनिया पहले ही अपनी कार के स्टेयरिंग व्हील पर हाथ रखे बिल्कुल तैयार बैठी थी। उसने अपनी कार उसके पीछे लगा दी।

रोहिणी की कार फाटक से निकलकर जब सड़क पर पहुंची तो सोनिया ने चौराहे पर लगा एक बोर्ड पढ़ा जिसके चार बाजू थे। एक बाजू पर लिखा था लखनऊ, दूसरे पर लिखा था शाहजहांपुर, तीसरे पर लिखा था इलाहाबाद और चौथे पर लिखा था कानपुर। रोहिणी की कार कानपुर जाने वाली सड़क पर मुड़ गई।

सोनिया ने रोहिणी और अपनी कार के बीच एक उचित दूरी बनाए रखी और फिर अपनी ट्रांसमीटर घड़ी की चाबी घुमाकर एक विशेष मीटर पर सुई रोक दी।

मेजर विनोद और कल्पना को चुटकुले सुना रहा था। कल्पना अपनी गम्भीरता के बावजूद खिलखिलाकर हंस रही थी। अचानक मेजर की घड़ी में सरसराहट हुई। वह अपना नया चुटकला अधूरा छोड़कर अपने कमरे की ओर लपका। उसने अपने कमरे में जाकर कोट की जेब से गोल तार का हेड फोन निकाला और अपनी घड़ी की चाबी में उसे फंसाकर बोला, "हैलो—जेड—हैलो—जेड—एक्स दिस साइड।"

दूसरी ओर से आवाज आई, "हैलो एक्स—हैलो एक्स—जेड दिस एण्ड।"

"सोनिया, तुम कहां से बोल रही हो ?" मेजर ने पूछा।

"मैं कानपुर जाने वाली सड़क पर से बोल रही हूं। मैं इस समय रोहिणी का पीछा कर रही हूं। लखनऊ से केवल दस मील दूर पर हूं।" सोनिया ने कहा, "रोहिणी जिस अंदाज से कार चला रही है उससे पता चलता है कि वह बहुत घबराई हुई है।"

"तो मैं अभी आ रहा हूं सोनिया।" मेजर ने कहा, "मैं ट्रांसमीटर घड़ी पर अशोक को आदेश देता हूं कि वह भी क्रोकोडायल को लेकर कानपुर जाने वाली सड़क पर चल पड़े। मुझे आशा है कि मैं तुमसे जल्दी आ मिलूंगा।"

इसी बीच विनोद आकर मेजर के पास खड़ा हो गया।

"मैं भी आपके साथ चलूंगा।" विनोद ने कहा।

"लेकिन मैं आपके पिता जी से वायदा कर चुका हूं कि मैं अपने काम में आपको नहीं उलझाऊंगा। बुजुर्गों को नाराज करना अच्छा नहीं होता। अगर मैं आपको अपने साथ ले जाऊंगा तो उनकी नजरों में मेरी इज्जत जाती रहेगी और मेरा आपके घर में रहना कठिन हो जाएगा।"

"आप चिन्ता न कीजिए, जो कुछ होगा देखा जाएगा।" विनोद ने लापरवाही से कहा, "लेकिन इस अनजाने इलाके में आप सबको छोड़कर पिता जी की नाराजगी से डरकर मैं घर में नहीं बैठा रह सकता।"

मेजर की कार लखनऊ के गली-कूचों और बाजारों से निकलकर जब कानपुर जाने वाली सड़क पर पहुंची तो मेजर ने अपनी घड़ी की ओर देखा। वह सोनिया से ठीक चालीस मिनट बाद कानपुर की ओर जा रहा था। मेजर एक्सपर्ट ड्राइवर था। उसने पैंतीस मिनट में अशोक को पा लिया, जिसे उसने ट्रांसमीटर घड़ी पर सोनिया का पीछा करने का आदेश दिया था। पचास मिनट बाद उसकी कार सोनिया की कार के पास पहुंच गई। सोनिया की कार से लगभग आधे फर्लांग की दूरी पर रोहिणी की कार जा रही थी मेजर ने हाथ हिलाकर सोनिया को इशारा किया कि वह अपनी कार धीमी कर ले। फिर मेजर ने अपनी कार की स्पीड बढ़ाई और रोहिणी की कार के बराबर पहुंच गया। रोहिणी ने मेजर की ओर देखा तो उसका मुरझाया हुआ चेहरा फूल की तरह खिल गया। उसने अपना कार धीमी कर दी। मेजर ने भी ब्रेक लगा दिए और रोहिणी को इशारा किया कि वह उसके पीछे-पीछे चली आएं। एक जगह कानपुर जाने वाली बड़ी सड़क से बाईं ओर छोटी सड़क जाती थी। मेजर ने अपनी कार उस छोटी सड़क पर रोक दी। रोहिणी ने भी अपनी कार उस ओर घुमा दी।

और कारों का वह छोटा-सा काफिला उस छोटी सड़क पर कुछ दूर जाकर रुक गया। सब मोटरों से बाहर आ गए। क्रोकोडायल भी कार से कूदकर नीचे आ गया और मेजर के आसपास चक्कर काटने लगा। "आप कहां जा रही हैं ?" मेजर ने रोहिणी से पूछा।

"मैं कानपुर जा रही हूं।" रोहिणी ने कहा और उस दिशा में देखने लगी जिस ओर कुछ इमारतें दिखाई दे रही थीं।

"क्यों ? आप कानपुर क्यों जा रही हैं ?"

रोहिणी ने अपना पर्स खोला और उसमें से एक गुलाबी कागज निकाला और मेजर की ओर बढ़ा दिया। एक टेलीग्राम था।

मेजर टेलीग्राम पढ़ने लगा :

"मेरे साथ एक दुर्घटना हो गई है। फौरन चली आओ। अकेली

आना। किसी से कुछ न कहना। मैं कानपुर की नई बस्ती की गली नम्बर चार की एक कोठी में हूं जिसका नाम 'राजभवन' है। इस बंगले की सामने की दीवार पर चमकते पत्थरों से एक घोड़े की मूर्ति बनी हुई है। फौरन चली आओ। देर बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। —चन्दन"

मेजर ने टेलीग्राम वापस देते हुए कहा, "क्या आपने रवाना होने से पहले यह पता कर लिया था कि यह तार सचमुच सच्चा है?"

"जी हां। उनके दफ्तर से पता चला था कि वे लखनऊ में नहीं हैं।"

"क्या आपसे जिक्र किया था कि वे किसी परेशानी में फंसे हैं?"

"नहीं," रोहिणी ने उत्तर दिया, "मैं समझती हूं कि मेरा भाई किसी काम से कानपुर गया होगा और वहां दुश्मन से उसकी मुठभेड़ हो गई होगी।"

जब मेजर और रोहिणी की कार गली नम्बर चार की सड़क पर मुड़ी तो वे लोग अपनी कारें पार्क करने के लिए जगह ढूंढ़ने लगे।

राजभवन के भीतर मेजर और उसके साथी चन्दन को होश में लाने की कोशिश कर रहे थे। अधेड़ उम्र की एक मनचली औरत से न रहा गया। उसने बाहर खड़े लोगों से कहा कि वह अन्दर जाती है।

अधेड़ उम्र की औरत अपने कूल्हे मटकाती हुई उस कमरे में पहुंची।

मालिश करने पर लगभग दस मिनट बाद चन्दन ने कराहते हुए आखें खोल दीं। उसने आसपास परिचित चेहरे देखे तो उसका कराहना कुछ देर के लिए रुक गया।

सोनिया को एक आइने के नीचे एक कागज दबा हुआ दिखाई दिया। उसने आईने के नीचे दबा हुआ कागज निकाल लिया। सोनिया उसे पढ़ने लगी :

"मिसेज रोहिणी,

तुम्हारे भाई ने तुम्हें यहां अपने पास बुलाया था। तुमसे कहा गया था कि तुम अकेली आना। लेकिन तुम आईं तो अपने साथ पुलिसवालों की एक पल्टन लेकर। तुम्हारे भाई ने तुम्हें तार दिया था कि उसके साथ एक भयानक दुर्घटना हो गई है। तुम यहां पहुंचकर देखोगी कि सचमुच उसके साथ भयानक दुर्घटना हुई है। अपने भाई की इस हालत की जिम्मेदार तुम हो। अगर तुमने भविष्य में आदेश का पालन नहीं किया तो तुम्हारे भाई के साथ प्राणघातक दुर्घटना हो सकती है। —शुभचिन्तक"

मेजर ने कहा, "मैं चन्दन के गालों पर अनार के दानों जैसे निशान देखकर कह सकता हूं कि इन्हें जिस आदमी ने मारा-पीटा है उसकी एक उंगली में मोटी अंगूठी थी। ये निशान उसी मोटी अंगूठी के हैं।"

चन्दन ने हां में सिर हिला मेजर की बात की पुष्टि कर दी।

"और मेरा विचार है कि इन्हें धोखे से यहां बुलाया गया।" मेजर बोला, "शायद इन्हें भी टेलीग्राम दिया गया।"

चन्दन ने बड़ी कठिनता से अपनी पतलून की जेब की ओर इशारा किया। रोहिणी ने उसकी पतलून की दाहिनी जेब में हाथ डालकर एक गुलाबी कागज निकाला और मेजर की ओर बढ़ा दिया। मेजर उसे पढ़ने लगा :

"प्यारे भाई चन्दन,

मैं कानपुर में हूं। बहुत मुसीबत में फंसी हुई हूं। मुझे तुम्हारी सहायता की तुरन्त आवश्यकता है। तार मिलते ही फौरन चले आओ। मैं कानपुर की नई बस्ती की गली नम्बर चार के एक बंगले 'राजभवन' में मिलूंगी।

इस मकान के सामने वाली दीवार पर चमकते हुए पत्थरों का एक घ
बना हुआ है। तुम्हें इस बंगले को खोजने में परेशानी न होगी। अ
आना।
—रोहि

तीस मिनट के बाद उनकी कारें एक ऐसे स्थान पर पहुंच गईं जहां सड़
दोनों ओर घने जंगल थे।

तभी अचानक फायर की आवाज सुनाई दी और उसके साथ ही मेजर ने अ
कार के पहिए की हवा निकलने की आवाज सुनी। उसकी कार का अगला टायर पं
हो गया था। उसकी कार डोलने लगी और रुक गई। फिर दूसरी गोली की आ
आई। यह गोली अशोक ने पेड़ों पर चलाई थी। फौरन ही तीसरी गोली की आ
सुनाई दी। गोली मेजर की कार के दरवाजे में आकर लगी थी। अशोक ने भी अ
कार रोक ली। चौथी गोली चली। यह गोली सोनिया ने चलाई थी।

"कार से बाहर निकल जाओ।" मेजर ने ऊंची आवाज में अशोक को अ
दिया, "सोनिया, तुम भी कार से निकलकर उसकी आड़ में हो जाओ।" मेजर
अपनी कार का बायां दरवाजा खोलकर रोहिणी को कार से बाहर निकाल दि
पांचवीं गोली चली। यह गोली मेजर की कार के ऊपर से निकल गई। मेजर भी
दरवाजे से निकलकर रोहिणी के पीछे कार से निकल गया।

दो गोलियां और चलीं, जो कारों से टकराईं।

"मैंने बुलेट-प्रूफ जैकेट पहन रखी है।" अशोक बोला, "मैं दुश्मन की
जाता हूं।" यह कहकर अशोक सड़क से उतरकर उन पेड़ों की ओर चल पड़ा।

अशोक कुछ कदम आगे जाकर लेट गया और अपने रिवाल्वर से फायर क
लगा। इतने में सड़क पर दूर दो कारों की हेडलाइट दिखाई दी और साथ ही
के झुरमुट में से भागते हुए कदमों की आवाज आई। कुछ मिनट के बाद एक कार
इंजन स्टार्ट हुआ और फिर कार चलने की आवाज सुनाई दी।

"दुश्मन भाग रहा है।" मेजर ने कहा, "पेड़ों के झुरमुट के पास शायद
दूसरी सड़क भी है। हम उनका पीछा नहीं कर सकते।"

अशोक वापस आ गया तो मेजर ने कहा, "इस कार को एक किनारे लगा
मेरी मदद करो।" दोनों कार को धकेलकर सड़क के पीछे ले गए। चन्दन
उस कार से निकालकर अशोक की कार में लिटा दिया गया।

वे लोग विनोद की कार की प्रतीक्षा करने लगे। एक घण्टे बाद विनोद
कार दिखाई दी। विनोद उन लोगों को सड़क के किनारे इस तरह खड़े देखकर व
हैरान हुआ। जब उसे पता चला कि दुश्मन ने घात लगाकर उनपर हमला किया
तो उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया।

"यह बताइए कि आप क्या खबर लाए हैं?"

"वह मकान एक विदेशी ने किराए पर लिया था। नाम रोजालियो था।
इटली का रहने वाला बताता था और कहता था कि वह एक ऑयल कम्पनी में क
करता है और बंगलौर से ट्रांसफर होकर यहां आया है।"

वे लोग रात को डेढ़ बजे लखनऊ पहुंचे। मेजर ने विनोद के घर जाने
बजाय रोहिणी के घर जाने का निश्चय किया। थोड़ी-सी ह्विस्की पीने के
चन्दन के होश-हवास ठीक हुए, उसके बोलने की शक्ति भी लौट आई।

"आज सुबह छः बजे मुझे तार मिला। मैं तार पढ़कर हैरान हुआ, रोहि
पिछली रात तो लखनऊ में ही थी, फिर कानपुर कैसे पहुंच गई? मैंने फोन किया

रोहिणी के फोन की घंटी बजती रही लेकिन किसी ने रिसीवर नहीं उठाया। अ
इस तरह मुझे विश्वास हो गया, रोहिणी सचमुच कानपुर में है।, मैं कानपुर पहुं
नई बस्ती के मकान राजभवन में। उस मकान के दरवाजे पर खड़ी एक सुन्दर स्त्री
ने मेरा स्वागत किया। वह मुझे अन्दर ले गई। मैंने उससे दरवाजे पर ही पूछा।
रोहिणी कहां है। उसने उत्तर दिया, 'रोहिणी अन्दर आपका इन्तजार कर रही है।

"वह मेरी बांह में अपनी बांह डालकर मुझे अन्दर ले गई। मैंने ज्यों
कमरे में कदम रखा, किसी ने, जो शायद दरवाजे के पीछे छिपा खड़ा था, एक
मेरे गले में डाल दिया। वे मुझे अन्दर कमरे में ले गए और मुझे एक कुर्सी पर बै
दिया गया। मुझे कुर्सी पर टेप से इस तरह बांध दिया गया कि मेरे दोनों हाथ खु
रहे। लेकिन फंदा मेरे गले में ही पड़ा रहने दिया गया। मेरे सामने एक तिपाई र
दी गई। उस तिपाई पर टाइप किए हुए तीन कागज रखे थे, जो बीमा कम्पनी
नाम एक प्रार्थना-पत्र की प्रतिलिपियां थीं।"

"वह किस प्रकार का प्रार्थना-पत्र था?"

"वे मुझसे एक बयान लिखवाना चाहते थे कि चन्द्रप्रकाश उर्फ सत्यप्रकाश
अपने बीमे की रकम का उत्तराधिकारी मेरी बहन को बनाया है। मेरी बहन व
रकम लेना नहीं चाहती। वह चाहती है कि यह रकम उसके पति के छोटे भा
सुरेन्द्रप्रकाश की परित्यक्ता पत्नी चन्द्रलेखा को दे दी जाए, जिसके साथ उसके पति
ने घोर अन्याय किया था। मुझे अपनी बहन के इस निर्णय पर कोई आपत्ति नह
है। मेरा निवेदन है कि यह रकम चन्द्रलेखा को ही दे दी जाए।

"मैंने उन कागजों पर दस्तखत करने से इन्कार कर दिया तो उन्होंने मु
मारना-पीटना शुरू कर दिया। वे लगभग तीन घण्टे तक मुझे पीटते रहे। मैं दो बा
बेहोश हो गया। जब मुझे थोड़ा-सा भी होश आता, मुझसे कहा जाता कि अग
मैंने दस्तखत नहीं किए तो पीट-पीटकर मुझे जान से मार डाला जाएगा, मुझे कु
की मौत मरना पड़ेगा। मैं अपनी जिद पर अड़ा रहा। उन्होंने मुझे धमकी दी
मेरी बहन रोहिणी भी आ रही हैं। मैंने सोचा कि ये लोग मक्कार और जालसा
हैं। मुझे धोखा दे रहे हैं। मैंने दस्तखत करने से बिल्कुल इंकार कर दिया। ठीक उस
समय वह आदमी, जिसका नाम विनोद जी ने रोजालियो बताया था, बाहर गय
क्योंकि एक पड़ोसिन ने आकर कहा था कि उन्हें उसके फोन पर कोई बुला रहा है
रोजालियो जब फोन सुनकर आया तो बहुत ही परेशान और नाराज था। उस
आते ही मुझे बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। मैं बेहोश हो गया।"

मेजर ने एक बड़ा पेग बनाया और आधा पीने के बाद बहुत ही गम्भीर स्व
में रोहिणी से बोला, "मिसेज रोहिणी, जब आपने रोमा को बेहोश पाया तो आप
किसी दूसरे आदमी के भी वहां होने की आशंका हुई थी?"

"नहीं।"

"आपने कोई विचित्र बात नहीं देखी थी?"

"हां, एक बात तो मुझे सचमुच बहुत विचित्र मालूम हुई थी।" रोहिणी
अपने दिमाग पर जोर देते हुए कहा। "मेरा पति मेज़ के नीचे पड़ा हुआ था। मे
पर एक प्लेट रखी थी। उस प्लेट में बादामी रंग की मोमी दियासलाइयां पड़ी थीं।"

"किस प्रकार की दियासलाइयां थीं?"

"वह जो गत्ते के छोटे-से पैकेट में लगी रहती हैं। उस समय प्लेट में छः दिय
सलाइयां थीं।" मेजर रोहिणी की इस बात में गहरी दिलचस्पी लेते हुए बोला, "अ
वे दियासलाइयां किनारों पर से बहुत थोड़ी-सी जली हुई थीं?"

"जी हां।"

दूसरे दिन सुवह तड़के ही मेजर नवलकिशोर के यहां पहुंच गया। वह वीमा
नी के असिस्टैण्ट डायरेक्टर से मिलना चाहता था जो अपने साथ चन्द्रप्रकाश उर्फ
प्रकाश का वह पत्र लाया था जिसमें उसने अपनी वीमा पालिसी पर रोहिणी का
काटकर चन्द्रलेखा का नाम लिखने की हिदायत की थी।

वीमा कम्पनी का असिस्टैण्ट डायरेक्टर अधेड़ उम्र का हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति
उसका वदन सुडौल था। कद न अधिक लम्बा था, न अधिक छोटा। उसकी
भूरी थीं और आंखें नीली थीं जिन पर उसने गहरे रंग का चश्मा लगा रख
नवलकिशोर ने उससे मेजर का परिचय कराया, "यह मिस्टर गाल्जवर्थ हैं और
हैं मेजर वलवन्त, सुप्रसिद्ध जासूस।"

"मैं जानता हूं। हम दोनों वम्बई के रहने वाले हैं।" मिस्टर गाल्जवर्थ ने
र की ओर अपना दायां हाथ वढ़ाते हुए कहा।

"मैं आपको एक कष्ट देना चाहता हूं। क्या आप मुझे चन्द्रप्रकाश उर्फ सत्य-
का पत्र दिखा सकते हैं जिसमें उन्होंने वीमा पालसी पर नाम वदलने की
त की थी?"

"क्यों नहीं!" मिस्टर गाल्जवर्थ ने अपने शानदार कोट की जेव में हाथ डाल
एक पत्र निकालकर मेजर को दे दिया। जब वह मेजर को पत्र दे रहा था, तो
की निगाहें उसके हाथ पर टिकी हुई थीं। मेजर ने पत्र पर कानपुर की मोहर
पत्र पर चन्द्रप्रकाश की हत्या से एक दिन पहले की तारीख थी।

"क्या आपके विचार से यह पत्र चन्द्रप्रकाश उर्फ सत्यप्रकाश के हाथ का ही
हुआ है?"

"उन्हीं के हाथ का लिखा हुआ है। हमारे पास उनके दस्तखत के वहुत-से
हैं। यह दस्तखत उनसे विल्कुल मिलते हैं।"

अनोखी दियासलाइयां

पहर को ठीक ढाई वजे सारे मेहमान प्रकाश आश्रम में इकट्ठे हो गए
मेजर मेज के पास जा खड़ा हुआ और फिर उसने उपस्थित लोगों पर
एक निगाह डाली। उसने इत्मीनान की सांस ली। प्रत्येक व्यक्ति उसी
पर वैठा था जहां वह उसे वैठाना चाहता था।

मेजर ने ओजस्वी मुद्रा में अपनी कहानी आरम्भ करते हुए कहा, "चन्द्रप्रकाश
सत्यप्रकाश विचित्र भावनाओं का संग्रह था, उसे यह भावनाएं और आदतें अपने पिता
प्रकाश से उत्तराधिकार में मिली थीं। सेठ वेदप्रकाश एक सम्माननीय वुजुर्ग हैं
। उनकी एक आदत इतनी पक चुकी है कि वे हर लिहाज से नाकारा हो जा
ो उस आदत को नहीं छोड़ पाए हैं और उनकी वह आदत पहले से अधिक
हो गई है। उन्होंने एक सुन्दर स्त्री नौकर रख रखी है जो उनकी उस आदत
न्तुष्टि प्रदान करती है। वह उनके घर पुरुष डाक्टर के वेश में आती है, डाक्टर
न के नाम से। लेकिन वह डाक्टर नहीं है। वह केवल थपथपाने की कला
ी है। जैसे कई आदमियों की आदत होती है कि वे अपनी पत्नी या वच्चों
ों से पैर दववाते हैं। इसी तरह सेठ वेदप्रकाश को अपने शरीर के विशेष अंग
पवाने की आदत है। यानी उन्हें एक ऐसे व्यक्ति की आवश्कता है जो उनके
के एक विशेष अंग को वड़ी तेजी से थपथपाता रहे। उनकी आदत इतनी ज
गई है कि वह खुद भी एक तकिए को थपथपाते रहते हैं। जव कोई औरत
मिलने जाती है तो वे अपनी पहिएदार कुर्सी घुमाकर उसकी पीठ के पीछे जा

आप डाक्टर नहीं हैं ?"

"नहीं।"

"तो फिर आप डाक्टर के वेश में चन्द्रलोक क्यों जाती हैं ?"

"अपनी रोजी के लिए मुझे वहां जाना पड़ता है।"

"क्या आप कहीं और भी काम करती हैं ?"

"नहीं।"

"चन्द्रलोक से आपको गुजर-वसर के लिए काफी रुपया मिल जाता होगा ?"

"जी हां, मेरा काम ही ऐसा है। अगर आप चाहें तो मैं उसका डिमांस्ट्रेशन दिखा सकती हूं।"

मिसेज रिचर्डसन ने अपना वैग खोला जिस पर डाक्टर होफमैन का नाम लिखा हुआ था। उसमें से उसने दस्ताने की तरह का चमड़े का एक पंखा निकाला और उसे हाथ में लेकर थोड़ा-सा लजाते हुए वोली, "आप पलंग पर लेट जाइए।"

मेजर ने वैसा ही किया। मिसेज रिचर्डसन मेजर की पिछाड़ी पर दस्ताने जैसा पंखा मारने लगी, स्वर और क्रमवद्ध गति से। कुछ मिनट वाद मिसेज रिचर्डसन ने अपने हाथों की गति वढ़ा दी। मेजर को अपने वदन में गुदगुदी महसूस होने लगी। वह उचककर खड़ा हो गया।

रात को विनोद के घर इंस्पेक्टर त्यागी और प्रभात मुकर्जी को देखकर मेजर हैरान रह गया, "कहिए, आप कल से कहीं दिखाई नहीं दिए ? आप क्या कुछ करते रहे ?"

"आपने तो हमसे ही प्रश्न कर डाला। यही प्रश्न तो हम आपसे पूछने वाले थे कि आप कल से क्या करते रहे हैं ? हमें मालूम हुआ है कि आप कल से वहुत अधिक सरगर्म रहे हैं।" प्रभात मुखर्जी ने कहा, "आपको याद होगा कि मैंने चन्दन और रोहिणी को वारह घण्टे का अल्टीमेटम दिया था। इसलिए हम प्रकाश आश्रम गए थे। वहां चन्दन की हालत देखी तो हमें उनसे कुछ वातें पूछनी पड़ीं। उन्होंने एक आश्चर्यजनक कहानी सुनाई कि दुश्मन से आपकी मुठभेड़ हो चुकी है।"

"हां।" मेजर ने उत्तर दिया।

"यह एक अच्छी वात है। हमारी निगाहों से तो दुश्मन अभी तक ओझल रहा है।" प्रभात मुखर्जी ने उत्तर दिया।

"आप दुश्मन को देखना चाहते हैं ? तो कल दोपहर का खाना खाने के वाद मिसेज रोहिणी के यहां पहुंच जाइए।"

प्रभात मुखर्जी मेजर से वोला, "आप दुश्मन से हमारी भेंट करायेंगे या हत्यारे से ?"

"उनमें हत्यारा भी होगा, उसे पकड़ना आपका काम है।" मेजर ने कहा।

"हम केवल वीमा कम्पनी के असिस्टैण्ट डायरेक्टर से मिले हैं जो इस केस के सिलसिले में यहां आया हुआ है और नवलकिशोर के यहां ठहरा हुआ है। उसके पास मृतक चन्द्रप्रकाश उर्फ सत्यप्रकाश का एक पत्र है जिसमें लिखा है कि उसके वीमा की पालिसी में रोहिणी का नाम काटकर चन्द्रलेखा का नाम लिख दिया जाए। वह चन्द्रलेखा का पता मालूम करने के लिए प्रभाजी के पास आया है। वीमा की पालिसी पर क्योंकि वहुत-से नाम वदले गए हैं, इसलिए वीमा कम्पनी को कुछ सन्देह होने लगा है और वीमा कम्पनी के डायरेक्टरों की राय है कि रोमा की मृत्यु के वाद वीमा पालिसी की रकम प्रभा जी को मिलनी चाहिए।" प्रभात मुखर्जी ने कहा

अत्याचार सहा था और रोहिणी पर उसने अत्याचार किया था।"

मेजर मेज के निकट गया और उसने मेज पर रखी हुई प्लेट में से चौदह दियासलाइयां उठा लीं और छः दियासलाइयां प्लेट में पड़ी रहने दीं। प्लेट में जो छः दियासलाइयां पड़ी थीं उनके केवल ऊपर के छोर ही जले हुए थे। मेजर ने उपस्थित दर्शकों की ओर मुंह करके असने असिस्टैण्ट अशोक को आवाज दी। अशोक अपनी कुर्सी से उठा और तेजी से चलकर मेज के पीछे चला गया।

मेजर ने कहा, "अशोक, तुम मेज के पीछे इस तरह लेट जाओ जैसे तुम्हारे सीने में चाकू भोंक दिया गया हो और तुम मर चुके हो।"

अशोक ने मेजर के आदेश का पालन किया। वह एक लाश की तरह मेज के पीछे ढेर हो गया। "लीजिए साहब, सत्यप्रकाश उर्फ चन्द्रप्रकाश की हत्या कर दी गई है। उसकी लाश आपके सामने पड़ी है। हत्यारा अभी गया नहीं है। इसी मकान में मौजूद है। अचानक वह एक कार की आवाज सुनता है। उसे मालूम है कि आने वाला किस दरवाजे से आयेगा। वह दरवाजे के पीछे छिप जाता है। लेकिन छिपने से पहले मेज पर रखा पेपरवेट उठाकर अपने हाथ में ले लेता है।"

मेजर ने पेपरवेट उठाया और दरवाजे के पीछे छिपकर बोला, "लीजिए जनाव, आप देख रहे हैं कि हत्यारा दरवाजे के पीछे छिपा खड़ा है।" फिर उसने सोनिया से कहा, "सोनिया, मैं जिस दरवाजे के पीछे खड़ा हूं तुम इससे बाहर जाकर अन्दर आओ।"

सोनिया ने ऐसा ही किया। उसने कमरे में जैसे ही पांव रखा, दरवाजे के पीछे छिपा मेजर उस पर झपट पड़ा, और सोनिया फर्श पर गिरकर जैसे बेहोश हो गई।

"लीजिए साहब, रोमा अपने पिता से हीरे ले जाकर वापस आई। हीरे वह घर छोड़ आई थी। लेकिन कमरे में पांव रखते ही हत्यारे के आक्रमण से बेहोश हो जाती है। हत्यारा पेपरवेट उसके सिर पर इस सफाई से मारता है कि सिर पर गूमड़ भी न पड़े और उसकी चोट से रोमा बेहोश भी हो जाए। हत्यारा रोमा के कपड़े टटोलता है।" यह कहकर मेजर सोनिया के कपड़े टटोलने लगता है।

"हत्यारे को हीरे नहीं मिलते। और बौखला जाता है और कुछ लिखने के लिए कागज-पेंसिल ढूंढ़ता है।" और मेजर कागज-पेंसिल ढूंढ़ने का अभिनय करता है।

"आप लोग यहां एक बात नोट कीजिए। आप देख रहे हैं कि मेरी बुशर्ट की जेब में मेरा फाउंटेन पेन लगा हुआ है। हत्यारे के पास भी अपना फाउण्टेन पेन था, लेकिन वह उसे इस्तेमाल नहीं करना चाहता था। उसे कागज तो मिल जाता है, लेकिन कोई कलम या पेंसिल उसे नहीं मिलती। उसे एक तरकीब सूझती है। वह अल्मारी से तेल की शीशी का कार्क निकालता है। कार्क तेल से चिकना हो रहा है। वह कार्क की चिकनाहट दूर करता है और फिर मोमी दियासलाइयों का पैकेट निकालकर कार्क जलाता है। कार्क के सिरे पर जो राख बनती है उससे वह कागज पर रोमा के नाम एक धमकी-भरा पत्र लिखता है। पत्र पूरा करने के लिए उसे चौदह दियासलाइयां इस्तेमाल करनी पड़ती हैं। बाकी छः दियासलाइयां वह पहले जला चुका होता है जो आपके सामने प्लेट में पड़ी हैं। वह धमकी-भरा पत्र लिखकर रोमा के ब्लाउज में डाल देता है।" यह कहकर मेजर एक कागज सोनिया के ब्लाउज के अन्दर रख देता है और फिर मेज के पास चला जाता है।

"हत्यारा अपना काम पूरा कर चुका है। वह गैरेज की ओर बढ़ता है जहां उसका एक साथी उसका इन्तजार कर रहा होता है। वह गैरेज में पहुंचता है कि एक और कार प्रकाश आश्रम के अहाते में घुसती है। इस कार में रोहिणी और उसका विदेशी मित्र है। रोहिणी कमरे की बत्ती जली देखकर अपने विदेशी मित्र से कहती

की कोशिश करते हैं। अब आप स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं कि उनकी आदत किस प्रकार की है। वेदप्रकाश जी पीड़ा को पसन्द करते हैं। वह चाहते हैं कि उन्हें कोई सताए, झंझोड़े। और जब उन्हें बुरी तरह सताया जाता है तो उन्हें आनन्द मिलता है। सेठ जी की इस आदत के कारण ही उनके बेटे सत्यप्रकाश की हत्या हुई क्योंकि वह बाप से भी बाजी ले गया था। बाप को तो इस बात में आनन्द आता था कि उन्हें कोई सताए, लेकिन बेटे को दो तरह से आनन्द मिलता था। वह किसी द्वारा सताए जाने पर भी आनन्द अनुभव करता था और किसी को सताने में भी उसे आनन्द प्राप्त होता था। सत्यप्रकाश ने अपनी इन दोनों आदतों की सन्तुष्टि के लिए दो विवाह किए। उसे सचमुच दो पत्नियों की आवश्यकता थी। एक ऐसी जो उसे पीड़ा पहुंचाए, उसे सताए, और दूसरी ऐसी जिसे वह सता सके, पीड़ा पहुंचा सके। उनकी पहली पत्नी उनकी इन दोनों आदतों से अपरिचित थी। वह बेचारी इसी दुःख में घुल-घुलकर मर गई क्योंकि उसने इन दोनों आदतों को अपनाने से इनकार कर दिया था। पहली पत्नी की मृत्यु के बाद सत्यप्रकाश ने महसूस किया कि एक पत्नी से काम नहीं चलेगा। उसे दो पत्नियां खोजनी होंगी। एक ऐसी जो उन्हें पीड़ा पहुंचा सके। उन्हें ऐसी पत्नी मिल गई। वह हैं प्रभादेवी।"

मेजर ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "और दूसरी औरत भी उन्हें मिल गई जो उनके द्वारा पहुंचाई गई पीड़ा को सहन कर सकती थी और वह हैं मिसेज रोहिणी।"

"एक पति, दो पत्नियां," मेजर ने कहा, "एक व्यक्ति, दो नाम। यह थी सत्यप्रकाश उर्फ चन्द्रप्रकाश की जिंदगी। मैं प्रभा जी की बात नहीं कर सकता, लेकिन मैंने रोहिणी को निकट से देखा है। उनकी बांहों पर चुटकियों के निशान हैं जो काले पड़ गए हैं। उनकी पीठ पर खराशों के सैकड़ों निशान हैं जो आपस में गडमड हो गए हैं।"

"मिसेज रोहिणी एक भले खानदान की लड़की थीं, वफादार और सच्चरित्र। इसलिए अपने पति की इस घृणित वासना और अत्याचार को सहती रहीं। धीरे-धीरे उन्हें अपने पति द्वारा पहुंचाई जाने वाली पीड़ा में सुख और आनन्द मिलने लगा। पति का अत्याचार उनका स्वभाव बन गया। और यह स्वभाव इतना पक गया कि वह दैनिक जीवन का एक अंग बन गया। सत्यप्रकाश हफ्ते में चार-पांच दिन गायब रहते थे। यानी चार-पांच दिन प्रभा जी के पास रहते थे। उधर प्रभा जी की आदत भी पक चुकी थी। पति की दो-तीन दिन की अनुपस्थिति उन्हें भी अखरने लगी थी। और दोनों को ही यह सन्देह होने लगा था कि सत्यप्रकाश हफ्ते में नियमानुसार इतने दिन क्यों उनसे अलग रहते हैं और कहां जाते हैं। इस सन्देह ने दोनों पत्नियों के मन में सत्यप्रकाश के प्रति घृणा पैदा कर दी। इस घृणित वासना ने एक और सामाजिक बुराई को जन्म दिया। दोनों पत्नियां बेवफा हो गयीं। और जब एक पत्नी को यह पता चला कि उसके पति की एक और पत्नी भी है यानी उसकी सौत भी है तो घृणा ने प्रतिहिंसा का रूप ले लिया। यहां एक प्रश्न पैदा होता है कि किस पत्नी को दूसरी पत्नी से खतरा था। मैं इसकी चर्चा बाद में करूंगा। पहले मैं अपने नाटक की भूमिका पूरी कर देना चाहता हूं। पत्नियों की स्थिति मैं आपको बता चुका हूं। अब पति के सम्बन्ध में सुनिए। उम्र ढलने के साथ-साथ दोहरा जीवन बिताना पति के लिए कठिन होता जा रहा था। वह दो नावों में सवार था। उसे मालूम था कि दोनों ही नावें डूबने वाली हैं। ऐयाशी की अधिकता के परिणाम स्पष्ट दिखाई देने लगे थे। उसे अपनी सौतेली बेटी रोमा और अपनी पत्नी रोहिणी से प्यार था। रोहिणी के प्रति प्यार में दया और सहानुभूति की भावना भी थी। उसने अपनी पत्नी प्रभा के हाथों

"लीजिए साहब, अब मैं अपने नाटक का अन्तिम दृश्य प्रस्तुत करता हूं। आप गे कि मेरा यह नाटक यथार्थ में बदल जाएगा। मैं आपका ध्यान फिर इन दियास-इयों की ओर दिलाता हूं और आपको एक विचित्र बात सुनाता हूं। कभी-कभी दमी की एक बेढंगी आदत उसकी प्राणलेवा बन जाती है। कुछ लोगों की आदत ती है कि वे अकारण ही अपनी हर चीज पर अपने दस्तखत कर देते हैं, अपनी हर ज पर अपना नाम लिख देते हैं। हत्यारे को भी यह आदत थी। उसने मोमी दिया-लाइयों के पैकेट पर अपना नाम लिख दिया था। यही कारण है कि उसे मिस रोमा र मिसेज रोहिणी को धमकी-भरे पत्र लिखने पड़े कि वे अपने होंठ न खोलें और मोश रहें। हत्यारे को वहम था कि मिस रोमा और मिसेज रोहिणी ने मोमी दिया-लाइयों के पैकेट पर लिखा हुआ उसका नाम पढ़ लिया है। लेकिन यह उसकी गलत-फ़हमी थी। हत्यारा छुट्टियों पर जब अपने देश गया था तो वहां से मोमी दियासलाइयों वहुत-से पैकेट लाया था। अपनी आदत से मजबूर होकर उसने हर पैकेट पर अपना म लिख दिया था। उसने दियासलाइयों के कुछ पैकेट अपनी एक प्रेमिका को भी ए थे जो इस समय वम्वई में है। मैं हत्यारे की प्रेमिका से दियासलाइयों का एक केट लाया हूं जिस पर हत्यारे का नाम लिखा हुआ है।"

मेजर ने अपना वाक्य जल्दी से समाप्त कर दिया, क्योंकि वीमा कम्पनी का सिस्टैंण्ट डायरेक्टर अपनी जगह से उठकर पास के दरवाजे से वाहर निकल गया । विनोद ने फौरन अपना रिवाल्वर निकालकर उसके कूल्हे का निशाना बांधा और ली चला दी। वीमा कम्पनी का असिस्टैण्ट डायरेक्टर गाल्जवर्थ वाहर वरामदे में गिरा और जब उठकर खड़ा हुआ तो उसके हाथ में रिवाल्वर था। लेकिन इससे ले कि वह अपने रिवाल्वर की लिवलिवी दवाता, इन्स्पेक्टर त्यागी ने उस पर गोली ला दी और गाल्जवर्थ लड़खड़ाकर वरामदे में गिर गया।

"लीजिए साहब! मैंने आपसे झूठा वायदा नहीं किया था कि मेरा नाटक ार्थ में परिवर्तित हो जाएगा। हत्यारा पुलिस की गोली से मरकर बाहर बरामदे पड़ा है। लेकिन हत्यारे की साथिन, जो पुरुष वेश में उसका साथ देती थी, यहीं है।" यह कहकर मेजर ने सोनिया की ओर देखा जिसने अपने खुले हुए पर्स से निकालकर गोली चला दी और प्रभादेवी के हाथ का रिवाल्वर छिटककर गिरा।

"इंस्पेक्टर साहब, दूसरा अपराधी भी उपस्थित है।" मेजर ने कहा।

इंस्पेक्टर त्यागी ने उठकर प्रभा का हाथ थाम लिया। वह चुप थी और आंखों से आंसू उमड़ रहे थे।

"तीसरा अपराधी वम्वई में है। वह वम्बई कैसे पहुंच गया इसका भेद मैं को अभी बताता हूं। मैंने नवलकिशोर से जानबूझकर यह कहा था कि मैं किसी ी काम से वम्वई जा रहा हूं। मैं चाहता था कि किसी तरह प्रभा को यह खबर जाये। प्रभा वहुत होशियार औरत है। वह समझ गई कि मैं अपने निजी काम से वल्कि इस केस के सिलसिले में ही वम्वई जा रहा हूं। इसलिए प्रभा और गाल्ज-ने अपने तीसरे साथी को फौरन वम्वई भेज दिया ताकि मुझे संदेह न हो कि ी पूरी टोली लखनऊ में है।"

"इनका तीसरा साथी कौन है?" प्रभात मुखर्जी ने पूछा।

"डाक्टर होफमैन; लेकिन वह पुरुष नहीं स्त्री है। उसका नाम मिसेज रिचर्ड-है। वही सुरेन्द्रप्रकाश की परित्यक्ता पत्नी फ्लोरी या चन्द्रलेखा है।"

"चन्द्रलेखा?" इंस्पेक्टर त्यागी ने पूछा।

"जी हां, आप वम्वई पुलिस को तार दीजिए कि मिसेज रिचर्डसन को फौरन ्तार कर लिया जाए।"

*

नहीं दिया था और मुंह बिसूरती हुई लपककर उठ खड़ी हुई थी। फ्लैट से बाहर
निकलकर उसने अपने पीछे दरवाजा जोर से बन्द कर दिया था और रणधीर कालरा
का निवेदन सुनने से इन्कार कर दिया था। रणधीर कालरा का फ्लैट बांदरा में था,
और रोहिणी अपनी झल्लाहट में उस बस्ती की उजाड़ और वीरान सड़क पर चली
आई थी।

रोहिणी ने अपने पीछे एक हल्की-सी आवाज सुनी। कोई हांफ रहा था।
उसने अपने पीछे भयभीत निगाहों से देखा। अंधेरा बहुत गहरा था, लेकिन वह एक
सफेद और पीली-सी चीज देख सकती थी। वह शायद कोई स्त्री थी या पुरुष, जिसने
दौड़ना शुरू कर दिया था।

"नहीं!" रोहिणी के मुंह से निकला, "नहीं, परमात्मा के लिए नहीं।" और
रोहिणी ने भी दौड़ना शुरू कर दिया। उसके दायें पैर के जूते की ऊंची एड़ी घास के
तिनकों में फंस गई और उसके पीछे भागने वाला उसके निकट आ गया। उसने
चीखना चाहा और सहायता के लिए किसी को पुकारने के लिए मुंह खोला, लेकिन
वह गिर पड़ी और आवाज उसके गले में अटककर रह गई। इससे पहले कि वह देख
पाती कि उसके ऊपर कौन झुका हुआ है, मजबूत उंगलियां उसकी गर्दन को अपनी
पकड़ में ले चुकी थीं। उसे लगा कि वह बेहोश होती जा रही है। उसकी आंखों
और दिमाग में अंधेरा भर गया और वह बेसुध हो गई। आक्रमणकारी कुछ और
नीचे झुका। उसने अपने दोनों हाथों में रोहिणी की टांगें पकड़ लीं और उसे सड़क से
घसीटकर एक झाड़ी में ले गया। न केवल रोहिणी की आकांक्षा को पनपने से पहले
समाप्त कर दिया गया, बल्कि स्वयं रोहिणी को कुछ मिनट में समाप्त कर दिया
गया। अपने मंगेतर के फ्लैट से भागने का यह दुखद परिणाम हुआ।

...और विले पार्ले की आलीशान कोठी से निकलकर सुधा को यह होश नहीं
रहा था कि वह किधर जा रही है। उसकी आंखें भी क्रोध से सुलग रही थीं।
निराशा के दुःख से उसके होंठ फड़फड़ा रहे थे, लेकिन उसकी आंखों में आंसू नहीं
थे। आज उसके विवाह की पहली वर्षगांठ थी। उसके पिता ने अपने वायदे के अनु-
इस अवसर पर एक शानदार पार्टी तो दे दी थी लेकिन अपने वायदे का केवल
एक ही हिस्सा पूरा किया था। उस दिन सुधा और उसके पति को आशा थी कि उन्हें
फिएट कार उपहार में मिलेगी। लेकिन सुधा के पिता ने उन्हें सेकण्ड हैण्ड मार्स
माइनर कार दी थी। उस कार को देखकर सुधा के मन में क्रोध का लावा उबल पड़
था और जब उसके पति महेश्वरदयाल कमरिया ने सेकेण्ड हैण्ड मार्स माइनर देखक
कहा था, 'यह खिलौना कार तुम्हीं चलाया करना', तो इस बात ने आग पर घी क
काम किया था। उसकी तिलमिलाहट असहनीय हो गई थी। वह उस मेज की ओ
बढ़ी थी जिस पर ह्विस्की की बोतलें, सोडे से भरे हुए जग और प्लेटों में विभि
खाद्य पदार्थ रखे हुए थे। उसने ह्विस्की से आधा गिलास भरकर उसमें सोडा मिला
था और गटागट गिलास खाली कर दिया था। मेहमान उसकी इस हरकत पर
हैरान हुए थे। औरतों ने नाक-भौं चढ़ाई थीं और सुधा के चाल-चलन के बारे
आपस में कानाफूसी करने लगी थीं। उसके मां-बाप भी उसको इस हरकत पर क
मसा रहे थे, लेकिन कुछ कर नहीं सकते थे, क्योंकि वे मन ही मन शर्मिन्दा थे।

मेहमानों ने देखा कि सुधा हाल से टहलती हुई बाहर लान में चली ग
और दस मिनट के बाद जब उसका पति अपने दो मित्रों से पीछा छुड़ाकर लॉ
पहुंचा तो सुधा वहां नहीं थी। जब सारे मेहमान विदा हो गए तो उसने अपने स
को बताया कि सुधा नाराज होकर न जाने कहां चली गई है।

☐ क्रैम : ४

☐

खूनी कंगन

दो लड़कियां भाग गईं

☐

दो नौजवान लड़कियां दो घरों से भाग खड़ी हुईं। एक अपने मंगेतर के सादा फ्लैट से और दूसरी अपने धनी पिया के आलीशान भवन से। वे एक-दूसरी को जानती तक नहीं थीं। वे बम्बई में रहती थीं और जब वे अपनी मंजिल को पहचाने बिना अपने मनमस्तिष्क में क्रोध और अप्रसन्नता की बाढ़-भरी नदी लिए हुए जा रही थीं तो उस समय रात के साढ़े दस बजे थे। उन दोनों के रास्ते अलग-अलग थे। उनमें से एक का नाम रोहिणी था और दूसरी का सुधा।

रोहिणी अपने मंगेतर से झगड़कर उसके फ्लैट का दरवाजा अपने पीछे जोर से बन्द करके आंधी के झोंके की तरह बाहर निकली थी। उसका मंगेतर रणधीर कालरा उसे पुकारता रहा था, लेकिन उसने अपने मंगेतर की पुकार अनसुनी कर दी थी, क्योंकि उसके मंगेतर ने उसकी योजना पसन्द नहीं की। रोहिणी विदेश मंत्रालय में अपर डिवीजन क्लर्क थी, लेकिन अपनी नौकरी से सन्तुष्ट नहीं थी। उसने एक नये और आलीशान होटल में सर्विस के लिए आवेदन किया था। यह होटल एक विदेशी फर्म के सहयोग से खोला गया था। मेहमानों की सेवा के लिए लड़कियां नौकर रखी जानी थीं। वेतन अच्छा था। इंटरव्यू में रोहिणी बहुत सफल रही थी और उसे चुन लिया गया था। होटल का विदेशी मैनेजर उसके सौन्दर्य से इतना प्रभावित हुआ था कि वह रोहिणी से प्रश्न करने की अपेक्षा रोहिणी के आकर्षक और युवा शरीर को देखने मे ही व्यस्त रहा। मैनेजर ने उसे निश्चित वेतन से दो सौ रुपए अधिक देने के लिए कह दिया था। वह आज यह शुभ समाचार लेकर अपने मंगेतर रणधीर कालरा के पास पहुंची थी, लेकिन रणधीर इस शुभ समाचार को सुनकर प्रसन्न होने के बजाय उदास हो गया था। उसने धीमी आवाज में कहा था, "रोहिणी, मैं तुम्हें मुर्दा तो देख सकता हूं, लेकिन होटल के जीवन से तबाह और बर्बाद होते हुए नहीं देख सकूंगा। तुम्हारी अच्छी-खासी नौकरी है। समय आने पर वह और अच्छी हो जाएगी। फिर एक-दो वर्ष में हमारा विवाह हो ही जाएगा। मुझे विश्वास है कि हम सुखी जीवन बिता सकेंगे। अपने मन की अभिलाषाओं को इतना न भटकने दो रोहिणी।"

रोहिणी अपने मंगेतर की इन दलीलों पर भड़क उठी थी। उसने कोई उत्तर

एक लम्बा घूंट भरा।

"चियर्ज", तिवारी ने अपना आधा गिलास खाली कर दिया।

सुधा ने अपना सारा गिलास खाली कर दिया और पलंग पर फिसलकर लेट गई। उसका वह हाथ जिसमें ह्विस्की का गिलास था, पलंग के किनारे पर झूल रहा था। गिलास उसके हाथ से छूट कर कालीन पर जा गिरा। वह बेसुध हो चुकी थी। तिवारी पलंग के पास पहुंचा। उसने देखा कि सुधा को नींद आ गई है। तिवारी अपनी आंखें झपकाने लगा था। क्या कोई नारी इतनी सुन्दर हो सकती है! उसने पलंग से हटकर अपने लिए ह्विस्की का एक और पेग बनाया। इस बार उसने अपने लिए काफी बड़ा पेग उड़ेला। वह सोफे पर आ बैठा।

तिवारी के मस्तिष्क में एक विचित्र तूफान मचल रहा था। वह नागपुर में दूसरे दर्जे का वकील था। उसकी आमदनी अधिक नहीं थी। वह डी० एल० जेड० टैक्सी थी और वह उसे किराये पर लाया था। उसने सुधा से झूठ बोला था कि वह कार शेवरले है और उसने एक डिप्लोमेट से खरीदी थी। बम्बई की एक प्रसिद्ध फर्म को कानूनी सलाहकार की जरूरत थी। वह इंटरव्यू के लिए बम्बई आया था। अपनी धन-सम्पन्नता के प्रदर्शन के लिए उस कार में आया था।

सम्पूर्णानन्द तिवारी क्योंकि वकील था इसलिए वह मन से अचानक पैदा हो जाने वाली इच्छा के परिणाम के कानूनी पहलू पर भी विचार कर रहा था। अगर उसने कोई बेहूदी हरकत कर दी और सुधा ने कोई हल्ला-गुल्ला मचा दिया, तो उसे न केवल उस प्रसिद्ध फर्म की निश्चित बहुत बड़ी रकम से वंचित होना पड़ेगा बल्कि नागपुर में उसकी गुजर-बसर के लिए प्रैक्टिस पर भी काफी असर पड़ेगा। उसकी पत्नी थी और दो बच्चे भी थे। जगहंसाई हुई तो क्या वह जाकर उन्हें मुंह दिखा सकेगा? लेकिन उसके मन की आकांक्षा उसके विचारों पर विजय पाती जा रही थी, और उसे परिणाम से निर्भीक बनाती जा रही थी। उसे एक बात सूझी। इतना बड़ा खतरनाक कदम उठाने से पहले उसने लपककर सुधा का बैग उठाया। उसे खोलकर देखा। उसमें सत्रह सौ अड़सठ रुपए थे और मोती जड़ा एक कंगन था। वह उस कंगन के मूल्य का अनुमान लगाने में व्यस्त हो गया। उसका मूल्य दस हजार रुपए से कम नहीं हो सकता था। यह सोचकर उसके मन में उभरी हुई चाह दब गई। सुधा एक धनी घराने की स्त्री थी। धनी लोगों के अधिकार और सम्बन्ध बहुत अधिक होते हैं, जो किसी को भी पलक झपकते तबाह कर सकते हैं। यह सोचकर उसने बैग सुधा के सिरहाने रख दिया और पार्टीशन के पीछे जाकर उसने अपने कपड़े बदले, फिर एक चादर उठाकर सोफे पर आकर लेट गया और छत की ओर देखते हुए उसने आंखें मूंद लीं।

शराबी युवती

सुबह के धुंधलके में रोहिणी की लाश अभी तक बांदरा की झाड़ियों में पड़ी थी। उधर से अभी तक कोई नहीं गुजरा था, जो इस दुर्घटना की सूचना पुलिस को दे सकता।

उधर सुधा होटल में तिवारी के पलंग पर बेसुध लेटी हुई थी। उसने इतनी ह्विस्की अपने जीवन में कभी नहीं पी थी। उसे अभी तक होश नहीं आया था और तिवारी बहुत परेशान था। उसका विचार था कि सुबह होने पर सुधा होश में आ जाएगी और अपने घर चली जाएगी। बात समाप्त हो जाएगी। वह सुधा को ठंडे पानी के दो गिलास नींबू मिलाकर पिला चुका था, लेकिन उनका कोई असर नहीं हुआ था।

सुधा एक वीरान टीले के पत्थर पर बैठी अपने भविष्य की योजनाएं बना रही थी—वह अपने मां-बाप से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेगी। वह अपने पति को विवश करेगी कि वह उसके पिता की फर्म से नौकरी छोड़ दे, कहीं और नौकरी तलाश करे। उसने तेजी से ह्विस्की पी थी इसलिए वह नशे में चूर थी और उसका दिल उसके दिमाग से भिन्न दिशा में काम कर रहा था। वह जानती थी कि उसके लिए और उसके पति के लिए ऐसा कदम उठाना बहुत ही कठिन है। अब वह एक कष्टदायक परवशता का अनुभव करने लगी। वह टीले के पत्थर से उठी और सड़क की ओर चल पड़ी।

उसके पीछे आती हुई एक कार की बत्तियों की रोशनी उस पर पड़ी। कार में अधेड़ उम्र का एक व्यक्ति बैठा था। उसने दूर से सुधा की जो यह हालत देखी तो कार की स्पीड धीमी कर दी और फिर उसने बड़े आराम से कार सुधा के पास लाकर रोक दी। उसने कार का अगला दरवाजा खोल दिया और कहा, "वाट ए लिफ्ट?"

"श्योर।" सुधा ने उत्तर दिया और झूमती हुई कार की अगली सीट पर जा बैठी।

"आपको कहां ले चलूं?" कार के मालिक ने पूछा।

"कहीं भी ले चलिए।" सुधा ने अपना बैग कार की पिछली सीट पर फेंकते हुए कहा। कार का मालिक मुस्कराया। उसने एक भरपूर निगाह सुधा पर डाली। उसने सुधा को सिर से पांव तक देखा जिसने अपना सिर सीट की बैक पर टककर आंखें मूंद ली थीं।

सुधा ने अपनी आंखें खोले बिना कहा, "आप क्या सोच रहे हैं? कार क्यों नहीं चला रहे? क्या यह कैडल कार है?"

"नहीं, शेवरले है", कार के मालिक ने उत्तर दिया, "एक डिप्लोमेट से खरीदी थी।" यह कहकर उसने कार स्टार्ट कर दी। शेवरले मजगांव के एक औसत दर्जे के होटल के अहाते में जाकर रुकी। कार के मालिक ने सुधा का हाथ थामकर उसे कार से निकाला और उसकी कमर में अपनी बांह लपेटकर उसे होटल के बड़े दरवाजे की ओर ले गया। रात काफी बीत चुकी थी।

कार के मालिक ने, जिसका नाम सम्पूर्णानन्द तिवारी था, अपने कमरे के ताले में चाबी घुमाकर उसे खोल दिया। सुधा सीधी पलंग की ओर बढ़ी और अपने जूते उतारने लगी। अचानक उसे कुछ याद आ गया। उसने अपनी नशे से चूर बड़ी-बड़ी गुलाबी आंखें सम्पूर्णानन्द की ओर घुमाईं और बोली, "ओह, मेरा बैग?"

"आप तकलीफ न कीजिए, मैं जाकर ले आता हूं।"

जब वह सुधा का बैग लेकर वापस आया तो उसने देखा, सुधा ने मेज पर पड़ी हुई ह्विस्की की बोतल से गिलास में एक बड़ा पेग डाल लिया था और उसमें वाश बेसिन से पानी डाल रही थी। उसने अपनी साड़ी उतारकर सोफे पर फेंक दी थी। और नंगे पांव थी और बिजली की रोशनी में उसके सफेद रेशमी पेटीकोट से उसके सुनहरी बदन की किरणें छनकर बाहर आ रही थीं। सम्पूर्णानन्द की सांस तेज हो गई। सुधा उचककर पलंग पर जा बैठी और हाथ में ह्विस्की का गिलास घुमाते हुए बोली "कम आन, लेट अस हैव ए ड्रिंक!" सम्पूर्णानन्द मुस्कराया। उसने अपना कोट उतारा और अपने लिए भी गिलास में ह्विस्की डाल ली।

"मेरा नाम सुधा सरवरिया है। और···?"

"और मेरा नाम सम्पूर्णानन्द तिवारी है।"

सुधा ने गिलास अपने सिर तक उठाते हुए कहा, "चियर्ज", और फिर उसने

मेजर ने उसकी कहानी सुनकर कहा, "इसमें मुसीबत की कौन-सी बात है ! इस लड़की को कार में डालकर इसके घर पहुंचा दो। एक हजार रुपया इनाम मिल जाएगा।"

"वह तः ठीक है, लेकिन मैं उन प्रश्नों का कैसे उत्तर दूंगा कि यह मुझे कहां मिली, मैं इसे अपने साथ होटल में क्यों ले गया और मैंने कोई अशिष्टता या अभद्रता तो नहीं की ? और अगर मैं इन प्रश्नों के सन्तोषजनक उत्तर न दे पाया तो मुझे पुलिस के हवाले कर दिया जाएगा।" तिवारी बोला।

"हूं," मेजर कुछ सोचता हुआ बोला, "जब तुम इतने डरपोक हो तो इसे यहां लाए ही क्यों थे ?"

"आप इसे घर पहुंचा दीजिए। आप इस शहर के सम्मानित व्यक्ति हैं। आपसे अधिक प्रश्न न किए जाएंगे।"

"लेकिन यह काम इतना आसान नहीं जितना कि तुम समझते हो। इस हालत में इसे होटल के बाहर कैसे ले जा सकेंगे ?"

"देखिए, इस होटल की रिसेप्शनिस्ट लड़की ने मुझे इसके साथ कमरे में आते हुए देखा था। वह लड़की रात को ड्यूटी पर होती है। इस समय होटल में नहीं है। हम इसे उठाकर नीचे ले चलेंगे। कोई पूछेगा तो यह कह देंगे कि इस पर मिर्गी का दौरा पड़ा है, और हम इसे डाक्टर के पास ले जा रहे हैं।"

सुधा को मेजर की कार की पिछली सीट पर लिटा दिया गया। और जब मेजर ड्राईविंग सीट पर जा बैठा तो तिवारी ने कहा, "मैं आपका यह अहसान जीवन-भर नहीं भूलूंगा। मैं दो घंटे के बाद आपको फिर फोन करूंगा।" मेजर जेब से अखबार निकालकर सुधा के घर का पता पढ़ने लगा। इसके बाद उसने कार स्टार्ट की, और तिवारी अपने कमरे में चला गया। उसके सिर से एक बोझ उतर गया था।

मेजर ने रास्ते में अपना इरादा बदल दिया। वह विले पार्ले जाने की बजाए अपने आफिस की ओर चल पड़ा। उसने सोचा कि इस हालत में सुधा को उसके घर ले जाना ठीक नहीं होगा। उसे पहले होश में लाना चाहिए ताकि वह अपनी साड़ी अच्छी तरह बांध सके। अगर वह जिद करेगी कि उसे घर पहुंचा दिया जाए, तो वह उसे घर ले जाएगा, वरना वह स्वयं चली जाएगी।

मेजर ने अपनी नौकरानी की सहायता से सुधा को अपने आफिस में ले जाकर सोफे पर लिटा दिया और अलमारी से दवा की एक शीशी निकालकर शीशे के एक छोटे-से गिलास में दवा उड़ेली और चमचे से सुधा के दांत खोलकर उसके हलक में उड़ेल दी। पांच मिनट के बाद सुधा को कुछ होश आ गया। उसने अपनी आंखें खोल दीं। अपने सामने एक अपरिचित को देखकर वह बहुत परेशान हुई। और जब उसने अपने अर्धनग्न शरीर पर निगाह डाली तो मुस्कराती हुई शरमा गई। उसने अपनी अधखुली साड़ी पूरी उतारकर दोबारा बांधी। फिर उसने कहा, "मैं यहां कैसे पहुंच गई ? मुझे यहां कौन लाया ? आप कौन हैं ? मेरी साड़ी अधखुली क्यों थी ? क्या आप···"

मेजर बलवन्त ने उसे अपना वाक्य पूरा न करने दिया, "आपको ये प्रश्न मुझसे नहीं अपने-आप से करने चाहिए। आप यहां अब पहुंची हैं। दस मिनट भी नहीं हुए होंगे। इससे पहले आप मजगांव के प्रिंस होटल में रात बिता चुकी हैं—एक अजनबी के कमरे में, जिसकी कार में कल आप जा बैठी थीं।"

सुधा को मेजर की इन बातों पर विश्वास न हुआ। वह बोली, "इस तरह झूठ बोलकर आप अपनी तमाम हरकतों की जिम्मेदारी से नहीं बच सकते।"

इतने में अखबार आ गया। उसने अखबार में बड़े-बड़े अक्षरों के साथ जब यह समाचार पढ़ा कि स्थानीय सेठ रतनचन्द सरवरिया की बेटी रात से गुम है और पुलिस अभी तक उसका कोई पता नहीं लगा सकी है, तो उसके होश उड़ गए। उसके अंदर छिपा हुआ वकील जाग उठा। वर्तमान परिस्थिति बहुत ही नाजुक थी। एक अमीर बाप की बेटी नशे में चूर उसके पलंग पर पड़ी थी और वह भी अर्द्धनग्न दशा में। उसने रात उसके कमरे में बिताई थी। उस पर एक संगीन मुकदमा चल सकता था।

तिवारी के चेहरे पर एक रंग आ रहा था और एक जा रहा था। उसके हाथ में अखबार कांपने लगा था, जिसमें सुधा के पिता की ओर से सुधा को घर पहुंचाने वाले को एक हजार रुपया इनाम देने की घोषणा की गई थी। सम्पूर्णानन्द तिवारी को ऐसा लगा जैसे इनाम पाने वाले लोग उस कमरे की ओर दौड़े चले आ रहे हैं। फिर उसे उस रिसेप्शनिस्ट लड़की का ख्याल आया जिसने कल रात उसे सुधा के साथ लिफ्ट से ऊपर आते हुए देखा था। क्या उस रिसेप्शनिस्ट लड़की ने अखबार न पढ़ा होगा? उसने सुधा के पिता को फोन कर दिया होगा जिसका पता और फोन नम्बर अखबार में दिया हुआ था। तिवारी की आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा। वह अंधेरे में प्रकाश खोज रहा। उसके होंठों पर हल्की-सी मुस्कराहट नाच उठी।

मेजर बलवन्त अपने आफिस में अपनी कुर्सी पर बैठा एक लिस्ट का बड़े ध्यान से अध्ययन कर रहा था।

इतने में टेलीफोन की घंटी बजने लगी। मेजर ने रिसीवर उठाकर कान से लगा लिया और बोला, "हैलो।"

"ओह मेजर साहब, भगवान का लाख-लाख शुक्र है कि आप मुझे मिल गए।" दूसरी ओर से आवाज आई।

"क्षमा कीजिएगा। मैंने आपको पहचाना नहीं।" मेजर ने कहा।

"बड़े आदमी छोटों को कम ही पहचानते हैं। मैं तिवारी हूं—सम्पूर्णानन्द तिवारी। आपको याद होगा कि मैंने हत्या के एक केस में आपकी सहायता की थी और नागपुर में रहने वाले हत्यारे के सम्बन्ध में पूरी और बहुमूल्य जानकारी इकट्ठी की थी।"

"मैं जानता हूं। मैं आपको भूला नहीं। आप बम्बई कब आए और कहां ठहरे हुए हैं?"

"प्रिंस होटल, मजगांव। और मुसीबत में फंस गया हूं।"

"क्यों, क्या हुआ?"

"मैं आपको फोन पर कुछ नहीं बता सकता। मुझे आपकी सख्त जरूरत है। आप फौरन चले आइए।"

एक घंटे में वह प्रिंस होटल पहुंच गया। तिवारी बेचैनी से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

सुधा पलंग पर बेसुध पड़ी हुई थी। मेजर ने बड़े ध्यान से उसका निरीक्षण किया। मेजर ने तिवारी पर सन्देह-भरी निगाह डाली।

"नहीं, मेजर साहब, मैंने इसको हाथ तक नहीं लगाया है।"

"तुमने बहुत अच्छा किया। यह लड़की किसी सम्मानित और सम्पन्न घराने की मालूम होती है।"

"जी हां।" तिवारी ने अखबार उठाकर बढ़ा दिया।

मेजर सम्बंधित समाचार पढ़ने लगा। और इतने में तिवा- सुना दी कि वह कैसे सुधा को अपने साथ लाया था।

रोकने के लिए अपना हाथ अपने मुंह के पास ले गई। नौजवान बहुत शर्मिन्दा हुआ। उसने अपना आगे बढ़ा हुआ हाथ फौरन पीछे हटा लिया। लेकिन मेजर बलवन्त इस घटना को देख चुका था। नौजवान का चेहरा शर्मिन्दगी से लाल पड़ गया था।

नौजवान ने बड़े कठोर स्वर में मेजर से कहा, "मेरा नाम महेश्वरदयाल है। क्या मैं पूछ सकता हूं कि मेरी पत्नी से आपका क्या सम्बन्ध है?"

"केवल इतना ही कि मैंने आपकी पत्नी को आपके घर पहुंचा दिया है।" यह कहकर मेजर ने बूढ़े व्यक्ति से कहा, "सेठ रतनचन्द सरवरिया?"

"हां," सेठ जी ने स्वीकृति में सिर हिलाते हुए कहा, "शायद आपने ही मुझे फ़ोन किया था। मेजर बलवन्त...?"

"जी हां।"

"आपको मेरी बेटी कहां मिली?"

"पहले यह काम कीजिए कि बेटी को घर में ले जाकर लिटा दीजिए। थोड़ा सो लेने के बाद यह ठीक हो जाएगी।"

"आप बिल्कुल ठीक सलाह दे रहे हैं।" सेठ जी कार की पिछली सीट की ओर बढ़ते हुए बोले. "मैंने तमाम नौकरों को दूसरी कोठी में भेज दिया है ताकि वे सुधा के आने पर इसे देख न पाएं। मुझे संदेह था कि न जाने सुधा किस हालत में यहां लाई जाए। भगवान की बड़ी कृपा है कि मैं अपनी बेटी को अच्छी हालत में देख रहा हूं।"

सेठ जी ने अपनी बेटी का हाथ थामकर उसे कार से निकाला और उसे सहारा देते हुए दरवाजे की ओर बढ़े और बोले, "आप भी तशरीफ लाइए।"

सुधा लड़खड़ा रही थी। वह अपने बाप के कंधे पर झुक गई थी। दरवाजे से एक औरत बाहर आई। उसका कद मंझोला था, चेहरा गोल और आकर्षक था। वह पल-भर के लिए सुधा को रोकने के लिए रुकी। उसका सारा बदन तन गया। वह एक पल के लिए झिझकी और फिर उसने अपनी बांह सुधा के कमर में डाल दी। सेठ जी सुधा को उस औरत के हवाले करने के बाद एक ओर हट गए।

"मेरी गुड़िया, क्या ऐसा भी किया करते हैं? जरा-सी बात पर नाराज होकर घर से भाग जाया करते हैं!"

"पेट में सख्त दर्द हो रहा है!" सुधा ने कराहते हुए कहा।

"दो-तीन घंटे में तुम ठीक हो जाओगी।" अब वे दोनों मकान के अन्दर जा चुकी थीं।

"मेजर साहब आप जरा मेरे साथ आइए!" सेठ जी ने कहा और मेजर को ड्राइंग रूम में ले गए। वह ड्राइंग रूम किसी बहुत बड़े नवाब का ड्राइंग रूम दिखाई देता था। ड्राइंग रूम के भीतरी दरवाजे में, जो घर के किसी दूसरे कमरे में खुलता था, एक सुन्दर स्त्री खड़ी थी जिसने तरबूजी साड़ी पहन रखी थी। वह स्त्री किसी रानी के समान सुन्दर थी। उसने दूसरे कमरे में सुधा को आते हुए देखा तो बड़े प्यार से बोली, "सुधा, तुमने तो हमें डरा ही दिया था!" फिर वह दरवाजे से हटकर सुधा के पास चली गई, जिसे पहली स्त्री ने पलंग पर लिटा दिया था।

"हम आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहते हैं," महेश्वरदयाल कमरिया ने अपने ससुर को तिजोरी से नोटों की गड्डी निकालते हुए देखकर कहा, "आप सुधा को कब से जानते हैं?"

"सिर्फ एक घंटे से।"

"एक घंटे से?" सेठ जी हैरान होकर बोले।

"आपकी बेटी ने रात होटल में बिताई। होटल के मालिक ने सुबह अखबार

मेजर को गुस्सा आ गया, "एक बात मैं आपको बता दूं कि मैं झूठ नहीं बोला करता। और मैंने कोई ऐसी हरकत नहीं की है जिसके लिए मुझे किसी तरह की जिम्मेदारी से बचने की जरूरत पड़े।"

सुधा कुछ कहना चाहती थी, लेकिन वह अपना पेट पकड़कर बैठ गई। उसका चेहरा खिंच गया। उसकी आंखों के पपोटे अभी तक बोझिल थे। उसने अपनी आंखें मूंद लीं और बोली, "मुझे कुछ भी याद नहीं आ रहा। मैं केवल इतना जानती हूं कि जरूरत से ज्यादा ह्विस्की पीकर मैं घर से निकल खड़ी हुई थी। ओह! मुझे सख्त नींद आ रही है।" सुधा की सांस संयत होकर चलने लगी और वह सो गई। मेजर ने फोन का रिसीवर उठाया और एक नम्बर मिलाया। दूसरी ओर से आवाज आई, "हैलो।"

"हैलो, मैं सेठ रतनचन्द सरवरिया से बात करना चाहता हूं।"

"आपको उनसे क्या काम है? क्या मैं आपका नाम पूछने की अभद्रता कर सकता हूं?"

"मैं उनकी बेटी के बारे में बात करना चाहता हूं?"

"बहुत अच्छा जनाब, मैं उनको अभी बुलाकर लाता हूं।"

मेजर रिसीवर कान से लगाए प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर में दूसरी ओर से आवाज सुनाई दी, "रतनचन्द सरवरिया।"

"सेठ जी, मैं आपकी बेटी को घर ला रहा हूं।"

"मेरी बेटी···वह अच्छी तो है?"

"हां, बिल्कुल ठीक है। उसने शायद बहुत ज्यादा शराब पी ली थी जिसका असर अभी तक है। आपको परेशान होने की जरूरत नहीं। एक घंटे तक आपकी बेटी घर पहुंच जाएगी।"

"भगवान का लाख-लाख शुक्र है। आप···?"

मेजर ने कहा, "मुझे मेजर बलवन्त कहते हैं।"

और यह कहकर उसने फौरन रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया। उसने सोफे की ओर देखा। सुधा अभी तक सोई पड़ी थी। मेजर ने उसके पास जाकर उसे झंझोड़ा। सुधा ज़रा-सा कसमसाई, और उसने कोहनियों के बल उठने की कोशिश की। मेजर ने उसे सहारा दिया, वह कठिनाई से उसे अपनी कार तक लाया। पिछली सीट का दरवाजा खोलकर उसने बड़ी कठिनाई से उसे सीट पर बैठाया। सुधा बैठने की बजाय लेट गई और सो गई।

सेठ रतनचन्द सरवरिया की कोठी का फाटक बहुत बड़ा था। एक गोरखा चौकीदार फ़ौलादी दरवाजे में खड़ा था। उसने मेजर की कार आती देखी तो रास्ता छोड़कर एक ओर हट गया।

जब मेजर ने अपनी कार बरामदे में रोकी तो कोठी के सदर दरवाजे से दो आदमी बाहर आए। एक की उम्र पचास साल से अधिक थी। उसकी तोंद निकली हुई थी। चेहरे पर चेचक के दाग थे। आंखों पर मोटे शीशों की ऐनक थी। दूसरा व्यक्ति अट्ठाइस वर्ष का युवक था, सुन्दर और आकर्षक। दोनों मेजर की कार की ओर लपके।

नौजवान ने कार की पिछली सीट के शीशे में से झांककर अन्दर देखा। सुधा उठने की कोशिश कर रही थी।

"सुधा!" उस नौजवान के मुंह से निकला। उसने पिछला दरवाजा खोल दिया और अपना दाहिना हाथ सुधा की ओर बढ़ा दिया। सुधा अपनी आंखें झपका रही थी। उसने उस नौजवान का हाथ थामने से इंकार कर दिया और जम्हाई

की सालगिरह की खुशी में एक पार्टी का आयोजन किया था। सुधा पार्टी के बीच में से ही भाग खड़ी हुई थी। सब चले गए, लेकिन मुझे रुकना पड़ा। सुधा मेरी गहरी सहेली है। मैंने अपने घर फोन कर दिया था कि मैं रात को यहीं रहूंगी। मेरा नाम शान्ता है।"

मेजर ने कुछ सोचते हुए पूछा, "क्या वह महिला, जो रानी की तरह सुन्दर हैं, सुधा की मां हैं? मैं समझता हूं कि वह सुधा की मां नहीं हो सकतीं। उनकी उम्र चौंतीस वर्ष से अधिक नहीं और सुधा छब्बीस वर्ष की होगी।"

"आप सेठानी की बात कर रहे हैं? लक्ष्मीबाई की? वह सुधा की सौतेली मां हैं और सेठ जी की दूसरी पत्नी हैं।

"सुधा की मां कहां हैं?"

"वह सेठ जी को छोड़कर चली गईं।"

"सुधा और उसकी सौतेली मां में बड़ा प्यार है?"

"हां, दोनों एक-दूसरी को पसन्द करती हैं।" शान्ता ने कहा।

"क्या आप विवाहित हैं?" मेजर ने पूछा।

"थी, लेकिन अब तो मैं अपनी पसंद के युवक की खोज में हूं।"

"क्या मतलब?"

"मेरा पति बहुत चिड़चिड़ा है। उसे दुनिया की कोई वस्तु अच्छी नहीं लगती। वह अपनी कमियों पर गहराई से निगाह नहीं डालता। लेकिन दूसरों की कमियां खोजता रहता है। मैं उसे खुश करने की कोशिश करते-करते थक गई हूं। मैंने ससुराल जाना बन्द कर दिया है। वह आता है, गिड़गिड़ाता है, क्षमा-याचना करता है और भविष्य में अपने-आप को सुधारने का वायदा करता है, लेकिन मैं अब उसके पास नहीं जाऊंगी।"

"कोई क्षमा मांगे तो उसे क्षमा नहीं कर देना चाहिए?"

"कई बार क्षमा कर चुकी हूं। वह हमेशा इसी तरह वायदे करता है और जब मैं उसके साथ रहना शुरू कर देती हूं तो दो दिन के बाद ही वही पुराना रवैया अपना लेता है।"

अब मेजर की कार शहर में प्रवेश कर चुकी थी।

"मुझे यहीं उतार दीजिए और अपना फोन नम्बर बता दीजिए। शायद किसी दिन फोन पर समय निश्चित करने के बाद मैं आपसे मिलने के लिए आऊं, मेरा फोन नम्बर ३३२६६ है।"

मेजर ने कार का दरवाजा खोलते हुए अपने फोन का नम्बर बता दिया। शांता ने अपना हाथ हिलाकर उसे विदा किया। मेजर मुस्कराता हुआ रिंग रोड पर हो लिया।

सुबह के नौ बजे थे। शहर की सड़कों पर रौनक बढ़ गई थी। जब वह रिंग रोड के उस हिस्से पर पहुंचा जो सुनसान था तो उसने पीछे मुड़कर देखा। एक कार उसकी कार के पीछे आ रही थी। भीड़ में वह अनुमान न लगा सका था कि उसका पीछा किया जा रहा है। अब उसे विश्वास हो गया कि कोई उसका पीछा कर रहा है, क्योंकि पीछे जो कार आ रही थी वह अपने और मेजर की कार के बीच दूरी बनाए हुए थी। मेजर ने जान-बूझकर अपनी कार की स्पीड धीमी कर दी। पीछा करने वाली कार की स्पीड तेज हो गई। फिर मेजर ने शरारत से अचानक अपनी कार की स्पीड और स्लो कर दी और सड़क के बाय किनारे पर कच्ची पगडंडी पर डाल दी। पिछली कार फर्राटे भरती हुई आगे निकल गई और फिर अचानक रुक गई। वह कार इस तरह रुकी कि उसने मेजर की कार का रास्ता रोक लिया

में पढ़ा तो घबरा गया, क्योंकि आपकी बेटी होटल के मालिक के कमरे में सोई थी। उस पर हर तरह का इल्जाम आ सकता था। होटल का मालिक मेरा दोस्त था। उसने मुझसे निवेदन किया कि मैं आपकी बेटी को आपके पास पहुंचा दूं।" मेजर ने बात बनाते हुए कहा।

"उस होटल का नाम क्या है और उसका मालिक कौन है?" महेश्वर ने पूछा।

"क्षमा कीजिए, मैं इस सवाल का जवाब नहीं दे सकता।"

"क्या सुधा ने रात होटल में अकेले बिताई थी?" महेश्वर ने दूसरा प्रश्न किया।

"जी हां, आपकी बेटी के पास केवल शराब की बोतल थी।"

"आप कौन हैं और क्या काम करते हैं?" सेठ जी ने पूछा।

"मैं आपको अपना नाम बता चुका हूं—मेजर बलवन्त। मैं जासूसी करता हूं। इसके अतिरिक्त और कोई काम नहीं करता।" मेजर ने अपनी जेब से आइडेण्टिटी कार्ड निकालकर सेठजी की ओर बढ़ा दिया। सेठ जी उसे बड़े ध्यान से पढ़ते रहे। फिर उन्होंने वह कार्ड अपने दामाद के हवाले कर दिया। महेश्वर ने वह कार्ड और कार्ड पर लगा मेजर का फोटो देखा तो उसका व्यवहार बदल गया. "आप मेरी परेशानी का अनुमान नहीं लगा सकते। मैं केवल यह जानना चाहता हूं कि सुधा को कोई ऐसा सदमा तो नहीं पहुंचा जिससे वह किसी मानसिक उलझन में फंस जाए?"

मेजर ने उसका मतलब समझते हुए कहा, "मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपकी पत्नी को ऐसा कोई सदमा नहीं पहुंचा है।"

सेठ रतनचन्द सरवरिया ने एक हजार रुपए के नोटों की एक गड्डी मेजर के कोट की जेब में डाल दी और महेश्वर ने मेजर का कार्ड लौटा दिया।

"मेजर साहब, मैं बाप हूं और मैं समझता हूं कि मेरी बेटी का घर से भाग जाना कोई मामूली बात नहीं है। संभव है मेरी बेटी को कोई और दुःख हो या किसी और से प्रेम करती हो। अगर आप यह भेद मालूम कर सकें तो मैं आपकी और अधिक सेवा करने को तैयार हूं।"

"दो-तीन घंटे बाद आप अपनी बेटी से बात कर सकते हैं। आप उसी से क्यों नहीं पूछते?" मेजर ने कहा।

बेहोश

कुछ मिनट तक उन दोनों ने आपस में कोई बात न की। उस स्त्री ने एक अंगड़ाई ली। उसके कपड़ों में उसका बदन दिखाई देने लगा। मेजर ने कनखियों से उसे देखा। यह वह सुन्दर स्त्री थी जो सरवरिया के घर में दिखी थी और जिसने मेजर से लिफ्ट ली थी।

"आप कहां रहते हैं?" उस स्त्री ने पूछा।

"इसी शहर में, जहां आप रहती हैं।" मेजर ने उत्तर दिया।

"मेरा यह मतलब नहीं था, आपका पता क्या है?"

"क्या यह जानना जरूरी है?" मेजर ने कहा और फिर उसके लिबास की ओर देखते हुए बोला, "क्या आप कल रात से अपने घर नहीं गई हैं? आ... बता रहा है कि आप कल रात यहां पार्टी में शामिल हुई थीं।"

"ओह, आप जासूस हैं ना!" वह बोली, "कल रात सुधा

"गोली न चलाना, चमन," राजन ने कराहते हुए कहा, "अभी हमें इससे केवल हाथों से निवटना होगा।"

राजन फर्श पर बैठ गया था। वह कोशिश करने पर भी उठने के योग्य न हुआ था।

ऊंट जैसा व्यक्ति चमन रिवाल्वर ताने हुए मेजर की ओर बढ़ा। मेजर की नजरें उसके रिवाल्वर पर जमीं हुई थीं। एक बात से वह निश्चिन्त हो चुका था कि राजन की आज्ञानुसार अभी उस पर गोली नहीं चलाई जाएगी। जिसका मतलब था कि वे लोग उससे कोई महत्वपूर्ण रहस्य मालूम करना चाहते थे।

जब चमन कुछ और पास आया तो मेजर ने बिजली की-सी तेजी के साथ अपनी दाहिनी टांग उठाकर चमन के उस हाथ पर दे मारी जिसमें उसने रिवाल्वर रखा था। रिवाल्वर उसके हाथ से निकलकर दूर जा गिरा। चमन अभी अपने हाथ का झटक हो रहा था कि मेजर ने उचककर बायां मुक्का उसके जबड़े पर मारा। वह आदमी लड़खड़ाता हुआ पिछली दीवार से जा टकराया लेकिन गिरा नहीं। उसका एक दांत हिल गया था और उसके मुंह से खून बहने लगा था। उसके होंठों पर झाग जम गया था। उसकी आंखें भयानक रूप से जल उठी थीं। मेजर ने दोबारा अपनी जेब में हाथ डालने की कोशिश की ताकि रिवाल्वर निकाल सके। लेकिन राजन पीछे से एक बार फिर उसपर सावधान होकर कूद पड़ा था। वह भारी-भरकम आदमी था। मेजर पल-भर के लिए झुक गया, लेकिन जल्दी ही उसने घूमकर राजन के मुंह पर दायां मुक्का मारा। राजन की आंखें बंद होने लगीं, लेकिन उसने अपने सिर को एक झटका दिया और मेजर पर टूट पड़ा। वह भी कोई फौलादी आदमी था। अब मेजर जान चुका था कि शक्ति के साथ-साथ उसे इन आक्रमणकारियों से दांव-पेच से भी निबटना होगा। चमन भी संभल चुका था। वह भैंसे की तरह अपना सिर आगे निकालकर मेजर की ओर लपका।

राजन और चमन दोनों ही हाथ-पांव की लड़ाई के उस्ताद मालूम होते थे। मेजर को ऐसी लड़ाई में बड़ा आनन्द आता था। उसने जूडो प्रयोग किया और ऐसा धोबीपाट मारा कि राजन आगे बढ़ते हुए चमन के सिर पर जा गिरा और दोनों गिर [illegible]। मेजर को अपनी जेब में हाथ डालने का मौका मिल गया। लेकिन इतने में राजन [illegible] पर पड़ा पेपरवेट उठा चुका था। ज्यों ही मेजर ने जेब से रिवाल्वर वाला हाथ बाहर निकाला पेपरवेट उसके हाथ में लगा और रिवाल्वर छिटककर दूर जा गिरा। अब राजन और चमन कूदते हुए मेजर की ओर बढ़े।

राजन ने चमन से कहा, "हाथापाई में यह हमारा भी बाबा है। यों काम नहीं बनेगा। चमत्कार नम्बर ग्यारह दिखाना होगा।"

"मैं उसके लिए तैयार हूं।" चमन ने एक कोने की ओर बढ़ते हुए कहा। राजन भी जरा पीछे हटने लगा। मेजर सोचने लगा कि न जाने यह चमत्कार नम्बर ग्यारह क्या बला है। वह उन दोनों को किसी तरह की चालाकी का मौका नहीं देना चाहता था। वह बड़ी सावधानी के साथ उन दोनों के पास पहुंच गया। राजन और चमन दोनों कमरे के उस हिस्से में पहुंच गए थे जहां छोटी-सी मेज के नीचे दरी बिछी हुई थी। मेजर ने उस दरी पर पांव रखा तो चमन ने बड़ी सफाई से उस दरी का एक कोना पकड़कर दरी जोर से खींच ली और ठोकर मारकर मेज दूर फेंक दी। पैरों के नीचे से दरी खिसकी तो मेजर गिर पड़ा। राजन ने लपककर मेजर को दरी में लपेट लिया। मेजर उन दोनों के जाल में फंस चुका था और उनका चमत्कार नम्बर ग्यारह सफल हो चुका था।

"वाह मेरे स्वर्गीय गुरुदेव, तेरा चमत्कार नम्बर ग्यारह कभी खाली नहीं

मेजर ने अपनी जेब में से रिवाल्वर निकाल लिया। अगली कार में केवल एक ही व्यक्ति बैठा था—गठीले बदन और ऊंचे कद का व्यक्ति जिसकी उम्र अड़तीस साल से अधिक नहीं थी। वह ड्राइविंग सीट पर मुड़कर मेजर की ओर देख रहा था और मुस्करा रहा था। मेजर ने देखा कि उसकी मुस्कराहट में शत्रुता की झलक नहीं थी। वह व्यक्ति अपनी कार से बाहर निकलकर मेजर के पास आया और बोला, "आप मेजर बलवन्त हैं?"

"जी हां।"

"आपके हाथ में रिवाल्वर है, लेकिन इसकी जरूरत नहीं। मुझे आपसे एक जरूरी काम है। लेकिन मैं इत्मीनान से बातें करना चाहता हूं। मेरा मकान तीन मील की दूरी पर है, कोलाधा के उत्तरी कोने में। क्या आप वहां तक मेरे साथ चल सकते हैं?"

मेजर ने उस व्यक्ति को ध्यान से देखा। उसकी बातचीत में कोई छल नहीं था। लेकिन एक बात पर जरूर आश्चर्य हो रहा था कि वह व्यक्ति उसका नाम कैसे जानता है।"

"आप तो सोच में पड़ गए। मैं आपका नाम जानता हूं—क्या इतना ही परिचय काफी नहीं है? मैं कौन हूं, क्या हूं और मुझे आपसे क्या काम है—यह मैं आपको अपने मकान पर पहुंचकर बता दूंगा।"

"चलिए," मेजर ने रिवाल्वर अपनी जेब में डालते हुए कहा; "लेकिन यह ध्यान रखिएगा कि मेरे पास समय बहुत कम है।"

"पन्द्रह-बीस मिनट में आपको छुट्टी मिल जाएगी।"

"उस व्यक्ति का मकान अलग-थलग बना हुआ था। असल में उस व्यक्ति के मकान से दो सौ गज की दूरी पर ही मकानों की कतारें शुरू होती थीं। उस मकान के चारों ओर लकड़ी की बाड़ थी। अंदर एक छोटा-सा बाग था। लकड़ी का फाटक खुला हुआ था। इस मकान के भीतर कोई आदमी न था। एक ओर लकड़ी की दो कोठरियां थीं। वे शायद नौकरों के लिए थीं। उन कोठरियों में भी जीवन के चिह्न दिखाई न दे रहे थे। जब उन दोनों की कारें हाते में जाकर खड़ी हुईं तो मेजर ने अपनी कार से निकलकर उस व्यक्ति से पूछा, "क्या आप यहां अकेले रहते हैं?"

"जी हां, अभी मेरे बाल-बच्चे नहीं आए। मैं कलकत्ता से ट्रांसफर होकर आया हूं। यह मकान उस अफसर का था जो मेरी जगह यहां से ट्रांसफर होकर कलकत्ता गया है।" उस व्यक्ति ने आगे बढ़कर मकान के सदर दरवाजे का ताला खोला।

मेजर मकान के अन्दर चला गया। वह एक बहुत बड़ा कमरा था। मेजर अभी कुछ कदम ही आगे बढ़ा था कि सामने के भीतरी दरवाजे से एक लंबा-तड़ंगा ऊंट के जैसे मुंह का आदमी अन्दर आया। उसके हाथ में रिवाल्वर था। मेजर अभी सारी पहेली समझ न पाया था कि पीछे से उस व्यक्ति ने आक्रमण कर दिया जो उसे अपने साथ लाया था। मेजर पीछे से होने वाले आक्रमण से बचने के दांव भी जानता था। उसने अपने बूट की पिछली एड़ी जोर से उस आदमी की पतलून के ऊपरी हिस्से में मारी। वह आदमी चीखकर पीछे हट गया। ऊंट जैसे आदमी ने ऊंची आवाज में कहा, "राजन, क्या आज्ञा है?"

मेजर ने रिवाल्वर निकालने के लिए जेब की ओर हाथ बढ़ाया तो ऊंट जैसे व्यक्ति ने कहा, "खबरदार जो जेब में हाथ डाला।" और फिर उसने राजन से दोबारा पूछा, "राजन, क्या आज्ञा है?"

"उन दोनों ने ही तो मुझे मार-मारकर बेहोश किया था। उन्होंने मुझपर अपने एक नए दांव से काबू पा लिया था। अब मैं समझा हूं कि मैं जिंदा क्यों हूं और वे मुझे यहां क्यों छोड़ गए हैं।" मेजर ने उठकर बैठते हुए और अपने कोट की जेबें टटोलते हुए कहा। उसका पर्स गायब था।

"आपको वे यहां छोड़ने क्यों आए ?"

"ऐसा दिखाई देता है कि वे किसी चीज की तलाश में हैं, और उन्हें यह संदेह है कि वह चीज मेरे पास है। वह चीज क्या है मुझे मालूम नहीं। मुझे जीवन में पहली बार इतनी बुरी तरह पीटा गया है।" इसके बाद मेजर ने अशोक से कहा, "अशोक, तुम एक काम करो। दरबे से क्रोकोडायल को निकालो। उसे अपने साथ कोलाबा के उत्तरी भाग में ले जाओ। वहां एक अलग-थलग कॉटेज है। उसका नाम 'हलीकोम्ब' है। वे लोग अभी उस काटेज में मौजूद हों और वहां से निकलने की तैयारी कर रहे हों तो उनका पीछा करो और यह देखो कि वे कहां जाते हैं। अगर वे उस काटेज को छोड़कर जा चुके हैं तो यह पता करो कि वह काटेज किस नाम से किराए पर ली गई थी कब ली गई थी और वे लोग क्या काम करते थे।"

अशोक ने अपनी नोटबुक में तमाम बातें लिख लीं और आफ़िस से निकलकर क्रोकोडायल के दरबे की ओर बढ़ गया।

सोनिया ने मेजर की कहानी सुनकर कहा, "संयोग भी कितना बलवान होता है! मैं तो सुबह से आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। बिल्कुल ऐसी ही, लेकिन इससे अधिक भयानक एक और घटना हुई है।"

"क्या मतलब ?" मेजर ने हैरान होकर पूछा।

"हमने जिस बिल्डिंग में एक नया फ्लैट ख़रीदा है, उसकी तीसरी मंजिल पर एक सिन्धी परिवार ने फ्लैट लिया है। मि० एस०डी० मलकानी और मिसेज मलकानी की बड़ी बेटी रोहिणी की लाश झाड़ियों में मिली है। मैं सुबह नौ बजे तैयार होकर आफिस आ रही थी कि पुलिस लाश को वैन में डालकर शिनाख़्त के लिए वहां लाई। मलकानी का पता पुलिस को रोहिणी के बैग में पड़े कार्ड से मिला। किसी ने मि० मलकानी को बता दिया कि मैं गुप्तचर विभाग से सम्बन्धित हूं और देश के सुप्रसिद्ध जासूस मेजर बलवन्त की असिस्टेंट हूं। फिर क्या था, मिस्टर मलकानी रोते हुए मेरे पास आए और दर्द-भरे स्वर में बोले, 'मैं अपनी बेटी के हत्यारे या हत्यारों का पता लगाने के लिए अपनी तमाम जायदाद बर्बाद करने के लिए तैयार हूं। आप भी मेरी सहायता कीजिए।' मुझसे उनका रोना-पीटना न देखा गया। मैंने वायदा कर लिया कि मैं उनकी सहायता करूंगी। और ग्यारह बजे से मैं आपका इंतजार कर रही हूं।"

मेजर को यह खबर सुनकर बहुत दुःख हुआ। तभी कदमों की आहट सुनाई दी और विनोद मल्होत्रा हाथ में शाम का अखबार लिए हुए अन्दर आया। उसने अभी मेजर का चेहरा ध्यान से नहीं देखा था। विनोद ने अखबार लहराते हुए कहा, "न जाने इस शहर को क्या होता जा रहा है। लड़कियां घर से निकलती हैं तो दुर्घटना-ग्रस्त हो जाती हैं। क्या इस शहर में स्त्रियों का घर से बाहर निकलना बन्द हो जाएगा?" और फिर वह ठिठककर रह गया। अब उसने मेजर का चेहरा ध्यान से देखा और बोला, "क्या आपके साथ भी कोई दुर्घटना हुई है ?"

मेजर ने उसे भी आज की पूरी कहानी और नई बिल्डिंग में अपने नए फ्लैट के पड़ोसी की दुःखद घटना सुना दी।

जाता !" राजन ने हंसते हुए कहा।

उन दोनों ने मेजर पर अधिकार पा लिया था। मेजर को एक कुर्सी पर बैठा दिया गया और कुर्सी की बाजुओं पर उसकी बांहें रखकर टेप लगा दी गई। उसकी टांगें रस्सी से बांध दीं गईं।

"मेजर साहब, हुजूर, अब कहिए आपका क्या स्वागत-सत्कार किया जाए?" मेजर के गाल पर तमाचा मारते हुए राजन ने कहा।

चमन उसकी आंख पर मुक्का मारते हुए बोला, "तुम्हारी सारी वीरता और शक्ति धरी रह गई।"

उन दोनों ने मेजर को बुरी तरह मारना शुरू कर दिया।

और कुछ देर बाद मेजर बेहोश हो गया। मेजर को जब होश आया तो वह बहुत हैरान हुआ। वह अपने आफिस में सोफे पर पड़ा था। बिजली का बल्व जल रहा था और। खिड़की के पार रात का अंधेरा छाया हुआ था। सोनिया उसके पास एक कुर्सी पर बैठी हुई थी और गर्म पानी से उसका चेहरा साफ़ कर रही थी। अशोक कैंची से प्लास्टर के टुकड़े काट रहा था। जब उसके होश-हवास पूरी तरह ठीक हुए तो उसने पूछा, "मैं यहां कैसे आ गया?"

"आपको इस हालत में दो आदमी यहां छोड़कर गए हैं। उन्हें गए हुए अभी आधा घंटा हुआ होगा। वे हमारे पीछे ही यहां आए थे। मैं और अशोक सड़क पर जरा टहलने के लिए चले गये थे। वापस आए तो हमने देखा कि दो आदमी कुर्सियों पर मजे से बैठे सिगरेट पी रहे थे। हमें देखकर वे उठ खड़े हुए। उनमें से एक ने कहा 'मैडम, अगर हमने मेजर साहब को पहचान न लिया होता तो इनका न जाने क्या हाल होता। यह सड़क पर पड़े रहते। हमने इनको होश में लाने की बड़ी कोशिश की। फिर सोचा कि इन्हें अस्पताल ले जाएं। लेकिन संयोग से इनकी जेब से इनका आइडेण्टिटी कार्ड निकल आया। हमने इन्हें घर पहुंचाना ही उचित समझा। आप इनको संभाल लीजिए। इनके कोई गहरी चोट नहीं आई है।' मैंने उनसे पूछा, "मेजर साहब आपको किस सड़क पर मिले थे?' उन्होंने उत्तर दिया, 'रिंग रोड पर।' इसके बाद मैंने उनसे उनका नाम और पता पूछने की कोशिश की, लेकिन वे यह कहकर टाल गए, 'हमें मेजर साहब का सेवक समझ लीजिए। एक घंटे के बाद हम फोन करेंगे। अगर मेजर साहब होश में होंगे तो उनको ही बता देंगे कि किस हालत में हमने उन्हें सड़क पर पड़ा हुआ देखा था।' वे इतनी बात कहकर चले गए।"

क्या राजन और चमन ने उसके साथ मारपीट करने के बाद उसे शाम के अंधेरे में सड़क पर फेंक दिया था, और उसके हमदर्द उसे यहां ले आए थे, या वे ही दोनों उसे यहां छोड़ गए थे?

"उनमें से एक ऊंट तो नहीं मालूम होता था?" मेजर ने सोनिया से पूछा।

"हां, बिल्कुल ऊंट मालूम होता था।" सोनिया ने उत्तर दिया।

मेजर समझ गया कि राजन और चमन ही उसे यहां छोड़ गए थे। लेकिन क्यों? उसके मस्तिष्क में कुछ और प्रश्न भी चक्कर लगाने लगे। उसे क्यों मारा-पीटा गया? उन्हें कैसे पता चला कि मैं सेठ रतनचंद सरवरिया के यहां गया था?

"अगर आप सच पूछें तो एक बात पर हम पछता रहे हैं। जब मैं और अशोक सड़क पर टहलने के लिए गए थे तो मेज की दराज और अलमारियां बंद करके गए थे। लौटने पर आपको बेहोश पाकर हमें यह ध्यान ही न आया कि आपके मेज की दराजें खुली हुई थीं और अलमारियां भी खुली हुई थीं। असल में आपकी बेहोशी ने हमारी सिट्टी-पिट्टी गुम कर दी थी। हमें अफसोस हुआ कि हमें उन दोनों को जाने नहीं देना चाहिए था।"

"आप मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं बदहवासी में ऐसी बात कह गई हूं। मेरा मतलब यह था कि आप पुलिस और बीमा कारपोरेशन को सूचना दिए बिना मेरा कंगन मुझे दिलवा दीजिए।" सुधा ने अपना कठोर और गर्म लहजा बदलते हुए कहा "मैं यह नहीं चाहती कि मेरे पिता जी को यह मालूम हो जाए कि मैं कंगन गुम कर बैठी हूं। वह मेरे सम्बन्ध में पहले ही बहुत परेशान हैं। मैं उनको और परेशान करना नहीं चाहती। क्या आप मुझे मेरा कंगन दिलवा सकते हैं? मैं मुंहमांगा पारिश्रमिक दूंगी।"

"उस कंगन का मूल्य क्या होगा?" मेजर ने पूछा।

"दस हजार रुपये।"

"आप जरा अच्छी तरह याद करके मुझे यह बताइए कि आपने अन्तिम बार वह कंगन अपने बैग में कब देखा था?"

"मैंने परसों रात घर से निकलते ही अपने बैग में हाथ डालकर उस कंगन को टटोला था। कंगन मेरे बैग में था।"

"हूं," मेजर बलवन्त ने कहा, "क्या आपको यह याद है कि जब आप घर से निकली थीं तो आपके बैग में कितनी रकम थी?"

"हां, अच्छी तरह याद है। मेहमानों ने उपहार के साथ रुपए भी दिए थे। मेरी सौतेली मां ने हर मेहमान की ओर से आये हुए रुपये गिनकर और लिखकर मुझे पूरे सत्रह सौ रुपये दिये थे। और वे सब मेरे बैग में थे।"

"होश आया तो कितने रुपये बैग में से निकले?"

"कुल तीन सौ साठ।"

"अच्छा तो मैं जरूर कोशिश करूंगा। क्या आपको याद है कि आप घर से निकलकर कहां-कहां गई थीं?"

"मैं घर से निकलकर एक टीले पर जा बैठी थी।"

"क्या वहां कोई आपके पास आया था?"

"कोई नहीं।" सुधा ने उत्तर दिया।

"जब आप टीले से उतरकर चल पड़ीं तो रास्ते में आपकी किसी से मुठभेड़ हुई थी?"

"नहीं, किसी से नहीं हुई थी।" सुधा बोली, "असल में टीले से उतरकर के बाद से मुझे कुछ याद नहीं आ रहा है।"

सुधा चली गई तो सोनिया ने कहा, "सुधा का कंगन कोई रहस्यपूर्ण कंगन मालूम होता है, वरना वह पुलिस को सूचना देने से क्यों हिचकिचाती?"

"मुझे भी ऐसा ही मालूम होता है।"

इतने में टेलीफोन की घंटी बजने लगी। मेजर ने रिसीवर उठाकर कान से लगा लिया।

"मेजर साहब, मैं सरबरिया बोल रहा हूं।" दूसरी ओर से आवाज आई, "मैंने अपनी बेटी से बात की है। उसे कुछ याद नहीं कि वह घर से निकलकर कहां गई और किससे मिली। उसकी बातों से पता चलता है कि वह बहुत दुःखी और परेशान है।"

"आप चाहते क्या हैं?"

"मैं यह चाहता हूं कि आप इस बात का पता लगाइए कि मेरी बेटी के दुःख का कारण क्या है।"

"क्या आपने अपने दामाद से कुछ पूछा है?"

"हां, वह भी नहीं जानता कि सुधा को क्या दुःख है। आज सुबह से सुधा

पुरानी हवेली

मेजर जब सुबह जागा तो उसकी सारी थकान और मार-पीट की वजह से उसके बदन का सारा दर्द दूर हो चुका था।

जब सोनिया उसके लिए कॉफी लाई तो आफिस के बाहर कदमों की धीमी आहट सुनाई दी। कुछ मिनट बाद मेजर ने देखा कि दरवाजे में सुधा खड़ी थी। मेजर ने घड़ी पर निगाह डाली जो सुबह के सात बजा रही थी, और फिर उसने सुधा की ओर देखा जो अन्दर आने की अनुमति मांग रही थी।

"आइए," मेजर ने कहा, "आपको यहां देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है।" और फिर उसने सुधा का सोनिया से परिचय कराया। मेजर ने सुधा को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। जब तक वह बैठ नहीं गयी, तब तक वह खड़ा रहा। "क्या काफी पीजिएगा ?" मेजर ने पूछा और अपनी कुर्सी पर फिर बैठ गया।

"पी लूंगी। मैं सुबह की सैर के बहाने घर से निकली हूं। कल मुझे पिता जी के द्वारा मालूम हुआ कि आप कौन हैं और आप मुझे एक होटल से पहले यहां लाए थे और फिर घर ले गए थे। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि मैं परसों रात किस होटल में रही थी और किसके साथ रही थी ? देखिए यह सवाल बहुत जरूरी है।"

"आप बेकार ही घबरा रही हैं। आप परसों रात जिस होटल में रही थीं वह एक सम्मानित होटल है और जिस व्यक्ति के कमरे में रही थीं वह मेरा मित्र है। आप हर ओर से निश्चिन्त रहिए।"

"आप मेरा कंगन दिलवा दीजिए। अगर आपके पास है तो मुझे दे दीजिए।"

"कंगन ? कैसा कंगन ?" मेजर ने आश्चर्य से पूछा।

अब सुधा को गुस्सा भी आ रहा था और घबराहट भी हो रही थी, "सुनिए, कल जब मैं अपने घर से भाग खड़ी हुई थी तो मेरे बैग में कंगन था और परसों होटल में आने पर जब मैंने अपना बैग खोला तो उसमें कंगन नहीं था। मुझे मेरा कंगन दिलवा दीजिए या दे दीजिए।"

"आप फिर मेरे गुस्से को बढ़ा रही हैं !" मेजर तुनककर बोला।

सोनिया ने काफी के दो गिलास बनाए थे। उसने एक प्याला सुधा के आगे और दूसरा मेजर के आगे रख दिया।

मेजर ने काफी का घूंट भरते हुए पूछा, "आपका कंगन कैसा था ?"

"सोने का था। और उसमें हीरे जड़े हुए थे।"

"मैंने आपका कंगन नहीं चुराया।"

"किसी ने भी चुराया हो, मुझे वह कंगन चाहिए। मैं उसे वापस दिलाने का पारिश्रमिक भी देने के लिए तैयार हूं।"

"क्या आपने अपने कीमती जेवरों का बीमा नहीं करा रखा है ?"

"मेरे पिता जी ने करा रखा है। मुझे यह कंगन उन्होंने ही उपहार दिया था लेकिन यह बात आप क्यों पूछ रहे हैं ?"

वह ठिगना आदमी लिफ्ट से नीचे जा चुका था। मेजर सीढ़ी के रास्ते कुलांचे भरता हुआ नीचे उतरा और उसके पीछे चल पड़ा। वह आदमी एक भीड़-भाड़-भरे बाजार में पहुंच गया। मेजर तेजी से उसके पीछे जा रहा था। इतने में भीड़ में से निकलकर कोई मेजर से आ टकरा।।

मेजर ने ध्यान से उस आदमी को देखा। वह एक पतला-दुबला आदमी था। उसकी नाक मुड़ी हुई थी। आंखें चुंधी थीं। मेजर ने उसपर जलती हुई निगाह डाली, क्योंकि वह जिस आदमी का पीछा कर रहा था वह गायब हो चुका था।

मेजर जब अपने आफिस में पहुंचा तो वहां उसने सोनिया को इंतजार करते पाया।

सोनिया ने कहा, "अब चलिए। मि० मलकानी मेरा इंतजार कर रहे होंगे।"

"मैं अभी तुम्हारे साथ न जा सकूंगा सोनिया," मेजर ने कहा, "मुझे सुधा का पीछा करना है।"

"क्या मैं आपके साथ चलूं?"

"नहीं।" यह कहकर मेजर फौरन बाहर निकल गया। उसने देखा कि सुधा की कार उस बंगले के गेट से निकल रही थी। मेजर अपनी कार में जा बैठा और कुछ मिनट बाद वह सुधा की कार का पीछा कर रहा था।

सुधा साइन जाने वाली एक वीरान सड़क पर पहुंची जहां पेड़ों के झुरमुट शुरू होते थे। वहां पहुंचकर सुधा ने अपनी कार की स्पीड धीमी कर दी। पेड़ों के झुंड के पीछे एक कच्ची सड़क पर उसकी कार हो ली। सामने एक पुरानी हवेली जैसा टूटा-फूटा मकान था। सुधा की कार उसी ओर जा रही थी। उस हवेली के चारों ओर एक चहारदीवारी थी जो जगह-जगह से टूटी हुई थी। मेजर सोच रहा था कि सुधा इस पुरानी और टूटी-फूटी हवेली में किससे मिलने जा रही है। सुधा एक टूटे दरवाजे से निकलकर अन्दर चली गई। मेजर ने अपनी कार एक दीवार की आड़ में रोक ली और पैदल दरवाजे में घुस गया। उस दरवाजे से एक कच्ची पगडंडी हवेली तक जा रही थी। हवेली के अन्दर जाने का फाटक खुला हुआ था। मेजर फूंक-फूंककर कदम रखता हुआ आगे बढ़ा। वह सदर दरवाजे पर पहुंचा तो उसने देखा कि दीवारों में जाले लटके हुए थे तथा मिट्टी जमी हुई थी। हवेली में बहुत-से कमरे थे। मेजर एक कमरे में घुस गया जिसमें अंधेरा था। उसने अपना सिगरेट लाइटर जलाया। कमरे में पड़े पुराने पलंग पर बिस्तर मया था।

मेजर ने सिगरेट लाइटर बुझा दिया। कमरे की सामने की दीवार की एक ईंट थोड़ी-सी उखड़ी हुई थी। उससे जो झिरी पैदा हो गई थी, उसमें से मेजर को दूसरे कमरे में मिट्टी के दीये की रोशनी दिखाई दी। मेजर ने अपनी दाहिनी आंख उस झिरी पर लगा दी। उस कमरे में दो औरतें और एक आदमी था। वह आदमी साधारण रूप से लम्बा था। उन दो औरतों में से एक सुधा थी। दूसरी स्त्री की उम्र अड़तीस साल के लगभग थी। यह स्त्री सुधा से कह रही थी, "तुम्हें क्या हो गया है सुधा! कुछ मिनट यहां और रुक जाओगी तो प्रलय तो नहीं आ जाएगी!"

"प्रलय ही आ जाएगी, मुझे घर जाना चाहिए।" सुधा ने कहा।

"कैसा घर? किसका घर? सुधा, अब तुम उस घर को छोड़कर चली आओ।"

"कुसुम, क्या तुम अपनी जिद नहीं छोड़ोगी?" लम्बा-तड़ंगा आदमी बोला, "मैं सब कुछ समझता हूं, सुधा। मुझे तुम्हारी मजबूरी का पूरा-पूरा अहसास है।"

"तुम क्या समझते हो? खाक समझते हो?" उस स्त्री ने कहा, "क्या मैं

फिर गायब है। उसने किसी को कुछ नहीं बताया कि वह कहां जा रही है। वह अ
तक वापस नहीं आई और हम यहां परेशान हैं।"

"क्या सुधा के पति ने भी कुछ नहीं पूछा कि वह कहां जा रही है?"

"वह सो रहा था जब सुधा बाहर गई।" सेठ रतनचन्द सरवरिया ने कह
'कृपा करके पता लगाइए कि सुधा कहां गई।"

"जरूर, मैं इसका पता लगा लूं तो फिर क्या होगा?"

"इसके बाद यह पता लगाइए कि वह किस बात से परेशान है और क
करना चाहती है। मैं आपको दो हजार रुपये दूंगा।"

"खैर, मैं परेशानी दूर करने की कोशिश करूंगा।" मेजर ने रिसीवर क्रेडि
पर रख दिया और फिर सोनिया से बोला, "कल राजन और चमन मुझे अपनी क
में यहां लाये थे?"

"नहीं; आपकी कार में लाये थे।" सोनिया ने उत्तर दिया।

"जल्दी से तैयार हो जाओ, मैं तुम्हें अपने एक डाकू मित्र से मिलाना चाह
हूं।" मेजर बोला।

दोनों पन्द्रह मिनट में तैयार होकर मजगांव की ओर चल पड़े।

मेजर और सोनिया प्रिंस होटल की दूसरी मंजिल पर सम्पूर्णानन्द तिवारी
कमरे में बैठे थे। मेजर के हाथ में रिवाल्वर था और तिवारी बड़े इत्मीनान से सिग
पी रहा था, मेजर के रिवाल्वर की ओर बिलकुल ध्यान न दे रहा था।

"मेरे सवाल का तुम अभी तक ठीक जवाब नहीं दे रहे हो। देखो, मैं
तुम्हारी सहायता की और सुधा को घर पहुंचा दिया। लेकिन अब मुझे मालूम हु
कि तुमने विशेष रूप से मुझे क्यों उसके घर भेजा। सोने का जड़ा हुआ कंगन क
है? और चौदह सौ रुपये कहां हैं? मुझे इस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर दो, वर
मैं सच कह रहा हूं कि गोली से तुम्हारा भेजा उड़ा दूंगा।"

"आप गलत धमकी दे रहे हैं। मैं कसम खाकर कहता हूं कि मैंने सुधा क
कोई चीज नहीं चुराई। यह ठीक है कि मैंने उसका बैग खोलकर देखा था। उस
सत्रह सौ रुपये जरूर थे, लेकिन कंगन नहीं था।"

"सत्रह सौ में से चौदह सौ कहां गए? क्या तुम कहना चाहते हो कि चौद
सौ रुपये मैंने रख लिए?"

"नहीं, मैं कुछ भी नहीं कह रहा। वे रुपये किसी और ने उसके घर से निका
लिए होंगे।"

"सुनो, सुधा को रुपये की परवाह नहीं है। लेकिन वह अपना कंगन वापि
चाहती है," मेजर ने नर्मी से कहा, "और मैं समझता हूं कि कंगन तुम्हारे पास है
उस कंगन का मूल्य दस हजार रुपये है। तुम किसी के पास बेचने जाओगे तो तु
एक हजार रुपये से अधिक नहीं मिलेंगे। और अगर तुम मुझे वह कंगन दे दोगे तो
तुम्हें पन्द्रह सौ रुपये दूंगा।...तुम यहां बम्बई में कब तक हो?"

"चार दिन ठहरूंगा।"

रिवाल्वर जेब में रखकर उठते हुए मेजर ने कहा, "मैं तुम्हें दो दिन का सम
देता हूं। वह कंगन मुझे वापस लाकर दो।"

मेजर और सोनिया तिवारी के कमरे से बाहर आए तो उन्होंने देखा कि ठिग
कद का एक आदमी लिफ्ट की ओर बढ़ रहा था। मेजर ने सोनिया की कोहनी पक
ली और कहा, "मुझे ऐसा सन्देह हो रहा है कि यह आदमी दरवाजे से कान लगाक
हमारी तमाम बातें सुनता रहा था। यों करो कि तुम चलकर आफिस में मेरा इंतजा
करो। मैं इस आदमी का पीछा करूंगा।"

"आपने जिस जगह मुझे भेजा था वहां से राजन और चमन जा चुके थे। नौकरों की कोठरी से एक अद्भुत आदमी बाहर निकला। उससे पूछताछ की तो वह एक फकीर निकला। असल में जहां राजन और चमन ठहरे हुए थे वहां काटेज के एक कोने में एक मजार है। वह फकीर उस मजार की देखभाल करता था। राजन और चमन से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था। लेकिन वह इतना जरूर जानता था कि राजन और चमन के पास एक पतला-दुबला और एक ठिगने कद का—दो आदमी मिलने आया करते थे। दो औरतें भी उनसे मिलने आती थीं। एक औरत जब आती थी तो हमेशा नकाब पहने रहती थी। दूसरी औरत अधेड़ उम्र की थी। वह उनके लिए खाना बनाने के लिए आती थी और चली जाती थी। लेकिन वह कभी-कभी रात को वहां रह जाती थी।" अशोक सांस लेने के लिए रुका।

जब सोनिया ने मि० मलकानी से मेजर का परिचय कराया तो वह उन दोनों को एक अलग कमरे में ले गया। मि० मलकानी ने चिन्तित स्वर में कहा, "कुछ दिन हुए मैंने रोहिणी की कलाई में एक कीमती कंगन देखा था। जब मैंने उससे पूछा था कि वह कंगन कहां से लाई है, तो उसने उत्तर दिया था कि रणधीर कालरा ने वह कंगन उसे दिया है—सगाई के उपहार स्वरूप। लेकिन रणधीर कहता है कि उसने रोहिणी को कोई कंगन नहीं दिया था और उसने कभी वह कंगन रोहिणी की कलाई में देखा ही नहीं।"

"कंगन?" मेजर के मुंह से निकला। "वह कंगन कहां है? क्या मैं उसे देख सकता हूं?"

"जरूर देख सकते हैं। ठहरिए, मैं लाता हूं।"

मि० मकलानी वापस आ गए। उनके हाथ में एक कंगन था जिसमें मोती जड़े थे। मेजर उसे उलट-पुलटकर देखता रहा। फिर उसने मि० मलकानी से कैमरा मंगवाया और उस कंगन का फोटो ले लिया गया। मेजर ने कैमरे से फिल्म का रोल निकालकर सोनिया को दे दिया और बोला, "सोनिया, फौरन जाओ और किसी फोटोग्राफर से प्रिंट निकलवा लाओ। मैं उस जगह का निरीक्षण करने के लिए जा रहा हूं जहां रोहिणी को गला घोंटकर मारा गया।"

मेजर सेठ सरवरिया के सामने बैठा हुआ ह्विस्की पी रहा था।

"सुधा घर आ चुकी है। देखिए उसको यह पता न चलने पाए कि आप मेरे लिए काम कर रहे हैं, ताकि सुधा की मनःस्थिति का रहस्य मालूम किया जाए।" सेठ जी ने कहा।

"आप घबराइए नहीं। उसे कानों-कान खबर न होगी। मैंने आपकी आज्ञानुसार काम शुरू कर दिया है। और मैं यह जानता हूं कि आपकी बेटी कहां गई थी। क्या आप किसी ऐसे आदमी को जानते हैं जो अपना नाम डा० चन्द्रप्रकाश बताता है?"

डा० चन्द्रप्रकाश का नाम सुनकर सेठजी पर जैसे बिजली गिर पड़ी। "हां, मैं उसे जानता हूं।" उन्होंने बड़े उदास स्वर में कहा।

"क्या वह वाकई डाक्टर है?"

"वह डाक्टर था लेकिन उसने एक अनुचित काम शुरू कर दिया था। उसने अपने कोटे का टिंचर बेचना शुरू कर दिया था जिसे लोग शराब की जगह पीते हैं। और यही नहीं, उसने रुपया बटोरने के उद्देश्य से गर्भपात कराने का काम शुरू कर दिया था। इसके अलावा वह अपना कोकीन का कोटा भी ब्लैक में बेच देता था।

नहीं समझती हूं ! अच्छा सुधा, तुम जो कुछ लाई हो वही हमें स्वीकार है । लेकिन यह काफी नहीं है ।"

"मैं इससे अधिक का प्रवन्ध कर ही नहीं सकी ।" सुधा बोली ।

"हां, मैं जानता हूं कि तुम कोई कसर नहीं उठा रखतीं । तुम यथाशक्ति हमारी सहायता कर रही हो ।" वह आदमी बोला, "अव तुम जाओ, मैंने तुम्हारी कार गुलाम गर्दिश की ओर खड़ी कर दी थी ।"

सुधा उस कमरे से वाहर चली गई । उस लम्वे-तड़ंगे आदमी ने कुसुम से कहा, "तुम अपनी जिद कव छोड़ोगी ?"

"मैं जो चाहूं सुधा से कह सकती हूं ।" कुसुम ने कहा ।

"क्यों नहीं, तुम दिन-रात पीती हो और फिर तुम्हारी जुवान तुम्हारे कावू में नहीं रहती । तुम वीमार हो जाओगी, कुसुम ।"

"यह सव तुम्हारा किया-धरा है । तुमने मुझे यह दर्द दिया और तुम इसका कोई इलाज नहीं कर रहे हो ।" कुसुम वोली और उठकर कहीं चली गई । और वह लम्वा आदमी भी उसके पीछे-पीछे चला गया । मेजर ने अपने अंधेरे कमरे में कदमों की आहट सुनी । वह उस झिरी से अलग हटकर खड़ा हो गया । उसकी आंखें अभी कमरे के अंधेरे की अभ्यस्त नहीं हुई थीं, क्योंकि वे पिछले कमरे की रोशनी को देखती रही थीं । मेजर ने अपना सिगरेट लाइटर जलाया । सामने दरवाजे में एक लम्वा-तगड़ा आदमी खड़ा था । उसका कद साढ़े छः फुट से कम नहीं था । उसने मेजर के हाथ में जलते हुए सिगरेट लाइटर की ओर देखा और मेजर की ओर वढ़ा । मेजर ने अपना रिवाल्वर निकालने के लिए जेव में हाथ डाला तो उसकी आंखों तले अंधेरा छा गया । उसका रिवाल्वर उसकी जेव में नहीं था । वह लम्वा-तगड़ा व्यक्ति अव मेजर के पास पहुंच चुका था । उसने अपना फौलादी हाथ मेजर की कमर में डाल दिया । मेजर ने उसकी पसलियों में मुक्का मारा । लेकिन उसे ऐसा लगा जैसे उसका मुक्का पत्थर से टकराया हो । मेजर दरवाजे की ओर दौड़ा लेकिन वह दैत्याकार व्यक्ति उसके पीछे लपका । उसने वढ़कर मेजर के जवड़े पर मुक्का मारा । मेजर चिल्लाया और त्यौराकर गिर पड़ा तथा वेहोश हो गया ।

जव मेजर को होश आया तो उसने देखा कि वह एक टूटे-फूटे कमरे में साफ-सुथरे पलंग पर पड़ा था । उसके सामने एक पुरानी कुर्सी पर वह आदमी वैठा था जो कुसुम से वातें करता रहा था । उसने मेजर को अपनी ओर देखते हुए पाया तो वोला, "आप वहुत भाग्यशाली थे कि मैंने आपकी चीख सुन ली, वरना सरजू ने आपको दूसरी दुनिया में पहुंचा दिया होता ।"

उस आदमी ने वाहर झांकते हुए आवाज दी, "सरजू, इस कमरे में दो-चार मोमवत्तियां जला दो ।"

सरजू मोमवत्तियां लाया तो मेजर ने दोवारा उस आदमी की ओर देखा जिसे भगवान ने असीम शक्ति दी थी । वह कभी सरजू और कभी अपने सामने वैठे व्यक्ति की ओर देखने लगा । दोनों के कद में वहुत थोड़ा अन्तर था । दोनों की सूरत आपस में मिलती थी । कुर्सी पर वैठे हुए आदमी ने मेजर को चकित देखकर कहा, "सरजू मेरा जुड़वां भाई है । इसका असली नाम सूरजप्रकाश है और मैं डा० चन्द्रप्रकाश हूं ।"

जव मेजर उस हवेली से अपनी कार में रवाना हुआ तो वह मुस्करा रहा था । आफिस में सोनिया वड़ी वेकरारी से टहल रही थी । अशोक एक कुर्सी पर वैठा था ।

"क्या आप कल तक सुधा का कंगन उसे दिलवा देंगे ?"

मेजर उसके इस प्रश्न पर हैरान रह गया। 'क्या सुधा ने अपनी सौतेली म को सारी वात वता दी हैं ?'

"आशा तो है कि कल तक सुधा को उसका कंगन मिल जाएगा।" मेजर कहा। फिर पूछा, "आप हमारी वातें क्यों सुन रही थीं ?"

"देखिए, मैं भी परेशान हूं। मुझे सुधा से हार्दिक सहानुभूति है। मैं भी य जानना चाहती हूं कि सुधा को क्या दुःख है।"

"आप इस घर में कव से आईं ?"

"आज से पांच वर्ष पहले।"

"आपकी सेठ जी से पहली भेंट कहां हुई थी ?"

"वंगलौर में, एक क्लव में। वह मुझे अपने साथ अपने होटल में ले गए हमने इकट्ठे ह्विस्की पी। फिर यह भेंट मैत्री और फिर स्थाई प्रणय में परिवर्तित हो गई। वह दो दिन के लिए वंगलौर गए थे, लेकिन दो हफ्ते ठहरे रहे। जव व बंगलौर से लौटे तो मैं उनके साथ थी। हमने बंगलौर के आर्यसमाज में विधिपूर्व विवाह कर लिया था। मैं उसी समय से अपने पति की विश्वासपात्र हूं।"

मेजर दरवाजे पर दस्तक दिए विना महेश्वर के कमरे में चला गया। व पलंग पर लेटा हुआ था, उठकर वैठ गया। उसने मेजर पर क्रोध-भरी निगाह डालत हुए कहा, "आप अनुचित हस्तक्षेप से काम ले रहे हैं। मैं जानता हूं कि आपक रुपया देकर मेरे ससुर ने आपकी सेवाएं प्राप्त की हैं। यह जानने के लिए कि सुध को क्या गम है। मैं आपको अधिक रुपया देने को तैयार हूं, अगर आप हम प इतनी कृपा करें कि मुझे और सुधा को अकेला छोड़ दें। यह जानना मेरा काम कि सुधा को क्या दुःख है।"

"अच्छा आप भी दीवार से कान लगाकर हमारी वातें सुनते रहे हैं!" मेजर ने महेश्वर से पूछे विना कुर्सी पर वैठते हुए कहा, "क्या आप जानते हैं कि सुधा को क्या दुःख है ?"

"मैं जानता हूं या नहीं, इससे आपको कोई सरोकार नहीं।"

"अगर आप मुझे वताने के लिए तैयार नहीं तो मैं जाता हूं। मगर मैं आप को और सुधा को अकेले नहीं छोड़ सकता। मुझे यह मालूम करके रहना है कि सुधा को क्या दुःख है।" मेजर वहां से उठकर वाहर आया तो उसे सुधा एक कम के वाहर मिली। वह मेजर को देखकर मुस्कराई।

कालीन पर खून

मेजर को दफ्तर लौटते हुए खयाल आया कि उसे मजगांव पहुंचकर प्रिंस होटल में सम्पूर्णानन्द तिवारी से मिलना चाहिए। रात के नौ वजे मेजर ने तिवारी के कमरे के दरवाजे पर हाथ रखा तो वह थोड़ा-सा खुल गया। अन्दर से को आवाज न आई। दरवाजा खुला था। मेजर कमरे में पहुंचा तो एक कदम पीछे ह गया। कमरे में फर्श पर तिवारी अपनी वांहें फैलाए हुए पड़ा था। मेजर एक ह निगाह में पहचान गया कि तिवारी की हत्या कर दी गई है।

मेजर दो-तीन मिनट तक तिवारी की लाश की ओर देखता रहा। उस तिवारी को कंगन लौटाने के लिए दो दिन का समय दिया था। और अव वह कंगन की तलाश में उस जगह चला गया था जहां से वापस नहीं आ सकता था। मेजर

उसका भेद खुल गया। वह पकड़ा गया और रिश्वत देकर सजा से बच गया। जज ने उसे बस इतनी सजा सुना दी कि उसकी प्रैक्टिस करने पर रोक लगा दी। डाक्टरों की एसोसिएशन ने उसका नाम अपनी सदस्य-सूची से काट दिया। उसका लाइसेंस जब्त कर लिया गया।"

"आप उसे बहुत अच्छी तरह जानते हैं?"

"हां, मेरी पहली पत्नी उसके साथ रहती है।"

"इस समय सुधा, उसकी मां और डाक्टर चन्द्रप्रकाश में क्या सम्बन्ध है?"

"मैं एक गरीब आदमी था। मेरे मित्र सामान्य लोग थे। मैंने बड़ी मुश्किल से अपनी जिन्दगी बनाई है। मुझे धन आसानी से नहीं मिला। मैंने खून-पसीना एक किया है। मुझे दिन-रात परिश्रम करना पड़ता था। ठेकेदारी का काम, खुशामद, रिश्वत और सम्बन्धों को फैलाने का काम है। मैं अपने इस काम में इस तरह जुटा रहा कि अपनी पत्नी और अपने बच्चों की ओर ध्यान न दे सका। कुसुम मुझसे नाराज रहने लगी और घर में धन आया तो उसने अपना जी बहलाने के कई और रास्ते ढूंढ लिए। क्लबों में जाने लगी। सात वर्ष हुए वह मुझसे अलग हो गई। वह मुझे धोखा देती थी और डा० चन्द्रप्रकाश की जेब भरती थी; जिससे उसकी भेंट एक क्लब में हुई थी। मैंने एक अच्छी बात की कि सुधा को अपने पास रख लिया।"

"जिस हवेली में वह रहता है, क्या वह उसकी अपनी है?"

"हां, उसके पूर्वजों ने हुमायूं के शासनकाल में बनाई थी। लेकिन अब वह टूटी-फूटी अवस्था में है। वह एक धनी परिवार का व्यक्ति था। लेकिन लक्ष्मी तो किसी एक परिवार में स्थाई रूप से रहती नहीं है। डा० चन्द्रप्रकाश का भाई खेती का काम करता है और कुछ फल भी उगाता है। थोड़ी-बहुत गुजर-बसर हो जाती है। डा० चन्द्रप्रकाश का भाई शरीर की शक्ति और बनावट से यूनानी देवता जैसा दिखाई देता है, लेकिन मस्तिष्क की दृष्टि से शून्य है। यही कारण है कि वह डाक्टर का गुलाम है।" सेठ जी ने कहा और फिर कुछ सोचते हुए बोले, "आपने सुधा का पीछा किया था। सुधा वहां गई होगी। क्या उसने उन लोगों को कुछ रुपए दिए थे?"

"जी हां।"

"मैं जानता हूं, सुधा कई वर्ष से अपनी मां को रुपए दे रही है। वह समझती है कि मैं इस बात को जानता नहीं हूं, लेकिन मुझे सब कुछ मालूम है। मेरा तो यह विश्वास है कि डा० चन्द्रप्रकाश और कुसुम सुधा के दिए हुए रुपयों पर जीवित हैं।"

"आपको विश्वास है कि सुधा अपनी मां को रुपया देती है?"

"जी हां, हालांकि सुधा अपनी मां को पसन्द नहीं करती। उसे वह दोषी समझती है। लेकिन मां आखिर मां होती है।"

मेजर ने ह्विस्की का गिलास खत्म किया और उठते हुए बोला, "इस समय महेश्वर कहां है?"

"पिछले कमरे में होगा।"

पिछले कमरे में महेश्वर नहीं था। सेठ जी की दूसरी पत्नी एक नम्बरों वाले बोर्ड के सामने खड़ी थी और उस बोर्ड पर नोकदार छोटे-छोटे तीर मार रही थी।

"खूब!" मेजर ने कहा।

लक्ष्मी ने तेजी से मेजर की ओर मुड़कर देखा। वह मेजर को अपने सामने पाकर बिल्कुल न शरमाई। "क्या आप अक्सर यह अभ्यास करती रहती हैं?" मेजर ने पूछा।

"इसके लिए फुर्सत मिल जाती है।"

मेजर ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

आधे घंटे के बाद मेजर बीमा कार्पोरेशन की मजगां ब्रांच के मैनेजर के सामने बैठा था।

"देखिए, सेठ रतनचंद सरवरिया के परिवार के जेवरों की यह पूरी लि[illegible] है। जिस कंगन की चर्चा आप कर रहे हैं उसका दस हजार रुपये में बीमा कि[illegible] गया था। लिस्ट में सबसे सस्ता यही जेवर है। सेठ रतनचंद ने कुल दो लाख त[illegible] हजार रुपये के जेवरों का बीमा कराया है। एक लाख चालीस हजार के जेवर [illegible] सुधा सरवरिया के नाम से हैं, और नब्बे हजार के जेवर सेठ जी की धर्मपत्नी ल[illegible] के नाम से हैं। आप ये बातें क्यों पूछ रहे हैं?"

"मुझे यह संदेह होता है कि कोई बीमा कार्पोरेशन को धोखा देने की कोशि[illegible] कर रहा है।"

"क्या मतलब?"

"कोई असली जेवरों के नकली नमूने तैयार करवा रहा है। असली जे[illegible] अपने कब्जे में किए जा रहा है और उनकी जगह नकली जेवर रखे जा रहे हैं।"

"ओह, आपका धन्यवाद! आपने हमें समय पर सावधान कर दिया-[illegible] मैनेजर ने मेजर बलवन्त से हाथ मिलाया।

सुधा हांफती हुई आफिस में पहुंची। मेजर ने उसे बैठने का इशारा किय[illegible] उसने सुधा से कंगन मंगवाया था।

सुधा ने बैग से कंगन निकालकर मेज पर रख दिया।

"क्या आप यह जानती हैं कि यह कंगन नकली है?"

"यह कंगन नकली है!" सुधा चकित रह गई।

लेकिन मेजर ने देखा कि यह उसका अभिनय था। उसे कंगन के नक[illegible] होने का अधिक दुःख न हुआ था।

नकली और खूनी कंगन

"हां मैं दावे से कह सकता हूं कि आपका यह कंगन नकली है।" मेज[illegible] कहा, "अगर घर छोड़ते समय आपके बैग में यही कंगन था तो यह क[illegible] नकली है। इसके हीरे आर्टीफिशियल हैं।"

"यह आप क्या कह रहे हैं! मेरे पास उस जौहरी की रसीद है जिससे [illegible] कंगन खरीदा गया था।"

"उस जौहरी का नाम क्या है?"

"पुरुषोत्तमदास द्वारिकादास ज्वेलर्स, गिरगाम।"

"तो फिर कल ठीक दस बजे मुझे गिरगाम में अपने जौहरी की दुकान [illegible] मिलिए। अपने साथ रसीद और कंगन लेती आइए।"

दूसरे दिन सुबह नौ बजे सोनिया को आवश्यक आदेश देकर मेजर गिरग[illegible] रवाना हो गया। उसने पुरुषोत्ताम द्वारिकादास ज्वेलर्स की दुकान में सुधा को अप[illegible] इन्तजार करते पाया। वह मेजर के पहुंचने से पहले ही कंगन अपने जौहरी को दि[illegible] चुकी थी, जिसने स्पष्ट कह दिया था कि वह कंगन नकली है। असली कंगन [illegible] हूबहू नमूना है। सुधा ने मेजर को देखा तो बोली, "आप ठीक कह रहे थे। [illegible] कंगन नकली है। इसे बदल दिया गया है।" सुधा का रंग सफेद पड़ा हुआ था।

"आपके तमाम जेवर बदल दिए गए हैं।" मेजर ने कहा।

थी। उसने साथ वाली दुकान में जाकर दुकानदार से पूछा, "क्या आज आपके सा
वाली दुकान नहीं खुलेगी ?"

"इसका मालिक अभी-अभी इसे बन्द करके कहीं गया है।"

मेजर टेलीफोन डायरेक्टरी देखने लगा। उसे गोपाल कामथ के घर का पत
मिल गया। मेजर ने पता नोट कर लिया।

अपनी कार में बैठकर उसने अपनी ट्रांसमीटर घड़ी को चालू कर दिया
छोटा-सा हेडफोन कान से लगाया और बोला, "एक्स स्पीकिंग, एक्स स्पीकिंग।"

एक मिनट के बाद उसने सुना, "जेड दिस एण्ड, जेड दिस एण्ड।"

"सोनिया, ऐसा करो, तुम और अशोक क्रोकोडायल को साथ लेकर तथ
पूरी तरह तैयार होकर चेम्बूर पहुंच जाओ। बंगले का नम्बर है डब्ल्यू ८१ ए
इस बंगले के पास ही मेरा इन्तजार करना।"

चेम्बूर में बंगला नम्बर डब्ल्यू ८१ ए एक टीले पर बना हुआ था। उसके
आसपास झाड़ियां थीं। वह बंगला पचास-साठ साल पहले बनाया गया था। उसक
बनाने का ढंग पुराना था। मेजर ने बंगले के टीले से दूर अपनी कार रोक दी। बंगले
के आसपास झाड़ियां बहुत घनी थीं। किसी ने विशेष उद्देश्य के कारण ही य
बंगला अपने रहने के लिए चुना था। वे झाड़ियां सुरक्षात्मक बाउण्ड्री का काम
रही थीं। उस बंगले में बिना सोचे-समझे जाना खतरनाक था। मेजर ने कार
बैठे-बैठे अपनी जेब से एक हुक निकाला और उस हुक को अपने कोट के अन्दर ल
हुए तार में फंसा दिया और उस हुक से अपना छोटा रिवाल्वर लटका दिया। दूसर
रिवाल्वर उसने अपने कोट की भीतरी जेब में रख लिया था। उसने अपने बैग
बुलेट-प्रूफ जैकेट निकाली। उसे अपनी कमीज के अन्दर पहन लिया। जब वह पूरी
तरह तैयार हो गया तो कार से बाहर निकला। इसके बाद वह बड़ी सावधानी
साथ बंगले की ओर चल पड़ा। जब वह झाड़ियों में घुसा तो उसने देखा, वहां बहु
अंधेरा था। घनी झाड़ियों में धूप कहीं से भी अन्दर नहीं आ पा रही थी। वह फूंक
फूंककर पांव रखने लगा। वह अभी अधिक दूर नहीं गया था कि उसने अपने पीछ
एक दबी-दबी आवाज सुनी। कोई फुसफुसाते स्वर में कह रहा था, "मेजर साहब
स्वागत है।"

मेजर के बदन में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई। वह उस आवाज को पहचानत
था। वह राजन की आवाज थी। मेजर ने तेजी से अपने कोट की भीतरी जेब
अपना रिवाल्वर निकाल लिया।

"मेजर साहब, यह सारी फुर्ती बेकार है। मैं जिस जगह से आपसे बात क
रहा हूं वहां तक आपके रिवाल्वर की गोली नहीं पहुंच सकती। अपना रिवाल्व
फेंक दीजिए वरना अभी-अभी आप पर गोलियों की बौछार कर दी जाएगी।"

मेजर अंधेरे में मुस्कराया। उसने रिवाल्वर जमीन पर फेंक दिया।

"चमन, बाहर आ जाओ।" राजन ने अपने साथी को आदेश दिया। चम
एक झाड़ी से बाहर निकला। उसके बाद राजन भी एक झाड़ी से बाहर निकल
आया।

मेजर बोला, "मुझे आशा नहीं थी कि आप लोग यहां मौजूद होंगे। मैं त
मि० गोपाल कामथ से मिलने आया था।"

"आप चलिए तो सही, उनसे भी आपकी मुलाकात करायेंगे। लेकिन इस
पहले आपको एक ऐसा दृश्य दिखाया जाएगा जिसे देखकर आप अवश्य ही प्रसन्न
होंगे।"

मेजर को ऐसा लगा जैसे सुधा बेहोश होकर गिर पड़ेगी। उसने बढ़कर सुधा को सहारा दिया और कहा, "घबराइए नहीं, मैं कोशिश करूंगा कि आपके जेवर आपको मिल जायें। अब ऐसा कीजिए, आप अपना यह असली कंगन और ये कानों की नकली वालियां उतारकर एक दिन के लिए मुझे दे दीजिए।" मेजर ने कहा। फिर उसने जौहरी के पास जाकर कहा, "मुझे इस शहर की उन तमाम फर्मो और कारीगरों के नाम और पते चाहिए जो हीरे तराशने का और जेवरों में हीरे जड़ने का काम करते हैं।"

"बड़े शौक से ले जाइए। आपको टाइप की हुई लिस्ट मिल जाएगी।" जौहरी ने कहा और उसने मेजर को लिस्ट दे दी।

वे दोनों जौहरी की दुकान से बाहर निकले। सुधा ने अपना कंगन और वालियां मेजर को दे दीं। मेजर ने वे ज़ेवर अपनी जेब में डालते हुए पूछा, "आपने बाकी जेवर कहां से खरीदे थे?"

"विभिन्न दुकानों से।"

"ऐसा कीजिए, अपने जेवरों को उन दुकानों पर ले जाइए। उन्हें दिखाइए कि वे असली हैं या नकली। संभव है अभी कुछ जेवर नकली जेवरों में न बदले गए हों। शाम को मुझसे मिलिए।"

मेजर सुधा से विदा होकर, जौहरी की दी हुई लिस्ट के अनुसार एक-एक कर हीरे तराशने वाली फर्मों और कारीगरों के पास पहुंचने लगा। चार फर्मो और तीन कारीगरों के यहां उसे बड़ी निराशा हुई। अब वह चौथे कारीगर को वह कंगन दिखा रहा था।

"जी हां, मैं अपने हाथों की बनाई हुई चीज को कभी नहीं भूलता हूं। मेरा गाहक मेरे पास एक कंगन लाया था। उसमें सच्चे हीरे जड़े हुए थे। गाहक ने मुझसे कहा था कि मैं उस कंगन से मिलता-जुलता नकली कंगन बना दूं। उसने मुझे अच्छे दाम दिये थे।"

"क्या आप इस तरह के नकली जेवर तैयार करते हैं?"

"अधिक नहीं। असल में लोग महंगी चीजें खरीद तो लेते हैं, मगर उसके बाद उन्हें रुपयों की जरूरत पड़ती है। वे नहीं चाहते कि उनके परिचितों को पता चले कि उन्होंने घर के जेवर बेच डाले हैं। इसलिए वे नकली जेवर तैयार करवा-कर ले जाते हैं।"

"आपने यह कंगन किसके लिए तैयार किया था?"

"एक नये जौहरी के लिए। उसकी दुकान वर्ली में है। फर्म का नाम है 'चमक दमक'।"

"क्या आप उसके मालिक का नाम जानते हैं?"

"जी हां, उसका नाम है गोपालदस कामथ। मैंने उसके लिए इस तरह का काफी काम किया है।"

"आपने क्या उसकी लिस्ट रखी है?"

"जी हां, मैंने उसके नाम से खाता खोल रखा है।"

वह कारीगर अपनी किताब उठा लाया और उसने कामथ का खाता खोल-कर मेजर की ओर बढ़ा दिया। मेजर ने किताब के उस पृष्ठ पर निगाह डाली तो वह मुस्करा उठा। उस पृष्ठ पर जिन जेवरों के नाम लिखे हुए थे वे सेठ रतनचन्द सरवरिया के परिवार के तमाम जेवरों की जगह नकली जेवर तैयार करवा लिए गए थे।"

मेजर वर्ली पहुंच चुका था। गोपाल कामथ की दुकान 'चमक-दमक' बन्द

कंगन की फोटो देखने लगा।

"मामला बहुत पेचीदा होता जा रहा है!" सोनिया बोली, "रोहिणी के पास जो कंगन था वह उसके पिता मि० मलकानी के पास है। सुधा कहती है कि वह कंगन उसका था। क्या आप मि० मलकानी से वह कंगन ले आए थे?"

"वह मुझे तिवारी के कमरे में मिला था।"

अशोक और सोनिया चले गए, तो मेजर ने फोन का रिसीवर उठाकर शांता का नम्बर मिलाया जो सुधा की सहेली थी और सुधा के घर छोड़ने पर सुधा के घर रात बिताने के लिए रुक गई थी।

दूसरी ओर से किसी पुरुष का स्वर सुनाई दिया, "हैलो!"

"मैं मिसेज शांता से मिलना चाहता हूं।" मेजर ने कहा।

मेज़र को अधिक देर इन्तजार न करना पड़ा। कुछ पल बाद ही दूसरी ओर से एक स्त्री स्वर सुनाई दिया, "हैलो।"

"मिसेज शान्ता! मैं मेजर बलवन्त बोल रहा हूं।"

"ओह, मेजर साहब! मुझे विश्वास था कि आप मुझे ज़रूर याद करेंगे।"

"शान्ता!" मेजर ने जरा बेतकल्लुफी से कहा, "तुम्हें याद होगा कि तुमने मुझसे कहा था कि तुम अपनी पसन्द के नौजवान की तलाश में हो।"

"हां, मुझे अच्छी तरह याद है।"

"क्या मैं नौजवान नहीं हूं, और क्या मैं तुम्हें पसन्द नहीं हूं?"

"ओह, अगर आप इण्टरव्यू देने के लिए तैयार हैं तो मुझे क्या आपत्ति हो सकती है!"

"मैं कल किसी होटल में लंच पर इंटरव्यू देना चाहता हूं। इंटरव्यू तुम लोगी और खाने का बिल मैं दूंगा।"

"नेकी और पूछ-पूछ! चुपड़ी और दो-दो! जुहू पर पाम बीच होटल कैसा रहेगा?" मैं वहां एक कमरा दिन-भर के लिए किराए पर ले लूंगी। बीयर की एक दर्जन बोतलें मंगवा लूंगी।"

पाम बीच होटल

पाम बीच एक आधुनिक होटल था। मेजर की कार उसके कम्पाउण्ड में जाकर रुकी। वह जब कार से बाहर निकलकर होटल के स्वागत-कक्ष में पहुंचा तो उसने देखा कि शान्ता वहां पहले से ही उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह चमड़े के सोफे पर से उठकर उसके पास आई और उसने अपने दोनों हाथ बढ़ाकर मेज़र के हाथ अपने हाथों में ले लिए।

शान्ता मेजर को अपने कमरे में ले गई, जहां एक शानदार मेज पर बीयर की बोतलें और तली हुई मछली की दो प्लेटें रखी हुई थीं। उन्हें जालीदार कपड़े से ढक दिया गया था। शान्ता ने एक चमकता हुआ जग उठाकर बीयर की दो बोतलें खोलीं और जग लबालब भर दिया। फिर उसने एक गिलास अपनी हथेली पर रखकर मेजर को पेश किया। वे गिलास होंठों तक ले जाकर बोले, "चीयर्ज़।"

"मैं अपने भाग्य पर जितना गर्व करूं कम है। मुझे क्या मालूम था कि सुधा का घर से भाग निकलना मेरे लिए वरदान बन जाएगा और मुझे एक ऐसा नौजवान साथी मिल जाएगा जिसकी राह में हर लड़की अपनी आंखें बिछाने के लिए तैयार हो सकती है!"

"ऐसा मालूम होता है कि इंटरव्यू से पहले ही तुमने मुझे सेलेक्ट कर लिया

अपने हाथ मलने लगा। वह तिवारी की ओर से क्यों असावधान हो गया था? वह तिवारी को मछली पकड़ने वाले चारे की तरह प्रयोग करना चाहता था। उसे विश्वास था कि जिन दो आदमियों ने उस पर आक्रमण किया था, वे और उनके साथी तिवारी का पीछा करेंगे; लेकिन उसे यह आशा नहीं थी कि वे तिवारी की हत्या कर देंगे।

मेजर ने झुककर तिवारी की नब्ज टटोली। उसकी हत्या को आधे घंटे से अधिक न बीता था। अगर उसे सेठ जी के मकान में देर न हो जाती तो तिवारी को मरने से बचाया जा सकता था। उसके बराबर ४५ बोर का रिवाल्वर पड़ा था। तिवारी की कमीज का सामने वाला हिस्सा लाल था। किसी ने बहुत ही पास से वार किया था। गोली तिवारी के दिल में घुस गई थी। मेजर ने अपने हाथ पर रूमाल लपेटकर रिवाल्वर उठाया, उसका क्लिप खोलकर देखा। एक ही गोली चलाई गई थी। उसमें साइलेन्सर लगा हुआ था।

मेजर ने तिवारी के कपड़ों की तलाशी ली। उसकी जेब में कोई कंगन न मिला। अब मेजर ने तिवारी के सामान की ओर देखा। किसी ने उसके सारे सामान को खंगाल डाला था।

अचानक उसकी निगाह कमरे के दरवाजे पर पड़ी। दरवाजे के निचले हिस्से पर लकड़ी की एक गांठ थी जो जरा-सी बाहर निकली हुई थी। मेजर दरवाजे के पास पहुंचकर घुटनों के बल झुक गया। उसने लकड़ी की वह गांठ बाहर निकाल ली और उसका चेहरा प्रसन्नता से चमक उठा। गांठ निकलने से दरवाजे में जो जरा-सी खोह पैदा हुई उसमें कपड़े में बंधी हुई कोई चीज रखी थी, मेजर ने उसे बाहर निकाला। कपड़े में कंगन बंधा हुआ था। मेजर ने मन ही मन तिवारी की प्रशंसा की कि वह चीजें छिपाने में बहुत ही कुशल था। मेजर ने वह कंगन अपनी जेब में डाल लिया।

मेजर अपने आफिस में पहुंचा तो अशोक और सोनिया उसका इंतजार कर रहे थे। सोनिया फोटोग्राफर से प्रिंट तैयार करवाकर ले आई थी। अशोक यह जानकारी अपने साथ लाया कि उत्तरी कोलावा में जो काटेज थी उसे एक ठिगने कद की औरत ने किराए पर लिया था और काटेज के मालिक को बताया था कि उसका पति और उसका देवर एक सप्ताह तक आने वाले हैं। एक हफ्ते के बाद उस औरत के कहने के अनुसार उसका पति और देवर वहां पहुंच गए थे। क्योंकि उस औरत ने तीन महीने का पेशगी किराया दे दिया था, इसलिए मालिक ने उससे अधिक बातें नहीं पूछीं। उस औरत ने बस इतना बताया था कि वह एक होटल में वेट्रेस है और उसका पति फौलाद की तिजोरियां बनाने वाली फर्म का एजेण्ट है।

सुधा अपने वायदे के अनुसार समय पर पहुंच गई। मेजर ने उसे उस कंगन का फोटो दिखाया जो रोहिणी के पास था। सुधा ने वह फोटो देखा तो उसकी आंखें फटी रह गईं और उसके मुंह से निकला, "यही तो मेरा कंगन है।"

"क्या आप कंगन पाने के लिए इतनी बेताब हैं?"

"मुझे मेरा कंगन दे दीजिए!"

मेजर ने अपने कोट की जेब में हाथ डाला और कंगन निकालकर सुधा की हथेली पर रख दिया। सुधा ने अपना कंगन देखा तो उसके होंठ फड़फड़ाने लगे और उसकी आंखों में आंसू आ गए।

सुधा जल्दी में थी। मेजर ने उसे रोकना ठीक नहीं समझा और रोहिणी के

का मंगेतर रणधीर कालरा उस रात अपने फ्लैट में नहीं था। और आज सुबह से वह फिर गायब है। मुझसे भूल हो गई। मुझे कल ही उस पर संदेह करना चाहिए था और कुछ आदमियों को उसकी निगरानी पर लगा देना चाहिए था। लेकिन मैंने उसे जिस शोकपूर्ण मुद्रा में देखा था उससे मैंने अनुमान लगाया था कि प्रेमिका की मृत्यु का दुःख इसके लिए असह्य है। मैं धोखा खा गया और मैंने यह न सोचा कि वह किसी दूसरी प्रकार का दुःख भी हो सकता है। यानी प्रेमिका की हत्या करने का दुःख।"

इतने में एक सब-इंस्पेक्टर वहां आया। उसने एड़ियां जोड़कर अपने उच्च अधिकारी को सैल्यूट दिया और बोला, "हुजूर, रणधीर मिल गया है। वह पागल हो चुका है। वह संगम बिल्डिंग की छत पर चढ़ा हुआ है। संगम बिल्डिंग की दो मंजिलें अभी बन रहीं हैं। उसके हाथ में पिस्तौल है। वह गोली से एक आदमी को घायल भी कर चुका है। उस पर काबू पाने के लिए बहुत-से आदमियों की आवश्यकता है।"

"आपने बिल्डिंग का क्या नाम लिया, संगम?" मेजर ने पूछा।

"जी हां।"

"वहां तो मैंने फ्लैट खरीदा है। आओ चलें।" मेजर बोला।

पुलिस की तीन जीपें, जिनमें सशस्त्र कांस्टेबल थे, संगम बिल्डिंग की ओर रवाना हुईं। उनके पीछे मेजर की कार थी।

संगम बिल्डिंग के आसपास कोई भी नहीं था। लोगों की भीड़ उस बिल्डिंग से कुछ दूरी पर जमा थी। सड़क पर एक आदमी गिरा पड़ा था और अपनी टांग को दबाता चीख रहा था।

मेजर ने इंस्पेक्टर वर्मा से कहा, "मेरा विचार है कि वह एक गोली चला चुका है। उसके पिस्तौल में पांच और गोलियां होंगी। हमें बिल्डिंग के पास जाने से डरना नहीं चाहिए। लेकिन कई टुकड़ियों में बंटकर बिल्डिंग के चारों ओर फैल जाना चाहिए। बस, इतनी सावधानी रखनी चाहिए कि हम रणधीर की पिस्तौल की मार से दूर रहें। हमें कभी-कभी थोड़ा-सा आगे बढ़कर गोली भी चलानी चाहिए ताकि रणधीर गोली का उत्तर गोली से दे और इस तरह उसकी सारी गोलियां खत्म हो जाएं। मेरा विचार है कि रणधीर ने ऊपर जाने वाली सीढ़ी का आखिरी दरवाजा बन्द कर रखा होगा ताकि कोई सीढ़ी के रास्ते उस तक पहुंचने न पाए। इसलिए सीढ़ी पर चढ़ना बेकार है। लेकिन बिल्डिंग के साथ जो पाड़ लगी हुई है, मैं उससे ऊपर पहुंचने की कोशिश करता हूं। इस तरह मैं सुरक्षित रहूंगा। क्योंकि मैं फ्लैटों के आगे बढ़े छज्जों की आड़ में रहूंगा।"

पुलिस के आदमी चार टुकड़ियों में बंट गए। वे मेजर की हिदायत के अनुसार बिल्डिंग के चारों ओर फैल गए। चारों टुकड़ियां बारी-बारी अपनी बन्दूकों से इस तरह गोली चलातीं कि रणधीर के न लगे, मगर उसके पास से सरसराती निकल जाए। रणधीर विचित्र स्थिति में फंस गया। उसने देख लिया था कि मेजर पाड़ पर चढ़ रहा था। वह मेजर पर गोली चलाना चाहता था। लेकिन उसे मेजर छज्जे की आड़ से बाहर निकलता हुआ दिखाई न दे रहा था।

मेजर ने चौथी मंजिल पर पहुंचकर जोर से आवाज दी, "चारों टुकड़ियां अब एक साथ गोली चलाएं। गोलियां रणधीर के सिर के ऊपर से गुजर जानी चाहिएं।"

उसकी आज्ञा का पालन किया गया। जब एक साथ गोलियां चलीं तो रणधीर बौखला गया। उसने भी अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दीं और जब उसका पिस्तौल खाली हो गया तो उसने उसे नीचे फेंक दिया और स्वयं सिर के बल जमीन

है !" मेजर ने शान्ता से कहा ।

"कोहनूर हीरे को चुना नहीं जाता ।"

"शान्ता, तुम मुझे यह बताओ कि महेश्वर दयाल कमरिया कैसा युवक है ? क्या वह तुम्हें आकर्षक नहीं लगता ?"

"आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं उसे पसन्द करती हूं ?"

'तुम भूल रही हो कि मैं जासूस हूं । सुधा क्योंकि अपने पति को पसन्द नहीं करती इसलिए यह बहुत ही स्वाभाविक है कि पति किसी दूसरी स्त्री की ओर आकर्षित हो जाए । यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि निकटता प्रेम को बढ़ावा देती है । महेश्वर के निकट तुमसे अधिक और कौन हो सकता है ?'

"नहीं, आप मुझे धोखा नहीं दे सकते । मैं अब समझ गई हूं कि आप मुझसे क्यों मिलना चाहते थे । सुधा ने कुछ रुपये देकर आपको यह काम सौंपा है कि आप यह मालूम करें कि महेश्वर और मेरे बीच किस सीमा तक सम्बन्ध बढ़ गए हैं ।"

"यह तुम गलत कह रही हो ।"

"मुझे बनाओ नहीं, सुधा ने तुम्हें सब कुछ बता दिया होगा । जाओ और सुधा से जाकर कह दो कि पार्टी की रात को जो कुछ हुआ था, उससे पहले कभी नहीं हुआ था ।"

"क्या हुआ था ?" मेजर ने पूछा ।

"आप सब-कुछ जानते हैं ।" नाराज होते हुए भी शान्ता मेजर को 'तुम' कहकर सम्बोधित करने से हिचकिचा रही थी, "सुधा मेरी सहेली है और जानती है कि जब से मैं अपने पति के पास नहीं गई, तब से मैं नौजवानों पर डोरे डालती रहती हूं । पार्टी वाली रात को मैं कुछ ज्यादा पी गई थी और मैंने महेश्वर को अपने निकट लाने की कोशिश की थी । लेकिन वह मेरी पहली और अन्तिम कोशिश थी । सुधा ने हम दोनों को देख लिया था । इसीलिए वह घर से भाग खड़ी हुई थी ।" और फिर उसने बीयर का गिलास खाली करते हुए कहा, "महेश्वर कुछ अपनी ही उलझन में उलझा हुआ है और उस उलझन से सुधा भी परिचित नहीं है ।"

"वह उलझन क्या है ?"

"महेश्वर समझता है कि वह बिक गया है । सुधा और उसके पिता सेठ रतनचंद उसे अपनी जायदाद समझते हैं । इस अहसास के कारण वह बहुत ही परेशान रहता है । सुधा उसकी इस परेशानी को नहीं जानती । उसने मुझे महेश्वर से हंसी-मजाक करते हुए देखा तो जल-भुनकर रह गई, और कुछ मिनट बाद घर से गायब हो गई । मैं अपने-आप को क्षमा न कर सकी और स्वयं को सुधा के भागने का कारण समझने लगी । मेरा मन कहता रहा कि अगर इस हालत में सुधा कुछ कर बैठी या उसके साथ कोई दुर्घटना हो गई तो फिर मैं जीवन-भर पछताती रहूंगी ।"

मेजर बहुत प्रसन्न था । वह जो बात मालूम करने के लिए आया था उसे मालूम हो चुकी थी । उसने उठकर अपना गिलास फिर बीयर से भर लिया ।

खाने का बिल चुकाने के बाद मेजर पाम बीच होटल के बाहर निकला और अपनी कार में बैठकर बांदरा पहुंचा । संयोग से इंस्पेक्टर राजेन्द्र वर्मा वहां मौजूद था । मेजर ने उसे अपना परिचय दिया । राजेन्द्र वर्मा मेजर से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ । "आप रोहिणी की हत्या के केस में कहां तक पहुंचे हैं ?" मेजर ने पूछा ।

"अभी तक तो हम पोस्टमार्टम की रिपोर्ट को ध्यान में रखते हुए [illegible] णाम पर पहुंचे हैं कि जिस किसी ने रोहिणी का गला घोंटा उसने [illegible] थे । लेकिन वे दस्ताने साधारण दस्ताने नहीं थे, क्योंकि साधारण [illegible] कठोरता से गला घोंटना कठिन होता है । दूसरे हमें यह

"यहां उसे दुकान खोले हुए कितना समय हो चुका है?"

"वह यहां दो साल से रह रहा है। वह अर्काट से सुल्तान और चमन को अपने साथ लाया था। राजन और भोला बाद में उसके गिरोह में शामिल हुए।"

"क्या कोई औरत भी उसके गिरोह में शामिल थी?"

"अभी मैं यह मालूम नहीं कर सका। मैंने जो विवरण आपको बताए हैं, वे मुझे अर्काट पुलिस से फोन द्वारा मालूम हुए हैं।"

"आपने अर्काट पुलिस को फोन कैसे किया?"

"गोपाल कामथ के बंगले से कुछ चिट्ठियां मिली थीं जो किसी ने उसे अर्काट से लिखी थीं—किसी मित्र ने जो अर्काट से बम्बई आना चाहता था और कारोबार करना चाहता था।"

"खूब! आपने बड़ी तेजी से काम किया है।" मेजर बोला।

"यह तो ठीक है, लेकिन अब बात आगे नहीं बढ़ रही है। बम्बई के कामथ के जीवन पर अंधेरे का पर्दा पड़ा हुआ है। उसके बंगले के आसपास उसका कोई पड़ोसी नहीं है जिससे उसके बारे में कुछ पता चल सके। हमने आपकी हिदायत के अनुसार आज सुबह उसकी दुकान 'चमक-दमक' की तलाशी ली। कागजात कारोबारी हैं। उनसे उसके व्यक्तिगत जीवन के बारे में कुछ पता नहीं चलता। दुकान के पिछले हिस्से में उसने दोपहर को आराम करने के लिए एक बेडरूम बना रखा था। वहां से एक जनाना रूमाल मिला है, जिस पर रेशमी धागे से कभी पूरा नाम काढ़ा गया होगा। धागा उखड़ जाने से वह नाम पढ़ा नहीं जाता। केवल कुछ अक्षर बाकी रह गए हैं।"

"क्या वह रूमाल आपके पास है?"

"जी हां।" बेडफोर्ड ने एक छोटा-सा गुलाबी रूमाल मेजर के सामने रख दिया। मेजर ने रूमाल पर कढ़ा हुआ नाम पढ़ने की कोशिश की। केवल चार अक्षर रह गए थे—व, ए, के, अ।

"क्या ये रूमाल आज के लिए मैं अपने पास रख सकता हूं?"

"बड़े शौक से।" इंस्पेक्टर बेडफोर्ड ने कहा, "केवल एक दुकानदार ने बताया कि कामथ के पास एक औरत शाम को आती थी। उसका कद ठिगना था। कभी-कभी एक औरत बुर्का पहनकर आया करती थी।"

"ये ही तो वे औरतें हैं जिन्हें हमें खोजना होगा। वे औरतें कामथ के गिरोह से सम्बन्ध रखती हैं। कामथ के गिरोह के कुछ आदमी भी उत्तरी कोलाबा की एक कॉटेज में रहते थे जो ठिगने कद की औरत ने किराए पर ली थी।"

"गोपाल कामथ कहां हो सकता है?" बेडफोर्ड ने पूछा।

"वह अपने मित्रों और उन दो औरतों के यहां हो सकता है।" मेजर ने उत्तर दिया, "कामथ की दुकान पर अपना आदमी तैनात किया था। कामथ उधर नहीं आया, जिसका मतलब है कि वह अपनी दुकान की ओर कभी नहीं आएगा।"

"क्या वह अपनी दुकान के हीरे-जवाहरात छोड़कर जाने की हिम्मत कर सकता है?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"उसकी दुकान में जो जेवर हैं वे सब नकली हैं।"

"मेजर साहब, आपने बहुत अच्छी जानकारियां दी हैं। मैं गोपाल कामथ और उसके गिरोह की तलाश के लिए कुछ आदमी तैनात करता हूं। मैं सफल हो गया तो आपको सूचित करूंगा।"

पुलिस इंस्पेक्टर बेडफोर्ड के चले जाने के बाद विनोद मल्होत्रा ने कहा, "मैं तीन-चार दिन तक इधर बहुत कम आया हूं। सोनिया ने मुझे सारी घटनाएं सुना

की बात ध्यान से सुनने दो।"

"क्या यह जरूरी है कि हममें से कोई आदमी असली जेवरों को नकली जेवरों में बदलवाने के लिए ले जाता रहा हो? क्या घर का कोई नौकर ऐसा नहीं कर सकता?" सुधा ने पूछा और फिर प्यार से अपने पति का हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"घर का नौकर ऐसा नहीं कर सकता," मेजर ने कहा, "आपका कंगन गुम हुआ तो उसकी फौरन तलाश शुरू कर दी गई। मुझपर दो आदमियों ने आक्रमण किया। घर के किसी नौकर को मालूम नहीं हो सका कि कंगन गुम हो गया है। उन दो आदमियों को, जिन्होंने मुझपर आक्रमण किया, किसी ऐसे व्यक्ति ने फोन किया जो यह जानता था कि कंगन गुम हो गया है। उस कंगन को खोजना बहुत जरूरी था, क्योंकि वह कंगन नकली था। उन लोगों के विचार में जिस किसी ने भी कंगन चुराया था वह उसे बेचने के लिए जौहरी के पास ले जाता और इस तरह केवल यही भेद न खुलता कि वह कंगन नकली था बल्कि यह भेद भी खुल जाता कि सेठ जी के घर के सारे जेवर नकली हैं। जिन लोगों ने जेवर बदलवाये थे उनकी बौखलाहट उचित थी। इसीलिए उन्होंने कंगन की खोज बड़ी सरगर्मी से शुरू कर दी थी।"

मेजर की ये दलीलें इतनी ठोस थीं कि सेठ जी खामोश हो गए और गहरे सोच में डूब गए। कुछ मिनट के बाद उन्होंने कहा, "मेजर साहब, मुझे ऐसा मालूम होता है कि मैं आपको छुटकारा नहीं दे सकता। मुझे आपकी सेवाओं की आवश्यकता है।"

"अब मैं आप लोगों से पूछना चाहता हूं। क्या आप में से कोई व्यक्ति गोपाल कामथ, राजन या चमन को जानता है?"

उनमें से कोई भी इन तीनों आदमियों को नहीं जानता था।

मेजर ने कुछ सोचते हुए कहा, "सेठ जी, चेम्बूर में राजन और चमन नाम के दो व्यक्ति मुर्दा पड़े हैं जिनका सम्बन्ध आपके घर के जेवरों से है। वह जौहरी गोपाल कामथ के साथी थे। इस जौहरी के कुछ साथी उसे छोड़कर चले गये या वे किसी मुसीबत में फंस गए हैं। एक बार मैं फिर यह कहना चाहता हूं कि आपके घर के किसी आदमी का इस जौहरी से सम्बन्ध है। चेम्बूर में दो आदमी मारे गए हैं। पुलिस इस सम्बन्ध में मुझसे कुछ पूछताछ करेगी। इस समय तक मैंने आपको और आपके घर के लोगों को इस मामले से दूर रखा है, लेकिन अब मुझे उनको सारा हाल बताना पड़ेगा।"

मेजर अपने आफिस में वापस आया तो उसका अनुमान सही सिद्ध हुआ। चेम्बूर पुलिस स्टेशन का इंचार्ज वेडफोर्ड उसकी प्रतीक्षा कर रहा था और सोनिया से बातें करने में व्यस्त था। संयोग से विनोद मल्होत्रा भी उस समय मौजूद था।

इंस्पेक्टर वेडफोर्ड कुछ जानकारियां प्राप्त करने आया था। उसे पता चला था कि गोपाल कामथ अर्काट से आया था। वहां भी उसकी हीरे-जवाहरात की दुकान थी। वह अय्याश था इसलिए उसका दिवाला पिट गया था। वह दो वर्ष गायब रहा। दो वर्ष के बाद वह फिर अर्काट पहुंचा। इस बार उसके साथ पांच-छः आदमी और थे। उसकी हालत काफी अच्छी थी। उसने दो सालों में क्या किया इस पर से पर्दा नहीं उठ सका। उसके दो साथियों के बारे में पता चला कि वे सजायाफ्ता थे—चमन और सुल्तान।

इंस्पेक्टर वेडफोर्ड ने जब ये बातें बतायीं तो मेजर बहुत [illegible] गोपाल [illegible] कामथ का अतीत अंधकारपूर्ण था, इसलिए सारी घटनाओं को [illegible] हो सकती थी।

दीजिए कि आप यह कंगन मि० मलकानी को आज ही वापस देने के लिए जा रहे हैं। ऐसा करने से आप जानते हैं क्या होगा? सेठ जी के परिवार का वह व्यक्ति, जो गोपाल कामथ से मिला हुआ है, इस कंगन को पाने की कोशिश करेगा और बहुत सम्भव है आपके हत्थे चढ़ जाए।"

आवारा लड़की

सेठ रतनचंद सरवरिया असली कंगन को हाथ में लिए उसे बड़े ध्यान से देख रहे थे। उनकी पत्नी लक्ष्मी, पुत्री सुधा और दामाद महेश्वर की निगाहें भी उस कंगन पर जमी हुई थीं।

सेठ जी ने संदिग्ध निगाहों से अपने दामाद की ओर देखते हुए कहा, "कोई स्त्री तो इस कंगन को उपहार के रूप में रोहिणी को दे नहीं सकती थी, क्योंकि स्त्री को अपने गहनों से बहुत प्यार होता है। कोई पुरुष ही, जो रोहिणी को प्यार करता होगा, उसे यह कंगन उपहार में दे सकता था।" और फिर सेठ जी ने महेश्वर से सीधा प्रश्न किया, "महेश्वर, यह कंगन तुमने तो नहीं दिया था?"

महेश्वर अपने ससुर के प्रश्न पर तिलमिला उठा, "क्या आप मुझे इतना गिरा हुआ समझते हो कि अपनी इतनी सुन्दर पत्नी के होते हुए मैं पराई स्त्री से प्रेम करूं?"

सुधा ने भी अपने पति की ओर संदिग्ध निगाहों से देखा।

"अगर तुमने यह कंगन रोहिणी को नहीं दिया तो मेरे विचार से यह कंगन रोहिणी के पास इस तरह पहुंचा होगा। किसी ने किसी की सहायता करने के लिए किसी को बेच दिया होगा और जिस आदमी ने यह कंगन सस्ते दामों में खरीदा होगा, उसने रोहिणी यानी अपनी प्रेमिका को दे दिया होगा।" सेठ जी ने सुधा की ओर देखा और उससे भी सीधा प्रश्न किया, "सुधा, क्या तुमने अपनी मां की सहायता करने के लिए तो यह कंगन नहीं बेच दिया था?"

सुधा के तन-बदन में आग लग गई। वह झल्लाकर बोली, "मैं अपनी मां की सहायता चोरी का माल बेचकर नहीं करती। मुझे जो खर्च मिलता है वह और बैंक में हिस्से के रुपयों की जो ब्याज आती है उससे मैं अपनी मां की सहायता करती हूं।" सुधा की आंखों में आंसू आ गए और मुंह बिसूरती हुई वहां से उठकर चली गई।

"सेठ जी, यह कंगन मुझे दे दीजिए। यह मेरे पास मि. मलकानी की अमानत है। मैंने उनसे वायदा किया था कि मैं यह कंगन एक दिन के लिए अपने पास रखकर लौटा दूंगा।"

मेजर सेठ जी की कोठी से बाहर निकला तो वह अपने उद्देश्य में किसी हद तक सफल हो चुका था।

लक्ष्मीबाई और सेठ जी ने सुधा के सम्बन्ध में जो संदेह प्रकट किया था वह निरर्थक और निराधार नहीं था। मेजर ने अपनी कार उस होटल इंटरनेशनल के गेट की ओर मोड़ दी। वह काफी पीना चाहता था और एकांत में कुछ सोचना चाहता था।

होटल के अन्दर एक खुले लान में मेजें लगी हुई थीं और मेजों के आसपास स्टील की सुन्दर कुर्सियां पड़ी थीं। मेजर एक खाली मेज के पास कुर्सी पर बैठ गया। सामने स्विमिंग पूल था जिसमें कुछ स्त्रियां और कुछ पुरुष स्विमिंग सूट पहने नहा रहे थे। मेजर ने कॉफी का आर्डर दिया और फिर काफी पीते हुए अपने विचारों में खो गया। अचानक उसे ऐसा महसूस हुआ कि कोई उसके पास खड़ा है और उसके बदन से पानी की बूंदें टपक रही हैं। वह सुधा की सहेली शान्ता थी जिसे मेजर एक बार

दी हैं।"

मेजर बोला, "पिछले तीन-चार दिनों में कितने खून हो चुके हैं, और दुश्मन अभी तक निगाह से ओझल है।"

मेजर अशोक की ओर मुंह फेरकर बोला, "दुश्मन के दो ही ठिकाने ऐसे हैं जिन्हें हम जानते हैं। दुकान 'चमक-दमक' का जहां तक सम्बन्ध है, दुश्मन उसे हमेशा के लिए छोड़ चुका है। लेकिन चेम्बूर के बंगले में वह शायद एक बार आए, यह मेरा अनुमान है। मैं समझता हूं कि सेठ रतनचंद सरवरिया के घराने के सारे जेवर अभी तक नहीं बेचे गए हैं। गोपाल कामथ से हमारी मुठभेड़ उस बंगले में नहीं हो सकती थी। बहुत संभव है कि जब हमने उस बंगले पर धावा बोला था तो उस समय वह वहीं मौजूद रहा हो और वहां से फरार होने पर वह अपने साथ सारी चीजें न ले जा सका हो। कुछ चीजें वहां छोड़ गया हो। वहां पुलिस तैनात है। इसलिए वह दो-एक दिन तक गायब रहेगा और फिर पुलिस की चौकसी में कमी होने पर वह वहां आ सकता है। पुलिस असावधान हो सकती है, लेकिन हम असावधानी से काम नहीं ले सकते। अशोक, तुम्हें वेश बदलकर दो दिन तक उस बंगले के चारों ओर पहरा देना होगा।" अशोक उठकर चला गया।

अशोक के जाने के बाद मेजर ने सोनिया से कहा, "आज मैं एक और परिणाम पर पहुंचा हूं। रोहिणी का सम्बन्ध या तो गोपाल कामथ से था या उसके गिरोह के किसी आदमी से था। वरना असली कंगन रोहिणी के पास कैसे पहुंच सकता था? वे लोग सुलतान और भोला की तलाश में हैं। मुझे संदेह होता है कि सुलतान और भोला जान-बूझकर गायब हो गए हैं। उनमें से किसी ने शायद कंगन चुराकर रोहिणी को दिया होगा और जब गोपाल कामथ को कंगन की चोरी का पता चल गया होगा तो वे अपने सरगना के क्रोध और भयानक दंड से बचने के लिए फरार हो गए होंगे। लेकिन एक टेढ़ा सवाल बाकी रह जाता है कि रोहिणी की हत्या किसने की? हत्यारा अपने साथ रोहिणी का कंगन क्यों नहीं ले गया? इससे मैं यह अनुमान लगा सकता हूं कि रोहिणी को या तो किसी ऐसे आदमी ने मारा है जो यह नहीं जानता था कि रोहिणी के पास एक कीमती कंगन भी है। रोहिणी की हत्या के दो ही उद्देश्य हो सकते हैं। रोहिणी के प्रेमी के प्रतिद्वन्द्वी ने उसे मारा या फिर गोपाल कामथ ने उसकी हत्या कराई कि उसके गिरोह का एक सदस्य किसी दिन रोहिणी के प्रेम में पड़कर गिरोह के सर्वनाश का कारण न बन जाए। बहरहाल अभी रोहिणी की हत्या का उद्देश्य स्पष्ट नहीं हुआ है। अगर गोपाल कामथ को यह पता चल चुका है कि उसके खजाने से असली कंगन चोरी हो चुका है तो वह उस कंगन की खोज में जरूर होगा।"

"अगर वह कंगन की खोज में है तो उसके लिए जाल बिछाया जा सकता है।" विनोद मल्होत्रा ने राय दी।

"जाल कैसे बिछाया जा सकता है?" मेजर ने पूछा।

"बड़ी आसानी से बिछाया जा सकता है। सोनिया ने मुझे बताया है कि असली कंगन आपके पास है। मैं सारी कहानी सुनकर विश्वासपूर्वक यह कह सकता हूं कि सेठ रतनचंद सरवरिया के घर में एक ऐसा आदमी मौजूद है जो गोपाल कामथ से मिला हुआ है। आपने रोहिणी से मिलने वाला कंगन अभी तक सेठ जी के परिवार के किसी सदस्य को दिखाया तो नहीं?"

"अभी नहीं।" मेजर ने कहा।

"आप सेठ के यहां जाकर उनके परिवार के लोगों को अस[illegible]
और यह भी बता दीजिए कि आपने यह कंगन कहां से प्राप्त कि[illegible]

चावियां चमन को दे दीजिए।"

मेजर ने जेब से कार की चावी निकालीं और चमन को दे दी।"

"अब यह बताइए सुल्तान और भोला कहां है?"

"तुम जरा उनका हुलिया बताओ।"

"सुल्तान ठिगने कद का है। भोला बांस की तरह पतला।"

"शायद तुमने दोनों को मेरा पीछा करने का काम सौंपा था। अफसोस है कि उनके वारे में मुझे कुछ पता नहीं।"

चमन दोबारा अन्दर आ गया। उसने राजन से कहा, "मैंने विरजू को भेज दिया है।"

"जाओ और चिपकने वाली टेप उठा लाओ। मेजर साहब, सामने पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ जाइए।" राजन ने आदेश दिया।

मेजर वड़ी सतर्कता से उस कुर्सी की ओर बढ़ा और फिर उसने कुर्सी पर बायां हाथ रखकर तेजी से दाहिने हाथ से कोट के अन्दर हुक से लटका हुआ रिवाल्वर वाहर निकाल लिया और राजन पर गोली चला दी। राजन को यह आशा न थी कि मेजर के पास दूसरा रिवाल्वर भी हो सकता है। गोली उसकी नाक पर लगी। वह औंधे मुंह फर्श पर जा गिरा। उसका रिवाल्वर हाथ से छूटकर दूर जा पड़ा। मेजर ने अपनी नजरें सामने के दरवाजे पर जमा दीं। उसे दरवाजे के पीछे दौड़ते हुए कदमों की आहट सुनाई दी और साथ ही दूर से क्रोकोडायल के भौंकने की आवाज भी आई। मेजर मुस्कराया। सोनिया और अशोक पहुंच चुके थे। तभी चमन हाथ में पिस्तौल लिए दरवाजे में दिखाई दिया। मेजर ने उसके सीने पर गोली चलाई। वह दरवाजे ही में ढेर हो गया।

पांच मिनट के बाद सोनिया, अशोक और क्रोकोडायल उस कमरे में पहुंच गए। उनके आगे-आगे एक आदमी था जिसने अपने हाथ सिर से ऊपर उठा रखे थे। मेजर समझ गया कि वह विरजू था। क्रोकोडायल ने मेजर को देखा तो दौड़कर उसके पैरों में लोटने लगा और दुम हिलाने लगा।

अशोक रिवाल्वर ताने विरजू के पीछे खड़ा था। उसने पूछा, "इसके वारे में क्या आज्ञा है?"

"इसे इधर ले आओ।" मेजर ने कहा और फिर सोनिया से बोला, "चमन मरा पड़ा है। उसके हाथ से टेप निकाल लाओ।"

सोनिया टेप ले आई तो मेजर ने विरजू को कुर्सी पर बैठा दिया, और उसके हाथ-पांव टेप द्वारा कुर्सी से बांध दिए।

पुलिस को सूचित कर देने के बाद मेजर ने अपने दफ्तर में सोनिया और अशोक से कहा, "अब हम सबको बहुत अधिक सावधान रहना होगा, क्योंकि दुश्मन का गिरोह कुछ टूट चुका है। और कुछ टूट रहा है। ऐसी हालत में इस गिरोह का बौखला उठना असंभव नहीं। अशोक, तुम्हें आज ही वर्ली जाना होगा। वहां बाजार में जवाहरात की एक दुकान है। नाम है 'चमक-दमक'। बड़ी सावधानी के साथ उस दुकान की निगरानी करनी होगी। रात के दो बजे तक। और फिर मौका पाकर यानी अगर उस दुकान में कोई मौजूद न हो तो मास्टर चावी से दुकान में घुसना पड़ेगा। उस दुकान से दो-तीन ज़ेवर चुराकर लाने होंगे। समझ गए ना? और हां, तुमने वह रिपोर्ट तो दी ही नहीं कि उत्तरी कोलावा की काटेज जिस औरत ने किराये पर ली थी, वह कौन है और कहां रहती है?"

"उस औरत ने अपना नाम और पता झूठा बताया था। उससे अपना नाम

वे बंगले में पहुंच गए। अन्दर रोशनी का बहुत अच्छा प्रबन्ध था। दिन को भी वहां बत्तियां जलाए रखनी पड़ती थीं, क्योंकि खिड़कियों और दरवाजों पर मोटे-मोटे पर्दे लगे हुए थे।

चमन एक कमरे का दरवाजा खोलने के लिए बढ़ा तो राजन ने कहा, "नहीं चमन, अभी मेजर साहब को ड्राइंग रूम में नहीं बैठाया जाएगा। पिछले बाथरूम की ओर चलो।"

बाथरूम के पास पहुंचकर राजन ने कहा, "मेजर साहब, इसमें झांककर देखिए और अपने दोनों हाथ अपने सिर से ऊपर रखिए।"

मेजर ने उसकी आज्ञा का पालन किया और उसमें झांककर देखा। बाथरूम में एक टब था और उस टब में वह कारीगर पड़ा था जिसने 'चमक-दमक' नाम की फर्म के मालिक गोपाल कामथ के लिए नकली जेवर बनाए थे।

उस कारीगर की टांगें टब से बाहर निकली हुई थीं। उसके पैरों में उसके भीगे हुए मोजे और जूते थे, टब पानी से भरा हुआ था और उस कारीगर का चेहरा उस पानी में डूबा हुआ था।

मेजर गहरी सोच में डूबा हुआ था। राजन और चमन जिस गिरोह से सम्बन्धित थे वह किस तेजी से काम करता था।

"आप क्या सोच रहे हैं? देखिए, हम आपसे एक सौदा करना चाहते हैं। आपको यहां से सकुशल जाने की आज्ञा दे दी जाएगी, लेकिन आपको वह कंगन हमारे हवाले करना होगा जो आपने सुधा के बैग से निकाल लिया था और यह बताना होगा कि हमारे दो साथी सुल्तान और भोला कहां हैं?"

"आपको यह मालूम होना चाहिए कि मैं चोर नहीं हूं। सुधा का कंगन मेरे पास नहीं है। मैं खुद उसे ढूंढ़ रहा हूं। आपके साथी सुल्तान और भोला को मैं जानता नहीं हूं।"

"यह जिद आपके लिए खतरनाक सिद्ध होगी। आपके बदन में एक नहीं चार गोलियां दाखिल कर दी जाएंगी। यहां से आधे मील की दूरी पर पत्थरों की खान है। वहां पत्थर पीसे जाते हैं। आपकी लाश को एक बड़े पत्थर से बांध दिया जाएगा। और आप जब उस पत्थर के साथ पिस जाएंगे तो कोई पहचान नहीं सकेगा।"

"तुम लोगों को इतना कष्ट न करना पड़ेगा। मुझे सम्पूर्णानन्द तिवारी की तरह मारा नहीं जा सकता।"

"सम्पूर्णानन्द तिवारी? वह कौन था?" राजन ने पूछा।

"जिसे तुमने प्रिंस होटल में गोली से मार डाला था।"

"आपको धोखा हुआ है कि हमने किसी तिवारी को मारा है।" फिर राजन ने चमन से कहा, "चमन, इनके कपड़ों की तलाशी लो।"

चमन मेजर की जेबें टटोलने लगा और फिर उसने मुड़कर राजन से कहा, "इनकी जेबों में कुछ नहीं है।"

राजन ने कहा, "हमारे आदमी ने हमें बताया है कि आप जब गौरीशंकर के यहां गए थे तो आपने गौरीशंकर को वह कंगन दिखाया था। कंगन आपके पास है। गौरीशंकर ने भी इस बात की पुष्टि कर दी थी कि आपने कंगन उसे दिखाया था।"

"वह कंगन मेरी कार की अगली सीट के खाने में है।"

"चमन, बिरजू को अच्छी तरह समझाकर भेज दो कि वह इनकी कार से कंगन निकाल लाए।" और फिर राजन ने मेजर की ओर मुड़कर कहा, "कार की

"जी हां, यह उसकी मूर्खता थी कि मुझसे डरती रही। अब उसने मुझे यह बात बता दी है और उसका मन हल्का हो गया है। मामूली बात थी। मैं बीमा कारपोरेशन को फोन कर दूंगा, वह कंगन ढूंढ़कर देगी या मुझे रुपया देगी।"

"मैं आपकी बेटी का कंगन ढूंढ़ चुका हूं, वह नकली है।"

"नकली है?" अब सेठ जी अपने पलंग पर सीधे होकर बैठ गए, "मेरी बेटी के सारे जेवर सच्चे हैं। आपको धोखा हुआ है।"

"आपकी बेटी के तमाम जेवर नकली हैं।" मेजर ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा, "असली जेवर चुरा लिए गए हैं, और उनकी जगह नकली जेवर रख दिए गए हैं। इस तरह आपकी पत्नी के भी सारे जेवर बदल दिए गए होंगे।"

अगले दिन सुबह साढ़े नौ बजे मेजर सेठ रतनचंद सरवरिया के यहां पहुंचा तो सेठ जी अपने पूरे परिवार के साथ मौजूद थे। मेजर अपने साथ कुछ जेवर लाया था जो अशोक ने रात को जेवरों की दुकान 'चमक-दमक' से चुराए थे।

सेठ जी की कोठी के ड्राइंग रूम में मेजर ने उन सबको कल की सारी घटना सुनाई और जब उन लोगों को यह पता चला कि चेम्बूर के बंगला नम्बर डब्ल्यू ८१ए में तीन लाशें पड़ी थीं और ऐंग्लो इंडियन पुलिस इंस्पेक्टर बेडफोर्ड तफतीश में लगा हुआ है, तो उनमें से किसी ने आश्चर्य प्रकट नहीं किया। उन सबको केवल एक ही उत्सुकता थी, एक ही चिन्ता थी कि उनके घर के असली जेवर चुरा लिए गए थे।

सेठजी ने अपनी पत्नी से कहा, "तुम आज ही अपने जेवर उस जौहरी के पास ले जाओ जिससे वे जेवर खरीदे गए हैं।" उसके बाद सेठ जी ने मेजर से कहा, "मैं अभी तक यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि मेरे घर के सारे जेवर नकली हैं!"

"हाथ कंगन को आरसी क्या?" मेजर ने कहा, "सुधा से पूछ लीजिए कि उसके जेवर नकली हैं या नहीं।"

सुधा ने समर्थन में सिर हिला दिया।

"मगर यह कैसे सम्भव हो सकता है?" सेठ जी ने पूछा।

"क्या आप उसका नाम नहीं ले सकते?"

"मेरा आशय है कि आप लोगों में से कोई व्यक्ति ऐसा करता रहा है। मैं समझता हूं, सेठ जी, कि आप ही ऐसा करते रहे हैं। सम्भव है आपका कारोबार अच्छा न हो और आपको रुपये की जरूरत हो।" मेजर ने कहा।

सेठ जी की पत्नी मेजर के इस आरोप पर बिगड़ गई। उसने भड़ककर कहा, "आपको इन पर इस तरह का आरोप लगाने का साहस कैसे हुआ? क्या ये ऐसी घटिया हरकत कर सकते हैं? आप···?"

सेठ जी ने हाथ के इशारे से अपनी पत्नी को चुप करा दिया और बोले, "आप ठीक कह रहे हैं। रुपये की जरूरत मुझसे ऐसा काम करा सकती थी, लेकिन मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि मेरा कारोबार बहुत अच्छा चल रहा है।"

मेजर ने अपने सामने बैठे हुए लोगों पर नजर डाली और कहा, "अगर आपने ऐसा नहीं किया तो आपकी पत्नी ने, आपके दामाद ने या आपकी बेटी ने ऐसा किया होगा।"

महेश्वर उठकर खड़ा हो गया। उसने अपनी मुट्ठियां कसकर बांध ली, "मेजर साहब," उसने क्रोधित स्वर में कहा, "मैं शुरू से आपकी तमाम हरकतों को नापसन्द करता रहा हूं।"

"महेश्वर, तुम्हें मेरे तमाम कारोबार पर कंट्रोल करना है। अगर तुम अपने आप पर कंट्रोल नहीं कर सकोगे, तो फिर कारोबार कैसे चलेगा? मुझे मेजर साहब

कैथरीन बताया था और कहा था कि वह ग्रैंड होटल में वेट्रेस है। इस नाम की कोई औरत ग्रैंड होटल में वेट्रेस नहीं है।"

जाल बिछाया गया

मि० मलकानी पर एक के बाद दूसरी दो दुखद दुर्घटनाओं का प्रभाव अभी तक था। मेजर को अपने मन की बात होंठों तक लाने में कठिनाई हो रही थी। वह उनसे एक दिन के लिए रोहिणी का कंगन अपने साथ ले जाना चाहता था। अंत में उसने हिम्मत करके अपने मन की बात कह डाली।

मि० मलकानी उठे और दूसरे कमरे में चले गए और रोहिणी का कंगन ले आये। उन्होंने कंगन मेजर को देते हुए कहा, "दो बातें मेरी समझ में नहीं आ रही हैं। मैं समझता हूं कि रणधीर कालरा की आर्थिक स्थिति ऐसी न थी कि वह रोहिणी को दस हजार रुपए का कंगन दे सकता। और दूसरी बात जो मेरे दिल में कांटे की तरह चुभ रही है वह यह है कि अगर हत्यारे ने रोहिणी की हत्या इस कंगन के कारण नहीं की, तो फिर किस शत्रुता के आधार पर की?"

मेजर जो अपने मस्तिष्क में इन्हीं प्रश्नों को दोहरा रहा था, बोला, "अगर आपका यह अनुमान सही है कि रणधीर रोहिणी को दस हजार रुपए का कंगन नहीं दे सकता था, तो क्या रोहिणी के पास अपना इतना रुपया था कि वह इतना कीमती कंगन बनवा सकती थी?"

"नहीं, वह तो जितने रुपए लाती थी, मुझे दे देती थी।"

"इससे सिद्ध होता है कि किसी धनी आदमी ने रोहिणी को यह कंगन दिया।" मेजर ने कहा।

जब सेठ रतनचंद सरवरिया के नौकर ने रात के साढ़े दस बजे उनको आ यह बताया कि मेजर उनसे मिलने के लिए आया है तो वह बहुत हैरान हुए। सोने की तैयारी कर रहे थे और अपने बैडरूम में थे, "मेजर साहब को यहीं आओ।"

मेजर सेठ जी के बैडरूम में पहुंचा। सेठ जी के इशारा करने पर वह उन सामने बैठ गया। "कहिए, इतनी रात गए आपको मुझसे मिलने की क्या जरूरत पड़ी?" सेठ जी बोले, "मैं समझता हूं कि आपको अब हमारे लिए इतनी भाग-दौ करने की जरूरत नहीं। मेरी समस्याएं हल हो चुकी हैं। मैं अपने घर के जिन लो से प्यार करता हूं वे मुझसे कुछ बातें छिपाते रहे थे और मैं परेशान था। लेकिन अ उन्होंने दिल खोलकर मेरे सामने रख दिया है, इसलिए मेरी सारी परेशानियां दूर गई हैं।"

"आपकी परेशानियां दूर हो गई हैं?"

"महेश्वर ने बताया कि वह क्यों अप्रसन्न और दुखी था।"

"यानी वह इसलिए दुःखी था कि उसे इस घर का सदस्य नहीं माना जात था और वह अपने-आपको अपने ससुर का नौकर समझता था।" मेजर ने स्प किया।

"अगर आपको यह बात मालूम थी तो आपने मुझसे क्यों छिपाई?" कटु स्वर में बोले, "क्या मैं पूछ सकता हूं कि आप को और क्य

"मुझे बहुत कुछ मालूम है। क्या आपकी बेटी ने उसका कंगन गुम हो गया है?"

जो प्यार चुपचाप किया जाता है, थोड़े दिन का होता है। प्यार करते हुए बातें की जाएं तो प्यार की घड़ियां लम्बी हो जाती हैं। मैं प्यार को घड़ियों को लम्बा बनाना चाहता हूं। इसलिए मैंने तुमसे यह बात पूछी थी, लेकिन तुम तो बिगड़ गईं।" यह कहते हुए मेजर ने पूरे अभिनय से काम लेते हुए बड़े प्यार से शान्ता की ओर देखा।

मेजर का तीर निशाने पर लगा। शान्ता फिर पास आ बैठी और बोली, "मैं गोपाल कामथ को जानती हूं। वह एक जौहरी है और शायद वर्ली में उसकी दुकान है। मैं एक बार सुधा के साथ उसके पास आ गई थी और...।"

"और क्या?"

"और मैंने सोचा था कि अगर गोपाल कामथ तैयार हो तो मैं उसे अपने लिए चुन सकती हूं। उसमें अधिक तो नहीं, लेकिन कुछ ऐसी विशेषताएं थीं जो मैं अपनी पसन्द के युवक में चाहती हूं।"

"जैसे उसमें क्या विशेषताएं थीं?" मेजर ने बात आगे बढ़ाने के उद्देश्य से बहुत ही भोलेपन से पूछा।

"एक तो उसकी उम्र चालीस वर्ष से अधिक नहीं है। दूसरे वह काफ़ी पढ़ा-लिखा है। शानदार कपड़े पहनता है और बहुत अच्छा पियक्कड़ है। कितनी ही क्यों न पी जाए, लड़खड़ाता नहीं है। मेज पर बैठकर बहुत ही दिलचस्प बा करता है। उसे अनगिनत लतीफे याद हैं। इसके अलावा उदार हृदय और खर्ची है।"

"क्या तुम्हें मालूम है कि वह कहां रहता है?" मेजर ने पूछा और अ और शान्ता का गिलास बीयर से भर दिया।

"नहीं, मैं यह नहीं जानती कि वह कहां रहता है?"

"क्या सुधा को भी उसके घर का पता मालूम नहीं है?"

"सुधा शायद जानती है। वह बहुत ही ईर्ष्यालु स्वभाव की स्त्री है द गोपाल कामथ से प्रेम करती है।"

"तुम गोपाल कामथ से कितनी बार मिल चुकी हो

"तीन बार। और वह भी सुधा के साथ।"

"क्या कामथ कभी सरबरिया के घर भी गया था?"

"केवल एक बार।"

"सुधा के साथ तुम कामथ से उसकी दुकान में मिला करती थीं सरी जगह?'

"दो बार उससे होटल 'नेकलेस' में मुलाकात हुई थी।"

मेजर ने शान्ता को सीने से लगाते हुए कहा, "शान्ता, क्या आज मेरे साथ होटल 'नेकलेस' में खाना खा सकती हो?"

"क्यों नहीं!" शान्ता ने मेजर की गर्दन में बांहें डालते हुए कहा

मेजर ने उसे अपने से अलग कर दिया और उठते हुए बोला भूलना नहीं। मैं रात को नौ बजे आऊंगा।"

मेजर रात को नौ बजे शान्ता के पास पहुंच गया। जब वह हो के हाल में एक मेज पर खाना खाने के लिए बैठे तो हाल खचाखच भर

शान्ता और मेजर जिस टेबल पर थे वह एक दीवार के पास विभिन्न खानों का आर्डर देने के बाद शान्ता से पूछा, "क्या तु के किसी बैरे या क्लर्क से परिचित हो?"

"एक क्लर्क है सत्यप्रकाश, लेकिन वह आज दिखाई नहीं दे

मेजर ने एक बैरे को उंगली के इशारे से अपने पास बुल

गच्चा दे चुका था।

"आपको कैसे पता चल गया कि मैं यहां हूं ?"

"आप भूल रही हैं कि मैं जासूस हूं।" मेजर ने यों ही बात बनाते हुए कहा। और फिर हंसते हुए बोला, "घबराइए नहीं, मैं आपकी तलाश में यहां नहीं आया हूं। मैं जरा अपना दिल बहलाने के लिए इधर निकल आया।"

"दिल बहलाने के लिए ? देखिए आप धोखा तो नहीं दे रहे ?"

"बिल्कुल नहीं।" मेजर ने गंभीरता से कहा।

मेजर के सामने वाली कुर्सी पर बैठते हुए शांता बोली, "आपने मुझे एक बार धोखा दिया था कि आप वह नौजवान बनने के लिए तैयार हैं जिसकी मुझे तलाश है। और मैं हूं कि अब भी आपके दिए हुए धोखे में फंसी हुई हूं।"

"क्या अभी तक वह नौजवान नहीं मिला ?" मेजर ने पूछा।

"जी हां, और अब तो मैंने अपनी तलाश की स्पीड तेज कर दी है। हर होटल में एक-दो दिन के लिए ठहरती हूं। यह दूसरा होटल है जहां मैं आई हूं। कल तीसरे होटल में चली जाऊंगी। आइए, आप यहां बैठे क्या कर रहे हैं ? मेरे कमरे में चलिए। शायद मैं आपका दिल बहलाने में सफल हो जाऊं।"

"चलिए।" मेजर ने उठते हुए कहा और वेटर को ढूंढ़ने लगा जो काफी लाया था। वह बिल चुकाकर जाना चाहता था।

"छोड़िए, आपका बैरा कोई दूसरा आर्डर लेने गया होगा। मैं अपने कमरे से मैनेजर को फोन कर दूंगी कि वह काफी का बिल मेरे हिसाब में जोड़ दे।"

शान्ता ने होटल में दो कमरों वाला फ्लैट ले रखा था।

जब वह अपने पिछले कमरे से कपड़े बदलकर आई तो मेजर उसे देखता रह गया। उसने बेदिग सूट उतारकर जालीदार नाइलोन का गाउन पहन लिया था।

वह अब शांता से भलीभांति परिचित हो चुका था। उसने एक रोमांस-प्रिय युवक का अभिनय करने का निश्चय कर लिया।

शान्ता पिछले कमरे से निकलकर एक अलमारी के सामने जा खड़ी हुई। उसने अलमारी से बीयर की दो बोतलें और दो गिलास निकाले और मेजर के सामने इस तरह बैठ गई जैसे मेजर एक चित्रकार हो और वह स्वयं एक माडल हो।

शान्ता ने कनखियों से मेजर की ओर देखा। मेजर ने भी अपनी आंखों में प्यार के भाव पैदा कर लिए। शान्ता को विश्वास हो गया कि मेजर उसके सौन्दर्य और अदाओं पर लट्टू हो चुका है। वह उठकर मेजर के पास जा बैठी। मेजर ने उसकी कमर में अपना हाथ डाल दिया। जब शान्ता ने मेजर की बांह की गर्मी महसूस की तो उसका रहा-सहा संदेह भी जाता रहा। शान्ता ने बीयर से दो गिलास लबालब भर दिए। एक गिलास मेजर को पेश किया और दूसरा खुद उठा लिया। दोनों ने अपना-अपना गिलास धीरे से टकराया और एक ही सांस में आधा गिलास खाली कर दिया।

मेजर ने कहा, "शान्ता, क्या तुम गोपाल कामथ, सुल्तान या भोला नाम के आदमियों में से किसी को जानती हो ?"

शान्ता का स्वप्न जैसे टूट गया। वह उछलकर खड़ी हो गई और जलती निगाहों से मेजर की ओर देखने लगी, "आप जासूस हैं। आप यहां दिल बहलाने नहीं, अपने काम से आए हैं। मैं भी पागल हूं। बार-बार धोखा खाती हूं और मुझे धोखा खाने में मजा आता है।"

"तुम तो बिगड़ गईं शांता। प्यार करते हुए कोई बात तो करनी होती है।

उनके किसी ग्राहक के साथ गई हैं, लेकिन ग्राहक को जुल देकर घर पहुंच जाएंगी।"

मेजर की यह बात सुनकर परवीन के चेहरे पर मुस्कराहट थिरक उठी। लेकिन वह मेजर की बेतकल्लुफी पर खुद बेतकल्लुफ नहीं हुई। मेजर ने उसे हिचकिचाते हुए देखा तो उसने बड़ी शिष्टता से कहा, "क्या मैं अन्दर आकर मिस कमलेश का इंतजार कर सकता हूं?"

परवीन सोचने लगी, बोली, "अच्छा, अन्दर आ जाइए।"

मेजर अन्दर चला गया। परवीन ने दरवाजा बन्द कर दिया।

मेजर को काफी देर तक इंतजार करना पड़ा। वह सोफे पर बैठा-बैठा ऊंघने लगा। उसकी आंख लग गई। वह तब चौंका जब सामने का दरवाजा चरमराया और उसने लकड़ी की एड़ी वाले जूतों की आहट सुनी। दूसरे ही पल एक लम्बे कद की लड़की अन्दर आई। ड्राइंग रूम में एक अपरिचित को देखा तो दरवाजे में ठिठककर रह गई।

"मुझे आपके मालिक मि० सुरेन्द्रमोहन ने यहां भेजा है। मुझे मेजर किशोरीलाल कहते हैं।" मेजर ने उसके सम्मान में उठकर उसका स्वागत करते हुए कहा, "आपका नाम मिस कमलेश है ना?"

"हां, तशरीफ रखिए।" कमलेश ने कमरे में आते हुए कहा।

"क्या आप गोपाल कामथ का पता जानती हैं?"

"क्या कामथ किसी मुसीबत में फंस गया है?"

"मुझे उसके कुछ रुपये देने हैं। एक हफ्ते से वह मुझे मिल ही नहीं रहा है। मैं डरता हूं कि अगर रुपये मुझसे खर्च हो गए तो उसका कर्ज जल्दी न चुका सकूंगा। गोपाल कामथ रहता कहां है?"

"मैं तीन दिन हुए उससे मिली थी। उस समय तो वह चेम्बूर में रहता था। अब भी शायद वहीं हो। दो बार मैं उससे उसके दादर वाले फ्लैट में भी मिली थी। लेकिन दो महीने हुए उसने दादर वाला फ्लैट छोड़ दिया है। अब चेम्बूर के सिवा और कहां रहता होगा!"

"पहली बार एक ऐसे व्यक्ति से मुलाकात हुई है जो गोपाल कामथ को अच्छी तरह जानता है। क्या उससे आपकी मुलाकात बहुत पहले से है?"

"हम दोनों अर्काट के रहने वाले हैं।"

तीन दुर्घटनायें

काफी रात गए मेजर घर पहुंचा। उसकी आंखों में नींद भरी हुई थी। उसने अपने दफ्तर का दरवाजा बंद किया और स्लीपिंग सूट पहनकर सो गया।

वह शोर सुनकर जाग उठा। कोई उसके दफ्तर का दरवाजा जोर-जोर से खटखटा रहा था। वह उसके गोरखा चौकीदार की आवाज थी। मेजर ने दरवाजा खोल दिया।

"तुम इतने घबराए हुए क्यों हो?" मेजर ने पूछा।

"आप मेरे साथ चलिए।" गोरखा चौकीदार ने कहा।

चौकीदार एक कोने में पहुंचकर रुक गया। उसने टार्च की रोशनी एक सफेद और नीली चीज पर फेंकी। वह एक लाश थी—एक औरत की लाश जिसका स्कर्ट सफेद था और ब्लाउज नीले रेशम का। वह मझले कद की एक अधेड़ उम्र की औरत थी। मेजर ने चौकीदार के हाथ से टार्च ले ली और लाश का मुआयना किया। वह एक सुन्दर स्त्री थी। उसका रंग सफेद था। लेकिन उसमें थोड़ा-सा नीलापन पैदा हो गया

"क्या बाबू, सत्यप्रकाश आज छुट्टी पर हैं?"

'नहीं सरकार आज उनकी ड्यूटी किचन में है। यहां हर हफ्ते बाबुओं की ड्यूटी बदल दी जाती है।"

"अच्छा तो जाओ और बाबू सत्यप्रकाश से कहो कि मिसेज शान्ता उनको दो मिनट के लिए बुला रही हैं।"

"बहुत अच्छा हुजूर।"

कुछ मिनट के बाद तीस वर्ष का एक युवक शान्ता को देखकर उसकी ओर मुस्कराता हुआ बढ़ा। उसने पास आकर शान्ता और मेजर को नमस्ते की। और बड़ी बेतकल्लुफी से खाली कुर्सी पर बैठ गया। शान्ता ने सत्यप्रकाश से मेजर का परिचय कराया, लेकिन मेजर का असली नाम नहीं बताया। फिर उसने सत्यप्रकाश से पूछा, "क्या गोपाल कामथ आजकल इधर नहीं आते?"

'मैंने एक हफ्ते से उनको नहीं देखा। मैं कल तक उनका इन्तजार करता रहा हूं। मुझे उनके कुछ रुपये देने थे। अब वे आए भी तो मैं रुपये नहीं दे सकता। खर्च हो गए हैं।"

"देखिए, मुझे भी उनके कुछ रुपये देने हैं।" मेजर ने कहा, "क्या आप यह बता सकते हैं कि वह हमें इस समय कहां मिल सकते हैं?"

"मैं कुछ नहीं बता सकता।"

इतने में अधेड़ उम्र का एक गंजा और भारी-भरकम आदमी उसकी मेज की ओर बढ़ा, जिसे देखकर सत्यप्रकाश कुर्सी पर से उठा और अपनी ड्यूटी पर चला गया।

"हैलो मिस शान्ता!" उस भारी-भरकम आदमी ने कहा।

"यह मि० सुरेन्द्रमोहन हैं, इस होटल के मालिक," शान्ता ने कहा, "और यह मेजर किशोरीलाल हैं।"

"क्षमा कीजिएगा। मैं एक बात आपसे पूछना चाहता हूं," मेजर ने सुरेन्द्रमोहन से कहा, "क्या आप बता सकते हैं कि गोपाल कामथ से मैं कहां मिल सकता हूं? मुझे उनके कुछ रुपये देने हैं।"

"कामथ को ढूंढ़ना आसान नहीं। और फिर वह भूल गया होगा कि उसे किसी से कुछ रुपये भी लेने हैं। वह उन लोगों में से है जो रुपया कर्ज के रूप में नहीं बल्कि दान या सहायता के रूप में देते हैं। शायद कमलेश जानती हो। कमलेश मेरे होटल में क्लर्क है। होटल के कपड़ों, पर्दों, मेजपोशों की धुलाई-सफाई का सारा इंतजाम करती है।"

"क्या आप मुझे कमलेश का पता दे सकते हैं?" मेजर बोला।

"क्यों नहीं—२२ नौरोजी लेन, माटुंगा।"

एक घंटे के बाद मेजर और शांता खाना खाकर बाहर निकले।

मेजर माटुंगा जाने वाली सड़क पर था। नौरोजी लेन, माटुंगा में बाईस नंबर का मकान एक मंजिला था। मेजर ने दरवाजे पर दस्तक दी। एक औरत ने दरवाजा खोला। उसकी उम्र लगभग अट्ठाईस वर्ष होगी। पुरुषों की तरह बाल कटवा रखे थे। कद मंझोला था। उसमें नारीत्व था, लेकिन वह पुरुष बनने की व्यर्थ ही कोशिश कर रही थी।

"मिस कमलेश?" मेजर ने पूछा।

"नहीं, मैं परवीन हूं। कमलेश और मैं यहां इकट्ठी रहती हैं।"

'मैं एक ऐसे आदमी की तलाश में हूं जिसे मिस कमलेश जानती हैं। मुझे यहां नेकलेस होटल के मालिक सुरेन्द्रमोहन ने भेजा है। मि० सुरेन्द्रमोहन ने बताया था कि

"आप पहले मेरी बात तो सुन लीजिए। मैं बिल्कुल असावधान नहीं था। लेकिन वे अपनी चालाकी से मुझे जुल देने में सफल हो गए। रात के ग्यारह बजे होंगे कि मैंने पुलिस की एक जीप को बंगले के पास रुकते हुए देखा। उसमें से तीन कांस्टेबल बाहर निकले। मैं उन्हें बिजली के खम्भे की रोशनी में देख सकता था। उनको देखकर इन्स्पेक्टर वेडफोर्ड के आदमी चौकन्ने हो गये। उनके बीच कुछ बातें हुई और वे सब बंगले के अन्दर चल गये। मैं समझा कि इन्स्पेक्टर वेडफोर्ड ने पहरा बदलने के लिए आदमी भेजे होंगे। जब एक घंटे तक दूसरे आदमी बाहर न निकले जिनकी जगह वे आए थे तो मेरा माथा ठनका। मैं अपनी खोह से निकला और फूंक-फूंककर कदम रखता हुआ बंगले की ओर बढ़ा। इतने में मैंने आहट सुनी। दो कांस्टेबल एक भारी सन्दूक लिए हुए बंगले से बाहर निकले। मैं क्योंकि उन्हें पुलिस का आदमी समझता रहा, इसलिए खामोश खड़ा रहा।"

"तो क्या वे पुलिस के आदमी नहीं थे?" मेजर ने पूछा।

"नहीं, इसका पता मुझे बाद में चला जब मैंने बड़ी सावधानी के साथ बंगले में कदम रखा। चारों कांस्टेबल फर्श पर पड़े गहरी नींद सो रहे थे। पहले तो मेरा कलेजा धक् से रह गया। मैं समझा कि उन लोगों को मार डाला गया है। लेकिन मैंने उनकी नब्ज टटोली तो उनकी नब्ज चल रही थी। उनको क्लोरोफार्म से बेहोश कर दिया गया था। अब सारी बात मेरी समझ में आ गई। वे जो तीन कांस्टेबल पुलिस की जीप में आए थे वे नकली कांस्टेबल थे। उन्होंने उन चारों कांस्टेबलों को धोखा दिया होगा और पुलिस के किसी बड़े अफसर का नाम लिया होगा कि उस अफसर ने उन्हें वहां भेजा है। उन कांस्टेबलों को असावधान पाकर उन्हें क्लोरोफार्म सूंघा दिया होगा। यह सब कुछ करने के बाद उन्होने अपना काम किया और फिर वापस चले गये। एक बात मेरी समझ में नहीं आई। पुलिस की जीप में तीन कांस्टेबल आये थे, लेकिन वापस केवल दो गये थे। मैं फौरन चौकन्ना हो गया। इसका मतलब था कि तीसरा कांस्टेबल बंगले में मौजूद था। मैंने बंगले का कोना-कोना छान मारा, लेकिन मुझे वह तीसरा कांस्टेबल वहां नहीं मिला। पहले मेरे जी में आया कि आपको वहां से फोन करूं, लेकिन जब शिकार हाथ से निकल चुका था तो आपको फोन करने से कोई लाभ नहीं था। मैं वहां से चला आया।"

"और तुम कर भी क्या सकते थे।" मेजर ने अप्रसन्नता से कहा, "हाथ आया हुआ शिकार छोड़ दिया। तुमने एक घंटे तक मेरा इन्तजार क्यों किया? उन तीन नकली कांस्टेबलों के आने के बाद जब दूसरे कांस्टेबल वापस नहीं गये थे, तो तुम्हें उसी समय बंगले में घुसकर स्थिति मालूम करनी चाहिए थी। तुमने एक अक्षम्य भूल की है।"

और फिर मेजर ने सोचते हुए कहा, "उस भारी सन्दूक में क्या हो सकता था? तीसरा नकली कांस्टेबल कहां गया?"

"सन्दूक में वे अपना जरूरी सामान ले गए होंगे जो उन्होंने वहां छिपा रखा होगा।" अशोक बोला।

"क्या उन्होंने इतना ही सामान छिपा रखा था? इंस्पेक्टर वेडफोर्ड ने सारे बंगले की तलाशी ली थी। मुझे तो कुछ और ही मामला नजर आता है। मैं समझता हूं कि तीसरा नकली कांस्टेबल उस सन्दूक में होगा।" यह कहते हुए मेजर ने अपना बंधा मुक्का अपनी बायीं हथेली पर मारा, "ओह, मैं भी कहां भटक रहा हूं! तीसरा नकली कांस्टेबल पुरुष नहीं स्त्री होगा। उसे मारकर और सन्दूक में डालकर ले जाया गया होगा। बहरहाल मेरा यह अनुमान है और मैं समझता हूं कि उस स्त्री को यहां लाकर फेंका गया।"

था। मेजर समझ गया कि इस औरत को जहर दिया गया है। लेकिन एक बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी कि किसी ने उस औरत को जहर देकर उसके सीने में खंजर क्यों भौंक दिया था। मेजर ने उसके सीने में गढ़ा हुआ खंजर देखा तो अपनी आंखें झपकने लगा। वह उसके शस्त्रागार का खंजर था और उस खंजर पर उसके नाम के पहले दो अक्षर खुदे हुए थे। मेजर उठकर खड़ा हो गया।

फिर टार्च लिए हुए शस्त्रागार की पिछली दीवार की ओर गया। वहां उसने चार कदमों के निशान देखे। लाश लाने वाले उधर से आए थे। वे साधारण जूते के निशान थे जिनसे अनुमान लगाना कठिन था कि लाश लाने वाले किस तरह के आदमी थे। मेजर ने पिछली दीवार को फलांगकर रास्ता टटोलना शुरू किया। वह काफी दूर निकल गया और जब वापस आया तो चौकीदार उसका इंतजार कर रहा था।

उसने चौकीदार से कहा, "वे लोग कार में आये थे लेकिन उन्होंने कार यहां से काफी दूर रोक दी थी। इसका मतलब है कि जो लोग लाश लेकर आये थे वे काफी मजबूत और ताकतवर थे, वरना इतनी दूर तक दो आदमियों के लिए लाश उठाकर लाना काफी कठिन हो जाता। उनके पास स्ट्रेचर जरूर होगा।"

अपने दफ्तर में आकर मेजर कुछ देर तक अपना सिर पकड़कर सोचता रहा। उसके बाद वह टेलीफोन डायरेक्टरी को देखता रहा। उसने एक टेलीफोन नम्बर कागज पर नोट किया और फोन का रिसीवर उठाकर नम्बर मिलाने लगा।

"मैं मेजर बलवन्त बोल रहा हूं।"

"आपका फोन और इतने सवेरे!" इन्स्पेक्टर बेडफोर्ड की आवाज थी।

"इसीलिए पूछ रहा हूं कि किसी ने मुझे हत्या के केस में फंसाने की कोशिश की है और मुझे एक स्त्री का हत्यारा सिद्ध करने के लिए, एक स्त्री की लाश मेरे कमरे के आगे फेंक दी है। उस स्त्री के सीने में एक खंजर धंसा हुआ है। वह मेरा है। आप डाक्टर को लेकर कुछ देर के लिए आ जाइए।"

"ओह, मैं समझ गया। ऐसा इसलिए किया गया कि पुलिस आपको हत्यारा समझे।"

"जी हां।" मेजर ने कहा, "एक बात और याद रखिए, आप डाक्टर के साथ आने से पहले जरा अपने आदमियों को फोन कीजिये जो चेम्बूर में गोपाल कामथ के बंगले पर तैनात किए गए हैं। उनसे पूछिये कि वह फकीर पत्थरों की खोह में अभी तक हैं या नहीं।"

"अच्छी बात है।"

"मैं आपका इन्तजार कर रहा हूं।" मेजर ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा ही था कि उसकी नजर दरवाजे पर पड़ी। दरवाजे में एक लम्बा-तगड़ा फकीर खड़ा था।

"आओ अशोक! तुम तो पत्थरों की खोह में पड़े सो रहे थे।"

"जी हां, लेकिन मुझे फौरन यहां आना पड़ा। यह न पूछिए कि यहां कैसे पहुंचा हूं। कोई टैक्सी वाला मुझे बैठाने के लिए तैयार ही नहीं होता था। वे समझते थे कि फकीर से उन्हें भला क्या मिलेगा। अंत में मुझे विवश होकर अपना आइडेण्टिटी कार्ड एक टैक्सी ड्राइवर को दिखाना पड़ा। यहां पहुंचा तो गोरखा चौकीदार मुझे अन्दर न आने दे रहा था। अंत में आवाज पहचानकर शर्मिन्दा हुआ। आपका अनुमान सही निकला। गोपाल कामथ और उसके साथी अपनी चीजें उस बंगले से ले जाने में सफल हो गए।"

"वह कैसे? और तुम पत्थरों की खोह में बैठे-बैठे बस उनका मुंह देखते रहे!" मेजर ने नाराज होकर कहा।

इसी ने मेरी काटेज किराए पर ली थी ।"

मेजर ने उससे अधिक पूछताछ नहीं की और उसका आभार प्रदर्शन करने के बाद उसे वापस भेज दिया ।

"मुझे ऐसा संदेह होता है कि उस बुर्के में औरत नहीं थी कोई मर्द था ।" सोनिया ने कहा ।

इन्स्पेक्टर ने पूछा, "आपको यह संदेह कैसे हुआ ?"

"उसकी चाल और फुर्ती से मुझे ऐसा संदेह होता है ।"

"तुम्हारा अनुमान सच हो सकता है सोनिया ।" मेजर ने कहा ।

एक घंटे के बाद जब मेजर दादर से वापस आया तो सारी कहानी एक नया मोड़ ले चुकी थी । सिद्ध हो चुका था कि सेठ सरवरिया के परिवार में उसकी बेटी, उसकी पत्नी और उसके दामाद में से किसी एक का गोपाल कामथ से गहरा सम्बन्ध था ।

मेजर सेठ जी से उनके कारखाने में मिला ।

"मैं यह पूछने के लिए आया हूं कि जब आपने अपनी दूसरी पत्नी से विवाह किया था तो क्या उस समय भी उसका नाम लक्ष्मी था ?"

"नहीं, राधा ।"

"उनसे आपकी मुलाकात बंगलौर के किस क्लब में हुई थी ?"

"पीकाक क्लब में । मेरा विचार है कि यह सारा काम महेश्वर का है । वह अपनी एक फर्म खोलना चाहता है और मुझसे अलग होना चाहता है या फिर सुधा ऐसा कर सकती है । उसकी मां को शराब पीने की लत है । उसे हर समय रुपयों की जरूरत रहती होगी ।"

"आपके विचार में महेश्वर और सुधा में से किसी एक ने जेवर चुराए हैं ?"

"हां, लक्ष्मी यानी मेरी पत्नी जेवर नहीं चुरा सकती जबकि उसके अपने जेवर नकली जेवरों में बदल चुके हैं ।"

"यह तो आप ठीक कहते हैं । लेकिन क्या मैं आपकी पत्नी से बात कर सकता हूं ?"

"क्यों नहीं । अगर आप फोन पर बात करना चाहें तो अभी कर लीजिए ।" यह कहकर सेठ जी ने अपने घर का नम्बर मिलाया और दो मिनट के बाद रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया और बोले, "इस समय वह बाहर गई हुई है । शायद यहां मेरे पास आ रही हो । आप पन्द्रह मिनट इन्तजार कर लीजिए । मैं कारखाने के इंजीनियर को जरूरी हिदायतें देकर अभी आता हूं ।"

सेठ जी चले गये तो मेजर सोचने लगा कि उसे फोन पर एक टेलीग्राम बुक कराना चाहिए । उसने बंगलौर के पीकाक क्लब के मैनेजर को एक जवाबी तार दिया कि वह औरत, जिसका नाम राधा था, उसके सम्बन्ध में कुछ जानकारी दे । इस समय केवल इतना ही बता दे कि राधा का चाल-चलन कैसा था । अगर उसका किसी से सम्बन्ध था तो उसका नाम क्या था और वह आदमी क्या काम करता था और अब वह कहां है । उत्तर के लिए मेजर ने अपने आफिस का पता लिखवा दिया ।

सेठ जी वापस आये तो उनके साथ उनकी पत्नी लक्ष्मी भी थी ।

"ठीक तो यह होगा कि आप हमारे साथ घर चलिए । दोपहर का खाना भी वहीं खा लेंगे ।" सेठ जी ने कहा ।

टेलीफोन की घंटी वज उठी। मेजर ने रिसीवर कान से लगाया। दूसरी ओर से सोनिया की आवाज आई।

"विनोद के मशवरे पर विछाया जाल सफल हुआ। मि० मलकानी के यहां से वह कंगन चुराने की कोशिश की गई जो आपने अभी तक उनको वापस नहीं किया। किसी ने यह समझ लिया कि आपने कंगन वापस कर दिया है और वह कंगन लेने आया। लेकिन मैंने उसे सफल नहीं होने दिया।"

बुर्कापोश औरत

सोनिया ने दफ्तर में पुलिस इन्स्पेक्टर वेडफोर्ड और पुलिस के डाक्टर को देखा तो वह ठिठक गई, लेकिन फिर हिम्मत करके कमरे में चली आई।

सोनिया की मनःस्थिति वदल चुकी थी, उसने कहा, "मैंने एक तिव्वती का मेकअप किया और ऊन का गोला लेकर मैं सीढ़ियों के पास उस जगह पर वैठ-कर स्वेटर वुनने लगी जहां छत पर विजली का वल्व जल रहा था। कुछ लोगों ने मुझे देखकर आपत्ति की लेकिन मैंने हर एक को यही उत्तर दिया कि मैं एक गरीव तिव्वती हूं, स्वेटर वुनकर अपना पेट पालती हूं। यहां रोशनी थी इसलिए स्वेटर वुनने चली आई हूं। मेरा यह वहाना सफल रहा, और इसके वाद किसी ने मुझे वहां से उठ जाने के लिए नहीं कहा। जव सव लोग सो गए तो मैंने भी थोड़ी देर के वाद वत्ती वुझा दी और इस तरह फर्श पर लेट गई जैसे गहरी नींद सोई पड़ा हूं। एक घंटे के वाद मैंने ऊपर की मंजिल से, जो अभी वन रही है, किसी को वहुत धीरे से नीचे कूदते हुए देखा। वह एक वुर्कापोश औरत थी। उनने रवड़ के जूते पहन रखे थे। जिस सफाई के साथ वह ऊपर की छत से नीचे कूदी उससे अंदाजा होता था कि वह कोई अनाड़ी औरत नहीं थी। उसके कूदने से असल में मैं कसमसा उठी और मैंने गलती से करवट वदल ली। लेकिन मेरी यह गलती मेरे लिए लाभकारी सिद्ध हुई। उस वुर्कापोश औरत ने वुर्के से अपना हाथ वाहर निकाला तो मैंने हल्की-सी रोशनी में उसके हाथ में रूमाल देखा। मैं फौरन भांप गई कि वह क्लोरोफार्म में भीगा हुआ रूमाल है। मैं उछलकर खड़ी हो गई तो वह वुर्कापोश औरत ठिठक गई और फिर सीढ़ियों की ओर लपकी।

"मैं निश्चय नहीं कर पाई कि वह मि० मलकानी के यहां चोरी करने आई थी या किसी से मिलने के लिए आई थी। मैंने उसका पीछा करने का निश्चय कर लिया। यहां भी मुझसे चूक हो गई। वह वुर्कापोश औरत एक कार से आई थी और मेरे नीचे पहुंचने तक वह कार में जा वैठी थी। मैंने रिवाल्वर निकाल लिया। मैं चाहती थी कि उसकी कार के टायर का निशाना वांधकर गोली चलाऊं और इस तरह उसका टायर पंक्चर कर दूं। लेकिन मैंने देखा कि कार से एक शोला-सा लपका और मेरे हाथ से रिवाल्वर छूटकर दूर जा गिरा। उस औरत ने कार में वैठकर साइलेन्सर लगी पिस्तौल से गोली चलाई थी। उसका उद्देश्य शायद यह था कि वह मुझे गोली मारकर मार डाले। लेकिन संयोग से उसकी गोली मेरे रिवाल्वर में लगी। मैंने झुककर रिवाल्वर उठाने की कोशिश की तो एक गोली मेरी वगल में जा लगी। वह तो मैंने वुलेट प्रूफ जैकेट पहन रखी थी इसलिए उसकी गोली वेकार गई। लेकिन इतने में वह अपनी कार स्टार्ट कर चुकी थी और मेरे रिवाल्वर की मार से दूर निकल गई थी।"

तभी अशोक एक वूढ़े आदमी को लेकर आ पहुंचा।

उस वूढ़े ने वाहर पड़ी औरत की लाश देखते

मेजर को उन्हें घर तक पहुंचाना पड़ा। लक्ष्मीवाई ने मेजर को मजबूर किया कि वह खाना खाकर जाए। वह मेजर की बहुत ही अहसानमन्द थी। मेजर को रुकना पड़ा।

सेठ जी के वुलाने पर वे सब दोवारा अस्पताल में पहुंचे। डाक्टर इनकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने कहा, "सेठ जी पूरी तरह होश में आ चुके हैं और वात कर सकते हैं। वे मेजर साहव को याद कर रहे हैं।"

"मेरे विचारसे आप ही पहले उनसे वात कीजिए।" मेजर ने इंस्पेक्टर मावलंकर से कहा। इंस्पेक्टर मिलने के लिए चला गया।

मेजर ने सुधा, महेश्वर और लक्ष्मीवाई के चेहरों की ओर देखा। लक्ष्मीवाई ने अपनी आंखें मूंद रखी थीं। शायद वह भगवान से कोई प्रार्थना कर रही थी। दस मिनट वाद इंस्पेक्टर मावलंकर ने आकर मेजर से कहा, "वह आपसे मिलने के लिए वेचैन हैं।"

मेजर उस कमरे में पहुंचा जिसमें सेठ जी लोहे के एक पलंग पर पड़े हुए थे। उनका सिर दो सफेद और ऊंचे तकियों पर टिका हुआ था। मेजर उनके पलंग के पास रखे हुए स्टूल पर वैठ गया। सेठ जी ने सफेद चादर के नीचे से अपना वायां हाथ वढ़ाकर मेजर का हाथ अपने हाथ में ले लिया और मुस्कराते हुए वोले, "अगर आप न होते तो इस समय मेरे अन्तिम संस्कार की तैयारियां हो रही होतीं।"

"मैं तो यह सोच भी नहीं सकता था कि आप पर घातक आक्रमण किया जाएगा।"

"मेरी समझ में भी नहीं आ रहा कि मेरा जानी दुश्मन कौन है!"

"आप धनवान हैं। धनवान व्यक्ति को हमेशा अपने प्राणों का भय रहता है।"

"मैं उसके लिए भयभीत हूं मेजर साहव जिसे मेरी संपत्ति का वड़ा हिस्सा मिलेगा। वह मेरी पत्नी है।"

"क्या यही कारण है कि आपकी पत्नी की हत्या करने की कोशिश की गई?"

"वहुत संभव है।"

"क्या आपकी वेटी और दामाद को कुछ नहीं मिलेगा?"

"मेरे दामाद को कुछ नहीं मिलेगा। उसके हिस्से में वही संपत्ति आएगी जो सुधा को मिलेगी। मैंने सुधा को अपनी वसीयत में इसलिए कम रुपया दिया है कि अगर उसे अधिक लाभ मिलेगा तो वह अपनी मां को दे देगी। और सुधा को जो भी रुपया मिलेगा वह भी उसे किस्तों में मिलेगा।"

"इसका मतलब है कि आपकी पत्नी को वहुत कुछ मिलेगा।"

"हां, मेरे वीमे का रुपया, मेरा रुपया, मेरा कारखाना।"

इतने में डाक्टर ने दरवाजे में आकर कहा, "मेजर साहव!"

"वस, मैं एक मिनट में आ रहा हूं।" मेजर ने उठते हुए कहा और फिर सेठ जी से वोला, "मैं जा रहा हूं।"

जव मेजर सेठ जी से मिलकर वाहर आया तो ड्योढ़ी में सुधा और महेश्वर वैठे थे। लक्ष्मीवाई कहीं दिखाई न दे रही थीं।

"आपकी मां कहां गईं?" मेजर ने सुधा से पूछा।

"वे वाहर ताजा हवा खाने के लिए गई हैं। कह रही थी कि यहां उनका दम घुटा जा रहा है।"

"अच्छा, तो मैं भी उनके पास जाता हूं।" मेजर ने कहा और ड्योढ़ी से तेजी से वाहर निकला। लक्ष्मीवाई अस्पताल के कम्पाउण्ड और लान में नहीं थीं।

"जिस कार का नम्बर आपने बताया था वह कल्याण के एक जनरल मर्चेंट की है" इंस्पेक्टर वेडफोर्ड ने कहा, "और कल उसने कल्याण की पुलिस को सूचित किया था कि उसकी कार चोरी हो गई है। और मज़े की बात यह सुनिए, कोलाबा के पुलिस स्टेशन की एक जीप चोरी हो गई थी। शिवाजी पार्क पुलिस स्टेशन से तीन कांस्टेबलों की वर्दियां चुराई गई थीं। आप समझ गए न ? चेम्बूर में गोपाल कामथ के बंगले में तैनात कांस्टेबलों पर आक्रमण के लिए दुश्मन ने कितनी मेहनत की। बुर्कापोश औरत या मर्द ने कार चोरी की थी इसलिए पता लगाना बहुत कठिन होगा।" वेडफोर्ड ने कहा।

"नहीं, आप भूल रहे हैं। कार चुराने वाले का पता लगाना आसान होता है। सुनिए, मैं आपको काम की एक बात बताता हूं। जो आदमी किसी भी हत्या के उद्देश्य से कार चुराता है वह हत्या के अपने प्रोग्राम से कई दिन पहले चुराता है। क्योंकि जब कोई कार चोरी होती है तो तमाम पुलिस स्टेशनों को सूचना दे दी जाती है। उस कार की चोरी की घटना की याद लोगों के दिमाग में ताजी होती है। इसलिए कार चुराने वाला उसे उस समय काम में नहीं लाता। वह किसी अज्ञात गैरेज में उस कार को छिपाकर रखता है और गैरेज का किराया चुकाता है। कार गैरेज में बन्द रहती है और वह अपने शिकार का पीछा करता रहता है। वह अपने शिकार के स्वभाव और कामों का अध्ययन करता है। उसकी हत्या करने के लिए उपयुक्त स्थान का चुनाव करता है। और जब वह चोरी की कार में हत्या करने के इरादे से निकलता है, तब तक पुलिस कांस्टेबलों के दिमाग से उस कार का हुलिया निकल चुका होता है। चालाक हत्यारे कार का नम्बर भी नहीं बदलते। क्योंकि पुलिस कार के मालिक का पता लगा सकती है—उससे पूछताछ कर सकती है। इस बीच हत्यारे को काफी समय मिल जाता है कि वह अपने-आप को छिपा सके।"

"क्या आप यह कहना चाहते हैं कि सेठ जी के घर के किसी आदमी ने किराये पर हत्यारे को लिया, उस हत्यारे ने कार चुराई, उस कार को कहीं छुपा दिया या गैरेज किराये पर लेकर उसे उसमें बन्द कर दिया ? इसके बाद हत्यारे ने यह पता लगाया कि सेठ जी अपने कारखाने से घर किस समय जाते हैं ?"

"जी हां, हत्यारे ने ऐसा ही किया। उसने कारखाने की बाहरी सड़क अपने के लिए चुनी। कारखाने के सामने वाली सड़क बिल्कुल वीरान रहती है। और चुराई हुई कार हत्यारे ने कहीं ऐसी जगह छोड़ दी होगी जिधर बहुत कम लोग -जाते होंगे।"

"आप शायद यह कहना चाहते हैं कि मैं पहले शहर के तमाम गैरेजों का चक्कर लगाऊं, अगर सौभाग्य से वह गैरेज मिल जाए जिसमें वह कार रखी गई थी तो गैरेज वाले से पूछूं कि वह कार वहां कौन रख गया था और उसका हुलिया क्या था। उसका हुलिया जानकर उसका पता लगाना कठिन नहीं होगा। क्योंकि वह जरूर पिछले तीन चार दिन सेठ जी का पीछा करता रहा होगा। हम होटलों में जाकर पूछताछ कर सकते हैं। बहुत संभव है कि वह भी किसी होटल में ठहरा हुआ हो।"

मेजर फोन सुनकर वापस लान में आया तो उसने देखा कि विनोद मल्होत्रा सोनिया के पास बैठा चाय पी रहा था।

मेजर ने विनोद से कहा, "आपने जाल बिछाने की बहुत अच्छी सलाह दी थी वह सफल सिद्ध हुई। लेकिन दुश्मन का भाग्य अच्छा था, साफ बच गया। अब मैं एक और मामले में आपसे सलाह लेना चाहता हूं। सोनिया आपको सभी नई घटनाएं बता चुकी है। मैं आज की घटनाओं की कहानी सुनाता हूं।"

यह कहकर मेजर ने आज की सारी कहानी विनोद को सुना दी। विनोद जब

लान में इंस्पेक्टर मावलंकर की कार खड़ी थी और वह जाने की तैयारी कर रहा था। मेजर ने इंस्पेक्टर के पास जाकर पूछा, "आपने सेठ जी की पत्नी को तो नहीं देखा?"

"देखा था, वह अभी गई हैं। मैंने उनसे पूछा कि वह कहां जा रही हैं, तो उत्तर दिया कि घर आराम करने।"

"क्या आप अपनी जीप में लगे ट्रांसमीटर से फ्लाइंग स्क्वेड को सूचित कर सकते हैं कि वे सेठानी जी की बादामी कार का पीछा करें और यह देखें कि सेठानी कहां गई हैं?"

"फ्लाइंग स्क्वेड को सूचित करने से तो अच्छा यही होगा कि आप पन्द्रह मिनट बाद सेठ जी के घर फोन करें। अभी तो सेठ जी से उनकी बेटी और दामाद की मुलाकात हो रही होगी। आपको उन्हें घर पहुंचाना होगा। वहां पहुंचकर ही आपको पता लग जाएगा।"

मेजर को मावलंकर के रवैये पर बड़ी हैरानी हुई। आखिर उससे रहा न गया। उसने पूछा, "क्या बात है, आप इस केस में कोई दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं?"

"मुझे सेठ जी ने हिदायत की है कि इस समय मैं उनके घर के किसी आदमी को परेशान न करूं।"

"इसके लिए उन्होंने इनाम देने का वादा किया होगा?"

"हां, मैं अपना कर्तव्य ईमानदारी से पूरा कर रहा हूं।"

"क्या मैं पूछ सकता हूं कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?"

"मेजर साहब, मेरा कुनबा बहुत बड़ा है। दो साल बाद मैं रिटायर हो जाऊंगा। मैं जानता हूं कि जितनी पेंशन मुझे मिलेगी उससे मेरा गुजारा नहीं हो सकेगा। अगर सेठ जी मुझे कुछ देना चाहते हैं तो इसमें बुराई क्या है?"

पन्द्रह मिनट बाद मेजर ने सेठ जी के घर फोन किया। दूसरी ओर से सेठ जी के नौकर ने पूछा, "कौन?"

"मैं मेजर बलवन्त बोल रहा हूं। क्या सेठानी जी घर पर हैं?"

"वे अभी-अभी आई थीं और फिर बाहर चली गईं।"

"क्या वह बादामी कार में गई हैं?"

"नहीं, काली कार में।"

"क्या वह अपने साथ कोई चीज ले गई हैं? मेरा मतलब है, क्या उनके पास कोई सूटकेस था; क्या वह कपड़े बदलकर गई हैं?"

"नहीं, अपने साथ कुछ भी नहीं ले गई हैं!"

मेजर अपने दफ्तर में पहुंचा और उसने इंस्पेक्टर वेडफोर्ड को फोन किया "सेठ रतनचन्द सरवरिया और उनकी पत्नी पर घातक आक्रमण हुआ। एक बुर्कापोश औरत या मर्द ने उन पर गोलियां चलाईं। दोनों बाल-बाल बच गए।"

"वही बुर्कापोश औरत या मर्द जो आपकी असिस्टेंस्ट की गलती से बचकर निकल गया था?" वेडफोर्ड ने पूछा।

"अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। मैं आपको एक कष्ट देना चाहता हूं। क्या आप मुझे एक घंटे तक यह बता सकते हैं कि एक कार जिसका रंग काला और नं० बी० एम० ४२१६ है, किसकी है?"

आधे घंटे के बाद फोन की घंटी बजी। मेजर दफ्तर में गया और उसने फोन का रिसीवर उठाकर कान से लगा लिया। दूसरी ओर से इंस्पेक्टर वेडफोर्ड की आवाज आई।

मालिक से मिलने चला गया और वहां से सीधा आपके पास आ रहा हूं। वह गैरेज माहिम में है। उसका मालिक एक गुजराती है। उसने मुझे बताया कि एक बहुत ही पतला-दुबला और बांस जैसा लम्बा आदमी वह कार गैरेज में रखने के लिए आया था।"

मेजर कुछ सोचते हुए बोला, "सुल्तान और भोला में से कोई होगा।"

"कौन सुल्तान और भोला ?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"कामथ के दो साथी जिनके बारे में राजन मुझसे पूछता रहता था कि वे कहां हैं। उनके गुम होने की बात केवल हमें धोखा देने के लिए कही गई थी। वे उनके गिरोह को छोड़कर कहीं नहीं गये थे। अब भी उनके साथ हैं। क्या गैरेज के मालिक ने आपको यह नहीं बताया कि वह दुबला-पतला और बांस जैसा आदमी जरा लंगड़ाकर चलता है ?"

"हां, उसने यह भी बताया था।" इंस्पेक्टर ने उत्तर दिया।

बेडफोर्ड के जाने के बाद मेजर ने कहा, "इंस्पेक्टर की बातों से हमें पता चल है कि गैरेज माहिम में लिया गया। और जिस आदमी की हमें तलाश है वह लंगड़ाकर चलता है। आप जानते हैं इसका मतलब क्या है ? वह उस गैरेज के आसपास ही कहीं रहता होगा। हमें माहिम के आसपास जितने भी होटल हैं उनसे सुल्तान य भोला के बारे में पूछताछ करनी चाहिए।"

वे तीनों अपनी-अपनी कार में माहिम की ओर चल पड़े। दो घंटे की दौड़ धूप का कोई परिणाम नहीं निकला। अंत में सोनिया को एक छोटे-से होटल में सफलता मिली जिसका नाम 'रूप' था। उसने 'रूप' के मालिक को जिस आदमी का हुलिया बताया वह दो दिन के लिए उसके होटल में ठहरा था और आज सुबह द बजे वहां से चला गया। 'रूप' के मालिक ने कहा, "उस आदमी ने मेरे रजिस्टर अपना नाम केवल कृष्ण लिखा था। वह लंगड़ाकर चलता था।"

वे एक ईरानी के शीराज रेस्ट्रां में गए। खाने का आर्डर दे दिया गया। मेज ी के काउण्टर पर से टेलीफोन डायरेक्टरी उठा लाया। उसने 'रूप' होटल ोफोन नम्बर नोट किया और फिर बड़े पोस्ट आफिस का नम्बर मिलाकर कह "देखिए, मैं पुलिस इंस्पेक्टर बेडफोर्ड बोल रहा हूं।" मेजर ने कहा, "मुझे एक आ श्यक सूचना चाहिए। कल रात 'रूप' होटल के फोन नम्बर ८२६४२ से किसी ट्रंक काल बुक कराई थी। मैं यह जानना चाहता हूं कि ट्रंक काल किस जगह गई थी ?"

मेजर ने दो मिनट तक इंतजार किया, फिर उस टेलीफोन आपरेटर बताया, "ट्रंक काल रतलाम के होटल 'मानसरोवर' के लिए बुक कराई गई थी।"

चंचल पनवाड़िन

मेजर और सोनिया तीसरे पहर साढ़े तीन बजे रतलाम पहुंच गए। वह छोटा-सा शहर था इसलिए मानसरोवर होटल खोजने में कोई कठि नहीं हुई।

मेजर काउंटर के पास गया और उसने मारवाड़ी मालिक से पूछा, "परसों एक आदमी ने बम्बई से आपके हो ल में फोन किया था। वह फोन किसके नाम क्या वह आदमी अब भी इस होटल में मौजूद है या जा चुका है ?"

"सरोजिनी के नाम।"

पूरी कहानी सुन चुका तो मेजर ने कहा, "मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि सेठ रतनचंद सरवरिया की हत्या की योजना उसी रात को बनाई गई जिस रात सुधा अपने घर से फरार हुई। सुधा घर से भागकर तिवारी के होटल में उसके कमरे में रही। तिवारी ने उसका कंगन चुरा लिया। मैं सुधा को सेठ जी के घर ले गया। वापस आया तो मुझ पर दो आदमियों ने आक्रमण किया। उन्होंने कंगन के लिए मेरे दफ्तर की तलाशी भी ली। क्या इससे स्पष्ट नहीं होता कि उन लोगों को कंगन के गुम होने की सूचना बड़ी तेजी से दी गई?"

"और उनको सेठ जी के घर से ही सूचित किया गया कि कंगन गुम हो गया और उस आदमी के पास है जो सेठ जी के घर से रवाना हो रहा है। आपका हुलिया उन लोगों को बता दिया होगा।"

"बिल्कुल ठीक। उस दिन सुधा ने मुझे कंगन खोजने का काम सौंपा। और सेठ जी ने अपनी बेटी के दुःख का पता लगाने के लिए उचित पुरस्कार देने का वायदा किया। मैंने सुधा का पीछा किया। वह एक टूटी-फूटी हवेली में अपनी मां से मिलने गई थी। उसकी मां कुसुम वहां डा० चन्द्रप्रकाश और उसके भाई सूरजप्रकाश के साथ रहती है और अंधाधुंध शराब पीती है। दूसरे दिन मैंने तिवारी को उसके होटल में मुर्दा पाया। जब मैं तिवारी के क रे से निकला तो दो आदमियों ने अलग-अलग मेरा पीछा किया। यह कुछ ऐसी घटनाएं हुईं कि किसी ने सेठ जी और उनकी पत्नी पर घातक आक्रमण करना आवश्यक समझा। वह आदमी कौन है जो सेठ जी और उनकी पत्नी को मर्दा देखना चाहता है?"

"मैदान में केवल दो आदमी रह जाते हैं, सुधा और महेश्वर। इनका सम्बन्ध गोपाल कामथ के गिरोह से हैं। यह सिद्ध कर चुके हैं।"

"हां, लेकिन मैंने सुधा से पूछताछ की है। उससे केवल यह पता चला है कि वह अपनी सहेली शान्ता के साथ गोपाल कामथ से मिलने के लिए अपने व्यक्तिगत काम से जाया करती थी। वह अपने पति के मन में प्रतिद्वन्द्विता की आग और अधिक भड़काना चाहती थी ताकि वह उसे और अधिक प्रेम करने लगे।"

"क्या उसे इस उद्देश्य के लिए गोपाल कामथ ही मिला था?"

"सुधा की दलील मुझे उचित मालूम देती है।" मेजर ने कहा, "सुधा जेवरों की मरम्मत कराने के बहाने घर से निकला करती थी और उसकी सहेली शान्ता उसके पति महेश्वर के कान में यह फूंकती रहती थी कि सुधा को जौहरी गोपाल कामथ से प्रेम हो गया है।"

"वह यह दलील वास्तविक उद्देश्य को छिपाने के लिए भी प्रस्तुत कर सकती है।" विनोद बोला।

उन्होंने देखा कि एक कार गेट पार करके अन्दर आ रही है। कार लान में ही रुक गई। उसमें से इंस्पेक्टर बेडफोर्ड बाहर निकला। वह मुस्करा रहा था।

इंस्पेक्टर बेडफोर्ड ने कहा, "मुझे एक बात सूझी। मैंने अखबारों के इश्तहार पढ़े—यह मालूम करने के लिए कि कौन-से गैरेज किराये पर मिलते हैं। मुझे ऐसी पांच गैरेजों के पते मिले। मैंने तीन गैरेजों के मालिकों को फोन किया और कार का नम्बर बताया। वहां कार नहीं रखी गई थी। चौथे गैरेज के मालिक को फोन किया तो उसने फौरन मान लिया कि इस नम्बर की कार उसके गैरेज में रखी हुई थी। जो आदमी कार गैरेज में रख गया था उसने एक महीने के लिए गैरेज किराये पर लिया था और आज सुबह साढ़े ग्यारह बजे वह कार गैरेज से ले गया था।"

"बहुत खूब!" मेजर ने प्रशंसा की।

इंस्पेक्टर ने अपनी बात का सिलसिला बनाए रखते हुए कहा, "मैं गैरेज के

वहुत प्यार करते हैं मुझसे। वरना शोहरत तो वड़ों-वड़ों को नहीं मिलती मैंने कल से सरोजिनी को नहीं देखा।"

रामप्यारी ने मेजर को पान देने के वाद गल्ले में हाथ डाला और रेजगारी निकालने लगी। "रेजगारी नहीं चाहिए, मुझे सरोजिनी का पता चाहिए।" मेजर ने कहा।

"वह इस वखत शायद चन्दन वाड़े में मिलेगी।" रामप्यारी ने कहा।

थोड़ी दूर जाकर मेजर ने सोनिया से कहा, "तुम कारोनेशन होटल में जाकर चाय पियो। मैं अभी आता हूं।"

सोनिया मुड़ी। मेजर सड़क से हटकर एक ओर खड़ा रहा और जव सोनिया कारोनेशन होटल में घुस गई तव वह आगे वढ़ा और चन्दनवाड़े का पता पूछता-पूछता वहां पहुंच गया।

मेज़र चंदनवाड़े के पास पहुंचा तो एक गठीले वदन का आदमी उसके पास आया। उसके होंठों में वीड़ी दवी हुई थी और उसके मुंह से नाजायज शराव की वदवू आ रही थी। "साहव, हमारे साथ चलिएगा तो किसी तरह का डर नहीं रहेगा। पुलिस वालों की क्या मजाल जो इधर फटक भी जाएं। इत्मीनान से वैठिएगा और आपको चीज भी वह दिखाऊंगा कि आइंदा भी आप आंखें वन्द किए सीधे इधर ही आया करेंगे।"

मेजर ने पांच रुपए का नोट निकालकर उसके हाथ पर रखते हुए कहा, "तुम्हारे साथ फिर कभी चलूंगा। अभी तुम मुझे सरोजिनी के पास ले चलो।"

"गठीले वदन का आदमी मेजर को एक गली में ले गया। वह एक गंदा-सा मकान था लेकिन अन्दर का कमरा साफ था। वीच के दरवाजे पर एक पर्दा पड़ा हुआ था। पर्दा उठा और उससे एक वहुत ही सुन्दर औरत मुस्कराती हुई अन्दर आ गई। उस पलंग के सामने खड़ी हो गई जिस पर मेजर वैठा था।

उस गठीले वदन वाले आदमी ने पर्दे वाले दरवाजे की ओर जाते हुए कहा, "रेहाना, साहव को हर तरह से खुश कर देना।"

मेजर ने कहा, "आप मुझे सिर्फ यह वता दीजिए कि सरोजिनी कहां है। मुझे उससे वहुत जरूरी काम है। मुझे एक पाव चरस चाहिए और सरोजनी ही मुझे चरस दिलवा सकती है।"

"सरोजिनी का पता चाहते हैं तो दस रुपए लाइए।"

मेजर ने दस रुपए निकालकर दे दिए।

"सरोजिनी का एक चाहने वाला है।" रेहाना ने कहा, "वह इस शहर में नहीं रहता। जव भी वह आता है, सरोजिनी गायव हो जाती है और दिन-रात उसी के पास रहती है। सरोजिनी ने तेलीवाड़ा में एक कोठरी किराए पर ले रखी है। वह गरीवों का मुहल्ला है। सिर्फ सरोजिनी की कोठरी ही सवसे अच्छी है। उस पर गुलावी रंग फिरा हुआ है।"

गुलाबी कोठरी

मेजर रिक्शे में वैठकर तेलीवाड़ा पहुंचा।

मेजर ने गुलावी कोठरी की कुंडी खटखटाई। अन्दर से एक मर्द की आवाज आई, "जरा ठहरो।"

मेजर को दो मिनट तक इंतजार करना पड़ा। दरवाजा खुला लेकिन पूरा नहीं। दरवाजे के पीछे एक आदमी खड़ा था जिसका चेहरा गैंडे जैसा था।

"सरोजिनी कौन है ?"

"वह जिस होटल में चाहे ठहर सकती है. जितनी देर चाहे ठहर सकती है। मर्ज़ी होती है तो होटल का बिल चुका देती है, नहीं होती तो बिल चुकाए बिना चली जाती है। हम उसे बाहर जाते हुए खामोशी से देखते रहते हैं लेकिन कुछ कर नहीं सकते। किसी में उससे पैसे मांगने की हिम्मत पैदा हो ही नहीं सकती।"

"क्या वह गुंडों की सरदार है ?"

"वह गुंडों की चहेती है। शहर का हर आदमी जानता है कि उसका सम्बन्ध किन से है। इसलिए उसके सामने कोई बोलता नहीं। वह जिसे चाहे भरे बाजार में जूते लगवा सकती है।"

"खैर, यह बताइए कि जब बम्बई से फोन आया तो क्या सरोजिनी आपके होटल में ठहरी हुई थी ?"

"जी हां, एक हफ्ते से यहीं थी। कल शाम को यहां से गई है। उसके सामने बयासी रुपए का बिल रखा गया था तो उसने बिल मसलकर फेंक दिया और बोली, 'पैसे पहुंच जाएंगे, ब्याज समेत दिए जाएंगे' और मैं डर रहा हूं कि वह कहीं नाराज न हो गई हो।"

"घबराइए नहीं। ऐसी औरतें होटल वालों से सम्बन्ध नहीं बिगाड़तीं। इनको होटल की जरूरत रहती है। आप यह बताइए कि उसने फोन पर क्या बातें की थीं ?"

"कुछ अधिक बातें नहीं की थीं। फोन आने पर मैंने उसे उसके कमरे से बुलाया। वह आई, उसने रिसीवर उठाया और कहा, 'हैलो' और फिर उसके मुंह से निकला, 'कब ? अच्छा, अच्छा मैं इन्तजार करूंगी।' और कल वह चली गई।"

"क्या आप जानते हैं कि वह कहां गई है ?"

"मैं तो नहीं जानता, लेकिन मैं आपको एक व्यक्ति का पता बता सकता हूं जो सरोजिनी के तमाम ठिकानों से परिचित है। आप ऐसा कीजिए, इस होटल से निकलकर दाईं ओर सड़क पर हो जाइए। आधे मील चलने के बाद आपको कारोनेशन होटल के नीचे एक पनवाड़िन की दुकान मिलेगी। रामप्यारी एक नटखट पनवाड़िन है। बड़ी शोख और चंचल। इसीलिए उसकी दुकान खूब चलती है। वह सरोजिनी की सहेली है, क्योंकि दोनों का रास्ता एक है।"

मारवाड़ी के कहने के अनुसार रामप्यारी पनवाड़िन वाकई एक तरहदार औरत थी।

"एक पैकेट गोल्ड फ्लेक और दो पान इलायची-सुपारी के।" मेजर ने पांच का नोट देते हुए कहा, "बस पान ऐसा बना दो कि तुम्हारी दुकान हमेशा याद रहे।"

"हमारी दुकान कैसे याद नहीं रहेगी बाबु ! जो एक बार आता है, बस यहीं चक्कर काटता रहता है। मैं तो अपने ग्राहकों को लट्टू बना देती हूं लट्टू। ऐसा पान लगाकर दूंगी कि मेम साहब के होंठो से लाली न छूटेगी।" रामप्यारी ने गोल्डफ्लेक सिगरेट का पैकेट मेजर के हाथ पर रखते हुए कहा और फिर पान बनाने लगी।

"क्या सरोजिनी इधर नहीं आई ?" मेजर ने पूछा।

रामप्यारी ने अब तीखी निगाहों से मेजर की ओर देखा और बोली, "आपको पहले तो कभी उसके साथ देखा नहीं।"

"उसका पता बता दोगी तो अक्सर मुझे उसके साथ देखा करोगी। मैं दूर से उसकी तलाश में आया हूं। यहां आया तो तुम्हारी शोहरत भी सुनी। सीधा इधर चला आया।"

पनवाड़िन मेजर की बात पर फूली न समाई, "बाबू जी, इस शहर के लोग

"रामप्यारी ने आपको यहां क्यों भेजा है ?" उस औरत ने पूछा।

"मुझे थोड़ी-सी चरस चाहिए," मेजर ने दबी जुबान से कहा।

"आप अंदर आ जाइए।"

मेजर ने मकान के अन्दर कदम रखा। अगले कमरे में कोई आदमी नहीं था। उस औरत ने बत्ती जला दी। "आपका नाम...?"

"मेरा नाम सरोजिनी है।"

"क्या आप यहां अकेली रहती हैं ?"

"रहती तो अकेली ही हूं, लेकिन दुनिया मुझे अकेली रहने नहीं देती। कोई न कोई यहां चला ही आता है।"

"क्या इस समय भी आपके यहां कोई मौजूद है ?"

"मौजूद तो है लेकिन इस समय बाहर गया हुआ है। आपको कितनी चरस चाहिए ?"

मेजर ने कहा, "इस समय तो मुझे एक हफ्ते के लिए चाहिए। कितने रुपए दे दूं ?"

"पचास।" मेजर ने उसे दस-दस के पांच नोट गिनकर दे दिए।

"आइए, मेरे साथ चलिए।" सरोजिनी ने दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा।

मेजर सुल्तान को वहां न पाकर बहुत निराश हुआ। वह सरोजिनी के पीछे-पीछे हो लिया। उसने अपने कोट की जेब में हाथ डालकर रिवाल्वर को मजबूती से पकड़ लिया। सरोजिनी घर से निकलकर एक पगडंडी पर हो ली। पगडंडी काफी चौड़ी थी। जब दोनों एक पेड़ के नीचे पहुंचे तो सरोजिनी ने कहा, "आप इस पेड़ के नीचे मेरा इंतजार कीजिए।"

मेजर पेड़ के नीचे खड़ा हो गया और सरोजिनी को पेड़ों के झुरमुट की ओर जाते हुए देखता रहा। उसे कुछ संदेह हुआ और वह पेड़ के नीचे से हटकर पगडंडी पर हो लिया। सरोजिनी उससे काफी दूर जा रही थी। अचानक मेजर की नजर पेड़ों के झुरमुट में खड़ी एक कार पर पड़ी। वह फौरन एक पेड़ की आड़ में हो गया। सरोजिनी उस कार में जा बैठी। मेजर ने पेड़ की आड़ में से कार की अगली सीट पर बैठे हुए आदमी की ओर देखा। वह उस आदमी को पहचानता था। उस आदमी ने तिवारी के कमरे से निकलते समय उसका पीछा किया था। उसने शायद मेजर को पहचान लिया था। उसने कार स्टार्ट की और बिजली की तेजी से उस पेड़ की ओर बढ़ा जिसकी आड़ में मेजर खड़ा था। मेजर ने रिवाल्वर निकाला और गोली चला दी। मेजर ने देखा कि कार कुछ गज की दूरी पर एक पेड़ से टकराई और रुक गई। कार में से एक आदमी लंगड़ाता हुआ निकला और पेड़ों के झुरमुट में गायब हो गया। मेजर कार के पास पहुंचा। कार का अगला हिस्सा पिचककर सरोजिनी के बदन में घुस गया था और सरोजिनी की ज्योतिहीन आंखें खुली हुई थीं। उसने टक्कर लगते ही दम तोड़ दिया था।

जीनत महल

मेजर संभला तो उसने देखा, कार के स्टेयरिंग ह्वील पर खून जमा हुआ था। स्टेयरिंग ह्वील पर जमा हुआ खून सिद्ध कर रहा था कि उसके रिवाल्वर की गोली सुल्तान के लगी थी, लेकिन गोली घातक सिद्ध नहीं हुई थी।

मेजर जब वापस कारोनेशन होटल पहुंचा तो उसके इंतजार में बैठी सोनिया ऊब चुकी थी और मेजर से नाराज दिखाई दे रही थी। जब मेजर ने सारी घटना

"मैं सूरत से आ रहा हूं। मेरे पास नशे का अच्छा इंतजाम था। रास्ते में पकड़ा गया। बड़ी मुश्किल से दो सौ रुपए देकर जान छुड़ाई। यहां पहुंचकर आपका पता चला कि आपसे नशा मिल जाएगा। मुझ पर दया कीजिए।"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुम क्या कह रहे हो।"

"रेहाना ने कहा था कि आप मेरी जरूर मदद करेंगे।"

"रेहाना को तुम्हें यहां नहीं भेजना चाहिए था। खैर, उससे वाद में निवट लूंगा। रेहाना ने तुम्हें धोखा दिया है।"

मेजर ने वड़ी फुर्ती से काम लिया। अपने दायें कंधे का दवाव डालकर उसे जोर का धक्का दिया। वह आदमी लड़खड़ाकर पीछे हटा और मेजर दरवाजा पार करके कोठरी में पहुंच गया। उस आदमी ने संभलकर अपनी पतलून की जेव से पिस्तौल निकाल लिया। मगर मेजर ने उसकी दाहिनी कलाई पकड़कर मरोड़ दी। पिस्तौल हाथ से निकलकर फर्श पर जा पड़ा। मेजर ने उसके सीने पर घुटने की चोट लगाई और वह चारों खाने चित फर्श पर जा गिरा। मेजर ने आगे वढ़कर उसके जवड़े पर मुक्का मारा। उसके मुंह से खून वहने लगा। मेजर उसके सिर पर खड़ा हो गया। उसने सारी कोठरी को घूरकर देखा। कोठरी दो हिस्सों में वंटी हुई थी।

उस आदमी ने मेजर को गाली दी तो मेजर ने उसके गाल पर जोर से थप्पड़ मारा और कहा, "अपनी जवान को लगाम देकर रखो।"

"तुम कौन हो?" उस आदमी ने पूछा।

"मैं सरोजिनी की तलाश में आया हूं।" मेजर ने उसका पिस्तौल उठाकर अपनी जेव में रख लिया। "सरोजिनी कहां है?"

"मुझे कुछ मालूम नहीं।"

मेजर ने दोवारा उसके जवड़े पर मुक्का मारा।

"मैं नहीं जानता कि सरोजिनी कहां है। वंवई से उसका प्रेमी सुल्तान आया हुआ है और वह उसके साथ है।"

"क्या सरोजिनी ने यह मकान छोड़ दिया है?"

"जी हां, उससे मैंने किराए पर ले लिया।"

"वह अव कहां रहती है?"

"इस मुहल्ले के उत्तरी नुक्कड़ पर दो कमरों का एक पक्का मकान है जिसके वाहर हनुमान जी की मूर्ति वनी हुई है।"

मेजर वाहर निकल गया। लेकिन अचानक उसे एक वात याद आ गई। वह फिर गुलावी कोठरी में घुस गया।

मेजर ने पूछा, "क्या सुल्तान यहां अक्सर आता रहता है?"

"हां, उसका यहां आना जरूरी है।"

"क्यों?"

"सुल्तान और उसके किसी साथी को चरस की आदत है। महीने में एक वार आता है तो सरोजिनी को महीने का खर्च दे जाता है। अपने साथ एक महीने के लिए चरस ले जाता है।"

कुछ देर वाद मेजर हनुमान जी की मूर्ति वाले मकान का दरवाजा खटखटा रहा था।

अन्दर से किसी स्त्री की आवाज आई, "कौन?"

"मुझे रामप्यारी पनवाड़िन ने भेजा है।" मेजर ने कहा।

दरवाजे के पीछे कदमों की आहट सुनाई दी। लेकिन दरवाजा वहुत थोड़ा खोला गया। दरवाजे के पीछे एक औरत खड़ी थी।

जेवर पाने के बाद लड़कियां घर जाकर यह नहीं बता सकती थीं कि जेवर उन्हें किसने दिए हैं, इसलिए गोपाल कामथ से वे सौदा करती थीं। गोपाल कामथ सुन्दर लड़कियां बंगलौर से लाया करता था। बंगलौर सुन्दर लड़कियों के लिए प्रसिद्ध है। सुना है गोपाल कामथ बम्बई में है और पूर्ववत् उसी तरह का काम कर रहा है। उसके चार साथी हैं—राजन, चमन, सुल्तान और भोला।

मैनेजर
पीकाक क्लब

मेजर टेलीग्राम का कागज अपनी उंगली पर लपेटता रहा। उसका यह विचार गलत सिद्ध हुआ कि गोपाल कामथ ने सुल्तान और भोला को बम्बई में अपने साथ मिलाया है।

मेजर छोटी मेज से हटकर जब अपनी मेज की ओर गया तो वहां भी टेलीग्राम का एक लिफाफा पड़ा था। मेजर ने लिफाफा खोला और टेलीग्राम पढ़ने लगा।

मेजर साहब !

गोपाल कामथ के बारे में कुछ और बातें मालूम हुई हैं। गोपाल कामथ की एक रखैल थी नर्स मार्गरेट। वह कभी-कभी अपने-आप को कैथरीन भी कहती थी। गोपाल कामथ को बंगलौर की रहने वाली एक लड़की से भी प्रेम था। उसके नाम का पता नहीं चल सका। मार्गरेट उसे दूसरी लड़कियों से प्रेम करने की अनुमति इसलिए दे देती थी कि वह जानती थी कि गोपाल कामथ का धन्धा क्या है। उस धंधे के लिए सुन्दर लड़कियों का होना बहुत जरूरी था। अगर किसी और बात का पता चला तो तीसरा तार दूंगा।

मैनेजर
पीकाक क्लब

मेजर ने इंस्पेक्टर बेडफोर्ड का फोन नम्बर मिलाया। एक मिनट के बाद उसने कहा, "हैलो।"

दूसरी ओर से इंस्पेक्टर बेडफोर्ड की आवाज आई। उसने मेजर की आवाज पहचान ली थी। बोला, "आप बाहर चले गए थे। मैं कल दिन-भर आपको फोन करता रहा, क्योंकि मैं आपको यह बताना चाहता था कि कल हमने सुधा का पीछा किया था। वह पहले एक पुरानी हवेली में गई। वहां आधे घण्टे तक रही। उस हवेली में एक स्त्री और दो पुरुष रहते हैं। उस हवेली का वातावरण बहुत ही विचित्र है। वहां जो स्त्री रहती है बेहद शराब पीती है।"

"क्या आपको मालूम है कि वह स्त्री सुधा की मां है?"

"यह आप क्या कह रहे हैं!"

"मैं ठीक कह रहा हूं। आप यह बताइए कि वहां से सुधा कहां गई?"

"वहां से सुधा वरसोवा गई। वहां समुद्र के किनारे पत्थरों की एक दीवार है। यहां एक बहुत ही सुन्दर बंगला बना हुआ है। वह उस बंगले में एक घण्टे तक रही। उसके जाने के बाद मैंने उस बंगले में घुसने की कोशिश की और मैं सफल हो गया। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही, उस बंगले में कोई भी नहीं था। मैं सोचता रहा कि सुधा इस बंगले में किससे मिलने आई थी और वह एक घंटे तक उसमें क्या करती रही! इस बंगले में कोई रहता जरूर है। बेडरूम में एक आदमी के सूट टंगे हुए थे।"

"क्या उस बंगले का कोई नाम भी है?" मेजर ने पूछा।

"उसका नाम है जीनत महल। और नम्बर है सी-३४ और उसके अन्दर जो टेलीफोन है उसका नम्बर है २—६१६२६। मुझे ऐसा संदेह होता है कि उस बंगले में गोपाल कामथ रहता है और उस बंगले में आने-जाने का कोई गुप्त रास्ता भी है।

सुनाई तो उसकी अप्रसन्नता दूर हो गई।

गर्म काफी का बिल चुकाने के बाद मेजर ने सोनिया से कहा, "आओ सोनिया, अपने शहर वापस चलें। स्वर्ग घर ही में होता है।"

"दूसरे दिन दोनों ही सुबह बम्बई पहुंच गए। मेजर ने हाथ-मुंह धोने से पहले सेठ रतनचंद सरवरिया के घर फोन किया। फोन खुद सेठ जी ने रिसीव किया, "हैलो, कौन ?"

"मैं मेजर बलवन्त हूं। सेठ जी, आप अस्पताल से आ भी गए ?"

"हां, डाक्टर तो मुझे दो दिन और वहां रुकने के लिए कह रहा था, मगर मैं अस्पताल के वातावरण को सहन नहीं कर सकता था।" सेठ जी बोले, "कल आप कहां थे ? दिन-भर आपको फोन करता रहा।"

"मैं एक दिन के लिए बाहर चला गया था।"

"कहिए, आपने कैसे फोन किया ?"

"मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या आपके घर के सभी लोग घर ही में हैं ?"

"क्या मतलब ? घर के सभी लोग घर में ही हैं। सुधा, लक्ष्मी, महेश्वर और मैं खुद।"

"सुधा कल बाहर तो नहीं गई थी ?" मेजर ने पूछा।

"गई थी, लेकिन वापस आ गई थी।"

"महेश्वर ?"

"वह कल कहीं नहीं गया।"

"और आपकी पत्नी...?"

"वह भी बाहर नहीं निकली। मेरी तीमारदारी करती

"परसों वे आपकी अनुपस्थिति में कहीं गई थीं ?"

"हां, मुझे मेरे नौकर ने बताया कि आपने फोन पर उनका पता पूछा था। उस समय घबराहट के कारण हवा खाने के लिए घर से चली गई थी।"

"वापस कब आई थीं ? क्या आपने नौकर से पूछा था ?"

"हां, एक घंटे के बाद वापस आ गई थी।"

"कल सुधा जब बाहर गई तो कितनी देर के बाद लौटी ?"

"चार घंटे के बाद।"

"धन्यवाद, मैं बस इतना ही जानना चाहता था।"

"आप कहां तक पहुंचे हैं ? क्या जेवर मिलने की आशा है या नहीं ? क्या वह आदमी गिरफ्तार कर लिया जाएगा जिसने मुझे और लक्ष्मी को दूसरी दुनिया में भेजने की कोशिश की थी ?"

"मंजिल पास आ रही है। आप घबराइए नहीं।" मेजर ने कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

उसकी निगाह मेज पर पड़ी। वहां एक टेलीग्राम का लिफाफा रखा था। मेजर ने बड़ी अधीरता से टेलीग्राम का लिफाफा खोला। वह टेलीग्राम पीकाक क्लब के मैनेजर ने भेजा था। तार का लेख काफी लम्बा था।

माई डियर मेजर साहब !

गोपाल कामथ जवाहरात बेचने का काम करता था। इस धंधे में वह हेराफेरी से काम लेता था। बहुत ही सुन्दर लड़कियों को फांसता था। वे लड़कियां पुरुषों से उपहार में जेवर लेती थीं जो गोपाल कामथ की दूकान से खरीदे जाते थे। ज़ेवर पाने के बाद लड़कियां उन जेवरों को गोपाल कामथ को दे देतीं और गोपाल कामथ कमीशन में उन्हें हल्के जेवर बनवा देता था।

ऐसा नहीं मिला जिसने किसी आदमी के कंधे से गोली निकाली हो। हर डाक्टर के सामने मुझे और मेरे मातहतों को शर्मिन्दा होना पड़ा, क्योंकि हर डाक्टर ने यह कहा कि किसी अनजान व्यक्ति के बदन से गोली निकालना अपराध है। गोली निकालने के पहले पुलिस को सूचना देना आवश्यक होता है।"

"हां, यह तो हमने सोचा ही नहीं था।" मेजर बोला और अचानक एक विचार उसके दिमाग में बिजली की तरह कौंध गया। वह बड़े जोश के साथ बोला, "इंस्पेक्टर साहब, कल सुबह सात बजे आप मेरे दफ्तर आ जाइएगा। मुझे आशा है कि मैं आपको इस नाटक का अन्तिम दृश्य दिखा सकूंगा।"

"क्या आपको कोई भविष्यवाणी हुई है?"

"हां, और जब इंसान को भविष्यवाणी होती है तो उसकी तमाम गुत्थियां सुलझ जाती हैं। कल इन्स्पेक्टर साहब, आपकी प्रसिद्धि में चार चांद लग जाएंगे। कल सुबह सात बजे आप यहां अकेले आइएगा। क्षमा कीजिए, अब मुझे एक जरूरी काम से कहीं जाना है। अच्छा तो कल मुलाकात होगी।"

इन्स्पेक्टर बेडफोर्ड बहुत हैरान था। वह मेजर से बहुत कुछ पूछना चाहता था, लेकिन मेजर को जल्दी में देखकर वह चुप रह गया। "कल सात बजे हम मिलेंगे।" उसने कहा और दफ्तर से निकल गया।

मेजर ने उसके जाने के बाद फोन पर से रिसीवर उठाया, मगर न जाने क्या सोचकर उसे फिर क्रेडिल पर रख दिया।

पन्द्रह मिनट के बाद मेजर चर्च गेट पहुंच चुका था। उसने स्टेशन के सामने अपनी कार खड़ी कर दी और पब्लिक काल बूथ में घुस गया। जब वह बूथ से बाहर निकला तो मुस्करा रहा था। उसके चेहरे से खुशी छलक रही थी।

एक घंटे के बाद मेजर बरसोवा के एक ईरानी रेस्ट्रां में चाय पी रहा था। उसने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी की ओर देखा, शाम के तीन बज रहे थे, वह ईरानी होटल से बाहर निकला।

दस मिनट के बाद उसकी कार 'जीनत महल' के पोर्टिको में जाकर रुकी। उसने सदर दरवाजे पर दस्तक दी। दरवाजा खुला तो उसमें सेठ रतनचंद सरवरिया की पत्नी लक्ष्मीबाई खड़ी थी। उसके हाथ में पिस्तौल था। उसने अपने सामने मेजर को देखा तो उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं, उसकी आशा निराशा में बदल गई।

"आप?"

"हां," मेजर ने मुस्कराते हुए कहा, "आप शायद गोपाल कामथ के इंतजार में थीं?"

"हां।"

मेजर ने लक्ष्मीबाई की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा, "यह पिस्तौल मुझे दे दीजिए। नाजुक हाथों में इतनी भयानक चीज नहीं होनी चाहिए।"

"नहीं, मैं यहां हत्या करने के इरादे से आई हूं।"

"आप तो मेरा फोन सुनकर आई हैं।"

"क्या डेढ़ घंटे पहले आप ही ने फोन किया था?"

"जी हां। मैंने ही आपको यहां बुलाया था। आपको यहां बुलाने का उद्देश्य यह था कि इस बात की पुष्टि हो जाए कि गोपाल कामथ यहां रहता है या नहीं।"

"वह यहीं रहता है। और मैं उसे और···मैं उनको तीन दिन से ढूंढ़ रही हूं।"

"क्यों?"

"मैं इन सबको मार डालना चाहती हूं। इन्होंने मेरे पति की हत्या करने की कोशिश की।"

गोपाल कामथ सुधा से मिला होगा और गुप्त रास्ते से निकल गया होगा।"

"आपने वहुत अच्छा काम किया इंस्पेक्टर साहब।" मेजर वोला, "और मैं रतलाम से आ रहा हूं। वहां मैं सुल्तान से मिलने गया था जिसने सेठ जी और उनकी पत्नी पर गोली चलाई थी। इस केस के सिलसिले में रतलाम में भी एक खून हुआ है एक औरत का, जिसका नाम सरोजिनी था। मैं नहीं कह सकता कि वह मेरी गल्ती से मारी गई या उसे जान-बूझकर मारा गया।" यह कहने के वाद मेजर ने रतलाम की कहानी इंस्पेक्टर वेडफोर्ड को सुना दी।

कहानी सुनकर इंस्पेक्टर ने कहा, "आप अपनी आत्मा को व्यर्थ ही दुखी कर रहे हैं। सरोजिनी को सुल्तान ने ही मारा। उसने आपको सरोजिनी के साथ देखा तो उसे अकारण ही संदेह हुआ कि सरोजिनी आपसे मिलकर उसे गिरफ्तार कराना चाहती है।"

"हां, मैं भी यही सोच रहा हूं।" मेजर ने कहा, "आप एक काम कीजिए। आप क्योंकि वहुत-से आदमी शहर के विभिन्न हिस्सों में दौड़ा सकते हैं, इसलिए यह काम आप ही के वश का है। सुल्तान के शरीर में मेरी गोली लगी है। वह रतलाम ठहरा नहीं होगा, क्योंकि छोटे शहर में अपराधी जल्दी पकड़ा जाता है। वह वम्वई आ गया होगा और किसी सरकारी अस्पताल में नहीं किसी प्राइवेट अस्पताल में भरती हो गया होगा या कोई प्राइवेट डाक्टर उसका इलाज कर रहा होगा। आप उस डाक्टर का तलाश कराइए जो उसका इलाज कर रहा है। अगर आज शाम तक यह पता लगा सकें तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि कल तक वास्तविक हत्यारा भी आपके सामने होगा। यह काम कीजिए और इसे अभी से शुरू कर दीजिए।"

"अच्छी वात है।" इंस्पेक्टर वेडफोर्ड ने कहा और टेलीफोन डिस्कनेक्ट कर दिया।

इतने में गोरखा चौकीदार ने एक और टेलीग्राम मेजर को लाकर दिया। मेजर ने लिफाफा खोला और पढ़ने लगा :

> मेजर साहव !
>
> एक दिलचस्प वात मालूम हुई है। कामथ के गिरोह में सुल्तान नामक जो व्यक्ति हैं वह कामथ का वड़ा साला है और उसका असली नाम राजेश्वर रणदिवे है। राजेश्वर रणदिवे खूंखार आदमी है। उसने ही कामथ को जीवन का गलत रास्ता दिखाया। राजेश्वर रणदिवे अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए मानवीय सम्बन्धों की भी परवाह नहीं करता। उसने कामथ का जिन्दगी इस तरह खराव की है कि कामथ को उससे कोई शिकायत नहीं।
>
> मैनेजर
>
> पीकाक क्लव

मेजर ने मन ही मन पीकाक क्लव के मैनेजर को धन्यवाद दिया और अपने जी में ठान ली कि वह एक न एक दिन उसके अहसानों का वदला जरूर चुकाएगा। मेजर को यह ख्याल भी आया कि पीकाक क्लव के मैनेजर को भी जासूसी करने का शौक है। इसीलिए वह इतनी लगन से उसके लिए विवरण प्राप्त कर रहा है।

ग्यारह वजे मेजर तैयार होकर सारे केस पर विचार करता रहा। अव उसे कुछ रोशनी दिखाई देने लगी थी। सोचते-सोचते वह आराम कुर्सी पर ही सो गया। सोनिया भी आराम करने के लिए जा चुकी थी। अचानक मेजर को किसी ने कंधे से पकड़कर झंझोड़ा तो उसने अपनी आंखें खोल दीं। उसके सामने इंस्पेक्टर वेडफोर्ड खड़ा था।

"मुझे आपने जो काम सौंपा था मैं उसमें सफल नहीं हो सका। कोई [illegible]

"नहीं।"

"क्या आपको यह भी मालूम नहीं कि कामथ ने अपनी रखैल मार्गरेट को मार डाला और मुझे हत्यारा सिद्ध करने की कोशिश की ?"

"मुझे इन दिनों की कोई खबर नहीं। आप नहीं जानते कि मेरा जीवन कितना दुःख-भरा रहा है ! सेठ जी के साथ शादी करने के बाद मैं बहुत खुश थी। पहली बार मुझे अच्छी जिन्दगी मिली थी। दो वर्ष हंसी-खुशी में गुजर गए थे। लेकिन फिर लोगों ने मुझे सताना शुरू कर दिया और मेरे जीवन में जहर घोल दिया। अब मैं इनको जिन्दा न छोड़ूंगी।"

"क्या आप रोहिणी नाम की किसी लड़की को जानती हैं ?"

"हां।"

"क्या आपको यह भी मालूम है कि उसे भी मार डाला गया ?"

"मैंने अखबार में पढ़ा था।"

"क्या आपको यह भी मालूम है कि रोहिणी के पास सुधा का असली कंगन है ?"

"पहले तो यह मालूम नहीं था, लेकिन जब आपने सेठ जी को वह कंगन दिखाया तो मुझे इस बात का पता चल गया था।"

"रोहिणी से आपकी मुलाकात कहां हुई थी ?"

"चेम्बूर में कामथ के बंगले पर। वह उसके पास आया करती थी। और कामथ ने ही सुधा का असली कंगन उसे दिया होगा। मैं जानती हूं कि कामथ का काम ही यही है कि सुन्दर लड़कियों को फांसे, उनको जेवरों का झांसा दे और फिर उनके द्वारा अमीर आदमियों को लूटे। इस तरह वह पुलिस की गिरफ्त से आजाद रहता था।"

"रोहिणी को क्यों मारा गया ?"

"मैं क्या बता सकती हूं ?"

"आप कामथ और राजेश्वर को मारने के लिए आई थीं ?"

"हां।"

"लेकिन आपको ऐसा करने की जरूरत न पड़ेगी। आपका काम कानून करेगा।"

"लेकिन वे दोनों हैं कहां ?"

"क्या आप उनसे मिलना चाहती हैं ?"

"हां।"

"तो मेरे साथ चलिए। अधिक उचित होगा कि आज की रात आप मेरे दफ्तर में ही सो जाइए। वहां मेरी असिस्टेंट सोनिया का पलंग खाली पड़ा है।"

लक्ष्मीबाई ने कनखियों से मेजर की ओर देखा। फिर मुस्कराई और बोली, "मैं आपके साथ चलने के लिए तैयार हूं।"

"अब तो अपना यह रिवाल्वर मुझे दे दीजिए।"

लक्ष्मी ने अपना रिवाल्वर मेजर के हवाले कर दिया।

"क्या आपको अपने पति से इतनी ही हमदर्दी है ?"

"हर पत्नी को अपने पति से प्रेम और सहानुभूति होती है।"

"लेकिन आप तो सेठ रतनचंद सरवरिया की नकली पत्नी हैं। आपने अपने पहले पति के होते हुए धोखे से सेठ जी से शादी की या अपने पति गोपाल कामथ और आपके भाई राजेश्वर रणदिवे ने आपको सेठ जी से विवाह करने पर विवश किया।"

मेजर की यह बात सुनकर लक्ष्मी के पैरों के तले से जमीन निकल गई, आपको···आपको यह सब बातें कैसे मालूम हुईं ?"

"जासूस का और काम ही क्या होता है! वह ऐसी ही बातें तो मालूम करता है।"

"लेकिन आपको कुछ बातें गलत भी मालूम हुई हैं। मैं सेठ जी के साथ शादी करने से दो साल पहले कामथ को छोड़ चुकी थी। उससे अलग हो गई थी। लेकिन तलाक न ले सकी थी। और जब मैंने सेठ जी से शादी कर ली तो कामथ और राजेश्वर को किसी तरह पता चल गया। पहले तो उन्होंने मुझसे दूर रहते हुए मुझे पत्र लिख-कर ब्लैकमेल किया और फिर वह यहीं मेरे सिर पर आ बैठे। मेरे लिए और कोई चारा न रहा कि मैं उनका मुंह बन्द करती चली जाती। सुधा को रहस्य का साझीदार बनाए बिना और उसे भी कुछ हिस्सा दिये बिना कामथ और राजेश्वर का मुंह मैं बंद नहीं कर सकती थी। जेवर उनके हवाले करने के लिए जरूरी था कि सुधा को साथ मिलाया जाता, सुधा को भी इन जेवरों की कीमत में से कुछ रकम दी जाती। कामथ नकली जेवर तैयार करने में बहुत कुशल था। वह असली जेवर हमसे ले जाता था उनके बदले में नकली जेवर बनाकर दे जाता था। असली जेवर की कीमत में से चौथाई कीमत सुधा को दी ज [illegible] थी, क्योंकि उसे अपनी मां की मदद करनी होती थी। मैं उसकी कमजोरी को ज[illegible]ती थी। इसलिए वह इस साजिश में मेरी साझीदार बन गई थी।"

"अब मैं समझा कि सुधा अपनी सहेली शान्ता के साथ कामथ के पास क्यों जाती थी।"

"मुसीबत तो उस दिन पैदा हुई जिस दिन सुधा घर से भागी। उसका नकली कंगन गुम हो गया। हम दोनों के होश उड़ गए। हमें इस बात का दुःख नहीं था कि नकली कंगन गुम हो गया है, हमें तो इस बात का दुःख था कि अगर नकली कंगन का भेद खुल गया तो हमारी चोरी पकड़ी जाएगी। इसके बाद हत्या की घटनाएं सामने आती रहीं और मेरा और सुधा का कलेजा कांपता रहा।"

"क्या आपने राजेश्वर को फोन किया था कि कंगन गुम हो गया है और आपके विचार से वह कंगन मेरे पास है।"

"जी हां। आप ही सुधा को घर लाए थे और उस समय मैंने आपको एक मामूली जासूस समझा था। इसलिए मुझे विश्वास था कि आपने कंगन को असली समझकर चुरा लिया [illegible]गा।" लक्ष्मी बोली, "कंगन के गुम होने पर कामथ और राजेश्वर भी बौखला गए। वे क्योंकि आरम्भ से ही अपराधी स्वभाव के थे इसलिए वे मारधाड़ पर उतर आए। लेकिन मुझे यह पता न था कि [illegible]नकी मारधाड़ यह रूप ले लेगी कि वे मेरे पति पर ही आक्रमण कर बैठेंगे और मुझे [illegible] मारने की कोशिश करेंगे।"

"क्या आप कामथ और राजेश्वर के साथी राजन, रतन और भोला से परि-चित हैं ?"

"नहीं।"

"क्या आप कामथ की रखैल मार्गरेट या बं

प्रवन्ध कर दिया था। साढ़े दस बजे मेजर का बंगला अंधियारे में डूब गया।

सुवह पांच वजे कार के इंजन की आवाज सुनकर मेजर जाग गया। वह समझ गया कि इंस्पेक्टर वेडफोर्ड अपने वायदे के अनुसार पहुंच गया है। मेजर उसके स्वागत के लिए वाहर निकला। उसने अपने दफ्त की वत्ती जला दी। इंस्पेक्टर वेडफोर्ड दफ्तर में पहुंचा। उसने खुले दरवाजे में झांककर देखा और कहा, "आपने तो यहां वारात इकट्ठी कर रखी है!"

"जी हां, यह पूरा काफिला हत्यारों से मिलने जाएगा।" मेजर ने कहा।

ठीक पौने छः वजे मेजर का काफिला रवाना हुआ। मेजर ने सुधा के कान में कुछ कहा और वह अपनी कार सवसे आगे ले गई। वह काफिले का मार्ग-दर्शन कर रहा थी। पेड़ों के झुंड के पास जाकर छः कारें रुक गईं। मेजर अपनी कार से उतरा और वोला, "सुधा, मैं, इन्स्पेक्टर वेडफोर्ड, अशोक और विनोद पहले अन्दर जाएंगे। जव सीटी वजे तव वाकी लोग भी अन्दर आ जाएं।"

मेजर के कहने के अनुसार वे लोग अपनी कार से उतर आये। वे पांचों खंड-हरों की ओर वढ़े। सुधा सवसे आगे थी। जव वे खंडहरों में पहुंच गये तो मेजर ने सुधा से कहा, "अव आप हमारे पीछे आ जाइए। जव मैं आपको इशारा करूं तव आप आगे आइएगा।"

सुवह के साढ़े छः वजे थे। सुवह का धुंधलका चारों ओर फैला हुआ था, लेकिन ऊंचे-ऊंचे खंडहरों में अभी अंधेरा था। अशोक ने गर्म थैली पकड़ रखी थी और विनोद के हाथ में थैला था। मेजर और इन्स्पेक्टर वेडफोर्ड के हाथों में रिवा-ल्वर थे।

वे पुरानी हवेली का सदर दरवाजा पार करके हवेली के वास्तविक खंडहरों में पहुंचे। मेजर ने हल्के कदमों की चाप सुनी तो कहा, "अव ऐसा करना होगा। सुधा सवसे आगे-आगे जाएगी, वाकी लोग खंडहरों की आड़ लेते हुए आगे वढ़ेंगे। मैं सुधा के पीछे-पीछे चलूंगा। अगर मुझ पर कोई हमला वोलेगा तो अशो.. गर्म थैली आक्रमणकारी के सिर पर चोट पहुंचाएगा। इससे मेरा उद्देश्य यह है कि आक्रमण-.ारी को विना कोई आवाज किए ढेर कर दिया जाएगा।"

मेजर की हिदायत के वाद वे विखर गये और खंडहरों की आड़ लेकर आगे वढ़ने लगे। सुधा और मेजर अभी दस कदम ही आगे वढ़े होंगे कि सरसराते हुए कदमों की आहट ऊंची हो गई। कोई खंडहरों की आड़ लेकर उनका पीछा कर रहा था। सुधा और मेजर पहले कमरे के पास पहुंचे तो किसी ने मेजर पर आक्रमण कर दिया। मेजर इस आक्रमण के लिए क्योंकि पहले से ही तैयार था इसलिए उसने दुश्मन का घार वेकार कर दिया। आ.्रमणकारी डा० चन्द्रप्रकाश का भाई सूरज था।

सुधा ने कहा, "सूरज, क्या कर रहे हो, पीछे हट जाओ।"

लेकिन सूरज ने सुधा की एक न सुनी। वह मेजर पर चोट लगाने के लिए आगे वढ़ा। मेजर के हाथ में रिवाल्वर था, लेकिन वह रिवाल्वर का प्रयोग नहीं करना चाहता था। गोली चलाकर वह हवेली के लोगों को सावधान नहीं करना चाहता था। सूरज पैंतरा वदल ही रहा था कि रेत से भरी गर्म थैली उसके सिर पर पड़ी। वह लड़खड़ाया तो अशोक ने थैली की एक चोट और उसके सिर पर लगाई। सूरज की गर्दन ढुलक गई और वहुत धीरे से धरती पर गिर गया। इतने में इंस्पेक्टर वेडफोर्ड और विनोद भी वहां पहुंच गए। मेजर ने दवी आवाज में कहा, "आइए, इसे घसीटकर अन्दर ले चलें। विनोद, तुम टॉर्च जलाओ।"

पुरानी हवेली का पहला कमरा काफी अंधेरा था। वहां एक कुर्सी पड़ी थी।

अंधेरा छंट गया

दफ्तर पहुंचते ही मेजर बहुत अधिक सरगर्म हो गया। उसने सबसे पहले सेठ रतन-चन्द सरवरिया को फोन किया कि उनकी पत्नी उसके दफ्तर में है और रात वहीं बिताएगी। अगर वह अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ उसके आफिस में रात बिताना चाहें तो बड़ी खुशी के साथ बिता सकते हैं। पहले तो सेठ जी इसके लिए तैयार नहीं हुए, लेकिन जब मेजर ने उनको बताया कि आज की रात उनके परि-वार का जीवन खतरे में है तो वे रात मेजर के यहां बिताने के लिए तैयार हो गए।

मेजर ने इसके बाद सोनिया को फोन किया कि वह फौरन दफ्तर चली आए। इसी तरह मेजर ने अशोक और विनोद मल्होत्रा को भी अपने पास बुला लिया। फिर उसने इन्स्पेक्टर बेडफोर्ड को फोन किया कि उसने अपना प्रोग्राम बदल दिया है। इन्स्पेक्टर बेडफोर्ड को सुबह पांच बजे उसके दफ्तर पहुंच जाना चाहिए।

विनोद और अशोक सबसे पहले मेजर के यहां पहुंचे। मेजर ने अशोक से कहा, "अशोक, एक गर्म थैली तैयार करके रख छोड़ो।"

"गर्म, थैली ?" विनोद ने आश्चर्य से पूछा।

"हां, गर्म थैली बड़े काम की चीज होती है। आदमी को आराम की नींद सुला देती है। अशोक अभी गर्म थैली बनाकर लाता है। फिर मैं आपको बताऊंगा कि गर्म थैली सचमुच एक चमत्कार है।"

अशोक मेजर की हिदायत के अनुसार गर्म थैली तैयार करने के लिए चला गया।

मेजर ने सोनिया की कार की आवाज सुनी तो उसका चेहरा खुशी से चमकने लगा। कुछ मिनट के बाद सेठ रतनचन्द सरवरिया, उसकी बेटी सुधा और उसका दामाद महेश्वर भी वहां पहुंच गए। मेजर ने बहुत दिनों के बाद अपने घर में इतने मेहमान इकट्ठे किए थे। कल सुबह जुलूस के रूप में हत्यारों की खोज में निकलना चाहता था आज वह बहुत खुश था। उसने सोनिया को मेहमानों के स्वागत-सत्कार का भार सौंपा और पुरुषों को ह्विस्की पिलाने का प्रबन्ध स्वयं करने लगा।

मेजर के यहां रात-भर महफिल जमी रही। उसके मेहमानों ने उससे पूछने की बहुत कोशिश की कि वह उन्हें कहां ले जाकर हत्यारों से मिलाना चाहता है, लेकिन मेजर ने अपने भेद को अपने दिल में ही रखा। विनोद जब [illegible] हंसी के और सुना चुका तो उसने मेजर से कहा, "अब बताइये कि गर्म थैली क्या चीज है और यह चमत्कार क्या है ?"

मेजर ने अशोक को इशारा किया और अशोक [illegible] जैसी चीज की थैली उठा लाया। मेजर ने विनोद से कहा, "यह थैली जरा उठाकर देखिए।"

"यह तो बहुत भारी है।" थैली उठाते हुए विनोद ने कहा।

मेजर ने नाटकीय स्वर में कहा, "किसी व्यक्ति को चोट पहुंचाकर और नुक-सान पहुंचाये बिना बेहोश करना हो तो इस थैली को काम में लाया जा सकता है। यह कल सुबह आपको इस थैली का प्रयोग और इसका चमत्कार दिखाया जाएगा। यह थैली एक हट्टे-कट्टे आदमी पर प्रयोग की जाएगी। वह हट्टा-कट्टा आदमी गहरी नींद सो जाएगा।" इसके बाद मेजर ने अशोक से कहा, "अशोक, [illegible] वाली काफी टेप अपने [illegible] रख लेना।"

"मैं अभी र[illegible] कहीं भूल न जाऊं।" अशोक [illegible] लिए चला गया।

महफिल रात के दस बजे समाप्त हुई।

मां से और सेठजी को उनकी पत्नी से वंचित कराने का कारण भी है। इंस्पेक्टर साहब, कल जब आपने यह कहा कि किसी भी डॉक्टर ने सुल्तान के कंधे से गोली नहीं निकाली तो मैं समझ गया कि सुल्तान कहां हो सकता है। कामथ को सुधा से मालूम हो चुका था कि उसकी मां कुसुम एक डाक्टर के साथ रहती है। वह सुल्तान उर्फ राजेश्वर रणदिवे को डा० चन्द्रप्रकाश के पास ही ले गया होगा। आपने सुधा का पीछा किया था और सुधा वरसोवा में कामथ से मिलने गई थी। कामथ ने सेठ जी की पत्नी को सूचित किया था कि उसके भाई राजेश्वर की हालत खराब है और उसे किसी डाक्टर के पास नहीं ले जाया जा सकता। सुधा को भेज दो ताकि वह अपनी मां के नाम एक सिफारिशी चिट्ठी लिख दे। लक्ष्मीवाई आखिर वहन थी, उसे तरस आ गया। उसने सुधा को कामथ के साथ भेज दिया। वाद में वह पछताई कि उसने ऐसा क्यों किया। उसने अपने भाई को मरने दिया होता। वह पछता रही थी, इसका पता उस समय चला जब मैंने लक्ष्मीवाई को फोन किया और अपना नाम कामथ बताया। मैं तो इस बात की पुष्टि करना चाहता था कि सुधा वरसोवा के जिस वंगले में गई थी यह कामथ का था या नहीं। लेकिन जब लक्ष्मीवाई ने क्रोधित स्वर में मुझसे कहा कि वह फौरन उस वंगले में पहुंच रही है तो मैं समझ गया कि लक्ष्मीवाई यह जान चुकी है कि कामथ ने ही राजेश्वर को सेठ जी को मारने का काम सौंपा था।" इसके वाद मेजर ने सुधा से कहा, "इनमें कामथ कौन-सा है ?"

सुधा ने उस युवक की ओर इशारा किया जिसके दोनों हाथ मेजर की गोलियों से वेकार हो चुके थे।

"अगर यह कामथ है तो पलंग पर पड़ा व्यक्ति राजेश्वर होगा।" मेजर ने कहा, "राजेश्वर एक भयानक हत्यारा, एक पत्थर दिल इन्सान, इन्सान के रूप में दरिन्दा।"

तभी वाहर वहुत-से कदमों की आहट सुनाई दी। सवसे पहले सेठ जी उस कमरे में आए। उन्होंने मेजर को सामने देखकर कहा, "अगर जरा-सा उजाला न हो गया होता तो हमारे लिए यहां तक पहुंचना कठिन हो गया होता।" और फिर फौरन ही ठ जी की निगाह पलंग पर पड़े हुए सुल्तान उर्फ राजेश्वर पर पड़ी। उसकी चादर से तर थी।

"यह वह आदमी है जिसने आप पर गोली चलाई थी।" मेजर वोला।

अव सारे लोग कमरे में आ चुके थे। लक्ष्मी की निगाह कामथ पर पड़ी तो उसका खून खौलने लगा। उसने अपना वैग खोलकर रिवाल्वर निकालना चाहा, लेकिन उसे फौरन याद आ गया कि उसका रिवाल्वर तो मेजर ने ले लिया था। मेजर ने उसकी हरकत पहचान ली और वोला, "इसकी जरूरत नहीं। गोपाल कामथ से आपका प्रतिशोध कानून लेगा।"

लक्ष्मीवाई ने अपने भाई राजेश्वर को खून में लथपथ देखा तो घृणा से वोली, "खूंखार इन्सान अपने-आप को अमर समझता है और यह नहीं जानता कि एक दिन उसका परिणाम भी वहुत वुरा हो सकता है।" और फिर लक्ष्मी ने कुर्सी पर वंधे हुए डाक्टर चन्द्रप्रकाश को देखकर पूछा, "यह कौन है ?"

"यह डा० चन्द्रप्रकाश है। इसके पास ही सुधा की मां कुसुम रहती है और सुधा की मां की जो हालत है उसे आप अभी-अभी देख लेंगे। पिछले कुछ दिनों में जो घटनायें हुई हैं, उनके सभी पात्र इस समय यहां मौजूद हैं और कुछ पात्र इन घटनाओं की भेंट हो चुके हैं। आप लोगों से कुछ छिपा हुआ नहीं हैं। आप जानते हैं कि ये घटनायें क्यों और कैसे घटीं। इसलिए मेरी ओर से कुछ स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं।" मेजर ने कहा।

इंस्पेक्टर वेडफोर्ड, अशोक और मेजर ने लम्बे-तड़ंगे सूरज को घसीटकर बड़ी मशिकल से कुर्सी पर बैठाया। वे सब हांफ रहे थे। मेजर ने हांफते हुए कहा, "अशोक, इसके चारों ओर अच्छी तरह टेप बांध दो ताकि यह हिल न सके।"

अशोक ने बड़ी फुर्ती से पांच मिनट में ही सूरज को टेप में अच्छी तरह जकड़ दिया।

मेजर ने सुधा से कहा, "जिस कमरे में चिराग जल रहा है वह शायद आपकी मां का कमरा है?"

"हां।" सुधा ने उत्तर दिया।

"हमें उस कमरे में ले चलो।"

वे दबे पांव सुधा की मां के कमरे में पहुंच गए। कुसुम पलंग पर औंधे मुंह पड़ी थी। उसके हाथ में, जो पलंग से नीचे झूल रहा था, शराब की बोतल थी जो तीन चौथाई खाली थी।

मेजर ने कानाफूसी के ढंग में कहा, "इस कमरे के पीछे किसका कमरा है?"

"डा० चन्द्रप्रकाश का।" सुधा ने उत्तर दिया।

"क्या उसका कोई पिछला दरवाजा भी है?"

"हां।"

"हमें पिछले दरवाजे से ही उस कमरे में ले चलो।"

फिर मेजर ने अशोक और इंस्पेक्टर वेडफोर्ड से कहा, "अपने-अपने रिवाल्वर मजबूती से हाथ में पकड़ लीजिए। इसी कमरे में हमारे मित्र होंगे जिनकी तलाश में हम यहां आए हैं।"

वे दबे पांव आगे बढ़े। सुधा उन सबसे आगे थी। सुधा के पीछे मेजर था। मेजर के पीछे इंस्पेक्टर वेडफोर्ड, अशोक और विनोद थे। कमरे में मिट्टी का चिराग जल रहा था। जब सुधा ने उस कमरे में पांव रखा तो अड़तीस वर्ष का एक जवान व्यक्ति ठिठककर रह गया। उस युवक के हाथ में रिवाल्वर था। मेजर ने निशाना बांधकर गोली चलाई। गोली युवक के हाथ पर लगी और रिवाल्वर उसके हाथ से छूट कर फर्श पर जा गिरा। युवक कराहा और उसने अपने बायें हाथ से रिवाल्वर उठाने की कोशिश की। मेजर ने दूसरी गोली चलाई जो उस युवक के बायें हाथ में लगी। वह फर्श पर तड़फने लगा। इतने में इंस्पेक्टर वेडफोर्ड ने देखा कि पलंग पर चादर में लिपटा हुआ एक व्यक्ति हाथ बढ़ाकर मेज पर से पिस्तौल उठाने की कोशिश कर रहा है। इंस्पेक्टर वेडफोर्ड ने गोली चला दी। गोली उस आदमी के सीने में लगी और वह तड़फ कर ठंडा हो गया। अब मेजर डा० चन्द्रप्रकाश की ओर बढ़ा जो पलंग के पास खड़ा यह सारा तमाशा देख रहा था। वह निहत्था था। मेजर ने आगे बढ़कर उसके जबड़े पर मुक्का मारा। वह पछाड़ खाकर गिर पड़ा। मेजर ने उसे लपककर उठा लिया और कुर्सी पर बैठा दिया। उसके बाद उसने अशोक से कहा, "इसे भी टेप से बांध दो।"

अशोक ने डा० चन्द्रप्रकाश के साथ भी वही व्यवहार किया जो सूरज के साथ किया था। डाक्टर को टेप से जकड़ दिया। मेजर ने अपनी सीटी विनोद को देते हुए कहा, "अब खतरा टल चुका है। और अंधेरा छंट चुका है। बाहर जाकर सीटी बजा दो ताकि वे लोग इंतजार न करें और अंदर आ जाएं।"

विनोद ने बाहर जाकर सीटी बजाई और दोबारा अंदर आ गया।

मेजर ने डा० चन्द्रप्रकाश की ओर इशारा किया और इंस्पेक्टर वेडफोर्ड से कहा, "यह वह डाक्टर है जो डाक्टरी के व्यवसाय पर कलंक है और अपने घृणित कारनामों के कारण अपने लाइसेंस से वंचित हो चुका है। यह डाक्टर सुधा को इसकी

कर सकती है। लेकिन जब उसने राजन और चमन की मृत्यु के बार
किया कि उसी ने रोहिणी की हत्या की थी, तो मैंने उसे भी मार ड
भोला के गुम होने का प्रश्न। वह गद्दारी करने पर तुल गया था। रा
मार डाला और उसकी लाश को पत्थर बांधकर समुद्र में फेंक दिया।

कामथ की बात सुनकर सब हतबुद्धि-से रह गए।

मेजर ने मौन भंग करते हुए कहा, "कामथ के बयान से यह कहा
समाप्त हो जाती है। इंस्पेक्टर साहब, सभी इच्छित लोग यहां हैं। का
ले जाइए, और फिर पूरी पार्टी के साथ वापस आकर बाकी कार्यवाही की

वे सब उस कमरे में पहुंचे जिसमें सुधा की मां कुसुम बेसुध पड़ी
बाई को उसकी हालत देखकर बड़ा तरस आया। उसने अपने पति से
हम इनको घर नहीं ले जा सकते?"

"मैं स्वयं यही प्रश्न करने वाला था।" दुःख-भरे स्वर में से
और कुसुम के पास जाकर अपना हाथ उसके सिर पर रख दिया
बालों में अपनी उंगलियां फेरने लगा उन्होंने धीरे से कहा, "मैं खुश हूं
के जो जेवर चोरी चले गए, उनसे मिलने वाले धन का कुछ हिस्सा
हुआ। मुझे धन जाने का दुःख नहीं। मैं समझता हूं कि मुझे आज ए
दौलत मिली है—घर की शांति। इंसान के लिए इससे बड़ी दौलत
सकती है।"

सेठ जी ने जिस मानव प्रेम का परिचय दिया था उससे मेजर
आंखों में आंसू छलक आए।

॥ समाप्त ॥

"लेकिन मैं थोड़ा-सा स्पष्टीकरण चाहूंगा।" इंस्पेक्टर गेठगोई ने कहा, "मुझे तो इस केस को पूरे रूप में प्रस्तुत करना होगा।"

"मैं आपकी जानकारी के लिए इस समय एक छोटी-सी कहानी सुनाये देता हूं।" मेजर ने कहा, "इन्सान की जिंदगी सीधी-सादी नहीं है। इसमें वड़े उत्थान-पतन और सुख-दुःख आते रहते हैं। इन्सान के जीवन में जो घटनायें घटती हैं वे संयोगवश कम होती हैं। संयोग को हम दुर्घटना भी कह सकते हैं। लेकिन वहुत-सी घटनायें वहुत पहले जन्म ले लेती हैं और एक दिन भयानक रूप में सामने आ जाती हैं। सेठ रतनचन्द सरवरिया के जीवन में जो महत्वपूर्ण दुर्घटना होने वाली थी वह आज से दस-पन्द्रह वर्ष या शायद इससे भी पहले जन्म ले चुकी थी। सुधा की मां कुसुम ने सेठ जी से शादी की और फिर डा० चन्द्रप्रकाश से प्रेम करने लगी। अन्त में उसने अपने दिल के हाथों मजबूर होकर सेठ जी को छोड़ दिया। सेठ जी ने दूसरी शादी की तो एक नई दुर्घटना ने जन्म लिया। लक्ष्मीवाई का पहला पति जीवित था और उसका नाम है गोपाल कामथ, जो आपके सामने गठरी बना अपने घाव सहला रहा है। कामथ जौहरी था, लेकिन वह नेक कमाई को नहीं मानता था। थोड़े दिनों में ही अमीर बन जाने की चाह इन्सान को ले डूवती है। सेठ जी के साथ शादी करने से दो साल पहले लक्ष्मी-वाई उससे अलग हो चुकी थीं, लेकिन तलाक न ले सकी थी। इस स्थिति से कामथ ने अनुचित लाभ उठाया। कामथ को अनुचित लाभ उठाने पर विवश करने वाला था राजेश्वर उर्फ सुल्तान। राजेश्वर की तुलना उस इन्सान से की जा सकती है जो अपने लाभ के लिए अपने प्रिय सम्वन्धियों को तोड़ने पर तैयार हो जाता है। कामथ और राजेश्वर ने मिलकर ब्लैकमेलिंग शुरू कर दी। लक्ष्मीवाई विवश हो गई उसने सुधा को अपने साथ मिला लिया और सेठ जी के तमाम जेवर कामथ और राजेश्वर के कब्जे में चले गए। उन जेवरों से जो मुनाफा हुआ उसका कुछ हिस्सा सुधा को भी मिला।" मेजर के इस रहस्योद्‌घाटन पर सेठ जी चौंके, लेकिन फौरन ही कुछ सोचकर अपनी पत्नी और पुत्री की ओर दया-भरी निगाहों से देखने लगे।

मेजर ने अपनी वात का क्रम वनाए रखते हुए कहा, "वे घटनायें जो वहुत पहले जन्म ले चुकी थीं, उन्होंने भयानक रूप उस समय ग्रहण किया जव सुधा घर से भाग खड़ी हुई और उसका नकली कंगन गुम हो गया। उस कंगन के खो जाने के वाद जो कुछ हुआ वह आपके सामने है: उसपर प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं। एक वात मेरी समझ में अव तक नहीं आई कि रोहिणी की हत्या क्यों की गई? अगर उसकी हत्या की गई तो वह कीमती कंगन उसके वैग में क्यों छोड़ दिया गया? और मैं यह भी नहीं समझ पाया कि इन लोगों का साथी भोला कहां है? इन प्रश्नों के उत्तर केवल कामथ ही दे सकता है।"

सवने गोपाल कामथ की ओर उत्सुक निगाहों से देखा। कामथ ने भी कुछ सोचते हुए सव पर निगाह डाली और वोला, "अव जवकि खेल समाप्त हो चुका है और मैं जानता हूं कि मुझे क्या सजा मिलेगी, मैं आपसे कुछ भी छिपाना नहीं चाहता। मैंने रोहिणी पर डोरे डालने शुरू किए थे ताकि एक धनी पारसी को उसके द्वारा लूट सकूं। रोहिणी के साथ मेरा प्रेम-सम्वन्ध मार्गरेट को पसन्द नहीं था। मैंने मार्गरेट को सुधा का असली कंगन देने का वायदा कर रखा था जो मैंने रोहिणी को दे दिया। और जव एक दिन मैंने नशे की हालत में मार्गरेट को यह वता दिया कि मैंने रोहिणी को कंगन दे दिया है तो उसका क्रोध भड़क उठा। मार्गरेट ने रोहिणी को मार डाला। लेकिन उसने पहली वार किसी इन्सान की हत्या की थी इसलिए वह वौखला गई। उस पर अपने अपराध का इतना प्रभाव पड़ा कि वह रोहिणी के वैग से कंगन न निकाल सकी। मुझे मार्गरेट पर कभी यह सन्देह नहीं हो सकता था कि वह किसी की हत्या भी